पुराण कथा कोश

रामशरण गौड़

हिन्दी साहित्य में पुराणों से आगत कथाओं का बहुलता से प्रयोग हुआ है। सर्जकों ने इनका अनेक सन्दर्भों में प्रयोग किया है। इन पुराण-कथाओं के परिचय के बिना पाठकों और अध्येताओं का साहित्य से तादात्य होना सम्भव नहीं है।

प्रस्तुत कोश में हिन्दी साहित्य में प्रयुक्त पुराण कथाओं का उनके सन्दर्भों सहित परिचय प्रस्तुत किया गया है। इसके साथ ही इनके प्रयोग-सन्दर्भों का भी विवेचन किया गया है। अतः यह ग्रंथ हिन्दी साहित्य के विद्यार्थियों और जिज्ञासुओं के लिए न सिर्फ उपयोगी है, बल्कि अपने में महत्त्वपूर्ण भी है।

২৭।৭৭।৮৫ ৩।৭

৩২।৮৫।২৫ ৬।।৮।৭

पुराण कथा कोश

विभूति प्रकाशन

के–14, नवीन शाहदरा, दिल्ली-110032

पुराण कथा कोश

डॉ० रामशरण गौड़
एम० ए०, पी-एच० डी०

प्रकाशक : विभूति प्रकाशन, के-14, नवीन शाहदरा, दिल्ली-110032 **संस्करण** : प्रथम 1987 / **मूल्य** एक सौ पचास रुपये/ / **मुद्रक** : पवन प्रिंटर्स, दिल्ली-110032 / **आवरण** : कुमार कृष्ण (शिमला)

PURAN KATHA KOSH Edt. by
Dr. Ram Sharan Gaur

Rs. 150.00

समर्पण

साहित्य सृजन के प्रेरणा स्रोत
प्रोफेसर ओम्प्रकाश को……

—रामशरण गौड़

प्राक्कथन

पुराण भारतीय समाज की सांस्कृतिक धरोहर हैं, अतः अनादि काल से लेकर अब तक पुराण-कथाओं का भारतीय समाज में प्रचलन रहा है तथा साहित्य में इनका निरन्तर प्रयोग होता रहा है। भारतीय साहित्य में पुराण-कथाओं के प्रयोग के स्वरूप में युगीन परिस्थितियों के अनुसार परिवर्तन तो अवश्य हुआ, परन्तु इनकी साहित्य में व्याप्ति सर्वथा विद्यमान रही है। इनके साहित्य में अतिशय प्रयोग का कारण पुराण-कथाओं में निहित वे जीवन मूल्य और जीवन-दर्शन हैं, जो किसी समाज की विकृति से रक्षा करते हैं। साहित्यकार की समाज में भूमिका सृष्टि-निर्माता की होती है 'यथास्मै रोचते विश्वं तथ्येदं परिवर्तते'। अतः वह जहां एक ओर समाज में व्याप्त अनैतिक मूल्यों का आवरण हटाता है, वहीं वह दूसरी ओर एक आदर्श समाज की रचना के लिए चिन्तित होकर साहित्य-सृजन करता है। इसलिए उसे अनेक प्रतीकों, बिम्बों, वैदग्ध्यता और कला-सौन्दर्य के मानदण्डों का आश्रय लेना होता है। तदनुसार ही हिन्दी-काव्य में पुराणों से आगत कथाओं का बहुलता से प्रयोग देखने को मिलता है। इन कथाओं का परिचय देकर हिन्दी अध्येताओं तक पहुंचाने की आवश्यकता थी। इस दिशा में मैंने 'पौराणिक आख्यान कोश' तथा 'हिन्दी साहित्य अन्तर्कथा कोश' का सर्जन किया। परन्तु इनके बाद भी हिन्दी साहित्य में पुराण कथाओं के सम्यक् विवेचन की अपेक्षा बनी हुई थी। अतः 'पुराण-कथा कोश' की आवश्यकता अनुभव हुई। इसमें हिन्दी काव्य में प्रयुक्त सभी पुराण-कथाओं का परिचय और उनके प्रयोग के स्वरूप को विवेचित करने का प्रयास किया गया है। आशा है कि यह हिन्दी साहित्य के विद्यार्थियों और मर्मज्ञों के लिए सर्वथा उपयोगी होगा।

इसके संकलन में डा० चन्द्रहंस पाठक, वरिष्ठ प्राध्यापक, मोतीलाल नेहरू कालेज, दिल्ली विश्वविद्यालय का विशेष मार्गदर्शन मिला है। इसके लिए मैं डा० पाठक के प्रति श्रद्धावनत हूं।

सी-6/203, यमुना विहार,
दिल्ली-53

—डा० रामशरण गौड़

अनुक्रमिका

पुराण कथा कोश

अंग का राज्य त्याग

अंग वेन का पिता था । यह अत्यन्त समृद्धिशाली राजा था । इसने अश्वमेध यज्ञ भी किया । यह अपने पुत्र वेन के अत्याचारों से तंग आकर नगर छोड़कर वन को चला गया था । **संदर्भ :** विष्णु-पुराण-1/13, भागवत-4/13-14

अंगद का लंका पुरी जाना

जब राम की सारी सेना युद्ध के लिए चल पड़ती है तथा दूसरी ओर से राक्षसों के समुदाय लंका के द्वारों पर जाकर जम जाते हैं तब राम अंगद को रावण के पास भेजते हैं। वह रावण को राम का संदेश सुनाता है । उस समय रावण अत्यन्त क्रुद्ध होकर कहता है कि पकड़ लो इस वानर को जीवित न जाने पाये । इसे सुनकर राक्षस अंगद की ओर दौड़ते हैं तो अंगद वहां से निकल जाता है ।

'रामचरित मानस' के अनुसार अंगद अपना पैर सभा में रोप करके उसे हटाने के लिए कहता है । वहां उसके पैर को कोई नहीं हटा पाता तब रावण स्वयं उसके पैर को हटाने के लिए आता है तो वह रावण से भगवान राम के चरणों को पकड़ने की बात कहता है तथा अनेक तर्क-वितर्कों से रावण को समझाता है ।

हनुमन्नाटक में अंगद और रावण संवाद का विस्तार से वर्णन मिलता है, परन्तु अंगद के रावण की सभा में पैर रोपने की तुलसी की मौलिक उद्भावना है । आनन्द रामायण के अनुसार अंगद लंका से लौटते समय एक महल ही उठा लाया । **संदर्भ :** बाल्मीकि-रामायण, युद्ध-कांड-सर्ग-41/77; महाभारत-वनपर्व, अ० 283; 283 भागवत-9/10/19-20; हनुमन्नाटक, अंक 7; आनन्द रामायण-सार-खंड, सर्ग-10; कृतिवासी-रामायण

अंगिरस की उत्पत्ति

पुराणों में अंगिरस नामक अनेक ऋषियों का उल्लेख मिलता है । एक अंगिरस की दस प्रजापतियों में गणना होती है । एक अन्य ऋषि का उल्लेख ब्रह्माण्ड-पुराण में मिलता है, जो ब्रह्मा के हवन करते समय हवन के अंगार से उत्पन्न हुए । अतः यह अग्निपुत्र कहलाए । **संदर्भ :** ब्रह्म-पुराण, अ० 144; ब्रह्माण्ड-पुराण-2/36/26, 3/1/40-42

अम्बरीष की कथा

अम्बरीष अयोध्या के सूर्यवंशी राजा थे। ये भगवान विष्णु के परम भक्त थे। एक समय दुर्वासा ऋषि इनके अतिथि होकर उपस्थित हुए। दुर्वासा के स्नान करने के लिए चले जाने पर इन्होंने विद्वान ब्राह्मणों के परामर्श से द्वादशी-व्रत का पारण कर लिया। इस पर दुर्वासा क्रोधित हो गए और अंबरीष को मारने के लिए कृत्या उत्पन्न की। परन्तु विष्णु के चक्र ने कृत्या को नष्ट कर दुर्वासा का पीछा किया। अन्त में दुर्वासा को राजा से क्षमा मांगनी पड़ी।

यह कथा विशुद्ध पौराणिक आख्यान है। महाभारत में इस कथा का मात्र संकेत मिलता है। यहां पर दुर्वासा के संदर्भ में उल्लेख किया गया है कि दुर्वासा अत्रि के पुत्र थे। इन्हें शिव के अंश से उत्पन्न बताया गया है। और्वि मुनि की पुत्री कन्दली से इनका विवाह हुआ। विवाह के समय पर इन्होंने यह प्रतिज्ञा की थी कि ये अपनी पत्नी के सौ अपराध क्षमा कर देंगे, परन्तु बाद में कन्दली के अधिक अपराध करने पर उसे भस्म कर दिया। इस पर कन्दली के पिता मुनि और्वि ने दुर्वासा को शाप दे दिया कि तेरा भी अभिमान चूर होगा और इसी शाप के परिणामस्वरूप इन्हें अम्बरीष के आगे झुकना पड़ा और क्षमा मांगनी पड़ी।

यह कथा शिव, भागवत और ब्रह्मवैवर्त आदि पुराणों में विस्तार से वर्णित है तथा तीनों ही पुराणों की कथा में कतिपय अन्तर मिलता है। शिव पुराण में दुर्वासा शिव के अंश से उद्भूत होने के कारण यहां उनका अधिक महत्त्व दिखाया गया है। शिव पुराण के अनुसार दुर्वासा अम्बरीष के धर्म की परीक्षा लेने जाते हैं, जबकि भागवत पुराण में दुर्वासा का अम्बरीष के पास सामान्य रूप से जाना वर्णित है तथा दुर्वासा का अपमान भी विशेष रूप से उल्लेखित है। ब्रह्मवैवर्त पुराण में महाभारत तथा भागवत का प्रभाव परिलक्षित होता है। ब्रह्मवैवर्त में यह कथा दो स्थानों पर मिलती है (25 और 50वां अध्याय)। 25वें अध्याय की कथा में अम्बरीष ने वसिष्ठ की आज्ञा से व्रत की रक्षा करने के उद्देश्य से भगवान के चरणामृत से पारण किया और ब्रह्मादि देवताओं ने भी चक्र से दुर्वासा की रक्षा के लिए विष्णु से प्रार्थना की। यहां यह उल्लेख किया गया है कि विष्णु ने अम्बरीष के घर जाकर पारण करने पर ही दुर्वासा की रक्षा संभव बताई। तदनुसार दुर्वासा ने अम्बरीष के घर जाकर वहां भोजन किया और भयमुक्त हुए। ब्रह्मवैवर्त के अध्याय 50 के अनुसार द्वादशी के दिन दुर्वासा के भोजन मांगने पर अम्बरीष ने भोजन दिया। संयोग से खीर में एक बाल दुर्वासा को दिखाई दे गया, जिस पर दुर्वासा अम्बरीष को शाप देने को उद्यत हो गये और अम्बरीष के वध के लिए कृत्या को उत्पन्न किया। पर विष्णु की महिमा के कारण कृत्या दुर्वासा को ही भस्म करने दौड़ी। ब्रह्मवैवर्त में अम्बरीष के वध के लिए शाप और कृत्या दोनों का ही प्रयोग करना उल्लेखित है। यहां पर चक्र के स्थान पर कृत्या को ही मुनि के पीछे दौड़ाया गया है तथा दुर्वासा के क्रोध का कारण खीर में बाल का निकलना है। यहां राजा ने पारण

दुर्वासा के भोजन के बाद ही किया ।

अद्भुत रामायण में अम्बरीष को त्रिशंकु का पुत्र बताया गया है तथा भगवद्-भक्त के रूप में दर्शाया गया है जिन्होंने हजार वर्ष तक नारायण जाप किया तथा उनकी भगवद्-भक्ति की परीक्षा लेने के उपरान्त उनकी रक्षा के लिए सुदर्शन चक्र नियुक्त किया गया । संदर्भ : महाभारत-अनुशासन पर्व, अ० 47;शिव पुराण-शतरुद्र संहिता-अध्याय-19; भागवत-9/4-5; ब्रह्मवैवर्त-(श्री कृष्ण जन्म खंड) अ० 25, 50;अद्भुत रामायण-सर्ग-2

अम्बिका वन की कथा

अम्बिका वन पार्वती का वन था । यहां पर कोई भी पुरुष जाता वह स्त्री हो जाता । एक बार सुद्युम्न आखेट खेलते हुए इस वन में चला गया और वहां जाते ही स्त्री हो गया । इस वन में एक विद्याधर ने, जो सर्प योनि में था, नन्द का पैर पकड़ लिया था । श्री कृष्ण ने नन्द को इस सर्प से छुड़ाया तथा इसे इसके रूप में परिवर्तित किया । **संदर्भ :** भागवत-10/34

अगस्त्य-आख्यान

(1) अगस्त्य का जन्म

अगस्त्य का उल्लेख वैदिक साहित्य में एक महातेजा महातपा ऋषि के रूप में किया गया है । इनके जन्म के सम्बन्ध में अनेक कथाएं वैदिक संहिताओं, ब्राह्मणों, परवर्ती वैदिक टीका ग्रंथों, रामायण एवं महाभारत तथा कतिपय पुराणों में मिलती है । अधिकांश ग्रंथों में इन्हें मित्रावरुण का पुत्र और वसिष्ठ का भाई बताया गया है । इनके जन्म के सम्बन्ध में यह रोचक कथा प्रचलित है कि उर्वशी को देखकर मित्रावरुण का वीर्य स्खलित होकर कुम्भ में जा पड़ा और उससे अगस्त्य का जन्म हुआ । इसी आधार पर इन्हें कुंभज भी कहा जाता है तथा इनको मान, मान्य तथा मान्यार्य आदि नामों से भी सम्बोधित किया जाता है ।

ऋग्वेद में इस कथा का उल्लेख इस प्रकार मिलता है कि 'यज्ञस्थल में उर्वशी को देखकर मित्र और वरुण का वीर्यपात हो गया और उनका शुक्र कुम्भ में जा पड़ा, जिससे वसिष्ठ और अगस्त्य की उत्पत्ति हुई । वृहद्देवता में इस कथा को इसी रूप में दिया गया है तथा यहां बताया है कि मित्र और वरुण का शुक्र कलश, जल और स्थल में कई जगह गिरा । स्थल में वसिष्ठ ने जन्म लिया तथा कुम्भ में अगस्त्य ने और जल में द्युतिमान मत्स्य ने ।

बाल्मीकि-रामायण में यह कथा अति विस्तार से मिलती है तथा यहां पर इस कथा को वसिष्ठ के जन्म के सन्दर्भ में वर्णित किया है । यह कथा बाल्मीकि-रामायण में इस प्रकार मिलती है—

निमि ने यज्ञ के लिए वसिष्ठ का वरण किया, परन्तु वसिष्ठ ने पूर्व से ही इन्द्र द्वारा वरण किए जाने की बात निमि से कही । इस पर निमि ने ऋषि गौतम का यज्ञ के

लिए वरण कर यज्ञ कराना प्रारम्भ किया। यह यज्ञ पांच हजार वर्ष तक चलता रहा तथा गौतम ने इसे पूरा करा दिया, लेकिन ब्रह्मा के पुत्र वसिष्ठ इस पर क्रोधित हो गये और उन्होंने राजा निमि को विदेह होने का शाप दे दिया। निमि ने भी वसिष्ठ को इसी प्रकार का शाप दे दिया। जिससे वशिष्ठ विदेह हो गये तथा वायु रूप होकर स्थूल शरीर की इच्छा से वसिष्ठ अपने पिता ब्रह्मा के पास गये और देहरहित होने के कष्ट ब्रह्मा से कहे। ब्रह्मा ने उन्हें मित्रावरुण के तेज में प्रवेश कर अयोनिज रूप में उत्पन्न होने की आज्ञा दी। वसिष्ठ वरुण लोक चले गये। उस समय मित्र वरुण सहित वरुण लोक का शासन चला रहे थे। वहां वरुण ने समुद्र तट पर सखियों सहित उर्वशी को देखा और काम मोहित होकर उससे प्रेम करना चाहा। इस पर उर्वशी ने वरुण से कहा कि मित्र उनका पहले ही वरण कर चुके हैं। तब उर्वशी को देखने से स्खलित हुए अपने शुक्र को वरुण ने देव-निर्मित घड़े में छोड़ दिया। उर्वशी ने इस कृत्य से प्रसन्न होकर वरुण को अपना मन अर्पित किया और इसके पश्चात् वह मित्र के पास चली गई। मित्र ने दुष्टचारिणी उर्वशी को पुरूरवा के पास मृत्युलोक में जाने का शाप दिया तथा मित्र ने भी अपना शुक्र उसी घड़े में रख दिया। देव-निर्मित उस घड़े से मित्रावरुण के वीर्य से दो तेजस्वी ब्राह्मण अगस्त्य और वसिष्ठ पैदा हुए। घड़े से पहले अगस्त्य उत्पन्न हुए तथा कुछ दिनों के बाद उसमें वसिष्ठ पैदा हुए।

पद्मपुराण में यह कथा एक अन्य प्रकार से वर्णित है—एक बार इन्द्र ने अग्नि और वायु को दैत्यों का नाश करने की आज्ञा दी। इन दोनों के डर से तारक, कमलाक्ष, विरोचन आदि दैत्य समुद्र में जाकर छिप गये। समुद्र में रहने वाले अन्य प्राणियों की हत्या के डर से तथा अधर्म और पाप लगने से बचने के लिए अग्नि और वायु ने समुद्र में जाकर दैत्यों का नाश नहीं किया। इस पर इन्द्र ने उन दोनों को एक शरीर से मृत्युलोक में अगस्त्य रूप में उत्पन्न होने का शाप दिया। अग्नि और वायु ही इन्द्र के शाप से शापित होकर मित्र और वरुण के शुक्र से वसिष्ठ के अनुज के रूप में उत्पन्न हुए।

भविष्य-पुराण में यह कथा इस प्रकार से वर्णित है—एक समय मित्र और वरुण मन्दर पर्वत के समीप तप कर रहे थे। इन्द्र ने उनके तप में विघ्न उत्पन्न करने के लिए उर्वशी नामक अप्सरा को वहां भेजा। अप्सरा को देखते ही काम पीड़ित मुनियों का वीर्य समीपस्थ कुम्भ में गिरा, उसी से अगस्त्य ऋषि पैदा हुए।

इसके साथ ही यह कथा 'मत्स्य पुराण' में भी मिलती है, लेकिन यह 'पद्मपुराण' के ही समान है। **संदर्भ** : ऋग्वेद, 7, 33, 10-13;बृहद्देवता-5/149-154;ऋक्सर्वानुक्रमणी, अ० 12;बालमीकि-रामायण-उत्तरकाण्ड-सर्ग 55-57; पद्मपुराण-सृष्टि खण्ड, अ० 22; विष्णु पुराण-4/5; मत्स्य पुराण, अ० 61; भविष्य पुराण-उतरार्द्ध-अध्याय-106

(2) अगस्त्य द्वारा विन्ध्याचल को रोकना

सर्वप्रथम इस कथा का संकेत बालमीकि-रामायण में मिलता है, लेकिन विस्तार से इस कथा का वर्णन महाभारत में मिलता है। एक बार विन्ध्याचल ने सूर्य से अपनी प्रदक्षिणा करने को कहा। सूर्य ने ऐसा करने से मना कर दिया। इससे विन्ध्यागिरि सूर्य और

चन्द्रमा की गति रोकने के लिए आकाश में ऊपर बढ़ने लगा। कहीं बढ़ता हुआ विन्ध्याचल सूर्य का मार्ग न रोक दे यह सोचकर ऋषियों ने अगस्त्य को इसके पास भेजा। अगस्त्य इसके पास पहुंचे और दक्षिण दिशा को जाने के लिए मार्ग मांगा। उस समय विन्ध्याचल ने झुककर अगस्त्य मुनि को प्रणाम किया तथा मुनि के क्रोध और तपोवल को जानकर फिर बढ़ने की चेष्टा नहीं की।

पद्मपुराण में यह कथा महाभारत से मिलती-जुलती है।

शिव-पुराण में वर्णित कथा यद्यपि अगस्त्य ऋषि के साथ सम्बद्ध है, परन्तु इसका संबंध यहां नारद मुनि से भी जोड़ दिया गया है। यहां पर यह कथा इस प्रकार है—

एक बार नारद विन्ध्याचल के पास गये और उन्होंने वहां विन्ध्य के समक्ष सुमेरु की प्रशंसा की, जिसे सुनकर विन्ध्याचल में ईर्ष्यावश सूर्य की गति अवरुद्ध करने की इच्छा हुई और उसने शिव का पूजन कर बढ़ने की अपार शक्ति प्राप्त कर सूर्य का मार्ग रोकने के लिए बढ़ने लगा, जिसे देवताओं के आग्रह पर अगस्त्य ने झुकने के लिए बाध्य किया।

देवी भागवत पुराण के अनुसार विन्ध्य में बढ़ने की शक्ति देवी की कृपा से आती है, शेष कथा शिव पुराण के अनुसार है।

भविष्य-पुराण में यह कथा इसी प्रकार से है। मात्र यही अन्तर यहां परलक्षित होता है कि विन्ध्य द्वारा सूर्य-मार्ग को रोकने से पूर्व ही देवताओं के कहने पर अगस्त्य उसके बढ़ने को रोक देते हैं।

स्कन्द-पुराण में यह कथा दो स्थानों पर मिलती है। काशी-खण्ड-पूर्वार्द्ध-अध्याय-1 से 5 तक वर्णित कथा देवी भागवत के समान है, जबकि नागर खंड की कथा के अनुसार सुमेरु की ईर्ष्या से विन्ध्य द्वारा सूर्य का मार्ग रोकने पर सूर्य ने स्वयं वृद्ध व्यक्ति के वेश में जाकर अगस्त्य से दान मांगा और दान में उन्होंने विन्ध्याचल को रोकने के लिए कहा। इस पर मुनि अगस्त्य ने विन्ध्य के समीप जाकर तीर्थयात्रा के लिए रास्ता मांगा। विन्ध्यगिरि के नीचे होने पर पर्वत को पारकर अगस्त्य ने जब तक वे लौटकर न आयें इसी प्रकार रहने के लिए कहा और फिर पत्नी सहित दक्षिण की ओर चले गये एवं लौटकर पुनः नहीं आये।

वामन पुराण की कथा भी स्कन्द पुराण की उपर्युक्त कथा के समान है।

आनन्द रामायण में भी यह कथा मिलती है। यहां पर इस कथा में शिव-पुराण और देवी-भागवत की कथा से साम्य रखते हुए भी कुछ नवीनता है। यहां पर यह उल्लेख है कि एक बार नारद की विन्ध्याचल से भेंट हुई। उस समय विन्ध्य ने अपनी बड़ाई करना प्रारंभ किया। इस पर नारद मुनि ने सुमेरु की महिमा का वर्णन किया, जिसे सुनकर ईर्ष्यावश विन्ध्य ने आकाश में बढ़ना प्रारंभ कर दिया। **संदर्भ :** बाल्मीकि-रामायण; महाभारत-वनपर्व, अ० 104; ब्रह्म-पुराण, अ० 118; स्कन्द पुराण-काशी-खंड, अ० 1-5, नागर खंड-33-35; देवी भागवत-10/2-7, पद्म-पुराण-सृष्टि खंड, अ० 19; शिव पुराण-कोटिरुद्र-संहिता, अ० 18; भविष्य पुराण-उत्तरार्द्ध, अ० 106; वामन-पुराण,

अ० 18; आनन्द-रामायण सार- खंड-सर्ग 10/ 79-119

(3) अगस्त्य द्वारा समुद्र शोषण

अगस्त्य द्वारा समुद्र शोषण की कथा पुराण-काल की देन है तथा यह कथा भी अनेक प्रकार से यत्र-तत्र वर्णित है।

महाभारत के अनुसार देवासुर संग्राम के समय वृत्र-वध के पश्चात् दैत्य समुद्र में जा छिपे और समुद्र में अपने को निर्भय पाकर ऋषियों को मारने लगे। देवताओं के आग्रह पर अगस्त्य समुद्र को अंजलि में भरकर पी गये, ताकि असुरों का वध आसानी से किया जा सके।

पद्मपुराण के अनुसार अग्नि और पवन ने इन्द्र की आज्ञानुसार बहुत से दानवों को जला दिया। उस समय तारक, कमलाक्ष, कालदंष्ट, परावसु और विरोचन आदि दैत्य युद्ध-भूमि से भाग रक्षा के लिए समुद्र में जा छिपे और ये देवताओं द्वारा मारे न जा सके। इन्द्र ने समुद्र को सुखाने के लिए अग्नि और पवन को पुनः आज्ञा दी, लेकिन समुद्र में रहने वाले प्राणियों की हत्या के डर से उन दोनों ने इन्द्र से समुद्र-शोषण को मना कर दिया। इन्द्र ने इस पर एक ही शरीर से इन दोनों को मृत्युलोक में जाकर अगस्त्य रूप में जन्म लेने का शाप दिया। इन्द्र ने शाप से मुक्त होने का उपाय भी बताया कि अगस्त्य के रूप में समुद्र-शोषण के बाद ही तुम्हें देवयोनि प्राप्त हो सकती है। इस प्रकार उन्होंने अगस्त्य के रूप में जन्म लिया और तप से समुद्र-शोषण की शक्ति प्राप्त की तथा तारक नामक राक्षस द्वारा जगत् को अति पीड़ित देख क्रुद्ध हो उन्होंने समुद्र के जल को पी डाला।

भविष्य-पुराण के अनुसार अगस्त्य ने वातापि का मांस खाकर उसे पचाकर नष्ट कर दिया और इल्वल को अपने तेज से नष्ट कर दिया। बाद में वातापि और इल्वल के अनुयायी दैत्य अगस्त्य के तेज से डरकर समुद्र में जा छिपे और उन्होंने बदला लेने के लिए ऋषियों के तप में विघ्न डालना प्रारम्भ कर दिया तब देवताओं की प्रेरणा से अगस्त्य ने समुद्र को पी लिया और देवताओं ने दैत्यों का वध कर दिया।

स्कन्द-पुराण में यह कथा बिल्कुल नवीन प्रकार से दी गई है—

प्राचीन कालीन में हुए एक देवासुर संग्राम में ब्रह्मा, विष्णु और इन्द्रादि देवता दैत्यों से पराजित होने पर देवताओं की ओर से शिव ने युद्ध किया। शंकर ने त्रिशूल से दैत्यों को पराजित किया। पराजित होकर दैत्य समुद्र में जा छिपे तथा समुद्र में सुरक्षित पाकर दैत्यों ने देवताओं के कर्म में विघ्न डालना और उनका विनाश करना प्रारंभ कर दिया। इस पर देवताओं ने चमत्कारपुर में जाकर समुद्र-शोषण के लिए अगस्त्य से प्रार्थना की। अगस्त्य ने विशोषिणी देवी की सिद्धि कर लोक-कल्याण के लिए समुद्र को अंजलि में भरकर पी लिया तथा समुद्र के सूखने पर देवताओं ने दैत्यों को मार दिया।

मत्स्य-पुराण में यह कथा पद्मपुराण के समान है तथा आनन्द रामायण में भी इस कथा का उल्लेख मिलता है तथा यहां उल्लेख है कि अगस्त्य ऋषि ने समुद्र-पान के बाद उसे मूत्रोत्सर्ग करके पूरा किया। लोक मान्यतानुसार टिट्टभि के आग्रह पर अगस्त्य

समुद्र का पान कर गये; क्योंकि समुद्र-टिटहरी के अंडों को बहा ले गया था। **संदर्भ :** महाभारत-वनपर्व, अ० 101-105; पद्मपुराण-सृष्टि खंड अ० 19, 22; भविष्य पुराण-उत्तरार्द्ध, अ० 107; स्कंद-पुराण-नागर-खंड अ० 33-35; मत्स्य-पुराण-अ० 61; आनन्द-रामायण-विलास-9, 29, राज्यकाण्ड (उतरार्द्ध) सर्ग-18

(4) अगस्त्य द्वारा लोपामुद्रा से विवाह

एक समय अगस्त्य कहीं जा रहे थे। उन्होंने एक जगह अपने पितरों को गढ्ढे में नीचे मुंह किए लटके हुए देखा। तब अगस्त्य ने उनसे इसका कारण पूछा। इस पर पितरों ने बताया कि संतान की इच्छा करके वे इस गढ्ढे में लटके हुए हैं। यदि तुम हमारे लिए उत्तम संतान उत्पन्न कर सको तो इस नरक से छुटकारा पा सकते हैं। तब महर्षि अगस्त्य ने अपने लिए उत्तमोत्तम अंगों का भावना द्वारा संग्रह करके एक परम सुन्दरी का निर्माण किया। उन दिनों विदर्भराज पुत्र के लिए तपस्या कर रहे थे। महा तपस्वी अगस्त्य मुनि ने अपने लिए निर्मित की गई स्त्री राजा को दे दी। राजा विदर्भ ने उस कन्या का नाम लोपामुद्रा रखा और उसका पुत्रीवत पालन किया। विवाह योग्य होने पर अगस्त्य ने विवाह के लिए वह विदर्भराज से मांग ली और राजा ने अपनी कन्या लोपामुद्रा का विवाह विधिपूर्वक अगस्त्य से कर दिया। **संदर्भ :** महाभारत-वन पर्व, अ० 96-97

(5) अगस्त्य द्वारा ताड़का को शाप

ताड़का सुकेतु नामक यक्ष की पुत्री थी। ब्रह्मा के वर से उसे हजार हाथियों की शक्ति प्राप्त हुई। उसके पिता ने युवावस्था में उसका विवाह जम्भ के पुत्र सुन्द के साथ कर दिया। एक समय अगस्त्य ने सुन्द को शाप देकर मार दिया, तब यह कुपित होकर अगस्त्य को खाने के लिए दौड़ी। उस समय अगस्त्य ने क्रोधित होकर इसे शाप दे दिया कि तू मनुष्यभक्षिणी हो जा और तेरी शक्ल बुरी और भयानक हो जाए। तदनुसार ताड़का अगस्त्य के शाप से राक्षसी हो गई। **संदर्भ :** बालमीकि रामायण-बालकाण्ड, सर्ग-25; आनन्द-रामायण-सार खण्ड 1/2-सर्ग-3

अग्नि का स्वाहा से विवाह

स्वाहा प्रसूति के गर्भ से उत्पन्न दक्ष की पुत्री थी, जिसका विवाह अग्नि के साथ हुआ। पहले वह संतानहीन थी। बाद में उसके सुवर्ण और सुवर्णा दो संतानें हुईं। **संदर्भ :** ब्रह्म-अ० 128; ब्रह्मवैवर्त-2/12/1, प्रकृति-खण्ड-40; ब्रह्माण्ड-2/9/56

अज-इन्दुमती की कथा

इन्दुमती विदर्भ देश के राजा भोज की पुत्री थी, जिसने अयोध्या के सम्राट इक्ष्वाकुवंशी अज का स्वयंवर में वरण किया था। **संदर्भ :** रघुवंश-सर्ग-6/84-85

अज (प्रजापति) द्वारा सृष्टि सृजन

प्रजापति एक वैदिक देवता है, जो सम्पूर्ण प्रजाओं का स्रष्टा माना जाता है। इसे

पृथ्वी का सर्वोच्च देवता स्वीकार किया गया है।

प्रजापति सर्वप्रथम अकेले थे। कुछ समय पश्चात् प्रजा उत्पन्न करने की इच्छा से इन्होंने अपने शरीर का मांस निकालकर आहुति के रूप में अग्नि में डाल दिया। अग्नि से इनके पुत्र पैदा हुआ। तैत्तरीय ब्राह्मण के अनुसार प्रजापति ने पहले अपने अन्तर्मन से एक धूमराशि का निर्माण किया, जिससे अग्नि-ज्योति, ज्वाला एवं प्रभा उत्पन्न हुए। इसके बाद उन सबने मिलकर एक ठोस गोले का रूप धारण किया, जिससे प्रजापति का मूत्राशय बना। मूत्राशय से समुद्र, पृथ्वी, अन्तरिक्ष तथा द्यौ उत्पन्न हुए। फिर प्रजापति ने अपने शरीर से असुरों का निर्माण कर दिवस, रात्रि तथा अहोरात्रि के संधिकाल को बनाया। इस प्रकार प्रजापति ने सम्पूर्ण सृष्टि का सृजन किया। महाभारत एवं पुराणों में सृष्टि की इसी प्रकार की कथा मिलती है। **संदर्भ** : ऋग्वेद-10/11; शतपथ-ब्राह्मण-11/1/6; ऐतरेय-ब्राह्मण-5/3; तैत्तिरीय-संहिता-2/1/1, 2/2/9; महाभारत-आदि पर्व, अ० 30; वायु पुराण-65/48; मत्स्य-पुराण-171/25

अजामिल-आख्यान

अजामिल कान्यकुब्ज नगर का रहने वाला दासीपति ब्राह्मण था। वह निन्दनीय कार्य करके जैसे—जुआ, मदिरा, लूट, छल और धोखे आदि से अपने कुटुम्ब का पालन करता था। उसका सम्पूर्ण जीवन निन्दनीय कार्यों में ही व्यतीत होने लगा। उसने अपने छोटे पुत्र का नाम 'नारायण' रखा था। अजामिल इस बालक के स्नेह में बहुत बंधा हुआ था। वह अपने खाने के समय उसे खिलाता, पीने के समय पिलाता। मृत्यु के समय उसने भयावह यमदूतों को देखकर डरके 'नारायण' को पुकारा। जिसे सुनकर भगवान् के पार्षदों ने तुरन्त दौड़कर उसकी यमदूतों से रक्षा की और अजामिल को स्वर्ग को ले गये।

भागवत की भक्तिरसबोधिनी टीका तथा बाबा रघुनाथकृत विश्राम सागर के अध्याय, 8 में भी इसका वर्णन मिलता है। **संदर्भ** : भागवत 6/1-3

अजीगर्त का पिशाच होना

अजीगर्त ने परिवार के भार से दुखी और दुर्भिक्ष से पीड़ित होकर अपने पुत्र शुनःशेप को क्षत्रिय राजा हरिश्चन्द्र से धन लेकर बेच दिया। इस अधम कार्य के परिणामस्वरूप वह असाध्य रोग से पीड़ित हो गया। थोड़े दिन के बाद उसकी मृत्यु हो गई। तब उसे नरक में डाल दिया गया। यम के आदेशानुसार उसने अनेक योनियों में जन्म लिया। अन्त में वह भयानक आकृति वाला पिशाच हो गया। एक बार वह भयानक यातनाओं से पीड़ित होकर रो रहा था। उस समय वहां उसका पुत्र शुनःशेप जा रहा था। जब शुनःशेप को पता लगा कि वह उसका पिता है, तब उसने शंभु और विष्णु की आराधना कर अपने पिता को पिशाच योनि से छुड़ाया। **संदर्भ** : ब्रह्म-अ० 150

अनुसूया की कथा

अनुसूया अत्रि ऋषि की प्रिय पत्नी थी। राम वन में जाते समय जब अत्रि ऋषि के आश्रम में गये, तब ऋषि ने उन्हें अनुसूया के विषय में बताया कि वह उग्र तपस्या करने वाली एवं सतत नियमों का पालन करने वाली है। दस हजार वर्षों तक इसने घोर तपस्या की है। इसके व्रतों से ही ऋषियों के तपस्या मार्ग में आने वाली बाधाएं दूर हुई हैं। कई वर्षों तक वृष्टि न होने से, जब लोग दग्ध होने लगे, तब यह फल-फूल उत्पन्न कर आश्रम में गंगा को लायी। माण्डव्य ऋषि शाप से ग्रस्त अपनी सखी ऋषि-पत्नी से सूर्योदय करवाकर समस्त संसार को सुखमय बना दिया। **संदर्भ :** बाल्मीकि रामायण-अयोध्याकाण्ड 117-179; गरुड़-पुराण-1/142

अनुसूया द्वारा ब्रह्मा, विष्णु तथा महेश की उत्पत्ति

महर्षि अत्रि की पतिव्रता स्त्री अनुसूया के गर्भ से चन्द्र (सोम), दत्तात्रेय एवं दुर्वासा तीन पुत्र पैदा हुए। ये तीनों क्रमशः ब्रह्मा, विष्णु व महेश के अवतार थे।

भागवत के अनुसार ब्रह्मा के पुत्र अत्रि महातेजस्वी और ब्रह्मर्षि थे। उनको ब्रह्मा ने सृष्टि रचना का आदेश दिया। तदनुसार उन्होंने अपनी पत्नी अनुसूया के साथ ऋक्ष नामक कुलाचक में सृष्टि रचना के ज्ञान के लिए कठिन तपस्या की। एक समय उन्होंने आकाशमार्ग से ब्रह्मा, विष्णु और महेश को आते देखा तब अत्रि ने उनकी आराधना की। उनकी स्तुति से प्रसन्न होकर अत्रि को भगवान त्रय ने वर दिया कि हम तीनों के अंश से तुम्हारे तीन पुत्र उत्पन्न होंगे। उनके वरदान स्वरूप ब्रह्मा के अंश से चन्द्र, विष्णु के अंश से दत्तात्रेय तथा महादेव के अंश से दुर्वासा मुनि उत्पन्न हुए।

शिवपुराण के अनुसार अनुसूया ने निराहार तीन सौ वर्ष तक तप करके शंकर की कृपा प्राप्त की। शंकर की कृपा से ही इसके तीन पुत्र उपन्न हुए जो दत्तात्रेय, दुर्वासा और चन्द्र नाम से जाने गये। **संदर्भ :** विष्णु-पुराण-1/10/89; शिव पुराण, कैलाश संहिता, 2/19; भागवत-पुराण 8/7; मत्स्य, अ० 23; हरिवंश, अ० 25

अपाला का इन्द्र द्वारा चर्म-रोग ठीक करना

महर्षि अत्रि की एकमात्र कन्या अपाला श्वेत कुष्ठ से पीड़ित थी। चर्मरोग की निवृत्ति के लिए उसने इन्द्र की शरण ली। वह बड़ी निष्ठा से उनकी उपासना में लग गई तथा उनको सोमरस अर्पित किया। अपाला की उपासना से प्रसन्न होकर इन्द्र ने उसे रथ छिद्र से तीन बार निकाल दिया, जिससे उसका चर्म रोग दूर हो गया। **संदर्भ :** बृहद्देवता-6/99-106।

अभिमन्यु-वध

महाभारत के युद्ध में द्रोणाचार्य ने चक्रव्यूह का निर्माण किया, जिसका सफलता

पूर्वक भेदन अर्जुन के अतिरिक्त कोई नहीं कर सकता था। अभिमन्यु ने भी गर्भावस्था में इस विद्या को सीख लिया था, परन्तु वह चक्रव्यूह में प्रवेश करना जानता था, निकलना नहीं। अर्जुन की अनुपस्थिति में वह कौरवों के विरुद्ध युद्ध करने गया और चक्रव्यूह का भेदन कर अन्दर प्रवेश कर गया, किन्तु बाहर निकलने में असमर्थ रहा। अन्त में युद्ध करता हुआ सात महारथियों द्वारा अन्यायपूर्वक मारा गया। **संदर्भ :** महाभारत-द्रोणपर्व-अध्याय 35-49, आश्वमेधिक पर्व, अ० 61; विष्णु-4/20/51; भागवत्-9/22/33

अर्जुन सम्बन्धी कथाएं

(1) अर्जुन की परीक्षा

एक बार द्रोणाचार्य ने अपने सभी शिष्यों की परीक्षा ली और सभी को एक चिड़िया बनाकर उसकी आंख में निशाना लगाने के लिए कहा गया। इस परीक्षा में लक्ष्य भेदकर अर्जुन ने सर्वश्रेष्ठ धनुर्धारी होने की प्रशंसा प्राप्त की। **संदर्भ :** महाभारत-आदि पर्व, अ० 32

(2) अर्जुन द्वारा द्रुपद को बंदी बनाना

द्रोणाचार्य ने कौरव और पाण्डवों को अस्त्र-शस्त्र विद्या में निपुण कर दिया तब गुरु-दक्षिणा के रूप में द्रुपद को पकड़ लाने के लिए कहा। कौरव पहले द्रुपद को पकड़ने के उद्देश्य से पांचाल देश में गये। परन्तु द्रुपद ने कौरवों को युद्ध में पराजित कर दिया। तब अन्य पाण्डवों सहित अर्जुन द्रुपद-सेना से युद्ध करने के लिए उद्यत हुए। उन्होंने द्रुपद नगर का विध्वंस कर द्रुपद-सेना को पराजित कर द्रुपद को मंत्रियों सहित संग्राम-भूमि में बन्दी बनाकर द्रोणाचार्य के सामने लाकर उन्हें उपहार के रूप में दे दिया। **संदर्भ :** महाभारत, आदि पर्व, अ० 137,165

(3) अर्जुन-चित्ररथ युद्ध

पाण्डव अपनी पांचाल यात्रा के समय एक दिन गंगा तट के सोमाश्रयायण तट पर गये। वहां पर गंगा में चित्ररथ अपनी स्त्रियों के साथ क्रीड़ा कर रहा था। पाण्डवों के गंगा में घुसते ही वह क्रोधित हो उठा। अर्जुन और चित्ररथ में युद्ध हुआ और अन्त में चित्ररथ अर्जुन से पराजित हुआ। **संदर्भ :** महाभारत-आदि पर्व, 169

(4) अर्जुन का विश्वभ्रमण

एक बार अर्जुन एक ब्राह्मण की गौओं की रक्षा करने के लिए अपने धनुष बाण लेने के लिए नियम भंग करके द्रौपदी के महल में चला गया, तब उसको नियमानुसार बारह वर्ष के लिए वन में जाना पड़ा। उसने वनवास की दीक्षा ली और बारह वर्ष तक वन में रहा तथा अनेको स्थानों और तीर्थों का भ्रमण किया। **संदर्भ :** महाभारत-आदि पर्व, अ० 212

(5) अर्जुन का उलूपी से विवाह

वनवास के समय एक बार अर्जुन नहाने के लिए गंगाद्वार में गये। वहां उन्हें देखकर

कौरव्य नाग की पुत्री मोहित हो गई और उन्हें खींचकर ले गई। नागराज की पुत्री उलूपी के कहने से अर्जुन ने धर्माचरण करते हुए उससे विवाह किया। इस पर उलूपी ने उन्हें जल में सर्वत्र अजेय होने और सभी जलचरों का उनके वश में रहने का वर दिया। कुछ समय उपरान्त उलूपी के गर्भ से इरावान नामक पुत्र उत्पन्न हुआ। **संदर्भ** : महाभारत-आदि पर्व, अ० 213

(6) अर्जुन का चित्रांगदा से विवाह

अर्जुन पूर्व दिशा के तीर्थों का भ्रमण करते हुए मणिपुर नरेश चित्रवाहन के पास गये। वहां वे चित्रवाहन की पुत्री चित्रांगदा को देखकर उस पर आकर्षित हो गये तथा उन्होंने वहां चित्रांगदा से विवाह किया। चित्रांगदा के अर्जुन से एक पुत्र उत्पन्न हुआ जो बभ्रुवाहन नाम से प्रसिद्ध हुआ। **संदर्भ** : महाभारत-आदि पर्व, अ० 214

(7) अर्जुन द्वारा वर्गा अप्सरा का ग्राह-योनि से उद्धार

वर्गा नन्दनवन में विहार करने वाली अप्सरा थी। एक बार वह अन्य चार सखियों, सौरभेयी, समीची, बुदबुदा और लता के साथ लोकपाल कुबेर के घर जा रही थी। रास्ते में उन्होंने एक तेजस्वी ब्राह्मण को तपस्या में लीन देखकर उसकी तपस्या भंग करने का प्रयास किया और उस ब्राह्मण के शाप से ये ग्राह-योनि में आ गईं। शाप देते समय उस ब्राह्मण ने इन अप्सराओं से यह भी कहा था कि जब श्रेष्ठ पुरुष तुम्हें जल से बाहर खींच लायेगा उसी समय तुम्हारी शाप से मुक्ति हो जायेगी। अर्जुन अपने वनवास काल में दक्षिण तट पर सुशोभित अगस्त्य, सौभद्र आदि तीर्थों पर स्नान करने के लिए गये। वहां ग्राह रूपणी वर्गा ने अर्जुन का पैर पकड़ लिया। लेकिन अर्जुन उसे बाहर खींचकर ले आये, जिससे उसका उद्धार हो गया और उसकी प्रार्थना करने पर अर्जुन ने उसकी अन्य सखियों का भी उद्धार किया। **संदर्भ** : महाभारत-आदि पर्व, अ० 215-216

(8) अर्जुन द्वारा सुभद्रा का हरण

एक बार श्रीकृष्ण अर्जुन को द्वारिका ले गये। जिस समय अर्जुन द्वारिका में रह रहे थे, उस समय रैवत पर्वत पर एक बड़ा उत्सव हुआ, जिसमें वृष्णि, भोज और अंधकवंश के लोग सम्मिलित हुए। वृष्णिवंश के राजा उग्रसेन तथा बलराम अपनी पत्नी रेवती सहित व प्रद्युम्न एवं साम्ब आदि उपस्थित थे। इस उत्सव में वसुदेव की पुत्री सुभद्रा शृंगार से युक्त होकर पहुंची। वहां अर्जुन श्रीकृष्ण के साथ घूम रहे थे। अर्जुन सुभद्रा को देखकर उस पर आसक्त हो गये। इस बात का श्रीकृष्ण को पता लग गया। तब उन्होंने सुभद्रा का परिचय दिया कि यह मेरी बहन है। अर्जुन ने श्रीकृष्ण से सुभद्रा को प्राप्त करने का उपाय पूछा। इसे सुनकर श्रीकृष्ण ने अर्जुन को सलाह दी कि वह बलपूर्वक सुभद्रा का हरण कर ले जाए। श्रीकृष्ण की सहमति से युधिष्ठिर की आज्ञा लेकर अवसर देखकर रैवत-पर्वत से अर्जुन सुभद्रा का हरण कर खाण्डप्रस्थ की ओर चल दिया। जब सैनिकों को इसका पता चला तो उन्होंने द्वारिका पुरी में जाकर इसकी सूचना दी। इस सूचना को सुनकर भोज, वृष्णि और अंधकवंश के वीर-योद्धा क्रोधित हो

उठे और अर्जुन से युद्ध करने के लिए उद्यत हो उठे। उस समय बलराम श्रीकृष्ण से कहने लगे—'अच्युत, तुम्हारे संतोष के लिए हम सब लोगों ने अर्जुन का इतना सत्कार किया था। उसने हम लोगों का अपमान कर, केशव का अनादर कर सुभद्रा का बलपूर्वक अपहरण किया है।' यह सुनकर श्रीकृष्ण ने सभी को समझाते हुए कहा कि, 'अर्जुन ने सुभद्रा का हरण कर इस कुल का सम्मान ही बढ़ाया है, क्योंकि अर्जुन इस बात को भली प्रकार से जानते हैं कि सात्वतवंशी धन के लोभी नहीं हैं, अतः धन देकर कन्या नहीं ली जा सकती तथा स्वयंवर में कन्या के मिल जाने का पूर्ण निश्चय नहीं रहता।' इस प्रकार श्रीकृष्ण ने यादवों को समझाया और अर्जुन को लौटा लाने की सलाह दी। श्रीकृष्ण के समझाने पर वे अर्जुन को लौटा लाये और सुभद्रा का विवाह अर्जुन के साथ कर दिया। श्री कृष्ण सुभद्रा को विदा करने के लिए अन्य यादवों के साथ इन्द्रप्रस्थ गये और वहीं ठहर गये।

भागवत-पुराण में उल्लेख है कि एक बार अर्जुन तीर्थाटन करते हुए प्रभास क्षेत्र पहुंचे। वहां उन्होंने सुना कि बलराम सुभद्रा का विवाह दुर्योधन के साथ करना चाहते हैं, अतः अर्जुन के मन में सुभद्रा से विवाह करने की इच्छा जागृत हुई। एक दिन भोजन के समय अर्जुन ने सुभद्रा को देखा और उसे पत्नी बनाने का निश्चय किया। उधर सुभद्रा भी उनकी ओर आकर्षित हो गई। तब एक दिन अवसर पाकर अर्जुन ने सुभद्रा का हरण कर लिया। उस समय बलराम बहुत क्रोधित हुए, परन्तु उन्हें श्रीकृष्ण व अन्य यादवों ने समझा-बुझाकर सुभद्रा का विवाह अर्जुन से करा दिया। **संदर्भ :** महाभारत-1/220; भागवत-10/86

(9) अर्जुन द्वारा गांडीव धनुष की प्राप्ति

राजा खेतकी के यज्ञ में अधिक घृतपान कर लेने के कारण अग्नि को अजीर्ण हो गया। अर्जुन की सहायता से अग्नि ने खाण्डव वन को जला दिया। इस उपकार के बदले में अग्नि ने प्रसन्न होकर अर्जुन को गांडीव धनुष, दो अक्षय तूणीर, कपिध्वज युक्त श्वेत अश्वों का रथ आदि वस्तुएं प्रदान की। **संदर्भ :** महाभारत-आदि पर्व, अ० 222-227; भागवत-1/15/6, 10/58/285-27, 10/71/44-45

(10) अर्जुन द्वारा खांडव दहन

जिस समय श्रीकृष्ण इंद्रप्रस्थ में रह रहे थे उस समय अर्जुन ने श्रीकृष्ण से यमुना में स्नान करने के लिए आग्रह किया। अर्जुन के कहने से श्रीकृष्ण यमुना-स्नान को गये और खांडव वन में ठहर गये। उसी समय वहां पर अग्निदेव एक ब्राह्मण का वेश धारण कर आए और उन्होंने श्रीकृष्ण और अर्जुन से भूख मिटाने के लिए अन्न मांगा। श्रीकृष्ण और अर्जुन के यह पूछने पर कि उन्हें किस प्रकार का अन्न चाहिए, अग्निदेव ने बताया कि वे खांडव-वन का दहन करना चाहते हैं, परन्तु इंद्र उनके इस कार्य में बाधा उत्पन्न करता है। अतः वे इंद्र को उनके कार्य में बाधा डालने से रोकें और वन से भागने वाले अन्य जीवों को भी रोकें। यह सुनकर अर्जुन ने अग्निदेव को उनका सहयोग करने का आश्वासन दिया और उनसे नागों और पिशाचों का सामना करने के लिए उपयुक्त शस्त्र

और दिव्य रथ देने का आग्रह किया। तदुनसार अग्निदेव को अर्जुन और श्रीकृष्ण को दिव्य धनुष, अक्षय तरकस, दिव्य रथ और चक्र आदि प्रदान किये। इनके सहयोग से श्रीकृष्ण और अर्जुन ने अग्निदेव द्वारा खांडव-वन को जलाने में सहायता की एवं देवताओं से युद्ध कर इंद्र सहित उन्हें पराजित किया। उन्होंने सहस्रों पिशाचों, पक्षियों, नागों तथा पशुओं का वध किया। इसी समय वन में से नमुचि का भाई मयासुर भयभीत होकर निकला। अर्जुन को उस पर दया आ गयी। अतः उसने उसे अभयदान दे दिया। श्रीकृष्ण और अग्नि ने भी उसके वध की इच्छा त्याग दी। **संदर्भ :** महाभारत-आदि पर्व, अ० 222-227; भागवत-1/15, 10/58, 10/77; अग्नि-अ० 12

(11) अर्जुन-किरात युद्ध

पाण्डवों की वनवास अवधि में अर्जुन ने पाशुपतास्त्र की प्राप्ति के लिए शिव की भारी तपस्या की थी। शिव ने अर्जुन की परीक्षा लेने के लिए किरात रूप धारण कर अर्जुन से युद्ध किया। किरात रूप शिव को अर्जुन ने अपने युद्ध पराक्रम से प्रसन्न कर पाशुपतास्त्र प्राप्त किये। **संदर्भ :** महाभारत-वन पर्व, अ० 38-40; शिव-पुराण-शत-रुद्र संहिता, अ० 19-20; भागवत-1/15/12, 3/1/38, 10/89/34

(12) अर्जुन द्वारा पोलोम तथा कालकेयों का वध

दैत्य कुल की कन्या पुलोमा तथा महान असुरवंश की कन्या कालका ने एक हजार दिव्य वर्षों तक बड़ी भारी तपस्या करके यह वर मांगा कि हमारे पुत्रों का दुख दूर हो जाये तथा इन्हें देवता, राक्षस तथा नागों में कोई नहीं मार सके तथा उनके लिए ऐसा विमान-नगर होना चाहिए जो आकाश में विचरण करने वाला हो, उसका कोई विध्वंस न कर सके। ब्रह्मा जी ने ऐसे ही एक हिरण्यपुर नामक नगर का निर्माण किया, जिसमें कालकेय और पोलोम असुर रहते थे। उनका अर्जुन से युद्ध हुआ। वे असुर दिव्यपुर में बैठकर माया से अर्जुन के साथ युद्ध करते रहे और अन्त में अर्जुन ने पाशुपतास्त्र का प्रयोग कर उनका वध कर दिया। **संदर्भ :** महाभारत-वन-पर्व, अ० 173

(13) अर्जुन का अहिबर्न की चपेट में आना

अपने अज्ञातवास के बारहवें वर्ष में पाण्डव सरस्वती तटवर्ती द्वैतवन-प्रदेश में घूम रहे थे। तब उन्होंने विशालकाय अजगर को देखा। उनका शरीर पर्वत के समान विशाल था। उसने भीम की दोनों भुजाओं को जकड़ लिया। बलशाली भीम अजगर की चपेट से न छूट सके।

अहिबर्न का वास्तव में सम्बन्ध भीम से है। हिन्दी साहित्य में त्रुटिवश अर्जुन से अहिबर्न का सम्बन्ध जोड़ दिया गया है। **संदर्भ :** महाभारत-वन पर्व, अ० 178

(14) अर्जुन-चित्रसेन युद्ध

एक समय दुर्योधन घोषयात्रा के लिए निकला। इन्द्र के कहने पर चित्रसेन दुर्योधन का अपमान करने के लिए गया तथा युद्ध में कर्ण को पराजित करके दुर्योधन को बांधकर ले गया। अन्त में इसका अर्जुन से युद्ध हुआ और अर्जुन की विजय हुई। बाध्य होकर चित्रसेन को दुर्योधन मुक्त करना पड़ा। **संदर्भ :** महाभारत-वन पर्व,

241-245

(15) अर्जुन का बृहन्नला बनना

पाण्डवों के अज्ञातवास के समय अर्जुन विराट नगरी में बृहन्नला का वेश धारण करके रहा था। उसे राजा विराट ने उत्तरा को नृत्यादि का प्रशिक्षण देने के लिए नियुक्त किया था। **संदर्भ** : महाभारत-विराट पर्व, अ० 11

(16) अर्जुन द्वारा विराट की गायों की रक्षा

पाण्डवों के अज्ञातवास के समय दुर्योधन ने विराट की गायों का हरण कर लिया। अर्जुन बृहन्नला के रूप में विराट के पुत्र उत्तर के साथ युद्ध में उसका सारथी बनकर गया। युद्ध में से उत्तर भयभीत होकर भागने लगा। तब अर्जुन ने शमी वृक्ष से अस्त्र-शस्त्र लेकर दुर्योधन से युद्ध किया और कर्ण को भी मार भगाया और गायों की रक्षा की। **संदर्भ** : महाभारत-विराट पर्व, अ० 53; भागवत, 1/15/14

(17) अर्जुन और दुर्योधन का कृष्ण के पास युद्ध निमंत्रण देने के लिए जाना

महाभारत युद्ध की तैयारी के समय दुर्योधन और अर्जुन दोनों ही सहायता प्राप्त करने के लिए कृष्ण के पास गये। कृष्ण उस समय सो रहे थे। दुर्योधन सिरहाने की ओर जाकर बैठ गया और अर्जुन नम्रतावश पैरों की ओर जाकर बैठा। जागने पर कृष्ण को पहले अर्जुन दिखाई दिया, अतः कृष्ण ने उससे मांगने के लिए कहा। अर्जुन के मांगने पर निशस्त्र कृष्ण पाण्डवों की ओर हो गये और दस कोटि नारायण सेना दुर्योधन को दे दी। **संदर्भ** : महाभारत-उद्योग पर्व, अ० 7

(18) अर्जुन का पाताल से जलधारा निकालना

महाभारत युद्ध के दसवें दिन भीष्म घायल अवस्था में शरशय्या पर लेट गये। भीष्म के पानी मांगने पर अर्जुन ने भूमि में बाण मारकर जलधारा निकाल दी, जिससे भीष्म ने पानी पिया। **संदर्भ** : महाभारत-भीष्म पर्व, अ० 121

(19) अर्जुन और बभ्रुवाहन का युद्ध

बभ्रुवाहन चित्रांगदा से उत्पन्न अर्जुन का पुत्र था। वह मणिपुर का राजा था। जब अर्जुन अश्वमेध यज्ञ के अश्व का पीछा करते हुए मणिपुर के पास पहुंचा तो उसके आगमन की सूचना सुनकर बभ्रुवाहन ब्राह्मणों को आगे करके बहुत-सा धन लेकर अर्जुन के पास गये। इसे देखकर अर्जुन ने बभ्रुवाहन से कहा कि यह उसका क्षत्रियोचित व्यवहार नहीं है। मैं युधिष्ठिर के यज्ञ के अश्व की रक्षा करता हुआ आया हूं, अतः उसे युद्ध करना चाहिए। तब बभ्रुवाहन का अर्जुन से युद्ध हुआ और उसने अर्जुन का वध कर दिया। चित्रांगदा को जब पति वध का पता लगा तो उसने शोक किया, जिसे देखकर अर्जुन की नागपत्नी उलूपी के प्रयन्न से संजीवनी मणि द्वारा अर्जुन को पुनः जीवित किया। **संदर्भ** : महाभारत- अश्वमेध पर्व, अ० 79

अरुन्धती की कथा

अरुन्धती ऋषि वशिष्ठ की पत्नी थी। एक बार सप्तर्षि इसे बदरिकावनतीर्थ पर छोड़;

हिमालय से फल-फूल लेने गये। तब तेरह वर्षों तक अवर्षण हुआ। सप्तर्षि वहीं रहने लगे। एक दिन अरुन्धती की तपश्चर्या की परीक्षा हेतु शंकर ब्राह्मण का रूप धारण कर भिक्षा मांगने आये। कुछ भी वस्तु पास न होने के कारण इन्होंने इन्हें लोहे के बेर प्रदान किये। ब्राह्मण ने उन्हें पकाने के लिए कहा। अरुन्धती ने उन्हें अग्नि पर रख दिया तथा विभिन्न विषयों पर ब्राह्मण के साथ वार्तालाप प्रारम्भ किया। इस प्रकार बारह वर्ष व्यतीत हो गये। हिमालय पर गये सप्तर्षि फल-फूल लेकर लौट आये। तब शंकर ने साक्षात् रूप में प्रकट होकर अरुन्धती की कठिन तपस्या का वर्णन उनके सम्मुख किया तथा उसकी इच्छानुसार वही तिथि, पवित्र स्थान होकर प्रसिद्ध होने के वरदान दिया। इसी से आकाश में सप्तऋषियों के समीप इसका उदय होता है। **संदर्भ** : महाभारत-शल्य पर्व, अ० 48; ब्रह्माण्ड-3/8/86-87

अश्वत्थामा का पाण्डवों की सेना पर नारायण अस्त्र का प्रयोग

धृष्टद्युम्न ने मेरे पिता को छल से मार डाला है, यह जानकर अश्वत्थामा ने क्रोध से भरकर भगवान नारायण से द्रोणाचार्य को प्राप्त नारायणास्त्र, जो उन्होंने अश्वत्थामा को दिया था, प्रकट किया और उसे पांडवों की सेना पर छोड़ दिया। इस अस्त्र से पृथ्वी कांप उठी, समुद्र में ज्वार आ गया, समुद्र में मिलने वाली बड़ी-बड़ी नदियां अपने प्रतिकूल दिशा में बहने लगीं। सम्पूर्ण दिशाओं में अंधकार छा गया और संपूर्ण दिशाएं मलिन हो गईं। तब श्री कृष्ण के बताने पर सभी सैनिक अपने वाहनों से उतरकर अपने हथियार डालकर उसके समक्ष खड़े हो गये, जिससे उन पर उसका प्रभाव नहीं पड़ा। एकमात्र भीमसेन रथ पर आरूढ़ थे, अतः नारायणास्त्र का सम्पूर्ण प्रभाव उनकी ओर बढ़ा। श्रीकृष्ण ने भीमसेन को रथ से उतारकर नारायणास्त्र को शान्त किया। **संदर्भ** : महाभारत-द्रोणपर्व, अ० 195

अश्वत्थामा द्वारा द्रौपदी के पांच पुत्रों का वध

दुर्योधन की आज्ञा से कृपाचार्य ने अश्वत्थामा का अभिषेक किया। उस समय अश्वत्थामा, कृपाचार्य और कृतवर्मा तीनों दक्षिण दिशा की ओर चले तथा सूर्यास्त के समय सेना की छावनी के भीतर ठहर गये। वहां कृपाचार्य व कृतवर्मा को नींद आ गई। तब अश्वत्थामा ने पास के बरगद के वृक्ष पर देखा कि वहां सोए कौओं पर एक उल्लू ने आक्रमण कर उनको मार डाला। इस दृश्य को देखकर अश्वत्थामा ने छल से काम लेने का संकल्प किया और सोते हुए पांडवों का सिर काटने का निश्चय किया। उसने रात में पांडव-शिविर पर आक्रमण कर दिया और सोते हुए अनेक वीरों का वध कर द्रौपदी के पुत्रों का वध कर दिया। जब युधिष्ठिर को ज्ञात हुआ कि पांचाल व उनके पुत्र अश्वत्थामा ने मार डाले तो वह बहुत दुखी हुए। द्रौपदी ने व्याकुल हो भीम से अश्वत्थामा के वध का आग्रह किया। भीमसेन क्रोधित हो अश्वत्थामा को पकड़ने के लिए चल दिए। गंगा तट पर आकर भीमसेन ने उसे पकड़ लिया और उससे उसकी मणि छीनकर द्रौपदी

को लाकर दे दी, जिससे द्रौपदी का क्रोध शान्त हुआ। **संदर्भ :** महाभारत-सौप्तिक पर्व, अ० 1-15; भागवत-1/7

अश्वपति को ऋषियों का उपदेश

एक बार उपमन्यु के पुत्र प्राचीनशाल, पुलुष-पुत्र सत्ययज्ञ, भल्लवि पौत्र इन्द्रद्युम्न, शर्कराक्ष का पुत्र जन और अश्वतराश्व-पुत्र दुडिल महागृस्थक और श्रोत्रिय एकत्र होकर आपस में आत्मा और ब्रह्म के सम्बन्ध में विचार-विमर्श करने लगे। पर जब वे किसी ठीक निर्णय पर न पहुंचे, तब उन्होंने अरुण के पुत्र उद्दालक के पास जाकर इस रहस्य को समझने का निश्चय किया। उद्दालक ने जब उन्हें दूर से ही आते देखा तभी उनका अभिप्राय समझ लिया और विचारा कि इसका ठीक-ठीक निर्णय तो मैं कर नहीं सकता, अतः इन्हें केकय के पुत्र राजा अश्वपति के पास भेजना चाहिए और उनको अश्वपति के पास भेज दिया। राजा ने सभी ऋषियों का सत्कार कर उन्हें पर्याप्त धन दिया, परन्तु ऋषि इससे संतुष्ट नहीं हुए उन्होंने राजा से वैश्वानर आत्मा को समझाने की प्रार्थना की। तब राजा अश्वपति ने आत्मा और ब्रह्म के सम्बन्ध में उन्हें ज्ञान दिया। **संदर्भ :** छान्दोग्य-उपनिषद्-5/11

अश्विनीकुमारों की उत्पत्ति

त्वष्टा की पुत्री संज्ञा सूर्य की पत्नी थी। वह सूर्य के श्यामवर्ण रूप को न सह पायी। अतः उसने अपनी छाया से दूसरी संज्ञा की रचना की। उसे यम-यमी के पालन के लिए छोड़कर वह अपने पिता के घर गई। परन्तु पिता ने उसे वहीं रखा, तब वह घोड़ी का रूप धारण कर उस देश में चरने लगी। सूर्य को जब वास्तविकता का पता चला तो वह क्रोधित होकर त्वष्टा के पास गया। त्वष्टा ने सूर्य को समझा बुझाकर शान्त कर लिया और उसके तेज को भी कम कर दिया। तब योगबल से सूर्य ने संज्ञा का पता लगाया और घोड़े का रूप धारण कर उसके मुंह में मैथुन किया। दूसरा पुरुष समझकर सूर्य के वीर्य को संज्ञा ने नाक से बाहर निकाल दिया उससे अश्विनीकुमार पैदा हुए। जो कि नासत्य और दस्र नाम से प्रसिद्ध हुए।

'ब्रह्म पुराण' के अध्याय 89 के अनुसार त्वष्टा की पुत्री का नाम उषा था। सूर्य ने घोड़ी के रूप में वहां विचरण कर रही उषा के मुख से अपने घोड़े वाले मुख को मिला दिया। त्वाष्टी (उषा) ने अपने पति को पहचानकर मुख से वीर्य त्याग दिया। वह वीर्य गंगा में जा गिरा, जिससे अश्विनीकुमार उत्पन्न हुए। **संदर्भ :** ब्रह्म, अ० 6, 89; मत्स्य, अ० 11

अश्विनीकुमारों का दध्यङ् ऋषि का शिष्यत्व ग्रहण करना

दध्यङ् ऋषि प्रवर्ग्य और मधु विद्या के ज्ञाता थे। यह विद्या इन्हें इन्द्र ने दी थी तथा यह वचन लिया था कि वह किसी अन्य को यह विद्या नहीं सिखलायेंगे और यदि किसी

अन्य को वे विद्या देंगे तो वह (इन्द्र) उनका सिर काट देगा। दध्यङ् ने विद्या प्राप्त करने के पश्चात् सोचा कि यह शरीर तो नाशवान है। इसकी चिन्ता करते हुए किसी को इस विद्या को न बताना उचित नहीं। उसी समय विद्याध्ययन के लिए अश्विनी कुमार पहुंचे। दध्यङ् अश्विनीकुमारों को मधु-विद्या देने को तैयार हो गये, लेकिन उन्होंने इन्द्र द्वारा उनके सिर काटे जाने की संभावना को भी बताया। अश्विनीकुमारों को जब इस रहस्य का पता लगा तो उन्होंने दध्यङ् का सिर काटकर छिपा दिया और उसके स्थान पर घोड़े का सिर लगा दिया और दध्यङ् से प्रवर्ग्य तथा मधु विद्या का अध्ययन किया। जब इन्द्र को पता लगा तो उसने आकर दध्यङ् का घोड़े वाला सिर काट दिया, तब अश्विनी कुमार ने उनका सुरक्षित रखा हुआ सिर उनको लगाकर उन्हें पुनः जीवित कर दिया। **संदर्भ :** ऋग्वेद-1/80/16; शतपथ ब्राह्मण-4/1/1/18-25; बृहद्देवता-3/18/27

अष्टावक्र सम्बन्धी कथाएं

(1) अष्टावक्र का जन्म

ये उद्दालक की पुत्री सुजाता के गर्भ से उत्पन्न मुनि कहोडक के पुत्र थे। इन्होंने गर्भावस्था में ही अपने पिता से कहा था कि रात-दिन पठन-पाठन के उपरान्त भी आपका अध्ययन शुद्ध उच्चारणपूर्ण नहीं है। अतः पिता ने अपमान अनुभव करते हुए, उन्हें अष्टावक्र होने का शाप दिया था। **संदर्भ :** महाभारत-वन पर्व, अ० 132/10-11

(2) अष्टावक्र का राजा जनक की सभा में जाना

अष्टावक्र यह जानकर कि उनके पिता को राजा जनक के बंदी ने शास्त्रार्थ में हराकर पानी में डुबो दिया है वे अपने मामा चित्रकेतु के साथ राजा जनक की सभा में गये और वहां पर उनके मुख्य बन्दी को शास्त्रार्थ में पराजित किया और अपने पिता को वरुणलोक से वापस बुलाया। **संदर्भ :** महाभारत-वन पर्व, अ० 133

(3) अष्टावक्र द्वारा जनक को डांटना

राजा जनक की सभा में जब शास्त्रों के मर्मज्ञ सुप्रसिद्ध विद्वान उपस्थित थे, उस समय ऋषि कुमार अष्टावक्र जी वहां गये। उनकी बेढंगी सूरत को देखकर सभा के सभी लोग हंस पड़े। तब उसके साथ अष्टावक्र भी हंसने लगे। राजा जनक ने अष्टावक्र से उसके हंसने का कारण पूछा तो अष्टावक्र ने कहा कि मैं यह देखकर हंस रहा हूं कि मैं विद्वत् परिषद् के बदले चमारों की सभा में आ गया, जो मेरे शरीर और चमड़े को देखकर हंस रहे हैं। इससे समस्त सभा के मस्तक झुक गये। **संदर्भ :** कल्याण-सत्कथा अंक

अहिरावण-वध (महिरावण-वध)

पाताल पुरी का राजा अहिरावण रावण का पुत्र था। यह राम-लक्ष्मण को धोखे से हरण करके अहिरावणपुरी में ले गया था। वहां वह राम-लक्ष्मण की शक्ति को बलि

देना चाहता था। हनुमान पातालपुरी गये तथा अपने पुत्र मकरध्वज की सहायता से अहिरावण का वध करके राम-लक्ष्मण को उसके बंधन से छुड़ाकर लाये। यह भी विश्वास किया जाता है कि अहिरावणपुरी में यम की तलवार लगी है। हनुमान उस (जमकातर) यम-तलवार को तोड़कर राम-लक्ष्मण की मुक्ति कराकर लाये थे।

जैमिनी भारत में ऐरावण को रावण का सखा बताया गया है, जबकि आनन्द रामायण में इसका पुत्र के रूप में उल्लेख है। **सन्दर्भ** : जैमिनी-भारत, आनन्द रामायण-1/11, 7/14; कृतिवासी रामायण

आग्नीध्र-चरित्र

राजा प्रियव्रत ने सारी पृथ्वी यथायोग्य अपने पुत्रों को बांट दी और स्वयं तपस्या करने चले गये। जम्बूद्वीप का राज्य आग्नीध्र को दिया। वे अपने पिता की आज्ञा का अनुसरण करते हुए जम्बूद्वीप की प्रजा का धर्मानुसार पालन करने लगे। एक बार वे पितृलोक की कामना से सत्पुत्र प्राप्ति के लिए पूजा की सब सामग्री जुटाकर सुर-सुन्दरियों के क्रीड़ास्थल मन्दराचल की एक घाटी में गए और तपस्या में तत्पर होकर एकाग्रचित्त से प्रजापतियों के पिता ब्रह्मा जी की आराधना करने लगे। आदिदेव भगवान् ब्रह्मा जी ने उनकी अभिलाषा जान आग्नीध्र के पास अपनी सभा की गायिका पूर्वचित्ति नाम की अप्सरा को भेजा। आग्नीध्र ने रति चातुर्यमयी मीठी-मीठी बातों से उस अप्सरा को प्रसन्न कर लिया तथा वह अप्सरा आग्नीध्र के पास रही तथा उसके आग्नीध्र से नाभि, किम्पुरुष आदि नौ पुत्र हुए। नौ पुत्र उत्पन्न कर पूर्वचित्ति उन्हें राजभवन में छोड़कर फिर ब्रह्मा के पास चली गयी। **सन्दर्भ** : भागवत-5/2

आदित्य का जन्म

एक बार सूर्य भगवान अपने तेज से प्रकट हुए। उन्हें देखकर अदिति ने प्रणाम किया। तब अदिति से उन्होंने वर मांगने के लिए कहा। उस समय अदिति ने उनसे अपने पुत्र रूप में जन्म लेने को कहा। तदुपरान्त सूर्य ने अदिति के गर्भ से जन्म लिया और देवताओं के शत्रु दैत्य और दानवों का शमन किया। अदिति के उदर से जन्म लेने के कारण इनका नाम आदित्य पड़ा। सूर्य तेजस्वी किरणों को दिशाओं मे फैलाते हुए गर्भाण्ड से प्रकट हुए थे। उस समय ऋषियों ने इस अण्ड को 'मरित' कहा था। इसलिए इसका नाम 'मार्तण्ड' हुआ। **संदर्भ** : मार्कण्डेय-पुराण

आरुणि और श्वेतकेतु का संवाद

श्वेतकेतु महर्षि अरुण का पौत्र और आरुणि का पुत्र था। उसे विद्या का पात्र जानकर और उसके उपनयन संस्कार के समय का अतिक्रम देखकर उसके पिता आरुणि ने कहा, हे श्वेतकेतो ! तू हमारे कुल के अनुरूप गुरु के पास जाकर ब्रह्मचर्य-वास कर। वह बारह वर्ष की अवस्था में उपनयन कराकर चौबीस वर्ष का होने पर सम्पूर्ण वेदों का अध्ययन

कर अपने को बड़ा बुद्धिमान और व्याख्या करने वाला मानते हुए उदण्डभाव से घर लौटा। वह उस समय अनूचानमानी और अविनीत था। अपने पुत्र को अपने विपरीत स्वभाव वाला, उद्दण्ड और अभिमानी हुआ देखकर आरुणि ने पूछा कि वह अपने उपाध्याय से क्या विशेषता प्राप्त करके आया है? क्या तूने गुरु से यह आदेश पूछा है जिसके द्वारा अश्रुत श्रुत हो जाता है, अमूर्त मूर्त हो जाता है और अविज्ञात विशेष रूप से ज्ञात हो जाता है। तब श्वेतकेतु ने इस संबंध में अपनी अनभिज्ञता प्रकट की तो आरुणि ने उसे अनेक दृष्टान्त देकर आत्मतत्व का आदेश समझाया। **संदर्भ** : छान्दोग्य-उपनिषद-6/1

आरुणि पांचाल की गुरुभक्ति

आरुणि पांचाल आयोद धौम्य का शिष्य था। एक बार धौम्य ने उसे अपनें खेत की टूटी हुई मेड़ को बांधने के लिए भेजा। अपने उपाध्याय का आदेश पाकर आरुणि वहां जाकर धान की क्यारी की मेड़ बांधने लगा। लेकिन पानी के तेज प्रवाह के कारण वह मेड़ बांधने में असमर्थ रहा। तब वह खेत की टूटी मेड़ के स्थान पर स्वयं लेट गया। उधर काफी समय तक आरुणि आश्रम में नहीं लौटा तो धौम्य ऋषि स्वयं खेत पर उसको देखने गए और यह जानकर कि वह मेड़ के स्थान पर स्वयं लेट गया है तो उससे प्रसन्न होकर उसे सम्पूर्ण वेद और समस्त धर्मशास्त्र स्वयं उसकी बुद्धि में प्रकाशित होने का वर दिया। आरुणि मेड़ को विदीर्ण करके अपने गुरु के पास उठकर आया था, अत: उसका नाम उद्दालक हुआ। **संदर्भ** : महाभारत आदि पर्व, अ० 3

आस्तीक का नागों की रक्षा करना

आस्तीक ऋषि जरत्कारु तथा वासुकी की बहन जरत्कारु का पुत्र था। जब जनमेजय ने सर्पयज्ञ किया तथा सभी सर्पयज्ञ की आग में आहुति बनकर गिरने लगे तो जरत्कारु ने अपने पुत्र आस्तीक को बुलाकर अपने भाई की रक्षा करने को कहा। आस्तीक जनमेजय के यज्ञ में जाकर जनमेजय, यज्ञ, ऋत्विजों और अग्निदेव की स्तुति की। इस पर प्रसन्न होकर जनमेजय ने आस्तीक से वर मांगने को कहा। उधर ऋत्विज तक्षक नाग को यज्ञ में शीघ्र भस्म करना चाहते थे। उस समय तक्षक इन्द्र की शरण में था। तब जनमेजय ने होताओं से इन्द्र सहित तक्षक की आहुति देने को कहा। इस प्रकार तक्षक की आहुति देने के लिए राजा द्वारा प्रेरित होने पर होता ने इन्द्र के समीपवर्ती तक्षक नाग का अग्नि में आवाहन किया और उसके नाम की आहुति डाली। आहुति दी जाने पर क्षण भर में इन्द्र सहित तक्षक नाग आकाश में दिखाई दिया। तभी आस्तीक ने जनमेजय से वर मांगा कि तुम्हारा यज्ञ यहीं समाप्त हो जाए। तदनुसार वर देने पर यज्ञ समाप्त हो गया तथा तक्षक नाग सहित सर्पों की रक्षा हुई। **संदर्भ** : महाभारत-आदि पर्व, अ० 54

इन्द्र सम्बन्धी कथाएं

(1) इन्द्र की असुरवासिनी पर विजय

पुराणों में देव और असुरों में हुए अनेक युद्धों का उल्लेख मिलता है, जिसमें अन्ततः इन्द्र विजयी हुए। **संदर्भ** : भागवत-8/10; मत्स्य, अ० 152; ब्रह्माण्ड-3/72/70-106

(2) इन्द्र का अहल्या के साथ व्यभिचार

इन्द्र ने काम पीड़ित होकर गौतम का रूप धारण कर गौतम की पत्नी अहल्या के साथ रमण किया था। गौतम ने अहल्या को सूखी नदी होने का तथा इन्द्र को सहस्र भग होने का शाप दे दिया। इस कृत्य में चन्द्रमा ने इन्द्र की सहायता की थी, अतः क्रोधित गौतम ने चन्द्रमा को कमण्डल और मृगछाला फेंककर मारी इससे चन्द्रमा में दाग पड़ गये। बहुत अनुनय-विनय के पश्चात् उन्होंने अहल्या को गौतमी गंगा (गोदावरी) तथा इन्द्र को योनि चिह्न के स्थान पर सहस्र नेत्र होने का वरदान दिया।

वैदिक साहित्य से ही इस कथा के सूत्र देखने को मिल जाते हैं। शतपथ ब्राह्मण में इन्द्र के विशेषणों में, अहल्याये जार' शब्द का प्रयोग इस कथा का संकेतक है, जो कि जैमिनीय ब्राह्मण, षडविंश, तैत्तिरीय आरण्यक, लाटायन श्रौतसूत्र तथा दाह्यायण श्रौतसूत्र में भी स्पष्ट रूप में मिलता है।

सर्व प्रथम यह कथा बाल्मीकि रामायण के बालकाण्ड व उत्तरकाण्ड में मिलती है। इनमें मूलतः समानता होते हुए भी कतिपय अन्तर मिलता है। बालकण्ड में यह कथा निम्न प्रकार से मिलती हैं—

एक दिन मुनि गौतम के अपने आश्रम से दूर चले जाने पर गौतम का रूप धारण कर इन्द्र ने गौतम की पत्नी अहल्या के पास जाकर उससे समागम किया। इन्द्र रमण करके जैसे ही आश्रम से निकल रहा था, उसी समय गौतम से उसका साक्षात्कार हो गया। मुनि ने अपना रूप धारण किए पापबुद्धि इन्द्र को देखकर उसे वृषण रहित होने का शाप दिया तथा अहल्या को वायु मात्र भक्षण किए हुए, निराहर और भस्मशायिनी रूप में अदृश्य रहकर हजारों वर्ष तक निर्जन आश्रम में तप करते रहने का शाप दिया। अहल्या की प्रार्थना पर गौतम ऋषि ने उसे शाप से छुटकारे का उपाय बताया कि दशरथ पुत्र राम के दर्शन करने पर वह पवित्र होगी और पुनः शरीर धारण कर मेरे पास रहने योग्य बनेगी। इस प्रकार गौतम ऋषि इन्द्र और अहल्या को शाप देकर उस आश्रम को छोड़ हिमालय पर तप करने चले गये।

'रामायण' के उत्तरकाण्ड में यह कथा निम्न प्रकार से वर्णित है तथा इस कथा को मेघनाद से पराजित इन्द्र को ब्रह्मा ने सुनाया है। ब्रह्मा ने इन्द्र को बताया कि उन्होंने जिस बुद्धि से प्रजा की सृष्टि की उस समय प्राणी के अंग-प्रत्यंग की सुन्दरता को लेकर एक स्त्री का निर्माण किया और उस स्त्री का नाम अहल्या रखा, क्योंकि उसके शरीर में कोई विरूपता नहीं थी। कन्या निर्माण कर धरोहर के रूप में ऋषि गौतम को दे दिया। गौतम ने बड़े संयम के साथ रहकर इन्द्र को वापस कर दिया। परन्तु मुनि के संयम को

देखकर ब्रह्मा ने वह कन्या गौतम को दे दी, इससे देवताओं को बड़ी निराशा हुई। तब एक दिन इन्द्र ने कामातुर हो उसका धर्म नष्ट किया। इस पर महर्षि गौतम ने इन्द्र को शाप दिया कि इन्द्र शत्रु द्वारा पराभव प्राप्त कर पकड़ा जाएगा, जगत के हर व्यभिचार का आधा पाप इन्द्र को लगेगा, इन्द्र-पद सदैव एक इन्द्र के पास नहीं रहेगा। इसके साथ ही गौतम ने अहल्या को शाप दिया कि वह रूपहीन होकर आश्रम के समीप रहेगी तथा संसार में उसके समान सुन्दर स्त्रियां भी होंगी। अहल्या के निवेदन करने पर तथा ऋषि गौतम वस्तुस्थित को जानकर भगवान राम के आतिथ्य पर शाप-मोचन की बात कहकर आश्रम छोड़कर चले गये।

'महाभारत' में ब्राह्मणों के महत्त्व प्रदर्शन प्रसंग में केवल एक श्लोक में इन्द्र द्वारा अहल्या के घर्षण का संकेत मिलता है।

'ब्रह्मपुराण' में यह कथा 'रामायण' के उत्तरकाण्ड के समान दी गई है, परन्तु इसमें नवीनता यह है कि ब्रह्मा द्वारा अहल्या के गौतम को दिए जाने पर इन्द्र गौतम के प्रति ईर्ष्यालु हो गया और ब्राह्मण का रूप धारण कर गौतम ऋषि के आश्रम में रहा। ऋषि गौतम के शिष्यों सहित कहीं बाहर चले जाने पर इन्द्र ने गौतम का रूप बनाकर अहल्या के साथ समागम किया और मुनि के लौटने पर वह डर करके विडाल बन गया। इन्द्र के दुष्कर्म को देखकर उसे सहस्रभग होने का तथा अहल्या को शुष्क नदी बनने का शाप दिया। जब अहल्या ने गौतम को अपने चरित्र की सफाई दी, तब उसे गौतम ने यह वरदान दिया कि उसका जब गौतमी गंगा से स्पर्श होगा तभी उसको पूर्वरूप प्राप्त होगा।

'पद्मपुराण' में यह कथा उपर्युक्त प्रकार से ही मिलती है परन्तु मुनि गौतम का पुष्कर तीर्थ में सन्ध्योपासना के समय इन्द्र अहल्या की करतूत को देखना तथा इन्द्र का देवी की उपासना से सहस्रभग के स्थान पर सहस्रनेत्र पाना यहां की विशेषता है।

देवी भागवत पुराण में इस कथा का नहुष और शची के संदर्भ में मात्र संकेत मिलता है।

'ब्रह्मवैवर्त पुराण में' यह कथा मूलतः अपने पूर्ववर्ती ग्रंथों से मिलती है, परन्तु फिर भी पर्याप्त अन्तर परिलक्षित होता है। एक समय इन्द्र सूर्य-पर्व के अवसर पर अहल्या के सौन्दर्य और उसे विवस्त्र गंगा में स्नान करते हुए देखकर कामासक्त हो गया और उसने अहल्या से समागम की प्रार्थना की। इस पर अहल्या ने परस्त्रीगामी इन्द्र की बड़ी भर्त्सना की। काम पीड़ित इन्द्र गौतम के वेश में उपयुक्त समय पाकर आश्रम पर पहुंचा और अहल्या का रमण किया। गौतम ने आश्रम पर लौटकर इन्द्र को देख उसे सहस्रभग होने का शाप दिया। बाद में अहल्या को निरपराध जान साठ हजार वर्ष बाद राम के चरण-रज से पुनः शापमुक्त होने को कहा। इन्द्र ने एक हजार वर्ष सूर्य की आराधना की जिससे सूर्य-कृपा से उसके सहस्र भग-चिह्न सहस्र नेत्रों में परिवर्तित हो गये।

लिंग-पुराण के अनुसार मुनि इन्द्र के कुकृत्य को जानकर न उसे शाप देते हैं, बल्कि उसके वृषण भी उखाड़ देते हैं।

स्कन्द-पुराण के अनुसार गौतम ने इन्द्र को सहस्रभग होने का और अहल्या को शिला

होने का शाप दिया। अपनी माता के संबंध में शाप सुनकर शतानन्द बड़ा दुखी हुआ। पुत्र शतानन्द की प्रार्थना पर गौतम ने राम के पद-रज से अहल्या की शाप से मुक्ति बताई।

अन्य ग्रंथों में भी यह कथा थोड़े-बहुत अन्तर के साथ मिलती है, लेकिन कथा का मूल रूप अपने पूर्ववर्ती ग्रंथों के अनुसार ही है। संदर्भ : शतपथ-ब्राह्मण-3/3/4/17-19; षड्विंश ब्राह्मण-1/1/19; तैतिरीय-आरण्यक-1/1/3/, लाटायन-श्रौत सूत्र-1/3/1-2 बालमीकि-रामायण, बाल-काण्ड-अ० 48, उत्तर-काण्ड, अ० 30;महाभारत, शान्ति पर्व अध्याय-342; ब्रह्मपुराण, अ० 87;पद्मपुराण-सृष्टिखण्ड अ० 51;भागवत-9/21/33-34; देवी-भागवत-6/8/12-16; ब्रह्मवैवर्त पुराण-श्रीकृष्ण जन्म खण्ड, अ० 31, 47, 61;स्कन्द पुराण;नागर खण्ड-अ० 29, 207-208 श्लोक 27; लिंगपुराण गणेश पुराण-खण्ड-1 सर्ग 30-31; अध्यातम रामायण-1/5; आनन्द रामायण-सारखण्ड, 3/16-23; तंत्रवार्तिक-1/3/7; योग-वासिष्ठ-3/89-90

(3) इन्द्र का इन्द्राणी (पुलोमजा) के साथ विवाह

पुलोमा दक्ष पुत्री दनु और कश्यप के प्रधान पुत्रों में से एक असुर पुत्र थे और वृत्रासुर के साथ इन्द्र से लड़े थे। यह इन्द्र द्वारा मारे गये तथा इनकी पुत्री शची का इन्द्र से विवाह हुआ। **संदर्भ :** विष्णु-1/21/5; भागवत-6/6/31, 68; मत्स्य-6/20

(4) इन्द्र को कल्पतरु की प्राप्ति

अमृत प्राप्ति के लिए देव और असुरों द्वारा किए गए समुद्र-मंथन से चौदह रत्न निकले थे, जिनमें से कल्पवृक्ष एक है। यह इन्द्रलोक का अलंकार है तथा याचकों की मनोकामना पूर्ण करता है। **संदर्भ :** भागवत-8/8/6

(5) इन्द्र का पर्वतों के पंख काटना

प्राचीनकाल में पर्वतों के पंख थे, उनके इधर-उधर उड़ने में ऋषि-मुनियों के तप में विघ्न होने का डर था। अतः इन्द्र ने उनके पंख काट डाले। **संदर्भ :** भागवत-2/7/1; स्कन्द-1/19/9

(6) इन्द्र द्वारा सौ यज्ञ करना

देवराज इन्द्र ने अनेक स्थलों पर सौ यज्ञ किये थे, इसी से उनका नाम शतक्रतु पड़ा। **संदर्भ :** भागवत-4/19/2, 29

(7) इन्द्र-वैश्वानर की कथा

वैश्वानर एक पुण्यात्मा ब्रह्मचारी तथा शिव-भक्त थे। नारद से अल्पायु होने का समाचार प्राप्त होने पर इन्होंने महादेव की पूजाकर अग्नि का पद प्राप्त किया और एक लोकपाल होकर देव जाति में सम्मिलित हो गए। **संदर्भ :** शिव-शतरुद्र संहिता अ० 8; स्कन्द-काशीखण्ड-अ० 10-11

(8) इन्द्र वृत्रासुर युद्ध

वृत्रासुर एक दानव था, जो कि त्वष्टा का पुत्र था। उसका वध करने के लिए इन्द्र ने दधीचि की हड्डियों को मांगकर एक वज्र का निर्माण किया था तथा वृत्र से युद्ध कर

उसका वध कर दिया था ।

इन्द्र तथा वृत्र की शत्रुता के बीज वैदिक-साहित्य से ही मिलते हैं । यहां पर वृत्र का एक अन्तरिक्षीय बैल का उल्लेख हैं। इसका वध करके इन्द्र ने वृत्रहन की उपाधि प्राप्त की थी ।

'पद्मपुराण' में इसे दिति का पुत्र बताया गया है, जबकि भागवत में इसकी माता का नाम अनायुधा दिया गया है । अधिकांश पुराणों में यह उल्लेख मिलता है कि वृत्र ने पिता की आज्ञा से ब्रह्मा की घोर तपस्या कर अमरत्व का वर प्राप्त किया था तथा ब्रह्मा ने उसे शुष्क एवं आर्द्र लोहे एवं काष्ठ आदि से न मरने का वर दिया था । इन्द्र ने विष्णु की सहायता से छल-कपट से इसका वध किया । **संदर्भ :** ऋग्वेद-8/78;तैतिराय-संहिता-2/4/12; बाल्मीकि रामायण, उत्तरकाण्ड-85-86; महाभारत, उद्योग पर्व, अ० 9, शान्ति पर्व, अ० 282, आश्वमेधिक पर्व, अ० 11; भागवत-15/19/22, 6/1/6, 6/12; स्कन्द-1/1/6; माहेश्वरखंड-अ० 1; देवी भागवत-6/6, पद्मपुराण-भूमिखंड अ० 23-24

(9) इन्द्र को ब्रह्म हत्या लगना

ब्राह्मणों से प्ररणा प्राप्त कर देवराज इन्द्र ने वृत्रासुर का वध कर दिया था, जिससे ब्रह्महत्या इन्द्र के पीछे लग गई थी । ब्रह्महत्या स भयभीत होकर इन्द्र मानसरोवर के कमलनाल क तन्तुओं में एक हजार वर्षों तक छिपे रहे थे । **संदर्भ :** बाल्मीकि-रामायण, उत्तरकाण्ड 85-86; महाभारत-उद्योग पर्व, अ० 10, शान्ति पर्व, अ० 282; भागवत-6/13

(10) इन्द्र द्वारा देवसेना की रक्षा

एक बार इन्द्र मानस पर्वत पर गए । वहां उन्हें एक स्त्री के मुख से निकला भयंकर आर्तनाद सुनाई दिया । उसे केशी दानव ने पकड़ रखा था । इन्द्र ने केशी से उसे छोड़ देने के लिए कहा । इस पर दोनों में युद्ध हुआ तथा युद्ध में केशी पराजित हो भाग खड़ा हुआ । इन्द्र देवसेना को ब्रह्मा के पास ले गए और ब्रह्मा से उसे पति प्रदान करके के लिए कहा । तब ब्रह्मा ने कहा कि जो देव सेना का पराक्रमी सेनापति होगा वही इस देवी का पति होगा । तदनुसार स्कन्द के देव-सेना के सेनापति के पद पर अभिषक्त होने पर देवसेना से उनका विवाह हुआ । **संदर्भ :** महाभारत-वनपर्व-223-229

(11) इन्द्र द्वारा विश्वरूप (त्रिशिरा) का वध

भागवत के अनुसार बृहस्पति के देवताओं को त्यागकर चले जाने पर इन्द्र ने त्वष्टा के पुत्र विश्वरूप को गुरु बना लिया । विश्वरूप के तीन मुंह थे । वे एक मुंह से सोमरस तथा दूसरे से सुरा पीते थे तथा तीसरे से अन्न खाते थे । वे यज्ञ के समय प्रत्यक्षरूप में ऊंचे स्वर में बोलकर बड़े विनय के साथ देवताओं को आहुति देते थे । साथ ही वे छिप-छिपकर असुरों को भी आहुति देते थे । देवराज इन्द्र ने उनके इस कपट व्यवहार को जान कर उनके तीनों सिर काट लिये । विश्वरूप का सोमरस पीने वाला सिर पपीहा, सुरापान करने वाला गोरैया और अन्न खाने वाला तीतर हो गया ।

'महाभारत' के अनुसार विश्वरूप कोमल स्वभाव वाला तपस्वी, जितेन्द्रिय तथा धार्मिक और तपस्या करने वाला था। इन्द्र ने विश्वरूप की तपस्या से डरकर कहीं इन्द्र यह पद प्राप्त न कर ले उसकी तपस्या भंग करने लिए के पहले अप्सराओं को भेजा। जब वे अभियान में सफल नहीं हुई तो इन्द्र ने वज्र से विश्वरूप के सिर काट दिए। संदर्भ : महाभारत-उद्योग पर्व-अ० 9; भागवत 6/8-9

(12) **इन्द्र का अभिमान भंग**

एक बार इन्द्र ने एक बड़ा विशाल महल बनवाना प्रारंभ किया। उन्होंने पूरे सौ वर्ष तक विश्वकर्मा को छुट्टी नहीं दी। तब विश्वकर्मा भगवान ब्रह्मा के पास गए। ब्रह्मा एक बटु का रूप धारण कर इन्द्र के पास गए और उनसे उस महल के संबंध में बातचीत करने लगे। उसी समय वहां दो सौ गज लम्बा चीटियों का एक विशाल समुदाय दिखाई दिया, जिसे देखकर बटु को हंसी आ गई। इन्द्र ने इसका कारण पूछा तो बटु ने बताया कि ये सभी चींटे पहले कभी इन्द्र थे, आज ये अपने कर्मानुसार चींटे की योनि में हैं। उसी समय वहां ऋषि लोमश पहुंचे। बटु ने लोमश से पूछा कि वह कहां रहते हैं। लोमश ने बताया कि थोड़ी-सी आयु होने के कारण उन्होंने कहीं भी घर नहीं बनवाया। जबकि वे दीर्घायु वाले थे। उनके वक्षस्थल का एक रोम एक इन्द्र के पतन के साथ गिर जाता था। इससे इन्द्र की आंख खुली। बस उन्होंने विश्वकर्मा को छुट्टी दे दी और स्वयं विरक्त होकर वनस्थली की ओर चल पड़े, परन्तु बृहस्पति ने उन्हें समझा-बुझाकर पुनः राज्य कार्य में नियुक्त किया। **संदर्भ** : ब्रह्मवैवर्त पुराण-श्रीकृष्ण जन्म खंड, अ० 47

(13) **इन्द्र और रंभा का सम्बन्ध**

रंभा इन्द्र-सभा की प्रसिद्ध अप्सरा है। इसे इन्द्र ने विश्वामित्र की तपस्या विध्वंस करने के लिए उनके पास भेजा था। **संदर्भ** : रामायण-बालकाण्ड, सर्ग-64/1/12; विष्णु-पुराण

(14) **इन्द्र का विश्वामित्र से भोजन मांगना**

विश्वामित्र को ब्रह्मर्षि पद की प्राप्ति थी। विश्वामित्र एक हजार वर्ष तक घोर तप करने के उपरान्त भोजन करने के लिए बैठे। उसी समय इन्द्र ने एक ब्राह्मण का रूप धारण कर उनके पास आकर भोजन की याचना की। उसी समय विश्वामित्र ने अपना भोजन ब्राह्मण के रूप में आए इन्द्र को दे दिया और पुनः तपस्या करने बैठ गए। उनके घोर तप से देवता, गन्धर्व, सर्प, नाग और राक्षस सभी मूर्च्छित होने लगे। तब ब्रह्मा ने विश्वामित्र के पास जाकर उन्हें ब्राह्मणत्व प्रदान किया। **संदर्भ** : बाल्मीकि रामायण-बालकाण्ड-सर्ग 65

(15) **इन्द्र द्वारा कृत्या-वध**

सप्तर्षियों से बदला लेने के लिए राजा वृषादर्भि ने अग्नि से कृत्या नामक यातुधानी उत्पन्न की तथा उसे अरुन्धती सहित सप्तर्षियों को मार डालने का आदेश दिया। महर्षियों ने वन में घूमते-घूमते एक सरोवर के तट पर उसे देखकर जान लिया कि यह कृत्या है और उनका वध करना चाहती है तब सुनःसख संन्यासी के रूप में आए इन्द्र ने त्रिदण्ड

मारकर उसका वध कर दिया। संदर्भ : महाभारत-अनुशासन पर्व अ० 93

(16) इन्द्र को प्रभुता प्राप्त होना

इन्द्र देवताओं के राजा तथा मेघ के मालिक माने जाते हैं। इनका वाहन ऐरावत हाथी, वज्र अस्त्र है और इन्द्र-धनुष इनका धनुष है। इनकी तलवार का नाम परंज है। इनकी राजधानी अमरावती है और वहीं नन्दन वन है, जहां पारिजात और कल्पवृक्ष हैं। इन्द्र सभी ऐश्वर्यों से युक्त है। **सन्दर्भ** : वायु-66/14; भागवत-4/16/24, 91-10-17; ब्रह्माण्ड-2/13-97

(17) इन्द्र की मय-दानव से मित्रता

मय नमुचि दैत्य का छोटा भाई था। नमुचि की मृत्यु के बाद उसने अपने भाई के हत्यारे इन्द्र को नष्ट करने के लिए तपस्या की। उसने तपोबल से देवों को डरा देने वाली भीषण माया प्राप्त की और विष्णु से वर पाकर वह मय अति दान-कुशल तथा मधुरभाषी बन गया। अग्नि और ब्राह्मणों की पूजा कर वह इन्द्र को जीतने का मौका ढूंढ़ने लगा। वह इन्द्र से युद्ध के लिए तैयार हो रहा था। उस मायावी के सम्बन्ध में जब इन्द्र को पता चला तो इन्द्र मय के पास ब्राह्मण के वेश में पहुंचे और मय से मित्रता की याचना की। तब मय और इन्द्र की वहां से मित्रता हो गई तथा मय इन्द्र का हितैषी हो गया। **सन्दर्भ** : ब्रह्म-अ० 124

(18) इन्द्र द्वारा नरकासुर का वध

नरकासुर नामक दैत्य ने दस हजार वर्षों तक कठोर तपस्या की। वह तपस्या के बल से तप, स्वाध्याय और इन्द्र का पद प्राप्त कर लेना चाहता था। वह अपने तपोबल तथा बाहुबल से देवताओं को सताने लगा। इन्द्र उससे भयभीत रहने लगे और उन्होंने विष्णु के पास जाकर नरकासुर के वध की प्रार्थना की। तब विष्णु ने उस महातेजस्वी दैत्य के हाथ मारकर ही प्राण हर लिये। **सन्दर्भ** : महाभारत, वन पर्व, अ० 142

(19) इन्द्र द्वारा जंभासुर वध

जंभ बलि का हितैषी और घनिष्ठ मित्र था। देवासुर संग्राम में दैत्यराज बलि के पराजित हो जाने पर उसने इन्द्र से बदला लेने के लिए इन्द्र पर आक्रमण कर दिया। उसने इन्द्र के हाथी ऐरावत पर गदा से प्रहार किया। फिर मातलि पर त्रिशूल का वार कर दिया, इससे इन्द्र ने क्रोधित होकर जंभ का सिर काट डाला। **सन्दर्भ** : भागवत-8/11

इला-बुध की कथा

इल (सुद्युम्न) वैवस्वत मुनि का जेष्ठ पुत्र था, जोकि दिग्विजय के समय शरवट वाटिका में चला गया था। वहां जाकर वह स्त्री बन गया। मार्ग में सोमपुत्र बुद्ध से भेंट होने पर बुध इन्हें पत्नी बनाकर ले गया, जिससे पुरूरवा पैदा हुआ। पुरूरवा से ही चन्द्र वंश चला। **सन्दर्भ** : वाल्मीकि रामायण, उत्तरकाण्ड-87-90; ब्रह्मपुराण, अ० 108; पद्म-पुराण-सृष्टि, अ० खण्ड 8; विष्णु-4/1/9-12; भागवत-9/1/23-38; कूर्म-1/

19; मत्स्य-11/42-66, 12/1-14

उत्तंक ऋषि का सर्पयज्ञ

ऋषि उत्तंक की गुरुपत्नी ने गुरुदक्षिणा में उनसे पौष्य की पत्नी के कानों के कुण्डल मांगे। तक्षक ने उक्त गुरु-दक्षिणा को देने में उत्तंक के समक्ष बाधा उत्पन्न की थी। अतः तक्षक द्वारा राजा परीक्षित को डस लेने के पश्चात् मुनि उत्तंक ने परीक्षित के पुत्र जनमेजय को सर्पों से प्रतिशोध लेने के लिए सर्पयज्ञ करने का उपदेश दिया। **सन्दर्भ :** महाभारत-आदिपर्व, अ० 3/171-188; देवी भागवत-2/11

उत्तरा का अभमिन्यु के साथ विवाह

विराट नगरी में अर्जुन ने बृहन्नला के रूप में रहकर विराट की पुत्री को नृत्य और संगीत की शिक्षा दी थी। जब विराट को पाण्डवों का वास्तविक परिचय मिला तो उन्होंने अर्जुन के साथ उत्तरा का विवाह करने का निश्चय किया, परन्तु अर्जुन ने उत्तरा को पुत्रवधू के रूप में स्वीकार किया और उत्तरा का अभिमन्यु के साथ विवाह हुआ। **सन्दर्भ :** महाभारत-विराट पर्व, अ० 71

उपमन्यु की तपस्या

एक बार ऋषि पुत्र उपमन्यु ने अपनी माता से दूध पीने का हठ किया। माता ने समझाया कि गरीबी के कारण हमें दूध नहीं मिल सकता। तब उपमन्यु ने महादेव को प्रसन्न करने के लिए हिमालय पर जाकर घोर तप किया, जिससे शिव ने प्रसन्न होकर उसके समक्ष क्षीरसागर प्रकट कर भक्त की कामना पूर्ण की। **सन्दर्भ :** महाभारत-अनुशासन पर्व, अ० 14-15; अग्निपुराण-अ० 107; योगवासिष्ठ-स्थिति-प्रकरण

उपमन्यु की गुरुभक्ति

उपमन्यु आयोद धौम्य का शिष्य था। एक बार धौम्य ने उसे गौओं की रक्षा करने के कार्य पर लगाया। उपमन्यु गौओं की रक्षा के कार्य पर लग गया तथा भिक्षावृत्ति से अपना जीवन निर्वाह करने लगा। एक दिन ऋषि धौम्य ने उसको बुलाकर पूछा कि वह मोटा-ताजा कैसे हो रहा है। उपमन्यु के बताने पर कि वह अपना जीवन-निर्वाह भिक्षा से करता है, धौम्य ने कहा कि उसे उन्हें भिक्षा का अन्न अर्पण किए बिना अपने उपयोग में नहीं लाना चाहिए। तब उपमन्यु भिक्षा लाकर धौम्य को अर्पण करने लगा और दूसरी बार भिक्षा लेकर अपना निर्वाह करने लगा। धौम्य ने पुनः उपमन्यु को बुलाया तथा उससे यह जानकर कि वह दो बार भिक्षा मांगता है तो उन्होंने उससे कहा कि यह न्याययुक्त और श्रेष्ठ नहीं है। इस प्रकार से वह दूसरे भिक्षा-जीवी लोगों की जीविका में बाधा डालता है, अतः लोभी है। तब उपमन्यु गौओं का दूध पीकर निर्वाह करने लगा। धौम्य ने फिर उससे मोटा-ताजा होने का कारण पूछा। उपमन्यु के यह बताने पर

कि वह गौओं का दूध पीकर अपना निर्वाह करता है तो धौम्य ने उससे कहा कि उसे उन्होंने गौओं के दूध पीने की आज्ञा नहीं दी है, अतः उसके लिए गौओं का दूध पीना अनुचित है। उपमन्यु बछड़ों के द्वारा गौओं के दूध पीते समय उगले फेन से अपना निर्वाह करने लगा तो धौम्य ने पता लगने पर उपमन्यु को कहा कि ऐसा करने से बछड़ों की जीविका में बाधा उत्पन्न होती है। तब एक दिन उपमन्यु ने भूख से पीड़ित हो आक के पत्ते खा लिये, जिससे उसकी आंखों की ज्योति चली गयी और वह अंधा होकर एक कुएं में गिर गया। जब वह आश्रम में नहीं पहुंचा तो धौम्य उसे खोजने आए तथा उन्हें पता लगा कि उपमन्यु नेत्रहीन होकर कुएं में गिर गया, तब उन्होंने उपमन्यु से अश्विनीकुमारों की स्तुति करने के लिए कहा। उपमन्यु ने अश्विनीकुमारों की स्तुति कर नेत्र ज्योति प्राप्त की तथा उसे धौम्य ने आशीर्वाद दिया कि वह सम्पूर्ण वेद और धर्मशास्त्रों को स्वतः प्राप्त करे। **सन्दर्भ** : महाभारत-आदि पर्व, अ० 3

उपकोशल को अग्नि द्वारा उपदेश

उपकोशल नाम से प्रसिद्ध कमल का पुत्र सत्यकाम जाबाल के यहां ब्रह्मचर्य ग्रहण करके रहता था। उसने बारह वर्ष तक आचार्य की सेवा की, किन्तु आचार्य ने अन्य ब्रह्मचारियों का समावर्तन-संस्कार कर दिया, किन्तु उपकोशल को छोड़ दिया। उस आचार्य से उसकी भार्या ने भी कहा कि यह ब्रह्मचारी खूब तपस्या कर चुका है, अतः इसे विद्या का उपदेश कर दीजिए। किन्तु वह उसे उपदेश दिए बिना ही बाहर चला गया। अब उस उपकोशल ने मानसिक खेद से अनशन करने का निश्चय किया और भोजन भी त्याग दिया। इस पर अग्नियों ने एकत्रित होकर श्रद्धालु उस ब्रह्मचारी को शिक्षा देने का निश्चय कर उसे उपदेश दिया। **सन्दर्भ** : छान्दोग्य-उपनिषद्, अ० 4/10

उर्वशी का अर्जुन को शाप

एक बार अर्जुन के इन्द्रपुरी में जाने पर उर्वशी उनको देखकर उन पर आसक्त हो गई। उसने अर्जुन से प्रेम-याचना की। अर्जुन के अस्वीकार कर देने पर उसने अर्जुन को नपुंसक होने का शाप दे दिया। यह समय अर्जुन ने विराट नगरी में बृहन्नला बनकर काटा। **सन्दर्भ** : महाभारत-वन पर्व, अ० 46

उषस्ति की कथा

चक्र का पुत्र उषस्ति ओले और पत्थर पड़ने से कुरु देश की खेती के नष्ट हो जाने पर इभ्यग्राम के भीतर अपनी अल्पवयस्का पत्नी के साथ दुरवस्था में किसी घर का आश्रय ले निवास करता था। अन्न के लिए घूमते-घूमते उसने अकस्मात एक हाथीवान् को घुने उड़द खाते देख उससे याचना की। हाथीवान् ने उषस्ति से कहा ये उड़द मेरे जूठे हैं। उषस्ति ने उससे वे ही जूठे उड़द देने को कहा और उससे जूठे उड़द लेकर खा लिये। तब हाथीवान् ने उषस्ति से जूठा पानी भी पीने के लिए कहा। पर उषस्ति ने

जूठा जल को पीने से मना कर दिया। महावत ने इस पर कहा कि क्या ये उड़द जूठे नहीं हैं? तब उषस्ति ने यह उत्तर दिया कि—इन्हें खाये बिना तो मैं जीवित नहीं रह सकता था, लेकिन जल तो यथेच्छ मात्रा में मिलता है, अतः जूठा पानी पीने से मुझे दोष लगेगा। हाथीवान् से लिये हुए उड़दों में से उसने बचे हुए उड़द अपनी पत्नी को लाकर दे दिए। उसकी पत्नी ने उन उड़दों को लेकर रख लिया। प्रातःकाल उन बचे उड़दों को खाकर वह राजा के यज्ञ में गया और वहां प्रस्तोता व उद्‌गाता से अन्न की सर्वश्रेष्ठता के सम्बन्ध में ज्ञान लिया तथा राजा का यज्ञ पूरा कराकर धन प्राप्त किया। **सन्दर्भ** : छान्दोग्य-उपनिषद्-1/10।

उषा-अनिरुद्ध विवाह

उषा बाणासुर की पुत्री थी, जो स्वप्न में अनिरुद्ध को देखकर मोहित हो गई थी। इसने चित्रलेखा द्वारा अनिरुद्ध को द्वारका से शोणितपुर मंगवा लिया था। कुछ दिन अन्तःपुर में उषा और अनिरुद्ध छिपकर रहे। बाद में पता लगने पर बाणासुर ने अनिरुद्ध को बांध लिया। नारद से समाचार मिलने पर श्रीकृष्ण सेना सहित शोणितपुर पहुंचे तथा बाणासुर से घोर संग्राम हुआ। बाणासुर ने अनिरुद्ध के लिए अपनी कन्या श्रीकृष्ण को सौंपकर उन्हें विदा किया। **सन्दर्भ** : विष्णु-5/32-33; शिव-पुराण-रुद्र-संहिता-युद्ध-खण्ड, अ० 51-55; भागवत-10/62-63; ब्रह्मवैवर्त-120; हरिवंश-विष्णु पर्व-अ० 128; वृहत्कथा-मदनमंचुका-लम्बक, तरंग-5

एकलव्य की कथा

एकलव्य एक भील बालक था। द्रोणाचार्य की प्रशंसा सुनकर उनसे धनुर्विद्या सीखने के लिए आया। लेकिन उन्होंने एकलव्य को नीच जाति का होने के कारण धनुर्विद्या सिखाना स्वीकार नहीं किया। एकलव्य की द्रोणाचार्य में श्रद्धा थी। अतः वह उनको गुरु रूप में स्वीकार कर द्रोणाचार्य की मूर्ति बनाकर धनुर्विद्या स्वयं ही सीखता रहा और धनुर्विद्या में कुशल हो गया। एक समय जहां पर वह वन में रहता था पांडव वहां गये। पांडवों का कुत्ता एकलव्य को देखकर भौंकने लगा। एकलव्य ने बिना किसी प्रकार का कष्ट पहुंचाए कुत्ते के मुंह को बन्द कर दिया। इससे उसके शस्त्र-कौशल से ईर्ष्या के कारण पांडवों के कहने पर द्रोणाचार्य ने गुरु-दक्षिणा में उसके दाहिने हाथ का अंगूठा मांग लिया, ताकि वह बाण न चला सके। **संदर्भ** : महाभारत-आदि पर्व, अ० 131

ऐरावत हाथी की कथा

ऐरावत देवराज इन्द्र का हाथी है। यह पूर्व दिशा का दिग्गज है, जिसका रंग श्वेत है तथा इसके चार दांत हैं। यह समुद्र-मंथन के समय निकले चौदह रत्नों में से एक है। श्रीकृष्ण-इन्द्र युद्ध में यह गरुड़ से हार गया था।

'वायु पुराण' के अनुसार भौवन ने सूर्य के 'अण्डकपाल' को ग्रहण कर सामगान का जब रथतर खण्ड गाया, उसी समय एक हाथी दिखाई दिया जो इरावती को पुत्र के रूप में दिया गया। इरावती का पुत्र होने से यह ऐरावत कहलाया और इन्द्र की सवारी बना। **संदर्भ** : विष्णु-1/9/7/25, 5/30/66; वायु-69/209-11; भागवत-8/8/4, 10/59/37; मत्स्य-8/7

ऋभु और निदाघ की कथा

ऋभु ब्राह्मण के पुत्र थे। ये अत्यन्त ही पवित्र और ज्ञानी थे। इनका पुलस्त्य-पुत्र निदाघ प्रिय शिष्य था। एक बार ऋभु निदाघ के घर गये। तब निदाघ ने इनका बहुत आदर-सत्कार किया। निदाघ के आतिथ्य से प्रसन्न होकर ऋभु ने इन्हें रहस्यमय आतमज्ञान दिया, जिससे निदाघ सारी दृश्य और अदृश्य वस्तुओं को अपने से अभिन्न पाने लगे। **संदर्भ** : विष्णु-2/15-16; नारद-1/49

कंडु तथा प्रमलोचा की कथा

इन्द्र ने प्रसिद्ध अप्सरा प्रमलोचा को ऋषि कंडु की तपस्या भंग करने के लिए भेजा। महर्षि कंडु ने उसे अपने पास रख लिया। उनसे प्रमलोचा के एक मारिषा नामक पुत्री पैदा हुई।

महर्षि कंडु आठ सहस्र वर्ष से प्रमलोचा के साथ रह रहे थे तथा वे चिन्तन में रत थे। अचानक उनकी मोहनिद्रा जागी और वे प्रमलोचा से बोले—प्रातः सन्ध्या-वन्दन से लौटते समय तुमसे साक्षात्कार हुआ था। देखते ही देखते चार प्रहर चार क्षण के समान व्यतीत हो गये। प्रमलोचा, लाओ, मेरा कमंडलु लाओ, अर्ध्यपात्र लाओ, सन्ध्या का समय पुनः आ गया है। **संदर्भ** : ब्रह्म-अ० 178; विष्णु-2/10/9; भागवत-4/30/13; मत्स्य-126/11, 69/50

कच का देवयानी को शाप

एक बार देवताओं ने बृहस्पति के पुत्र कच को असुरों के गुरु शुक्राचार्य के पास मृत-संजीवनी विद्या सीखने के लिए भेजा। वहां शुक्राचार्य की पुत्री देवयानी उस पर आसक्त हो गई और कच से विवाह करने के लिए कहा। कच द्वारा इसका प्रस्ताव ठुकरा देने पर देवयानी ने उसे शाप दिया कि तुम्हारी संजीवनी विद्या असफल जाए। कच ने देवयानी का शाप तो स्वीकार कर लिया पर बदले में उसे शाप दिया कि उसका कोई ब्रह्मर्षि वरण न करेगा। **संदर्भ** : महाभारत-आदि पर्व, 76-77; स्कन्द-पुराण-काशीकाण्ड, अ० 16; मत्स्य-अ० 25-26

कच्छप अवतार की कथा

यह विष्णु भगवान् का द्वितीय अवतार माना जाता है। समुद्र-मन्थन के समय

भगवान् विष्णु ने देवताओं के आग्रह पर कच्छप का रूप धारण किया था, जिनकी पीठ पर मन्दराचल पर्वत को रखकर समुद्र का मन्थन किया गया था। **संदर्भ** : बाल्मीकि-रामायण; विष्णु-1/9/88; भागवत-1/3/16, 2/7/13, 11/4/18; अग्नि, अ० 3; आनन्द रामायण-राज्यकाण्ड, सर्ग-20

कजरी वन (कदली वन)

महाभारत में ऋषिकेश से बदरिकाश्रम तक के वन प्रदेश को कदली वन कहा गया है। यह वन सिंहों के निवास का स्थान माना जाता था। कदली बन का ही लोक में कजरी वन प्रचलित है। **संदर्भ** : महाभारत-वन पर्व अ० 146/75-79; पद्मावत-संजीवनी-टीका, पृ० 148, 625

कपिल की कथा

(1) कपिल-अवतार

ये भगवान् के पांचवें अवतार माने जाते हैं। ये देवहूती के गर्भ से उत्पन्न हुए थे तथा इन्होंने अपनी माता को ब्रह्मज्ञान दिया था। ये सांख्यशास्त्र के आदि प्रवर्तक माने जाते हैं। **संदर्भ** : भागवत-1/3/10, 2/7/3, 3/24/30

(2) कपिल द्वारा सगर के पुत्रों को शाप

सगर के द्वारा छोड़े गये अश्वमेध यज्ञ के घोड़े को इन्द्र ने यज्ञ में विघ्न उत्पन्न करने के उद्देश्य से कपिल के आश्रम में बांध दिया। सगर-पुत्रों ने कपिल मुनि के आश्रम के निकट घोड़ा बंधा देखकर इन पर आक्रमण किया और भला-बुरा कहा। तब कपिल ने क्रोधित होकर सगर के साठ हजार पुत्रों को शाप देकर भस्म कर दिया। **संदर्भ** : बाल्मीकि-रामायण-1/40; ब्रह्म-अ० 78; विष्णु-42/4/16-22; भागवत-9/8

कद्रू विनता की कथा

सुर और असुरों द्वारा समुद्र-मंथन करने पर उसमें से उच्चैःश्रवा नामक एक घोड़ा निकला। एक बार इस घोड़े को देखकर कश्यप की पत्नी कद्रू और विनता में इस घोड़े के रंग बताने की शर्त लग गयी और उन्होंने आपस में यह निश्चय किया कि जिसका उत्तर ठीक नहीं होगा उसको दूसरे की दासी बनना पड़ेगा। विनता ने घोड़े की पूंछ का रंग सफेद और कद्रू ने काला बताया। इस शर्त को जीतने के लिए कद्रू ने अपने पुत्रों से सहायता मांगते हुए कहा कि वे उच्चैःश्रवा घोड़े की पूंछ से जाकर लिपट जाएं, जिससे घोड़े की पूंछ काली लगे। कद्रू के पुत्रों ने ऐसा करने से मना कर दिया, जिस पर उसने अपने पुत्रों को यह शाप दे दिया कि वे सभी जनमेजय के यज्ञ में नष्ट हो जायेंगे। इस पर कद्रू के पुत्रों ने सोचा कि शायद वे माता की सहायता करने पर शाप से छूट जाएं। ऐसा सोचकर कद्रू के पुत्र सर्प उच्चैःश्रवा की पूंछ से लिपट गये और इस प्रकार घोड़े की पूंछ का रंग काला देख विनता को कद्रू की दासी बनना पड़ा। इसी समय

विनता के गरुड़ पैदा हुए। विनता और गरुड़ दोनों को दास रूप में कद्रू के यहां रहना पड़ा और वहां रहकर अनेक यातनाएं सहीं। बहुत समय के बाद सर्पों के लिए अमृत का घड़ा लाकर गरुड़ ने मां विनता को दास-भाव से मुक्ति दिलाई। **संदर्भ** : महाभारत-आदि पर्व, अध्याय 20; पद्मपुराण-सृष्टि खण्ड, अध्याय-44/40, 182; वायु-पुराण-अध्याय 69/343-350; स्कन्द पुराण-ब्रह्मखण्ड-सेतु-माहात्म्य, अ० 38

कर्दम सम्बन्धी कथाएं

(1) कर्दम की तपस्या

ब्रह्मा ने कर्दम को जब संतान उत्पन्न करने की आज्ञा दी तो उन्होंने दस हजार वर्षों तक सरस्वती के किनारे तपस्या की। इनकी तपस्या से प्रसन्न होकर भगवान श्रीहरि ने अपने शब्द ब्रह्ममय स्वरूप से मूर्तिमान होकर दर्शन दिये। **संदर्भ** : भागवत -3/21

(2) कर्दम का देवहूती से विवाह

कर्दम की तपस्या से प्रसन्न होकर भगवान् श्रीहरि ने उन्हें दर्शन दिये तथा उन्होंने कर्दम से स्वायम्भुव मनु और शतरूपा की पुत्री देवहूती से विवाह की आज्ञा दी। तदनुसार उन्होंने देवहूती से विवाह किया और गर्भाधान होने तक गृहस्थ-सुख उपभोग करने का देवहूती को वचन दिया। **संदर्भ** : भागवत-3/22

(3) कर्दम द्वारा विलास सामग्री एकत्रित करना

कर्दम ने विवाह के समय प्रतिज्ञा की थी कि वह देवहूती के गर्भाधान तक गृहस्थ सुख का उपभोग करेंगे। तदनुसार उन्होंने देवहूती की इच्छानुसार योगबल से एक विमान की रचना की जो इच्छानुसार सर्वत्र जा सकता था तथा इसमें सभी ऐश्वर्य और विलासिता की सामग्री एत्रित थी। **संदर्भ** : भागवत-3/23

कर्मनाशा की अपवित्रता

कर्मनाशा नदी का वर्णन भविष्य-पुराण के ब्रह्मखण्ड में वर्णित है। यहां उल्लेख है कि गंगा और कर्मनाशा नदी के संगम पर नहाने से प्राणी को अशेष पुण्य मिलता है।

लोक विश्वास है कि कर्मनाशा नदी के जल के स्पर्श से ही सारे अर्जित पुण्यों का क्षय हो जाता है। पुराणों में इसे सूर्यवंशीय राजा त्रिशंकु की लार से उत्पन्न बतलाया गया है। कुछ लोग इसे लंकापति रावण के मूत्र से निकली बतलाते हैं। कुछ लोग इसे इसलिए अपवित्र बतलाते हैं कि प्राचीन काल के कर्मनिष्ठ आर्य ब्राह्मण इस नदी को पार करके मगध या बंगाल ज़ाना निषिद्ध समझते थे। **संदर्भ** : भविष्य-पुराण

कर्ण सम्बन्धी कथाएं

(1) कर्ण का जन्म

कर्ण कुन्तिभोज की कन्या कुन्ती के कौमार्यावस्था में पैदा हुआ पुत्र था। एक बार कुन्ती को कौमार्यावस्था में मुनि दुर्वासा ने उसके अतिथि-सत्कार से प्रसन्न होकर एक मंत्र

सिखाया, जिसके बल से किसी भी देवता का आवाहान किया जा सकता था। कुन्ती ने इस मंत्र का प्रभाव देखने के लिए कौतूहलवश सूर्य का आवाहन किया था। सूर्य प्रकट हुआ और कुन्ती के साथ रमण किया। फलस्वरूप कुन्ती के गर्भ से कुमारी अवस्था में ही एक ऐसे पुत्र का जन्म हुआ जिसने कवच-कुण्डल पहन रखे थे। कुन्ती ने लोक-लाज और माता-पिता के भय से उस शिशु को एक पेटिका में रखकर नदी में बहा दिया। इस पेटिका को कौरवों के सूत अधिरथ ने निकाल लिया। इस शिशु का नाम सूत दम्पति अधिरथ और उसकी पत्नी राधा ने वसुषेण रखा और इसका पालन-पोषण किया। बाद में यह कर्ण नाम से प्रसिद्ध हुआ। बड़ा होने पर यह महान् वीर और योद्धा बना। **संदर्भ** : महाभारत-आदि पर्व, अ० 63, 67, 110; वनपर्व-308-309; विष्णु-4/14/36, 4/18/24-29; भागवत-9/23/13, 9/24/32-36; अग्नि-13/11; मत्स्य-अ० 48; देवी भागवत-2/6/14-38, 6/25/45

(2) कर्ण द्वारा इन्द्र को कवच कुण्डल दान देना : कर्ण की दानशीलता

कर्ण कुन्ती की इच्छानुसार जन्म से ही सूर्य द्वारा दिए गए कवच-कुण्डल धारण किए हुए पैदा हुआ था। ये कुण्डल सूर्य की माता अदिति ने उसे दिए थे। इनके धारण करने के कारण कर्ण अविजित था उसे कोई मार नहीं सकता था। तब इन्द्र अपने पुत्र अर्जुन की सहायता करने के उद्देश्य से ब्राह्मण का वेश धारण कर कर्ण से इन कवच-कुण्डलों को दान में मांगने के लिए गया। कर्ण दान के लिए प्रसिद्ध था। वह ब्राह्मण को मांगने पर खाली हाथ नहीं जाने देता था। इन्द्र द्वारा छल से कर्ण से कवच मांगने की बात सूर्य ने कर्ण को स्वप्न में बतायी थी, फिर भी कर्ण ने अपने दान-व्रत से बिना विचलित हुए ब्राह्मण वेशधारी इन्द्र को कवच-कुण्डल दान में दे दिए तथा बदले में इन्द्र ने उसे अमोघ शक्ति दी। कर्ण (कर्तन) करने के कारण उसका नाम वसुषेण से कर्ण हुआ। **संदर्भ** : महाभारत-आदि पर्व, 67, वन पर्व, अ० 300-309

(3) कर्ण का कृपाचार्य द्वारा अपमान

एक बार द्रोणाचार्य ने अपने सभी शिष्यों को एकत्रित कर शस्त्रविद्या का प्रदर्शन किया। इस अवसर पर अर्जुन ने अपना कौशल दिखाकर प्रशंसा प्राप्त की। परन्तु कर्ण इसे सहन न कर सका। उसने अर्जुन द्वारा किए गए समस्त कार्य कर दिखाए और अर्जुन से द्वन्द्व करने के लिए तैयार हो गया, जिस पर कृपाचार्य ने उसे सूत-पुत्र कहकर अपमानित किया तथा उसके राजपुत्र अर्जुन से द्वन्द्व-युद्ध को असंगत बताया। **संदर्भ** : महाभारत-आदि पर्व, अ० 135/31-33

(4) कर्ण का कौरवों द्वारा पालित होना

एक बार कौरव-पाण्डव द्रोणाचार्य से सीखी अपनी अस्त्र-शस्त्र विद्या प्रदर्शन करने के लिए एक रंगभूमि में एकत्रित हुए। वहां अर्जुन को श्रेष्ठ धनुर्धारी घोषित किया गया, परन्तु कर्ण ने भी अर्जुन के समान कला-कौशल प्रदर्शित किए। कौरवों को इससे बड़ी प्रसन्नता हुई और दुर्योधन ने कर्ण को अपने राज्य को अपना राज्य समझने का निमंत्रण दिया और वहां कृपाचार्य के कर्ण से कटु शब्द कहने पर उसे अंग देश के राज-पद पर

अभिषिक्त किया । **संदर्भ** : महाभारत-आदि पर्व, अ० 135/11-14,37-38

(5) कर्ण द्वारा सारी पृथ्वी पर दिग्विजय

कर्ण अत्यन्त पराक्रमी था । वह दिग्विजय करने के लिए अपनी विशाल सेना लेकर निकला । उसने अपनी विशाल सेना से द्रुपद के नगर को घेर लिया और युद्ध करके राजा द्रुपद को अपने वश में कर लिया । तत्पश्चात् उत्तर दिशा में जाकर वहां के राजाओं को जीत लिया ।फिर हिमालय प्रदेश के सभी राजाओं, अंग, बंग, कलिंग, शुण्डिक, मिथिला, मगध और कर्कखण्ड आदि सभी प्रदेशों को जीतकर हस्तिनापुर आया । जहां उसका दुर्योधन द्वारा स्वागत किया गया, । **संदर्भ** : महाभारत-वन पर्व, अ० 254

(6) कर्ण द्वारा गौ हत्या

एक बार कर्ण धनुष-बाण और तलवार लेकर आश्रम से बाहर गया । उसकी असावधानी से एक ब्रह्मण की गाय का बछड़ा उसके हाथों मारा गया । तब ब्राह्मण ने इसे शाप दे दिया । **संदर्भ** : महाभारत, कर्ण पर्व, अ० 42, शान्ति पर्व, अ० 2

(7) कर्ण का अर्जुन के अतिरिक्त अन्य पाण्डवों को न मारने का वचन

महाभारत युद्ध में कर्ण के भाग लेने से पूर्व कुन्ती कर्ण के पास उसे यह बताने गई कि वह भी पाण्डवों का भाई है, अतः वह पाण्डवों के विरुद्ध युद्ध न करे । कर्ण ने उसकी इस याचना को अस्वीकार कर दिया और यह वचन दिया कि वह अर्जुन के अतिरिक्त अन्य पाण्डवों को न मारेगा । **संदर्भ** : महाभारत-उद्योग पर्व, अ० 46

(8) कर्ण की मृत्यु

महाभारत के युद्ध में द्रोणाचार्य के मारे जाने के बाद सोलहवें दिन कर्ण कौरव सेना का सेनापति बना । युद्ध के सत्रहवें दिन अर्जुन से युद्ध करते हुए शापवश इसके रथ का पहिया जमीन में धंस गया । कर्ण उस पहिए को निकालने में लगा कि कृष्ण की प्रेरणा से अर्जुन ने इसे मार दिया । **संदर्भ** : महाभारत-कर्ण पर्व; अग्नि-अ० 14

(9) कर्ण का युधिष्ठिर द्वारा प्रेतकृत्य पूरा करना

महाभारत-युद्ध के पश्चात् जब वीरों के लिए जलांजलि दी जा रही थी, तब कुन्ती ने युधिष्ठिर को कर्ण के सम्बन्ध में जानकारी देकर अपने बड़े भाई के रूप में प्रेतकार्य करने को कहा। युधिष्ठिर ने कर्ण की स्त्रियों को परिवारसहित बुलवा-कर सबके साथ रहकर कर्ण के प्रेतकृत्य पूर्ण किये । **संदर्भ** : महाभारत स्त्री पर्व, अ० 27

कलमाषपाद को आंगिरसी का शाप

राजा कलमाषपाद शाप के वश में होकर अपनी पत्नी के साथ भयंकर वन में विचरने लगे। एक दिन भूख से व्याकुल हो वे अपने लिए भोजन की तलाश करने लगे। उस निर्जन प्रदेश में एक ब्राह्मण व एक ब्राह्मणी मैथुन करने के लिए इकट्ठे हुए। उसी समय कलमाषपाद ब्राह्मण को मार कर खा गया । तदनन्तर पति के वियोग से दुखी उस ब्राह्मणी ने कलमाषपाद को शाप दिया कि तू जब भी अपनी पत्नी के साथ समागम करेगा, तभी तेरी मृत्यु हो जायोगी । **संदर्भ** : महाभारत, आदि पर्व, अ० 18; भागवत-

9/9।

कल्कि अवतार की कथा

पुराणों में कल्कि का भविष्य में होने वाले अवतार के रूप में उल्लेख मिलता है। यह अवतार कलियुग के अन्त में होगा। जब अधर्म की पराकाष्ठा होगी तब म्लेच्छ, दस्यु, लोभी और पापियों का नाश करके वैदिक धर्म की स्थापना कर भगवान विष्णु सबको अपने-अपने धर्म में स्थापित करेंगे। उस समय सत्ययुग का प्रारम्भ होगा। **संदर्भ** : महाभारत-वनपर्व, अ० 190; ब्रह्म-अ० 213; विष्णु-4/23/98; वायु-98/104-126, भागवत-1/3/25, 2/7/38, 11/4/22; अग्नि 6/8-13; आनन्द रामायण-राज्यकाण्ड-सर्ग-20

कलियुग की विशेषता

कलियुग में सभी धर्मों का लोप होना तथा अधर्म का सर्वत्र व्याप्त होना बताया गया है। इस युग में सभी अच्छी वस्तुओं का ह्रास और मनुष्यों की अवनति का उल्लेख है। इस युग की एकमात्र विशेषता यह है कि भक्ति, जो अन्य युगों में कठिन तपस्या से प्राप्त होती थी, इस युग में भगवद्भजन और मात्र कीर्तन से ही प्राप्त हो जाएगी **संदर्भ** : वायु-58/30-73; भागवत-1/1/10, 15/5/32-38, 15/56/37

कण्व ऋषि की तपस्या

एक बार कण्व ऋषि भूख से व्याकुल हुए विभिन्न आश्रमों में घूमते हुए गौतम ऋषि के आश्रम में गए। वहां पर उन्होंने गौतम के आश्रम को जल और अन्न से परिपूर्ण देखा। अपने को भूख से व्याकुल देखकर समान श्रेणी व समान ज्ञान का विचार कर गौतम ऋषि से अन्न की याचना न की। उन्होंने गौतमी गंगा के तट पर जाकर क्षुधादेवी की स्तुति की। तब वहां गंगा और क्षुधा प्रकट हुई और कण्व को यह वर देकर कि उन्हें कभी क्षुधा व दरिद्रता न सताये, वहां से अन्तर्धान हो गईं। **संदर्भ** : ब्रह्म-अ० 85

कण्व का प्रगाथ पर सन्देह

महर्षि घोर के पुत्र कण्व और प्रगाथ दोनों ऋषि कुमारों में एक-दूसरे से हार्दिक प्रेम था। प्रगाथ अपने बड़े भाई कण्व को पिता के समान समझता था और कण्व की पत्नी प्रगाथ से स्नेह करती थी। एक दिन प्रगाथ कण्व की पत्नी की गोद में सिर रखकर सो गया। इसे देखकर कण्व ने प्रगाथ को लात मारकर आश्रम से बाहर निकाल दिया। प्रगाथ ने कण्व की पत्नी के चरणों में श्रद्धा प्रकट कर उन्हें साक्षात् माता मानने की बात कहकर कण्व की शंका का समाधान किया, परन्तु उनका क्रोध पत्नी के यह कहने पर शान्त हुआ कि उन्होंने प्रगाथ का हमेशा पुत्र के समान पालन किया है। **संदर्भ** : बृहद्देवता-6/35-39।

कक्षीवान के पुत्रों का पितृऋण से उऋण होना

कक्षीवान् के बड़े पुत्र पृथुश्रवा ने विरक्ति के कारण न तो विवाह ही किया न अग्निस्थापन ही किया। कक्षीवान् के छोटे पुत्र ने बड़े भाई के रहते हुए विवाह करने पर होने वाले दुख व पाप का विचार करते हुए विवाह नहीं किया। अतः एक दिन कक्षीवान् के पितरों ने उन दोनों से कहा कि तुम लोगों ने विवाह नहीं किया, अतः तुम पितृऋण से उऋण नहीं हो पाओगे। तब पितरों ने उन दोनों को सलाह दी कि वे गौतमी नदी के तट पर जायें और वहां जाकर स्नान व तर्पण करें, वे उसी से उऋण हो जायेंगे। कक्षीवान् तदनुसार ही गौतमी के तट पर गए और वहां पर स्नान व पितरों का तर्पण कर पितृऋण से उऋण हो गए। **संदर्भ** : ब्रह्म-अ० 99

काकभुशुण्डि की जन्मकथा

काकभुशुण्डि अलम्बुसा-शक्ति के वाहन चण्ड नामक कौआ का पुत्र था। एक समय ब्राह्मी शक्ति के रथ में जुतने वाली हंसियां और चण्ड एक उत्सव में मद्यपान से उन्मुक्त हो गए तथा वहां हंसियों में पुरुष-विषयक अनुराग उत्पन्न हो गया, जिससे उन्होंने वहां पर उस कौए से रमण करना प्रारम्भ कर दिया। सभी हंसियां उस समय गर्भवती हो गईं और उन्होंने समय पर इक्कीस अण्डे दिए, जिसमें से इक्कीस बच्चे निकले, जिनमें से भुशुण्ड भी एक था। पिता के कहने से वे सुमेरु पर्वत पर निवास करने गए जहां भुशुण्डि के सब भाई मर गए, लेकिन भुशुण्डि निर्विकार और अमर रहे। **संदर्भ** : योगवासिष्ठ-निर्वाण प्रकरण, सर्ग-18-23

काकभुशुण्डि को राम पर सन्देह होना

एक बार काकभुशुण्डि को, राम को शष्कुलि (पूड़ी) खाते देखकर उनके नारायणत्व पर सन्देह हो गया। वे उनकी परीक्षा लेने के लिए राम के हाथ से पूड़ी छीन कर भाग गये। उसी समय राम ने गरुड़ पर आरूढ़ होकर तीनों लोकों में उनका पीछा किया। अन्त में वे राम की शरण में आये तथा निश्चल भक्ति का वरदान पाकर अपने आश्रम को लौट आये। **संदर्भ** : सत्योपाख्यान, अ० 26

कामदेव की उत्पत्ति

ब्रह्मा के एक पुत्री व एक पुत्र उत्पन्न हुआ उनके नाम ब्रह्मा ने क्रमशः संध्या और मन्मथ रखे। यही बाद में कामदेव के नाम से जाना गया। मन्मथ को उन्होंने वर दिया कि तुम तीनों लोकों पर प्रबल रहोगे और सब तुम्हारे वश में रहेंगे। कामदेव ने सबसे पहला बाण ब्रह्मा पर ही चलाया। जिससे वे अपनी पुत्री पर ही कामासक्त हो गए। तब ब्रह्मा ने कामदेव को शाप दे दिया कि वह शिव के तीसरे नेत्र द्वारा जला दिया जायेगा। **संदर्भ** : शिव पुराण-तृतीय खण्ड० अ० 34, 4/13-18।

कामदेव का प्रद्युम्न के रूप में जन्म

कामदेव प्रेम और सौन्दर्य के देवता के रूप में प्रतिष्ठित हैं। यह इन्द्र के आदेश से शिव का पार्वती से विवाह कराने के उद्देश्य से शिव की समाधि भंग करने गया था, परन्तु यह शिव की कोपाग्नि से भस्म हो गया। रति के निवेदन करने पर शिव ने प्रद्युम्न के रूप में कामदेव का पुनर्जन्म होने का वर दिया। संदर्भ : विष्णु-5/27/28; भागवत-10/55/1-2

कार्तिकेय का जन्म

यह कथा भी आदि ग्रंथों और पुराणों में भिन्न-भिन्न प्रकार से मिलती है, लेकिन इसका मूलत: आधार एक ही है।

वाल्मीकि रामायण के अनुसार—रुद्र ने उमा से विवाह कर सौ वर्ष तक क्रीड़ा की, लेकिन उनके कोई संतान नहीं हुई क्योंकि देवता शिव और शक्ति से उत्पन्न पुत्र के तेज को सहन नहीं कर सकते थे। अत: उन्होंने शिव से इस तेज को अपने तेजोमय शरीर में और अधिक समय तक धारण करने की प्रार्थना की। शिव ने ऐसा ही किया। बाद में शिव ने वह तेज (शुक्र) त्यागकर पृथ्वी को धारण करने को दिया। जब पृथ्वी इसे धारण करने में असमर्थ रही तो देवताओं के कहने से उसे अग्नि ने धारण किया। इस पर उमा ने सभी देवताओं को शाप दे दिया कि वे अपनी पत्नियों में पुत्र पैदा नहीं कर सकेंगे। इसके पश्चात जब अग्नि भी इस तेजोमय शुक्र को धारण करने में असमर्थ रहे तब ब्रह्मा के कहने से अग्नि ने यह हिमालय की कन्या गंगा को अर्पित किया। गंगा भी इस शुक्र को धारण करने में असमर्थ रही तथा इसे हिमालय के समीप शरवन में छोड़ दिया गया, जिससे कुमार का जन्म हुआ। कुमार का लालन-पालन कृतिकाओं ने किया, अत: कुमार का नाम 'कार्तिकेय' पड़ा।

'महाभारत' में यह कथा तीन प्रकार से मिलती है—वनपर्व के अनुसार एक बार वसिष्ठ आदि ऋषियों की यज्ञशाला में दूसरे देवताओं के साथ अग्निदेव भी आये तथा वहां मुनि पत्नियों को देखकर वे काम पीड़ित हो गये। इसी समय दक्ष की कन्या स्वाहा अग्नि पर आसक्त हो गई और उसने सप्तर्षियों में से वसिष्ठ की पत्नी को छोड़कर अन्य छ: का रूप बनाकर अग्नि से रमण किया। वह अग्नि के पास जाती और अग्नि के वीर्य को कांचन कुण्ड में डाल आती। अग्नि के इसी वीर्य से षडानन पैदा हुए। इन्द्रादि देवताओं द्वारा कार्तिकेय वध के लिए भेजी गई कृतकाओं ने स्कन्द को दूध पिलाकर पालन किया। जब देवासुर संग्राम हुआ, उस समय स्कन्द ने देवसेना का सेनापतित्व ग्रहण किया। इस युद्ध में विजयी होने के बाद ब्रह्मा ने कुमार को बताया कि त्रिपुर को जलाने वाले महादेव तुम्हारे पिता हैं। रुद्र ने अग्नि में प्रवेश कर स्वाहा रूपिणी उमा के संभोग से लोक-कल्याण के लिए तुमको उत्पन्न किया है।

'महाभारत' के शल्य पर्व के अनुसार—एक समय शंकर का वीर्य सहसा अग्नि में गिर

गया। तेजस्वी अग्नि भी इस वीर्य को भस्म नहीं कर सके। उसे ब्रह्मा की आज्ञा से अग्नि ने गंगा में डाल दिया। गंगा ने उसे शरवन में डाल दिया और उसी से कुमार उत्पन्न हुए।

'महाभारत' के अनुशासन पर्व के अनुसार देवताओं ने शिव से अपने तेजोमय शुक्र को अपने पास रखने की प्रार्थना की, पर शिव ने अपना वीर्य ऊपर चढ़ा लिया। तब संयोगवश कुछ अंश अग्नि में गिर पड़ा। वही अंश अग्नि ने गंगा में स्थापित किया और उसी से कुमार का जन्म हुआ।

'ब्रह्म पुराण' के अनुसार—जब देवताओं को तारक राक्षस से बहुत अधिक कष्ट पहुंचने लगा और इधर शिव उमा के साथ रति-क्रिया में लीन हो गये तो देवताओं ने अग्नि को शिव के पास भेजा। अग्नि ने शुक्र का रूप धारण कर गवाक्ष से क्रीड़ागृह में प्रवेश किया। शिव ने उसे पहचान लिया। शिव ने अग्नि की इस धृष्टता पर उसे दण्ड देने के लिए अपना वीर्य उसके मुख में डाल दिया। अग्नि उसे धारण करने में असमर्थ रहा तो उसे गंगा में छोड़ दिया, गंगा ने नहाने आयी हुई षट्कृतिकाओं में उसे छोड़ा और कृतिकाओं ने शरवन में और उसी से कुमार का जन्म हुआ।

'पद्मपुराण' के अनुसार जब अग्नि शिव के पास शुक रूप में गये तथा शिव ने वीर्य भक्षण कराया तो अग्नि उस वीर्य को पेट में पचा नहीं पाये और उसे वहीं आश्रम में गिरा दिया जिसका कुछ अंश पास के तालाब में गिर गया। कृतिकाओं ने उस तालाब से जल लाकर पार्वती को पिलाया। उसी जलपान से पार्वती गर्भवती हुई और उन्होंने स्कन्द को जन्म दिया।

'शिव पुराण' के अनुसार—शिव दिव्य सहस्र वर्षों तक गिरिजा के साथ एकान्त में क्रीड़ा करते रहे तथा उधर तारकासुर से देवता बुरी तरह से पीड़ित थे। इसके साथ ही शक्ति और शक्तिमान के योग से दूसरी ओर ब्रह्माण्ड भी कम्पित हो रहा था। अतः सभी देवता विष्णु के साथ शिव के पास गये। उस समय शिव पार्वती के साथ रति-क्रीड़ा में संलग्न थे। देव प्रार्थना पर उन्हें बीच में ही उठकर आना पड़ा। इसी समय उनका वीर्यपात हो गया। देवताओं की प्रेरणा से अग्नि ने कपोत का रूप धारण कर शिव शुक्र को पी लिया। गिरिजा ने अग्नि के इस कार्य को देख लिया। उन्होंने अग्नि को सर्वभक्षी होने का तथा देवताओं को अपनी पत्नियों से पुत्र पैदा न करने का शाप दिया। अग्नि उस वीर्य को ढोने में असमर्थ थे। उन्होंने शीत से पीड़ित ताप प्राप्ति के लिए आयी हुई सप्तर्षियों की पत्नियों के शरीर में उन वीर्य कणों को पहुंचाया। दाह से पीड़ित इन स्त्रियों ने भी गर्भ गंगा में डाल दिया। गंगा ने उसे शरवन में फेंका और उसी से स्कन्द का जन्म हुआ तथा कृतिकाओं ने स्कन्द का पालन किया।

'ब्रह्मवैवर्त पुराण' में यह कथा अपने पूर्ववर्ती पुराणों के अनुसार है।

'वराह पुराण' के अनुसार—देवता सेनापति न होने पर युद्ध में असुरों से पराजित हुए। देवताओं ने ब्रह्मा की आज्ञा से शिव से एक सेनापति देने की प्रार्थना की। देवताओं के जाने पर शिव ने शरीर स्थित शक्ति को क्षोभित किया। इससे अग्नि के समान कुमार

पैदा हुआ।

स्कन्द पुराण के अनुसार ब्रह्मा ने तारक के तप से प्रसन्न होकर एक बच्चे को छोड़कर अन्य सभी से अजेय होने का वर दिया। वर पाकर तारक ने देवताओं को कष्ट देना प्रारम्भ कर दिया। देवताओं को आकाशवाणी से पता चला कि शिव-पुत्र उनकी तारक से रक्षा कर सकता है। अतः ब्रह्मा और विष्णु ने अग्नि को हंस रूप में भेजा। अग्नि ने हंस रूप में संन्यासी बन पार्वती से शिव-शुक्र मांगा। तदनुसार पार्वती ने भिक्षा में शिव-शुक्र दिया, जिसे अग्नि खा गये। इस पर पार्वती ने अग्नि को सर्वभक्षी होने का शाप दिया। शापित अग्नि शिव-शुक्र को पचा न सके। इसी समय शीत से पीड़ित कृतिकाएं ताप पाने के लिए अग्नि के पास पहुंचीं। अग्नि ने उस ताप के द्वारा शिव-वीर्य को कृतिकाओं के शरीर में डाल दिया। जिससे वे गर्भवती हो गयीं। लोक-भय से उन्होंने अपना गर्भ सुमेरु पर्वत पर छोड़ दिया, वहां से वह गंगा में पहुंचा। गंगा ने उसका तेज सहन न करने पर उसे शरवन में फेंक दिया। इसी शरवन से कुमार का जन्म हुआ और कुमार ने नमुचि-पुत्र तारक का वध किया।

वामन पुराण, मत्स्य पुराण, ब्रह्माण्ड पुराण, सौर पुराण तथा कथा सरित सागर मेंभी यह कथा थोड़े-बहुत परिवर्तन से मिलती है, लेकिन मूलकथा उपर्युक्त कथाओं के आधार पर ही है। **सन्दर्भ :** बालमीकि रामायण, बालकाण्ड 36-37; महाभारत-शल्य पर्व, अ० 44, अनुशासन पर्व, अ० 84, वनपर्व, अ० 224-231; ब्रह्मपुराण, अ० 128/7-23; पद्मपुराण-सृष्टिखण्ड-अ० 41/118-153; शिव-पुराण-रुद्र-संहिता, कुमार-खण्ड, अ० 1-10; ब्रह्मवैवर्त पुराण, गणपति-खण्ड, अ० 14-17; वराह पुराण, अ० 25; स्कंद पुराण-माहेश्वर खण्ड (केदार खण्ड), अ० 20-27, कौमारिका खण्ड, अ० 15-32, अवन्ती खण्ड, अ० 34; वामन पुराण, अ० 158-160; मत्स्य पुराण, अ० 12-13, 146, ब्रह्माण्ड पुराण-उपोद्घातपाद, अ० 10; सौर पुराण, अ० 60-63

कार्तिकेय द्वारा क्रौंच पर्वत की रक्षा

एक समय क्रौंच पर्वत ने कार्तिकेय की शरण में आकर बताया कि उसे बाणासुर पीड़ित कर रहा है। कार्तिकेय इससे पूर्व बाणासुर को कई बार पराजित कर चुके थे, परन्तु जब उन्होंने क्रौंच की विनती सुनी तो उन्होंने शक्ति धारण कर ली और उसे बाण के लक्ष्य बनाकर छोड़ दिया, जिससे बाणासुर का वध हो गया। **सन्दर्भ :** शिव पुराण, रुद्र-संहिता, कुमार खण्ड

कालिन्दी की कथा

कालिन्दी सूर्य की पुत्री थी। यह श्रीकृष्ण को पति-रूप में प्राप्त करने के लिए वन में घूमती फिरी तथा इसने अर्जुन से कहकर श्रीकृष्ण से विवाह किया। **सन्दर्भ :** भागवत-10/58/17-23, 29/71/43, 83/11; मत्स्य-47/14

काशी माहात्म्य की कथा

काशी की महानता शिव और पार्वती के नित्य रूप में रहने के कारण है, जिसका वर्णन वैदिक और पौराणिक साहित्य में मिलता है। काशी एक धर्म नगरी है और मुक्तिदायिनी है।

सृष्टि के मूल कारण शिव और शक्ति ने दृष्ट प्रकृति और पुरुष के रूप में लक्ष्मी और विष्णु को पैदा किया। विष्णु ने तप के लिए शिव से स्थान मांगा। निर्गुण रूप शिव ने आकाश में पांच कोश पर्यन्त का एक नगर बनाया जिसमें रहकर विष्णु ने सृष्टि की रचना करने के उद्देश्य से शिव की आराधना की। विष्णु ने वहां पर अनेक जल-धाराओं को प्रकट किया, लेकिन विष्णु को वहां शून्य के अलावा कुछ भी दिखाई न पड़ा। तब विष्णु ने अपना सिर हिलाया। उस समय उनके कान से एक मणि गिरी, इससे इस स्थान का नाम मणिकर्णिका पड़ा। निर्गुण शिव ने पांच कोश वाले तीर्थ को अपने त्रिशूल पर धारण किया। यहां पर विष्णु लक्ष्मी के साथ रहने लगे। वहीं विष्णु के नाभि-कमल से ब्रह्मा उत्पन्न हुए। ब्रह्मा ने सृष्टि की रचना कर चौदह लोक निर्मित किये। काशी इन चौदह लोकों से अलग है।

'स्कन्द पुराण' में भी काशी माहात्म्य की कथा दो स्थानों पर मिलती है। पुराण के काशीखण्ड के पूर्वार्द्ध के अध्याय 26 में काशी का माहात्म्य इसी रूप में मिलता है, परन्तु यहां विष्णु के स्थान पर शिव की मणि जटित कर्णिका गिरने से इस तीर्थ का नाम मणिकर्णिका पड़ा। उक्त पुराण के इसी खण्ड के पूर्वार्द्ध के अध्याय 43-46 तथा उत्तरार्द्ध के अध्याय 52-58 के अनुसार, 'पूर्वकाल में दिवोदास नाम का एक धार्मिक राजा था। उसने इस मुक्त क्षेत्र में शिवलिंग की स्थापना कर अपने तप से ब्रह्मा को प्रसन्न कर अपने राज्य के लिए देवता शून्य काशी की याचना की। ब्रह्मा की आज्ञा से देवता काशी को छोड़कर चले गये और दिवोदास धर्म से काशी राज्य चलाने लगा। लेकिन मन्दराचल पर रहते हुए शिव पार्वती को काशी का वियोग सता रहा था। उन्होंने काशी को खाली कराने के लिए पहले योगिनियों को भेजा, फिर सूर्य को भेजा तथा ब्रह्मा को भेजा। ये सब काशी की सुन्दरता देखकर वहां बस गये, तब शिव ने शंकुकर्ण गण व गणेश को भेजा। गणेश काशी में ज्योतिषी के वेश में भविष्यवाणी कर लोगों को भयभीत करने लगे और इस प्रकार भययुक्त होकर प्रजा धर्म से गिरने लगी। इस पर दिवोदास को काशी खाली करके जाना पड़ा। तब शिव वहां के वासी हो गये।'

'वायु पुराण' के अनुसार—'शिव पार्वती के साथ हिमवान के घर में रहने लगे। एक बार मैना ने पार्वती से शिव के विषय में कुछ कह दिया, तब पार्वती ने शिव से अन्यत्र चलने के लिए कहा। पार्वती ने काशी को पसन्द किया। काशी में दिवोदास रहते थे। शिव ने निकुंभ गण की सहायता से दिवोदास से काशी को खाली करा लिया और वहां पार्वती के साथ रहने लगे। **संदर्भ** : शिव पुराण-कोटि रुद्र संहिता, अ० 22; स्कन्द पुराण, (1) काशी खण्ड-पूर्वार्द्ध, अ० 28, 43-46, (2) काशी खण्ड-उत्तरार्द्ध, अ० 52-58, वायु

पुराण, अ० 92

कैकेयी द्वारा दशरथ से दो वरों की प्राप्ति

कैकयी कैकेय राजा की कन्या थी, जिसका विवाह राजा दशरथ के साथ हुआ। ये राजा दशरथ की बहुत प्रिय पत्नी थी। भरत इनका एकमात्र पुत्र था। कैकेयी ने मंथरा के बहकावे में आकर दशरथ द्वारा प्रदत्त दो वरों को मांगकर राम को वनवासी बनाया तथा भरत को राजगद्दी दिलायी।

इस कथा के स्रोत वैदिक साहित्य से ही मिलते हैं, लेकिन वाल्मीकीय रामायण एवं पुराणों में इसका वर्णन स्पष्ट और कतिपय विशेषताओं के साथ मिलता है।

वाल्मीकि रामायण के अनुसार—'इन्द्र ने शम्बर असुर के साथ हो रहे युद्ध में राजा दशरथ से सहायता मांगी। राजा दशरथ इस युद्ध में कैकेयी को भी साथ ले गये थे। शम्बर के साथ हुए युद्ध में राजा दशरथ मूर्च्छित हो गये और उनका सारथी भी मारा गया। रानी कैकेयी ने सारथी का काम कर रथ युद्ध से अलग ले जाकर राजा दशरथ के प्राणों की रक्षा की। इस पर प्रसन्न होकर दशरथ ने दो वर मांगने के लिए कहा। कैकेयी ने ये दो वर राजा दशरथ के पास धरोहर के रूप में रख दिये।

'अध्यात्म रामायण'—देवासुर संग्राम में दैत्य के साथ युद्ध करते हुए दशरथ के रथ की धुरी निकल गयी। कैकेयी के इधर ध्यान जाने पर उन्होंने धुरी की कील के स्थान पर अपनी अंगुली डाल दी। राजा दशरथ ने कैकेयी के इस कृत्य पर प्रसन्न होकर दो वर मांगने को कहा। कैकेयी ने ये दोनों वर राजा दशरथ के पास धरोहर रूप में रख दिये।

'आनन्द रामायण' के अनुसार देवासुर संग्राम के समय राजा दशरथ के रथ की धुरी टूटने पर मुनि के पूर्व समय में दिये गये वर के प्रताप से धुरी के स्थान पर अपना हाथ लगा दिया और राजा दशरथ की इस प्रकार सहायता कर वर प्राप्त किये।

'अग्नि पुराण' के अनुसार कैकेयी ने राजा दशरथ के शम्बरासुर से हुए युद्ध में मूर्च्छित होने पर उनकी मंत्रबल से प्राणों की रक्षा कर दो वर प्राप्त किये। **संदर्भ :** शतपथ ब्राह्मण, 10/6/1/2; छान्दोग्य-उपनिषद्, 5.11/4; वाल्मीकि रामायण, अयोध्या काण्ड-सर्ग-1 श्लोक 11-17; ब्रह्म पुराण, अ० 23; अग्नि पुराण, अ० 6; अध्यात्म रामायण, 2/2/66-72; आनन्द रामायण-सार-1, 75-85

कृत्या की उत्पत्ति

अपने शत्रुओं का नाश करने के लिए तांत्रिक लोग मंत्रबल से कृत्या को उत्पन्न कर लेते हैं। ऋषि दुर्वासा ने अपनी जटा के बल से राजा अम्बरीष को मार डालने के लिए कृत्या उत्पन्न की थी। कृष्ण से अपने पिता का बदला लेने के लिए काशीराज के पुत्र सुदक्षिणा ने भगवान शंकर के आदेश से माहेश्वरी उत्पन्न की थी। **सन्दर्भ :** भागवत-9/4/46, 10/66/27-40

कृष्ण सम्बन्धी कथाएं

(1) कृष्ण-अवतार

एक बार दैत्य दानवोंके भार से पीड़ित होकर पृथ्वी ब्रह्मा के पास सुमेरु पर्वत पर गई और उसने पृथ्वी पर कंस और उसके साथियों द्वारा किये जा रहे अत्याचारों का वर्णन किया। तब ब्रह्मा देवताओं सहित पृथ्वी को लेकर क्षीर सागर में विष्णु की शरण में गये। उस समय विष्णु ने अपने दो केश-एक सफेद और एक काला केश—उखाड़कर देवताओं से कहा कि ये दोनों मेरे केश पृथ्वी पर अवतार धारणकर दैत्यों का विनाश करेंगे। मेरा कृष्ण केश देवकी के आठवें गर्भ से उत्पन्न होकर कंस का वध करेगा। उधर नारद मुनि ने कंस को आकर यह सूचना दे दी कि देवकी का आठवां पुत्र उसका वध करेगा। यह सुनकर कंस ने अपने बहनोई और बहिन देवकी को कारागार में डाल दिया। वहीं पर देवकी के छः पुत्र हुए, जिन्हें कंस ने एक-एक करके मार दिया। देवकी का सातवां गर्भ विष्णु की आज्ञा से माया ने रोहिणी के गर्भ में प्रतिस्थापति किया। वही बलराम हुआ। तदुपरान्त श्रीकृष्ण ने देवकी के गर्भ से आठवीं संतान के रूप में आधी रात के समय जन्म लिया। वसुदेव उन्हें छिपाकर गोकुल में नन्दबाबा की पत्नी यशोदा के पास सुला आये और उनकी शिशु पुत्री को ले आये। कंस ने उसे देवकी की संतान समझकर उसे मारने का प्रयास किया, परन्तु जैसे ही कंस ने उसे शिला पर पटकना चाहा वह आकाश में उड़ गई। कृष्ण का पालन-पोषण नंदबाबा और यशोदा ने किया। कुछ समय उपरान्त कृष्ण ने कंस को मारकर उसके पिता उग्रसेन को सिंहासन पर बिठा दिया। **सन्दर्भ** : महाभारत-2/22, ब्रह्म-अ० 181; विष्णु-1-2, 4/15; ब्रह्मवैवर्त-श्रीकृष्ण जन्म खण्ड, अग्नि-अ० 12; हरिवंश-विष्णु पर्व; गर्ग-संहिता गोलोक-खण्ड, अ० 9

(2) पूतना वध

पूतना एक भयंकर राक्षसी थी। इसका काम बच्चों को मारना था। कंस की आज्ञा से यह नगर, ग्रामों और बस्तियों में बच्चों को मारने के लिए घूमा करती थी। वह एक सुन्दर युवती का रूप बनाकर गोकुल में घुस गई। वह इधर-उधर बालकों को ढूंढ़ती हुई नन्दबाबा के घर में गई और सोये हुए कृष्ण को उठाकर अपनी गोद में ले लिया। कृष्ण उसके दोनों स्तनों को जोर से दबाकर उसके प्राणों के साथ उसका दूध पीने लगे और उसे निष्प्राण कर दिया। पूतना पृथ्वी पर गिर गई। ब्रजवासियों ने कुल्हाड़ी से पूतना के शरीर के टुकड़े-टुकड़े कर डाले तथा गोकुल से बाहर ले जाकर उसे जला डाला। पूतना राजा बलि की पुत्री रत्नमाला थी। यह विष्णु के समान बालक को दूध पिलाने की इच्छा से दानवी बनी थी। **सन्दर्भ** : महाभारत-2/38; ब्रह्म-अ० 184; विष्णु-5/5; भागवत-10/6; अग्नि-अ० 12; ब्रह्मवैवर्त पुराण-श्रीकृष्ण जन्म खण्ड-अ० 10; हरिवंश-विष्णु पर्व; देवीभागवत-अ०9; गर्ग-संहिता-अ० 13

(3) शकट-भंजन

एक बार शिशु श्रीकृष्ण छकड़े के नीचे सोये हुए थे। उन्होंने रोते-रोते छकड़े में अपना पैर मार दिया। श्रीकृष्ण का पैर लगते ही छकड़ा उलट गया। उस छकड़े पर दूध-दही आदि अनेक रसों से भरी मटकियां और बर्तन रखे हुए थे। वे फूट गये। छकड़े के पहिये तथा धुरे अस्त-व्यस्त हो गये। उसे छकड़े पर बैठे लोमश ऋषि के शाप से देहरहित हुए हिरण्याक्ष के पुत्र उत्कच की श्रीकृष्ण के चरण स्पर्श से मुक्ति हो गई। **संदर्भ :** महाभारत-2/38, ब्रह्म-अ० 184; विष्णु-5/6; भागवत-10/8; अग्नि-12; ब्रह्मवैवर्त-श्रीकृष्ण जन्म खण्ड, अ० 12; हरिवंश-विष्णु पर्व; गर्ग-संहिता अ० 14

(4) कृष्ण से राधा का विवाह

कृष्ण का राधा के साथ विवाह करने का उल्लेख एक मात्र ब्रह्मवैवर्त पुराण में ही मिलता है। यहां पर वर्णन है कि एक बार नन्द बालक कृष्ण को साथ लेकर वृन्दावन में गए। उस समय कृष्ण की माया से आकाश मेघों से आच्छादित हो गये। झंझावात चलने लगे। इससे भयभीत होकर नन्द वहीं पर रुक गये। वहां पर श्रीकृष्ण रोने लगे और नन्द के गले से चिपट गए। इसी समय यहां पर राधा आई। नन्द ने राधा की स्तुति कर कृष्ण उसे सौंप दिए। श्रीकृष्ण ने उस समय किशोरावस्था प्राप्त कर ली। वहां पर ब्रह्मा प्रकट हुए और उन्होंने अग्नि जलाकर विधि पूर्वक राधा का श्रीकृष्ण से पाणिग्रहण कराया। श्री कृष्ण पुन: शिशु रूप में परिवर्तित हो गए। राधा उन्हें लेकर यशोदा के पास आई और उन्हें श्री कृष्ण को देकर अपने घर आ गई। **संदर्भ :** ब्रह्मवैवर्त-श्री कृष्णजन्म खण्ड, अ० 15; गर्ग-संहिता-अ० 16

(5) तृणावर्त वध

तृणावर्त एक दैत्य था। यह कंस का निजी सेवक था। कंस ने इसे कृष्ण को मारने के लिए गोकुल भेजा यह वहां पर चक्रवात का रूप धारण करके गया। यह बालक श्री कृष्ण को आकाश में उड़ाकर ले गया, पर वह श्री कृष्ण का भार न उठा सका और शान्त हो गया। श्री कृष्ण ने उसका गला पकड़कर उसे मार दिया। जब वह मर गया तो श्री कृष्ण के साथ ब्रज में गिर पड़ा। **संदर्भ :** भागवत-10/7, ब्रह्मवैवर्त-श्री कृष्ण जन्म खण्ड-अ० 11; गर्ग-संहिता-अ० 14

(6) कृष्ण का मिट्टी खाना

एक समय कृष्ण के साथ खेल रहे ग्वाल-बालों ने यशोदा से कृष्ण के मिट्टी खाने की शिकायत कर दी जब यशोदा ने कृष्ण का मुंह खुलवाया तो वह उनके मुंह में चर-अचर सम्पूर्ण जगत देखकर आश्चर्य चकित रह गई। **संदर्भ :** भागवत-10/8/32-38

(7) ऊखल-बंधन

यशोदा श्री कृष्ण के नटखटपन से तंग आकर उन्हें रस्सी से बांधने लगीं। इन्होंने अपने घर की सारी रस्सियां जोड़ लीं, लेकिन फिर भी वह श्रीकृष्ण को न बांध सकी। बाद में यशोदा को परेशान देखकर कृष्ण स्वयं बंधन में बंध गए। **संदर्भ :** भागवत-10/8/32-33

(8) यमलार्जुन-उद्धार

यमल और अर्जुन वृक्ष पूर्व जन्म में कुबेर के नलकूबर और मणिग्रीव नामक पुत्र थे। नारद के शाप से ये वृक्ष हो गए थे। एक बार श्रीकृष्ण को दण्ड देने के लिए यशोदा ने उन्हें इन वृक्षों से बांध दिया। उस समय श्रीकृष्ण ने ऊखल को खींचना प्रारम्भ कर दिया और उसे यमलार्जुन नामक वृक्षों के बीच से होकर खींचने लगे। उन वृक्षों में ऊखल अड़ने से वे वृक्ष समूल उखड़कर पृथ्वी पर गिर पड़े और उनका उद्धार हो गया। **संदर्भ :** महाभारत-2/38; ब्रह्म-अ० 184; विष्णु-5/6; भागवत-10/10, अग्नि-अ०12; ब्रह्मवैवर्त-श्रीकृष्ण जन्म खण्ड-अ० 14; हरिवंश-विष्णु पर्व; गर्ग-संहिता-अ० 19

(9) वत्सासुर वध

एक दिन बलराम और श्रीकृष्ण अन्य ग्वाल-वालों के साथ यमुना तट पर अपने बछड़े चरा रहे थे। उस समय वहां पर श्रीकृष्ण को मारने के उद्देश्य से एक दैत्य आया। वह बछड़े का रूप धारणकर अन्य बछड़ों में मिल गया। श्रीकृष्ण ने उसे पहचानकर उसके पिछले दोनों पैर पकड़कर आकाश में घुमा दिया और मर जाने पर कैथ के पेड़ पर पटक दिया। वह बहुत से कैथ के वृक्षों को गिराकर स्वयं भी भूमि पर गिर पड़ा। यह देखकर सभी ग्वाल बाल श्रीकृष्ण की प्रशंसा करने लगे। **संदर्भ :** भागवत-10/11; गर्ग-संहिता-अ० 2

(10) बकासुर वध

बकासुर कंस का मित्र था। यह श्रीकृष्ण का वध करने के लिए एक बगुले का रूप धारण करके आया और श्रीकृष्ण को निगल गया। जब श्रीकृष्ण बगुले के तालू के नीचे पहुंचे तो वे तालू को आग के समान जलाने लगे। अतः उसने श्रीकृष्ण को तुरन्त उगल दिया तथा उन पर चोंच से चोट करने लगा। उस समय श्रीकृष्ण ने बकासुर की चोंच को चीरकर मार डाला। **संदर्भ :** भागवत-10/11; ब्रह्मवैवर्त-श्रीकृष्ण जन्म खण्ड-अ० 16; गर्ग संहिता-अ० 2

(11) अघासुर वध

एक बार श्रीकृष्ण वन में बछड़ों को चराते हुए और बालोचित खेल खेलते हुए विचरण करने लगे। उस समय कंस ने पूतना और बकासुर के छोटे भाई अघासुर को श्रीकृष्ण को मारने के लिए भेजा। वह कृष्ण को मारने के उद्देश्य से एक अजगर का रूप बनाकर मार्ग में लेट गया। ग्वाल-बाल खेलते हुए बछड़ों के साथ उसके मुंह में घुस गये। यह देखकर श्रीकृष्ण भी उसके मुंह में घुस गये और उसके गले में जाकर उन्होंने अपने शरीर को बढ़ाना प्रारम्भ कर दिया। जिससे अघासुर का गला रुंध गया और श्वासों के रुकने से उसकी मृत्यु हो गयी। **संदर्भ :** भगवत-10/12; गर्ग-संहिता-2/6

(12) ब्रह्मा-मोह

कृष्ण के मानवोचित कार्यों को देखकर ब्रह्मा को भ्रम हो गया कि वे परब्रह्म नहीं हैं, अतः उन्होंने बछड़े, ग्वाल-बाल आदि को लेजाकर अलक्षित कर दिया। कृष्ण ने ऐसे ही अन्य ग्वाल-बाल आादि बना लिये और अपनी क्रीड़ा में रत रहे। एक वर्ष बाद जब ब्रह्मा ने

आकर देखा तब उनका भ्रम नष्ट हुआ और उन्होंने कृष्ण से क्षमा मांगकर उनकी स्तुति की। **संदर्भ** : भागवत-10/13/20; ब्रह्मवैवर्त-श्रीकृष्ण जन्म खण्ड, अ० 20; गर्ग-संहिता-2/7/8

(13) कालिय-दमन

कालिय कद्रू का पुत्र था। यह गरुड़ के भय से समुद्र छोड़कर ब्रज के समीप यमुना में छिपकर रहता था। इसके समीप जो भी जाता था, वह इसकी भयंकर ज्वाला से जलकर मर जाता था। एक बार श्रीकृष्ण घूमते-घूमते उस स्थान पर पहुंच गये और अपनी कमर-कसकर कदम्ब के पेड़ से कालीदह में कूद पड़े। वहां पर कालिय नाग ने उन्हें अपनी देह में लपेट लिया। उस समय बलराम ने उनसे कालिय को शीघ्र नष्ट करने को कहा। तब श्रीकृष्ण कालिय के सिर पर नृत्य करने लगे, जिससे कालिय संतप्त होकर मुख से रक्त वमन करने लगा और जीवन-दान मांगने लगा। श्रीकृष्ण ने उससे परिवार सहित यमुना छोड़कर समुद्र में चले जाने को कहा और उसे क्षमा कर दिया। **संदर्भ** : महाभारत-2/38; ब्रह्म-अ० 185; विष्णु-5/7; भागवत-10/11; अग्नि-अ० 12; ब्रह्मवैवर्त-श्रीकृष्ण जन्म खण्ड-अ० 19; हरिवंश-विष्णु पर्व।

(14) दावानल-पान

एक बार ब्रजवासी अपनी गायों सहित यमुना तट पर सो गये। आधी रात के समय वहां पर आग लग गई और उस आग ने सबको चारों ओर से घेर लिया और उन्हें जलाने लगी। तब सभी लोग श्रीकृष्ण की शरण में गये और उससे बचने के लिए प्रार्थना करने लगे। उस समय श्रीकृष्ण उस भयंकर आग का पान कर गये। दूसरी बार गोचारण के समय सभी ग्वालों और गायों को वन में लगी आग ने व्याकुल कर दिया। श्रीकृष्ण ने उस समय भी उस आग से सबकी रक्षा की। **संदर्भ** : भागवत-10/17, 10/19, ब्रह्मवैवर्त-श्रीकृष्ण जन्म खण्ड-अ० 19; गर्ग-संहिता-2/12

(15) श्रीकृष्ण का गौ-चारण

श्रीकृष्ण का पालन-पोषण गोकुल में नन्द के घर में हुआ था। नन्द एक सम्मानित गोप थे। गोकुल में गाय चराने का कार्य प्रमुख था। श्रीकृष्ण को भी गौ-चारण का कार्य करना पड़ा। **संदर्भ** : भागवत-10/19

(16) गोपी चीर हरण

एक बार कुमारी गोपियों ने हेमन्त ऋतु आने पर कात्यायनी देवी का व्रत किया। उस समय गोपियां प्रातःकाल जाकर अपने वस्त्र उतारकर निर्वस्त्र होकर यमुना में स्नान करती थीं। एक दिन श्रीकृष्ण उन गोपियों के सारे वस्त्रों को उठाकर कदम्ब के वृक्ष पर चढ़ गये और उनसे अपने-अपने वस्त्र ले जाने के लिए कहने लगे। बहुत अनुनय विनय के बाद उन्होंने गोपियों के वस्त्र लौटाये और वस्त्रहीन होकर नहाने से यमुना और वरुण का अपमान होने की क्षमा मांगने के लिए उनसे कहा। तदनुसार गोपियां अपने अपराध की क्षमा मांगकर और अपने-अपने वस्त्र लेकर वहां से चली गईं। **संदर्भ** : भागवत-10/22; ब्रह्मवैवर्त-श्रीकृष्ण जन्म खण्ड, अ० 27

(17) यज्ञपत्नियों पर कृपा

एक बार श्रीकृष्ण और बलराम यमुना तट पर ग्वाल-बालों सहित गायें चरा रहे थे। उस समय कुछ भूखे ग्वाल-बालों ने उनके पास आकर क्षुधा शान्त करने का उपाय पूछा। श्रीकृष्ण ने उन्हें निकट ही में स्वर्ग की कामना से आंगिरस नामक यज्ञ कर रहे ब्राह्मणों के पास भोजन मांगने के लिए भेजा। परन्तु उन ब्राह्मणों ने भोजन नहीं दिया और न कोई ध्यान ही दिया, क्योंकि वे स्वर्गादि की प्राप्ति के लिए कर्म में लगे हुए थे। तब श्रीकृष्ण ने ग्वाल-बालों को उन ब्राह्मणों की पत्नियों के पास भोजन मांगने के लिए भेजा। ब्राह्मण पत्नियां शीघ्र ही भोजन लेकर श्रीकृष्ण और बलराम के पास गईं। श्रीकृष्ण ने उनका भोजन स्वीकार कर और उन्हें समझाकर उनके पतियों के पास भेज दिया। जब ब्राह्मणों को इसका पता चला तो उन्हें बहुत ही पश्चात्ताप हुआ। **संदर्भ :** भागवत-पुराण-10/23; ब्रह्मवैवर्त-श्रीकृष्ण जन्म खण्ड, अ० 18

(18) गोवर्धन-धारण : इन्द्र-मान-मर्दन

श्रीकृष्ण ने इन्द्र-यज्ञ भंग कर गोवर्धन पूजा करने की ब्रजवासियों को सलाह दी। गोवर्धन-पूजा से इन्द्र रुष्ट हो गये और उन्होंने ब्रज पर मूसलाधार वर्षा की। कृष्ण ने ब्रजवासियों की रक्षार्थ अंगुली पर गोवर्धन पर्वत को उठाकर धारण किया और इन्द्र का मान भंग किया। ब्रज में कई दिन तक मूसलाधार वर्षा हुई, लेकिन ब्रजवासियों का इन्द्र कुछ न बिगाड़ सका। तब इन्द्र को श्रीकृष्ण के विषय में ज्ञान हुआ और उसने श्रीकृष्ण से आकर क्षमा मांगी। इन्द्र ने प्रसन्न होकर श्रीकृष्ण को उपेन्द्र पद पर अभिषिक्त किया और उनका गोविन्द नाम रखा। **सन्दर्भ :** महाभारत, 2/38, 5/130, 13/149, 158; ब्रह्म अ० 188; विष्णु, 5/10-12; भागवत, 10/24-27; अग्नि, अ० 12; ब्रह्मवैवर्त-श्रीकृष्ण जन्म खण्ड, अ० 21; हरिवंश (विष्णु पर्व) अ० 19

(19) वरुणलोक से नन्द को छुड़ाना

नन्दबाबा ने कार्तिक शुक्ल एकादशी का उपवास किया और उसी दिन द्वादशी लग जाने पर रात में ही यमुना में स्नान करने के लिए चले गये। उस समय उनको वरुण के एक सेवक ने पकड़ लिया और वह उन्हें पकड़कर अपने स्वामी वरुण के पास ले गया। नन्दबाबा के वापस न आने पर सभी ब्रजवासियों ने उनसे श्रीकृष्ण को खोजने के लिए कहा। उस समय श्रीकृष्ण वरुण के पास वरुणलोक में गये। वरुण ने उनका वहां स्वागत किया और बार-बार उनकी स्तुति की। इसके साथ ही नन्दबाबा को आदर के साथ उन्हें सौंप दिया। श्रीकृष्ण उन्हें लेकर ब्रज में आ गये। **सन्दर्भ :** भागवत, 10/28, गर्ग-संहिता, माधुर्य खण्ड, अ० 22

(20) श्रीकृष्ण द्वारा वेणु-वादन और रास-क्रीड़ा : गोपियों से प्रेम

वृन्दावन में श्रीकृष्ण और बलराम बछड़ों के पालनकर्त्ता होकर बाल-क्रीड़ा करने लगे। वे सींगी और तुम्बी लिये वन में घूमते थे और गोपालोचित वेणु बजाया करते थे। श्रीकृष्ण मनोरम शरद-चन्द्र की रात्रि में वृन्दावन में गोपियों के साथ रास-क्रीड़ा करते थे। कृष्ण की मुरली की मनोहर ध्वनि को सुनकर गोपियां गृह त्यागकर श्रीकृष्ण के पास दौड़ी चली

आती थीं और उनके साथ रास-क्रीड़ा करती थीं। सन्दर्भ : महाभारत, 2/38; ब्रह्म-189, भागवत, 10/21, 10/29, 10/33, ब्रह्मवैवर्त-श्रीकृष्ण जन्म खण्ड, अ० 28, हरिवंश (विष्णु पर्व), अ० 89।

(21) सुदर्शन-उद्धार

सुदर्शन पूर्वजन्म में एक विद्याधर था और अंगिरा के शाप से एक सर्प बन गया था। एक समय नन्द गोपों और अपने पुत्रों के साथ अम्बिका वन गये। वहां इस सांप ने नन्द के पैर को पकड़ लिया, तब श्रीकृष्ण ने आकर इसे हटाया और नन्द को छुड़ाया। श्रीकृष्ण के स्पर्श से इसे मोक्ष मिली और अपने लोक को चला गया। संदर्भ : भागवत-10/34

(22) शंखचूड़-वध

शंखचूड़ पूर्वजन्म में कृष्ण का एक पार्षद था। वह राधा के शाप से एक राक्षस बन गया था और कुछ समय पश्चात् कंस का मित्र हो गया था। इसे कंस ने श्रीकृष्ण को मारने के लिए भेजा था। एक दिन श्रीकृष्ण और बलराम रात्रि के समय गोपियों के साथ विहार कर रहे थे। उस समय यह वहां आया और श्रीकृष्ण बलराम के देखते-देखते गोपियों को लेकर उड़ गया। श्रीकृष्ण और बलराम ने इसका पीछा किया। श्रीकृष्ण ने उसे पकड़कर उसके सिर पर मुक्का मारा, जिससे उसका सिर उसके धड़ से अलग हो गया। श्रीकृष्ण ने उसे मारकर उसकी मणि सिर से निकाल ली और वह बलराम को दे दी। संदर्भ : भागवत, 10/34; गर्ग-संहिता-वृन्दावन-खण्ड, अ० 23

(23) अरिष्टासुर-वध

एक दिन श्रीकृष्ण गोपियों के साथ रास-क्रीड़ा कर रहे थे। उस समय अरिष्ट नामक एक असुर एक बैल का रूप धारण कर आया। उसकी गर्जना से सभी गायें भयभीत हो गयीं और गोप तथा गोपियां भी भयभीत होकर कृष्ण को रक्षा के लिए पुकारने लगीं। तब श्रीकृष्ण ने उसके दोनों सींग पकड़कर उसमें लात मारकर जमीन पर गिरा दिया, जिससे उसके प्राण निकल गये। सन्दर्भ : महाभारत, 2/38; ब्रह्म, 189, विष्णु, 5/14, भागवत, 10/36, ब्रह्मवैवर्त-श्रीकृष्ण जन्म खण्ड-7, गर्ग-संहिता माधुर्य खण्ड-अ० 24; हरिवंश (विष्णु पर्व)

(24) केशी-वध

केशी एक बलवान दैत्य था। इसे कंस ने कृष्ण को मारने के लिए भेजा। यह घोड़े का रूप धारण करके ब्रज में आया। इससे भयभीत होकर और व्याकुल होकर गोप-गोपियां रक्षा के लिए श्रीकृष्ण की शरण में गईं। तब श्रीकृष्ण इसको मारने के लिए इसके समीप गये। यह मुंह फाड़कर श्रीकृष्ण पर टूट पड़ा। उस समय श्रीकृष्ण ने इसके मुंह में अपना हाथ दे दिया। कृष्ण का हाथ केशी के शरीर में प्रवेश कर गया और उससे केशी मर गया। सन्दर्भ : महाभारत, 2/38, ब्रह्म अ० 190, विष्णु, 5/16, ब्रह्मवैवर्त-श्रीकृष्ण जन्म खण्ड, अ० 16, गर्ग-संहिता—मथुरा खण्ड, अ० 2, हरिवंश (विष्णु पर्व)।

(25) गोपों का वृन्दावन गमन

एक दिन श्रीकृष्ण ने बलराम से गोकुल को छोड़कर वृन्दावन में चलने के लिए कहा।

ब्रजवासी डरकर गोकुल छोड़कर चल दें इस उद्देश्य से श्रीकृष्ण ने अपने शरीर से हजारों भयानक भेड़िये उत्पन्न कर दिये। वे भेड़िये गोकुल में उत्पात करने लगे। उनके भय से डरकर ब्रजवासियों ने भागकर वृन्दावन गमन का निश्चय किया और ब्रज को त्यागकर नन्द सभी ब्रजवासियों सहित वृन्दावन में जाकर रहने लगे। **सन्दर्भ** : ब्रह्म-184, विष्णु-5/6, भागवत, 10/11, ब्रह्मवैवर्त, 17, (श्रीकृष्ण जन्म खण्ड), हरिवंश (विष्णु पर्व)।

(26) **व्योमासुर-वध**

एक बार ग्वाल-बाल पहाड़ की चोटी पर गाय चरा रहे थे तथा आपस में खेल रहे थे। उसी समय व्योमासुर भी इनमें आकर शामिल हो गया एवं ग्वाल-बालों को ले जाकर गुफा में छिपाने लगा। श्रीकृष्ण को इसका पता लग गया। उन्होंने इसे गला घोंटकर मार दिया और ग्वाल-बालों को गुफा से निकाला। **संदर्भ** : भागवत-10/37

(27) **कृष्ण का अक्रूर के साथ मथुरा गमन**

पूतना, वृषभासुर, धेनुक, प्रलम्ब, केशी आदि दैत्यों के मारे जाने पर नारद ने कंस को यशोदा और देवकी के गर्भ-परिवर्तन का सम्पूर्ण वृत्तान्त बता दिया। तब कंस ने कृष्ण को मारने की योजना बनाई तथा कृष्ण और बलराम को मथुरा लाने के लिए कंस ने अक्रूर से निवेदन किया कि वे वृंदावन जाकर उन्हें ले आएं। उसने धनुष-यज्ञ का आयोजन कर रखा था और पूरी तैयार की थी कि कृष्ण को किसी बहाने से मथुरा बुलाकर उनका वध कर दिया जाय। अक्रूर ने नन्द आदि गोपों को धनुष-यज्ञ समारोह देखने और इस अवसर पर भेंट अथवा कर चुकाने के लिए कंस का निमंत्रण दिया और कृष्ण बलराम को साथ लेकर मथुरा चल दिये। **संदर्भ** : ब्रह्म-पुराण-191-192; पद्मपुराण-उत्तर खण्ड-245/253-330; विष्णु-पुराण-5/18-31; भागवत 10/38/39; अग्नि पुराण-अ०, 12; ब्रह्मवैवर्त-कृष्ण जन्म खण्ड, 70-71; हरिवंश पुराण-विष्णु पर्व, अ० 26,34/11, देवी भागवत-4/24/8-10; गर्ग-संहिता-माधुर्य- खण्ड, अ० 1

(28) **कुब्जा पर कृपा**

कृष्ण ने मथुरा में राजमार्ग पर चन्दन, केसर आदि के पात्र को लिए आती हुई नवयौवना कुब्जा को देखा और उससे पूछा कि वह अनुलेपन किसके लिए ले जा रही है। इसे सुनकर कुब्जा ने बताया कि वह कंस की दासी है और उसके लिए ही घिसा हुआ चन्दन ले जा रही है। श्रीकृष्ण ने उससे मांगकर चन्दन को अपने शरीर पर लगा लिया और उन्होंने अपनी हाथ की दो अंगुलियों को कुब्जा की ठुड्डी में लगाकर ऊपर को उठा दिया तथा उसके पैरों को अपने पैरों से दबा दिया। इस प्रकार अपने पैरों से उसके पैरों को दबाकर चिबुक को उठा लिया। कुब्जा का शरीर पहले टेढ़ा था। वद सीधी हो गई और सीधी होने पर परम रमणी बन गई। **संदर्भ** : ब्रह्म-अ० 193; विष्णु-5/20; भागवत-10/42; अग्नि-अ० 12, हरिवंश-विष्णु पर्व; गर्ग संहिता-मथुरा खण्ड-अ० 6

(29) **माली पर कृपा**

धोबी को मारकर बलराम और श्रीकृष्ण मथुरा में एक गुणक भागवत माली के घर की ओर गये। वहां उन्होंने माली से पुष्पों की याचना की। माली ने उन दोनों को स्वच्छ

ओर सुगंधित पुष्प दिये। तब श्रीकृष्ण ने प्रसन्न होकर माली को यह वर दिया कि उसे कभी लक्ष्मी नहीं छोड़ेगी और उसे दास्यपद प्रदान किया। **संदर्भ** : ब्रह्म-अ० 192; विष्णु-5/20, भागवत-10/42; ब्रह्मवैवर्त-श्रीकृष्ण जन्म खण्ड अ० 72; गर्ग-संहिता-मथुरा खण्ड अ० 6

(30) धनुष-भंग

बलराम और श्रीकृष्ण कंस की धनुष-शाला में गये और वहां उन्होंने रखे हुए धनुष को उठाकर खींचा। बलपूर्वक खींचने से धनुष टूट गया। उसके महाशब्द से मथुरापुरी गूंज उठी। धनुष के टूट जाने पर रक्षकों ने उनके ऊपर आक्रमण कर दिया, परन्तु बलराम और श्रीकृष्ण उन सैनिकों को मारकर धनुषशाला से बाहर निकल गये। **संदर्भ** : ब्रह्म-अ० 193; विष्णु-5/20; भागवत-10/42; ब्रह्मवैवर्त-श्रीकृष्ण खण्ड अ० 72; हरिवंश-विष्णु पर्व; गर्ग-संहिता-मथुरा खण्ड, अ० 6

(31) कुवलयापीड़ वध

कुवलयापीड़ ऐरावतकुल में उत्पन्न श्रेष्ठ हाथी था। इसे कंस ने धनुष-यज्ञ के मण्डप-द्वार पर खड़ा कर दिया और उसके महावत से कहा कि वह इसे द्वार पर खड़ा रखे तथा जब बलराम और श्रीकृष्ण अन्दर आएं तो उन्हें कुवलयापीड़ से मरवा डाले। जैसे ही बलराम और श्रीकृष्ण मल्लशाला के द्वार पर आये उसी समय महावत द्वारा प्रेरित कुवलयापीड़ हाथी ने उन दोनों पर आक्रमण कर दिया। उस समय श्रीकृष्ण ने उस कुवलयापीड़ हाथी की सूंड़ पकड़कर धरती पर पटक दिया और उसके दांत तोड़कर उसके अस्त्र-शस्त्र ले लिये। इसके महावत अम्बष्ट को बलराम ने मार दिया। **संदर्भ** : महाभारत-2/38; ब्रह्म-अ० 193; विष्णु-5/20, भागवत-10/43; अग्नि-अ० 12; ब्रह्मवैवर्त-श्रीकृष्ण जन्म खण्ड, अ० 7; हरिवंश-विष्णु पर्व; गर्ग-संहिता-मथुरा खण्ड, अ० 7

(32) चाणूर और मुष्टिक वध

श्रीकृष्ण और बलराम के मथुरा आने और उनके द्वारा धनुष भंग किये जाने का समाचार सुनकर कंस ने चाणूर और मुष्टिक मल्लों को मल्लयुद्ध में उन दोनों को मारने के लिए प्रेरित किया। जिस समय बलराम और श्रीकृष्ण ने कंस की सभा में प्रवेश किया। उस समय अनुचरों के साथ राजगण मंचों पर बैठे थे। कंस एक ऊंचे सिंहासन पर विराजमान था। मल्लयुद्ध की तैयारियां हो रही थीं। चाणूर जोर-जोर से आवाज निकाल रहा था तथा मुष्टिक ताल ठोक रहा था। उस समय चाणूर श्रीकृष्ण से और मुष्टिक बलराम से भिड़ गया। मल्लयुद्ध में कृष्ण ने चाणूर पर मुक्कों का प्रहार कर मार दिया। बलराम ने मुष्टिक पर मुष्टि प्रहार करके उसकी छाती पर घुटने से वार किया और उसे धराशायी कर दिया। **संदर्भ** : महाभारत-2/38; ब्रह्म-अ० 193; विष्णु-5/20; भागवत-10/44, अग्नि-12; ब्रह्मवैवर्त-श्रीकृष्ण जन्म खण्ड, अ० 12; गर्ग-संहिता-मथुरा खण्ड, अ० 7

(33) कृष्ण द्वारा तोशलक वध

कंस द्वारा आयोजित मल्लयुद्ध में चाणूर का वध करने के बाद कृष्ण दूसरी बार तोशल नामक मल्ल से युद्ध करने लगे। उन्होंने उसके पैर पकड़कर सौ बार घुमाकर जोर से पृथ्वी पर मार दिया, जिससे उसकी मृत्यु हो गयी। **संदर्भ** : ब्रह्म-अ० 193; विष्णु-5/20; भागवत-10/44; हरिवंश-विष्णु पर्व; गर्ग-संहिता-मथुरा खण्ड, अ० 8

(34) कृष्ण द्वारा कंस-वध

कंस मथुराधिपति था, जो अपने पिता उग्रसेन को कारागार में डालकर स्वयं सिंहासन पर बैठ गया था। उसने कृष्ण के माता-पिता को भी कारागार में बन्द कर दिया था। उसने अपनी प्रजा पर भी घोर अत्याचार किए तथा श्रीकृष्ण का वध करने का प्रयास किया। अन्त में श्रीकृष्ण ने केश पकड़कर उसका वध कर दिया। तदनन्तर उन्होंने वासुदेव और देवकी तथा उग्रसेन को कारागार से मुक्त कराया। **संदर्भ** : महाभारत-1/68, 2/44; ब्रह्म-अ० 193;पद्म-1/13;विष्णु-5/20/82-89; भागवत-10/44; अग्नि, अ० 12; ब्रह्मवैवर्त-(श्रीकृष्ण जन्म) अ० 72; हरिवंश (विष्णु पर्व), अ० 31

(35) कृष्ण द्वारा सुनामा-वध

सुनामा को महाभारत में कंस का सेनापति बताया गया है, परन्तु ब्रह्म पुराण में उल्लेख मिलता है कि यह कंस का भाई था। कृष्ण द्वारा कंस को मार डालने पर यह उनसे युद्ध करने आया और कृष्ण के हाथों से मारा गया। **संदर्भ** : महाभारत-2/38; ब्रह्म-अ० 193; विष्णु-5/20; भागवत-10/44; गर्ग-संहिता, मथुरा खण्ड, अ० 8

(36) कृष्ण का उद्धव को ब्रज भेजना

श्रीकृष्ण ने अपने वियोग में दुखी तथा उनके लिए पति-पुत्र आदि सभी सम्बन्धियों को छोड़ देने वाली गोपियों को समझाने के लिए उद्धव को गोकुल भेजा। उद्धव कृष्ण का संदेश लेकर गोकुल गये। वहां पर कृष्ण द्वारा बाल्यावस्था और किशोरावस्था में की गई लीलाओं को याद कर-करके गोपियां उद्धव के सामने रोने लगीं। उसी समय एक भौंरा कहीं से उड़ता हुआ वहां आ गया। एक गोपी ने उसी को लक्ष्य करके कृष्ण को उपालम्भ देना आरम्भ कर दिया। गोपियों के प्रेमातिरेक से उद्धव प्रभावित हुए बिना न रह सके। उन्होंने गोपियों के सर्वात्म समर्पण के लिए उनकी प्रशंसा की और कृष्ण का उनको संदेश सुनाया। उद्धव कई महीनों तक ब्रज में रहे तथा नन्द बाबा और ब्रज में रहने वाली गोपियों की चरण-धूलि को उन्होंने बार-बार प्रणाम किया। उन्होंने मथुरा से लौटकर कृष्ण के समक्ष गोपियों की प्रेममयी वार्ता का वर्णन किया।

'ब्रह्मवैवर्त पुराण' के अनुसार जब उद्धव श्रीकृष्ण के पास जाकर राधा की अनन्य भक्ति का वर्णन करते हुए कहते हैं कि मैंने राधा से कह दिया है कि कृष्ण तुम्हारे पास शीघ्र आयेंगे तब श्रीकृष्ण रात को स्वप्न में गोकुल जाते हैं और राधा तथा ब्रजवासियों को प्रसन्न कर पुनः मथुरा आ जाते हैं। **संदर्भ** : भागवत-10/46-47; ब्रह्मवैवर्त-(श्रीकृष्ण जन्म खण्ड) अ० 81-91

(37) श्रीकृष्ण का वसुदेव के मृतपुत्रों को लौटाना

एक दिन श्रीकृष्ण और बलराम वसुदेव के पास गये । उस समय वसुदेव उनकी महिमा का वर्णन करने लगे । तब श्रीकृष्ण ने वसुदेव को ब्रह्मज्ञान दिया। तत्पश्चात् वहां पर बैठी हुई देवकी ने श्रीकृष्ण से अपने मृत छः पुत्रों को वापस लाने का अनुरोध किया। देवकी के वचन सुनकर बलराम और श्रीकृष्ण ने योगमाया का आश्रय लेकर सुतल लोक में प्रवेश किया और वहां से देवकी के मृत पुत्रों को लाकर लौटा दिया। ये प्रजापति मरीचि की पत्नी ऊर्णा के गर्भ से उत्पन्न छः पुत्र स्मर, उद्गीथ, परिष्वंग, पतंग, क्षुद्रभूत और घृणि थे, जो कि ब्रह्मा के शाप से असुर-योनि में हिरण्यकश्यप के पुत्र के रूप में उत्पन्न हुए और उन्हें योगमाया ने देवकी के गर्भ में रख दिया था। उनके उत्पन्न होते ही उन्हें कंस ने एक-एक करके मार दिया था । 'हरिवंश पुराण' में देवकी के पुत्रों को कालनेमि दानव का पुत्र बताया गया है । उन पर क्रोधित होकर हिरण्यकशिपु ने उन्हें शाप दे दिया कि वे देवकी के गर्भ से जन्म प्राप्त करेंगे और एक-एक करके कंस द्वारा गर्भ के समय में ही मार डाले जायेंगे। **संदर्भ** : हरिवंश-विष्णु पर्व; भागवत-10/85; ब्रह्मवैवर्त-श्रीकृष्ण जन्म खण्ड, अ० 1/3

(38) कृष्ण का सांदीपनि गुरु से शिक्षा प्राप्त करना

श्रीकृष्ण बलराम के साथ उज्जयिनी में विद्याध्ययन के लिए सांदीपनि आश्रम में गये । वहां पर उन्होंने चौंसठ दिन-रात में ही छः अंगों सहित सम्पूर्ण वेदों, चित्रकला, गणित, गान्धर्व, वैद्य-विशारद का ज्ञान प्राप्त कर लिया तथा गज-शिक्षा और अश्व-शिक्षा को उन्होंने बारह दिनों में ही सीख लिया । कुछ दिनों के बाद वे पुनः सांदीपनि के पास धनुर्विद्या सीखने गये और पचास दिनों में उन्होंने दस अंगोंसहित सुप्रतिष्ठित और रहस्यपूर्ण विद्याओं का ज्ञान प्राप्त कर लिया । **संदर्भ** : महाभारत-2/38; ब्रह्म-अ० 194; पद्म-उत्तर खण्ड, अ० 273; विष्णु-5/21; भागवत-10/45; 10/85, अग्नि-अ० 12; ब्रह्मवैवर्त-श्रीकृष्ण जन्म खण्ड, अ० 102

(39) मृत गुरु-पुत्र को जीवित करना

सांदीपनि से धनुर्वेद आदि की शिक्षा ग्रहण करने के बाद श्रीकृष्ण और बलराम ने उनसे दक्षिणा लेने का निवेदन किया। सांदीपनि ने गुरुदक्षिणा के रूप में प्रभास नामक क्षार-समुद्र से उनके मृत पुत्र को लाने को कहा। बलराम और श्रीकृष्ण दोनों अस्त्र-शस्त्र लेकर लवण समुद्र में गए और उन्होंने समुद्र से अपने गुरु-पुत्र को मांगा । तब समुद्र ने उन्हें बताया कि उनके गुरु-पुत्र का अपहरण शंख का रूप धारणकर पंचजन नामक राक्षस ने किया है । यह सुनकर कृष्ण ने जल के भीतर घुसकर पंचजन असुर को मार दिया और उसकी हड्डियों के बने पंचजन शंख को बजाते हुए बलराम के साथ यमपुरी पहुंचे । वहां वैवस्वत यम को जीतकर यातना भोगते हुए सांदीपनि के पुत्र को यथापूर्व शरीर प्रदान करके उसे अपने गुरु को लौटा दिया । तदुपरान्त वे मथुरापुरी में आ गए । **संदर्भ** : महाभारत-2/38; ब्रह्म-अ० 194; विष्णु-5/21; भागवत-10/46 ब्रह्मवैवर्त-श्रीकृष्ण जन्म खण्ड, अ० 102

(40) जरासंध के भय से मथुरा त्यागना : जरासंध से युद्ध

जरासंध मगध का अधिपति और कंस का श्वसुर था। कंस को इसकी अस्ति और प्राप्ति नामक पुत्रियां ब्याही थीं। श्रीकृष्ण द्वारा कंस के मारे जाने पर इसने क्रोधित होकर मथुरा पर अठारह बार आक्रमण किया। इससे तंग आकर श्रीकृष्ण मथुरा को छोड़कर द्वारका जा बसे। यह प्रत्येक बार यादवों से पराभूत हुआ, परन्तु कृष्ण उससे भयभीत होकर मथुरा त्याग गए। **संदर्भ** : ब्रह्म-अ० 195; विष्णु-5/22; भागवत-10/50; ब्रह्मवैवर्त-श्रीकृष्ण जन्म खण्ड-अ० 104; अग्नि-अ० 12; हरिवंश-विष्णु पर्व

(41) कालयवन-वध

यह गोपाली अप्सरा से उत्पन्न गार्ग्य ऋषि का पुत्र था। इसने नारद के मुख से यादवों को बलशाली सुनकर जरासंध के साथ ही मथुरा पर चढ़ाई कर दी। इसे मथुरा-वासी पराजित करने में असमर्थ थे। इसलिए कृष्ण ने इसे छल से मारा। श्रीकृष्ण एक गुफा में जा छिपे जहां मुचकुन्द सो रहा था। कालयवन भी उसी गुफा में घुस गया और सो रहे मुचकुन्द को कृष्ण समझकर लात मारी। मुचकुन्द के उठने पर वर के फलस्वरूप उनकी क्रोधाग्नि से यह भस्म हो गया। **संदर्भ** : ब्रह्म-अ० 196; विष्णु-5/23; भागवत-10/51, अग्नि-अ० 12; हरिवंश-विष्णु

(42) कृष्ण द्वारा रुक्मिणी-हरण

रुक्मिणी विदर्भ देश के नरेश भीष्मक की पुत्री थी। इसका विवाह शिशुपाल के साथ तय कर दिया था, पर यह श्रीकृष्ण में आसक्त थी। विवाह से एक दिन पूर्व रुक्मिणी इन्द्राणी की पूजा करने के लिए मन्दिर में गई। तभी श्रीकृष्ण बलराम के साथ वहां पहुंच गए। रुक्मिणी के मन्दिर से बाहर आते ही वे उसे बलपूर्वक रथ में बैठाकर ले आए। समाचार पाकर रुक्मिणी का भाई रुक्मी आदि श्रीकृष्ण से युद्ध करने के लिए आए, परन्तु वे श्रीकृष्ण और बलराम से पराजित हुए। **संदर्भ** : ब्रह्म-अ० 199; पद्म-उत्तर खण्ड, अ० 274; विष्णु-5/26; भागवत-10/53; ब्रह्मवैवर्त, श्रीकृष्ण जन्म खण्ड-अ० 105-109; हरिवंश-विष्णु पर्व, अ० 52

(43) कृष्ण द्वारा विदूरथ का वध

विदूरथ दन्तवक्र का भाई था। कृष्ण द्वारा अपने भाई के वध करने का समाचार सुनकर वह कृष्ण से युद्ध करने के लिए आया। श्रीकृष्ण ने चक्र से उसका सिर काट दिया। **संदर्भ** : भागवत-10/78

(44) श्रीकृष्ण के विवाह

पुराणों में रुक्मिणी के अतिरिक्त श्रीकृष्ण की सात पत्नियों का उल्लेख मिलता है। यहां पर सूर्यपुत्री कालिन्दी, राजाधिदेव की पुत्री मित्राविन्दा, नग्नजीत की पुत्री सत्या, (नाग्निजीती) जाम्बवान की पुत्री जाम्बवती, केकय की राजपुत्री रोहिणी, मद्रराज की पुत्री (लक्ष्मणा) शीलमण्डला तथा सत्राजित की पुत्री सत्यभामा का श्रीकृष्ण की पत्नी होने का उल्लेख है।

एक बार अर्जुन श्रीकृष्ण के साथ शिकार खेलने यमुनाजी के किनारे गए। वहां पर

उन्होंने एक परम सुन्दरी कन्या को तपस्या करते हुए देखा। श्रीकृष्ण के कहने से अर्जुन ने जाकर उससे उसके तपस्या करने का कारण पूछा। तब उस युवती ने बताया कि वह सूर्य की पुत्री कालिन्दी है और विष्णु को पति रूप में प्राप्त करने के लिए कठोर तपस्या कर रही है। जब तक श्रीकृष्ण उस पर प्रसन्न नहीं होते हैं वह तपस्या करती रहेगी। अर्जुन ने उसके कहे वचन श्रीकृष्ण को बताए। तब श्रीकृष्ण ने उसे अपनी पत्नी के रूप में स्वीकार कर उसे अपने रथ पर बिठा लिया और कुछ दिन इन्द्रप्रस्थ रहकर द्वारका लौट आए। इसके बाद श्रीकृष्ण उज्जैन जाकर राजाधिदेव की कन्या मित्राविन्दा का हरण कर लाये। तत्पश्चात् श्रीकृष्ण ने कोसलदेश में जाकर चौदह बैलों को नाथकर नग्नजीत की पुत्री नाग्निजीति के साथ विवाह किया। श्रीकृष्ण की फूआ श्रुतकीर्ति केवट देश में ब्याही थी। उसकी कन्या भद्रा थी। उसे उसके भाई सन्तदेव ने श्रीकृष्ण को दिया। इसके पश्चात् वे मरुप्रदेश के राजा की पुत्री लक्ष्मणा का हरण कर लाये। **सन्दर्भ** : ब्रह्म-अ० 201; विष्णु-5/28; कूर्म-अ० 96; मत्स्य-47/14; भागवत-10/58; ब्रह्मवैवर्त-अ० 112 (श्रीकृष्ण जन्मखण्ड), हरिवंश-विष्णु पर्व

(45) प्रद्युम्न का विवाह : शम्बरासुर वध

कामदेव ने प्रद्युम्न के रूप में रुक्मिणी के उदर से जन्म लिया था। इसकी पत्नी रति मायावती के रूप में उत्पन्न हो शम्बरासुर के पास रहती थी। जब प्रद्युम्न कुल दस दिन का था, शम्बरासुर ने उसे समुद्र में फेंक दिया। प्रद्युम्न को एक मच्छ निगल गया : उस मच्छ को पकड़कर मछुओं ने शम्बरासुर को भेंट कर दिया। रसोइयों ने मच्छ के पेट से निकले प्रद्युम्न को मायावती को दे दिया। मायावती ने प्रद्युम्न को पाला। जब वह जवान हो गया तब उन्होंने शम्बरासुर को मारकर मायावती से विवाह कर लिया। **सन्दर्भ** : ब्रह्म-अ० 200; पद्म-उत्तरखण्ड अ० 276; विष्णु-4/13, 5/27; भागवत-10/55-57; अग्नि-अ० 12; हरिवंश-विष्णु पर्व अ० 105-118

(46) स्यमन्तक-मणि की कथा : शतधन्वा का वध

सत्याजित को स्यमन्तक मणि सूर्य से प्राप्त हुई थी। इस मणि को सत्याजित का भाई धारण कर शिकार खेलने गया था, जहां एक शेर ने उसका वध करके मणि ले ली थी। परन्तु इसकी चोरी का कलंक श्रीकृष्ण को लगा। श्रीकृष्ण ने जाम्बवान् से इस मणि को लाकर पुनः सत्याजित को लौटा दिया था। सत्याजित ने श्रीकृष्ण पर लगाये चोरी के आरोप से लज्जित होकर अपनी पुत्री सत्यभामा का विवाह श्रीकृष्ण से कर दिया, जिससे शतधन्वा सत्याजित का शत्रु हो गया और एक दिन उसने सत्याजित का वध करके मणि छीन ली। जब श्रीकृष्ण को इसका पता चला तो उन्होंने बलराम के साथ शतधन्वा का पीछा किया और श्रीकृष्ण ने उसका सिर काट डाला। **सन्दर्भ** : ब्रह्म-अ० 16-17; पद्म-सृष्टि-अ० 13; उत्तरखण्ड, अ० 275; विष्णु-4/13; भागवत-10/56-57; अग्नि-अ० 13; कूर्म-अ० 96; मत्स्य-अ० 45; हरिवंश-आदि पर्व, अ० 38-39।

(47) भौमासुर-वध : सोलह हजार राजकुमारियों से विवाह

यह एक प्रसिद्ध असुर था, जिसे नरकासुर भी कहा जाता है। पुराणों की मान्यता है कि यह विष्णु का पुत्र था, जो पृथ्वी के गर्भ से उत्पन्न हुआ था। यह बाणासुर की संगति में पड़कर दुष्ट हो गया था। इसने अपने भंडार में अपार सम्पत्ति एकत्रित कर ली और सोलह हजार राजकुमारियों को अपने यहां बन्द कर लिया। श्रीकृष्ण ने भौमासुर को चक्र से मार डाला और बंदी राजकुमारियों को मुक्त कर द्वारका ले आए और उनकी प्रार्थना पर उन्हें पत्नी के रूप में स्वीकार कर लिया। 'महाभारत' के अनुसार नरकासुर ने देवमाता अदिति के कुण्डल छीन लिये थे। तब इन्द्र ने श्रीकृष्ण से उससे उन कुण्डलों को वापस लाने को कहा। श्रीकृष्ण ने जाकर नरकासुर से युद्ध किया। उससे अदिति के कुण्डल वापस लिये और उसको पराजित कर उसके कारागार में पड़ी सोलह हजार राजकुमारियों की रक्षा की। **संदर्भ** : विष्णु-5/29; भागवत-10/59; अग्नि-अ० 12, हरिवंश-विष्णु पर्व, अ० 64,

(48) श्रीकृष्ण का बाणासुर से युद्ध : कृष्ण और शिव का युद्ध

बलि का ज्येष्ठपुत्र बाणासुर शोणितपुर का राजा था। वह अनुपम बलशाली था। उसने भगवान शंकर की आराधना करके अनेक वर प्राप्त प्राप्त किये। उसकी पुत्री उषा कृष्ण के पौत्र अनिरुद्ध पर अनुरक्त हो गई। अनिरुद्ध बाणासुर की पुत्री के पास पहुंचकर छिपकर वहां रहने लगा। जब बाणासुर को इसका पता लगा तो उसने अपनी पुत्री और अनिरुद्ध को कारागार में डाल दिया और वह अनिरुद्ध को अनेक प्रकार के कष्ट देने लगा। तब नारद ने जाकर श्रीकृष्ण को इसकी सूचना दी। सूचना मिलने पर श्रीकृष्ण, बलराम और प्रद्युम्न को बुलाकर बाणासुर से युद्ध करने शोणितपुर पहुंच गये। शंकर, कार्तिकेय और भद्रकाली उस नगर की रक्षा कर रहे थे। श्रीकृष्ण ने भगवान् शंकर द्वारा रक्षित उस शोणितपुर के उत्तर द्वार पर आक्रमण कर दिया। शंकर श्रीकृष्ण से युद्ध करने के लिए आ डटे। श्रीकृष्ण और शंकर में परस्पर भयंकर युद्ध होने लगा। श्रीकृष्ण ने शिव और उनके गणों को पराजित कर उस नगरी में प्रवेश किया तथा बाणासुर को युद्ध में पराजित कर अनिरुद्ध को कारागार से छुड़ा लिया। तत्पश्चात उषा को साथ लेकर द्वारकापुरी आ गये। **संदर्भ** : महाभारत-2/38; ब्रह्म-अ० 205-207; विष्णु-अ० 5/32-33; शिव-रुद्र-संहिता-युद्ध-खण्ड, अ० 51-55; भागवत-10/62-65; ब्रह्मवैवर्त-श्रीष्ण जन्म खण्ड-अ० 120; कूर्म-1/126; अग्नि-अ० 12; हरिवंश-विष्णु पर्व, अ० 128

(49) कृष्ण द्वारा पारिजात हरण

'हरिवंश-पुराण' के अनुसार एक बार नारद मुनि ने श्रीकृष्ण को पारिजात का पुष्प भेंट लाकर किया। वह पुष्प उन्होंने रुक्मिणी को दे दिया। इससे सत्यभामा सौतिया डाह से जल उठी और क्रोधित होकर श्रीकृष्ण से पारिजात वृक्ष द्वारकापुरी में ही लाने को कहा। तब श्रीकृष्ण गरुड़ पर आरूढ़ होकर सात्याकि और प्रद्युम्न को साथ लेकर स्वर्ग में गए। उन्होंने पारिजात वृक्ष को उखाड़कर गरुड़ की पीठ पर रख लिया और

द्वारकापुरी को चल दिए। सूचना मिलने पर इन्द्र वहां आया और उनसे युद्ध करने लगा। श्रीकृष्ण ने संग्राम में इन्द्र को पराजित कर पारिजात वृक्ष को द्वारकापुरी ले आए। अन्य पुराणों में यह कथा दूसरे रूप में मिलती है। यहां पर श्रीकृष्ण देवमाता अदिति के कुण्डल लेने के लिए स्वर्ग में जाते हैं। उस समय सत्यभामा उनके साथ गई थी। वहां पर सत्यभामा पारिजात वृक्ष को श्रीकृष्ण से द्वारकापुरी ले चलने के लिए अनुरोध करती है। तदनुसार श्रीकृष्ण पारिजात वृक्ष को उखाड़कर उसे गरुड़ की पीठ पर रखकर चल दिए। जब इन्द्र को पता चला तो वह देवताओं को साथ लेकर श्रीकृष्ण से युद्ध करने के लिए आया। श्रीकृष्ण उसे पराजित कर पारिजात को द्वारकापुरी ले आए। **संदर्भ** : ब्रह्म-अ० 203-204; पद्म-उत्तरखण्ड, अ० 275; विष्णु-5/30; भागवत-10/59; अग्नि-अ० 12; हरिवंश-विष्णु पर्व, अ० 74

(50) कृष्ण द्वारा पौड्रक वध

पौण्ड्रक पाण्डुदेश के राजा वसुदेव का पुत्र था। वसुदेव का पुत्र होने के कारण वह अपने को वासुदेव कहता था और विष्णु के चिह्न धारण कर रहता था। वह श्रीकृष्ण से द्वेष रखता था। एक बार उसने कृष्ण के पास दूत भेजा कि वह उसका नाम वासुदेव और अपने चक्र आदि चिह्नों को त्याग दे। यह सुनकर श्रीकृष्ण पौण्ड्रक नगर में गये। उधर से पौण्ड्रक काशीनरेश के साथ युद्ध करने के लिए आया। तब श्रीकृष्ण ने पौण्ड्रक का चक्र से सिर काट दिया। **संदर्भ** : ब्रह्म-207, विष्णु-5/34; पद्म-उत्तर खण्ड, अ० 277; भागवत-अ० 10/66; अग्नि-अ० 12;हरिवंश-भविष्य पर्व, अ० 101-102

(51) शाम्ब विवाह

जाम्बवती से उत्पन्न श्रीकृष्ण का पुत्र शाम्ब दुर्योधन की पुत्री लक्ष्मणा का स्वयंवर से हरण कर लाया। तब क्रोधित होकर कर्ण, दुर्योधन, भीष्म, द्रोण आदि ने युद्ध में पराजित कर शाम्ब को बांध दिया। यह सुनकर यादव दुर्योधन आदि के ऊपर क्रोधित होकर उसे मारने के लिए उद्यत हो गये। तब बलराम हस्तिनापुर गये और दुर्योधन से शाम्ब को छोड़ने को कहा। कौरवों ने उनके कहने से शाम्ब को नहीं छोड़ा। तब क्रोधित होकर बलदेव ने अपने हल से हस्तिनापुर के प्राचीर और स्तूप का विनाश करके हल से खींचा, जिससे एकाएक सारा नगर घूमने लगा। यह देखकर कौरवों ने बलराम से क्षमा मांगी और शाम्ब को मुक्त कर लक्ष्मणा सहित आदर से विदा किया। **संदर्भ** : ब्रह्म-अ० 208; विष्णु-5/35; भागवत-10/68

(52) जरासंध-वध

युधिष्ठिर के राजसूय यज्ञ के अवसर पर श्रीकृष्ण अर्जुन और भीम को लेकर जरासंध के पास गए तथा इससे युद्ध की याचना की। भीम ने इससे सत्ताईस दिन तक युद्ध किया और अन्त में श्रीकृष्ण की दुरभिसंधि से बीच में से चीरकर मार डाला गया। **संदर्भ** : पद्म-उत्तरखण्ड, अ० 518; भागवत-13/72; अग्नि-72

(53) श्रीकृष्ण की अग्रपूजा : शिशुपाल-वध

शिशुपाल चेदिराज दमघोष एवं वसुदेव की बहिन श्रुतश्रवा का पुत्र एवं श्रीकृष्ण का

फुफेरा भाई था। इसके जन्म के समय श्रीकृष्ण ने अपनी फूफी को शिशुपाल के सौ अपराध क्षमा करने एवं उसके बाद उसका वध करने का वचन दिया था।

युधिष्ठिर द्वारा किए गए राजसूय यज्ञ के अवसर पर सर्वसम्मति से श्रीकृष्ण की अग्रपूजा की गई। शिशुपाल ने इसका विरोध किया और उनको कटु वचन कहने लगा। इस पर श्रीकृष्णपक्षीय लोग उसे मारने दौड़े। शिशुपाल भी लड़ने के लिए उद्यत हो गया। उसी समय श्रीकृष्ण ने चक्र से उसका सिर काट दिया। **संदर्भ :** महाभारत-सभापर्व, 43/1-27, अ० 38, 39/9-14, 62; ब्रह्म-अ० 12; पद्म-उत्तरखण्ड-अ० 278-79; विष्णु-4/15/51-53; वायु पुराण-2/34; भागवत-10/74, ब्रह्मवैवर्त-श्रीकृष्ण जन्म खण्ड-अ० 113; ब्रह्माण्ड-3/71

(54) श्रीकृष्ण द्वारा शाल्व वध

शाल्व शिशुपाल का मित्र था। शिशुपाल के वध का समाचार सुनकर शाल्व क्रोधित हो उठा और उसने द्वारकापुरी पर आक्रमण कर दिया। वह अपने सौभ नामक विमान पर चढ़कर आया और यादवों की हत्या करने लगा। वृष्णिवंश के कुमार उससे युद्ध करने लगे, परन्तु शाल्व बहुत से बालकों का वध करने लगा और बगीचों को उजाड़ने लगा। वह श्रीकृष्ण का नाम ले-लेकर उन्हें गाली देने लगा। जब हस्तिनापुर से श्रीकृष्ण द्वारका पहुंचे और उन्हें शाल्व के कृत्य का पता चला तो उन्होंने शाल्व को खोजकर उसके सौभ विमान को नष्ट कर उसमें रहने वाले सभी दानवों को मार गिराया। तदुपरान्त उन्होंने शाल्व का भी वध कर दिया। **संदर्भ :** महाभारत; भागवत-10/76-77; ब्रह्मवैवर्त-श्रीकृष्ण जन्म खण्ड, अ० 113

(55) कृष्ण द्वारा दन्तवक्र वध

दन्तवक्र करुष देश का अधिपति और शिशुपाल, शाल्व तथा पौण्ड्रक का मित्र था। कृष्ण द्वारा शिशुपाल, शाल्व और पौण्ड्रक का वध किये जाने पर वह श्रीकृष्ण से बदला लेने के लिए अकेला ही गया और कृष्ण से युद्ध करने लगा। श्रीकृष्ण ने अपनी गदा का प्रहार कर दन्तवक्र का वध कर दिया **संदर्भ :** पद्म पुराण-उत्तर-खण्ड, अ० 279; भागवत-10/78; ब्रह्मवैवर्त-श्रीकृष्ण जन्म खण्ड-अ० 113

(56) कृष्ण की सुदामा पर कृपा

सुदामा श्रीकृष्ण के सहपाठी और सखा थे। वह अत्यन्त दरिद्र थे। अपनी पत्नी के कहने पर वह द्वारकापुरी श्रीकृष्ण के पास गये और उनकी भेंट के लिए पास-पड़ोस से चार मुट्ठी चावल मांगकर ले गये। जैसे ही सुदामा श्रीकृष्ण के महलों में गये, श्रीकृष्ण उन्हें देखकर पलंग से उठ खड़े हुए और उनका आलिंगन किया। जब तक सुदामा द्वारका में रहे, श्रीकृष्ण ने उनका आदर-सत्कार किया। सुदामा श्रीकृष्ण की कृपा से ऐश्वर्यवान हो गए। श्रीकृष्ण ने उनके लिए अलग से सुदामापुरी बसाई। **संदर्भ : पद्म-6/252;** भागवत-10/80-81; भविष्य-पुराण; ब्रह्मवैवर्त-4/113; गर्ग-संहिता-द्वारका खण्ड, अ० 22

(57) कृष्ण की श्रीदामा पर कृपा

श्रीदामा कृष्ण का बालपन का मित्र था। श्रीकृष्ण ने उसके साथ मित्रता का पूरी तरह से निर्वाह किया। किसी प्रकार का भेद नहीं रखा। **संदर्भ** : भागवत-10/15/20

(58) कृष्ण का विदुर के घर साग खाना

विदुर व्यास तथा राजा विचित्रवीर्य की रानी अम्बिका की दासी के संयोग से उत्पन्न हुए, अत: दासीपुत्र कहलाए। एक बार श्रीकृष्ण दुर्योधन के महलों को छोड़कर विदुर के बिना बुलाए चले गए और उनके पास जाकर उनका आतिथ्य स्वीकार किया। **संदर्भ** : महाभारत-उद्योग-पर्व, अ० 91; विष्णु-पुराण; भागवत-3/1/2; भविष्य-पुराण

(59) कृष्ण का राधा और गोपियों से पुर्नमिलन

एक बार यादवों और शाल्व प्रदेश के राजा ब्रह्मदत्त के पुत्र हंस और डिम्भक के मध्य गोवर्द्धन पर्वत के पास युद्ध हुआ। इस युद्ध में कृष्ण ने हंस को मार दिया तथा डिम्भक ने आत्महत्या कर ली। उस युद्ध से अवकाश पाकर कृष्ण और बलराम गोवर्द्धन पर्वत पर एक वृक्ष की छाया में लेटे हुए थे। उनके वहां आने का समाचार पाकर उनसे भेंट करने के लिए गोप-गोपियों सहित नन्द और यशोदा आये।

'श्रीमद्भागवत' के अनुसार, 'एक बार जब सर्वग्रास सूर्य ग्रहण लगा, तब बहुत से राजा और प्रजा वर्ग के लोग कुरुक्षेत्र स्थित समन्तपंचक तीर्थ में एकत्रित हुए। श्रीकृष्ण भी वसुदेव, उग्रसेन, देवकी, बलराम, प्रद्युम्न, अनिरुद्ध आदि परिजनों के साथ द्वारका के उस तीर्थ में गये। कृष्ण व बलराम का वहां आगमन सुनकर वहां नन्द, यशोदा तथा बहुत से गोप-गोपियां पहुंचे। नन्द-वसुदेव से मिले, यशोदा से देवकी तथा रोहिणी मिली। देवकी और रोहिणी ने अपने पुत्रों का स्वपुत्रवत पालन करने के लिए यशोदा के प्रति आभार प्रकट किया। कृष्ण गोपियों से मिले। उनका कुशल-मंगल पूछा। अपने प्रेम के सम्बन्ध में उन्हें आश्वस्त किया। **संदर्भ** : भागवत-10/82; हरिवंश-पुराण-भविष्य पर्व, अ० 127

(60) कृष्ण की आयुध न ग्रहण करने की प्रतिज्ञा

महाभारत के युद्ध से पूर्व अर्जुन और दुर्योधन श्रीकृष्ण के पास युद्ध का निमंत्रण लेकर गये थे। श्रीकृष्ण ने एक ओर अपनी नारायण सेना कर दी तथा स्वयं आयुध न ग्रहण करने का वचन देकर दूसरी ओर हो गये। अर्जुन ने नि:शस्त्र कृष्ण को स्वीकार कर लिया। **सन्दर्भ** : महाभारत, उद्योग पर्व, 7/19

(61) कृष्ण का सारथी बनना

महाभारत के युद्ध में कृष्ण अर्जुन के सारथी बने। उन्होंने पाण्डवों को भयंकर कष्टों से बचाया। रथ के घोड़ों की सेवा की तथा उन्हें पानी तक पिलाया। अन्त में अर्जुन को विजय दिलायी। **सन्दर्भ** : महाभारत उद्योग पर्व, अ० 7/37-38; भागवत-1/15-17

(62) अर्जुन को गीतोपदेश

महाभारत युद्ध के आरम्भ में अपने ही विपक्ष बन्धु-बांधवों को देखकर अर्जुन युद्ध से विमुख हो गया। उस समय कृष्ण ने अर्जुन को गीता सुनाकर युद्ध के लिए प्रेरित किया,

जिससे अर्जुन युद्ध के लिए तैयार हुआ। **संदर्भ** : महाभारत, भीष्म पर्व अ० 25-42; भागवत, 1/9/36; अग्नि-अ० 14

(63) कृष्ण का ब्राह्मण पुत्र को जीवित करना

द्वारकापुरी में एक ब्राह्मण रहता था। उसके यहां पैदा होते ही पुत्र की मृत्यु हो जाती थी। इस प्रकार उसके नौ पुत्र मृत्यु को प्राप्त हुए। ब्राह्मण के बुरा-भला कहने पर अर्जुन ने उसके पुत्र की रक्षा का आश्वासन दिया, पर वे भी रक्षा करने में असमर्थ रहे। वे संयमनपुरी बालक को खोजने के लिए गये, परन्तु फिर भी असफल रहे, अतः उन्होंने अग्नि में प्रवेश करना चाहा। उसी समय श्रीकृष्ण ने उन ब्राह्मण बालकों को यथोचित वय और रूप के अनुरूप लौटा दिया और अर्जुन की भी रक्षा की। **सदर्भ** : भागवत, 10/79/22-62; ब्रह्मवैवर्त, श्रीकृष्ण जन्म खण्ड, अ० 113; हरिवंश-विष्णु, 1/2-11

(64) श्रीकृष्ण का भीमसेन को युद्ध के लिए प्रेरित करना

जब श्रीकृष्ण को दूत बनाकर दुर्योधन के पास भेजने का निर्णय किया गया तो भीमसेन ने श्रीकृष्ण को कहा कि वे कौरवों से इस प्रकार की बातें कहें, जिससे शान्ति स्थापित हो सके। इस पर श्रीकृष्ण ने भीमसेन को उसके पौरुष का स्मरण कराके इस प्रकार के दीनतापूर्ण वचनों के छोड़ने के लिए प्रेरित किया। **संदर्भ** : महाभारत, उद्योग पर्व, अ० 74-75

(65) कृष्ण द्वारा वज्रनाभ-वध

वज्रनाभ नामक दानव ने सुमेरु पर्वत पर ब्रह्मा की तपस्या कर, उनसे देवताओं द्वारा अवध्य होने का वरदान प्राप्त कर, एक सुन्दर वज्रपुर नामक नगर निर्मित कर, उसमें रहने लगा। वह कुछ दिन बाद इन्द्र को युद्ध के लिए ललकारने लगा। तब इन्द्र ने श्रीकृष्ण को इसका समाचार दिया। श्रीकृष्ण ने इन्द्र को वसुदेव द्वारा अश्वमेध यज्ञ के आयोजन के समय वज्रनाभ का वध कर देने का आश्वासन दिया। तदनन्तर इन्द्र ने हंसों को वज्रपुर भेजकर वज्रनाभ की पुत्री प्रभावती को प्रद्युम्न की ओर आसक्त कराया। हंसों ने श्रीकृष्ण से जाकर सभी बातें कहीं और प्रद्युम्न को नट-वेश में वज्रपुर भेजा। वहां जाकर प्रद्युम्न ने प्रभावती से गन्धर्व-विवाह किया। कुछ समय पश्चात् श्रीकृष्ण वज्रपुर आये। वहां आकर उन्होंने दैत्यों को युद्ध करने के लिए आमंत्रित किया। उस युद्ध में प्रद्युम्न ने श्रीकृष्ण के चक्र से वज्रनाभ का वध कर दिया। **संदर्भ** : हरिवंश (विष्णु पर्व)।

(66) श्रीकृष्ण द्वारा निकुम्भ-वध

प्रद्युम्न ने निकुंभ के भाई वज्रनाभ को मार दिया था तथा उसकी पुत्री प्रभावती का बलात् हरण कर लाये थे, अतः निकुंभ नामक दैत्य ने अपनी माया के बल से भानु यादव की कन्या भानुमती का अपहरण कर लिया। जब श्रीकृष्ण को पता चला तो उन्होंने अर्जुन को साथ लेकर निकुंभ पर आक्रमण कर दिया और युद्ध में श्रीकृष्ण ने चक्र से उसका सिर काट दिया। भानुमती को लाकर उसका विवाह सहदेव के साथ कर दिया। **संदर्भ : हरिवंश**, द्वितीय खण्ड, अ० 1

(67) **कृष्ण द्वारा षटपुर विनाश**

त्रिपुरासुर के सहयोगी दैत्य और दानवों ने ब्रह्मा की घोर तपस्या कर यह वर प्राप्त किया कि वह शिव या अन्य किसी देवता द्वारा न मारे जाएं। केवल ब्राह्मण का अपकार करने पर ही उनका अहित होगा। ब्रह्मा से वर प्राप्त कर वह छः नगर बनाकर रहने लगे। उस समय याज्ञवल्क्य के शिष्य ब्रह्मदत्त ने षटपुर में आवर्ती नदी के किनारे वसुदेव के लिए अश्वमेधी यज्ञ किया। तब वहां निकुंभादि दानवों ने आकर यज्ञभाग मांगा और सोमपान की इच्छा की। ब्रह्मदत्त द्वारा मना करने पर उन्होंने यज्ञ भंग कर दिया और वे ब्रह्मदत्त की कन्याओं का हरण कर ले गये। जब श्रीकृष्ण को यह मालूम हुआ तो उन्होंने प्रद्युम्न को उनके निवारण के लिए भेजा। प्रद्युम्न ने दानवों से वे कन्याएं छीन लीं। तदनन्तर नारद ने युद्ध की इच्छा से दानवों को भड़काया। उस समय दानवों ने जरासंध, दन्तवक्र, शिशुपाल आदि राजाओं का सहयोग न लेकर यादवों से युद्ध छेड़ दिया। तब श्रीकृष्ण ने यज्ञ-रक्षा के लिए पाण्डवों को नियुक्त कर अन्य यादव वीरों के साथ निकुंभ से युद्ध कर षटपुर दग्ध कर निकुंभ आदि दैत्यों का वध कर दिया। **संदर्भ** : हरिवंश (विष्णु पर्व)

(68) **कृष्ण द्वारा रुक्मी-वध**

प्रद्युम्न का पुत्र अनिरुद्ध का रुक्मी की पौत्री रोचना ने वरण कर लिया। यद्यपि श्रीकृष्ण से रुक्मी ईर्ष्या करता था, परन्तु उसने अनिरुद्ध के साथ उसका विवाह कर दिया। उसके विवाह में बलराम आदि यादव श्रीकृष्ण के साथ रुक्मी के भोजकट नामक नगर में गये। वहां कलिंगदेश के राजा ने रुक्मी को जुए में बलराम को पराजित करने की सलाह दी। जुए में रुक्मी बलराम को हराकर उनकी हंसी उड़ाने लगा और अपशब्द कहने लगा। तब क्रोधित होकर बलराम ने फिर बाजी लगायी और वे जीत गये, परन्तु रुक्मी ने कहा कि वह जीत गया। इसी बात पर उसका बलराम से झगड़ा हो गया। यह आकाशवाणी होने पर कि विजय बलराम की हुई है, बलराम ने रुक्मी को लातें मारकर वध कर दिया। उसके साथ ही उन्होंने कलिंगराज के दांत तोड़ डाले तथा कलिंगराज और अन्य राजाओं को मार डाला। तदनन्तर विवाहित अनिरुद्ध को लेकर कृष्णसहित समस्त यादवगण द्वारका चले गये। **संदर्भ** : ब्रह्म, 201; विष्णु, 5/28; भागवत, 10/62; हरिवंश-विष्णु पर्व

(69) **श्रीकृष्ण द्वारा अश्वत्थामा को शाप**

अश्वत्थामा सोते हुए पांचालों व द्रौपदी पुत्रों का वध करके जब छिप गया तो भीमसेन उसका पीछा करते हुए गंगा तट पर गये और वहां उन्होंने अश्वत्थामा को ललकारा। पाण्डवों का गर्व नष्ट करने के उद्देश्य से उस समय अश्वत्थामा ने दिव्यास्त्र छोड़ दिया। श्रीकृष्ण ने तब अश्वत्थामा को शाप दे दिया कि तू कायर, पापी और बाल-हत्यारा है, इसलिए तू इस पाप-कर्म का फल प्राप्त करे। तू तीन हजार वर्षों तक पृथ्वी पर भटकता रहेगा। तुझे किसी के साथ बातचीत का सुख न मिलेगा। तू निर्जन स्थानों पर ही घूमता रहेगा। तू जन-समुदाय में नहीं ठहर पायेगा। तेरे शरीर से पीब और रक्त की दुर्गन्ध

निकलती रहेगी। **सन्दर्भ** : महाभारत, सौप्तिक पर्व, अ० 15

(70) श्रीकृष्ण का गंगा को समझाना

भीष्म के प्राण त्यागने के पश्चात् वहां गंगा प्रकट हुई। वह भीष्म के शौर्य का वर्णन करते हुए विलाप करने लगी। तब श्रीकृष्ण ने उन्हें सांत्वना देते हुए समझाया कि भीष्म महातेजस्वी वसु थे और वे वसिष्ठ जी के शापवश मनुष्य-योनि में आये। उन्होंने क्षत्रिय धर्म के अनुसार युद्ध किया और वीर अर्जुन के हाथों से मारे गये, अतः शोक करने की आवश्यकता नहीं है, क्योंकि वे उत्तम लोक में गये हैं। श्रीकृष्ण के समझाने पर गंगा शोक त्यागकर चली गयी। **संदर्भ** : महाभारत

(71) कृष्ण द्वारा हनुमान व अर्जुन का गर्व भंग करना : अर्जुन द्वारा पुल निर्माण

एक बार कृष्ण अर्जुन के साथ रामेश्वर के धनुष कोटि तीर्थ गये। वहां पर एक बन्दर को देखकर उससे कहा कि तुम कौन हो? इसे सुनकर हनुमान ने हंसकर कहा कि मैं वही हनुमान हूं, जिसने समुद्र पर पुल बांधा था। तब गर्व से अर्जुन ने कहा, राम ने क्यों इतना कष्ट उठाया, अपने बाणों से ही क्यों नहीं पुल बांध लिया। इसे सुनकर हनुमान बोले, उस पुल से बन्दर पार नहीं हो सकते थे। इसे सुनकर अर्जुन ने कहा कि मैं पुल बांध देता हूं, तुम उस पर खूब कूदो। तब हनुमान बोले, तुम्हारा पुल मेरा अंगूठा भी नहीं उठा सकता। इस प्रकार उनमें विवाद होते-होते शर्त लग गयी और अर्जुन के द्वारा बनाये पुल को हनुमान ने अंगूठे के एक झटके से ही तोड़ दिया। यह देखकर अर्जुन चिता बना उसमें भस्म होने के लिए तैयार हो गये। उस समय श्रीकृष्ण ने अर्जुन की रक्षा करने के उद्देश्य से कहा कि इसका कौन साक्षी है कि हनुमान ने तुम्हारा बनाया पुल तोड़ दिया, तुम दुबारा से पुल बनाओ, देखें हनुमान कैसे तोड़ सकता है? तब अर्जुन ने पुनः पुल बना दिया, श्रीकृष्ण ने चुपके से उसमें अपना सुदर्शन चक्र लगा दिया। जब हनुमान उस पर कूदे तो उस पुल को न तोड़ पाये। तब उनको यह निश्चय हो गया कि यह श्रीकृष्ण हैं और उनके गर्व का खण्डन करने आये हैं। तब हनुमान ने श्रीकृष्ण से क्षमा मांगी और वे अर्जुन के रथ पर रहने का उन्हें आश्वासन देकर उनके साथ चले गये। **संदर्भ** : आनन्द रामायण, मनोहर काण्ड, सर्ग-18

(72) कृष्ण की व्याध के बाण से मृत्यु : व्याध पर कृपा

बलराम के परमधाम चले जाने के बाद श्रीकृष्ण सोचते-विचारते वन में इधर-उधर घूमने लगे। वे एक पेड़ के नीचे 'दाहिनी जांघ' पर बायां पैर रखकर लेट गये। उस समय उस वन में 'जरा' नामक व्याध मृगों का शिकार करते हुए घूम रहा था। उसने पेड़ के नीचे बैठे हुए श्रीकृष्ण को मृग समझकर उन पर बाण छोड़ दिया। बाण उनके तलवे में लगा। उससे वे घायल हो गये। व्याध को जब वास्तविकता का पता चला तो वह दौड़कर श्रीकृष्ण के चरणों में गिर पड़ा। श्रीकृष्ण ने उसे क्षमा कर स्वर्ग को भेज दिया और स्वयं भी परमधाम को चले गये। **संदर्भ** : महाभारत, ब्रह्म, 211; विष्णु, 5/73; भागवत, 11/31; कूर्म, 1/26; अग्नि, 15; ब्रह्मवैवर्त, श्रीकृष्ण जन्म खण्ड, अ० 127

कुम्भ पर्व की कथा

देवताओं और असुरों द्वारा समुद्र-मंथन करने पर जब अमृत-कलश निकला तो देवता और असुर अमृत को प्राप्त करने के लिए आपस में उलझ पड़े। इन्द्र ने उस कलश को वहां से ले जाने के लिए अपने पुत्र जयन्त को संकेत किया। जयन्त उस कलश को लेकर दौड़ा। यह देखकर असुरों ने उसका पीछा किया। उधर देवता भी असुरों के पीछे दौड़े और सुर और असुरों का तुमुल युद्ध होने लगा। तदनन्तर असुरों ने जयन्त से अमृत-कलश प्रयाग, हरिद्वार, गोदावरी (नासिक) और अवन्तिका (उज्जैन) में छीना। इस छीना-झपटी में कुंभ से कुछ अमृत की बूंदें छलककर इन स्थानों पर गिर पड़ीं। जहां बूंदें गिरीं वहीं पर यह कुंभ पर्व मनाया जाता है। असुर और देवों में यह युद्ध बारह दिनों तक चला। देवताओं का एक दिन मनुष्यों के एक वर्ष के बराबर होता है। इसलिए यह पर्व बारह वर्ष के बाद मनाया जाता है। **सन्दर्भ** : स्कन्द पुराण

कुम्भकर्ण द्वारा ब्रह्मा से वर प्राप्त करना

कुंभकर्ण ने ब्रह्मा की घोर तपस्या की। उसकी तपस्या से प्रसन्न होकर ब्रह्मा ने उससे वर मांगने के लिए कहा। कुंभकर्ण की बुद्धि तमोगुण से ग्रस्त थी। अतः उसने ब्रह्मा से अधिक काल तक सोने का वरदान मांगा। **संदर्भ** : महाभारत, वन-पर्व, अ० 275

कुवेर का रावण को शाप देना

रावण ने ब्रह्मा से यह वर प्राप्त किया कि वह गंधर्व, देवता, असुर, यक्ष, राक्षस, सर्प, किन्नर तथा भूतों में किसी से भी पराजित न हो। वर प्राप्त कर उसने कुवेर को युद्ध में परास्त कर लंका से बहिष्कृत कर दिया और उससे पुष्पक विमान छीन लिया। तब कुवेर ने रावण को यह शाप दिया कि यह विमान तेरे काम न आये। यह विमान उसी का वाहन बनेगा, जो युद्ध में तुझे मार डालेगा। तूने अपने बड़े भाई का अपमान किया है अतः तेरा शीघ्र ही सर्वनाश होगा। **संदर्भ** : महाभारत, वन-पर्व, अ० 275

कुवेर का धनपाल होना

विश्रुता का पुत्र कुवेर लंका का अधिपति था। अपनी माता के कहने पर रावण, कुंभकर्ण आदि कुवेर के सौतेले भाइयों ने उसे लंका से बाहर निकाल दिया और लंका पर अपना अधिकार जमा लिया। तब कुवेर ने जाकर भगवान शंकर की आराधना की। उसकी तपस्या से प्रसन्न होकर शिव प्रकट हुए और कुवेर से वर मांगने के लिए कहा। आनन्दातिरेक में कुवेर कुछ न बोले। उसी समय आकाशवाणी हुई कि कुवेर धनपाल की पदवी चाहता है। तदनुसार शिव ने कुवेर को धनपाल बना दिया। **संदर्भ** : ब्रह्म-अ० 97

कौरव-पाण्डवों की कथाएं

(1) कौरवों द्वारा भीम को विष देना

भीम एक बलवान योद्धा था। अतः बल के कारण दुर्योधन इससे ईर्ष्या करता था। एक दिन दुर्योधन ने इन्हें विष पिलाकर नदी में फिंकवा दिया। वहां सर्पों के काट लेने पर इनका पहला विष उतर गया। **संदर्भ** : महाभारत-आदिपर्व, अ० 127; भागवत-1/13/23; ब्रह्माण्ड-3/71/65

(2) कौरव-पाण्डव द्यूत-क्रीड़ा

दुर्योधन और पाण्डवों में राज्य के लिए वैमनस्य हो गया, जिसके परिणामस्वरूप दुर्योधन की जब कोई चाल सफल न हुई तो दुर्योधन ने युधिष्ठिर के सामने द्यूत-क्रीड़ा का प्रस्ताव रखा तथा अपने मामा शकुनि की सहायता से कपट-छल से सम्पूर्ण राज-पाट छीनकर पाण्डवों को वन में भेज दिया। **संदर्भ** : महाभारत-सभा पर्व, अ०, 60-61, भागवत-3/1/8

(3) श्रीकृष्ण द्वारा द्रौपदी की रक्षा : कौरवों द्वारा द्रौपदी-चीर-हरण

दुर्योधन ने युधिष्ठिर के ऐश्वर्य से जलकर और द्रौपदी से अपमानित होकर पाण्डवों से बदला लेने की भावना से उन्हें जुए के लिए आमंत्रित किया। युधिष्ठिर इस जुए में सारा राज-पाट, यहां तक कि द्रौपदी को भी हार गये। उस समय दुर्योधन ने प्रातिकामी को द्रौपदी को राजसभा में बुलाने के लिए भेजा। जब द्रौपदी ने राजसभा में आने के लिए मना कर दिया तो दुर्योधन ने अपने छोटे भाई दुशासन को उसे लाने के लिए भेजा। दुशासन दुर्योधन की आज्ञा से द्रौपदी को केश पकड़कर सभा में लाया और कर्ण के प्रोत्साहित करने पर उसका 'चीर हरण' कर नग्न करने का प्रयास किया। जब दुशासन द्रौपदी का वस्त्र-हरण करने लगा तो द्रौपदी ने वहां बैठे अपने पतियों को रक्षा के लिए असमर्थ देखकर उसने व्याकुल होकर बार-बार श्रीकृष्ण और गोविन्द का नाम लेकर पुकारा। वह श्रीकृष्ण का बार-बार चिन्तन कर दुखी होकर मुंह ढककर रोने लगी। श्रीकृष्ण द्रौपदी की आर्त पुकार सुनकर शय्या और आसन छोड़कर पैदल ही दौड़ पड़े और उन्होंने द्रौपदी के वस्त्र में प्रवेश कर भांति-भांति के रंगीन वस्त्रों से द्रौपदी को ढका और उसकी रक्षा की। **संदर्भ** : महाभारत सभापर्व, अ० 67-68

(4) कौरवों द्वारा पाण्डवों को लाक्षागृह में जलाना

दुर्योधन पाण्डवों से जलकर उनके विनाश के बार-बार उपाय सोचने लगा। उसने एक बार अपने विश्वासपात्र मंत्री पुरोचन को बुलाकर उसकी सहायता से वारणावत में एक सुन्दर लाक्षागृह बनवाया। यात्रा करते हुए पाण्डव वारणावत पहुंचे। पुरोचन ने पाण्डवों को सत्कारपूर्वक लाक्षागृह में ठहराया। भीमसेन ने पुरोचन के मनोभाव को जानकर लाक्षागृह से बाहर निकलने की योजना बनाई और वे विदुर द्वारा भेजे गए खनक द्वारा लाक्षागृह में बनाई गई सुरंग से अपने भाइयों और माता सहित लाक्षागृह से बाहर निकल गये। बाहर निकलकर भीमसेन ने उस लाक्षागृह में आग लगा दी, जिसमें पुरोचन

एक भीलनी के पांच पुत्रों सहित जलकर मर गया। तदनन्तर पाण्डव वहां से वन को चले गए। संदर्भ : महाभारत-आदि पर्व, अ० 143-149; भागवत-1/13/23,3/1/6, 10/51/1

खट्वांग-आख्यान

यह राजा विश्वद् के पुत्र थे। देवासुर संग्राम में यह देव पक्ष की ओर से लड़े थे। युद्ध में लड़ते समय जब इन्हें पता चला कि इनका जीवन कुल दो घड़ी ही शेष रह गया है तो वे रणक्षेत्र से लौटकर आ गये और दो ही घड़ी में सब कुछ त्यागकर भगवान का अभय पद प्राप्त कर लिया। **संदर्भ** : विष्णु-4/4/75-80; भागवत-2/1/13-14, 9/9/41-49

गंगावतरण की कथा

गंगा का उल्लेख एक पवित्र नदी के रूप में वैदिक साहित्य से ही मिलता है। लेकिन इसके अवतरण सम्बन्धी कथाओं का स्रोत रामायण काल से देखने को मिलता है—

सगर अयोध्या के राजा थे। उनके केशिनी और सुमति नामक दो रानियां थीं, फिर भी राजा के कोई पुत्र नहीं था। अतः पुत्र प्राप्ति के लिए उसने घोर तप किया। तप से प्रसन्न होकर भृगु-ऋषि ने केशिनी को एक और सुमति को साठ हजार पुत्र होने का वर दिया। तदनुसारकेशिनी ने एक पुत्र तथा सुमति ने एक तुम्बे को उत्पन्न किया, जिससे साठ हजार पुत्र पैदा हुए। कुछ समय बाद सगर ने एक अश्वमेध यज्ञ किया तथा अपने पुत्र असमंजस के पुत्र अंशुमान के संरक्षण में यज्ञ का घोड़ा छोड़ा। इन्द्र ने उस घोड़े को चुरा लिया। सगर ने अपने साठ हजार पुत्रों को घोड़ा खोजने की आज्ञा दी। पिता की आज्ञा से सगर के पुत्रों ने पृथ्वी को खोद डाला तथा पृथ्वी को खोदते हुए भगवान कपिल को और उनके आश्रम के पास यज्ञ के घोड़े को चरते हुए देखा। वे कपिल को मारने के लिए दौड़े, लेकिन वे सभी कपिल मुनि की हुंकार से भस्म हो गए। उनका उद्धार गरुड़ ने गंगा-जल से बताया। अनन्तर अंशुमान घोड़े को लेकर घर पहुंचा और सगर ने यज्ञ पूरा किया। सगर के मरने के बाद अंशुमान राज्य का अधिकारी हुआ। इसके बाद इसका पुत्र दिलीप राजा हुआ तथा उसने गंगा को लाने का प्रयास किया तथा इस प्रयास में तप करते हुए स्वर्ग को प्राप्त हुआ। तत्पश्चात् दिलीप के पुत्र भगीरथ ने एक हजार वर्ष तपस्या कर गंगाजल द्वारा अपने प्रपितामहों का स्वर्ग को जाना तथा कुल-वृद्धि होने के दो वर मांगे। ब्रह्मा की सलाह पर भगीरथ से केवल पैर के एक अंगूठे के बल से एक वर्ष तक शिव की आराधना की, जिससे प्रसन्न होकर शिव ने गंगा को धारण करना स्वीकार किया। तब ब्रह्मा की आज्ञा से गंगा पृथ्वी की ओर चली और उसके प्रबल वेग को शिव ने अपनी जटाओं में रोक लिया। तब भगीरथ की पुनः स्तुति करने पर शिव ने गंगा को बिन्दुसर में छोड़ा। जहां से वह सात धाराओं में विभक्त हो गई। जिनमें से एक धारा भगीरथ के पीछे चली और जन्हु राजा के यज्ञक्षेत्र को प्लावित कर दिया, अतः

राजा ने उस धारा को क्रोध में पी लिया। तब देवताओं की प्रार्थना पर गंगा को पुत्री बना जन्हु ने कर्ण विवरों से गंगा का उत्सर्ग किया। इसी जलधार ने भगीरथ के पीछे-पीछे चलकर रसातल में पहुंचकर सगर पुत्रों का उद्धार कर स्वर्ग पहुंचाया।

ब्रह्मा, विष्णु, शिव, भागवत, देवी —भागवत, बृहन्नारदीय, ब्रह्मवैवर्त, स्कन्द, गरुड़, ब्रह्माण्ड तथा हरिवंश पुराण आदि में यह कथा इसी रूप में मिलती है। लेकिन इसके साथ ही अनेक ग्रंथों में, जिनमें पुराण भी सम्मिलित हैं, यह कथा अन्यान्य प्रकार से भी मिलती है, जिसका उल्लेख संक्षिप्त में आगे किया जा रहा है—

'बाल्मीकि-रामायण' के अनुसार गंगा मैना से उत्पन्न हिमालय की जेष्ठ पुत्री थीं, जिसे देवता देवकार्य के लिए हिमालय से मांगकर स्वर्ग में ले गये।

'विष्णु-पुराण' में गंगा को विष्णु नदी कहा है, प्रतीत होता है कि परवर्ती लेखकों ने यहीं से गंगा को विष्णु चरणों से निकलने की उद्भावना के संकेत प्राप्त किये।

'वायु-पुराण' के अनुसार गंगा भगीरथ की तपस्या से प्रसन्न होकर पृथ्वी पर आई। यहां शिव ने उन्हें सिर पर धारण किया। पृथ्वी पर गंगा सात धाराओं में बही। ये सातों धाराएं बिन्दुसर से उत्पन्न हुई हैं। यहां गंगा को अन्तरिक्ष, स्वर्ग और पृथ्वी पर बहने के कारण त्रिपथगा भी कहा गया है।

'भागवत-पुराण' के अनुसार—'बलि की यज्ञशाला में पृथ्वी के नापने के समय जब वामन ने आकाश की ओर अपना पैर बढ़ाया, उससे ब्रह्म कटाह फट गया, उसमें से एक धारा निकली, जो भगवत्पदी कहलाई। यह धारा हजारों वर्ष बाद ध्रुवलोक में आई। वहां विष्णु-पदी कहलाई। इस विष्णुपदी को सप्त ऋषियों ने अपने जटाजूट में धारण किया। वहां से गंगा आकाश से चन्द्र मंडल को आप्लावित करती हुई मेरु-शिखर पर ब्रह्मपुरी में गिरी। यहां आकर यह सीता, अलकनन्दा, चक्षु और भद्रा नाम से चार धाराओं में विभक्त हो गई।

देवी भागवत (2/3) के अनुसार-ब्रह्मा ने अपनी राजसभा में इच्छाकुवंशीय राजा महामिष तथा गंगा को मर्यादा भंग कर एक-दूसरे को निहारने के अपराध में मृत्यु-लोक में जाने का शाप दिया, जिससे महामिष ने राजा प्रतीप के घर में शान्तनु का जन्म लिया तथा गंगा को भी स्वर्ग छोड़ना पड़ा।

देवी भागवत (9/6) की एक अन्य कथा के अनुसार लक्ष्मी, सरस्वती और गंगा तीनों नारायण की पत्नियां थीं। एक बार सरस्वती और गंगा सौतिया डाह से लड़ पड़ी और लक्ष्मी दोनों का बीच-बचाव करने को उद्यत हुई। इस पर सरस्वती ने गंगा को और लक्ष्मी को उसकी पक्षधर समझकर नदी और वृक्ष होने का शाप दे दिया। गंगा ने भी सरस्वती को जलरूप में हो जाने का शाप दिया। तदनुसार विष्णु ने सरस्वती को ब्रह्मा के पास, गंगा को शिव के पास तथा लक्ष्मी को धर्मध्वज के पास भेज दिया। लक्ष्मी शंखचूड़ की पत्नी बनी। गंगा मृत्युलोक में भगीरथ के प्रयत्नों से शंकर के सिर से हिमालय पर आई बाद में लक्ष्मी भी पद्मावती नदी और तुलसी के वृक्ष के रूप में प्रसिद्ध हुई।

देवी भागवत (9/12-14) की एक अन्य कथा के अनुसार गंगा की उत्पत्ति कृष्ण और राधा के शरीर से हुई जिसे देवताओं ने अपनी आराध्य नदी बना लिया। इधर जल की अधिष्ठातृ देवी गंगा सशरीर कृष्ण के पास रहने लगी। एक दिन राधा ने कृष्ण के पास गंगा को देख लिया। गंगा ने इससे भयभीत होकर अपना रूप जलमय बनाकर श्रीकृष्ण के चरणों में समा गई। इससे सब कहीं जल का अभाव हो गया। तब ब्रह्मा, शिव और अन्य देवताओं के गोलोक में जाकर श्रीकृष्ण से प्रार्थना करने पर अपने नखों से गंगा को पुनः निकाला। तब ब्रह्मा ने उस जल को कमण्डल में और शिव ने अपने सिर पर धारण किया। वही जल बाद में भगीरथ द्वारा पृथ्वी पर लाया गया।

'ब्रह्मवैवर्त पुराण' में यह कथा देवी भागवत के कथाओं से साम्य रखती है।

'स्कन्द-पुराण' में यह कथा दो स्थानों पर मिलती है। प्रभास खण्ड की कथा भागवत के समान है, परन्तु नागर खण्ड की कथा के अनुसार जिस समय वामन ने ब्रह्माण्ड को नापने के लिए अपना दूसरा चरण आकाश की ओर बढ़ाया तो ब्रह्म लोक में उस चरण को ब्रह्मा ने धोया। उस चरणोदक को ब्रह्मा ने अपने कमण्डल में रख लिया। भगीरथ के तप से प्रसन्न होकर ब्रह्मा ने लोक-कल्याण के लिए उस चरणोदक को कमण्डल से बाहर निकाला, जिसे शिव ने धारण किया और बाद में वह वहां से पृथ्वी पर आया। **संदर्भ** : ऋग्वेद-10/75/5; शतपथ ब्राह्मण-13/5/4/11; तैत्तिरीय, अ० 2, 20; बाल्मीकि रामायण-बालकाण्ड-सर्ग 35-44; ब्रह्म पुराण-अ० 83-84; विष्णु पुराण-2/8/109-24; वायु-पुराण अ० 47; भागवत पुराण-5/17; देवी भागवत-8/7, 2/3, 9/6, 9/12/14; ब्रह्मवैवर्त पुराण-प्रकृति-खण्ड, 6-13; बृहन्नारदीय पुराण-अ० 10; गरुड़-अ० 10; योगवासिष्ठ-निर्माण-प्रकरण (प्रथम-खण्ड) अ० 37; अध्यात्म-रामायण-2/6; आनन्द-रामायण, 2/4

गंगा का शान्तनु से विवाह

गंगा ने शान्तनु से इस शर्त पर विवाह किया कि वह जो चाहेगी वही करेगी। शान्तनु उसके किसी भी कार्य में हस्तक्षेप नहीं करेंगे। गंगा के शान्तनु से सात पुत्र उत्पन्न हुए, जिन्हें गंगा के जल में प्रवाहित कर दिया। आठवें पुत्र भीष्म हुए। शान्तनु ने आठवें पुत्र को जल में फेंकने से मना कर दिया। गंगा अपनी प्रतिज्ञा भंग होने पर शान्तनु को छोड़कर चली गयी। **संदर्भ** : महाभारत-आदि पर्व, अ० 98; भागवत-9/22/19; देवी भागवत-2/3

गंगा का सात धाराओं में विभक्त होना

एक बार समुद्र ने गौतमी गंगा से अनेक रूप धारण कर संगम करने के लिए कहा। इसे सुनकर गंगा ने समुद्र से सप्तर्षियों की अरुन्धती आदि पत्नियों को अपने पास लाने को कहा। तब समुद्र ऋषि-पत्नियों को उनके पतिसहित लेकर गया। उस समय गंगा सात भागों में विभक्त हो गई। **संदर्भ** : ब्रह्म, अ० 172

गन्धर्वों का सुन्दरी कन्याओं पर मुग्ध होना

लोक विश्वास है कि अधिक रूपवान स्त्रियों पर जिन्न आदि मोहित हो जाते हैं। प्राचीन काल में यह धारणा गन्धर्वों के लिए प्रसिद्ध थी। प्राचीन मान्यता के अनुसार गंधर्व स्त्री-कामुक होते हैं तथा सहवास के लिए सुन्दरी कुमारी कन्याओं पर आ जाते हैं। **संदर्भ** : लोक-विश्वास-पद्मावत-संजीवनी टीका, पृ० 69-70

गजेन्द्र-मोक्ष

पाण्डवराज इन्द्रद्युम्न अगस्त्य ऋषि के शाप से हाथी होकर एक बार त्रिकूट पर्वतों के मध्य में स्थित एक झील में पानी पीने के लिए गया। वहां पर देवल मुनि के शाप से ग्राह-योनि प्राप्त हूहू नामक गन्धर्व ने उसका पैर पकड़ लिया और अन्दर पानी में खींचने लगा। इसने अपने को मुक्त होने में असमर्थ जानकर हरि का स्मरण किया। तब भगवान ने चक्र से मगर का मुंह फाड़कर गजेन्द्र की रक्षा की।

'स्कन्द-पुराण' के अनुसार एक बार राजा मरुध ने महर्षि कर्दम तथा देवहूती के पुत्र जय विजय से यज्ञ कराया। धन के बंटवारे के समय जय ने विजय को शाप दे दिया कि वह ग्राह हो जाए। इस पर विजय ने जय को शाप दे दिया कि वह हाथी हो जाय। तदनुसार जय विजय ग्राह और गज हो गये। ग्राह गण्डकी नदी में रहने लगा और गज भी इधर-उधर नदी में रहने लगा। एक दिन गजराज कार्तिक स्नान करने के लिए गण्डकी नदी में घुसा। पूर्व वैर का स्मरण कर ग्राह ने उसका पैर पकड़ लिया, तब गज ने विष्णु का स्मरण किया। विष्णु ने ग्राह की रक्षा कर दोनों को इस योनि से छुड़ाया। गज और ग्राह दोनों ही बैकुण्ठ में पहुंच जय-विजय नामक भगवान के द्वारपाल बने। **संदर्भ** : पद्मपुराण-उत्तरखण्ड, अ० 132; भागवत-2/7/15-19, 3/9/35-36, 8/2-4; स्कन्द पुराण-वैष्णव खण्ड-कार्तिक मास माहात्म्य; 28, वामन पुराण-अ० 85; आनन्द-रामायण-सारखण्ड-सर्ग 9/234-262; गर्ग-संहिता-द्वारिका-खन्ड-अ० 11

गणिका की कथा

पुराणों में पिंगला और जीवन्ती नामक दो गणिकाओं के प्रसंग मिलते हैं। 'भागवत-पुराण' के अनुसार पिंगला विदेह राज्य की एक वृद्धा वेश्या थी, जो नित्य वेश्यावृत्ति से अपनी जीविका चलाती थी। एक बार इसने ग्राहक की प्रतीक्षा में काफी समय व्यतीत कर दिया, प्रतीक्षा के बाद भी कोई ग्राहक न आया तो इसे अपने जीवन से ग्लानि हो गई और भगवद्-भजन करके शान्ति प्राप्त की।

'पद्मपुराण' के अनुसार 'सत्ययुग' में रघु नामक वैश्य की जीवन्ती नामक कन्या तरुणा-वस्था में विधवा होकर व्यभिचारिणी होकर वेश्या बन गई। इसके कोई संतान नहीं थी। अतः व्याध से एक तोता खरीदकर उसे रोज राम नाम पढ़ाया करती थी, जिससे इसके पाप नष्ट हो गये। इसके मरने पर यमदूत जब इसके प्राण लेने पहुंचे तो वहां विष्णु पार्षद पहुंच कर इसे विष्णु लोक को ले गये।

'विश्राम सागर' के अनुसार गणिका ने तोते को एक साधु की प्रेरणा से पढ़ाया, जिससे उसे राम-धाम प्राप्त हुआ। **संदर्भ :** महाभारत-शान्ति पर्व, अ० 173; पद्मपुराण-क्रिया-योग खण्ड, अध्याय 15; भागवत-11/8; विश्राम सागर, अध्याय 7

गणेश की प्रथम पूजा

गणेश का गणों के स्वामी के रूप में उल्लेख मिलता है, परन्तु उसका स्पष्ट रूप से वर्णन पुराण साहित्य में ही मिलता है।

'पद्म-पुराण' के अनुसार कभी देवताओं ने पार्वती को अमृत से बना हुआ मोदक दिया, जिसकी गन्धमात्र से ही व्यक्ति अमर होकर सभी शस्त्र और शास्त्रों का ज्ञाता हो जाता। पार्वती ने उसको स्कन्द और गणेश में से किसी एक को देने के लिए यह शर्त रखी कि जो धर्माचरण के द्वारा श्रेष्ठता प्राप्त कर सबसे पहले आयेगा उसे ही मोदक दिया जायेगा। स्कन्द तो तीर्थों की यात्रा के लिए चल दिये, इधर गणेश ने माता-पिता की ही प्रदक्षिणा कर धर्म कमा लिया। माता-पिता ने गणेश को मोदक देकर यह वर दिया कि गणेश की सभी देवताओं में अग्रपूजा होगी और समस्त देवता और पितर उनकी अग्रपूजा से संतुष्ट होंगे।

'शिव पुराण' के अनुसार "एक दिन पार्वती स्नान कर रही थीं। उस समय शिव नन्दी की भर्त्सना कर अन्दर आ गये, जिससे पार्वती लज्जित हुई, अतः उन्होंने अपने शरीर के मल से गणेश को उत्पन्न कर द्वारपाल नियुक्त कर दिया। एक बार जब पार्वती अन्दर नहा रही थीं, तो शिव अन्दर जाने लगे। गणेश ने उन्हें अन्दर नहीं जाने दिया, तब उन्होंने गणों से गणेश को द्वार से हटाने के लिए कहा। गणेश ने अकेले ही शिव गणों को मार भगाया तत्पश्चात ब्रह्मा व विष्णु को भी मार भगाया तथा सभी देवताओं को पराजित कर दिया। इस पर शिव ने उनका त्रिशूल से सिर काट दिया। इस पर पार्वती ने सहस्रों शक्तियां पैदा कर संहार प्रारम्भ कर दिया। इस पर नारद की प्रेरणा से सभी देवताओं ने इस संहार को रोकने के लिए स्तुति की। पार्वती ने उनके पुनः जीवित होने तथा सभी देवताओं में अग्रपूजित होने की बात कही। इस पर देवता सहमत हो गये तथा शिव ने मंत्रों द्वारा गणों द्वारा लाये गये एकदन्त हाथी का सिर गणेश के धड़ पर जोड़कर जीवित कर दिया। तब सभी देवताओं ने गणेश का अभिषेक किया। देवी पार्वती ने भी अनेक सिद्धों के साथ गणेश की प्रथम पूजा की एवं शिव ने भी प्रसन्न हो गणेश को सर्वत्र प्रथमपूज्य होने का वरदान दिया।

'ब्रह्मवैवर्त पुराण' के अनुसार 'पार्वती के पुण्यक व्रत करने पर उन्हें पुत्र की प्राप्ति हुई, जिसका उन्होंने जन्मोत्सव किया। इस अवसर पर सभी देवताओं के साथ सूर्यपुत्र शनि भी वहां गये तथा उनके गणेश को देखने से गणेश का सिर अलग हो गया। तब विष्णु गरुड़ पर चढ़कर पुण्यभद्रा नदी के किनारे जाकर वहां से अतुल बलशाली और शुभ गुण सम्पन्न गजेन्द्र का सिर चक्र से काटकर गणेश के धड़ से जोड़कर उन्हें ज्ञान दिया तथा गणेश की स्वयं पूजा की और उन्हें प्रथमपूज्य तथा सर्वपूज्य होने का वरदान दिया।

'ब्रह्मवैवर्त पुराण' की एक अन्य कथा के अनुसार श्रीदामा के शाप से श्रीकृष्ण से वियुक्त राधा ने सर्व प्रथम गणेश की पूजा की थी तथा इस पूजा के प्रभाव से ही उन्होंने कृष्ण को प्राप्त किया। उसी दिन से देवताओं में और अन्यत्र भी गणेश की सबसे पहले पूजा होने लगी। ब्रह्मवैवर्त की एक अन्य कथा के अनुसार दुर्वासा की इन्द्र को दिए गए शाप के कारण गणेश की प्रथम पूजा हुई।

लोकमान्यता के अनुसार एक बार ब्रह्मा ने सभी देवताओं से अग्रपूजा का अधिकार पूछने पर सभी ने एक-दूसरे से अपने को बड़ा बताया। इस पर ब्रह्मा के यह कहने पर कि जो तीनों लोकों की परिक्रमा करके सबसे पहले आयेगा वही अग्रपूजा का अधिकारी होगा सभी देवता अपने-अपने वाहनों पर पृथ्वी की परिक्रमा करने दौड़े, पर नारद के कहने पर गणेश ने 'राम नाम' की परिक्रमा करके ब्रह्मा के पास पहुंचकर अग्रपूजा का अधिकार प्राप्त किया। संदर्भ : ऋग्वेद-2/23/1; मैत्रायणी संहिता-2/6/1;शिवपुराण-रुद्र संहिता, कुमार खण्ड, अ० 13-18; पद्म पुराण-सृष्टि खण्ड, अ० 6; ब्रह्मवैवर्त पुराण-प्रकृति-खण्ड अ० 36; गणपति खण्ड, अध्याय 1-13, कृष्ण जन्म खण्ड, अध्याय-122/47

गय की कथा

यह राजा नक्त और द्रुति के पुत्र थे। इन्होंने प्रजा का पालन धर्मों का आचरण करते हुए किया। इन्होंने महान यज्ञ किया, जिसमें इन्द्र सोमपान करने से उन्मुक्त हो गए तथा यज्ञ को भगवान यज्ञ-पुरुष ने साक्षात प्रकट होकर ग्रहण किया। महाभारत के अनुसार यह अमूर्तरया के पुत्र थे। संदर्भ : महाभारत-वनपर्व-96/18/29; द्रोण पर्व, अ० 66; भागवत-5/15/6-14

गयासुर दैत्य की कथा

विष्णु की नाभि से ब्रह्मा उत्पन्न हुए, जिन्होंने असुरों की सृष्टि की। इनमें से एक गय भी था जो 125 योजन लम्बा और 60 योजन चौड़ा था। यह वैष्णव था। इसने कोलाहल पर्वत पर एक हजार वर्षों तक तपस्या करके विष्णु को प्रसन्न कर यह वर प्राप्त किया कि इसके दर्शन मात्र से ही लोगों को स्वर्ग मिल जाए। यह घूम-घूमकर सबको स्वर्ग न भेज दे, ब्रह्मा ने इसके शरीर पर यज्ञ करने का निश्चय किया और यम की राय से इसे अचल करने के लिए पत्थर से देवताओं ने दबा दिया और सब देवता इस पर चढ़ गये, जिससे यह हिले नहीं। तब भी यह अचल नहीं हुआ, तब विष्णु उस सिला पर स्वयं बैठ गये। तब इसने देवताओं से यह वर मांगा कि आप लोग इसी पत्थर पर बैठें रहें तथा इस स्थान पर धार्मिक कृत्य पिण्डदान श्राद्धादि करने वाले ब्रह्मलोक को प्राप्त करें। इसी के नाम पर हिन्दुओं के पवित्र तीर्थ 'गया' का नाम पड़ा। संदर्भ : वायु-पुराण-105-106, 108-109

गर्ग मुनि का गोपाली अप्सरा से सम्बन्ध

एक बार त्रिगर्तराज की कन्या और शिशिरायण की पत्नी ने गर्ग मुनि के ब्रह्मचर्य की परीक्षा ली, पर गर्ग मुनि का ब्रह्मचर्य नष्ट न हुआ। तब यादवों ने गर्ग का उपहास करते हुए उन्हें नपुंसक कहा। इससे गर्ग मुनि बहुत क्रोधित हुए। क्रोध से जलने पर उनका शरीर काला पड़ गया। इस प्रकार बारह वर्ष व्यतीत हो गये। तदनन्तर गर्ग ने किसी गोप कन्या से मैथुन करने का निश्चय किया। उस समय गोपाली नामक अप्सरा गोपी वेश धारण कर गर्ग मुनि के पास गई और उनसे समागम किया। **संदर्भ** : ब्रह्म०, अ० 14

गरुड़ की कथा

(1) गरुड़ और अरुण

गरुड़ कश्यप और विनता के पुत्र और अरुण के छोटे भाई थे। वे अपने बड़े भाई अरुण को पीठ पर बैठाकर पिता के घर से माता के समीप महासागर के दूसरे तट पर रख आये थे। सूर्य ने जब अपने तेज से सम्पूर्ण दिशाओं को जलाने का विचार किया तो ये फिर अरुण को उठाकर सूर्य के समीप पूर्व में रख आये। **संदर्भ** : महाभारत-आदि, अ० 24/4-5

(2) गरुड़ का अमृत लाना

गरुड़ की माता को उसकी सौत कद्रू ने कपट से दासी बना दिया था। अपनी माता को दासीत्व से मुक्त कराने के लिए गरुड़ अमृत लेने इन्द्रलोक गये। वहां से अमृत चुरा कर ला रहे थे तभी इन्द्र को पता चल गया। दोनों में घोर युद्ध हुआ, जिसमें देवताओं को पराजित कर यह अमृत ले आये। **संदर्भ** : महाभारत-आदि पर्व-28-32; भागवत-3/1/49, 10/52/16-17; बृहत्कथा।

(3) गरुड़ के पंखों से अमृत झड़ना

गरुड़ का अमृत लाना पुराण प्रसिद्ध है, लेकिन गरुड़ का अपने पंखों से अमृत झड़ना लोकमानस की उपज है। **संदर्भ** : लोक-विश्वास

(4) गरुड़ का सर्पों से वैर

अमृत लाने के उपक्रम में गरुड़ के देवताओं से हुए युद्ध में विजयी गरुड़ की इन्द्र से मित्रता हो गई। मित्रता हो जाने पर इन्द्र ने सख्यत्व दर्शाने के लिए गरुड़ को वर दिया कि सर्प तुम्हारा भक्ष्य बनेंगे। अतः गरुड़ सर्पों को खाने लगे, जिससे सर्पों और गरुड़ में वैर हो गया।

एक अन्य मान्यता के अनुसार सर्पों के कारण गरुड़ की माता को दासी बनने के लिए बाध्य होना पड़ा। इसलिए गरुड़ और सर्पों में वैर हो गया। **संदर्भ** : महाभारत-आदि पर्व, अ० 34/12/13

गरुड़ का नागों को जीवित करना

गरुड़ की माता विनता नागों की माता की दासी हो गई और गरुड़ नागों के दास हो गए। तब नागों की माता ने एक दिन विनता से गरुड़ को नागों को सूर्य को नमस्कार करने के लिए सूर्य के पास ले जाने के लिए कहा। विनता के कहने से गरुड़ नागों को सूर्य-दर्शन करने के लिए अपनी पीठ पर लेकर चल दिया। उस समय सूर्य की गर्मी से नागों के फन जलने लगे। वे हजारों की संख्या में पीड़ित होकर गिर पड़े। तब गरुड़ ने रसातल से नागों को स्नान करवाकर उन्हें जीवित किया। **संदर्भ** : ब्रह्म, अ० 159

(6) गरुड़ द्वारा ब्राह्मण का भक्षण

एक बार गरुड़ अपनी माता बिनता की दासत्व-मुक्ति के लिए अमृत लेने को जाने लगे। जाते समय उन्होंने मां से खाने के लिए पूछा। मां ने इन्हें निषादों को खाने के लिए कहा। निषाद समझकर उन्होंने खाते-खाते एक ब्राह्मण एवं उसकी केवट पत्नी को भी खा लिया। इससे उनका गला इतना जला कि उन्हें उसे उगलना पड़ा। उगलते समय कुछ निषाद भी बाहर आ गये। इतने में गरुड़ ने पिता के पास आकर क्षुधा निवारण के लिए कुछ मांगा तब वे वहां कछुये और हाथी को खाकर अमृत लाने के लिए आगे बढ़े। **संदर्भ** : महाभारत-आदि पर्व-28/2-3; पद्मपुराण-सृष्टि-खण्ड-47

(7) गरुड़ का भगवान विष्णु की सवारी होना

अपनी माता को दास्यभाव से मुक्त कराने के लिए जब गरुड़ अमृत लेने के लिए देवलोक में गये तो वहां उनका देवताओं से युद्ध हुआ, जिसमें उन्होंने देवताओं को पराजति किया तथा वे अमृत के पात्र को तेजी से उठाकर आकाश मार्ग से आ रहे थे। उस समय भगवान नारायण ने गरुड़ के लोलुपतारहित पराक्रम से संतुष्ट होकर उन्हें वर मांगने को कहा। तब गरुड़ ने उनके ऊपर ध्वज में स्थित होने तथा बिना अमृत पीए अजर-अमर होने का वर प्राप्त किया और उन्होंने वहां भगवान् विष्णु को भी वर देने की इच्छा व्यक्त की, जिस पर भगवान विष्णु ने गरुड़ से अपना वाहन होने का वर मांगा। इस प्रकार गरुड़ विष्णु के वाहन बने। **संदर्भ** : महाभारत-आदि पर्व, अ० 33

गालव-आख्यान (विश्वामित्र शिष्य) (गालव और माधवी की कथा)

गालव विश्वामित्र के शिष्य थे। एक बार इन्होंने विश्वामित्र की बहुत सेवा की थी। अतः उन्होंने प्रसन्न होकर इन्हें पूर्ण विद्वान होने का आशीर्वाद दिया। इस पर इन्होंने विश्वामित्र से गुरु-दक्षिणा लेने का हठ किया। विश्वामित्र ने इनसे आठ सौ श्यामकर्ण घोड़े मांग लिये, जिससे ये परेशानी में पड़ गये और राजा ययाति की कन्या माधवी की सहायता से विश्वामित्र की गुरु-दक्षिणा से मुक्त हुए।

महाभारत से पूर्व इस कथा का तो अन्यत्र कहीं संकेत नहीं मिलता पर गालव के विद्वान होने के संकेत ऐतरेय आरण्यक(5/3/3), बृहदारण्यक उपनिषद् (2/5/22, 4/5/28), निरुक्त (4/3) में मिलते हैं। **संदर्भ** : महाभारत-उद्योग पर्व, अध्याय 109-19

गालव-कथा (विश्वामित्र पुत्र)

गालव नाम का विश्वामित्र का एक पुत्र था। विश्वामित्र की पत्नी इसे गले से बांधकर बेचने के लिए बाहर निकली थीं, जिसको त्रिशंकु ने बंधन से मुक्त कराया। गले में बांधने के कारण इसका नाम गालव पड़ा। **संदर्भ** : महाभारत-अनुशासन पर्व-7/52; ब्रह्म पुराण-7/102-109; वायु-पुराण-2/27, 83-92; हरिवंश पुराण-1/12; ब्रह्माण्ड-3/63, 86-89

गांधारी से सम्बन्धित कथाएं

(1) गांधारी को सौ पुत्रों की प्राप्ति

एक समय व्यास भूख और परिश्रम से थके हुए धृतराष्ट्र के पास आये। गांधारी ने उनके लिए भोजन और विश्राम की व्यवस्था कर प्रसन्न किया। अतः व्यास ने उसे सौ पुत्रों की प्राप्ति का वरदान दिया। कालान्तर में वर के अनुसार इनके गर्भाधान हुआ। जल्दी पुत्र हो इस अभिलाषा से इसने बलपूर्वक गर्भ बाहर निकाल दिया, पर मृतप्राय मांस-पिण्ड ही इसके उत्पन्न हुआ। व्यास की कृपा से यह मांस पिण्ड सौ पुत्रों में बदल गया। **संदर्भ** : महाभारत-आदि पर्व, अ० 114

(2) गांधारी का श्रीकृष्ण को शाप

जब गांधारी को यह पता चला कि पाण्डव श्रीकृष्ण सहित उसके सौ पुत्रों को मारकर उसके पास आये हैं तो वह क्रोधित होकर पांण्डवों को शाप देने को उद्यत हुई और व्यास ऋषि के समझाने पर शान्त हो गई। परन्तु जब व्यास ने दिव्यदृष्टि से युद्धस्थल में मारे गए योद्धाओं को दिखाया और मनुष्यों तथा स्त्रियों द्वारा वहां किए जा रहे आर्तनाद को सुनाया तो वह विचलित हो उठी। वह कृष्ण के सामने विलाप करने लगी और महाभारत का हेतु श्रीकृष्ण को जानकर उन्हें शाप दे दिया कि जैसे तुमने कौरवों और पांडवों का विनाश कर डाला है वैसे ही तुम्हारे भाई, बन्धु, कुटुम्बी, पुत्र आदि सबका विनाश हो जायेगा। आज से छत्तीसवां वर्ष आने पर तुम्हारे भाई-बन्धु आपस में लड़कर मर जायेंगे। गांधारी के शाप को श्रीकृष्ण ने मुस्करा कर स्वीकार कर लिया। **संदर्भ** : महाभारत-स्त्री विलाप पर्व, अ० 25

(3) गांधारी का आंखें बन्द रखना

गांधारी गांधार अधिपति सुबल की कन्या थी। बाल्यावस्था में इसने अपनी तपस्या से रुद्र को प्रसन्न कर सौ पुत्र होने का वरदान प्राप्त किया था। कुरुवंश में संतति के अभाव के कारण भीष्मादि लोगों ने राजा सुबल से धृतराष्ट्र हेतु गांधारी की मांग की। राजा सुबल ने धृतराष्ट्र के साथ गांधारी का विवाह कर दिया। यह पूर्णरूप से पातिव्रत्य धर्म का पालन करने वाली स्त्री थी। धृतराष्ट्र अंधे थे, इसी कारण इसने भी अपनी आंखों पर सदैव के लिए पट्टी बांध ली और जीवन भर अंधत्व स्वीकार किया। यह अन्य पुरुष को देखना पाप मानती थी। **संदर्भ** : महाभारत-आदि पर्व, अ० 103

(4) गांधारी की दृष्टिमात्र से युधिष्ठिर के नाखूनों का काला पड़ जाना

धृतराष्ट्र से आज्ञा लेकर पाण्डव श्रीकृष्ण के साथ गांधारी के पास गए। पुत्रशोक से पीड़ित हुई गांधारी को जब यह मालूम हुआ कि युधिष्ठिर अपने शत्रुओं का संहार करके मेरे पास आये हैं, तब उसकी इच्छा पाण्डवों को शाप देने की हुई। व्यास ने यह बात भांपकर गांधारी को समझाया। वहां उस समय युधिष्ठिर झुककर गांधारी के चरणों पर गिर जाना चाहते थे। इतने में गांधारी ने पट्टी के भीतर से ही राजा युधिष्ठिर के पैरों की अंगुलियों के अग्रभाग देख लिये, जिससे राजा युधिष्ठिर के नख काले पड़ गए। उनकी यह अवस्था देखकर अर्जुन भय से भगवान श्रीकृष्ण के पीछे छिप गए। **संदर्भ :** महाभारत-स्त्री पर्व, अ० 15

गृत्समद को शाप दिया जाना

भारतीय प्राचीन ग्रन्थों में गृत्समद को ऋषि वसिष्ठ और उनकी माता द्वारा शाप दिए जाने का उल्लेख मिलता है।

'महाभारत' के अनुसार एक बार मनुपुत्र वसिष्ठ इन्द्र के सहस्रवार्षिक सत्र में आए वहां पर गृत्समद ने अशुद्ध गायन किया, जिस पर वसिष्ठ ने रुष्ठ होकर इन्हें रुक्ष वन में क्रूर पशु बनने का शाप दे दिया।

'गणेश पुराण' के अनुसार एक बार इन्द्र ने रुक्मांगद की पत्नी मुकुंदा से काम मोहित हो संभोग किया, जिससे गृत्समद का जन्म हुआ। वह बहुत विद्वान था और किसी से भी पराजित न होता था। एक बार इसका ऋषि अत्रि ने पवित्र पावन न होने की बात कहकर उपहास किया। इसने माता से जाकर इस सम्बन्ध में पूछा। इसकी माता द्वारा इसके जन्मवृत्त के सम्बन्ध में बताने पर इसने अपनी माता को कंटकवृक्ष होने का शाप दे दिया। इस पर इसकी माता ने इसे दैत्य-पुत्र प्राप्त होने का शाप दे दिया। **संदर्भ :** महाभारत-अनुशासन पर्व-18/20-28; गणेश-1/37

गुणनिधि ब्राह्मण की शिव भक्ति

गुणनिधि सोमयाजी यज्ञदत्त ब्राह्मण का पुत्र था। उसके पिता ने आठ वर्ष की आयु में यज्ञोपवीत होने के उपरान्त उसे विद्याध्ययन के लिए भेजा, किन्तु वह बुरे कामों में रत रहा। उसने माता का सारा धन जुआ और बुरे कामों में समाप्त कर दिया। सोलह वर्ष की आयु का होने पर उसके पिता ने उसका विवाह एक विशारद ब्राह्मण की लड़की के साथ कर दिया। विवाहोपरान्त भी उसके व्यवहार में कोई अन्तर नहीं आया। एक दिन गुणनिधि घर में रखी पिता की रत्नजटित अंगूठी एक जुआरी को दे आया उस पर किसी प्रकार से पिता की दृष्टि पड़ गई। जुआरी ने उसका सारा वृत्तान्त विस्तार से बता दिया। यह सब जानकर यज्ञदत्त ने अत्यन्त क्रोधित होकर पत्नी एवं पुत्र को त्यागकर दूसरा विवाह कर लिया। इससे गुणनिधि उत्साहरहित होकर अपने भाग्य की निन्दा करता हुआ चला जा रहा था। वहां उसने देखा कि लोग स्वजनों के साथ शिवरात्रि के

व्रत में शिव की पूजा करने के लिए अनेक प्रकार की सामग्री लेकर मन्दिर में प्रविष्ट हुए। उन पकवानों की गन्ध से उसकी भूख तीव्र हो गई। उसने उनका पीछा किया और मन्दिर के द्वार पर इस आशा से बैठ गया कि शिवभक्त जब पूजा करके सो जायेंगे, तब सब नैवेद्य उठाकर खा लेगा। भक्त लोगों के नृत्य-गीतादि के पश्चात् क्षणभर के लिए सो जाने पर इसने नैवेद्य उठाने के लिए प्रवेश किया। दीपक की लौ मन्द देखकर इसने अपने वस्त्र से बत्ती बनाकर दीपक को प्रकाशित किया और आदर एवं प्रेमसहित शिव के नैवेद्य को उठाकर खा लिया। पकवान लेकर शीघ्रता से जब वह भागने लगा तो उसके पैर लगने से कोई व्यक्ति जाग गया और उसके चिल्लाने से पुरवासियों ने गुणनिधि को पकड़कर मारा। जिससे वह अन्धा हो गया और उसकी मृत्यु हो गई। तभी यमदूत उसे लेने आये, लेकिन वहां शिव के गण भी पहुंच गये और उन्होंने गुणनिधि को धर्मात्मा और दण्डयोग्य न बताकर उसे कैलाश ले गये। वहां वह भोग भोगकर शिव की सेवा कर कलिंग के राजा अरिंदम का पुत्र दम हुआ।

'स्कन्द-पुराण' के अनुसार अन्त में कुबेर ने इसे उत्तर दिशा का अधिपति नियुक्त किया। **संदर्भ** : शिव पुराण-रुद्र संहिता, अ० 17-18; स्कन्द-4/1/13

गोकर्ण की कथा

पूर्वकाल में तुंगभद्रा नदी के तट पर एक अनुपम नगर बसा हुआ था। उस नगर में समस्त वेदों का विशेषज्ञ और श्रौतस्मार्त कर्मों में निपुण एक आत्मदेव नाम का ब्राह्मण रहता था। वह धनी होते हुए भी भिक्षा-जीवी था। उसकी धुन्धुली नामक कुलीन एवं सुन्दर पत्नी थी। वह क्रूर स्वभाव की थी। प्रायः कुछ न कुछ बकवाद करती रहती थी। गृह-कार्य में निपुण थी, कृपण थी और झगड़ालू थी। उसके पास अर्थ और भोग-विलास की बहुत सामग्री थी, पर उसके कोई संतान न थी। अतः ब्राह्मण दम्पति बहुत दुखी रहते थे। एक समय वन में आत्मदेव को एक संन्यासी मिले। संन्यासी ने एक फल दिया और कहा यह अपनी पत्नी को दे देना इससे तुम्हें पुत्र की प्राप्ति होगी। ब्राह्मण ने वह फल अपनी पत्नी को लाकर दिया, परन्तु उसकी पत्नी ने गर्भवती होने के अनेक कष्ट मिलने की कल्पना कर उसे अपनी गाय को खिला दिया। समयानुसार गाय के एक मनुष्य की आकृति वाला बच्चा हुआ जिसके कान गाय जैसे थे। ब्राह्मण ने उसका नाम गोकर्ण रखा। उधर आत्मदेव की पत्नी ने उससे झूठ बोलकर अपनी बहन का पुत्र ले लिया, जिसका पुत्रवत पालन-पोषण किया। बड़े होने पर वह बहुत दुष्ट निकला। उसने अपने माता-पिता का सारा माल असबाब छीन लिया तब गोकर्ण ने आकर आत्मदेव को ज्ञान का उपदेश दिया। जिससे आत्मदेव में वैराग्य उत्पन्न हुआ और भगवान् की भक्ति कर उसने साक्षात भगवान् को प्राप्त कर लिया। **संदर्भ** : पद्म-पुराण-उत्तर खंड, अ० 192; **भागवत-अ० 4**

गोपीचन्द राजा का कजरी वन जाना

गोपीचन्द बंगाल के राजा माणिकचन्द और उनकी रानी मैनावती के पुत्र थे। मैनावती ने, जो भर्तृहरि की बहिन थी, योगी गुरु जालंधरनाथ से दीक्षा दिलवाकर इन्हें योगमार्ग में प्रवृत्त किया। योग में दीक्षा लेकर गोपीचन्द कजरीवन में गये। **संदर्भ :** पद्मावत-संजीवनी व्याख्या, द्वि सं०, पृ० 148

गोपियों का डाकुओं द्वारा लूटा जाना

श्री कृष्ण और बलराम की मृत्यु के उपरान्त जब अर्जुन वृष्णिवंश की स्त्रियों (गोपियों) को द्वारका से लेकर आ रहे थे उस समय डाकुओं ने उन पर आक्रमण कर दिया। अर्जुन ने गांडीव पर बाण चढ़ाकर बाण छोड़ना शुरू किया, परन्तु अर्जुन के सीधे जाने वाले जो बाण पहले अक्षय थे, वे ही उस समय सर्वथा क्षय को प्राप्त हो गये। अर्जुन देखते ही रह गये और वे म्लेच्छ डाकू सब ओर से वृष्णि और अंधकवंश की सुन्दर स्त्रियों को लूट ले गये। **संदर्भ :** महाभारत-मौसल पर्व, अ० 7;ब्रह्म-अ० 221;पद्म-उत्तर खण्ड, अ० 278-79; विष्णु-5/38; अग्नि-अ० 15

गौतमी की आदर्श क्षमा

प्राचीन काल में गौतमी नामक एक वृद्धा ब्राह्मणी थी, जो शान्ति के साधन में संलग्न रहती थी। एक दिन इसके इकलौते पुत्र को सांप ने डस लिया। उस सांप को एक व्याध ने बांध लिया और अमर्षवश उसे गौतमी के पास ले आया और उसको मारने का तरीका पूछने लगा। तब उस ब्राह्मणी ने उसे छोड़ देने के लिए कहा, उस समय काल ने आकर भी उस सर्प को बालक की मृत्यु का हेतु बताकर मार डालने के लिए प्रेरित किया, परन्तु गौतमी ने उसे क्षमा कर दिया। **संदर्भ :** महाभारत-अनुशासन पर्व, अ० प्रथम

घंटाकर्ण ब्राह्मण की शिव-भक्ति

घंटाकर्ण शिव का एक गण था। उसकी सदैव इच्छा रहती थी कि उसे अपने कानों से शंकर का नाम एवं गुणों के अतिरिक्त कुछ न सुनने को मिले, इसीलिए यह अपने कान में घंटा बांधकर रखता था, अतः इसका नाम घंटाकर्ण हुआ। 'हरिवंश पुराण' के अनुसार घंटाकर्ण कानों में इसलिए घंटा बांधकर रहता था कि वह विष्णु का नाम अपने कानों से न सुन सके। **संदर्भ :** महाभारत-शल्य पर्व-44/22; हरिवंश-भविष्य पर्व, अ० 80-83

घटोत्कच द्वारा पांडवों की सहायता

वनवास के समय वन में द्रौपदी सुकुमारता के कारण थककर मूर्च्छित हो गयी और

वह आगे बढ़ने में असमर्थ रही। तब भीमसेन के स्मरण करने पर उसका पुत्र घटोत्कच वहां आया और उसने अपने संगी-साथियों के साथ पाण्डवों को धौम्य आदि के साथ गन्धमादन पर्वत पर पहुंचाया। **संदर्भ** : महाभारत-वन पर्व, अ० 143-44

घटोत्कच-वध

यह हिडिम्बा से उत्पन्न भीम का पुत्र था। महाभारत के युद्ध में यह पाण्डवों के पक्ष में था। कर्ण की वासवी-शक्ति के कारण अर्जुन का उससे युद्ध करने का साहस नहीं हुआ। अतः कृष्ण ने घटोत्कच को उससे युद्ध करने को भेजा। कर्ण ने उससे भयभीत होकर इस पर वासवी-शक्ति का प्रयोग कर इसका वध कर दिया तथा कृष्ण ने इस प्रकार से कर्ण द्वारा संजोयी हुई वासवी-शक्ति का प्रयोग करवाकर अर्जुन को निर्भय बना दिया। **संदर्भ** : महाभारत-द्रोण पर्व, अ० 179

चंड-मुण्ड वध

देवी के द्वारा धूम्रलोचन की सेना को नष्ट करने के बाद शुंभ अत्यन्त क्रोध से भर उठा और उसने चंड-मुंड को देवी को पकड़ने के लिए भेजा। चंड-मुंड आज्ञा पाकर चतुरंगिणी सशस्त्र सेना लेकर गये और देवी को पकड़ने का प्रयास करने लगे। उस समय क्रोधित होकर देवी ने दैत्य सेना पर आक्रमण कर दिया तथा असुर-सेना को नष्ट कर खड्ग से चंड-मुंड का सिर काट दिया। **संदर्भ** : मार्कण्डेय-पुराण

चन्द्र सम्बन्धी कथाएं

(1) चन्द्रदेव द्वारा राजसूय यज्ञ

चन्द्र समुद्र-मंथन से निकले चौदह रत्नों में से एक है। अन्य मतानुसार यह अत्रि के पुत्र माने जाते हैं। इनकी गणना देवताओं में होती है। चन्द्रमा वनस्पतियों का स्वामी तथा यज्ञों और औषधियों के अधिष्ठाता हो गये थे, अतः इन्हें सोम भी कहते हैं। इन्होंने कुरुक्षेत्र में राजसूय यज्ञ किया, जिसके होता अत्रि बने थे। जिसमें इन्होंने एक लाख मुद्राएं दक्षिणा में दीं। **संदर्भ** : ब्रह्म-9; विष्णु-4/7/8; वायु-90 भागवत-9/14/2-3

(2) चन्द्रमा का गुरु-पत्नी से व्यभिचार : चन्द्रमा का कलंकी होना

इस कथा का विस्तार से उल्लेख पुराणों में ही हुआ है तथा पुराणों में इस कथा के वर्णन में विविधता भी मिलती है—

'ब्रह्म-पुराण' के अनुसार वैभव के मद से एक बार चन्द्रमा ने गुरुपत्नी तारा का हरण कर लिया और उसका भोग किया। देवताओं के कहने पर भी उसने तारा को नहीं लौटाया। तब चन्द्रमा की ओर से शुक्राचार्य तथा बृहस्पति की ओर से शिव युद्ध करने के लिए उद्यत हुए। इस पर ब्रह्मा ने मध्यस्ता कर तारा बृहस्पति को वापस करा दी। चन्द्रमा के संयोग से तारा के एक पुत्र भी पैदा हुआ, जिसका नाम बुध रखा गया। यह चन्द्रमा के पास रहा।

'ब्रह्म पुराण' की एक अन्य कथा के अनुसार अत्रि-पुत्र चन्द्रमा ने बृहस्पति से सभी विद्या सीखने पर गुरु-पूजा में क्या-क्या वस्तुएं भेंट करे, इसको पूछने गया। जब बृहस्पति की पत्नी तारा के पास गया तो उसकी सुन्दरता पर आसक्त होकर बल से अपने घर ले गया और भोग किया। तब बाद में शुक्राचार्य ने शिव की आराधना करके वर प्राप्त कर चन्द्रमा को जाकर कुष्ठ रोगी होने का शाप दे दिया। कुष्ठ रोग से पीड़ित होने पर चन्द्रमा ने तारा को छोड़ दिया।

'पद्म पुराण' के अनुसार एक बार चन्द्रमा ने राजसूय यज्ञ किया। यज्ञ के उपरान्त उसने वाटिका में घूमती हुई अलंकृत तारा से बलात् अपहरण कर भोग किया और उसे अपने घर ले गया। इस पर बृहस्पति की ओर से रुद्र और चन्द्रमा की ओर से नक्षत्र तथा दैत्यों ने युद्ध किया तथा चन्द्रमा ने बृहस्पति को तारा को लौटा दिया तथा इस घटना के एक वर्ष बाद तारा ने पुत्र को जन्म दिया। देवताओं के पूछने पर तारा ने उसके पिता का नाम सोम बताया।

'पद्म पुराण' की एक अन्य कथा के अनुसार जब चन्द्रमा तारा को अपने घर ले गया तो देव व दानवों में युद्ध हुआ। युद्ध को रोककर दोनों पक्षों को समझाकर ब्रह्मा ने तारा बृहस्पति को दिलवा दी। उस समय तारा गर्भवती थी। बृहस्पति ने तारा से इस गर्भ के सम्बन्ध में पूछा कि यह गर्भ किसका है। तारा के न बताने पर गर्भ से आकर पुत्र ने तारा से अपने पिता का नाम बताने के लिए कहा तब तारा ने चन्द्रमा को उसका पिता बताया।

'विष्णु-पुराण' के अनुसार कथा का पूर्वांश तो 'पद्म पुराण' के अनुरूप है, पर जब ब्रह्मा ने तारा को बृहस्पति के पास भेज दिया तब बृहस्पति के तारा से यह कहने पर कि उनके क्षेत्र में किसी अन्य का वीर्य धारण करना उपयुक्त नहीं है, तारा ने वह गर्भ सींक की झाड़ी में डाल दिया तथा यहीं बुध का जन्म हुआ, जिसे इन्द्र अपने साथ ले गये।

'वायु पुराण' के अनुसार बुध की प्राप्ति के बाद चन्द्रमा को यक्ष्मा हो गया। इस पर चन्द्रमा ब्रह्मा और अत्रि की शरण में गया। अत्रि ने उसका पापशमन कर यक्ष्मा से मुक्ति दिलाई।

'देवी भागवत' के अनुसार एक बार बृहस्पति की रूपवती पत्नी अपने यजमान चन्द्रमा के घर गई। वहां पर चन्द्रमा उसे देख काम पीड़ित हो गया और तारा भी उसके वैभव को देखकर मोहित हो गई और दोनों ने रमण किया। जब तारा नहीं लौटी तो बृहस्पति चन्द्रमा के घर गए, पर चन्द्रमा ने तारा को लौटाने के लिए मना कर दिया। यहां तक कि दुबारा बृहस्पति चन्द्रमा के घर जाकर चन्द्रमा को शाप देने के लिए उद्यत हुए। इस पर भी चन्द्रमा ने तारा को नहीं लौटाया। इस पर इन्द्र ने शिव के साथ चन्द्रमा से युद्ध की तैयारियां की और चन्द्रमा की ओर से शुक्राचार्य युद्ध के लिए उद्यत हो गये। ब्रह्मा ने दोनों पक्षों को समझाकर देव और असुरों के प्रलयंकारी युद्ध को रोका और उनके चन्द्रमा को डांटने पर उसने बृहस्पति को तारा लौटा दी। तदनन्तर तारा के पुत्र पैदा हुआ, जिसके बृहस्पति ने अपना पुत्र समझकर संस्कार कराये। उस समय वहां चन्द्रमा भी आ गया

और उस बच्चे को अपना पुत्र बताया। जिस पर चन्द्रमा और बृहस्पति में फिर विवाद खड़ा हुआ और तारा के यह कहने पर कि यह पुत्र चन्द्रमा का है, पुत्र उसे दे दिया गया।

'अग्निपुराण' के अनुसार चन्द्रमा के घर लौटने पर बृहस्पति के कहने से गर्भ त्याग किया तथा उससे पैदा हुए पुत्र को चन्द्रमा का पुत्र बताया।

'भविष्य पुराण' के अनुसार चन्द्रमा ने बृहस्पति की पत्नी तारा का उसके परदारागमन दोष समझाने पर भी बलात हरण कर उससे भोग किया। इस पर बृहस्पति ने इन्द्र की सहायता से चन्द्रमा से युद्ध किया। इस युद्ध में दैत्यों ने चन्द्रमा का साथ दिया और उसकी विजय हुई। तब विष्णु बृहस्पति की ओर से युद्ध करने आए। उनको भी चन्द्रमा ने सभी देव-गन्धर्वों आदि के साथ पूर्णिमा व्रत के प्रभाव से पराजित कर दिया। इस पर विष्णु ने अपना सुदर्शन चक्र उठाया, पर ब्रह्मा ने आकर विष्णु को समझा दिया तथा दक्ष द्वारा चन्द्रमा को अमावस्या तक क्षय और पूर्णिमा तक वृद्धि होने का शाप फलीभूत होने को कहा। बृहस्पति को तारा दिला दी गई। वहां बृहस्पति और चन्द्रमा में गर्भ के लिए युद्ध हुआ। तारा ने ब्रह्मा के पूछने पर कोई उत्तर न दिया। परन्तु ग्रर्भ वहीं त्याग दिया, उस गर्भ ने ब्रह्मा के पूछने पर अपने को चन्द्रमा का पुत्र बताया। उसका नाम बुध रखा गया और वह चन्द्रमा को दे दिया गया।

'ब्रह्मवैवर्त' की प्रकृति-खण्ड की कथा के अनुसार चन्द्रमा ने जाह्नवी के किनारे तारा को देखकर मोहित होकर उससे प्रणय-भिक्षा मांगी, जिस पर तारा ने उसे धिक्कारा, लेकिन चन्द्रमा उसे बलात् पकड़कर ले गया और उससे भोग किया और शुक्र की शरण में चला गया। इस घटना को सुनकर बृहस्पति, इन्द्र, ब्रह्मा और विष्णु के पास गये। तब ब्रह्मा तथा सनकादिक बृहस्पति की ओर से शुक्र के पास गये और तारा को चन्द्रमा से वापस करा दिया।

(ख) श्रीकृष्ण जन्म-खण्ड के अनुसार जब चन्द्रमा तारा का बलात् रमण करने को तैयार हुआ तो तारा ने उसे कलंकी यक्ष्मा से पीड़ित होने का शाप दिया। परन्तु फिर भी चन्द्रमा तारा को बलात शुक्राचार्य आश्रम में ले गया। उधर बृहस्पति के अनुरोध पर ब्रह्मा और शिव क्रोधित हो शुक्राचार्य के आश्रम में गए। वहां क्रुद्ध रुद्र से शुक्राचार्य ने प्रार्थना की और चन्द्रमा भी शरण में आ गया। शिव ने चन्द्रमा के दो खण्ड कर दिए। एक को अपने मस्तक पर धारण किया, दूसरा भाग ब्रह्मा के सामने छोड़ दिया। इस पर लज्जित होकर चन्द्रमा ने समुद्र में देह त्याग दी। तब पुत्र वियोग में अत्रि के नेत्रों से आंसू समुद्र में जा गिरे, जिससे चन्द्रमा पुनः पवित्र होकर प्रकट हुआ। शिव ने उसे अपने स्थान पर जाने को कहा तथा बताया कि तुम तारा के शाप से यक्ष्मा रोग से ग्रस्त होगे, पर मेरे आशीर्वाद से इसका प्रतिकार होगा एवं तुमने भाद्रशुक्ल चतुर्थी को गुरुपत्नी को क्षत किया है, अतः जो तुम्हें उस दिन देखेगा उसे पाप लगेगा।

'वराहपुराण' के अनुसार ब्रह्मा ने धर्म को उत्पन्न कर उसे प्रजा-पालन की आज्ञा दी। परन्तु एक बार उसकी पत्नी का उसके भाई चन्द्रमा ने हरण कर लिया, जिससे दुखी होकर धर्म वन को चला गया। धर्म के वन में चले जाने पर चारों ओर अव्यवस्था फैल गई और

असुर निरन्तर आपस में युद्ध करने लगे। नारद ने ब्रह्मा को युद्ध का कारण बताया और ब्रह्मा के कहने से धर्म वन से वापस आया और सभी धर्मरत हुए एवं देवासुर संग्राम भी रुक गया।

'विष्णुधर्मोतर पुराण' के अनुसार कश्यप की दनु नामक पत्नी से एक रज नामक पुत्र पैदा हुआ। उसका विवाह वरुण की पुत्री वारुणी से हुआ, लेकिन एक दिन वारुणी समुद्र में डूब गई। वारुणी को ढूंढ़ने के लिए चन्द्रमा समुद्र में कूद पड़ा, जिससे समुद्र में खलबली मच गई और एक बच्चा समुद्र से बाहर निकला। इसका नाम बुध रखा गया। इस बच्चे का वृहस्पति की पत्नी ने पालन-पोषण किया। इस प्रकार वह चन्द्रमा और तारा का पुत्र कहलाया। **संदर्भ** : ब्रह्म पुराण-9, 152; पद्म-पुराण-सृष्टिखण्ड अध्याय-12; उत्तरखण्ड-अध्याय-211;विष्णु-पुराण-अंश 4 अध्याय-6; वायु-पुराण, अध्याय-90;भागवत-9/14; देवी भागवत-1/11; अग्निपुराण-अध्याय-274; भविष्य-पुराण उत्तरार्द्ध, अध्याय 88; ब्रह्मवैवर्त पुराण-प्रकृतिखण्ड-अध्याय 58-61; श्रीकृष्णजन्म खण्ड, अ० 80-81 स्कन्द-पुराण-काशीखण्ड-पूर्वार्द्ध, अध्याय-15; वराह पुराण अध्याय-32; मत्स्य पुराण-अ० 23-24; ब्रह्माण्ड-पुराण-मध्य भाग-उपोद्घात पाद-अध्याय-65; हरिवंश पुराण-हरिवंश पर्व, अध्याय-25; विष्णु धर्मोत्तर पुराण-1/106

(3) चन्द्रमा का शशांक होना

एक बार देव और दैत्य शशपान तीर्थ पर एकत्रित हुए। वहां देर हो जाने के कारण चन्दमा को अमृत नहीं मिला। वहां पर देवों ने उस तीर्थ को इससे लेने के लिए कहा, वहां एक खरगोश उस तीर्थ का प्राशन कर रहा था, उसे भी वह खा गया। तबसे वह इसके उदर में विद्यमान है।

सस-जातक के अनुसार पूर्व समय में वाराणसी में ब्रह्मदत्त के राज्य करने के समय बोधिसत्व खरगोश की योनि में उत्पन हो, जंगल में रहते थे। उस जंगल में उनके तीन मित्र आनन्द, मौद्गल्यायन व सारिपुत्र क्रमशः ऊद-विलाउ, गीदड़ व बन्दर के रूप में रहते थे। एक समय बोधिसत्व ने आकाश में चन्दमा को देख अपने मित्रों से शील ग्रहण कर उपोसथ-व्रत करने को कहा। अगले दिन वे तीनों भोजन की खोज में निकले और भोजन लाकर उसे रख शील का विचार करते हुए दान के लिए रख लिया, लेकिन बोधिसत्व ने शशि के रूप में यह विचार किया कि वह मांगने वाले को अपना शरीर ही दान कर देगा। तब शक्र एक ब्राह्मण का रूप धारण कर परीक्षा लेने के लिए शशराज के पास पहुंचा और उस ब्राह्मण के मांगने पर शश ने अपने शरीर को दान कर दिया तथा आग के अंगारों में कूद गया। पर आग शशराज को न जला सकी। तब ब्राह्मण शक्र के रूप में प्रकट हुआ उसने पर्वत को निचोड़ पर्वत का रस ले चन्द्रमंण्डल में शश का आकार बना दिया। संदर्भ : स्कन्द-पुराण-7/1/15/8; सस-जातक

(4) चन्द्र का रोहिणी से विवाह

रोहिणी दक्ष प्रजापति की पुत्री थी, जिसका विवाह प्रजापति ने चन्दमा के साथ किया। संदर्भ : पद्म-सृष्टि खण्ड-26; ब्रह्मवैवर्त-9 (श्रीकृष्ण जन्म खण्ड)

(5) चन्द्रमा और राहु-बैर : चन्द्रमा का राहु का ऋणी होना

राहु सिंहिका का पुत्र था। इन्द्र के श्रीहीन होने पर जब समुद्र का मंथन किया गया तो उसमें से अमृत निकला। उस अमृत के लिए देवों और असुरों में झगड़ा होने लगा, तब विष्णु ने मोहनी रूप धारण कर असुरों को धोखा देकर देवताओं को अमृत पिलाना प्रारम्भ कर दिया। राहु इस बात को भांप गया और वह आकर देवताओं की पंक्ति में बैठ गया। सूर्य और चन्द्रमा ने इसकी शिकायत विष्णु से कर दी। तब विष्णु ने चक्र से इसका सिर काट दिया। इसका मस्तक 'राहु' और धड़ 'केतु' हो गया। तभी से ये दोनों सूर्य और चन्दमा को ग्रसित करते हैं।

लोक मान्यता है कि चन्द्रमा राहु का ऋणी है। अतः राहु अपना ऋण लेने के लिए चन्द्रमा को पकड़ लेता है, जिससे चन्द्र-ग्रहण पड़ता है। लोग चन्द्रमा को ऋण से मुक्त कराने के लिए दान देते हैं। **संदर्भ** : बाल्मीकि रामायण-अध्याय-45; महाभारत, अ० 17-19; विष्णु-पुराण-1, 9; पद्मपुराण-उत्तर खण्ड-259-60, ब्रह्मखण्ड-8/10; सृष्टि-खण्ड-4; भागवत-8/5-9; अग्निपुराण-3; ब्रह्मवैवर्त-प्रकृति-36; स्कन्द पुराण-1/1/9; देवी भागवत-9/40-41

(6) चन्द्रमा को दक्ष का शाप : चन्द्रमा का रोगी होना

'महाभारत' के अनुसार दक्ष के 27 नक्षत्र नामक कन्याएं थीं। जिनका विवाह चन्द्रमा से हुआ। चन्द्रमा इन सभी में से रोहिणी को अधिक प्रेम करता था, अतः दक्ष की अन्य पुत्रियों ने दक्ष को इस बात की शिकायत की। दक्ष के समझाने पर भी चन्दमा ने अपने व्यवहार में परिवर्तन नहीं किया तो दक्ष ने राज्ययक्ष्मा उत्पन्न की और उससे चन्द्रमा के शरीर को कान्तिहीन बना दिया। जिससे सभी वनस्पति और औषधियां नष्ट होने लगीं। तब देवताओं ने दक्ष से प्रार्थना की और दक्ष ने अपने शाप का निदान बताया कि चन्द्रमा सभी पत्नियों पर समान स्नेह करे और सरस्वती के उत्तमतीर्थ में स्नान करे तो उसका शरीर पुनः ठीक हो सकता है, परन्तु शाप के कारण उसे 15 दिन क्षय होना ही पड़ेगा। तदनुसार चन्दमा ने सरस्वती तीर्थ में स्नान किया, जो कि प्रभास के नाम से प्रसिद्ध हुआ।

'ब्रह्मपुराण' के अनुसार चन्दमा के गुरुपत्नी का हरण कर लेने के कारण शुक्राचार्य द्वारा दिए गए शापवश वह मृगलांछित हो गया।

इस कथा का अन्य पुराणों में भी वर्णन किया गया है, परन्तु प्रायः सभी स्थलों की कथा महाभारत से ही किसी न किसी रूप में साम्य रखती है तथा इसका उल्लेख चन्द्रमा द्वारा ताराहरण के सन्दर्भ में हुआ है। **संदर्भ** : महाभारत-शल्य पर्व, अ० 36, ब्रह्मपुराण-अ० 120; वायुपुराण-अध्याय-90; शिव-पुराण-रुद्र संहिता-अध्याय 14; भविष्य पुराण-उत्तरार्द्ध-88; ब्रह्मवैवर्त-कृष्णजन्म खण्ड, अध्याय 9; वराहपुराण, अध्याय 35; स्कन्द पुराण (1) अवन्ती खण्ड (रेवा खण्ड) अ० 85, (2) प्रभास खण्ड (अर्बुद खण्ड) अ० 20, (3) नागर खड-अ० 63, प्रभास खण्ड (प्रभास क्षेत्र माहात्म्य) अ० 20-25

चन्द्रहास आख्यान

चन्दहास केरल का अधिपति सुधार्मिक का पुत्र था। इसका मूल नक्षत्र में जन्म हुआ था तथा इसके बायें पैर में छः अंगुली थीं, अतः अशुभ चिह्नों के कारण यह अल्पायु में ही अनाथ हो गया। इसने कष्ट उठाये। धृष्टबुद्धि ने इसके वध का प्रयास किया। पर यह सब कष्टों से मुक्त होकर अन्त में कौन्तल का राजा बन गया। संदर्भ : जैमिनी अश्वमेध-50/59

च्यवन ऋषि से सम्बन्धित कथाएं

(1) च्यवन और सुकन्या की कथा

एक समय राजा शर्याति अपनी कन्या सुकन्या के साथ वन में घूमते-घूमते च्यवन ऋषि के आश्रम पर पहुंचे। वहां च्यवन ऋषि तपस्या कर रहे थे तथा उनके ऊपर दीमकों ने ढेर बनाकर मिट्टी एकत्रित कर दी। उस बांबी में (दीमकों की एकत्रित की हुई मिट्टी) च्यवन की केवल आंखें चमक रही थीं। चपलतावश सुकन्या ने एक कांटा लेकर उनकी आंखों को वेध दिया। इस अनर्थ से शर्याति के सैनिकों का मलमूत्र रुक गया। तब शर्याति ने च्यवन मुनि को प्रसन्न किया तथा च्यवन ऋषि का अभिप्राय जानकर उन्होंने अपनी कन्या उन्हें दे दी। सुकन्या वृद्ध च्यवन ऋषि की पति के रूप में सेवा करने लगी। एक बार च्यवन के आश्रम में अश्विनीकुमार आये। सुकन्या ने उनका यथोचित सत्कार कर च्यवन की युवास्वथा मांगी तब अश्वनिकुमारों ने सुकन्या के पतिव्रत-धर्म की परीक्षा ली और उनके पतिव्रत-धर्म से प्रसन्न होकर च्यवन को युवावस्था प्रदान की। **संदर्भ :** महाभारत-वन पर्व, अ० 121-124; पद्म-पुराण-पाताल-खण्ड, अ० 14-15; भागवत-9/3

(2) च्यवन ऋषि की बिक्री

भृगु के पुत्र महर्षि च्यवन ने महान व्रत का आश्रय लेकर जल के भीतर ही रहना प्रारंभ किया और गंगा-यमुना के संगम में जल के भीतर प्रविष्ट होकर काष्ठ की भांति स्थिर भाव से बैठ गये। एक दिन कुछ मल्लाहों ने मछलियों को पकड़ने के लिए जाल फेंका और भृगु के पुत्र महर्षि च्यवन को भी मत्स्यों के साथ खींच लिया तथा महर्षि के आग्रह पर मल्लाहों ने उन्हें एक गौ के मोल में राजा नहुष को बेच दिया। **संदर्भ :** महाभारत-अनुशासन पर्व, अ० 50-51

(3) च्यवन ऋषि द्वारा राजा कुशिक की परीक्षा

भृगुपुत्र च्यवन को जब यह मालूम हुआ कि उनके वंश में कुशिक वंश की कन्या के सम्बन्ध से क्षत्रियत्व का महान दोष आने वाला है तो वे कुशिकों के समस्त कुल को भस्म कर डालने की इच्छा से कुशिक के पास गये। कुशिक ने उनका यथोचित अतिथि-सत्कार किया। उन्होंने उसकी धैर्य की परीक्षा लेने के लिए कुशिक द्वारा परोसी गई भोजन सामग्री में आग लगा दी और कुशिक को स्त्री सहित रथ में जुतने के लिए कहा। जब

राजा-रानी रथ में लग गए तो उन्होंने दोनों पर कोड़ों का प्रहार किया, लेकिन राजा-रानी ने अपना धैर्य नहीं छोड़ा। तब च्यवन ऋषि ने उनसे वर मांगने के लिए कहा और कुशिक के वर मांगने पर उन्होंने वर दिया कि भृगुवंशियों के तेज से तुम्हारा वंश ब्राह्मणत्व को प्राप्त होगा। **संदर्भ** : महाभारत-अनुशासन पर्व, अ० 52-53

चार्वाक का वध

चार्वाक नामक राक्षस दुर्योधन का मित्र था। उसने बदरिकाश्रम में ब्रह्मा की तपस्या करके किसी प्राणी से भय न होने का वर मांगा। चार्वाक को ब्रह्मा ने यह वर दिया कि ब्राह्मण का अपमान करने के सिवा और कहीं किसी से भय नहीं। महाभारत युद्ध के पश्चात यह संन्यासी ब्राह्मण का वेश धारण करके आया और युधिष्ठिर से ब्राह्मणों के सम्बन्ध में कटुवचन कहने लगा। तब ब्राह्मणों ने उसे अपने तेज से दग्ध कर नष्ट कर दिया। **संदर्भ** : महाभारत-शान्ति पर्व, अ० 38-39

चित्रकेतु की कथा

सूरसेन प्रदेश में चित्रकेतु नामक सम्राट था। उसके एक करोड़ रानियां थीं, लेकिन कोई संतान नहीं थी, जिससे वह बहुत दुखी था। एक बार राजा के महल में ऋषि अंगिरा पधारे और राजा द्वारा संतान का अभाव बताये जाने पर अंगिरा ने एक चरु तैयार कर राजा को दिया, लेकिन अंगिरा ने यह भी कहा कि पुत्र प्राप्त कर तुम्हें हर्ष और विषाद दोनों ही होंगे। राजा ने चरु से त्वष्टा का यज्ञ कर उसका अवशेष अपनी बड़ी रानी कृतयुति को दिया, जिससे उसके पुत्र पैदा हुआ। पुत्रवती होने से राजा कृतयुति को बहुत प्यार करने लगा और दूसरी रानियों की उसने उपेक्षा कर दी। राजा के इस प्रकार के व्यवहार को देखकर अन्य रानियों ने सौतिया डाह से उस पुत्र को विष देकर मार दिया। राजा पुत्र शोक से चेतनाहीन हो गए। उस समय वहां पर अंगिरा और नारद आए तथा राजा चित्रकेतु को मृत राजकुमार की जीवात्मा बुलाकर ज्ञान का उपदेश दिया। **संदर्भ** : भागवत-6/14-17

चित्रकेतु के पुत्र का पूर्व जन्म-वृत्तांत

चित्रकेतु के मृत पुत्र की जीवात्मा ने चित्रकेतु को अपने पूर्वजन्म की कथा सुनाई, जो निम्न प्रकार से है—

पूर्वजन्म में वह एक साधु था। एक दिन उसने भोजन बनाने के लिए एक कण्डे को आग पर रख दिया। कण्डे में बहुत-सी चीटियां थीं, वह भी कण्डे के साथ जलकर मर गईं, जो कि अपने अगले जन्म में चित्रकेतु की रानियां बनीं और उन्होंने अपने पूर्व जन्म का बदला लेने के लिए उसे विष देकर मार दिया। **संदर्भ** : भागवत-9/14-17

चित्रकेतु का वृत्रासुर के रूप में जन्म : पार्वती का चित्रकेतु को शाप

राजा चित्रकेतु अंगिरा और नारद के उपदेश से गृहस्थ का त्याग कर तपस्या करने के लिए चला गया और तप करके दिव्य शक्तियां प्राप्त कीं तथा नारद द्वारा बताए संकर्षण मंत्र के प्रभाव से शेष के दर्शन कर उनसे एक विमान प्राप्त किया और वह विद्याधर बन गया। एक बार विमान पर चढ़े हुए सिद्ध और चारणों के बीच मुनियों की सभा में पार्वती को गोद में बैठाकर उनका आलिंगन करते हुए उसने शिव को देखा और अज्ञानतावश शिव का उपहास उड़ाने लगा, जिससे पार्वती ने उसे शाप दे दिया कि वह असुर योनि में जाए। तदनुसार पार्वती के शाप से चित्रकेतु त्वष्टा की दक्षिणाग्नि से पैदा होकर वृत्रासुर बना। **संदर्भ** : भागवत-6/14-17

चौथ का चांद देखने से कलंक लगना

एक बार गणेश जी ब्रह्मलोक से चन्द्रलोक में होते हुए लौट रहे थे। उनके तोंद वाले शरीर और गजमुख को देखकर चन्द्रमा को हंसी आ गई। इस पर गणेश ने चन्द्रमा को शाप दे दिया कि पापी, जो कोई तेरा मुख देखेगा, उसे कलंक लगेगा। देवताओं को इससे बड़ी चिंता हुई तब वे चन्द्रमा को लेकर ब्रह्मा के पास गए। ब्रह्मा ने चन्द्रमा को भाद्रपद शुक्ल चतुर्थी को गणेश का व्रत करने को कहा। इस पर प्रसन्न होकर गणेश ने चन्द्रमा को वरदान दिया कि जो भी व्यक्ति भाद्रपद की शुक्ल चतुर्थी को तुम्हें देखेगा उसे उसी दिन कलंक लगेगा बाकी दिन कलंक नहीं लगेगा तथा जो लोग कलंक लगने की इस कथा को सुनेंगे उन्हें भाद्रपद की शुक्ल चतुर्थी को चन्द्रमा देखने से कलंक नहीं लगेगा।

जगदेव की कथा

धार के परमार राजा उदयादित्य की बड़ी रानी के पुत्र का नाम जगदेव था। जगदेव अपनी विमाता के आदेश से, उसके पुत्र रणधवल के लिए राज्य-प्राप्ति का मार्ग निष्कंटक करने के लिए अपनी स्त्री के साथ धारा नगरी को छोड़कर पाटन के महाराज सिद्धराज जयसिंह के यहां पहुंचा। उन्होंने उसे अपना सामन्त बना लिया। जगदेव ने सिद्धराज की रक्षा के लिए अपना मस्तक दे दिया। **संदर्भ** : पद्मावत-संजीवनी व्याख्या, द्वि० सं० (परिशिष्ट), पृ० 880-81

जड़भरत की कथा

भरत ऋषभदेव के पुत्र थे। ऋषभदेव के वन चले जाने पर उन्होंने धर्म और न्याय के साथ प्रजा का पालन किया। तत्पश्चात अपने पुत्रों को राज्य देकर राज्य को त्यागकर वन में चले गये और वहां पर एक हिरणी के बच्चे को ले आए व उसका पालन-पोषण करने लगे। एक समय वह हिरण का बच्चा कहीं वन में चला गया। भरत उसे ढूंढ़ते फिरे और अन्त में मृग के ध्यान में ही प्राण त्याग दिए, जिससे अलगे जन्म में हिरण बने।

संदर्भ : भागवत-पुराण, स्कन्ध-5/11-12; नारद पुराण-अ० 48

जड़भरत और रहूगण की कथा

एक समय राजा रहूगण कपिल मुनि से ज्ञान प्राप्त करने के लिए पालकी पर बैठकर चले। रास्ते में एक कहार अस्वस्थ हो गया। रहूगण जिस रास्ते से जा रहे थे, वहां जड़भरत पड़े हुए थे, अतः उन्होंने उन्हें पालकी में लगा लिया। जड़भरत पालकी को उठाकर नीचे जमीन में कीट-पतंगों से बचकर चलने लगे, ताकि वे उनके पैर से दबकर न मर जायं। इससे पालकी इधर-उधर हिलने लगी। इस पर राजा रहूगण ने भरत से कहा कि ओ कहार, तू टेढ़ा-मेढ़ा चलता है, तुझे मरने का हृदय में डर नहीं है। इस पर जड़भरत ने रहूगण को उत्तर दिया कि यह जीव कर्म करके तदनुसार जन्म प्राप्त करता है। इस प्रकार जन्म धारण करते-करते यह थक गया है, परन्तु इसका कर्म करना नहीं छूटा है। उत्तर सुनकर राजा रहूगण को प्रतीत हुआ कि यह कोई ज्ञानी पुरुष है। अतः रहूगण ने जड़भरत के चरणों में गिरकर क्षमा मांगी। **संदर्भ** : भागवत-पुराण-5/11-12; नारद-पुराण-अ० 49

जनक द्वारा सिद्धि प्राप्ति

जनक मिथिला नगर के संस्थापक थे। ये निमि को मथने से उत्पन्न हुए थे। इनकी गणना ब्रह्मज्ञान प्राप्त ऋषियों में की जाती है। ये राज्य करते हुए भी अनासक्त रहे थे। ऋषि होते हुए भी लोक में प्रवृत्त रहे। **संदर्भ** : महाभारत-शान्ति पर्व, अ० 17; वायु-89/2-6; भागवत-9/13/11-14; नारद-पूर्व, 2/77

जनमेजय का नाग-यज्ञ

परीक्षित की मृत्यु सांप के डसने से हुई थी। अतः प्रतिशोध लेने के लिए मुनि उत्तंक के उपदेश अनुसार परीक्षित के पुत्र जनमेजय ने सर्पयज्ञ प्रारम्भ किया। जिसमें अनेक सर्प यज्ञ-कुण्ड में गिरकर मृत्यु को प्राप्त हुए। **संदर्भ** : महाभारत-आदि-51/52; भागवत-9/22-36,12/6; देवी भागवत-10/11

जरासंध की उत्पत्ति

मगध देश के राजा बृहद्रथ ने काशिराज की दो जुड़वां कन्याओं के साथ विवाह किया, परन्तु उनको पुत्र प्राप्ति नहीं हुई। उन्होंने मांगलिक कृत्य, होम और पुत्रेष्ठि-यज्ञ तक कराये, फिर भी उन्हें पुत्र प्राप्त नहीं हो सका। तब एक दिन वे अपनी दोनों रानियों के साथ चण्डकौशिक मुनि के पास गए और उनसे अपना अभिप्राय कहा। उस समय मुनि ने राजा को एक अभिमंत्रित फल दिया। राजा की दोनों रानियों ने उस आम के दो टुकड़े कर एक-एक टुकड़ा खा लिया। यथासमय दोनों रानियों के बच्चे का आधा-आधा टुकड़ा पैदा हुआ। भयभीत होकर रानियों ने उन टुकड़ों को बाहर फिंकवा दिया, जिन्हें

जरा नामक राक्षसी ने उठा लिया और उन्हें जोड़ दिया। जिससे वह एक शरीरधारी वीर कुमार बन गया। उस बच्चे को जरा राक्षसी ने वृहद्रथ को सौंप दिया। उसी राक्षसी के नाम पर इस बच्चे का नाम जरासंध रखा गया। यह वज्र के सारतत्त्व का बना हुआ था। इसे बीच में से चीरकर ही मारा जा सकता था। इसका वध भीमसेन ने श्रीकृष्ण की कूटनीति से किया। **संदर्भ** : महाभारत-सभा पर्व, अ० 17-24

जयद्रथ का शिव से वर प्राप्त करना

जयद्रथ सिंध देश का राजा था। जिसे दुर्योधन की बहिन दुःशला ब्याही गई थी। एक बार पाडण्वों से अपमानित होने पर इसने शंकर की घोर तपस्या करके उनसे यह वर मांगा कि समस्त पाण्डवों को जीत सकूं। शंकर ने इसे यह वर दिया कि तुम पाण्डवों को अर्जुन की अनुपस्थिति में पराभूत कर सकोगे। अभिमन्यु के चक्रव्यूह भेदन के समय इसने पाण्डवों का पराभव किया। **संदर्भ** : महाभारत-आदि, अ० 51-52; वन पर्व, अ० 272, द्रोण पर्व, अ० 42; भागवत-9/22-36; देवी-भागवत-10-11

जयद्रथ-वध

महाभारत के युद्ध में इसने कौरवों की ओर से लड़ते हुए अन्य महारथियों के साथ मिलकर अभिमन्यु को अन्याय से मारा था। अतः श्रीकृष्ण की योगमाया की सहायता से यह अर्जुन के द्वारा मारा गया। इसके पिता ब्रद्धक्षत्र ने इसके जन्म के समय यह वर दिया कि जो इसे मारेगा, उसके सिर के सौ टुकड़े हो जायेंगे। अर्जुन ने दिव्यास्त्र से जयद्रथ का सिर ब्रद्धक्षत्र की गोद में डाला। जिससे उनके ही सिर के सौ टुकड़े हो गए। श्रीकृष्ण ने जयद्रथ वध के लिए अर्जुन से शिव का पूजन कराया, जिससे स्वप्न में उन्हें आशीर्वाद और पाशुपतास्त्र की पुनः प्राप्ति हुई। **संदर्भ** : महाभारत-द्रोण पर्व, अ० 146/129-140

जयन्त द्वारा सीता का अपमान

जयन्त इन्द्र और शची का पुत्र था। इसे उपेन्द्र भी कहा जाता है। राम के वनवास के समय इसने कौए का रूप बनाकर सीता के स्तनों में चोंच मारकर अपमान किया था। तब राम ने क्रोधित होकर एक सींक का बाण इस पर छोड़ दिया। यह रक्षा के लिए सभी देवताओं के पास भागता फिरा। सबने इसकी मदद करने के लिए मना कर दिया। अन्त में यह राम की शरण में आया। राम ने दन्ड देने के लिए इसकी एक आंख फोड़ कर इसे क्षमा कर दिया। **संदर्भ** : बाल्मीकि रामायण; महाभारत-3/283/69-70; पद्म-उत्तराखण्ड-242/195-210; वायु-68/24; नृसिंह-49/1-15;रघुवंश; 12/21-23; आनन्द रामायण-1/6,

जय विजय की कथा

'भागवत-पुराण' व 'पद्मपुराण' के अनुसार जय विजय बैकुण्ठ के द्वारपाल थे। इन्होंने सनकादि को बैकुण्ठ में प्रवेश नहीं करने दिया। अत: उनके शाप से ये अगले जन्म में राक्षस बने।

'आनन्द रामायण' के अनुसार एक समय अश्विनीकुमार विष्णु के दर्शन के लिए बैकुण्ठ में गए। उस समय विष्णु लक्ष्मी से एकान्त में रमण कर रहे थे। अत: विष्णु के द्वारपाल जय विजय ने अश्विनीकुमार को अन्दर न जाने दिया। इस पर अश्वनीकुमारों ने जय विजय से अपना संवाद अन्दर देने के लिए तीन बार कहा, पर जय विजय ने अन्दर जाना उचित न समझा, जिससे इन्हें अश्वनीकुमारों ने तीन बार राक्षस बनने का शाप दे दिया। **संदर्भ** : पद्म पुराण-उत्तर ख० अ० 237; भागवत-3/15, 1/7; स्कन्द-वैष्णव खण्ड 2, 4, 28 आनन्द रामायण, राज्य-काण्ड। (उत्तरार्द्ध)

जरत्कारु का वासुकि की बहिन से विवाह

जरत्कारु ने अपने पितरों की प्रेरणा से उनकी कुल परम्परा की वृद्धि करने के उद्देश्य से विवाह करने की इच्छा की, परन्तु वह अपने नाम वाली कन्या से ही विवाह करना चाहते थे। तब नागराज वासुकि ने ब्रह्मा की आज्ञा से अपनी बहिन जरत्कारु का उनके साथ शास्त्रीय-विधि से विवाह किया। **संदर्भ** : महाभारत-आदि पर्व, अ० 14, 39, 46

जलंधर को भगवान द्वारा कुएं से निकालना—गोरखनाथ द्वारा गोपीचन्द को समझाना

गोपीचन्द अपनी माता मैनावती के कहने से योगी बनना स्वीकार कर लेते हैं और इसी बीच गोपीचन्द अपने सभासदों के कहने में आकर जलंधर को कुएं में फिकवा देते हैं। मैनावती को यह देखकर काफी दुख होता है तथा वह गुरु गोरखनाथ को बताती है। गुरु गोरखनाथ भगवान मछिन्द्रनाथ से कुएं में समाधिस्थ जलंधरनाथ को निकालने का उपाय पूछते हैं और गोपीचन्द के पांच पुतले कुएं पर बारी-बारी से रखते हैं। जलंधरनाथ ऊपर देखते हैं तथा पुतलों को गोपीचन्द समझकर शाप से भस्म कर देते हैं। तब जलंधर-नाथ कुए से बाहर निकलते हैं। गोरखनाथ जलंधरनाथ से गोपीचन्द को क्षमा कराकर उनका शिष्यत्व ग्रहण करा देते हैं। **संदर्भ** : भोजपुरी लोक-कथा।

जह्नु द्वारा गंगा पान : जह्नु द्वारा तपस्या

भगीरथ गंगा के भूलोक में आने पर गंगासागर तक उस स्थान से होकर ले जा रहे थे, जहां पर सगरपुत्र भस्म हुए थे। उस स्थल पर ऋषि जह्नु यज्ञ कर रहे थे। उन्होंने यज्ञ के विघ्न को दूर करने के लिए गंगा का पान कर लिया। प्रार्थना करने पर उन्होंने फिर गंगा को कान से निकाला और गंगा जाह्नवी कहलाई। **संदर्भ** : बाल्मीकि रामायण-

बालकाण्ड-43/34-41; विष्णु-4/7/2-6; वायु-91/54-60; भागवत-9/15/3

जाम्बवान की भक्ति

जाम्बवान सुग्रीव का मंत्री और रीछों का राजा था। इसने त्रेतायुग में राम की सहायता की थी। इसकी गणना राम के भक्तों में की जाती है। इसकी भक्ति से प्रसन्न होकर कृष्ण ने इससे द्वापर में युद्ध कर इसे प्रसन्न किया तथा इसकी पुत्री के साथ विवाह किया। इसने सतयुग में वामन भगवान की परिक्रमा की थी। **संदर्भ** : विष्णु-4/13/32/58; वायु-96/36; भागवत-8/21/8, 9/10/19-44, 10/56/14-32; मत्स्य-45/7-8, 12/6; ब्रह्माण्ड-3/7/4, 3/71/35

जाम्बवान का श्रीकृष्ण से युद्ध

सत्राजित ने भगवान सूर्य की पूजा कर एक बहुमूल्य मणि प्राप्त की। यह मणि श्रीकृष्ण ने सत्राजित से मांगी, पर उसने यह मणि श्रीकृष्ण को नहीं दी। एक दिन इस मणि को पहनकर सत्राजित का भाई प्रसेनजित शिकार खेलने के लिए जंगल में गया। वहां उसे एक शेर ने मार गिराया और उससे मणि छीन ली। लोगों को यह आशंका हुई कि प्रसेनजित को मारकर यह मणि श्रीकृष्ण ने छीन ली है। श्रीकृष्ण इस दोष निवारण के लिए मणि की खोज में वन में गए। वहां पर उन्होंने वह मणि जाम्बवान के पास देखी तथा उसको युद्ध के लिए ललकारा। श्रीकृष्ण का जाम्बवान से तब भयंकर युद्ध हुआ। अन्त में जाम्बवान पराजित हुए तथा अपना पूर्ण परिचय दिया और मणि देकर अपनी पुत्री जाम्बवती का विवाह श्रीकृष्ण के साथ कर दिया।

'मत्स्य-पुराण' में प्रसेन को सिंह के स्थान पर रीक्ष द्वारा मारे जाने का उल्लेख किया गया है। **संदर्भ** : ब्रह्म-अ० 16; भागवत-16/56; मत्स्य-अ० 45

जाजलि ऋषि का अहंकार

प्राचीन काल में जाजलि नामक एक ब्राह्मण थे। उन महातपस्वी जाजलि ने समुद्र तट पर जाकर बड़ी भारी तपस्या की। वे गर्मी, सर्दी तथा वर्षा आदि ऋतुओं मे खुले आसमान में ही खड़े रहे। उनकी जटाओं में भी पक्षियों ने घोंसले बना लिये। तब उनको यह अहंकार हो गया कि उनके बराबर संसार में कोई तपस्वी नहीं है। उनके ऐसे गर्वपूर्ण मनोभावों को जानकर अदृश्य पिशाचों ने मुनि को तुलाधार के पास ज्ञान-प्राप्ति के लिए भेजा। **संदर्भ** : महाभारत-शान्तिपर्व, अ० 261-264

जानश्रुति और रैक्व की कथा

जानश्रुति श्रद्धापूर्वक देनेवाला एवं बहुत दान करनेवाला था। उसके यहां बहुत-सा अन्न पकाया जाता था। उसने इस आशय से कि लोग सब जगह मेरा ही अन्न खायेंगे, स्थान-स्थान पर धर्मशाला बनवा दी थीं। जानश्रुति का यश सर्वत्र फैला हुआ था। राजा

एक बार गर्मी के समय अपने महल की छत पर बैठा हुआ था। उस समय रात्रि में उधर से हंस उड़कर जा रहे थे तथा उनमें से एक हंस ने दूसरे से कहा कि देख, जानश्रुति का तेज सर्वत्र फैला हुआ है, तू इसका स्पर्श न कर, वह तुझे भस्म कर डालेगा। तब दूसरे हंस ने कहा कि राजा को इतना सम्मान देकर रैक्व खाड़ीवाले के समान बता रहा है और उसने बताया कि रैक्व को सभी प्राणियों के धर्मफल प्राप्त हो जाते हैं तथा जो अन्य प्राणी जिस विद्या को जानते हैं उसे रैक्व भी जानता है। तब राजा ने अपना सेवक रैक्व को ढूंढने के लिए भेजा। बहुत स्थानों पर खोजने के उपरान्त उस सेवक ने एक छकड़े के नीचे खाज खुजलाते हुए रैक्व को खोजा और जानश्रुति को आकर बताया। वह छः सौ गौएं, एक हार और एक खच्चरियों से जुता हुआ रथ लेकर उसके पास गया और उन्हें लेकर उस देवता का उपदेश देने के लिए कहा, जिसकी वह उपासना करता था। इस पर रैक्व ने कहा—ऐ शूद्र ! गौओं के सहित यह हारयुक्त रथ तेरे ही पास रहे। तब जानश्रुति एक सहस्र गौएं, एक हार, खच्चरियों से जुता हुआ रथ तथा अपनी कन्या आदि लेकर पुनः उसके पास आया और कहा कि ये समस्त वस्तुएं लीजिए और मुझे अनुशासित कीजिए और जानश्रुति ने उसे, जिस गांव में वह रहता था, वह भी दिया। तब प्रसन्न होकर रैक्व ने जानश्रुति को संवर्ग विद्या का उपदेश दिया। **संदर्भ :** छान्दोग्य-उपनिषद्-4/1-2

डंगव (दंग) राजा की कथा

एक बार ऋषि दुर्वासा इन्द्र की सभा में गये। वहां मेनका का नृत्य हो रहा था। ऋषि ने नृत्य में रुचि न ली, जिससे मेनका ने उन्हें पशु कहा। इस पर दुर्वासा ने मेनका को अश्विनी (घोड़ी) होने का शाप दे दिया। तदनुसार मेनका घोड़ी बनकर राजा डंगव के पास रहने लगी। रात में उसको अपना रूप प्राप्त हो जाता था। एक बार द्वारिकाधीश कृष्ण ने उस घोड़ी को राजा डंगव से मांगा। उसने घोड़ी देने से मना कर दिया। इस पर कृष्ण ने युद्ध की घोषणा कर दी। डंगव भीम के पास गए और शरण मांगी। भीम ने डंगव को शरण दी और कृष्ण से युद्ध करने के लिए तैयार हो गए। यह युद्ध बढ़ते-बढ़ते देवताओं तक पहुंच गया। एक ओर कौरव व पाण्डव तथा दूसरी ओर से श्रीकृष्ण के साथ सभी देवता-गण युद्ध में जूझने लगे। भयंकर युद्ध होने लगा। जब युद्ध में श्रीकृष्ण हारने लगे तो उन्होंने सुदर्शन और शंकर ने त्रिशूल छोड़ा। अपने सुदर्शन को अधिक शक्तिशाली बनाने के उद्देश्य से श्रीकृष्ण ने हनुमान को उस पर चढ़ा लिया। हनुमान का शरीर वज्र का था। इस प्रकार तीन वज्र—-सुदर्शन, हनुमान और शंकर का त्रिशूल चले। भीम ने उन्हें अपने अर्धांग पर रोका। इस प्रकार साढ़े तीन (अहुंठ) वज्रों का संगम होने पर मेनका शापमुक्त हो गई और सुरपुर को चली गयी तथा युद्ध भी समाप्त हो गया।

तपती और संवरण की कथा

तपती सूर्यदेव की पुत्री थी और सावित्री देवी की छोटी बहिन थी। वह तपस्या में संलग्न रहने के कारण तीनों लोकों में तपती नाम से प्रसिद्ध हुई। वह सुन्दरी, सदाचारी और साधु स्वभाव की थी। वह युवावस्था को प्राप्त हो गई। उसे उस अवस्था में देखकर सूर्य भगवान को उसके विवाह की चिन्ता हुई। एक दिन शिकार खेलने के लिए राजा संवरण अश्व पर्वत पर गये। वहां उन्होंने घोड़े की मृत्यु होने पर घूमते-घूमते इस कन्या को देखा और उस पर मोहित हो गये। वसिष्ठ की सहायता से वह सूर्यपुत्री राजा संवरण को प्राप्त हुई। **संदर्भ** : महाभारत-आदि पर्व, 170

तक्षक का जनमेजय के भय से इन्द्र की शरण में जाना

उत्तंक के परामर्श से जनमेजय ने अपने पिता का बदला लेने के लिए सर्पयज्ञ प्रारम्भ किया। उस महान सर्पयज्ञ में जैसे ही ऋत्विज आहुति डालते वैसे ही भयंकर सांप उस यज्ञ-कुण्ड में आकर गिरने लगते। जब तक्षक को इसका पता लगा तो वह प्राण-रक्षा के लिए इन्द्र के भवन में चला गया और इन्द्र से अभय होने का वरदान प्राप्त कर वहीं रहने लगा। **संदर्भ** : महाभारत-आदि पर्व, अ० 53

तारकासुर-वध

तारक तार का पुत्र था, जिसने ब्रह्मा की तपस्या करके अपने समान किसी के बलवान न होने और केवल शिव के पुत्र द्वारा मारे जाने का वरदान प्राप्त किया था। वर-प्राप्ति के बाद इसने घोर अत्याचार करना आरम्भ कर दिया। इसको मारने के लिए देवताओं ने शिव और पार्वती के विवाह का प्रयास किया। शिव और पार्वती के विवाह के उपरान्त कार्तिकेय का जन्म हुआ। वे देवताओं के सेनानायक बने और उन्होंने घोर युद्ध करके तारकासुर का वध किया। 'मत्स्य पुराण' में तार को वज्रांग का पुत्र बताया गया है। **संदर्भ** : महाभारत-शल्य पर्व, अ० 46; शिव-रुद्र-संहिता-कुमार-खण्ड, अ० 10; मत्स्य-अ० 148-160

तुलसी की कथा

भारतीय धर्म-सम्प्रदायों में तुलसी को एक पवित्र वृक्ष मानकर इसकी पूजा की जाती है। लोक में प्रचलित पूजा-विधान के अन्तर्गत तुलसी दल प्रसाद के रूप में भी वितरित किये जाते हैं। तुलसी की उत्पत्ति के सम्बन्ध में पुराणों में अनेक कथाएं वर्णित हैं।

'पद्म-पुराण' के अनुसार जब विष्णु द्वारा सतीत्व भंग करने पर वृन्दा विष्णु को शाप देकर चिता में भस्म हो गई तो विष्णु चिता स्थान पर ही इतने विमोहित हो गए कि वे देवताओं द्वारा भी उद्बुद्ध नहीं हुए। तब देवताओं को विष्णु के उद्बोधन हेतु

महामाया की स्तुति की। महामाया प्रकट हुई और उन्होंने देवताओं को गौरी, लक्ष्मी और स्वरु से प्राप्त बीजों से क्रमशः, धात्री, मालती और तुलसी पैदा हुई। तुलसी के वृक्ष में विष्णु को वृन्दा का रूप प्रतिभाषित हुआ और वे उसे बैकुण्ठ में ले गये।

'स्कन्द-पुराण' के अनुसार समुद्र-मंथन के समय जब भगवान विष्णु अमृत-कलश को हाथ में लेकर चले तो उनके हर्ष में आंसू की कुछ बूदें अमृत के ऊपर गिर पड़ीं, जिससे उस समय तुलसी का जन्म हुआ। देवताओं ने लक्ष्मी और तुलसी भगवान विष्णु को सौंप दीं।

'शिव-पुराण' के अनुसार प्राचीन समय में दंभासुर के पुत्र शंखचूड़ की तपस्या पर प्रसन्न होकर ब्रह्मा ने दिव्य श्रीकवच दिया और धर्मराज की कन्या तुलसी से बिवाह की आज्ञा दी। विवाह के बाद शंखचूड़ दैत्यों का राजा हुआ तथा बलपूर्वक उसने देवताओं पर अधिकार जमा लिया और उन्हें कष्ट पहुंचाने लगा। उसके वध के लिए देवताओं ने शिव की स्तुति की। जिससे शिव ने उनकी सहायता का आश्वासन दिया। तब शिव ने शंखचूड़ के पास युद्ध का संदेश भेजा तथा देवों और उस दैत्य में युद्ध हुआ। उसने सभी देवताओं को महाकाली सहित श्रीकवच और पत्नी के सतीत्व के बल पर पराजित कर दिया। जब शिव को इस रहस्य का पता चला तो उन्होंने नारायण की प्रार्थना की। नारायण शिव की प्रार्थना पर ब्राह्मण का रूप धारण कर शंखचूड़ के पास गये और भिक्षा में शंखचूड़ से हरि-कवच मांग लाये तथा कवच लेकर शंखचूड़ का रूप बनाकर सती तुलसी के समीप पहुंचकर उससे रमण किया। इधर शिव ने तुलसी का पतिव्रत भंग होते ही शंखचूड़ का वध कर दिया। सम्पर्क के समय तुलसी ने शंखचूड़ के वेश में विष्णु को पहचान कर शाप दिया कि तुमने धर्म-भंग कर मेरे पति को दयाविहीन होकर मारा है। तुम पाषाण बन जाओ। उसी समय वहां शिव पहुंच गए। उन्होंने विलाप करती हुई तुलसी को समझाया कि तुमने पूर्वजन्म में भगवान को पतिरूप में पाने के लिए तप किया था। उसी का यह परिणाम है। तुम गंडकी नदी बनोगी फिर तुलसी वृक्ष। विष्णु तुम्हारे शाप से गंडकी नदी के तटवर्ती पर्वत बनेंगे और शालिग्राम के रूप में प्रसिद्ध होंगे। शंखचूड़ की अस्थियों से सागर में शंख बनेंगे। जो व्यक्ति तुलसी की और शालिग्राम की एक साथ पूजा करेगा वह महाज्ञानी तथा भगवान-भक्त होगा। शिव द्वारा इस प्रकार समझाने पर तुलसी ने अपना शरीर त्याग दिया।

'ब्रह्मवैवर्त पुराण के अनुसार' तुलसी पूर्वजन्म में 'कृष्ण की प्रिय सखी और सेविका के रूप में गोलोक में रहने वाली एक गोपी थी। एक बार रासेश्वरी राधा ने उसे रास में गोविन्द के साथ आसक्त, अतृप्त और मूर्छित रूप में देख लिया और उसको मानव-योनि में जाने का शाप दिया। तत्पश्चात गोविन्द ने उसे चार भुजावाला पति प्राप्त होने का वर दिया। तदनुसार तुलसी ने धर्मध्वज की पत्नी माधवी से जन्म लिया और ब्रह्मा की तपस्या की। ब्रह्मा ने उसे शंखचूड़ के रूप में उत्पन्न हुए गोप श्रीदामा को पति के रूप में प्राप्त होने का वर दिया तथा यह भी कहा कि वह बाद में तुलसी का पेड़ बनेगी और संसार में प्रसिद्ध होगी। तदनुसार वह शंखचूड़ की पत्नी बनी और विष्णु ने

उसका पूर्वजन्म की इच्छा के अनुसार पतिव्रत भंग किया।

'ब्रह्मवैवर्त पुराण' की एक अन्य कथा के अनुसार एक बार तुलसी ने गंगा तट पर गणेश को देखकर उसके रूप की हंसी उड़ाई फिर उससे अपना पति बनने का अनुरोध किया। गणेश ने उससे उसका पति बनने के लिए मना करने पर तुलसी ने गणेश को विवाह-बन्धन में बंधने का शाप दिया। इस पर गणेश ने भी उसे शाप दिया कि तू महान लोगों के शाप से तुलसी का वृक्ष बनेगी। तुलसी के प्रार्थना करने पर गणेश ने उससे कहा कि वह वृक्ष बनकर फूलों का सारभूत होगी और कृष्ण-पूजा में उसका प्रमुख स्थान होगा।

'विश्राम सागर' में यह कथा एक अन्य ही प्रकार से दी है। "कभी तुलसी नामक एक स्त्री थी। उसने एक बार बहुत तप किया, जिससे विष्णु प्रकट हुए तथा तुलसी से वर मांगने के लिए कहा। उसने भगवान को पति रूप से मांगा। लक्ष्मी ने यह सुनकर उसे जड़ वृक्ष बनने का शाप दे दिया। पर भगवान ने उससे कहा कि तुम वृक्ष होकर भी मेरी प्रिय बनोगी और मैं शालिग्राम बनकर तुम्हारे साथ रहूंगा। **संदर्भ** : पद्म पुराण-उत्तर ख०-98-107; स्कन्द-पुराण-वैष्णख खण्ड-कार्तिक-14-25; शिव पुराण-रुद्र-संहिता-युद्ध-खण्ड-अ० 27-51; ब्रह्मवैवर्त-प्रकृति खण्ड-अ० 13-21; देवी भागवत-9/17-24; विश्राम-सागर-अ० 33

तुलाधर की कथा

तुलाधर काशी में रहकर सत्य से अपना वणिक-धर्म पालन करता था। अलक्तक, पदमक, तुंगराष्ठ तथा चन्दनादि गंधद्रव एवं अन्य छोटी-बड़ी वस्तुओं को दूसरों से खरीद कर बेचता था। उसके पास जाजलि ऋषि ज्ञान प्राप्त करने गए तब उसने उन्हें आतमयज्ञ धर्म का उपदेश दिया। **संदर्भ** : महाभारत-शान्ति पर्व, अ० 52

त्रिशंकु की कथा

'बाल्मीकि रामायण' के अनुसार एक बार इक्ष्वाकु वंश के त्रिशंकु नामक राजा के मन में सशरीर स्वर्ग में जाने की कामना जागृत हुई और उसने अपनी इस इच्छापूर्ति के लिए अपने गुरु वसिष्ठ को यज्ञ करने के लिए कहा। वसिष्ठ ने इस कार्य को असंभव बताया। तब त्रिशंकु अपने गुरुपुत्रों के समीप पहुंचा। वसिष्ठ-पुत्रों ने भी उसे यह कार्य अशक्य बताया। तब उसने किसी अन्य गुरु से यह यज्ञ कराने की धमकी दी। इस पर वसिष्ठ पुत्रों ने उसे चाण्डाल होने का शाप दिया। त्रिशंकु शापवश चाण्डाल हुआ घूम रहा था। उस समय संयोग से उसकी भेंट विश्वामित्र से हुई। विश्वामित्र ने योगबल से उसे पहचान कर उसका मनोरथ जानकर अपने पुत्रों और शिष्यों के सहयोग से त्रिशंकु को सशरीर स्वर्ग में भेजने का यज्ञ प्रारम्भ कर दिया। विश्वामित्र के यज्ञ के लिए वसिष्ठ-पुत्र और महोदय ऋषि ने निमन्त्रण स्वीकार नहीं किया, जिससे रुष्ट होकर विश्वामित्र ने उन्हें भस्म होने तथा शव भक्षण करने और कुत्ते का मांस खाने का शाप दिया। ये

लोग ही आगे जाकर निषाद हुए । यज्ञ में विश्वामित्र ने देवताओं को भी हवि दी, पर कोई देवता यज्ञ में नहीं आया तो विश्वामित्र ने अपने तप-बल से त्रिशंकु को स्वर्ग में सशरीर भेजा, लेकिन गुरुद्रोही त्रिशंकु को इन्द्र ने स्वर्ग से धकेल दिया और वह औंधे मुंह स्वर्ग से गिरने लगा एवं रक्षा के लिए चिल्लाने लगा, जिससे विश्वामित्र ने दूसरे स्वर्ग की रचना प्रारम्भ की । इससे भयभीत हो देवताओं ने विश्वामित्र की शरण में जाकर ऐसा न करने की प्रार्थना की । देवताओं की प्रार्थना पर विश्वामित्र ने अपनी प्रतिज्ञा रखने के लिये त्रिशंकु को नक्षत्रों के बीच नीचे को सिर किए हुए वहीं स्थिर कर दिया, जहां आज भी वह स्थिति है ।

'ब्रह्म, और विष्णु पुराण के अनुसार' सूर्य वंशी राजा त्र्ययारुण का सत्यव्रत नामक एकमात्र पुत्र था। उसके एक बार किसी पुरवासी की पुत्री का अपहरण कर लेने पर राजा ने उसे राज्य से निकाल दिया और चाण्डालों के बीच में रहने की आज्ञा दी । राजा अपने अकेले पुत्र के राज्य से बाहर चले जाने पर दुखी हुआ और राज्य त्यागकर तप करने चला गया। राजा की अनुपस्थिति में राज्य की देखभाल वशिष्ठ ने की । इसी समय विश्वामित्र अपने स्त्री और बच्चों को छोड़कर वन में तप करने चले गए। उनकी पत्नी द्रव्य के अभाव में अन्य पुत्रों के पालन के लिए अपने एक पुत्र को गले में बांधकर बेचने निकली। उस समय सत्यव्रत ने विश्वामित्र के बच्चों की देखभाल की और उनके पुत्र को बेचने नहीं दिया और अन्न व मांस के अभाव में एक दिन वसिष्ठ की कामधेनु को ही मार उसका मांस स्वयं खाया और विश्वामित्र के पुत्रों को भी खिला दिया । पिता के असंतोष, गुरु की गाय का वध और कन्या के हरण के तीन शंकुओं से युक्त होने के कारण सत्यव्रत का नाम त्रिशंकु रखा । विश्वामित्र ने घर लौटकर त्रिशंकु के कार्य से प्रसन्न होकर उसे राज्य पर अभिषिक्त किया और सशरीर स्वर्ग भेजा ।

'वायु-पुराण के अनुसार' त्रय्यारुण के पुत्र सत्यव्रत ने विदर्भ राजा की स्त्री का बलात हरण कर लिया, जिससे राजा ने उसे राज्य से निकाल दिया तथा स्वयं वन को चला गया । उसके वन में चले जाने पर राज्य में अराजकता फैल गयी । तब वसिष्ठ ने उसे पुनः राज्य पर अभिषिक्त करने की इच्छा की, पर इसी बीच सत्यव्रत द्वारा उनकी कामधेनु का वध करने के कारण उन्होंने अपना विचार त्याग दिया । बाद में विश्वामित्र ने उन्हें स्वर्ग भेजने के लिए यज्ञ किया । यज्ञ की समाप्ति होने पर त्रिशंकु के स्नान-जल से कर्मनाशा नदी का उद्‌गम हुआ ।

'शिव पुराण' में पुरवासी कन्या के अपहरण के साथ-साथ विवाह-मण्डप में मंत्रों से दीक्षित किसी ब्राह्मण की पत्नी का अपहरण करना भी वर्णित है।

'देवी भागवत के अनुसार, सत्यव्रत मान्धाता के वंश में अरुण राजा का पुत्र था । उसने विवाह के समय मन्त्रों से दीक्षित किसी ब्राह्मण कन्या का अपहरण कर लिया, जिससे इसके पिता ने इसे राज्य से निकाल दिया । सत्यव्रत ने विश्वामित्र की पत्नी का पालन-पोषण किया तथा एक दिन मांस के लिए वसिष्ठ की कामधेनु को भी मार दिया, जिससे वसिष्ठ ने उसको त्रिशंकु नाम दिया और पिशाच होने का शाप दिया । शापवश पिशाच

बनकर त्रिशंकु ने देवी भगवती की आराधना की और नवाक्षर मंत्र का जाप किया। देवी के वर से राजा अरुण ने उसे घर बुलाकर राज्य पर अभिषिक्त कर स्वयं वन को चला गया। राज्य प्राप्त कर त्रिशंकु की स्वर्ग भोगने की इच्छा दिनोंदिन बलवती होने लगी और उसने वसिष्ठ से मनुष्य देह से स्वर्ग जाने की इच्छा से यज्ञ करने को कहा। वसिष्ठ के इस यज्ञ को अशक्य बताने पर त्रिशंकु ने अन्य पुरोहित से यज्ञ कराने की धमकी दी। इस पर वसिष्ठ ने उसे चाण्डाल होने का शाप दिया। शापवश वह चाण्डाल होकर वन में चला गया और विश्वामित्र की पत्नी की सहायता की। इसे जानकर विश्वामित्र ने इसको स्वर्ग भेजने के लिए यज्ञ कराया। यज्ञ सफल न होने पर अपने पुण्य के बल पर उन्होंने त्रिशंकु को सशरीर स्वर्ग भेज दिया। पर चाण्डाल के रूप को देखकर इन्द्र ने उसे ऊपर से धकेल दिया। तब मुनि विश्वामित्र ने दूसरे स्वर्ग की रचना की। भयभीत होकर इन्द्र मुनि के पास आया और मुनि का प्रण अटल देखकर इन्द्र त्रिशंकु को दिव्य देहधारी बनाकर स्वर्ग को ले गया।

'स्कन्द-पुराण के अनुसार' त्रिशंकु वसिष्ठ से निराश्रित, गुरु-पुत्रों से शापित मनुष्य देह से स्वर्ग जाने की इच्छा लेकर चाण्डाल वेश में विश्वामित्र की शरण में गया। उसके पाप दूर करने के लिए विश्वामित्र उसके साथ तीर्थों में घूमे तथा मार्कण्डेय मुनि की सलाह से हाटकेश्वर में शिव-लिंग की पूजा कर त्रिशंकु को पापरहित बनाया और ब्रह्मा के मना करने पर भी त्रिशंकु को सशरीर स्वर्ग भेजने के लिए बारह वर्ष तक यज्ञ किया। यज्ञ-समाप्ति पर भी जब त्रिशंकु स्वर्ग नहीं जा पाया तो विश्वामित्र ने नवीन स्वर्ग की सर्जना की। तब विश्वामित्र कृत और ब्रह्मा कृत सृष्टि में आपस में विवाद होने लगा। ब्रह्मा ने इस विवाद को समाप्त करने के लिए विश्वामित्र के वचनों की रक्षा के लिए त्रिशंकु को स्वर्ग जाने की अनुमति दे दी। **संदर्भ :** बालमीकि-रामायण, बालकाण्ड-सर्ग-57-60; ब्रह्मपुराण-अध्याय-7-8; विष्णु पुराण-अंश-4/3/21-24; वायु पुराण-अ०-88; शिवपुराण-उमा संहिता, अ०-37-38; भागवत पुराण-9/7; स्कन्द पुराण-नागर खण्ड अ०-2-7; ब्रह्माण्ड पुराण-मध्य भाग-उपोद्घातपाद, अ० 63/76-114; हरिवंश पुराण-हरिवंश पर्व, अ० 12-13; देवी भागवत-7/10-14

दण्डक वन की कथा

राजा इक्ष्वाकु का सबसे छोटा पुत्र मूर्ख और विद्याहीन था। इस मूर्ख पर कभी भी दण्डपात हो सकता है, अतः इसका नाम राजा ने दण्ड रखा और उसे विन्ध्याचल और शैवल के मध्य का भाग शासन में दिया। एक बार उसने अपने गुरु शुक्र की जेष्ठ कन्या अरजा के साथ बलात्कार किया। इस पर क्रोधित हो शुक्राचार्य ने दण्ड को शाप दिया कि यह दुष्ट राजा अपने पुत्र, सेना और भृत्यों सहित नष्ट हो जाए। शुक्राचार्य के शापवश दण्ड के राज्य के अन्दर रहने वाले सभी पदार्थ धूल में मिल गए और वहां दण्डकवन बन गया।

'आनन्द रामायण के अनुसार' एक बार राजा दण्ड शिकार करता हुआ भृगु आश्रम में

पहुंचा। वहां भृगु की पुत्री अरजाका से बाल अवस्था में बलात्कार किया, जिससे भृगु ऋषि ने दण्ड को शत योजन विस्तृत राज्य के साथ क्षणमात्र में दग्ध होने का शाप दिया। **संदर्भ :** बाल्मीकि रामायण उत्तरखण्ड-सर्ग-80-81, श्लोक-7-10; पद्म पुराण-सृष्टि खण्ड-अ० 34; वामन पुराण अ० 63-66; आनन्द रामायण-राज्य काण्ड (उत्तरार्द्ध) सर्ग-17/87-110;

दम्भोद्भव की कथा

प्राचीन काल में दम्भोद्भव नामक एक सम्राट था। वह महान् गर्व से उन्मत्त हो दूसरे किसी को कुछ नहीं समझता था। उस समय निर्भय, उदार एवं विद्वान ब्राह्मणों ने उसे समझाने का प्रयास किया, परन्तु उसका अहंकार बढ़ता ही गया। एक दिन उसने ब्राह्मणों से पूछा कि उसके समान कौन योद्धा है। तब ब्राह्मणों ने क्रोधित हो उसे नर व नारायण नामवाले तपस्वियों का नाम बता दिया। राजा अपार सेना साथ लेकर उन्हें खोजता हुआ उनके पास गन्धमादन पर्वत पर पहुंचा और उसने युद्ध की अभिलाषा प्रकट की। उक्त तपस्वियों ने दम्भोद्भव को काफी समझाया, परन्तु वह उन्हें युद्ध के लिए ललकारता ही रहा। तब उन महात्माओं में से एक नर ने एक मुट्ठी सींक लेकर दम्भोद्भव की समस्त सेना को बींध डाला और भयंकर ऐषीकास्त्र का प्रयोग किया। तब पराजित हो दम्भोद्भव ने मुनि के चरणों में गिरकर क्षमा मांगी। **संदर्भ :** महाभारत-उद्योग पर्व, अ० 96

दत्तात्रेय-अवतार

दत्तात्रेय एक प्राचीन ऋषि हैं, जो विष्णु के चौबीस अवतारों में से माने जाते हैं। ये परमयोगी एवं सिद्ध थे तथा इन्होंने चौबीस पदार्थों से शिक्षा ग्रहण की थी। इन्होंने अलर्क और प्रह्लाद को ब्रह्मज्ञान की शिक्षा दी थी और यदु तथा सहस्रार्जुन को योग का उपदेश देकर मोक्ष दिलाई। **संदर्भ :** ब्रह्म-2/3; भागवत-1/3/11, 2/7/7

दधीचि की कथा

हिन्दी साहित्य में दधीचि की कथा देवासुर-संग्राम अवसर पर कालिय। वृत्रासुर वध के लिए वज्र बनाने को अपनी अस्थियां दान देने के संदर्भ में प्रचलित है। इस कथा के स्रोत-बिन्दु वैदिक साहित्य से मिलते हैं, जिसका पुराण-साहित्य में विस्तार हुआ है।

ऋग्वेद की ऋचाओं के अनुसार इन्द्र ने दध्य ऋषि (दधीचि) को सोमविद्या सिखाकर कहा कि तुम इस विद्या को किसी दूसरे व्यक्ति को सिखलाओगे तो तुम्हारा सिर काट दूंगा। दध्यङ् नश्वर शरीर की परवाह न कर अश्विनीकुमारों को इस विद्या को सिखलाने के लिए तैयार हो गये। अश्विनीकुमारों ने विद्या सिखाने से पूर्व दध्यङ् का सिर काट दूसरी जगह सुरक्षित रख दिया तथा उसके धड़ पर घोड़े का सिर रखकर ऋक्, यजु तथा साम तीनों प्रवर्ग्य और मधु-विद्या का अध्ययन किया। इन्द्र को जब पता चला तो

उन्होंने दध्यङ् का सिर काट दिया, तब अश्विनीकुमार ने दधीचि का पहला सिर जोड़कर उन्हें जीवित कर दिया। जब दधीचि स्वर्ग चले गये तो पृथ्वी पर असुर बढ़ गये। इन्द्र सबसे लड़ने में असमर्थ होकर दधीचि की तलाश करने लगा। इन्द्र स्वर्ग में जाकर दधीचि के अवशेष अंग के सम्बन्ध में पूछ-ताछ कर देवताओं की सहायता से उनके अश्वमस्तक शर्य्यार्णवत नामक कुरुक्षेत्र के जघानार्द्ध में पाया। इन्द्र ने उसी अश्व-मस्तक से असुरों का वध किया।

'महाभारत के अनुसार' कालकेय राक्षस वृत्र को अपना स्वामी बनाकर देवताओं का वध करने लगे। बलशाली वृत्र के समक्ष जब देवताओं ने अपने को अशक्त पाया तब वे ब्रह्मा के पास गये। ब्रह्मा ने उनको दधीचि के पास भेजा। परोपकार के लिए मुनि ने देवताओं की प्रार्थना पर अपना शरीर त्याग दिया। उनकी हड्डियों से विश्वकर्मा ने वज्र बनाया, जिससे इन्द्र ने वृत्र का वध किया।

'ब्रह्मपुराण के अनुसार' एक समय विष्णु, इन्द्र आदि देवताओं ने दैत्यों को पराजित कर अपने आयुध दधीचि के आश्रम में रख दिये। आश्रम में रखे आयुधों के चोरी जाने के डर से दधीचि उनके तेज को पी गये। कुछ समय पश्चात जब दैत्य सबल हो गये तो देवताओं द्वारा अपने आयुध मांगने पर अस्त्रों के अभाव में अस्त्र बनाने के लिए अपनी अस्थियां देनी पड़ीं। देवताओं ने उन अस्थियों से अनेक प्रकार के अस्त्र-शस्त्र बनाकर पुन: दैत्यों का संहार किया।

'भागवत पुराण के अनुसार' त्वष्टा ने इन्द्र से अपने पुत्र विश्वरूप का बदला लेने के लिए यज्ञकुण्ड से वृत्र को उत्पन्न किया। वृत्र को मारने के लिए देवताओं ने संयुक्त प्रहार किये, परन्तु वृत्र सभी अस्त्र-शस्त्रों को अपने मुख में निगल गया। तब भयभीत सभी नारायण के पास गये तथा नारायण की सलाह में तपोपूत दधीचि के पास गये और उनसे अस्थियों की प्रार्थना की। दधीचि ने देह को नश्वर जान देवकार्य के लिए अपने शरीर का त्याग कर देवताओं को अस्थियां दीं। इन्द्र ने मुनि की अस्थियों से निर्मित वज्र से वृत्र का वध किया। **संदर्भ** : ऋग्वेद-1/11 6/12, 1/117/22,1, 84, 13-14; महाभारत-वन पर्व, अध्याय-100-101; ब्रह्मपुराण-अ० 110; पद्म पुराण-सृष्टि खण्ड, अ० 19; भागवत-पुराण-6/9-10; स्कन्द पुराण-प्रभास खण्ड 1. (प्रभास माहात्म्य) अ० 31-32 2. (माहेश्वर खण्ड) अ० 51-17

दशरथ को तापस का शाप

एक बार राजा दशरथ कुमारावस्था में वर्षा ऋतु में सूर्यास्त होने पर धनुष-बाण लेकर सरयू नदी के तट पर गये। उस समय श्रवणकुमार अपने अंधे माता-पिता को तीर्थ-यात्रा कराने के लिए निकला था। वह सरयू तट पर आकर ठहरा और अपने माता-पिता के लिए जल भरने के लिए सरयू तट पर आया। पात्र के शब्द होने पर राजा दशरथ ने श्रवणकुमार को कोई जंगली पशु समझकर अपना शब्दवेधी बाण चला दिया। लेकिन जब दशरथ को पशु के स्थान पर आदमी की बोली सुनाई दी तो उन्हें पता चला कि

उनके हाथ से ऋषि-पुत्र मारा गया है। श्रवणकुमार के कथनानुसार दशरथ उसके माता-पिता के पास जल लेकर गये और उनके पुत्र का सब वृत्तान्त उन्हें सुनाया। इसके अनन्तर श्रवण के माता-पिता चिता में भस्म हो गये और दशरथ को यह शाप दिया कि जिस तरह आज हम पुत्र-वियोग में मर रहे हैं, उसीतरह तुम्हारे भी पुत्र-वियोग में ही प्राण निकलेंगे। **संदर्भ** : बाल्मीकि रामायण-अयोध्या काण्ड-सर्ग-63-64; ब्रह्मपुराण, अ० 123; अग्नि पुराण-अ० 6; आनन्द रामायण-सार काण्ड सर्ग-1/86-95

दाल्भ्य की कथा (अन्न का महत्त्व)

बक नामक दल्भ और मित्रा का पुत्र स्वाध्याय करने के लिए गांव से बाहर एक जलाशय के समीप गया। स्वाध्याय से संतुष्ट होकर उन पर अनुग्रह करने के लिए कोई देवता एक श्वेत कुत्ते का रूप धारण करके आया। उसके साथ अन्य कुत्ते भी थे। उन कुत्तों ने श्वेत कुत्ते से कहा कि वे भूखे हैं, अतः उनके लिए अन्न प्रस्तुत करें। तब उनसे श्वेत कुत्ते ने प्रातःकाल आने को कहा। इसे सुनकर बक उनके आने की प्रतीक्षा करता रहा। प्रातःकाल कुत्तों ने आकर कुत्ते के रूप में बैठे देवता की परिक्रमा कर अन्न के लिए स्तवन किया और अन्नपति को प्रसन्न कर अन्न उत्पन्न किया। **संदर्भ** : छान्दोग्य उपनिषद्, अ० 1/12

दिलीप-नन्दनी की कथा

दिलीप अंशुमान के पुत्र एवं अयोध्या के अधिपति थे। एक बार इन्द्र के दरबार से लौटते हुए दिलीप ने कामधेनु का प्रदक्षिणादि से सत्कार नहीं किया था। इसलिए गौ ने इसे शाप दे दिया था कि तुम्हारे कोई संतान नहीं होगी। कुछ समय बाद इन्होंने नन्दिनी गौ की रक्षा के लिए अपने प्राण तक अर्पण कर दिये थे। जिससे गाय का इनको दिया शाप समाप्त हो गया। **संदर्भ** : पद्मपुराण, उत्तर खण्ड, अ० 205; रघुवंश, सर्ग 1-2

दीर्घतमस की कथा

दीर्घतमा उशिज ऋषि के पुत्र थे। बृहस्पति ने उशिज पत्नी ममता से बलपूर्वक मैथुन किया। उस समय ये गर्भ में थे। इन्होंने बृहस्पति के मैथुन में बाधा उत्पन्न की। अतः बृहस्पति के क्रोध से अंधे हो गये थे। **संदर्भ** : वायु-99/36-62; भागवत-9/20/36, 140-150; मत्स्य-अ० 48

द्रुपद-द्रोण वैर

द्रुपद द्रोणाचार्य के मित्र थे। द्रुपद ने राजा होने के बाद द्रोणाचार्य का तिरस्कार किया था। अतः द्रुपद से बदला लेने के उद्देश्य से उन्होंने कौरव व पाण्डवों से गुरु-दक्षिणा में द्रुपद को बांधकर लाने को कहा था। तब पाण्डव द्रुपद को बांधकर ले आये थे। द्रोणाचार्य ने तब इनको क्षमा किया और इनका आधा राज्य लेकर मुक्त कर दिया। **संदर्भ** :

महाभारत-आदि पर्व, अ० 130-137

दुर्गा की कथा

महिषासुर से त्रस्त होकर विष्णु के कहने के अनुसार अपना-अपना तेज निकालकर देवताओं ने एक देवी को प्रकट किया, जिसने महिषासुर का वध किया। 'स्कन्द-पुराण' के अनुसार रुरु के पुत्र महादैत्य दुर्ग ने जब देवताओं को यातना देनी आरम्भ कर दी, तब शिव ने दुर्गा को उसके वध के लिए भेजा। दुर्ग को मारने के कारण यह देवी दुर्गा हुई। पुराणों में दुर्गा का अनेक रूपों में उल्लेख मिलता है। **संदर्भ :** ब्रह्म-64; मार्कण्डेय-83; ब्रह्मवैवर्त-ब्रह्म खण्ड, अ० 64; स्कन्द-काशी खण्ड, अ० 71-72

दुर्गा का चामुण्डा बनना

शुम्भ-निशुम्भ के सेनापति चण्ड और मुण्ड को मारकर कालीदेवी 'चामुण्डा' नाम से प्रसिद्ध हुई। काली का यह रूप अत्यन्त भीषण एवं भयंकर माना जाता है। जगदम्बा में जगत-पोषण शक्ति निहित है तो चामुण्डा में संहारक शक्ति की व्यंजना है। **संदर्भ :** मार्कण्डेय, अ० 87/25

दुर्योधन सम्बन्धी कथाएं

(1) दुर्योधन का उलूक को दूत बनाकर पाण्डवों के पास भेजना

राजा दुर्योधन ने अपनी शक्तिशाली सेना ठहराकर समस्त राजाओं का समादर कर उन सबकी रक्षा के लिए कई गुल्म सैनियों की टुकड़ियां तैनातकर द्यूतकुशल शकुनि के पुत्र उलूक को दूत बनाकर भेजा और युधिष्ठिर के लिए यह सन्देश भिजवाया कि वे एक निर्दय मनुष्य की भांति सम्पूर्ण जगत का विनाश देखना चाहते हैं। **संदर्भ :** महाभारत-उद्योग पर्व, अ० 160

(2) दुर्योधन का शल्य से कर्ण का सारथी बनने के लिए प्रार्थना

जिस समय दुर्योधन ने कर्ण को कौरव-सेना का सेनापति बनाया। उस समय दुर्योधन ने अर्जुन के विनाश की बात कही। तब कर्ण ने कहा—श्रीकृष्ण जगत के स्रष्टा हैं। वे अर्जुन के रथ की रक्षा करते हैं तथा अर्जुन के कुशल सारथी हैं। राजा शल्य श्रीकृष्ण के समान हैं। यदि वे मेरे सारथी का काम कर सकें तो तुम्हारी विजय निश्चित है। श्रीकृष्ण अश्वविद्या के रहस्य को जिस प्रकार जानते हैं, उसी प्रकार महारथी शल्य भी अश्वविद्या के विशेषज्ञ हैं। ऐसी व्यवस्था होने पर मैं गुणों में पार्थ से बड़ा हो जाऊंगा। शल्य भी श्रीकृष्ण से बढ़े-चढ़े हैं और मैं अर्जुन से श्रेष्ठ हूं। यह सुनकर दुर्योधन ने जब शल्य से कर्ण का सारथी होने के लिए कहा तो शल्य ने यह कहकर मना कर दिया कि वह एक सूत-पुत्र के सारथी का काम कदापि नहीं कर सकता है। लेकिन जब दुर्योधन ने उसे श्रीकृष्ण के समान बताया तब शल्य कर्ण का इस शर्त के साथ सारथी बनने के लिए तैयार हो गया कि वह कर्ण के समीप जैसे उसकी इच्छा होगी, बात करेगा। युद्ध में

शल्य ने कर्ण का सारथी बनना स्वीकार कर लिया, लेकिन अवसर आने पर वह कर्ण को हतोत्साहित ही करता रहा। **संदर्भ** : महाभारत-कर्ण पर्व, अ० 40

(3) दुर्योधन का सरोवर में जाकर छिप जाना

अपनी सेना का संहार हुआ देखकर तथा अकेले रहने पर दुर्योधन गदा हाथ में लेकर पैदल ही सरोवर की ओर भागा और पाण्डवों के भय से द्वैपायन सरोवर में जाकर छिप गया। तब व्याधों से पता लगाकर युधिष्ठिर सेना सहित सरोवर पर पहुंच गये। **संदर्भ** : महाभारत-शल्य पर्व, अ० 29

(4) दुर्योधन का वध

दुर्योधन धृतराष्ट्र का ज्येष्ठ पुत्र था। यह पाण्डवों से अधिक ईर्ष्या करता था और उनके अहित का कोई न कोई षडयंत्र बनाता रहता था। दोनों के आपसी मन-मुटाव के कारण महाभारत का युद्ध हुआ, जिसमें सारे कौरव मारे गये। अन्त में भीम ने द्वन्द्व-युद्ध में इसकी जांघ तोड़ दी, जिससे इसकी मृत्यु हुई। **संदर्भ** : महाभारत-शल्य पर्व, अ० 58; भागवत-3/3/13; अग्नि, अ० 14; मत्स्य, अ० 103

(5) दुर्योधन का वज्रांग होना

दुर्योधन की माता गांधारी अपने पति के अंधे होने के कारण स्वयं अपनी आंखों प र पट्टी बांधकर रहती थी। एक दिन उसने अपने पुत्र दुर्योधन से निर्वस्त्र होकर अपने सामने से निकलने के लिए कहा। श्रीकृष्ण को इसका पता लगा तो उन्होंने दुर्योधन के पास जाकर अपनी माता के समक्ष निर्वस्त्र होकर जाने को अनुचित ठहराकर कम से कम कोपीन अवश्य बांधकर जाने को कहा। दुर्योधन उनकी बात मानकर कृष्ण द्वारा दी गई एक माला को कोपीन बनाकर गांधारी के सामने गया। उस समय गांधारी ने अपनी आंखों की पट्टी खोली। गांधारी की दुर्योधन के शरीर पर दृष्टि पड़ने से उसका शरीर वज्र का हो गया। जिस स्थान पर उसने माला बांधी थी वह स्थान कच्चा रह गया। भीम ने दुर्योधन से हुए गदा-युद्ध के समय उसी स्थान पर गदा मारकर दुर्योधन की जंघा तोड़कर वध किया।

दुःशासन-वध

युधिष्ठिर दुर्योधन के साथ हुए जुए में अपना सर्वस्व हारकर द्रौपदी को भी हार गए थे। दुशासन द्रौपदी को रजस्वला अवस्था में महलों से खींचकर कौरवों की सभा में ले गया तथा सभा के बीच द्रौपदी को नग्न करने की कोशिश की। इस पर भीम ने प्रतिज्ञा की थी कि जिन हाथों से दुशासन ने द्रौपदी की साड़ी खींची है वह उन हाथों को उखाड़ कर रक्तपान करेगा और रक्त से द्रौपदी की वेणी धुलवायेगा। युद्ध के मैदान में भीम ने दुशासन की भुजा उखाड़कर उसका रक्तपान किया तथा प्रतिज्ञा पूर्ण की। **संदर्भ** : महाभारत-कर्ण पर्व, अ० 83

दुर्वासा का द्रौपदी को अंचल वृद्धि का वर

एक बार गंगा में स्नान करते समय दुर्वासा ऋषि की कोपीन बह गई। द्रौपदी ने अपने अंचल से वस्त्र फाड़कर दिया। इस पर दुर्वासा ने द्रौपदी को आवश्यकता पड़ने पर उसके अंचल में वृद्धि होने का वर दिया। उस वर के कारण ही कौरवों की सभा में दुशासन द्वारा वस्त्रहीन किये जाने पर श्रीकृष्ण ने चीर बढ़ाया। **संदर्भ** : शिव-पुराण-शतरुद्र संहिता, अ० 37

दुर्वासा का इन्द्र को शाप : लक्ष्मी द्वारा देवलोक का त्याग

एक बार ऋषि दुर्वासा कैलाश शिखर पर जा रहे थे। वहां उनकी भेंट इन्द्र से हुई। उन्होंने उपहारस्वरूप इन्द्र को एक पारिजात पुष्प दिया। उस पुष्प को इन्द्र ने ऐरावत के सिर पर पटक दिया। इसे देखकर दुर्वासा ने इन्द्र को यह शाप दे दिया कि लक्ष्मी तुम्हें छोड़कर चली जाए तथा जिस सिर पर तुमने यह पुष्प रखा है वही हाथी का सिर सर्वप्रथम पूजा जायेगा। हाथी का यही सिर गणेश के धड़ पर जाकर लगेगा। तदनुसार लक्ष्मी देवलोक को छोड़कर अपनी कला से समुद्र की पुत्री बनी। **संदर्भ** : ब्रह्मवैवर्त-प्रकृति खण्ड-अ० 36

दुर्वासा का बलिसुत साहसिक व तिलोत्तमा को शाप

एक बार बलिपुत्र साहसिक और तिलोत्तमा अप्सरा गन्धमादन पर्वत पर स्वच्छन्द विहार कर रहे थे। वहां उस समय दुर्वासा ऋषि चिन्तनलीन थे। साहसिक व तिलोत्तमा ने उस समय कामावेश में ऋषि दुर्वासा को नहीं देखा। उन दोनों के शोर से दुर्वासा का ध्यान टूट गया। तब दुर्वासा ने साहसिक को शाप दे दिया कि तू लज्जाहीन होकर काम में प्रवृत्त था, अतः गदहा हो जाय और तिलोत्तमा को दैत्य-योनि मिलने का शाप दिया। तदनुसार साहसिक धेनुक और तिलोत्तमा बाण पुत्री उषा बने। **संदर्भ** : ब्रह्मवैवर्त-श्रीकृष्ण जन्म खण्ड, अ० 23

दुर्वासा का पाण्डवों द्वारा आतिथ्य-सत्कार—दुर्वासा द्वारा पाण्डवों को सताया जाना

दुर्योधन ने दुर्वासा को अपने आतिथ्य-सत्कार से प्रसन्न कर उन्हें शिष्यों सहित युधिष्ठिर के पास भेज दिया। दुर्वासा यह पता लगाकर कि पाण्डव भोजन आदि करके सुखपूर्वक बैठे हैं, उनके पास दस हजार शिष्यों के साथ पहुंचे। युधिष्ठिर ने उन्हें आदर-सत्कार से बिठाया तथा उनकी विधिपूर्वक पूजा की और भोजन के लिए आमंत्रित किया। दुर्वासा अपने शिष्यों के साथ स्नान करने चले गए। उधर द्रौपदी की स्थिति का पता चला तो उन्होंने कृष्ण को स्मरण किया। तब कृष्ण वहां उपस्थित हुए। द्रौपदी ने वहां दुर्वासा के आने का वृत्तान्त कहा। कृष्ण ने उस समय द्रौपदी से सूर्य की दी हुई बटलोई

मंगाकर, जो धोकर रख दी गई थी, उसके गले में लगे साग के पत्ते का टुकड़ा खा लिया, जिससे त्रिलोकी तृप्त हो गई और दुर्वासा तथा उनके शिष्यों को भी तृप्ति से डकारें आने लगीं और वे वहां से चले गए। **संदर्भ** : महाभारत-वन पर्व, अ० 262-263

दुर्वासा का कृष्ण को वर

एक समय दुर्वासा ने कृष्ण का सत्व हरण करने का प्रयास किया। इन्होंने अपनी झूठी खीर कृष्ण और रुक्मिणी से अपने शरीर पर लगाने के लिए कहा। कृष्ण के शरीर पर खीर लगाने पर उन्होंने वर दिया कि तुम्हारे शरीर के जितने भाग में खीर लगी है, वह सारा वज्रवत हो जाएगा। इस प्रकार कृष्ण का सारा शरीर वज्रवत हो गया पर तलवे पर कृष्ण ने खीर नहीं लगायी थी। परिणामस्वरूप बहेलिए का बाण तलवे में लगने पर उनकी मृत्यु हो गई। **संदर्भ** : महाभारत, 5/57-62, अनुशासन पर्व, अ० 159; विष्णु-5/38-68; स्कन्द-शतरुद्र संहिता

दुष्यन्त और शकुन्तला की कथा

दुष्यन्त रैम्य के पुत्र तथा पाण्डवों की कुल-परम्परा के चक्रवर्ती राजा थे। ये शिकार खेलते हुए कण्व ऋषि के आश्रम में पहुंचे। कण्व की अनुपस्थिति में इनकी कण्व द्वारा पालित विश्वामित्र और मेनका के संयोग से उत्पन्न हुई शकुन्तला से भेंट हुई। इन्होंने इसके साथ गान्धर्व-विवाह कर लिया। पहले इन्होंने शकुन्तला को पुत्र सहित स्वीकार नहीं किया। बाद में आकाशवाणी होने पर अपनी पत्नी को ग्रहण कर लिया। **संदर्भ** : महाभारत-आदि पर्व, अ० 71-74; पद्मपुराण-स्वर्ग खण्ड अ० 1-5; विष्णु-4/9/12/13; वायु-99/133-139, 68/24; भागवत-1/12, 20, 9/20, 7-20; मत्स्य-49/10-11; ब्रह्माण्ड-3/6/25

देवताओं को श्राद्धान्न से अजीर्ण होना

महर्षि निमि से प्रेरित होकर सभी महर्षि शास्त्रविधि से पितृयज्ञ का अनुष्ठान करने लगे। चारों वर्णों के लोग श्राद्ध में देवताओं और पितरों को अन्न देने लगे। लगातर श्राद्ध में भोजन करते-करते देवता और पितर पूर्ण तृप्त हो गये और उनको अजीर्ण हो गया। तब अग्नि ने उनका अजीर्ण निवारण किया। **संदर्भ** : महाभारत-अनुशासन पर्व, अ० 91

देवशर्मा की तपस्या

ये रथतीर के चार शिष्यों में से एक शिष्य थे। इन्होंने तपस्या करके मुक्ति प्राप्त की थी। **संदर्भ** : पद्मपुराण-पाताल खण्ड, 89-91; वायु-पुराण 1/60/66

देवापि का राज्य त्याग : देवापि और शान्तनु की कथा

कुरुवंशी देवापि पिता के स्वर्गगमन के बाद राज्याभिषेक का प्रश्न उठने पर चिन्तित

हो उठे। वे चर्मरोगी थे तथा उनके शरीर पर छोटे-छोटे श्वेत दाग थे। वे अपने छोटे भाई शान्तनु का राज्याभिषेक कराकर वन में तपस्या करने चले गए। उनके वन में चले जाने पर बारह वर्ष तक वृष्टि न हुई। तब सब प्रजाजन देवापि को मनाने के लिए गए। देवापि ने शान्तनु के आग्रह से अनावृष्टि निवारण के लिए और बृहस्पति की प्रसन्नता के लिए पुरोहित बनकर वृष्टिकाम यज्ञ सम्पूर्ण कराया। तपस्वी देवापि के राजधानी में आने पर अनावृष्टि समाप्त हुई। **संदर्भ** : ऋग्वेद-10/98; बृहद्देवता-7/155-57, 8/1-6; मत्स्य-अ० 50

देवासुर-संग्राम

वैसे तो देव और असुरों के आपसी युद्ध होने के अनेक उल्लेख मिलते हैं तथा उनमें अनेक युद्ध हुए, लेकिन समुद्र-मंथन के बाद का युद्ध मुख्य युद्ध था। समुद्र-मंथन के बाद जब असुरों को अमृत न मिला तो देव और असुरों में युद्ध प्रारम्भ हो गया। इन्द्र की सहायता करने के लिए विष्णु स्वयं आए और कालनेमि, माल्यवान, माली और सुमाली आदि असुरों का वध किया। बाद में नारद ने इस युद्ध को रोका। **संदर्भ** : वायु-92/76-99; भागवत-8/10/11/1-45; मत्स्य-अ० 47-48

द्रोणाचार्य का जन्म

एक समय भरद्वाज ऋषि घृताची नामक अप्सरा को देखकर कामासक्त हो गए, जिससे उनका वीर्यपात हो गया। ऋषि ने वीर्य को द्रोण नामक पात्र में रख दिया। उसी से द्रोणाचार्य का जन्म हुआ। इसी से वह द्रोण कहलाए। महाभारत में एक अन्य स्थान पर उल्लेख मिलता है कि महर्षि भरद्वाज का वीर्य किसी द्रोणी (पर्वत की गुफा) में स्खलित होकर धीरे-धीरे पुष्ट होने लगा। उसी से द्रोणाचार्य का जन्म हुआ। उन्होंने अग्निवेश और परशुराम ऋषियों से अस्त्र-शस्त्र की विद्या प्राप्त की। **संदर्भ** : महाभारत-आदि पर्व, 67-69, 129, 62/106 भागवत-1/7/27, 9/21/86

द्रोणाचार्य का दुर्योधन को वर

दुर्योधन ने भीष्म की मृत्यु के बाद जब द्रोणाचार्य को कौरव-सेना का सेनापति बनाया तब द्रोण ने दुर्योधन को मनचाही वस्तु मांगने को कहा। इस पर दुर्योधन ने द्रोणाचार्य से युधिष्ठिर को जीवित पकड़ लाने की याचना की। तब द्रोणाचार्य ने प्रतिज्ञा की कि वे युधिष्ठिर को जीवित पकड़कर लायेंगे। **संदर्भ** : महाभारत-द्रोण पर्व, अ० 12

द्रोणाचार्य-वध

द्रोणाचार्य के युद्ध से भयभीत होकर श्रीकृष्ण ने अर्जुन से द्रोणाचार्य के वध की युक्ति बताते हुए कहा कि द्रोणाचार्य अश्वत्थामा के मारे जाने पर युद्ध नहीं करेंगे। यदि कोई उनसे जाकर यह कह दे कि अश्वत्थामा मारा गया तो द्रोणाचार्य युद्ध त्याग देंगे।

युधिष्ठिर इसके लिए बड़ी कठिनाई से सहमत हुए। भीमसेन ने अपनी सेना के अश्वत्थामा नामक हाथी को मार डाला। तब भीम ने उनसे जाकर कहा कि अश्वत्थामा मारा गया। इसे सुनकर द्रोणाचार्य शोक से व्याकुल हो गए, परन्तु उनके मन में संदेह था कि हो सकता है कि यह असत्य हो, अतः वे पुनः युद्ध करने लगे। तभी कुछ महर्षियों ने आकर उनसे हथियार त्यागने को कहा। परन्तु द्रोणाचार्य ने युधिष्ठिर से पूछा। युधिष्ठिर ने कहा कि अश्वत्थामा मारा गया। इसके बाद 'हाथी मारा गया' यह धीरे से कह दिया। तब द्रोणाचार्य ने हथियार त्याग दिए और उनका धृष्टद्युम्न ने सिर काट दिया। **संदर्भ :** महाभारत-द्रोण पर्व, 79-190; अग्नि, अ० 14

द्रौपदी सम्बन्धी कथाएं

(1) यज्ञ की वेदी से द्रौपदी का जन्म

द्रुपद ने संतान की कामना से पुत्रकामेष्टि यज्ञ किया। उस यज्ञ की अग्नि से एक लड़का और एक कन्या हुए। जिनका नाम द्रुपद ने धृष्टद्युम्न और द्रौपदी रखा। **संदर्भ :** महाभारत-आदि पर्व-67/157-166

(2) द्रौपदी को पांच पति प्राप्ति का वर

द्रौपदी अपने पूर्वजन्म में ऋषि कन्या थी। उसने अच्छे पति की प्राप्ति के लिए शंकर की आराधना की, जिससे शंकर ने प्रसन्न होकर पांच पति प्राप्ति होने का वर दिया।

'ब्रह्मवैवर्त पुराण' के अनुसार वियोगिनी सीता ने शंकर को प्रसन्न कर पांच बार पति समागम मांगा। शंकर ने अगले जन्म में पांच पति होने का वर दे डाला। **संदर्भ :** महाभारत-आदि पर्व, अ० 168/45-51; ब्रह्मवैवर्त, अ० 116 (श्रीकृष्ण जन्म खण्ड)

(3) द्रौपदी-स्वयंवर

राजा द्रुपद की प्रतिज्ञा थी कि जो भी स्वयंवर में मत्स्यभेदन करेगा वही द्रौपदी का पति होगा। अर्जुन ने ऊपर स्तम्भ पर लटकी मछली का नीचे तेल की कढ़ाई में देखकर भेदन कर द्रौपदी को पत्नी के रूप में प्राप्त किया। कुन्ती की आज्ञानुसार यह पांच पाण्डवों की पत्नी बनी। इस अवसर पर मत्स्यभेदन के लिए कर्ण भी तैयार हुआ था, लेकिन द्रौपदी ने उसे यह कहकर अस्वीकार कर दिया था कि मैं कुलहीन से विवाह नहीं करूंगी। **संदर्भ :** महाभारत—आदि पर्व, अ० 184-87; भागवत-1/15/7; अग्नि, अ० 13

(4) द्रौपदी का विराट की दासी बनना

पाण्डव अज्ञातवास के समय राजा विराट के राज्य में अपना रूप बदलकर रहे थे। द्रौपदी भी एक दासी बनकर रही और उसे कीचक द्वारा किये गये अपमान तक को भी सहन करना पड़ा। **संदर्भ :** महाभारत—विराट पर्व, अ० 1; अग्नि, अ० 13

(5) द्रौपदी का श्रीकृष्ण को युद्ध के लिए प्रेरित करना

जब श्रीकृष्ण दूत बनकर कौरवों के यहां जाने लगे तब द्रौपदी ने पांच पतियों की उपस्थित में दुर्योधन द्वारा किये गये अपमान का स्मरण दिलाकर कौरवों के विनाश करने के लिए प्रेरित किया। तब श्रीकृष्ण ने द्रौपदी को आश्वासन दिया कि शीघ्र ही कौरव नष्ट

होंगे और उसके पति राज्यलक्ष्मी को प्राप्त करेंगे। **संदर्भ :** महाभारत—उद्योग पर्व, अ० 82

(6) द्रौपदी का जयद्रथ द्वारा अपमान/हरण

एक बार सिन्धु का राजा और दुर्योधन का बहनोई जयद्रथ काम्यक वन में, जहां पाण्डव अपने वनवास के समय ठहरे हुए थे, गया। वहां द्रौपदी को देखकर मोहित हो गया और द्रौपदी से उसने अपनी पत्नी बनने के लिए कहा, जिस पर द्रौपदी ने जयद्रथ को फटकारा। तब वह द्रौपदी का बलपूर्वक हरण कर भागने लगा। जब पाण्डवों को इसका पता लगा तो जयद्रथ का पीछा कर पकड़ लिया और भीम उसे बन्दी बनाकर ले आये। भीम ने युधिष्ठिर के कहने से जयद्रथ को छोड़ दिया। **संदर्भ :** महाभारत—वन पर्व, अ० 264-72

(7) द्रौपदी द्वारा पाण्डवों के शत्रु विषयक क्रोध को उभारना

एक दिन सायंकाल के समय पाण्डव द्रौपदी के साथ बैठकर दुख और शोक में मग्न हो कुछ बातचीत करने लगे। तब द्रौपदी ने उनको अपने द्वारा उठाये गये कष्टों तथा सभा के मध्य में हुए अपने लज्जाहरण की ओर संकेत कर तथा पाण्डवों के बलशाली होने का वर्णन करके कौरवों से बदला लेने के लिए युद्ध करने हेतु प्रोत्साहित किया। **संदर्भ :** महाभारत—वन पर्व, अ० 27-35

धन्वन्तरि-अवतार

धन्वन्तरि समुद्र-मंथन के चौदह रत्नों में से एक थे। वे समुद्र से हाथ में अमृत-कलश लेकर निकले थे। इन्हें विष्णु का तेरहवां अवतार माना जाता है। वे आयुर्वेद के प्रवर्तक तथा आदिवैद्य स्वीकार किये जाते हैं। **संदर्भ :** विष्णु-1/9/98, 2/7/21; 4/8/8-11; भागवत-8/8/33-37; मत्स्य, अ० 251

धन्नाजाट की कथा

धन्ना जाट धुवान (दिल्ली राजपूताना) का निवासी था। बचपन से ही इसकी प्रवृत्ति ईश्वर की ओर थी। इसकी ईश्वर में एक ब्राह्मण की पूजा करते देखकर इतनी निष्ठा हुई कि वह बिना पूजा किये खाना तक नहीं खाता था। इसके सम्बन्ध में यह कथा प्रचलितहै कि इसको इसके माता-पिता ने खेत में बोने के लिए गेहूं दिये। उसके घर पर कुछ संत आ गये। वे सभी उसने संत महात्माओं की सेवा में समाप्त कर दिये। परन्तु माता-पिता के डर से उसने खेत में खाली हल चला दिया। ईश्वर ने धन्ना जाट की भक्ति पर प्रसन्न होकर बिना बीज के ही खेत में गेहूं उत्पन्न कर दिये। **संदर्भ :** लोक-कथा

धर्मराज द्वारा विश्वामित्र की परीक्षा

एक बार धर्मराज महर्षि वसिष्ठ का रूप धारण करके तपस्या में लगे हुए विश्वामित्र

के पास परीक्षा लेने गए। विश्वामित्र ने बड़ी उतावली के साथ उनके लिए उत्तम भोजन देने की इच्छा से यत्नपूर्वक चरुपाक बनाना प्रारम्भ किया, परन्तु ये उनकी प्रतीक्षा न कर सके और उन्होंने जब दूसरे तपस्वी मुनियों का दिया हुआ अन्न खा लिया, तब विश्वामित्र भी अत्यन्त उच्च भोजन लेकर उनकी सेवा में उपस्थिति हुए। उस समय यह कहकर कि उन्होंने भोजन कर लिया है, वे वहां से चले गए। तब विश्वामित्र उस भोजन पात्र को सिर पर रखकर सौ वर्ष तक मात्र वायु का सेवन कर खड़े रहे। धर्मराज वसिष्ठ का रूप धारण कर पुनः आए तथा विश्वामित्र ने तुरन्त भोजन पात्र उनके सामने रखा, जिससे धर्मराज अत्यन्त प्रसन्न हुए और विश्वामित्र को ब्रह्मर्षि कहकर सम्बोधित किया। **संदर्भ** : महाभारत—उद्योग पर्व, अ० 106

धान्यमाली अप्सरा की कथा

धान्यमाली नामक अप्सरा से एक मुनि ने रति की कामना की जिसका धान्यमाली ने विरोध किया। अपनी इच्छा पूरी न होती देख उस ऋषि ने उसे शाप दिया कि वह मकरी बन जाए तथा उसे उसकी मुक्ति का उपाय बताया कि हनुमान के द्वारा उसका उद्धार होगा। राम-रावण युद्ध में जब लक्ष्मण को मेघनाद द्वारा शक्ति मारी गई उस समय हनुमान संजीवनी-बूटी लेने के लिए द्रोणाचल पर्वत पर गए। उस समय मार्ग में रावण द्वारा भेजे गये कालनेमि दैत्य ने इन्हें साधु बनकर छला। कालनेमि के आश्रम के समीप स्थित तालाब में जब हनुमान स्नान करने के लिए गए तो धान्यमाली ने, जो मकरी के रूप में थी, हनुमान का पैर पकड़ लिया, जिसे उन्होंने मुंह चीरकर मार दिया। हनुमान द्वारा मरकर मकरी दिव्यरूप को प्राप्त हुई।

हनुमान-नाटक में मकरी का पूर्व नाम धान्यमाली के स्थान पर कंधकाली मिलता है तथा यहां मात्र यह संकेत मिलता है कि हनुमान ने मार्ग में मायारूप महर्षि तथा मकरी को मारा था। **संदर्भ** : अध्यात्म रामायण-युद्ध काण्ड, अ० 7, 21-33; आनन्द रामायण-सार खण्ड-अध्याय 11, 55-57; हनुमान-नाटक-अंक 13, श्लोक 32

धुन्धुकारी को प्रेत योनि की प्राप्ति

पिता के वन को चले जाने पर एक दिन धुन्धुकारी ने अपनी माता को बहुत पीटा और उससे बार-बार धन के सम्बन्ध में पूछा। इससे दुखी होकर वह कुएं में गिरकर मर गई। अब धुन्धुकारी पांच वेश्याओं के साथ रहने लगा तथा उनके लिए चोरी करके इधर-उधर से धन लाने लगा। एक दिन वे कुलटाएं इसको रस्सियों से बांधकर तथा मुंह पर अंगारे रखकर इसे मारकर इसका सब धन लेकर चली गयीं। तब यह अपने कुकृत्यों से प्रेत बन गया। एक दिन जब गोकर्ण घूमता हुआ अपने घर गया तब यह नाना रूप बनाकर गोकर्ण के सम्मुख आया। तब गोकर्ण ने इसके सम्बन्ध में पूछा। इसने तब अपनी प्रेतयोनि की बात बताई। गोकर्ण ने सूर्य से इसकी मुक्ति का उपाय पूछकर एक सप्ताह तक श्रीमद्भागवत की कथा सुनाकर इसके पाप नष्ट किए और इसने प्रेतयोनि

से मुक्ति पायी। **संदर्भ** : पद्मपुराण—उत्तर खण्ड, 92-93; भागवत-5

ध्रुव की भक्ति

ध्रुव राजा उत्तानपाद का पुत्र था। उत्तानपाद के दो पत्नियां थीं। सुरुचि और सुनीति। एक समय ध्रुव अपने पिता की गोद में जाकर बैठ गया। तब इसकी विमाता ने उपेक्षा से इसे गोद से उतार दिया। इससे अपमानित हो ध्रुव ने पांच वर्ष की अवस्था में नारद का आशीर्वाद प्राप्त कर तप किया तथा विष्णु को प्रसन्न कर समस्त लोकों, ग्रहों और नक्षत्रों के ऊपर अटल रहने का वरदान प्राप्त किया।

'विष्णु-पुराण' के अनुसार अपनी माता सुनीति से प्रोत्साहित होकर जब ध्रुव घर से निकला तो उसकी भेंट सप्तर्षियों से होती है तथा उनकी सलाह से यमुना किनारे मधु नामक स्थान पर विष्णु भगवान ने प्रकट होकर ध्रुव को उसके पूर्वजन्म का वृत्तान्त सुनाया और सब लोकों और ग्रहों के ऊपर अटल भाव से रहने और माता सुनीति को तारा के रूप में उसके समीप रहने का वरदान दिया।

'भविष्य पुराण, के अनुसार, उत्तानपाद के रुचि और श्रुघ्नी नामक दो रानियां थीं। ध्रुव श्रुघ्नी का पुत्र था। श्रुघ्नी ने स्वयं पति-सेवा करने की बात कहकर ध्रुव रुचि को पालने के लिए दे दिया। एक बार ईर्ष्यावश रुचि ने इस बालक का वध कर खण्ड-खण्ड कर अग्नि में पका डाला तथा उसने जैसे ही मांस राजा को परोसा तो बालक जी उठा। तब राजा को बहुत ही आश्चर्य हुआ। तब श्रुघ्नी ने इसका कारण बताया कि यह गोवत्स द्वादशी व्रत का फल है। इस व्रत को करने वाले को कभी भी पुत्र वियोग नहीं होता। तब इस व्रत को रुचि ने भी करना प्रारम्भ किया और अन्त में सभी ध्रुव-लोक गये।

'लिंग पुराण' के अनुसार, ध्रुव जब वन को जाता है तो रास्ते में उसे विश्वामित्र मिलते हैं जो ध्रुव को वासदेव-मंत्र का उपदेश देते हैं। **संदर्भ** : विष्णु पुराण-1/11-12, 2/7/21, 4/8/8-11; भागवत-2/7/8, 4/8-9; अग्नि पुराण, अ० 18; भविष्य पुराण—उत्तरार्द्ध, अ० 6!; लिंग पुराण—पूर्वार्द्ध, अ० 62; स्कन्द पुराण—काशीखण्ड (पूर्वार्द्ध), अ० 19-21

धृतराष्ट्र का लोहमयी प्रतिमा को भंग करना

पुत्र-वध से पीड़ित हुए धृतराष्ट्र के पास जब पाण्डव गये, तब वे युधिष्ठिर को हृदय से लगाकर भीमसेन को खोजने लगे। उस समय उनके मन में दुर्भावना जाग उठी। भीमसेन के प्रति उनके अशुभ संकल्प को जानकर श्रीकृष्ण ने झटका देकर हटा दिया और दोनों हाथों से उनकी लोहमयी मूर्ति धृतराष्ट्र के सामने कर दी। धृतराष्ट्र ने उस लोहमयी भीम को असली भीम समझकर उसे दोनों बाहों में दबाकर तोड़ डाला। **संदर्भ** : महाभारत—स्त्री पर्व, अ० 12

नन्दा धेनु की कथा

एक बार राजा प्रभंजन ने एक हिरणी, जब अपने बच्चे को दूध पिला रही थी, बाण मारकर वध कर दिया, जिससे उस हिरणी ने राजा प्रभंजन को यह शाप दे दिया कि वह सिंह बनकर जीवों को खाता रहेगा। इस प्रकार वह राजा सौ वर्ष तक जंगल के जीवों को मारकर अपना घृणित जीवन व्यतीत कर रहा था। तभी उस जंगल के समीप कुछ ग्वालों ने अपनी बहुत-सी गायों का पड़ाव डाला और उनमें से नन्दा नामक गाय भटककर उस सिंह के पास पहुंच गयी। जब वह सिंह उस गाय को मारकर खाने के लिए उद्यत हुआ तभी नन्दा गाय ने उससे प्रार्थना की कि वह उसे कुछ घण्टे की छुट्टी दे दे, जिससे वह अपने छोटे बच्चे को देख आये और पालन-पोषण के लिए उसे अन्य गायों के सुपुर्द कर आये। वह सिंह को शपथ देकर वापस अपने बच्चे के पास आई तथा वन की सारी कहानी अपनी सखियों को बताई। यद्यपि उसकी सखियों ने उसे काफी मना किया तथा जाने से रोका, परन्तु वह अपने दिये हुए वचनों का पालन करने के लिए सिंह के पास गई। नन्दा को अपनी प्रतिज्ञानुसार वापस आया देखकर तथा उसके सत्य से प्रभावित होकर उस हिंसक जन्तु ने नन्दा गाय को अभय प्रदान किया तथा भविष्य में किसी भी प्राणी का अहित न करने का निश्चय किया। **संदर्भ** : पद्मपुराण-सृष्टि-खण्ड

नग्नजीत की कथा

कौशल नरेश नग्नजीत ने प्रण किया था कि जो भी व्यक्ति उसके सात बैलों को जीत लेगा उसी व्यक्ति के साथ वह अपनी पुत्री नाग्नजीति का विवाह कर देंगे। श्रीकृष्ण ने उन बैलों को नाथकर नाग्नजीति से विवाह किया। **सदर्भ** : भागवत-3/3/4, 10/58/45

नाचिकेता-यम-संवाद

नाचिकेता वाजश्रवा के पिता विश्वजित यज्ञ के सम्पादन के उपरान्त ब्राह्मणों को गोदान कर रहे थे। वे गायें, जो गोदान में दी जा रही थीं, दन्तविहीन थीं, साथ ही दूध देने वाली भी नहीं थीं। नाचिकेता आस्तिक्य बुद्धि के आवेग में सोचने लगा जो जल पी चुकी हैं, जिनका घास खाना समाप्त हो चुका है, जिनका दूध दुह लिया गया है, जिनमें प्रजनन-शक्ति का भी अभाव हो गया है, उन गौओं का दान करने से वह आनन्दशून्य लोकदाता को जाता है। तब नाचिकेता अपने पिता से बोला—आप मुझे किसको देंगे। तब पिता ने उससे कहा कि 'मैं तुझे मृत्यु को दूंगा।' पिता की आज्ञा पालन करने के लिए नाचिकेता ने अपने घर से बाहर निकलकर मृत्यु के निवास-स्थान के लिए प्रस्थान किया। मृत्यु के देवता यम उस समय अपने घर पर नहीं थे। वे तीन दिन में घर पर लौटे। नाचिकेता तीन दिनों तक उनकी प्रतीक्षा में खड़ा रहा। बाहर से लौटने पर ब्राह्मण अतिथि को अन्न-जल आदि से रहित देखकर यमराज को ग्लानि हुई और उन्होंने तीन दिन तक निराहार

रखने के दण्ड का परिमार्जन करने के लिए नाचिकेता से तीन वर मांगने के लिए कहा । तब नाचिकेता ने यमराज से तीन वर प्राप्त किये ।

'महाभारत' के अनुसार उद्दालक ने अपने पुत्र नाचिकेत से यज्ञ के लिए समिधा, कुशा फूल, जल का घड़ा और प्रचुर भोजन सामग्री नदी तट से लाने के लिए कहा। नदी उक्त सामग्री के वहां से ले जाने के कारण नाचिकेता खाली हाथ लौट आया, जिससे उद्दालक ने रुष्ट होकर यमराज को देखने का शाप दे दिया । शापवश शीघ्र ही नाचिकेता की मृत्यु ही गई। यह देखकर उद्दालक विलाप करने लगे और नाचिकेता जिन्दा हो गया और उसने यमराज से साक्षात्कार होने तथा यमलोक का सम्पूर्ण वृत्तान्त अपने पिता को सुनाया। **संदर्भ** : कठोपनिषद् 1/1/4-25; महाभारत-अनुशासन पर्व, अध्याय 71/3; वराह-पुराण, अ० 193

नन्दन कानन में पांच वृक्ष होना

नन्दन कानन देवराज इन्द्र का उपवन है। यह स्वर्ग में है और सब स्थानों से सुन्दर माना जाता है । भोगदण्ड पूरा हो जाने पर मनुष्यों को यहीं भेज दिया जाता है। वैसे यह पारिजात वृक्ष के लिए प्रसिद्ध है। इस उपवन में कल्पवृक्ष भी है, जो व्यक्ति की सभी कामनाओं को पूर्ण करता है। **संदर्भ** : भागवत-3/23/40;वायु-36-11, 46, 4/47/3, 69/16, 91/6, 93/69; मत्स्य 38/18

नमुचि का वध

नमुचि इन्द्र का शत्रु था । यह कश्यप और दनु का पुत्र था । एक बार यह सूर्य किरण में प्रविष्ट हुआ तथा इन्द्र से मित्रता की। उस समय इन्द्र ने इससे बहुत सारे विषयों पर चर्चा की । इसकी वाक्पटुता एवं विद्वता के कारण प्रसन्न होकर इन्द्र ने इसे वर प्रदान किया कि तुम आद्र अथवा शुष्क पदार्थ से दिन में अथवा रात में नहीं मारे जा सकते। परन्तु बाद में इन्द्र ने एक दिन जिस समय कुहरा गिर रहा था, समुद्र के फेन से नमुचि का सिरच्छेद करा दिया। तब इन्द्र का पीछा उसके केवल सिर ने किया। इन्द्र ने नमुचि के वध के घोर पाप की मुक्ति का ब्रह्मा से उपाय पूछा और ब्रह्मदेव के कथानुसार सरस्वती—अरुण संगम पर स्नान के लिए आया । इन्द्र के पीछे-पीछे नमुचि का सिर उस संगम में आ गिरा। उस स्थान पर गिरने के कारण नमुचि को सद्गति मिली एवं इच्छित अक्षय लोक उसे प्राप्त हुआ ।

'पद्मपुराण' के अनुसार, नमुचि हिरण्याक्ष का सेनापति था। इन्द्र को मूर्च्छित कर इसने ऐरावत से गिराया और माया से अनेक जन्तु उत्पन्न किए । इन्द्र ने उन जन्तुओं को नष्ट कर चक्र से उसका वध कर दिया ।

'पद्मपुराण' के एक स्थल के अनुसार', नमुचि ने इन्द्र पर पांच बाण छोड़े, किन्तु इन्द्र ने उन्हें बीच में ही तोड़ दिया। बाद में अपनी माया से इसने अंधकार उत्पन्न किया। इन्द्र ने इस अंधकार को भी दूर कर दिया। बाद में इसने इन्द्र के समीप आकर ऐरावत

हाथी के दांत पकड़े और इन्द्र को नीचे गिरा दिया। परन्तु उसी समय इन्द्र ने अपने खड्ग से उसका सिर काट दिया।

'वामन-पुराण' के अनुसार, नमुचि शुम्भ-निशुम्भ का तीसरा भाई था। इसके कश्यप की दनु नामक स्त्री से तीन पुत्र उत्पन्न हुए थे—शुम्भ, निशुम्भ और नमुचि।

'भागवत' के अनुसार, नमुचि वृत्र का अनुयायी था। स्वर्भानु की कन्या सुप्रभा इसकी भार्या थी। **संदर्भ** : महाभारत-शल्य पर्व, 42/29-32; ब्रह्म, अ० 124; पद्मपुराण-सृष्टि खण्ड, अ० 65-69; भागवत-6/10/19, 6/6/32; वामन-पुराण, अ० 52

नल-दमयन्ती का पूर्वजन्म का वृत्तान्त

नल पूर्वजन्म में आहुक नाम का भील था। दमयन्ती उसकी पत्नी आहुआ थी। वह दोनों स्त्री-पुरुष शिव के पास भक्त और अतिथि-सेवक थे। एक बार भगवान शंकर ने उनकी परीक्षा लेने का विचार किया और एक यति का रूप धारण कर आहुक के दरवाजे पर रात भर रहने का स्थान मांगा। आहुक के बहुत थोड़ा स्थान था, उसमें अतिथि को नहीं ठहराया जा सकता था, परन्तु आहुक ने यति और अपनी पत्नी को घर में रखकर स्वयं बाहर बैठा रहा। रात बीतने पर हिंसक पशुओं ने उसको मार डाला। उसके साथ उसकी पत्नी भी सती हो गई। तब भगवान शंकर प्रकट हुए और आहुआ को वरदान दिया कि अगले जन्म में तुम्हारा पति निषध देश में राजा वीरसेन का पुत्र नल होगा और तुम्हारा जन्म विदर्भ देश के राजा भीमसेन की पुत्री दमयन्ती के रूप में होगा। **संदर्भ** : शिव पुराण-शत रुद्र संहिता, अ० 38

नल-दमयन्ती की कथा

नल निषध देश का राजा तथा वीरसेन का पुत्र था। यह अश्व-चालन विद्या में निपुण और द्यूत क्रीड़ा का प्रेमी था। विदर्भ देश के राजा भीम की पुत्री दमयन्ती ने स्वयंवर में देवताओं की कृपा से नल का वरण किया था। इसके एक पुत्र व पुत्री पैदा हुए, जिनका नाम इन्द्रसेन और इन्द्रसेना था। नल को उसके भाई पुष्कर ने उसे जुए में हराकर सब कुछ ले लिया। वह लज्जित होकर राजभवन से निकल पड़ा। दमयन्ती ने भी पति का अनुसरण किया। नल के शरीर पर उस समय एक अधोवस्त्र तथा एक उत्तरीय था और दमयन्ती के शरीर पर मात्र एक धोती। कई दिनों से भूखे-प्यासे रहने के बाद नल ने एक दिन सुनहरे पंखोंवाले कुछ पक्षी देखे। भूख मिटाने के लिए अपने अधोवस्त्र से उन पक्षियों को पकड़ने का प्रयास किया, परन्तु वे पक्षी नल का अधोवस्त्र लेकर ही उड़ गए। तब नल नंगा ही रह गया। एक रात थके-मादे वे वन-प्रान्तर में स्थित एक धर्मशाला में पहुंचे, वहां दमयन्ती जल्दी सो गई। दमयन्ती द्वारा भूख-प्यास का कष्ट सहते फिरना नल को असह्य था, अतः उसने धर्मशाला में तलवार से दमयन्ती की आधी साड़ी काटकर उसने अपनी लज्जा ढकी और दमयन्ती को सुप्तावस्था में छोड़कर चल पड़ा।

अनेक स्थानों पर कष्ट उठाने के बाद दमयन्ती कुण्डिकपुर पहुंच गई। उधर नल ने भी अनेक कष्ट उठाए और बाहुक के रूप में राजा ऋतुपर्ण के यहां अश्वशाला का अध्यक्ष होकर अपना समय व्यतीत किया। अन्त में नल ने पुष्कर को जुए में हराकर अपना सब कुछ पुनः प्राप्त किया और न्यायपूर्वक शासन किया। **सन्दर्भ** : महाभारत—वन-पर्व, अ० 52-79; बृहत्कथा-छठी तरंग, अलंकारवती लम्बक

नर-नारायण की कथा

पुराणों में नर-नारायण को विष्णु का चौथा अवतार बताया गया है। विष्णु ने इस अवतार में धर्म की मुक्ति नाम वाली स्त्री से नर-नारायण होकर बुद्धि शान्त करने वाला कठिन तप किया। ये धर्म और अहिंसा के दो पुत्र थे तथा ऋषि थे। इन दोनों का निवास स्थान गंधमादन था। एक बार इनसे शंकर का युद्ध हुआ तब ब्रह्मा ने शंकर को आकर समझाया कि ये साक्षात् विष्णु हैं, अतः इनसे युद्ध मत करो तब शंकर ने प्रार्थना कर इन्हें प्रसन्न किया था।

एक बार इन्होंने घोर तपस्या की। इनकी कठिन तपस्या से डरकर इन्द्र ने इनकी तपस्या भंग करने के लिए क्रोध, लोभ और काम की सृष्टि की, परन्तु इन्द्र इनकी तपस्या भंग न कर पाये। तब इन्द्र कामदेव के पास गये। तब कामदेव ने इनकी तपस्या भंग करने के लिए अप्सराएं भेजीं, परंतु इन्होंने इन्द्र को लज्जित करने के लिए अपनी जांघ से उर्वशी नामक एक अप्सरा उत्पन्न की। जिसके सौन्दर्य को देखकर सभी अप्सराएं लज्जित हो गयीं और वापस स्वर्ग को चली गयीं।

'भागवत' के अनुसार, सभी अप्सराओं ने नर और नारायण से यह वर मांगा कि हम आपकी पत्नी बनें। इस पर नारायण ने इनको द्वापर युग तक प्रतीक्षा करने के लिए कहा और द्वापर में नारायण ने श्रीकृष्ण के रूप में और नर ने अर्जुन के रूप में अवतार लिया। **संदर्भ** : महाभारत-शांति पर्व, 345/110-117; विष्णु-5/24, 37/34; भागवत-1/3/9, 2/7/6, 4/1/59; वामन पुराण; देवी भागवत-11/4/6, 16/7/18; विक्रमोवर्शीय-कालिदास

राजा नहुष की कथा

वैदिक साहित्य में नहुष का उल्लेख पुरूरवा के पौत्र के रूप में हुआ है, परन्तु उसके सम्बन्ध में कथा पुराण काल से मिलती है।

छल से त्रिशिरा और वृत्रासुर का वध करने के कारण इन्द्र को ब्रह्महत्या का पाप लग गया, जिससे इन्द्र को अपने पद से हटाना पड़ा और वे भयभीत हो जल में जाकर कमलनाल में छिप गए। तब देवताओं और ऋषियों ने नहुष को अनेक वरदान देकर इन्द्रपद पर बैठा दिया। इन्द्रपद प्राप्त कर गर्व से चूर होकर उसने इन्द्राणी शची को अपनी पत्नी बनाना चाहा। तब इन्द्राणी ने उसका गर्व तोड़ने के लिए उसे सप्तर्षियों की पालकी में बैठकर आने के लिए कहा। नहुष सप्तर्षियों की पालकी में बैठकर इन्द्राणी से मिलने के

लिए चल दिया और पालकी में लगे हुए अगस्त्य के पद प्रहार किया, जिससे अगस्य ने उसे शाप दे दिया कि वह दस हजार वर्ष तक अजगर के रूप में पृथ्वी पर पड़ा रहे और वह अगस्त्य के शाप से पृथ्वी पर गिरकर सांप हो गया। इससे सबको बड़ी प्रसन्नता हुई और इन्द्र ने पुन: स्वर्ग का राज्य संभाल लिया।

'महाभारत' के उद्योग पर्व की कथा के अनुसार, जब नहुष स्वर्ग पर अभिषिक्त हुआ उस समय उसे ब्रह्मा ने यह वर दिया कि जिस पर उसकी दृष्टि पड़ेगी वह उसका वशवर्ती हो जाएगा। ब्रह्मा के वर से शक्ति पाकर नहुष निरंकुश हो गया। जिस समय इन्द्राणी से मिलने के लिए सप्तर्षियों की पालकी में नहुष जा रहा था, अगस्त्य को कोड़े व लात मारने पर पहले से ही अगस्त्य की जटाओं में छिपे भृगु ने उसे सर्प होकर स्वर्ग से भ्रष्ट होने का शाप दिया। नहुष ने भृगु की प्रार्थना की तो उन्होंने युधिष्ठिर द्वारा शाप-मोचन का वर दिया।

'देवी भागवत' के अनुसार, ब्रह्महत्या से जब इन्द्र पदच्युत हो गया तब नहुष को इन्द्र-पद पर बृहस्पति ने आसीन किया तथा नहुष ने जब इन्द्राणी की याचना की और इन्द्राणी को बृहस्पति ने शरण दी तो वह बृहस्पति को मारने को तैयार हो गया। तब देवताओं ने इन्द्राणी को नहुष तक पहुंचाने की प्रतिज्ञा की। लेकिन जगदम्बा की स्तुति कर उनकी कृपा से नहुष की बुद्धि को विमोहित कर सप्तर्षियों की पालकी में आने को तैयार किया तथा अगस्त्य के शाप से वह सर्प बन गया।

'ब्रह्मवैवर्त' के अनुसार, जब नहुष ने इन्द्राणी से रति की कामना की तब इन्द्राणी ने नहुष को राजधर्म का उपदेश दिया तथा स्वयं को देवयोनि में तथा नहुष के मनुष्य-योनि में उत्पन्न होने के कारण अपने पुत्र के समान बताया, लेकिन कामुक राजा की समझ में कुछ न आया उसने धन आदि का लोभ देकर तथा इन्द्राणी के चरणों में गिरकर रतिदान मांगा। तब इन्द्राणी ने उससे सप्तर्षियों की पालकी पर आने को कहा और नहुष दुर्वासा के शाप से अजगर बन गया। **संदर्भ** : ऋग्वेद-9/91/2; महाभारत-उद्योग पर्व, अ० 11-17, वन पर्व, अ० 178-81, अनुशासन पर्व, अ० 100; भागवत-6/13; ब्रह्मवैवर्त-श्रीकृष्ण जन्म खण्ड, अ० 59-60; देवी भागवत-6/7-9; विष्णुधर्मोत्तर-1/24

नागों का पाताल लोक में वास

कश्यप मुनि की कद्रू से उत्पन्न नाग-संतानों के विष से मनुष्यों का नाश होने लगा तब प्रजा व्याकुल हो ब्रह्मा की शरण में गई। ब्रह्मा ने वासुकि आदि बड़े-बड़े सर्पों को बुलाकर शाप दिया कि वैवस्वत मन्वन्तर में सोमवंशी राजा जनमेजय के सर्प-यज्ञ में तुम्हारा विनाश होगा और गरुड़ तुम्हारा भक्षण करेंगे। ब्रह्मा ने उनसे यह भी कहा कि तुम्हारे रहने के लिए मैंने सुतल, वितल और हर्य्यंस (तलातल) का राज्य दे दिया है। पाताल तक तुम लोगों का ही स्थान रहेगा। ब्रह्माजी के इन वचनों को सुनकर सारे सर्प रसातल को चले गए। **संदर्भ** : पद्म-पुराण-सृष्टि खण्ड, अ० 31; हरिवंश-भविष्य पर्व,

72/53-56-1/2

नाभाग का चरित्र

नाभाग मनुपुत्र नभग के पुत्र थे। ये दीर्घकाल तक ब्रह्मचर्य का पालन करते हुए विद्याध्ययन करते रहे। लौटने पर इनके भाइयों ने इन्हें अपने पिता को ही दिया तथा सारी सम्पति को आपस में बांट लिया। पिता के परामर्श से इन्होंने आंगिरस गोत्र के ब्राह्मणों द्वारा किये जा रहे यज्ञ में वैश्वदेव सम्बन्धी दो सूक्त बतलाकर धन प्राप्त किया तथा रुद्र को प्रसन्न करने का सनातन ब्रह्मतत्त्व का ज्ञान प्राप्त किया। **संदर्भ** : भागवत-9/4

राजा नाभि का चरित्र

आग्नीध्र के पुत्र नाभि के कोई संतान न थी, इसलिए इन्होंने अपनी पत्नी मेरुदेवी सहित पुत्र की कामना से एकाग्रतापूर्वक भगवान यज्ञपुरुष का यजन किया। उसकी भक्ति से प्रसन्न हो भगवान् ने दर्शन दिए तथा नाभि का यज्ञ करा रहे ऋषियों ने बताया कि नाभि उसके समान पुत्र प्राप्ति के लिए आराधना कर रहा है। इस प्रकार महर्षियों द्वारा प्रसन्न किए जाने पर श्री भगवान महाराज नाभि का प्रिय करने के लिए उनकी महारानी मेरुदेवी के गर्भ से दिगम्बर संन्यासी और ऊर्ध्वरेता मुनियों का धर्म प्रकट करने के लिए शुद्ध सत्वमय विग्रह से प्रकट हुए। **संदर्भ** : भागवत-5/3

नारद की उत्पत्ति की कथा

नारद का हरिश्चन्द्र के पुरोहित तथा एक अध्यापक के रूप में उल्लेख वैदिक साहित्य में मिलता है, लेकिन इनके जन्म तथा अन्य सम्बन्धित कथाएं प्रायः पुराण-साहित्य में ही वर्णित हैं। 'हरिवंश पुराण' में उल्लेख है कि सृष्टि रचना के समय ब्रह्मा ने नारद को उत्पन्न किया था। उन्होंने दक्ष के पुत्रों को उपदेश देकर सृष्टि रचना से विरक्त कर दिया। अतः दक्ष के शाप से नारद नष्ट हो गए। उनका पुनर्जन्म दक्ष की पुत्री कश्यप की पत्नी से हुआ।

'भागवत' के अनुसार, नारद वेदवादी ब्राह्मणों की दासी के पुत्र थे तथा योगियों की सेवा में नियुक्त थे और उनके अनुग्रह से उनका हृदय शुद्ध हो गया। जब सांप के डसने से उनकी माता का देहांत हो गया तब उन्होंने एक नदी के किनारे पीपल के वृक्ष के नीचे अपनी समाधि लगाई। उनकी माता से प्रसन्न हो भगवान साक्षात् रूप में प्रकट हुए, पर नारद उनका दर्शन न कर सके। भगवान ने उन्हें आकाशवाणी से बताया कि वे इस जन्म में भगवान् का दर्शन नहीं कर पायेंगे, क्योंकि अभी उनकी आसक्ति नहीं मिट सकी है। तब नारद ने अपना जीवन भगवान् भजन में लगा दिया तथा अपने अगले जन्म में भगवान् के पार्षद बने एवं ब्रह्मा ने जब सृष्टि विस्तार किया तब ब्रह्मा का मानस-पुत्र बनकर पुनः पृथ्वी पर आए।

'ब्रह्मवैवर्त पुराण' में नारद के कई जन्मों का वर्णन किया गया है। यहां नारद के

कई जन्म तथा ब्रह्मा के मानस पुत्र होने तथा ब्रह्मा के शाप से भटकने का संकेत मिलता है।

सृष्टि-रचना करते हुए ब्रह्मा ने अन्य ऋषियों के साथ नारद को भी उत्पन्न किया। ब्रह्मा ने सभी को संतान उत्पन्न करने की आज्ञा दी, परन्तु नारद ने भक्ति को अमृत और विषय को विष बताकर ब्रह्मा की आज्ञा का पालन नहीं किया। तब ब्रह्मा ने उन्हें नाना जन्मों और भिन्न-भिन्न योनियों में जन्म लेने का शाप दिया। शाप के कारण नारद एक जन्म में गंधर्व-कुल में उपवर्हण के रूप में तथा दूसरे जन्म में द्रुमिल सूत के यहां तथा तीसरे जन्म में पुनः ब्रह्मा के पुत्र बने।

(1) उपवर्हण की कथा

उपवर्हण गंधर्वराज का पुत्र था, जिसको गंधर्वराज ने सौ दिव्य वर्षों तक शंकर की उपासना कर प्राप्त किया था। उपवर्हण को चित्ररथ की पचास कन्याएं ब्याही थीं। एक दिन ब्रह्मा की सभा में रंभा को देखकर इसका वीर्यपात हो गया, जिससे ब्रह्मा ने उसे शूद्र योनि में जन्म लेने का शाप दिया।

(2) द्रुमिल की कथा

कान्यकुब्ज देश में द्रुमिल नाम का एक शूद्र राजा था। उसके कोई पुत्र नहीं था। एक समय काश्यप नारद का मेनका अप्सरा को देखकर रेतःपात हो गया जिसे द्रुमिल की पत्नी कलावती पी गई, जिससे एक बालक ने जन्म लिया। यही नारद था। एक बार जहां नारद अपनी माता के साथ रह रहा था वहां चार मुनि आए तथा नारद को कृष्णमंत्र दिया। मुनियोंके जाने के बाद नारद ने उनके बताए मार्ग का अनुसरण और भगवत-भजन में जीवन यापन किया और कृष्णमंत्र का जाप करते हुए दासी-पुत्र का शरीर त्यागकर ब्रह्मा के शाप से छुटकारा पाकर अन्त में कृष्ण को प्राप्त किया।

'वराह-पुराण' के अनुसार, नारद पूर्वजन्म में अवन्तीपुरी में सारस्वत नामक ब्राह्मण था। उसने विषयों का त्यागकर विष्णु का तप किया। विष्णु ने उनसे कहा कि इस शरीर को त्यागकर दूसरे जन्म में ही मुझमें लय पा सकते हो। भगवान के वचनों का आदर कर सारस्वत ने भौतिक शरीर त्यागा और भगवान की भक्ति से ब्रह्मा के मानस-पुत्र के रूप में उत्पन्न हुआ। **संदर्भ** : ऐतेरेय ब्राह्मण-7/34; मैत्रयिणी-संहिता-1/5/8; भागवत-1/5-6; ब्रह्मवैवर्त-ब्रह्म खण्ड, अ० 8-21, 67-68; वराह पुराण, अ० 3; हरिवंश-हरिवंश पर्व; गर्ग संहिता-मथुरा खण्ड, अ० 21

नारद को दक्ष का शाप

महाभारत में मात्र इतना संकेत मिलता है कि नारद ने दक्ष के पुत्रों को सांख्यज्ञान की शिक्षा दी। इसी प्रकार का उल्लेख 'ब्रह्म' व 'पद्म पुराण' में मिलता है। परन्तु यहां दक्ष के शाप का कोई उल्लेख नहीं है।

दक्ष के शाप का सर्वप्रथम उल्लेख 'विष्णु पुराण' में मिलता है। यहां पर नारद दक्ष के एक हजार पुत्रों को जो दक्ष ने सृष्टि-निर्माण में लगाए थे अपना उपदेश देकर सृष्टि-

उत्पादन से विमुख कर दिया। तब दक्ष ने नारद को शाप दिया कि वे सदैव सृष्टि में एक स्थान से दूसरे स्थान तक भटकते रहें।

'शिव पुराण' के अनुसार, पुत्रों को सृष्टि-रचना से विमुख कर देने के कारण दक्ष ने नारद को कभी भी स्थिर न रहने तथा उनकी समीपता से सदा कलह उत्पन्न होने का शाप दिया।

'भागवत' में दक्ष द्वारा नारद को जन्म-जन्मान्तर तक भटकने का शाप दिया गया है।

'देवी भागवत' में नारद को दक्ष द्वारा नष्ट हो जाने, गर्भवासी बनने तथा अपना पुत्र बनने का शाप दिया, जिसमें नारद को वारिणी के गर्भ से दक्ष का पुत्र होना पड़ा। **संदर्भ** : महाभारत-आदिपर्व, अ० 8; ब्रह्म पुराण, अ० 3; पद्म पुराण-सृष्टि खण्ड, अ० 6; शिव-पुराण-रुद्र संहिता-सती खण्ड, अ० 13; उमा-संहिता, अ० 31; भागवत-6/5; ब्रह्माण्ड-पुराण-मध्यभाग उपोद्घातपाद, अ०2 हरिवंश पुराण (हरिवंश पर्व) अ०3; देवी भागवत-1/7

नारद का नलकूबर और मणिग्रीव को शाप

नलकूबर और मणिग्रीव कुवेर के पुत्र थे। एक समय ये दोनों मद्यपान कर स्त्रियों के साथ क्रीड़ा कर रहे थे। अतः नारद ने इन्हें वृक्ष होने का शाप दिया। जिससे ये वृन्दावन में यमलार्जुन नामक वृक्ष हुए और श्री कृष्ण ने इनका उद्धार किया। **संदर्भ** : भागवत-10/9/22-23; ब्रह्मवैवर्त अ० 14 (श्रीकृष्ण जन्म खण्ड)

नारद का लक्ष्मी को शाप

एक बार गंधर्वराज तुंबरू और नारद विष्णु के महल में गये। वहां पर लक्ष्मी की दासियों ने गानविद्या में निपुण तुंबरू का तो सत्कार किया, परन्तु नारद को द्वार पर ही रोक दिया। तब क्रोधित होकर नारद ने लक्ष्मी को राक्षसी के गर्भ से जन्म लेने का शाप दिया। **संदर्भ** : अद्‌भुत रामायण, सर्ग-6

नारद-मोह

एक बार नारद ने हिमालय पर तप करना प्रारम्भ किया। उनके उग्र तप से भयभीत होकर इन्द्र ने उनका तप भंग करने के लिए कामदेव को भेजा, लेकिन कामदेव का नारद पर कुछ प्रभाव नहीं पड़ा और नारद को कामजयी होने का गर्व हो गया तथा इस घटना को उन्होंने शिव और ब्रह्मा को बताने के बाद विष्णु को बताया। विष्णु ने नारद के इस गर्व को तोड़ने के लिए एक माया नगरी बनायी, जिसका राजा शीलनिधि अपनी कन्या श्रीमती का स्वयंवर करना चाहता था। जब नारद वहां पहुंचे तो श्रीमती को देख वे काम-मोहित हो गये और उससे शादी करने के लिए विष्णु से हरि-रूप मांगने के लिए गये। विष्णु ने उन्हें हरि (वानर) रूप दे दिया तथा विष्णु स्वयं स्वयंवर में

जाकर श्रीमती को ले गये। जब श्रीमती चली गई तब नारद का मोह टूटा। इस समय शिवगणों ने नारद को उनके वानर रूप का बोध कराया तथा उनका उपहास किया। तब नारद ने क्रोधित होकर उन दोनों शिवगणों को राक्षस होने का शाप दे दिया तथा विष्णुलोक में जाकर विष्णु को शाप दिया कि तुम्हें मनुष्य योनि धारण करनी पड़ेगी तथा तुम्हें प्रिया का दुख होगा और तुम्हारी सहायता वानर करेंगे।

'देवी भागवत' के अनुसार, एक बार नारद और पर्वत मुनि दोनों भ्रमण करते हुए स्वर्ग से पृथ्वी पर आए तथा उन्होंने यह तय किया कि वे आपस में कोई भी बात नहीं छुपायेंगे। ये दोनों मुनि पृथ्वी पर राजा संजय के यहां ठहरे जहां पर नारद उनकी पुत्री के रूप और गुणों के कारण उस पर मोहित हो गये। यह बात उन्होंने पर्वत को नहीं बताई तब पर्वत मुनि ने उन्हें वानरमुख होने का शाप दे दिया। नारद ने भी उन्हें स्वर्ग से भ्रष्ट होने का शाप दे दिया। बाद में पर्वत मुनि ने नारद के पास जाकर अपना शाप वापस ले लिया तथा तब नारद ने भी अपना शाप वापस लिया। इस प्रकार नारद पुन: रूपवान हो गये तथा पर्वत मुनि भी स्वर्ग को पहुंचे।

'लिंग पुराण' के अनुसार, नारद और पर्वत मुनि दोनों अम्बरीष राजा के वहां गये तथा अम्बरीष की पुत्री श्रीमती को देखकर दोनों आसक्त हो गये। इस पर दोनों ने अम्बरीष से श्रीमती से शादी करने की इच्छा व्यक्त की। अम्बरीष ने कहा कि कन्या अपनी इच्छा से जिसका वरण कर लेगी, मैं उसी से कन्या का विवाह कर दूंगा। तब दोनों एक-दूसरे से रूपवान बनने के लिए विष्णु के पास गये और दोनों ने एक-दूसरे का मुख वानर का कर देने की याचना की। तब विष्णु ने दोनों का वानर का मुख कर दिया तथा स्वयं वरण कर विष्णु श्रीमती को ले आये। तब नारद और पर्वत ऋषि इस सबका हेतु अम्बरीष को जानकर उसे शाप देने को उद्यत हुए तथा जैसे ही शाप का तम उत्पन्न हुआ वैसे ही विष्णु के सुदर्शन चक्र ने तम को भगा दिया और तम तथा चक्र दोनों ही नारद और पर्वत ऋषि के पीछे भागे। तब वे भगवान विष्णु की शरण में गये। भगवान विष्णु ने उन्हें अपना भक्त जान अभय दिया।

'अद्भुत रामायण' की कथा लगभग लिंग पुराण जैसी है यहां पर श्रीमती को विष्णु द्वारा ले जाने पर पर्वत और नारद ने विष्णु को यह शाप दे दिया कि तुमने श्रीमती का छल से हरण किया है, अतः तुम्हारी भार्या का भी कोई दैत्य छल से हरण करेगा और हमारी भांति तुम्हें भी दुख होगा। तुम्हें अम्बरीष के कुल में दशरथ के घर जन्म लेना होगा। **संदर्भ** : महाभारत-द्रोण पर्व, अ० 55; शिवपुराण-रुद्र-संहिता-सृष्टि खण्ड-3-4; भविष्य-उत्तरार्द्ध-अध्याय-3; ब्रह्मवैवर्त-श्रीकृष्ण जन्म खण्ड, अ० 36; लिंग-पुराण-उत्तरार्द्ध; देवी भागवत-6/26-27; अद्भुत-रामायण

नारद द्वारा कुंभकर्ण को भविष्य बतलाना

राम से युद्ध करने के लिए जब रावण ने कुंभकर्ण को जगाया और उसे युद्ध करने के लिए प्रेरित किया, तब कुंभकर्ण ने बताया कि राम साक्षात् विष्णु भगवान हैं, यह बात

उसे नारद ने बताई थी। कुंभकर्ण ने बताया कि एक समय नारद मुनि रात्रि के समय बदरीवन में पधारे थे। मैंने उस समय उनकी आवभगत की, तब उन्होंने मेरे आतिथ्य से प्रसन्न होकर बताया कि, तुम दोनों (रावण, कुंभकर्ण) ने देवताओं को बहुत दुख दिया था। इसलिए देवताओं ने विष्णु के पास जाकर तुम्हारे वध की याचना की। तुमने यह वर मांगा था कि तुम मनुष्य द्वारा ही मारे जाओ, अतः भगवान विष्णु राम के रूप में मनुष्य बनकर अवतरित हुए हैं। राम साक्षात ब्रह्म हैं। इसलिए आप राम के साथ वैर को त्याग दें। **संदर्भ** : अध्यात्म-युद्ध-काण्ड

निमि और वसिष्ठ का पारस्परिक शाप

निमि इक्ष्वाकु के पुत्र थे। उन्होंने एक बार यज्ञ किया और उस यज्ञ का होता वसिष्ठ को नियुक्त किया, पर वसिष्ठ यह कह वहां से इन्द्र के यज्ञ में चले गये कि उन्हें इन्द्र ने पहले से ही होता नियुक्त कर लिया है। तब निमि ने ऋषि गौतम को होता बनाकर अपना यज्ञ प्रारम्भ कर दिया। वसिष्ठ ने लौटकर जब देखा कि निमि ने यज्ञ प्रारंभ कर दिया है तो उसको अपना अपमान समझकर निमि को विदेह होने का शाप दे दिया। उधर निमि ने भी वसिष्ठ को इसी प्रकार देह-रहित होने का शाप दे दिया।

'मत्स्य पुराण' के अनुसार, निमि बहुत धर्मातमा थे तथा वे बहुत ही यज्ञ कराते थे। वसिष्ठ निमि के पुरोहित थे। एक बार यज्ञों से थककर वसिष्ठ ने कुछ दिन आराम करने की इच्छा की, परन्तु निमि ने यज्ञ करने की प्रार्थना की तथा वसिष्ठ द्वारा यज्ञ न कराने पर किसी अन्य की सहायता से यह यज्ञ करने के लिए जब निमि ने वसिष्ठ से कहा तो वसिष्ठ ने इसे अपमान समझकर निमि को देह-रहित होने का शाप दे दिया तथा निमि ने भी वसिष्ठ को इसी प्रकार का शाप दे दिया।

'मत्य-पुराण' के एक अन्य स्थल तथा 'पद्म-पुराण' के अनुसार एक बार राजा निमि स्त्रियों के साथ द्यूतक्रीड़ा में रत थे। उसी समय वहां वसिष्ठ पहुंचे। राजा ने स्त्रियों के मध्य में वसिष्ठ का यथायोग्य सत्कार नहीं किया। इसे अपना अपमान समझकर वसिष्ठ ने उन्हें विदेह होने का शाप दे दिया। **संदर्भ** : बाल्मीकि रामायण-उत्तराकाण्ड, अ० 56; विष्णु-पुराण-4/5; पद्म पुराण-पाताल खण्ड, अ० 5; भागवत-9/13; मत्स्य, अध्याय 61, 201; देवी भागवत-6/14-15; विष्णु-धर्मोत्तर, 1/117

निषाद की कथा

राजा वेन के कोई पुत्र नहीं था। ऋषियों ने वेन की जांघ का मंथन किया। जिससे नाटा तथा काला व्यक्ति पैदा हुआ। यह निषाद कहलाया और निषाद जाति का आदि पुरुष हुआ। ब्रह्म, अ० 141; विष्णु-1/13/33-37; भागवत-4/14/43-46

नृग की कथा

नृग इक्ष्वाकु के पुत्र और एक अत्यन्त दानी राजा थे। इन्होंने एक बार भूल से दान

दी गई गाय को पुनः एक ब्राह्मण के लिए दान में दे दिया, जिससे इन्हें उसने गिरगिट होने का शाप दे दिया। वे शाप के अनुसार गिरगिट हो गये और एक हजार वर्ष तक कुएं में पड़े रहे। बाद में श्रीकृष्ण ने इनका उद्धार किया। **संदर्भ** : बाल्मीकि-रामायण-उत्तरकाण्ड-सर्ग-53-54; महाभारत-सभा पर्व-8/8, वन-पर्व, 86/4-5, अनुशासन पर्व-अ० 70; ब्रह्म-पुराण-11; विष्णु-पुराण-3/1, 4/1; भागवत-10/64, 12/3; स्कन्द-पुराण-7/4/10; वराह-पुराण-47/1-24; गरुड़-पुराण-1/138; ब्रह्माण्ड-पुराण-2/38, 3/60, 74; गर्ग-संहिता-द्वारिका-खण्ड, अ० 15

नृसिंह अवतार : प्रह्लाद पर कृपा

हिरण्यकशिपु का वध करने के लिए विष्णु ने यह अवतार धारण किया था। इसका मुंह शेर का था तथा शेष शरीर मनुष्य का। इसलिए इन्हें नृसिंह कहा गया। इन्होंने हिरण्यकशिपु का वध नखों की सहायता से करके प्रह्लाद की रक्षा की।

ब्रह्मा के वर से अभय पाकर हिरण्यकशिपु ने त्रैलोक्य में अपना अधिकार स्थापित कर लिया तथा वह समस्त देव और दैत्यों का स्वामी बना। उसका पुत्र प्रह्लाद था। एक बार हिण्यकशिपु ने प्रह्लाद से गुरु द्वारा पढ़ाया पाठ सुनना चाहा तो प्रह्लाद ने उसके समक्ष विष्णु के गुणों का गान किया। जिससे क्रोधित होकर उसने प्रह्लाद के वध की आज्ञा दी। राजा की आज्ञा से दैत्यों ने प्रह्लाद को सर्पदंश, दिग्गजों के पैरों से कुचलवाने, अग्नि में जलाने की यातनाएं दीं, पर ईश्वर की कृपा से प्रह्लाद का कुछ न बिगड़ा। तदनन्तर पुरोहित ने कृत्या उत्पन्न करके उसे मारने का प्रयास किया, पर कृत्या ने पुरोहित को भस्म कर दिया। उसे महल से गिराया। शम्बरासुर ने माया से अनेक प्रयोग किये। फिर नागपाश में बांधकर समुद्र में डलवा दिया, लेकिन प्रह्लाद को प्रभु ने जल में दर्शन दे श्रेष्ठ भक्ति का वर दिया और प्रह्लाद अपने पिता के पास लौट आया। कुछ समय उपरान्त विष्णु ने नृसिंह रूप धारण कर हिरण्यकशिपु का वध कर दिया।

'विष्णु-पुराण' की मुख्य कथा भी इसी प्रकार है। यहां प्रह्लाद के अनेक यातनाओं को सहन कर पिता के पास लौट आना वर्णित है, लेकिन नृसिंह द्वारा हिरण्यकशिपु के वध का भी यहां संकेत मिलता है।

'पद्मपुराण' के अनुसार हिरण्यकशिपु ब्रह्मा से अवध्यता का वर प्राप्त कर समस्त लोकों का स्वामी बन गया। तब सभी देवता भयभीत होकर विष्णु की शरण में गये। उस समय विष्णु नृसिंह रूप धारण कर हिरण्यकशिपु की सभा में पहुंचे तथा उसकी सभी सेना को पराजित कर दैत्येन्द्र का नाखूनों से शरीर फाड़कर हत्या कर दी।

'पद्मपुराण' की एक अन्य कथा के अनुसार, सनकादि के शाप से विष्णु के द्वारपाल जय विजय दिति तथा कश्यप के हिरण्याक्ष और हिरण्यकशिपु नामक पुत्र बने। हिरण्याक्ष को विष्णु ने वराह रूप से मार दिया तब हिरण्यकशिपु शिव का तप कर अवध्यता का वर प्राप्त कर तीनों लोकों का स्वामी हो गया तथा अपने को सर्वोपरि मानने लगा।

प्रह्लाद द्वारा विष्णु का गुणगान करने पर उसने प्रह्लाद को अनेक यातनाएं दीं। अन्त में खम्भा फाड़कर नृसिंह ने हिरण्यकशिपु का वध कर दिया।

अन्य पुराणों में भी यह कथा वर्णित है, परन्तु यत्र-तत्र कतिपय परिवर्तन के साथ मूल आधार पूर्ववत ही है। **संदर्भ** : ब्रह्म, अ० 149; पद्म-पुराण-सृष्टि-खण्ड, अ० 42, उत्तरखण्ड, अ० 265; विष्णु-पुराण-अंश-17, अध्याय-17-20; वायु-पुराण, अ० 67, श्लोक 53; शिव-पुराण-रुद्र-संहिता-युद्ध-काण्ड-43; शतरुद्र-संहिता, अ० 10-12; भागवत-7/2-10; अग्नि-पुराण, अध्याय 4; लिंग-पुराण-पूर्वार्ध, अ० 95; कूर्म-पुराण-पूर्वार्ध, अ० 16; मत्स्य, अ० 161; हरिवंश-पुराण-आदिपर्व, अ० 41-47, भविष्य-पर्व, अ० 149; योगवासिष्ठ-उपशम प्रकरण

प्रमथ्यु की कथा

प्रमथ्यु यूनानी पुराण-पुरुष माना जाता है। यह सृष्टि के आरम्भ में पहली बार स्वर्ग से मनुष्यों के त्राण के लिए अग्नि लाया था। इसलिए दण्डस्वरूप इसे शिला से बंधवा दिया गया था और एक गृद्ध इसका हृदय खाते रहने के लिए नियत किया गया था। **संदर्भ** : हिन्दी साहित्य कोश, भाग 2

प्रयाग माहात्म्य

पुराणों में प्रयाग के माहात्म्य का विस्तार से वर्णन मिलता है। यह समस्त क्षेत्रों एवं तीर्थों में सर्वोत्तम माना जाता है। यह प्रजापति का क्षेत्र है। यहां स्नान करने वाले दिव्य लोक को जाते हैं। यहां मृत्यु होने पर दूसरा जन्म नहीं होता। **संदर्भ** : पद्म-पुराण-भूमिखण्ड, अ० 123; नारद-प्रथम-खण्ड, अ० 6; कूर्म-पुराण-प्रथम खण्ड, अ० 36; मत्स्य-पुराण, अ० 103-109

प्रलय की कथा

एक बार वैवस्वत मनु प्रातःकाल तर्पण कर रहे थे कि अर्घ्य देते समय उनकी अंजलि में एक मत्स्य आ गया। मत्स्य ने राजा मनु को सृष्टि-विनाश की सूचना दी और आश्वासन दिया कि आपत्ति के समय वह उन्हें सुरक्षित रूप से उत्तरगिरि पर पहुंचा देगा। मत्स्य ने मनु से यह भी प्रार्थना की कि जब तक वह बड़ा न हो तब तक उसकी रक्षा करें। मनु ने मत्स्य की रक्षा की और बड़ा होने पर उसे समुद्र में छोड़ दिया। इसी बीच पृथ्वी पर जल-प्रलय हुई और समस्त प्राणी उसमें बह गये। इसी समय महामत्स्य प्रकट हुआ और उसने मनु को नौका में बिठाकर उत्तरगिरि पर सुरक्षित पहुंचा दिया। इसी मनु ने कालान्तर में अपनी पत्नी इड़ा के साथ नयी मानव जाति का निर्माण किया।

'महाभारत' के अनुसार एक छोटी मछली मनु से प्रार्थना करती है कि उसकी बड़ी मछलियों से रक्षा करें। समय आने पर वह इसका प्रत्युपकार करेगी। बड़े होने पर मनु ने उसे समुद्र में छोड़ दिया। तब उसने मनु को प्रलयकाल की सूचना दी। प्रलय के अवसर

पर महामत्स्य ने प्रकट होकर सप्तर्षियों सहित मनु को हिमालय पर पहुंचाया और यह बताया कि 'मैं प्रजापति हूं और मैंने मत्स्य का रूप धारण कर तुम्हारी रक्षा की है। मेरी आज्ञा से तुम सृष्टि प्रारम्भ करो।'

'मत्स्य पुराण' के अनुसार मनु ने अपने पुत्र को राज्यभार सौंपकर कठोर तप किया और उन्होंने ब्रह्मा से वर मांगा कि प्रलयकाल के समय में ही इस चराचर जगत का यान बनूं। **संदर्भ** : शतपथ ब्राह्मण-13/5/4/9; महभारत-वनपर्व, अ० 187; मत्स्य-पुराण, अ० 1-2

परशुराम संबंधी कथाएं

(1) परशुराम अवतार

परशुराम जमदग्नि और रेणुका के पुत्र थे। ये नारायण के उग्रप्रभावपूर्ण अंशावतार माने जाते हैं। इन्होंने कार्त्तवीर्य के सहस्रबाहु भाले से काट दिये थे और सम्पूर्ण क्षत्रियों का नाश करने के बाद वन में तप करने के लिए चले गये थे। इन्होंने अश्वमेध यज्ञ किया और सारी पृथ्वी कश्यप को दान कर दी। **संदर्भ** : बालमीकि रामायण-1/76; ब्रह्म-213; विष्णु-4/7/36; भागवत-1/3/20, 3/7/23, 9/15, 10/40/20; अग्नि, अ० 3

(2) परशुराम का कर्ण को शाप

कर्ण ब्राह्मणपुत्र बनकर पशुराम के आश्रम से धनुर्विद्या प्राप्त करने गया। एक दिन परशुराम कर्ण की जांघ पर सिर रखकर सो रहे थे। उस समय कर्ण को अलर्क नामक कीड़े ने काट लिया, जिससे वह खून से लथपथ हो गया। कर्ण की शारीरिक सहनशीलता देखकर परशुराम को संदेह हो गया कि यह ब्राह्मणपुत्र नहीं है। इसलिए उन्होंने कर्ण को शाप दे दिया कि तुम्हारी प्राप्त विद्या असफल हो जाए। परिणामस्वरूप परशुराम से ग्रहण की गई विद्या कर्ण के काम न आई और वह अर्जुन के हाथों मारा गया। **संदर्भ** : महाभारत-शान्ति पर्व, अ० 3, द्रोण पर्व, अ० 42

(3) परशुराम का क्रोधी स्वभाव होने की कथा

गाधि ने अपनी पुत्री का विवाह भार्गववंशीय ऋचीक मुनि के साथ किया। सत्यवती के आग्रह पर ऋचीक ने दो चरु—एक सत्यवती के लिए व एक उसकी माता के लिए—तैयार किया। पर धोखे से सत्यवती अपनी मां के चरु को खा गई और उसकी मां सत्यवती के चरु को। परिणामस्वरूप दोनों ने गर्भ धारण किया। जब सत्यवती को यह पता चला कि इससे उसके क्रूरकर्मा क्षत्रिय स्वभाववाला पुत्र पैदा होगा तो उसने अपने पति ऋचीक से क्रूर स्वभाववाला पौत्र होने का वर मांग लिया। तदनुसार सत्यवती के जमदग्नि पैदा हुए और आगे चलकर क्षत्रिय स्वभाववाले परशुराम सत्यवती के पौत्र के रूप में उत्पन्न हुए तथा सत्यवती की माता के विश्वामित्र पैदा हुए।

'महाभारत' की वनपर्व की कथा के अनुसार सरस्वती को क्षत्रिय स्वभाव पौत्र प्राप्ति का वर उसके स्वसुर भृगु ने दिया। **संदर्भ** : महाभारत-वन पर्व, अ० 115, शान्ति पर्व,

49; ब्रह्मपुराण, अध्याय 10; विष्णु-4/7; वायु-पुराण, अ० 91

(4) परशुराम द्वारा अपनी माता का वध

एक बार परशुराम की माता रेणुका नदी में विहार करने गई। वहां उसने गन्धर्वराज चित्ररथ को अपनी पत्नी के साथ जलक्रीड़ा करते देखा और उसकी कामवासना उद्दीप्त हो गई। इस बात को परशुराम के पिता जमदग्नि ने योगबल से जान लिया और उसे ब्राह्मण अनुकूल तेज से विहीन पाकर उन्होंने अपने पुत्रों को उसके वध की आज्ञा दी। उनके चार पुत्र—समण्वान्, सुषेण, वसु, विस्वावसु—उसका वध करने में असमर्थ रहे। उनको जमदग्नि ने जड़ होने का शाप दे दिया। तब पिता ने परशुराम को अपनी माता के वध की आज्ञा दी। परशुराम ने रेणुका का सिर काट डाला। तब जमदग्नि प्रसन्न हुए और परशुराम को उनके माता व भाइयों को जीवित करने के वर के साथ-साथ युद्ध में अपार शक्तिशाली होने का वर भी दिया। **संदर्भ** : महाभारत-वनपर्व, अ० 116; भागवत-9/35; ब्रह्मवैवर्त-रेणुका माहात्म्य, अ० 35

(5) परशुराम और कार्तवीर्य सहस्त्रबाहु वैर (क्षत्रियों से वैर)

अथर्ववेद के अनुसार परशुराम की कार्तवीर्य से कामधेनु के कारण शत्रुता हो गई। परशुराम ने धेनु का हरण करने वाले कार्तवीर्य को उसके पुत्रों सहित मार दिया।

'पद्म-पुराण' के अनुसार एक बार शिकार खेलता हुआ कार्तवीर्य जमदग्नि के आश्रम पर आया। ऋषि जमदग्नि ने राजा का कामधेनु के माध्यम से ससैन्य सत्कार किया। इससे कार्तवीर्य बहुत चमत्कृत हुआ तथा मांगने पर जमदग्नि द्वारा गाय न देने पर उसे बलात् ले जाना चाहा तब ऋषि के कहने पर धेनु ने क्रोधित होकर समस्त सेना को नष्ट कर दिया तथा स्वयं स्वर्ग को चली गई।

'ब्रह्मवैवर्त पुराण के अनुसार, कार्तवीर्य ने गाय और बछड़े दोनों का अपहरण किया। जब परशुराम तपस्या से वापस आये तो उन्हें पता चला और उन्होंने कार्तवीर्य को पराजित किया और उसकी समस्त भुजाएं काट डालीं।

'ब्रह्माण्ड पुराण' के अनुसार, जब परशुराम को कार्तवीर्य द्वारा धेनु हरण की बात पता चली तो उन्होंने जमदग्नि के सामने उसके वध की प्रतिज्ञा की, पर जमदग्नि ने ऐसा करना ब्राह्मण-धर्म के प्रतिकूल बताया तथा परशुराम को उन्होंने ब्रह्मा और शिव के पास भेजा, जिन्होंने उनको कृष्ण-कवच की प्राप्ति के लिए कृष्ण के पास भेजा। अगस्त्य की आज्ञा से इन्होंने गंगा-तट पर आराधना की, जिससे प्रकट हो कृष्ण ने इन्हें अपना अंश रूप होने का वर दिया। अजेयता का वर प्राप्त कर तब परशुराम ने मत्स्य राजा, वृहद्बल, सोमदत्त आदि को भद्रकाली की कृपा से मार गिराया और कार्तवीर्य तथा उसके पुत्रों का वध कर दिया। जब परशुराम क्षत्रिय हत्या के दोष निवारण के लिए तप करने चले गये तो कार्तवीर्य के बचे पुत्रों ने जमदग्नि का वध कर दिया। इस पर इनकी माता ने 21 बार छाती पीटकर शोक किया, तब इन्होंने 21 बार पृथ्वी को क्षत्रियों से शून्य करने की प्रतिज्ञा की और क्षत्रियों का नाश किया। उन्होंने क्षत्रियों से पृथ्वी छीनकर कश्यप को दान में दे दी। कुछ क्षत्रिय बालक इधर-उधर जाकर बच गये थे।

उन्हें बुलाकर कश्यप ने पृथ्वी उन्हें बांट दी ।

'महाभारत' के अनुसार, जब परशुराम बछड़े के हरण के कारण कार्तवीर्य का वध करके लौटे तो जमदग्नि ने इसे बुरा बताया तथा पाप-शान्ति से लिए परशुराम को तीर्थाटन को भेज दिया तब कार्तवीर्य के पुत्रों ने जमदग्नि का वध कर दिया। इसपर परशुराम ने 21 बार पृथ्वी को क्षत्रियों से विहीन करने की प्रतिज्ञा की ।

'ब्रह्मवैवर्त पुराण' के अनुसार, जब कार्तवीर्य कपिला गाय को जमदग्नि के आश्रम से बलात ले जा रहा था तब गाय ने अपने शरीर से सेना उत्पन्न कर कार्तवीर्य की सेना से युद्ध किया । कई बार वह मूर्च्छित हुआ लेकिन जमदग्नि ने उसे मारा नहीं । उधर कार्तवीर्य ने अवसर मिलते ही जमदग्नि को शक्तिबाण छोड़कर मार दिया । उनकी पत्नी रेणुका उनके साथ सती हो गई । तब परशुराम ने शिव को प्रसन्न कर त्रैलोक्य विजयी कवच ले कार्तवीर्य से युद्ध किया तथा सेना सहित इसके पुत्रों व उसका वध कर दिया। **संदर्भ** : अथर्ववेद-5/18/10; महाभारत-वन पर्व, अ० 116-117, शान्तिपर्व, अ० 49, आश्वमेधिक पर्व, अ० 19;भागवत-91/5 पद्मपुराण-उत्तरखण्ड-241;ब्रह्मवैवर्त-गणपति खण्ड-24-40; मत्स्य, अ० 44; ब्रह्माण्ड-मध्य-उपो० 40-47; गणेश-पुराण-1/72-75

परशुराम द्वारा गणेश का दांत तोड़ना

परशुराम पृथ्वी को श्रमिकों से रहित कर कैलाश पर्वत पर गये। वहां वे शंकर के पास जा रहे थे । उस समय उन्हें गणेश ने अन्दर जाने से रोक दिया। परन्तु परशुराम अन्दर जाने के लिए हठ करने लगे । इस पर दोनों में वाद-विवाद हो गया । तब परशुराम ने गणेश पर फरसे से आक्रमण कर दिया और उनका एक दांत तोड़ दिया । यह देखकर पार्वती परशुराम को मारने के लिए तैयार हुई । तभी वहां पर वामन भगवान आये और शिव-पार्वती को समझाया । **संदर्भ** : ब्रह्मवैवर्त-गणपति खण्ड, अ० 43-44

परशुराम द्वारा सिद्धि की प्राप्ति

परशुराम का जब क्षत्रियों से वैर हो गया और उन्होंने क्षत्रियों का बार-बार वध करना प्रारम्भ कर दिया तो परशुराम के पूर्वजों ने आकर परशुराम को समझाया कि क्षत्रियों का मारना उचित नहीं है । उन्होंने परशुराम को तपस्या करने के लिए प्रेरित किया । तब परशुराम अपने पितरों के कहने से कठोर तपस्या में लग गये और उन्होंने परम दुर्लभ सिद्धि प्राप्त की । **संदर्भ** : महाभारत-आश्वमेधिक पर्व, अ० 30

पराशर-सत्यवती की कथा

सत्यवती राज नामक धीवर की कन्या थी, जिसे मत्स्यगंधा भी कहते थे। इसके शरीर से मछली की गंध आती थी । इस पर पराशर मुनि आसक्त हो गये तथा कुंवारी अवस्था में ही इससे रमण किया, जिससे व्यास पैदा हुए । पराशर की कृपा से इसके शरीर की दुर्गन्ध सुगंध में बदल गई । **संदर्भ** : महाभारत-आदि पर्व, अ० 63/70-83

पराशर द्वारा राक्षस यज्ञ

पराशर प्रसिद्ध ऋषि वसिष्ठ के पौत्र थे। इनके पिता को एक राक्षस ने खा लिया था। अतः इन्होंने एक राक्षस-यज्ञ किया। जिसमें अनेक राक्षस भस्म हो गये। अन्त में वसिष्ठ पुलस्त्य आदि मुनियों के कहने पर पराशर ने यह यज्ञ रोका। **संदर्भ** : महाभारत-आदि पर्व, अ० 180; विष्णु-1/1/11-20

परीक्षित पर अश्वत्थामा का शस्त्र-प्रयोग

अपने पिता की मृत्यु से दुखी हुए अश्वत्थामा ने प्रतिशोध की भावना से प्रेरित होकर उत्तरा के गर्भ पर ब्रह्मास्त्र का प्रहार कर दिया, जिससे परीक्षित की गर्भ में मृत्यु हो गई। उत्तरा के गर्भ से मृत बच्चे का जन्म हुआ। उसे देखकर कुन्ती श्रीकृष्ण को 'वासुदेव-दौड़ो-दौड़ो' पुकारती हुई महल से बाहर आई। वह श्रीकृष्ण के आगे विलाप करती हुई उसके कुल की रक्षा करने की प्रार्थना करने लगी। तदनन्तर सुभद्रा ने श्रीकृष्ण को देखकर रोते हुए उत्तरा के पुत्र को जीवित करने की प्रार्थना की। यह सुनकर श्रीकृष्ण ने अन्तःपुर में प्रवेश किया। उन्हें देखकर उत्तरा ने भी उनसे अपने पुत्र को जीवित करने का अनुरोध किया। उत्तरा का विलाप सुनकर श्रीकृष्ण ने अश्वत्थामा के चलाये हुए ब्रह्मास्त्र को शान्त कर दिया और उत्तरा के पुत्र को जीवित कर दिया। इसके पश्चात श्रीकृष्ण ने उस बच्चे का नामकरण किया और उसका नाम परीक्षित रखा। **संदर्भ** : महाभारत-आश्वमेधिक पर्व-66-69; विष्णु-4/20; भागवत-1/8/12-16; अग्नि-4

परीक्षित को तक्षक द्वारा डसा जाना

राजा परीक्षित एक दिन शिकार को गये। इन्होंने कलियुग के प्रभाव से शमीक ऋषि के गले में मरा हुआ सर्प डाल दिया। जिससे मुनि पुत्र शृंगी ऋषि ने इन्हें शाप दे दिया कि इनकी मृत्यु सर्प के काटने से होगी। शापवश इनको तक्षक ने डस लिया और परीक्षित का शरीर वहीं भस्मसात हो गया। **संदर्भ** : महाभारत-आदि पर्व, अ० 40-43; भागवत-1/18

परीक्षित का कलि को पकड़ना

राजा परीक्षित दिग्विजय के बहाने चारों ओर जाकर प्रजा को धर्मपालन करते देखकर प्रसन्न हुए। कुरुक्षेत्र में राजा ने गौ-वृषभ, जो क्रमशः पृथ्वी और धर्म थे, का संवाद सुना और उसी समय शूद्र (कलि) को उन्हें सताते देख उसे मारने को उद्यत हुए। वृषभ ने शूद्र का परिचय दिया तब राजा को ज्ञात हुआ कि यह कलि है। राजा ने उसे बहुत प्रताड़ित किया। राजा द्वारा भर्त्सित होने पर शूद्र ने अपने महान गुणों का वर्णन किया। तब शूद्र ने राजा से अपने रहने का स्थान पूछा। राजा ने द्यूत, सुरापान,

स्त्रीसंग, हिंसा एवं सुवर्ण नामक पांच स्थान उसे रहने के लिए बताये। यह सुनते ही कलि राजा के स्वर्ण मुकुट में प्रविष्ट हो गया। **संदर्भ** : महाभारत-1/40/10-43/36, 10/4/1, 18/26, 17/1/7-15; भागवत-1/17

पाण्डवों का जन्म

एक बार पाण्डु ने शिकार खेलते हुए मृगरूपधारी महर्षि को मैथुनकाल में मार डाला। जिससे ऋषि ने उन्हें यह शाप दे दिया कि यदि तुम स्त्री से सहवास करोगे तो तुम्हारी मृत्यु हो जायेगी। शापवश सन्तान न होने के कारण कुल-धर्म की रक्षा के लिए दुर्वासा द्वारा प्राप्त हुई विद्या का आश्रय लेकर कुन्ती और माद्री ने क्रमशः धर्म, वायु, इन्द्र तथा दोनों अश्विनीकुमारों का आवाहन किया और इनकी कृपा से कुन्ती के युधिष्ठिर, भीमसेन एवं अर्जुन और माद्री के नकुल और सहदेव उत्पन्न हुए। **संदर्भ** : महाभारत-आदि पर्व, अ० 119-24; अग्नि-पुराण, अ० 13

पाण्डवों का विराट राज्य में रहना

पाण्डव अपने वनवास के अज्ञातवास में विराट के यहां अपना रूप बदल कर रहे थे। युधिष्ठिर ने कंक का, भीम ने बल्लभ का, अर्जुन ने बृहन्नला, नकुल ने ग्रंथिका, सहदेव ने अरिष्टनेमि और द्रौपदी ने सैरन्ध्री का रूप धारण किया था।

राजा विराट ने कंक को अपना सखा बनाकर रखा। बल्लभ को रसोइया, बृहन्नला को अपनी पुत्री को नृत्यकला सिखाने, नकुल को अपूवों की देखभाल करने और सहदेव को गायों की रक्षा करने के लिए नियुक्त किया। द्रौपदी (सैरन्ध्री) रानी सुदेष्णा की दासी बनकर रही। **संदर्भ** : महाभारत-विराट-पर्व-1/12

पाण्डवों द्वारा इन्द्रप्रस्थ-निर्माण

पाण्डव पांचाल नगर से हस्तिनापुर आकर धृतराष्ट्र से मिले। धृतराष्ट्र पाण्डवों को राज्य देने को तैयार हो गये तथा उन्हें आधे राज्य पर अभिषिक्त कर खाण्डवप्रस्थ को पुनः बसाने के लिए कहा। उस समय श्रीकृष्ण पाण्डवों सहित खाण्डवप्रस्थ पहुंचे। वहां पर श्रीकृष्ण ने देवराज इन्द्र का चिन्तन किया। इन्द्र ने श्रीकृष्ण की अभिलाषा जानकर विश्वकर्मा से इन्द्रप्रस्थ नगर का निर्माण करने का आदेश दिया। तदनुसार विश्वकर्मा ने इन्द्रप्रस्थ नामक रमणीय नगर का निर्माण किया, जिसमें सभी पाण्डवों ने रहना प्रारम्भ कर दिया। पाण्डवों के इन्द्रप्रस्थ में बस जाने के पश्चात श्रीकृष्ण ने बलराम सहित युधिष्ठिर और कुन्ती से आज्ञा लेकर द्वारकापुरी को प्रस्थान किया। **संदर्भ** : महाभारत-आदि-पर्व, अ० 206

पाण्डवों का स्वर्गारोहण : पाण्डवों का हिमालय में गलना

धर्मराज युधिष्ठिर ने नगर और जनपद के लोगों को समझा-बुझाकर उनकी अनुमति

प्राप्त कर ली। फिर उन्होंने व उनके भाइयों ने सबकुछ त्यागकर महाप्रस्थान करने का निश्चय किया और वे अन्य पाण्डवों और द्रौपदी के साथ वल्कल वस्त्र धारण कर हिमालय पर्वत की ओर चले तथा एक-एक करके बर्फ में गल गये, केवल युधिष्ठिर बचे और उनका अनुसरण करते हुए एक कुत्ता बचा। उस समय देवराज इन्द्र रथ लेकर युधिष्ठिर के पास आ पहुंचे और स्वर्ग में चलने के लिए कहा। तब युधिष्ठिर ने इन्द्र को अपने भाइयों व द्रौपदी और साथ में चल रहे कुत्ते के बिना स्वर्ग में जाने से मना कर दिया। इससे प्रसन्न हो कुत्ते के रूप में साक्षात् धर्म ने अपना रूप प्रकट किया तथा उन्हें उत्तम दिव्यगति प्राप्त होने का वरदान देकर भाइयों के साथ स्वर्ग में जाने के लिए कहा और युधिष्ठिर ने अपने भाइयों व द्रौपदी के साथ स्वर्ग को प्रस्थान किया। **संदर्भ :** महाभारत-महाप्रस्थानिक पर्व, अ० 1-3; अग्नि, अ० 15; भागवत-1/15

पाण्डवों द्वारा कर्म-फल भोगना

जब पाण्डव द्रौपदी के साथ महाप्रस्थान पथ पर हिमालय की ओर चले तो क्रमश: एक-एक करके द्रौपदी, सहदेव, नकुल, अर्जुन और भीम पृथ्वी पर गिर पड़े। तब भीम ने युधिष्ठिर से इसका कारण पूछा। इस पर युधिष्ठिर ने बताया कि जैसी जिसकी करनी होती है वैसा उसे फल भोगना पड़ता है। द्रौपदी के मन में पांच पतियों से प्रेम करते हुए भी अर्जुन के प्रति विशेष पक्षपात था। सहदेव अपने जैसा विद्वान और बुद्धिमान किसी को नहीं समझता था। नकुल किसी को भी अपने समान सुन्दर नहीं समझता था। अर्जुन को अपनी शूरता का अधिक अभिमान था और भीम को दूसरों को भी कुछ न समझकर अपने बल की डींग हांकने के कारण धराशायी होना पड़ा। युधिष्ठिर को इन्द्र-निर्मित मायारूप नरक में दो घड़ी रहने के बाद पाण्डवों सहित स्वर्ग की प्राप्ति हुई। **संदर्भ :** महाभारत-महाप्रस्थानिक पर्व, अ० 2/5-6

पाण्डु और सूर्य का सम्बन्ध : कुन्ती और दुर्वासा की कथा

पाण्डु की पत्नी कुन्ती को कौमार्यावस्था में मुनि दुर्वासा ने उसके अतिथि-सत्कार से प्रसन्न होकर देवताओं का आवाहन करने का मन्त्र दिया था, जिसके बल से कुन्ती ने कुमारावस्था में सूर्य का आवाहन किया था, जिससे कर्ण पैदा हुआ। **संदर्भ :** महाभारत-आदि पर्व, अ० 63-67, 110; अग्नि-13/11; देवी भागवत-2/6/14-30

पाण्डु की मृत्यु

पाण्डु हस्तिनापुर के कुरुवंशीय राजा तथा धृतराष्ट्र के बडे भाई और पाण्डवों के पिता थे। इनकी कुन्ती और माद्री नामक दो पत्नियां थीं। एक बार वसंत ऋतु में यह अपनी पत्नियों के साथ वन में घूम रहे थे। वन के उद्दीप्त सौन्दर्य से प्रभावित होकर एवं माद्री के यौवनाकर्षण पर मोहित हो उसके साथ बलात संभोग किया और संभोग करते ही कदम्ब ऋषि के शाप के कारण शीघ्र ही उनकी मृत्यु हो गई। **संदर्भ :** महाभारत-

आदि पर्व, अ० 117-124; भागवत-9/24; देवी भागवत-1

प्रियव्रत-चरित्र

प्रियव्रत स्वायंभुव मनु के एक पुत्र थे। इन्हें एक प्रसिद्ध वंश का आदिपुरुष माना जाता है। इन्होंने घोर तपस्या कर स्वर्ग प्राप्त किया था। रात्रि को दिन कर देने के उद्देश्य से इन्होंने दूसरे सूर्य के समान सूर्य के पीछे-पीछे चक्कर लगाया। इनके रथ के पहियों से बने गड्ढों से सात समुद्र बन गये एवं ऊंचे स्थान सात महादेश बन गये। इनके दस पुत्र थे। तीन ने संन्यास ले लिया। सात को इन्होंने एक-एक महादेश दे दिया। **संदर्भ** : ब्रह्म, अ० 2; विष्णु-2/1; भागवत-3/12/55, 3/21/12, 41/119, 5/1

राजा पृथु की कथा

(1) पृथु का पृथ्वी का दोहन करना

राजा वेन के दाहिने हाथ को मथकर ब्राह्मणों ने पृथु को उत्पन्न किया था। इसने पृथ्वी का दोहन कर इसे कृषि योग्य बनाया तथा प्रजा को धन-धान्य पूर्ण बनाया। इसकी राज्य व्यवस्था सर्वोत्तम थी।

पृथु का पिता वेन बहुत ही अधर्मी और अत्याचारी था। उसके राज्य में काफी अराजकता व्याप्त हो गई। यहां तक कि पृथ्वी ने अन्नादि उत्पन्न करना भी बन्द कर दिया तथा सभी औषधियों व बीजों को स्वयं खा गई। तब ऋषियों के समझाने पर भी न मानने वाले वेन को मार दिया तथा उसकी दाहिनी भुजा से मंथन कर पृथु को उत्पन्न कर उसे राज्य-अभिषिक्त किया। पृथु ने मनु को बछड़ा बनाकर और पृथ्वी रूपी गाय का दोहन कर सभी औषधियां व बीज प्राप्त किये। उसने बाणों से पर्वतों को काट-काटकर पृथ्वी को समतल कृषियोग्य बनाया और दोहन किये गये बीजों को उसमें बोया। इस प्रकार उसने प्रजा को धनधान्यपूर्ण बनाया। उसकी राज्य-व्यवस्था सर्वोत्तम थी।

(2) पृथु का इन्द्र से वैर

जब पृथु सरस्वती के तट पर ब्रह्मावर्त क्षेत्र में सौवां अश्वमेध यज्ञ कर रहा था उस समय इन्द्र ने इन्द्रासन छीने जाने के भय से यज्ञ का घोड़ा चुरा लिया। जब पृथु ने उसका पीछा किया तो इन्द्र ने विभिन्न रूप बनाये, पर पृथु ने उससे घोड़ा छीन लिया, जिससे उसका नाम विजिताश्व पड़ा। पृथु ने इसके इस प्रकार के कर्तव्य से रुष्ट होकर इसे भस्म करना चाहा। लेकिन उसी समय ब्रह्मा ने प्रकट हो सौ यज्ञों की सफलताओं का फल दिया तथा उसकी इच्छानुसार भगवान का यश सुनने के लिए दस हजार कान दिये। **संदर्भ** : अथर्ववेद-8/28/11; शतपथ-ब्राह्मण, 5/3/5/4; महाभारत-शान्ति पर्व, अ० 59, द्रोण-पर्व, अ० 69; ब्रह्मपुराण-भूमिखण्ड, अ० 27-28, सृष्टि खण्ड, अ० 8; ब्रह्म-पुराण, अ० 4, 141; विष्णु पुराण-1/13; वायु-पुराण, अ० 62/103/193; भागवत-4/15-24; अग्नि-पुराण, अ० 18; स्कन्द-पुराण, प्रभास खण्ड, प्रभास क्षेत्र माहात्म्य, अ० 336; वामन-पुराण, अ० 47/48; मत्स्य-पुराण, अ०

10; ब्रह्माण्ड-पुराण, पूर्व भाग-अनुषंगपाद, अ० 36; हरिवंश-पुराण, आदि पर्व, अ० 5/6

पुरूरवा-उर्वशी की कथा

पुरूरवा चन्द्रवंश का पूर्वज था। एक बार शापवश उर्वशी पृथ्वी पर आई थी। जिस पर पुरूरवा मोहित हो गया और उर्वशी भी नारद के मुंह से पुरूरवा के सौन्दर्य का वर्णन सुन विवाह के लिए तैयार हो गई। तीन शर्तों के साथ दोनों का विवाह हो गया। कुछ समय बाद उर्वशी एक शर्त टूट जाने पर स्वर्ग वापस चली गई।

'मत्स्य पुराण' के अनुसार पुरूरवा के प्रेम में आसक्त होने के कारण उर्वशी भरत विरचित लक्ष्मी-स्वयंवर नाटक के नियमों का पालन नहीं कर सकी थी, इसलिए उसे पृथ्वी पर आना पड़ा। **संदर्भ**: विष्णु-4/1/9-12, अ० 10; भागवत-9/14, 11/26/4/5; मत्स्य-24/33; बृहद् कथा-लावणक-लम्बक-तीसरी तरंग।

पुरंजन की कथा

राजा पुरंजन एक बड़ा यशस्वी राजा था। भोगों की लालसा में वह अनेक नगरों को देखता फिरा। अंत में एक दिन उसने हिमालय के दक्षिण तटवर्ती शिखरों पर भारत-खण्ड में एक नगर देखा। उस नगर के बाहर उसकी एक सुन्दरी से भेंट हुई। पुरंजन उसे पत्नीरूप में स्वीकार करके उसे नौ द्वारोंवाली पुरंजन पुरी में ले आया और सौ वर्ष तक आनन्दपूर्वक रहा। उसके भोगों में रत रहने के कारण उसका कल्याण करने वाले कर्मों की ओर ध्यान न रहा और वृद्धावस्था को प्राप्त हो गया। ऐसे समय में मय नामक यवनराज केवल एक बूढ़े सांप से सुरक्षित सुख-सामग्री से सम्पन्न पुरंजन पुरी में घुसकर उसका विध्वंस करने लगा और पहले से ही वहां भेजी गई कालकन्या के सम्पर्क से पुरंजन का सभी विवेक नष्ट हो गया। उसको विषयों में आसक्ति होने के कारण वह दीन हो गया। भोगों की लालसा में वह दीन अपनी पारलौकिक गति और बंधुजनों के स्नेह से वंचित रहकर उसका चित्त केवल स्त्री और पुत्र के लालन-पालन में ही लगा रहा और अन्त में उसे पुरंजन पुरी छोड़ने के लिए बाध्य होना पड़ा, परन्तु उसी समय उसे यवनराज मय ने पकड़ लिया। स्त्री की आसक्ति में उसकी यह दुर्गति हुई। अन्त समय में भी पुरंजन को उसका चिन्तन बना हुआ था। इसलिए दूसरे जन्म में वह नृपश्रेष्ठ विदर्भराज के यहां सुन्दर कन्या के रूप में उत्पन्न हुआ। **संदर्भ**: भागवत पुराण, अ० 4/25-28

पुलिन्द की कथा

पुलिन्दगण विन्ध्याचल के वनों में रहकर राजा का धन लूटते थे। एक बार इनको राजकीय सैनिकों से युद्ध करना पड़ा। उस समय युद्ध में इनकी कंस ने सहायता की, जिससे ये कंस के सेवक हो गये। इनकी पत्नियां श्रीराम के वरादान से उत्कृष्ट कन्याओं के रूप में प्रकट हुईं। इन कन्याओं ने श्रीकृष्ण के रास में भाग लिया तथा कृष्ण की

कृपा से उनको परमपद प्राप्त हुआ। **संदर्भ** : गर्ग-संहिता-माधुर्य-खण्ड, अ० 10

पुण्डरीक की कथा

पुण्डरीक ब्राह्मण किसी पुण्य तीर्थ में जप किया करता था। वह मुनि नारद से श्रेय-मार्ग का उपदेश ग्रहण कर नारायण के भजन में सदैव तत्पर रहने लगा। दीर्घकाल के पश्चात् भगवान विष्णु ने उसे दर्शन दिये तथा अपने धाम को ले गये। **संदर्भ** : महाभारत अनुशासन पर्व, अ० 24; पद्मपुराण-उत्तर खण्ड, अ० 89

प्रचेताओं को रुद्र का उपदेश

राजा प्राचीनबर्हि ने ब्रह्मा जी के कहने से समुद्र की कन्या शतद्रुति से विवाह किया था। शतद्रुति के गर्भ से प्राचीनबर्हि के प्रचेता नाम के दस पुत्र हुए। सब धर्मज्ञ तथा आचरण वाले थे। वे घर से तपस्या करने के लिए निकले और रास्ते में उन्हें महादेव जी ने दर्शन दिये और सर्वभूतान्तर्यामी परमात्मा श्रीहरि का स्तोत्र सुनाया तथा प्रचेताओं को उसका एकाग्रचित्त से जाप करने का उपदेश दिया। **सन्दर्भ** : भागवत-4/24

बलराम सम्बन्धी कथाएं

(1) बलराम-अवतार

यह श्रीकृष्ण के बड़े भाई थे जिनका जन्म रोहिणी के उदर से हुआ था। ये विष्णु के अंशावतार माने जाते हैं। **संदर्भ** : विष्णु-4/15/19

(2) बलराम का रेवती से विवाह

रेवती शर्याति कुल के रेवत नामक राजा की कन्या थी। यह लम्बाई में अधिक ऊंची थी। अतः इससे कोई विवाह नहीं करता था। इसका विवाह द्वापर में बलराम से आकर हुआ। इसकी अवस्था सत्ययुग में सताईस युगों की हो गई थी। **संदर्भ** : पद्म-भूमिखण्ड-4/1/65-66; विष्णु-4|15/19; ब्रह्मवैवर्त (श्रीकृष्णजन्म खण्ड), अ० 106

(3) बलराम द्वारा धेनुक-वध

एक बार श्रीकृष्ण और बलराम वन में गाय चराते हुए तालवन में गये। उस तालवन का रक्षक धेनुक नामक दानव था। वह गधे का रूप धारण कर रहता था। उस प्रदेश की धेनुक रक्षा करता था, अतः उस तालवन के फल लोग प्राप्त नहीं कर सकते थे। श्रीकृष्ण एवं बलराम ने वहां तालफल तोड़-तोड़कर गिराना प्रारम्भ कर दिया। फलों के गिरने का शब्द सुनकर धेनुक वहां आ गया और पिछले पैरों से बलराम पर आक्रमण कर दिया। बलराम ने उस दुष्ट धेनुक के दोनों पैर पकड़कर आकाश में घुमाकर तालवृक्ष पर फेंक दिया। वह निष्प्राण होकर पृथ्वी पर गिर गया। उसके साथ गर्दभ रूप में आये अन्य दैत्यों को बलराम और श्रीकृष्ण ने तालवृक्ष पर फेंककर मार दिया। **संदर्भ** : हरिवंश-विष्णु-पर्व, अ० 14; ब्रह्म, अ०1/86; विष्णु-5/80; भागवत-10/15; ब्रह्मवैवर्त, श्रीकृष्ण जन्म खण्ड, अ० 22

(4) **बलराम द्वारा प्रलम्बासुर-वध**

एक दिन बलराम और श्रीकृष्ण अन्य गोपों के साथ वन में खेल रहे थे। उस समय प्रलम्ब नामक असुर उनसे बदला लेने के उद्देश्य से गोप वेश बनाकर वहां आया। वह कृष्ण और बलराम को मार देने का अवसर खोजने लगा। इसका बलराम को पता चल गया। उस समय श्रीकृष्ण ने बाल-क्रीड़नक खेल प्रारम्भ किया और खेल में उसे सम्मिलित कर बलराम उसकी पीठ पर चढ़ गये। वह बलराम का अपहरण करने का प्रयास करने लगा, परन्तु बलराम ने अपना भार बढ़ाना प्रारम्भ कर दिया, जिससे वह उनको वहन नहीं कर पाया। बलराम ने श्रीकृष्ण का संकेत पाकर उसके मस्तक पर अपनी मुट्ठी का प्रहार कर उसे मार दिया। **संदर्भ** : हरिवंश-विष्णु पर्व, अ० 15; ब्रह्म, अ० 187; विष्णु-5/9; ब्रह्मवैवर्त-श्रीकृष्ण जन्म खण्ड, अ० 16

बलि द्वारा रावण की पराजय

एक बार रावण अपना शौर्य प्रकट करने के लिए पाताल में बलि के पास पहुंचा। बलि ने जब रावण से पाताल में उसके आने का कारण पूछा तो रावण ने बताया कि वह बलि को मुक्त कराने आया है। इस पर बलि ने रावण से समीपस्थ रखे हुए अपने कुण्डल को उठाने के लिए कहा। रावण उसे उठाने गया, पर वह उसे न उठा सका और उसके उठाने में मूर्छित होकर पृथ्वी पर गिर गया। मूर्च्छा टूटने पर बलि ने रावण को बताया कि ये कुण्डल हिरण्यकशिपु के कान के हैं, जिसे विष्णु ने नृसिह अवतार धारण कर मार दिया था। यह द्वार पर सांवला व्यक्ति वही विष्णु है। तू इसे क्या जीतेगा और मुझे क्या मुक्त करायेगा ?

'आनन्द रामायण' के अनुसार, एक बार रावण बलि को जीतने के लिए पाताल-लोक में गया। द्वारपाल ने उसे अन्दर जाने दिया। उस समय बलि चौसर खेल रहा था। संयोग से चौसर का एक पासा दूर जा पड़ा, जिसे बलि ने रावण से उठाने के लिए कहा। रावण उस पासे को उठाकर देने में असमर्थ रहा तब रावण को वहां से मार भगाया। घर से निकलते ही उसे बलि के दूतों ने पकड़कर घुड़साल में डाल दिया। वहां से उसे द्वारपाल ने छुड़ाया। **संदर्भ** : बाल्मीकि-रामायण-उत्तरकाण्ड, अ० 9; आनन्दरामायण-सारखण्ड, सर्ग 13

बालि और सुग्रीव का जन्म

विष्णु ने राजा दशरथ के घर में पुत्ररूप में जन्म लेना स्वीकार कर लिया तब ब्रह्मा की आज्ञा से इन्द्र ने बलवान बालि, सूर्य ने सुग्रीव को तथा अन्य देवताओं ने अन्य वानरों को उत्पन्न किया।

रामायण के उत्तरकांड के अनुसार, एक बार ब्रह्मा के योग-साधना करते हुए आंसू टपक पड़ा, जिससे एक दिन वानर की उत्पत्ति हुई, जिसका नाम ब्रह्मा ने ऋक्षराज रखा। वह एक दिन मेरु शिखर पर स्थित एक तालाब में पानी पीने गया तथा वहां पानी

में अपनी परछाई को दूसरा वानर समझकर कूद पड़ा, जिससे वह एक सुन्दर रमणी बन गया, जिसे देखकर इन्द्र और सूर्य का काम-मोहित होकर वीर्यपात हो गया। इन्द्र का वीर्य उसके बालों पर गिरने से बालि तथा सूर्य का वीर्य उसकी ग्रीवा पर पड़ने से सुग्रीव पैदा हुआ।

'ब्रह्माण्ड-पुराण' में बालि और सुग्रीव के पिता की पूर्ण वंशावली दी गई है। यहां पर वर्णित है कि ऋक्षराज का विवाह विरजा से हुआ। विरजा ने इन्द्र से बालि और सूर्य से सुग्रीव को उत्पन्न किया। **सन्दर्भ** : बाल्मीकि-रामायण, बा० का० 17/33, उत्तरकांड-17; अध्यात्म-रामायण-7/3; आनन्द रामायण-सारखण्ड, सर्ग 12/141-51; ब्रह्माण्ड-पुराण-मध्यभाग, उपोद्घातपाद, 3/7/203-73

बालि का व्याध के रूप में जन्म

राम-रावण युद्ध के उपरान्त अकस्मात ही अंगद ने क्रोधित होकर रामचन्द्र जी से कहा कि 'हे रामचन्द्र, आपने जो-जो कहा सो सभी मैंने किया, परन्तु मैं अपने पिता के वैर को नहीं भूल सकूंगा' और ऐसा कह वह युद्ध के लिए उद्यत हो गया। उस समय आकाशवाणी हुई कि 'हे अंगद, मथुरापुरी में जब कृष्ण-अवतार होगा तब बालि ही व्याध का रूप धारण करके इन रामचन्द्र का वध करेगा।' यह सुनकर रामचन्द्र को और वानरों को अंजलि बांधे हुए देखकर अंगद ने संग्राम करने का ध्येय त्याग दिया। **संदर्भ** : हनुमन्नाटक, अंक 14

बालि द्वारा रावण को पराजित करना

रावण दिग्विजय की कामना से लंका से निकला तथा बालि को जीतने के लिए किष्किन्धा पहुंचा। उस समय बालि समुद्र तट पर बैठा संध्योपासना कर रहा था। रावण ने जैसे ही बालि को पकड़ने का प्रयास किया वैसे ही उसे बालि ने कांख में दबा लिया तथा बालि दबाये हुए ही आकाश से उड़कर अन्य समुद्रों पर संध्यावंदन करता हुआ किष्किन्धा लौटा। वहां उसने रावण को कांख से निकालकर परिचय पूछा तो उसने अपना नाम आदि गलत बताया तथा बालि से मित्रता कर ली। तब बालि ने उसे छोड़ दिया।

'हनुमान-नाटक' के अनुसार बालि ने रावण को किष्किन्धा ले जाकर अंगद के पालने से बांध दिया, जिससे अंगद बालक्रीड़ा किया करता था तथा लातों से पीटता था। **संदर्भ** : बाल्मीकि-रामायण-उत्तरकाण्ड-पूर्वार्ध, सर्ग-34; ब्रह्माण्ड-पुराण-मध्यभाग, उपोद्घातपाद-3, अध्याय-7; हनुमान-नाटक, सर्ग 8; आनन्द रामायण-सारखण्ड-सर्ग, 13

बालि को मतंग ऋषि का शाप

दुन्दुभि नामक असुर ने, जिसका रूप भैंसे का था, वरदान प्राप्त कर युद्ध के लिए समुद्र, हिमवान तदन्तर बालि को ललकारा। बालि ने उसके सींग पकड़कर पृथ्वी पर

पटककर मार दिया तथा उसे एक योजन दूर फेंक दिया। उसके फेंकते समय उसके मुंह से रुधिर की निकलती हुई कुछ बूंदें मतंग के आश्रम पर ऋष्यमूक पर्वत पर जा गिरीं। जिससे मतंग ऋषि ने यह शाप दे दिया कि यह रुधिर फेंकनेवाला या उसके पक्षवाले यहां एक योजन तक आयेंगे तो वे मर जायेंगे। **सन्दर्भ** : बाल्मीकि रामायण-किष्किन्धा काण्ड, सर्ग 11, 53-56

बालि और सुग्रीव की शत्रुता : बालि द्वारा पर-स्त्री-हरण

बालि के मंत्री तार की पुत्री तारा का विवाह बालि से हुआ। उसके कारण मायावी दैत्य का पुत्र दुन्दुभि बालि से वैर रखता था। एक दिन उसने किष्किन्धा में आकर आधी रात के समय बालि को युद्ध के लिए ललकारा। बालि ने सुग्रीव को साथ लेकर उसका पीछा किया। वह दैत्य एक बिल में घुस गया। बालि भी उसका पीछा करता हुआ गुफा में अन्दर चला गया तथा काफी समय तक वापस नहीं लौटा। सुग्रीव ने उसे मरा हुआ जानकर गुफा के मुंह पर बड़ी-सी चट्टान लगाकर किष्किन्धा में आ गया तथा तारा के साथ विवाह कर राज्य का उपभोग करने लगा। उधर जब बालि दुन्दुभि दैत्य को मारकर वापस आया तो सुग्रीव के इस कृत्य पर रुष्ट होकर उसे राज्य से बाहर निकाल दिया और उसकी पत्नी को अपनी पत्नी बना लिया। **संदर्भ** : बाल्मीकि रामायण-किष्किन्धा काण्ड, सर्ग 11/94

बृद्धक्षत्र-वध

बृद्धक्षत्र सिंधु देश के राजा जयद्रथ के पिता थे। इन्होंने जयद्रथ को वर दिया था कि जो इसे मारेगा उसके सिर के सौ टुकड़े हो जायेंगे। कृष्ण की योगमाया से जयद्रथ का सिर अर्जुन ने इनकी गोद में डाल दिया, जिससे इनकी मृत्यु हो गई। **संदर्भ** : महाभारत द्रोणपर्व-146/129-30

बुद्ध-अवतार

बुद्ध कलियुग के आरम्भ में मायादेवी के गर्भ से उत्पन्न विष्णु के बीसवें अवतार माने जाते हैं। मत्स्य पुराण के अनुसार यह विष्णु का नवां अवतार था। भागवत पुराण में ये देवताओं के द्वेषी और दैत्यों में लोभ और मोह उत्पन्न करने वाले और असुरों को वेद विरुद्ध करने वाले बताये गए हैं। **संदर्भ** : भागवत-1/3/24, 2/7/37, 11/4/22;अग्नि, अ० 16; मत्स्य-47/247, 285/7

ब्रह्मा-आख्यान

(i) **ब्रह्मा की उत्पत्ति**

विष्णु भगवान ने पहले लोकों के रचने की इच्छा से महत्तत्व और अहंकारादिकों से उत्पन्न सोलह कला पुरुष रूप ग्रहण किया। उसके पश्चात् योगनिद्रा में पड़कर सोते हुए

उनकी नाभि से कमल निकला, जिस पर प्रजापति ब्रह्मा उत्पन्न हुए । **संदर्भ** : भागवत-1/3/1-2, 3/8/13-16, 9/1/8-10

(2) ब्रह्मा का अपनी पुत्री को देखकर आसक्त होना

ब्रह्मा की पुत्री सरस्वती अत्यन्त सुन्दर एवं सुकुमार थी । वे उसके रूप सौन्दर्य को देखकर काम-मोहित हो गये । तब उनके पुत्र मरीचि आदि ने उन्हें समझाया तथा इस दुष्कर आचरण से रोका ।

'ब्रह्म पुराण' में ब्रह्मा की पुत्री का नाम नहीं दिया है, परन्तु यहां उल्लेख है कि ब्रह्मा के सावित्री, गायत्री, श्रद्धा, मेधा और सरस्वती पांच ज्येष्ठपुत्री थीं । इनमें से एक अद्वितीय सुन्दरी थी । उसे देखकर ब्रह्मा काम-मोहित हो उसके पीछे दौड़े । वह बचने के लिए मृगी बन गई तब ब्रह्मा उसके पीछे मृग बनकर दौड़े । यह देखकर लोकधर्म की रक्षा के लिए शंकर हाथ में बाण लेकर ब्रह्मा के पीछे दौड़े और बोले मैं तुम्हारा वध करूंगा । तब ब्रह्मा को ज्ञान हुआ और उन्होंने अपनी पुत्री को विवस्वान को सौंप दिया । **संदर्भ** : भागवत-13/11/290; ब्रह्मवैवर्त-35/45-58; मत्स्य-3/30-42; ब्रह्म, अ० 102

(3) ब्रह्मा-सावित्री

सावित्री पृश्नी नामक पत्नी से उत्पन्न सूर्य की पुत्री थी, जिसको सूर्य ने ब्रह्मा को दिया तथा वह ब्रह्मा की पत्नी बनी । **संदर्भ** : स्कन्द-पुराण-7/1/165

(4) ब्रह्मा का शिव का सारथी बनना

तारकासुर युद्ध में दैत्यों के परास्त हो जाने पर तारकासुर के तीन पुत्र ताराक्ष, कमलाक्ष और विद्युन्माली ने तपस्या में लीन होकर ब्रह्मा से यह वर प्राप्त कर लिया कि वे सदा सम्पूर्ण भूतों से अबध्य हों और वे नगराकार विमान बनाकर रहने लगे । वरदान पाने के कारण उनका घमण्ड बढ़ गया । विवेकहीन होकर उन्होंने देवताओं को परेशान करना प्रारम्भ कर दिया । तब देवता ब्रह्माजी को आगे करके शिव के पास गये और उनसे प्रार्थना कर उन्हें वध के लिए तैयार किया । उस समय शिव ने देवताओं से अपने लिए रथ तैयार करने के लिए कहा, तब विश्वकर्मा ने एक सुन्दर रथ तैयार किया । शिव ने देवताओं से उनसे श्रेष्ठ सारथी खोजने के लिए कहा । तब देवताओं ने ब्रह्मा को प्रसन्न कर शिव का सारथी बनने के लिए तैयार किया ।

उस समय शिव देवताओं से तेज का आधा-आधा भाग लेकर तेजस्वी बने थे, अतः वे 'महादेव' कहलाये । **संदर्भ** : महाभारत-कर्ण-पर्व, अ० 33-34

(5) ब्रह्मा का दर्प-भंग

एक बार मोहिनी अप्सरा ब्रह्माजी पर आसक्त हो गयी । वह उनके पास गई और उनके आसन पर बैठकर प्रेमदान करने लगी । उन्होंने उस समय भगवान का स्मरण किया और उनका मन निर्विकार रहा । इसी समय वहां सनकादि आए और उन्होंने मोहिनी को उनके आसन पर बैठने का कारण पूछा । ब्रह्माजी को उस समय अपनी क्रिया, भक्ति तथा शक्ति का गर्व हो गया । तब ब्रह्माजी ने गर्व से कहा कि यह नाचते-नाचते

थककर पुत्री के भाव से मेरे पास बैठ गई है।

उस समय मोहिनी ने क्रोधित होकर उन्हें शाप दे दिया कि न संसार में तुम्हारी पूजा होगी, न तुम्हारा यह गर्व ही रहेगा। तब ब्रह्मा को अपनी भूल का पता चला तो वे दौड़कर भगवान के पास गये और अपनी शापादि की बात सुनाने लगे। उसी समय वहां भगवान के पास अष्ठमुख ब्रह्मा से लेकर सहस्रमुख ब्रह्मा तक आये और उन्होंने उत्कृष्ट शब्दावलियों में अपना स्तोत्र सुनाया। उस समय अपने को प्रभु के तुल्य मानने का ब्रह्मा जी का गर्व गलकर समाप्त हो गया। **संदर्भ :** ब्रह्मवैवर्त-कृष्णजन्म खण्ड, अ० 148

(6) ब्रह्मा का अपूज्य होना

ब्रह्मवैवर्त के अनुसार नारद के शाप से ब्रह्मा अपूज्य हो गए। एक समय ब्रह्मा और विष्णु दोनों पृथ्वी का भ्रमण करते हुए हिमालय के समीप पहुंचे। वहां पर पहुंचते ही उन दोनों ने एक तेजोमय लिंग को देखा और उस लिंग के पता लगाने का प्रयास करने पर भी जब उसके अन्त का पता नहीं लगा सके तो उन दोनों ने शिव की तपस्या की। तब शिव प्रसन्न होकर प्रकट हुए और उनसे वर मांगने को कहा। इस पर ब्रह्मा ने शिव से अपना पुत्र बनने का वर मांगा। ऐसा अनुचित वर मांगने के कारण ब्रह्मा की पूजा का विधान ही संसार से मिट गया और अपूज्य हो गए। **संदर्भ :** ब्रह्मवैवर्त, अ० 12; बृहत्कथा-कथापीठ, लम्बक-3

(7) ब्रह्मा का दूसरा विवाह

एक बार ब्रह्मा ने यज्ञ करने का विचार किया और स्वर्ग से ही उन्होंने एक फूल गिराया। यह फूल जहां गिरा वही स्थान यज्ञ के लिए उपयुक्त समझा गया और उसका नाम पुष्कर रखा। जब ब्रह्मा यज्ञ करने के लिए तैयार हुए उस समय उनकी स्त्री सरस्वती वहां नहीं थी। तब इन्होंने इन्द्र की सहायता से दूसरा विवाह किया।

एक अन्य कथा यह भी प्रचलित है कि ब्रह्मा ने अपनी पत्नी सावित्री के अपने पितृगृह चले जाने पर शुभ घड़ी न टल जाय, अतः दूसरा विवाह कर अपना यज्ञ प्रारम्भ कर दिया। जब उनकी पत्नी को ब्रह्मा के यज्ञ करने का पता चला तो वह ब्रह्मा के पास जाने के लिए चल दीं, परन्तु जब रास्ते में उन्हें यह पता चला कि ब्रह्मा ने दूसरा विवाह कर लिया है तो वह वहीं रुक गईं। कहा जाता है कि जिस स्थान पर वह रुक गई थीं वहां आज भी अजमेर के पास पुष्कर में सावित्री का मन्दिर बना हुआ है। **संदर्भ :** पद्म पुराण; भागवत 10/74/13

ब्रह्मा का जाम्बवान के रूप में जन्म लेना

जाम्बवान ब्रह्मा द्वारा जम्हाई लेते समय उनके मुख से सहसा निकल पड़ा। यह यक्षों का राजा हुआ तथा इसने राम की पत्नी सीता को खोजने में काफी सहायता की थी तथा रावण-वध के बाद राम की विजय की सूचना नगाड़ों द्वारा इसने सबको बताई थी एवं राम के राज्याभिषेक के समय यह समुद्र से पानी भी लाया था। **संदर्भ :** बाल्मीकि-

रामायण-बालकाण्ड-17/7, युद्धकाण्ड, अ० 37, 74 व 128

भरद्वाज की उत्पत्ति

एक बार बृहस्पति अपनी गर्भवती पत्नी से सहवास करने को उद्यत हुए। उस समय गर्भस्थ शिशु ने ऐसा करने से रोका, परन्तु बृहस्पति ने उसे अंधे होने का शाप दे दिया। कामवासना के निवृत होने पर उनका वीर्य नीचे पृथ्वी पर गिर गया। जिससे भरद्वाज का जन्म हुआ। बृहस्पति के इस कृत्य से रुष्ट होकर उनकी पत्नी उन्हें छोड़कर अपने पिता के घर चली गई। उस समय उस बालक का मरुद्गणों ने पालन-पोषण किया। कालान्तर में शिशु की इच्छा करने वाले भरत को वह बालक सौंप दिया। इस बालक का दूसरा नाम वितथ था। कुछ समय पश्चात् वितथ भरत-वंश के राजा हुए और उनसे ब्राह्मण व क्षत्रिय दो कुलों का उद्भव हुआ। **सन्दर्भ** : मत्स्य, अ० 49

भरत की कथा

भरत दुष्यन्त और शकुन्तला के पुत्र थे। ये बड़े प्रतापी, वीर, तेजस्वी राजा थे। इनके शासन-काल में पृथ्वी और आकाश प्रजा की सभी कामनाएं पूर्ण करते थे। इन्होंने गंगा जी के तट पर पचपन अश्वमेधी यज्ञ किये। इनके लोकप्रिय शासन के ही कारण इस देश का नाम भारत हुआ। **संदर्भ** : महाभारत द्रोण पर्व, अ० 68; विष्णु-4/19/10-12; भागवत-1/20/17-35, 9/20

भरत (दशरथ पुत्र) का राज्य त्याग

यह दशरथ की दूसरी रानी कैकेयी के पुत्र थे। कैकेयी ने इन्हें राज्य दिलवाने के लिए राम को वनवास दिलाया। परन्तु इन्होंने राम के प्रेम के कारण राज्य स्वीकार नहीं किया और राम को लौटाने के लिए चित्रकूट गये। राम के अयोध्या वापस न आने पर यह अयोध्या के निकट नंदीग्राम में तपस्वियों के समान रहे। राम के लौटने तक वहीं पर अपना समय व्यतीत किया। **संदर्भ** : बाल्मीकि रामायण-अयोध्याकाण्ड, सर्ग 115; भागवत-9/10/34-40, 43

भरत का अयोध्या में आना

जब भरत अयोध्या में वापस आए तो उन्होंने पिता की मृत्यु और राम, लक्ष्मण तथा सीता के वन में जाने का वृत्तान्त सुना तो उन्हें काफी दुःख हुआ, जिससे उन्होंने अपनी माता कैकेयी को भी अनेक कठोर शब्द कहे। जब वे अपनी विमाता कौशल्या के पास जाते हैं तो उन्हें दुखित और कान्तिहीन देखकर रोने लगते हैं। कौशल्या उस समय कैकेयी को कठोर शब्द कहती हैं तथा भरत को भी कठोर शब्द कहे। वह उन्हें दोषी ठहराती है। माता कौशल्या के इस प्रकार वचन सुनकर वे अपने को निरपराध सिद्ध करते हैं तथा

अनेक प्रकार के पाप लगने की बात कहते हैं—यदि राम के वन-गमन में उनका थोड़ा-सा भी हाथ हो। अध्यात्म-रामायण में भरत इस सन्दर्भ में केवल ब्रह्महत्या का पाप लगने की बात कहते हैं। **सन्दर्भ :** बालमीकि रामायण-अयोध्या काण्ड, सर्ग 75; अध्यात्म रामायण

भर्तृहरि (भरथरी) की कथा

राजा भर्तृहरि नाथपंथ की बैरागी शाखा के प्रवर्तक थे। ये उज्जैन के राजा चन्द्रसेन के पुत्र थे। राजा सिंहलगढ़ की राजकुमारी सामदेई से विवाह करके वहीं रहने लगे थे। विवाह के पश्चात् जब भर्तृहरि शयनकक्ष में गए, तब उन्होंने अपनी खाट को टूटा हुआ पाया तथा इसका कारण अपनी स्त्री से पूछा, जो कि संतोषजनक उत्तर नहीं दे पायी। तब यह संसार से ऊबकर गुरु गोरखनाथ के चेला हो गए, परन्तु संन्यासी धर्म में दीक्षित होने के लिए इनको अपनी पत्नी से भिक्षा मांगकर लाना आवश्यक था। अतः यह अपनी पत्नी के पास पहुंचे। उसने इन्हें पहचानकर भिक्षा देने से मना कर दिया, परन्तु बाद में उनकी काफी अनुनय-विनय के बाद उन्हें उनकी पत्नी ने भिक्षा दी। **संदर्भ :** लोक कथा।

भरथरी और पिंगला की कथा

एक बार राजा भर्तृहरि शिकार खेलने गया। उसने देखा कि किसी शिकारी को नाग ने काट लिया। शिकारी की स्त्री अपने पति को चिता पर रखकर सती हो गई। यह दृश्य देखकर भर्तृहरि ने अपनी रानी पिंगला की परीक्षा लेनी चाही और यह कहानी अपनी पत्नी को सुनाई। यह कथा सुनकर पिंगला ने कहा कि वह तो अपने पति की मृत्यु का मात्र संवाद सुनते ही सती हो जाएगी। कुछ दिनों के बाद जब राजा शिकार खेलने गया तो उसने यह समाचार प्रचलित कर दिया कि भर्तृहरि राजा की मृत्यु हो गई। इस समाचार को सुनते ही पिंगला चिता में कूदकर भस्म हो गई। जब भर्तृहरि वापस पहुंचा तो रानी को भस्म हुआ देखकर शोक-मग्न हो गया। उसी समय वहां गोरखनाथ पहुंचे तथा उन्होंने पिंगला को पुनः जीवित किया और उनके ज्ञान से भर्तृहरि योगी हो गया। उसने गोरखनाथ का शिष्यत्व ग्रहण किया और पिंगला से माता कहकर भिक्षा प्राप्त की।

भस्मलोचन की कथा

भस्मलोचन राक्षस को यह वर प्राप्त था कि वह जिसको चाहेगा वह उसी समय भस्म हो जायेगा। रावण ने इस राक्षस को रामचन्द्र की सेना को नष्ट करने के लिए भेजा। लेकिन विभीषण के परामर्श से उसके सामने एक दर्पण रख दिया गया, जिसमें वह अपनी प्रतिच्छाया देखकर स्वयं ही भस्म हो गया। **संदर्भ :** कृतिवासी-रामायण-सुन्दरकाण्ड

भीम सम्बन्धी कथाएं

(1) भीम द्वारा हिडिम्ब-वध

हिडिम्ब हिडिम्बा का भाई था। पाण्डवों के वनवास के समय इसने हिडिम्ब को उनके मारने के लिए भेजा था। परन्तु हिडिम्बा भीम पर आसक्त हो गई तथा भीम से विवाह करना चाहा। इतने में वहां हिडिम्ब आ गया। जिसका भीम से युद्ध हुआ। भीम ने हिडिम्ब को मारकर हिडिम्बा से विवाह कर लिया, जिससे घटोत्कच पैदा हुआ। **संदर्भ :** महाभारत-आदि पर्व, अ० 151-53

(2) भीम द्वारा कीचक-वध

यह राजा विराट का साला था तथा यह विराट की सेना का नायक भी था। जब पाण्डव अपने अज्ञातवास के समय विराट नगरी में रह रहे थे, तब इसने द्रौपदी पर मोहित हो उससे बलात्कार करना चाहा था। द्रौपदी ने कीचक की इस बुरी अभिलाषा के सम्बन्ध में भीम को आकर बताया, जिससे भीम ने छिपकर इसका वध कर दिया। कीचक के मारे जाने के पश्चात् उपकीचक द्रौपदी को मारने के लिए श्मशान भूमि में ले गए। तब भीमसेन ने उन उपकीचकों को भी मार दिया और द्रौपदी को छुड़ाया। **सन्दर्भ :** महाभारत-विराट पर्व, अ० 14-22

(3) भीम का अजगर की चपेट में आना

एक दिन भीम जब वन में अकेले भ्रमण कर रहे थे कि विशालकाय अजगर ने उनकी दोनों भुजाओं को जकड़ लिया। भीम ने काफी प्रयत्न किया, पर वे महाकाय अजगर की चपेट से न छूट सके। तब भीम ने उससे परिचय पूछा तो अजगर ने बताया कि वह राजा नहुष है और अगस्त्य ऋषि के शाप से अजगर हो गया है। उसने कहा कि बिना मेरे प्रश्नों का उत्तर दिये तुम मेरी पकड़ से न छूट पाओगे। तभी भीम को खोजते हुए वहां युधिष्ठिर पहुंचे। युधिष्ठिर ने अजगर के प्रश्नों का उत्तर देकर भीम को छुड़ाया तथा नहुष शापमुक्त होकर स्वर्ग को चला गया। **सन्दर्भ :** महाभारत-वन पर्व, अ० 178-81

(4) भीम के गिरने से चट्टान का टूटना

कुन्ती प्रसव के दसवें दिन भीम को अपनी गोद में लेकर एक सुन्दर सरोवर के निकट गई और स्नान करके लौटकर देवताओं की पूजा के लिए कुटिया से बाहर निकली और वह पर्वत के समीप होकर जा रही थी। वहां उसे मार डालने की इच्छा से एक बहुत बड़ा व्याघ्र उस पर्वत की कन्दरा से निकला और उसने विकट गर्जना की, जिसके भय से कुन्ती उछल पड़ी और वज्र के समान शरीरवाला भीम उसकी गोद से गिर गया। वह गोद से छूटकर एक पर्वत की चट्टान पर गिरा और उसके गिरने से चट्टान के टुकड़े-टुकड़े हो गये। **संदर्भ :** महाभारत-आदि पर्व, अ० 112

(5) भीम द्वारा अधिक भोजन करना

भीम पांडवों में कुन्ती का दूसरा पुत्र था। यह अधिक भोजन करने के लिए प्रसिद्ध था।

इसका एक नाम वृकोदर भी है। **संदर्भ** : महाभारत

(6) भीम द्वारा बकासुर वध

लाक्षागृह से बचकर पाण्डव अपनी माता के साथ घूमते-फिरते एकचक्रा नगरी में पहुंचे और वहां एक ब्राह्मण के घर ठहरे। उस नगरी के समीप एक गुफा में बकासुर नामक दैत्य अपने साथियों के साथ रहता था। वह उस जनपद तथा नगर का स्वामी था तथा वह उस नगर की शत्रुओं से रक्षा करता था, परन्तु उसे बीस खारी अगहनी चावलों का भात, दो भैंसे और एक मनुष्य कर के रूप में नगरवासियों को बारी-बारी से देना होता था। पाण्डव वहां जिस ब्राह्मण के घर ठहरे थे, उस समय उसकी यह सामग्री ले जाने की और स्वयं उस दैत्य के भोजन के रूप में जाने की बारी थी। अपनी बारी आई हुई जानकर वह ब्राह्मण विलाप कर रहा था, जिसे सुनकर कुन्ती ने भीम को उस राक्षस के पास ब्राह्मण के स्थान पर भेजा। भीम ने उस बकासुर के पास जाकर युद्ध करके उसका वध कर दिया। **संदर्भ** : महाभारत-आदि पर्व, अ० 156-57

(7) भीम द्वारा किर्मीर का वध

पाण्डव जुए में पराजित होकर जब काम्यकवन में पहुंचे तो उनका मार्ग रोककर एक राक्षस खड़ा हो गया और भयंकर गर्जना करने लगा। उसकी गर्जना से भयभीत होकर स्थलचर, जलचर, पक्षी आदि सब दिशाओं को भागने लगे। तब भीमसेन और किर्मीर में भयंकर युद्ध हुआ और भीम ने युद्ध में उसका वध कर दिया। **संदर्भ** : महाभारत-वन पर्व, अ० 11

(8) भीम द्वारा जटासुर वध

पर्वतराज गन्धमादन पर्वत पर पाण्डव निश्शंक होकर रहने लगे। एक दिन भीम की अनुपस्थिति में जटा नामक राक्षस युधिष्ठिर, नकुल, सहदेव तथा द्रौपदी को हर के ले गया। भाइयों और द्रौपदी का हरण देख भीमसेन कुपित हो उठे और उससे कठोर वचन कहे, जिससे वह भीम से युद्ध करने के लिए उद्यत हो गया और भीम द्वारा मारा गया। **संदर्भ** : महाभारत-वन पर्व, अ० 157

(9) भीम और द्रौपदी द्वारा दुर्योधन की हंसी उड़ाना

मयदानव ने पाण्डवों को एक सभाभवन भेंट में दिया था, जिसकी रूपरेखा विमान जैसी थी। वह भवन शिल्प-कौशल का अच्छा नमूना था। जब दुर्योधन उस सभाभवन में गया तो उसको जल में स्थल और स्थल में जल का भ्रम उत्पन्न होने पर दुर्योधन के पैर फिसलने लगे। इस समय भीमसेन ने दुर्योधन को गंवार सिद्ध करते हुए श्रीकृष्ण के सामने उसकी हंसी उड़ाई। तब से दुर्योधन को पाण्डवों से ईर्ष्या हो गई।

'भागवत पुराण' के अनुसार दुर्योधन के जल में गिरने पर द्रौपदी ने हंसी उड़ाते हुए व्यंग्य किया 'अंधे का पुत्र अंधा ही तो होगा। इस अपमान के कारण ही दुर्योधन ने द्रौपदी का भरी सभा में नग्न कर घोर अपमान करने का प्रयास किया। **संदर्भ** : महाभारत-आदि पर्व, अ० प्रथम, सभा पर्व, अ० 45-47; भागवत-10/75

(10) भीम द्वारा जीमूत नामक मल्ल का वध

मत्स्यदेश में ब्रह्माजी के पूजा के अवसर पर विराट नगर में चारों दिशाओं से कुश्ती लड़ने के लिए हजारों मल्ल एकत्रित हुए। वहां एक बहुत बड़ा पहलवान दूसरे को अपने साथ लड़ने के लिए ललकारा था। उससे कोई भी पहलवान लड़ने को तैयार नहीं था। तब मत्स्य नरेश ने अपने रसोइये को उस पहलवान से लड़ाने का निश्चय किया। तब बल्लभ रसोइये के रूप में विराट नगरी में कार्य कर रहे भीमसेन ने अखाड़े में उतरकर उस जीमूत नामक मल्ल को मार दिया। **संदर्भ** : महाभारत-विराट पर्व, अ० 13

(11) भीम द्वारा सुशर्मा का निग्रह

मत्स्यदेश के राजा विराट के सेनापति कीचक के मारे जाने की सूचना मिलने पर त्रिगर्त देश के राजा सुशर्मा के प्रस्ताव से त्रिगर्तों और कौरवों ने मत्स्य देश पर आक्रमण कर दिया और विराट की गौओं को अपने अधिकार में कर सुशर्मा विराट को पकड़कर ले गया। तब पाण्डवों ने जाकर विराट को सुशर्मा से छुड़वाया तथा भीम ने सुशर्मा को पकड़ लिया और उसे रस्सियों से बांधकर ले आए। उसे युधिष्ठिर के कहने से भीम ने छोड़ दिया। **संदर्भ** : महाभारत-विराट पर्व, अ० 30-31

(12) भीम का कुंभकर्ण की खोपड़ी में डूबना

भीमसेन को अपने बल पर गर्व हो गया था। एक बार वे चलते हुए ठोकर खाकर एक गड्ढे में गिर पड़े और डूबने लगे। लोगों ने उन्हें मुश्किल से बचाया। वह गड्ढा कुंभकर्ण की खोपड़ी में जल भरने से बना था। यह जानकर भीमसेन का गर्व दूर हुआ। **संदर्भ** : लोक-मानस-पद्मावत की संजीवनी-टीका, पृ० 590

भीष्म सम्बन्धी कथाएं

(1) भीष्म का ब्रह्मचारी रहना

गंगा के शान्तनु के पास से चले जाने पर कुछ दिनों के बाद वे धीवर कन्या मत्स्यगंधा पर आसक्त हो गए। उनके विवाह का प्रस्ताव भेजने पर धीवर अपनी कन्या का इस शर्त पर विवाह करने को तैयार हुआ कि मत्स्यगंधा का ही पुत्र राज्य अधिकारी बनाया जाए। इस विवाह के लिए शान्तनु-पुत्र भीष्म ने आजन्म ब्रह्मचारी रहने और राज्य न लेने की प्रतिज्ञा की थी तथा वे आजन्म ब्रह्मचारी रहे। **संदर्भ** : महाभारत-आदि पर्व, अ० 100/95-17

(2) भीष्म द्वारा अम्बा हरण : भीष्म और परशुराम युद्ध

भीष्म काशी नरेश की तीन पुत्रियों का हरण करके अपने भाई विचित्रवीर्य के लिए हस्तिनापुर में ले आये थे। अम्बा शाल्व को मन में वरण कर चुकी थी। अतः उसके आग्रह पर भीष्म ने उसे शाल्व के पास भेज दिया, लेकिन शाल्व ने उसे अस्वीकार कर दिया। भीष्म ने उसे स्वीकार नहीं किया। भीष्म से प्रतिशोध लेने के लिए वह परशुराम के पास गई। परशुराम ने भीष्म से अम्बा को स्वीकार करने को कहा। भीष्म द्वारा परशुराम का कहा न मानने पर भीष्म और परशुराम में घोर युद्ध हुआ और वे दोनों तुल्य

विजयी हुए । **संदर्भ** : महाभारत-उद्योग पर्व, अम्बा उपाख्यान; भागवत-9/22/2/24, 10/60/47

(3) भीष्म द्वारा कृष्ण की प्रतिज्ञा भंग करना भीष्म का भयंकर युद्ध

महाभारत के युद्ध के समय कृष्ण ने यह प्रतिज्ञा की थी कि वे युद्ध में शस्त्र धारण नहीं करेंगे । लेकिन भीष्म ने इतना भयंकर युद्ध किया कि कृष्ण क्रोधित होकर भीष्म के ऊपर चक्र सुदर्शन लेकर दौड़ पड़े और उन्हें अपनी प्रतिज्ञा भंग करनी पड़ी । **संदर्भ** : महाभारत-भीष्म पर्व, अ० 106; भागवत-1/9/37-38

(4) भीष्म पराजय

भीष्म ने महाभारत के युद्ध में दस दिन तक भयंकर युद्ध किया । काशीराज की कन्या अम्बा जो दूसरे जन्म में शिखण्डी बनी थी, उसके सामने आने पर हथियार न उठाने के प्रण की पूर्ति के लिए भीष्म ने अस्त्र नहीं उठाए तथा शिखण्डी और अर्जुन के बाणों से घायल होकर शरशय्या पर लेट गये । भीष्म की इच्छानुसार अर्जुन ने अभिमंत्रित बाणों से उनका सिरहाना लगाकर सिर ऊंचा किया । **संदर्भ** : महाभारत-भीष्म पर्व-108-17; भागवत-1/9/10/78; अग्नि, अ० 14

(5) भीष्म का पाण्डवों का वध न करने का कथन

भीष्म ने दुर्योधन से पाण्डव पक्ष के अतिरिक्त वीरों का वर्णन करते हुए कहा कि वे अर्जुन, श्री कृष्ण तथा अन्य जो-जो भूपाल हैं, मैं जितनों को देखूंगा उन सबको आगे बढ़ने से रोक दूंगा । अन्य सब राजाओं को जिन्हें युद्ध में पाऊंगा, मारूंगा । परन्तु कुन्ती के पुत्रों का वध कदापि न करूंगा । **संदर्भ** : महाभारत-उद्योग पर्व, अ० 172

(6) भीष्म का शिखण्डी को न मारने का कथन

भीष्म ने दुर्योधन से पाण्डव पक्ष के अतिरथी वीरों का वर्णन करते हुए कहा कि वे पांचालकुमार शिखण्डी को धनुष पर बाण चढ़ाये युद्ध में अपना सामना करते देखकर भी नहीं मारेगा । सम्पूर्ण भूमण्ल में समस्त राजाओं के यहां अपने देवव्रत स्वरूप की ख्याति कराकर वे कभी भी किसी स्त्री की अथवा जो पहले स्त्री रहा है, उस पुरुष को नहीं मारेंगे । यही शिखण्डी पहले स्त्री रूप में उत्पन हुआ था तथा वह कन्या से पुरुष बना है । इसलिए वे उससे युद्ध नहीं करेंगे । **संदर्भ** : महाभारत-उद्योग पर्व, अ० 172

(7) भीष्म का काशीराज की कन्याओं का हरण करना

भीष्म ने सुना कि काशीराज की तीन कन्याएं स्वयंवर में पति का वरण करनेवाली हैं । भीष्म सत्यवती की आज्ञा लेकर वाराणसी गये । वहां एकचित्र नरेश भीष्म की हंसी उड़ाने लगी । तब श्रेष्ठ बलशाली भीष्म ने बलपूर्वक काशीराज की तीन कन्याओं को रथ पर चढ़ा लिया और उनका हरण कर ले आये तथा काशीराज की दो पुत्रियों अम्बिका और अम्बालिका का विवाह विचित्रवीर्य के साथ कर दिया । काशीराज की बड़ी कन्या अम्बा को शाल्व के पास भेज दिया । **संदर्भ** : महाभारत-आदि पर्व, अ० 102, उद्योग-पर्व, 173-85

(8) भीष्म पर दूषित अन्न का प्रभाव

महाभारत युद्ध समाप्त हो गया और धर्मराज युधिष्ठिर एकछत्र सम्राट हो गये। जब एक दिन श्रीकृष्ण की सम्मति से वे द्रौपदी आदि रानियों व भाइयों के साथ युद्ध-भूमि में, जहां भीष्म पितामह शरशय्या पर पड़े सूर्य के उत्तरायण होने की प्रतीक्षा कर रहे थे, के पास गये। युधिष्ठिर के पूछने पर भीष्म पितामह उन्हें वर्ण-आश्रम तथा राजा-प्रजा आदि के विभिन्न धर्मों का उपदेश कर रहे थे। इस धर्मोपदेश को सुनकर द्रौपदी को हंसी आई। तब भीष्म ने द्रौपदी से इस हंसी का कारण पूछा तो द्रौपदी ने कहा—आज तो आप धर्म की ऐसी उत्तम व्याख्या कर रहे हैं, किन्तु कौरवों की सभा में जब दुशासन मुझे नंगी करने लगा था तब आपका यह धर्मज्ञान कहां चला गया था—इस पर भीष्म ने कहा कि मुझे धर्मज्ञान तो उस समय भी था, परन्तु दुर्योधन का अन्यायपूर्ण अन्न खाने से मेरी बुद्धि मलिन हो गई थी। **संदर्भ** : महाभारत

(9) भीष्म को हंसों द्वारा संदेश

महाभारत युद्ध के दसवें दिन भीष्म पितामह के ही बतलाये मार्ग से शिखण्डी की आड़ लेकर अर्जुन ने उन्हें घायल कर दिया और उन्हें रथ में गिरना पड़ा। उस समय सूर्य दक्षिणायण थे। अतः उन्होंने उस समय प्राण त्यागना उचित न समझा तथा अर्जुन द्वारा बनाई गई शरशय्या पर सो रहे थे। उस समय भीष्म की माता भगवती गंगा को भीष्म के घायल होने की बात मालूम हुई तो उन्होंने महर्षियों को हंस के रूप में भीष्म के पास भेजा तथा उनके द्वारा दक्षिणायण सूर्य में प्राण न त्यागने का संदेश भेजा। **संदर्भ** : महाभारत-भीष्म पर्व, अ० 119

भृगु द्वारा विष्णु के पद-प्रहार

एक बार महर्षियों के मध्य में यह विषय उठने पर ब्रह्मा, विष्णु और महेश में कौन श्रेष्ठ है और इसका निर्णय न होने पर भृगु को परीक्षा के लिए नियुक्त किया गया। भृगु पहले शिव के पास गए। पर शिव देवी के पास से भृगु का आगमन सुन बाहर न आए। तब भृगु उन्हें लिंगस्वरूप होने का शाप देकर ब्रह्मा के पास गए। ब्रह्मा ने भी इनका सत्कार न किया तो इन्होंने ब्रह्मा को भी रजोगुणयुक्त होने तथा अपूज्यत्व का शाप दे डाला। इसके बाद वे विष्णु के पास गए। उस समय विष्णु शेषशय्या पर सो रहे थे। उन्होंने जाते ही विष्णु के वक्षस्थल पर पद-प्रहार किया। इस पर भी विष्णु ने क्रोध न कर उनका यथोचित स्वागत किया। तब भृगु ने महर्षियों के मध्य विष्णु को सर्वश्रेष्ठ घोषित किया।

'भागवत' के अनुसार ऋषियों में त्रिदेवी में से श्रेष्ठ का विवाद उठने पर सत्व परीक्षा के लिए पहले भृगु ब्रह्मा के पास गए, पर उन्होंने ब्रह्मा से प्रणाम नहीं किया। इस अशिष्टता के बदले ब्रह्मा ने भृगु को भला-बुरा कहा। फिर वे शिव के पास गए तथा शिव को उन्होंने कुमार्गगामी आदि नामों से सम्बोधित किया। शिव भी त्रिशूल लेकर उन्हें मारने दौड़े। तब भृगु विष्णु के पास गए तथा उन्होंने बैकुण्ठ में लक्ष्मी की गोद में

सो रहे विष्णु के वक्षस्थल पर लात मारी। पर विष्णु में किसी प्रकार का तामस भाव उत्पन्न नहीं हुआ। तब उन्होंने विष्णु को सर्वश्रेष्ठ घोषित किया। **संदर्भ** : पद्म-पुराण-उत्तरखण्ड, अ० 282, 31, 41; भागवत-10/89

भृगु द्वारा विष्णु को शाप

एक बार देवताओं से पीड़ित होकर दैत्य भृगुपत्नी की शरण में गए और अभय प्राप्त कर वहां रहने लगे। भृगुपत्नी ने दैत्यों को आश्रय दिया है यह देखकर क्रोधित होकर विष्णु ने भृगुपत्नी की गर्दन काट दी। तब क्रुद्ध होकर भृगु ने विष्णु को शाप दे दिया कि उन्हें मनुष्य-लोक में जन्म लेना होगा और बहुत समय तक पत्नी-वियोग सहना होगा। **संदर्भ** : वाल्मीकि-उत्तरकाण्ड, सर्ग 51

मंकणक ऋषि की कथा

मंकणक एक ऋषि थे। इनका जन्म वायु द्वारा सुकन्या से हुआ था। इन्होंने सप्त सारस्वत तीर्थ में तपस्या कर सिद्धि प्राप्त की थी। इनके वायुवेग, वायुबल, वायुहन, वायुमण्डल नामक सात पुत्र थे। इनके सभी पुत्र ऋषि हुए। **संदर्भ** : महाभारत-वन पर्व 85/122-25, पद्म-सृष्टि खण्ड, अ० 18

मंसूर की कथा

मंसूर एक प्रसिद्ध सूफी संत थे। उन्हें अनलहक (सोऽहं) का उपदेश करने के कारण सूली पर चढ़ा दिया गया था। यह वरजा के रहने वाले थे। इनके पिता का नाम शेख हुसेन हल्लाज था। यह जाति के धुनिया थे। यह शुद्ध प्रेममार्गी थे, इन पर भारतीय वेदान्त 'सोऽहंवाद' का बड़ा गहरा प्रभाव था। उसी से प्रेरित होकर ये 'अनलहक' कहते थे। इसलिए इनसे कट्टर मुसलमान बहुत रुष्ट थे। उन्होंने बगदाद के शाहेवक्त खलीफा मुक्तदिर से शिकायत की। उसने इन्हें सूली पर चढ़वा दिया। **संदर्भ** : सूफी-कथा

मकरध्वज की उत्पत्ति

लंकादहन के पश्चात जब हनुमान समुद्र में नहाने गये, तब एक मछली (अथवा मकरी) ने उनका स्वेदपान कर लिया, जिससे वह गर्भवती हो गई और उसके एक पुत्र पैदा हुआ।

'आनन्द रामायण' के अनुसार लंकादहन के पश्चात जब हनुमान समुद्र में गए, तो उस समय हनुमान का श्लेष्मा एक मकरी ने खा लिया, जिससे उसके एक पुत्र मकरध्वज पैदा हुआ।

अन्य रामकथाओं के अनुसार लंका से वापस आते हुए हनुमान मकरी के साथ सम्भोग करते हैं, जिससे उसके पुत्र पैदा हुआ। **संदर्भ** : जैमिनी-भारत; नर्मदा-कथा कोश (गुजराती) **आनन्द-रामायण-सारखण्ड-11**

मत्स्यावतार

मत्स्यावतार का उल्लेख पुराणों में विविध रूपों में मिलता है। विष्णु पुराण में मत्स्यावतार का सम्बन्ध प्रजापति से स्थापित किया गया है। इसके अतिरिक्त पुराणों में इसे विष्णु के प्रमुख दस अवतारों में से सत्ययुग में हुआ प्रथम अवतार माना जाता है, परन्तु अवतार के हेतु में विविधता मिलती है। कहीं वैवस्वत मनु की, कहीं प्रलय में सत्यव्रत मनु तथा वेद की रक्षा के लिए दिति पुत्र की रक्षा के लिए और कहीं हयग्रीव शंकासुर या मकरासुर को मारकर वेद के उद्धार के लिए, कहीं विष्णु के मत्स्यावतार धारण करने का उल्लेख मिलता है। **संदर्भ** : महाभारत-वनपर्व, अ० 187; पद्म-पुराण-उत्तर खण्ड, अ० 230; विष्णु-1/4/7-8; भागवत-1/3/15, 2/7/12-13, 8-24, 11/4/18; अग्नि, अ० 12; मत्स्य, अ० 1-2; विष्णु धर्मोत्तर पुराण-1/177; गर्ग-संहिता-वृंदावन खण्ड, अ० 1

मतंग को ब्राह्मणत्व की प्राप्ति

मतंग ब्राह्मणी के पेट से शूद्रजातीय नाई द्वारा पैदा किया गया था, अतः उसका ब्राह्मणत्व नष्ट हो गया था। तब उसने ब्राह्मणत्व को प्राप्त करने के लिए इन्द्र की घोर तपस्या की। इन्द्र ने उसे ब्राह्मणत्व देने से मना कर दिया। तब उसने ब्राह्मण और क्षत्रियों के विरोध से रहित हो सर्वत्र पूजा एवं सत्कार का वर देने के लिए कहा। इन्द्र ने उसे स्त्रियों से पूजनीय होने और 'छन्दोदेव' के नाम से ख्याति होने और तीनों लोकों में अनुपम कीर्ति का विस्तार होने का वर दिया। **संदर्भ** : महाभारत-अनुशासन पर्व, अ० 27-29

मधु-कैटभ का वध

मधु और कैटभ दोनों विष्णु के कान के मैल से उत्पन्न हुए थे। इन्होंने सारे संसार को अपने कुकृत्यों से त्रस्त कर दिया। तब विष्णु ने इनका वध करने के लिए युद्ध किया। इन दोनों से विष्णु का हजारों वर्षों तक युद्ध चलता रहा। अन्त में महादेवी की अनुकम्पा से विष्णु ने इनका वध कर दिया।

मधु-कैटभ के सम्बन्ध में पुराण साहित्य में अनेक प्रकार की कथाएं मिलती हैं। 'महाभारत' के अनुसार "एक समय भगवान विष्णु प्रलय-काल में शेषशय्या पर सो रहे थे। उस समय मधु-कैटभ नामक दो असुरों ने विष्णु के नाभि-कमल पर बैठे ब्रह्मा, को डराना शुरू कर दिया। तब ब्रह्मा ने कमल-नाल हिलाकर विष्णु को जगाया और विष्णु ने जागकर मधु-कैटभ से वर मांगने के लिए कहा। उन्होंने अहंकारवश विष्णु से स्वयं ही वर मांगने को कहा। तब विष्णु ने उनसे अपने हाथों मारे जाने का वर मांगा और वरस्वरूप उन्होंने अपनी जंघाओं पर उन्हें रखकर चक्र से उनका सिर काट डाला।

'महाभारत' की शान्ति पर्व की कथा के अनुसार मधु-कैटभ धर्मनाश के लिए ब्रह्मा से

वेदों को छीनकर रसातल को भाग गये तब नारायण ने हयग्रीव का रूप धारण कर इन दैत्यों से युद्ध कर इन्हें मारा। तत्पश्चात ब्रह्मा ने सृष्टि की रचना की।

'पद्मपुराण' में मधु-कैटभ की क्रमश: तमोगुण और रजोगुण से उत्पत्ति दर्शाई गई है। सृष्टि कार्य में प्रवृत्त देख इन्होंने ब्रह्मा से युद्ध करना चाहा। तब नारायण-रूप ब्रह्मा ने कई योजनवाली भुजा बनाकर इन्हें पकड़ लिया। इस पर इन्होंने भगवान से वर मांगने को कहा। भगवान ने इनसे अपने हाथों मारे जाने का वर मांग लिया तब मधु-कैटभ ने अपनी मृत्यु की अभिलाषा ऐसे स्थल पर की, जहां कोई न मरा हो। तदनुसार भगवान ने उन्हें अपनी जांघ पर रखकर दोनों को मार दिया।

'वायु पुराण' के अनुसार ब्रह्मा मधु-कैटभ से भयभीत होकर क्षीर सागर के अन्दर सोये भगवान विष्णु को जगाते हैं। तब विष्णु ने ब्रह्मा की रक्षा के लिए दो वीर भाई विष्णु और जिष्णु उत्पन्न किये। तब युद्ध करते हुए विष्णु ने मधु को, जिष्णु ने कैटभ को मारा।

'शिव-पुराण' के अनुसार मधु-कैटभ भगवान के कान के मैल से उत्पन्न हुए। उन्होंने उत्पन्न हो ब्रह्मा को मारना चाहा। तब ब्रह्मा के कहने पर विष्णु इन दोनों से युद्ध को उद्यत हुए। पांच हजार वर्षों तक युद्ध चला, पर विष्णु इन्हें मार न पाए तब ब्रह्मा की स्तुति पर महामाया ने इनके वध का वर दिया। तब दैवीमाया से मोहित हो इन्होंने विष्णु के युद्ध से प्रसन्न हो वर मांगने को कहा तब विष्णु ने अपने हाथों मारे जाने का इनसे वर मांगा। इन दैत्यों ने जलरहित स्थान पर अपनी मृत्यु की याचना की तब विष्णु ने इन दोनों का सिर अपनी जांघ पर रखकर चक्र से काट दिया।

'देवीभागवत पुराण' के अनुसार 'देवी भगवती' से मधु-कैटभ इच्छा-मृत्यु का वर प्राप्त करते हैं। अन्य पुराणों में लगभग मूल कथा पूर्व ही है। **संदर्भ** : महाभारत-वनपर्व, अ० 203, शान्तिपर्व, अ० 348; पद्मपुराण-सृष्टि खण्ड, अ०7,33; वायु-पुराण, अ० 25; शिव पुराण-उमा-संहिता, अ० 45; मार्कण्डेय पुराण, अ० 78; ब्रह्मवैवर्त पुराण-ब्रह्मखण्ड, अ० 4, श्लोक-27-29; कूर्म पुराण-पूर्वार्ध, अ० 10; मत्स्य पुराण, अ० 170; देवी भागवत-प्रथम स्कन्ध; अ० 6-9; कालिका-पुराण, अ० 6

मनु और शतरूपा की उत्पत्ति

ब्रह्मा ने अनेक स्थावर और जंगम प्राणियों की सृष्टि की, परन्तु जब उनकी प्रजाओं की वृद्धि न हुई तो वे तमोगुण से आवृत होकर दुखी होने लगे। तत्पश्चात उन्होंने रज एवं सत्व गुणों से आवृत होकर तमोगुण का आत्मा में साक्षात्कार किया। सत्वगुण से युक्त रजोगुण ने तमोगुण को दूर किया। वह तमोगुण दो भागों में विभक्त हो गया। इससे अधर्माचरण एवं अशुभ लक्षणों वाली हिंसा उत्पन्न हुई। तत्पश्चात ब्रह्मा ने उस शरीर को छोड़ दिया। तदनन्तर पुरातन पुरुष ने पुनः देह के दो भाग किये। आधे भाग से पुरुष एवं आधे भाग से नारी उत्पन्न हुई। पुरुष स्वायम्भुव मनु नाम से प्रसिद्ध हुए और नारी शतरूपा कहलाई। इनके प्रियव्रत एवं उत्तानपाद नामक दो पुत्र और देवहूती,

आकूति और प्रसूति श्रेष्ठ कन्याएं हुईं। ये प्रियव्रत को राज्य देकर वन में चले गये। संदर्भ : ब्रह्म, अ० 2; विष्णु-1/7/16-19; भागवत-8/1/1-5; कूर्म-1/8; मत्स्य, अ० 3

मनु की कथा

मनु ब्रह्मा के प्रथम पुत्र और पृथ्वी के प्रथम सम्राट थे। इनकी राजधानी बहिष्मती थी। शतरूपा इनकी पत्नी, प्रियव्रत और उत्तानपाद पुत्र एवं देवहूती, आकूति और प्रसूति पुत्रियां थीं। ये प्रियव्रत को राज्य देकर वन में चले गए थे। **संदर्भ** : ब्रह्म-अ० 2; विष्णु-1/7/16-19; भागवत-8/1/1-5

मय दानव द्वारा सभा-भवन का निर्माण

पुराणों में अनेक स्थानों पर मय का उल्लेख मिलता है। इसे यहां पर एक बड़ा कारीगर एवं असुरों और दैत्यों का शिल्पी बताया गया है। इसने इन्द्र की स्वर्ग की सभा का निर्माण किया था, जिसमें दुर्योधन जल को स्थल और स्थल को जल समझकर भ्रमवश गिर पड़ा था।

खाण्डव-दहन के समय मयासुर जब बच गया तो उसने अर्जुन से कहा कि आपने मेरी भगवान श्रीकृष्ण और अग्निदेव से रक्षा की है, अतः आप मुझे बताइये कि इस उपकार के बदले में मैं आपकी क्या सेवा करूं। मैं दानवों का विश्वकर्मा तथा शिल्पविद्या का महान पण्डित हूं। मैं आपके लिए किसी वस्तु का निर्माण करना चाहता हूं। तब अर्जुन ने यह कहकर कि मैं तुम्हारे से कोई काम नहीं कराना चाहता। तुम कोई काम श्रीकृष्ण का कर दो और यह कहकर उसने उसे श्रीकृष्ण के पास भेज दिया। श्रीकृष्ण के पास जाकर मयासुर ने उनसे काम बताने का अनुरोध किया तो श्रीकृष्ण ने मयासुर से कहा कि यदि वह उनका कोई प्रिय कार्य करना चाहता है तो वह युधिष्ठिर के लिए एक ऐसे सभा-भवन का निर्माण करे, जिसको देखकर मनुष्य विस्मित हो उठें और उसका कोई अनुकरण न कर सके। मयासुर ने श्रीकृष्ण का आदेश सुनकर उनकी रुचि के अनुसार सभा-भवन बनाने का निश्चय किया। तदन्तर श्रीकृष्ण कुन्ती और युधिष्ठिर से विदा लेकर और सुभद्रा को समझाकर द्वारका को चल पड़े। **संदर्भ**: महाभारत-सभापर्व, अ० 1-4; भागवत-2/7/31, 10/55/21, 7/48, 50/27, 75/34-37; मत्स्य-129,131/25-70,134/9-30, 135/3-40, 173/2-3, 177/3-6

मय दानव की कथा

दिती के पुत्र मय ने हेमा नामक अप्सरा के रूप पर मुग्ध होकर उससे विवाह किया। उसके हेमा से मायावी व दुन्दुभी नामक दो पुत्र तथा मन्दोदरी नामक एक कन्या उत्पन्न हुई। कुछ समय पश्चात देव-कार्य के लिए हेमा 13 वर्ष के लिए स्वर्ग में चली गयी। मय ने उसके विरह का दुःख दूर करने के उद्देश्य से अपनी विचित्र निर्माण शक्ति के बल से हीरक-वैदूर्य नीलमणियों से खचित एवं स्वर्णमय पुर बनाया तथा उसमें कुछ समय तक

रहा। एक समय वन में रावण से भेंट होने पर उसने रावण को ऋषिकुल में उत्पन्न जानकर उसकी इच्छा से मन्दोदरी का विवाह रावण से कर दिया और रावण को एक अमोघ शक्ति दी। इसी शक्ति के आघात से लक्ष्मण युद्ध में मूर्च्छित हुए। **संदर्भ :** वाल्मीकि रामायण, उत्तर काण्ड सर्ग-21

मयूरध्वज का बलिदान

जिस समय युधिष्ठिर ने अश्वमेध यज्ञ प्रारम्भ कर अश्वमेधीय अश्व छोड़ा, उसी समय रत्नपुरी के अधिपति मयूरध्वज ने भी अश्वमेध यज्ञ का घोड़ा छोड़ा। मणिपुर में दोनों की मुठभेड़ हो गई। पाण्डवों के घोड़े की रक्षा में श्रीकृष्ण और अर्जुन थे। युद्ध में ताम्रध्वज अर्जुन को परास्त कर दोनों अश्वों को अपने पिता के पास ले गया। मयूरध्वज श्रीकृष्ण का परम भक्त था। जब अर्जुन की मूर्छा टूटी, तब वे बहुत व्यग्र हो उठे। भक्त परवश प्रभु ने ब्राह्मण का वेश बनाया और अर्जुन को अपना चेला बनाया और राजा मयूरध्वज के पास जाकर श्रीकृष्ण ने कहा कि 'मेरे पुत्र को सिंह ने पकड़ लिया है तथा बहुत अनुनय-विनय करने पर उसने यह स्वीकार किया है कि यदि राजा मयूरध्वज अपने दाक्षीणांग से अपनी स्त्री और पुत्र को आरा द्वारा चिरवाकर दे सकें तो तुम्हारे पुत्र को छोड़ सकता हूं।' राजा ने ब्राह्मण रूप श्रीकृष्ण का प्रस्ताव मान लिया और दो खम्भों के बीच में प्रभु का नाम लेते हुए बैठ गये। आरा लेकर रानी और उनका पुत्र ताम्रध्वज चीरने लगा। तब श्रीकृष्ण ने अपने आपको प्रकट कर मयूरध्वज से वर मांगने के लिए कहा। मयूरध्वज ने प्रभु चरणों में निश्चल प्रेम और भविष्य में किसी की ऐसी कठोर परीक्षा न लेने की प्रार्थना की। श्रीकृष्ण और अर्जुन वहां तीन दिनों तक अतिथि के रूप में रहे और घोड़ा लेकर वहां से आगे बढ़े। **संदर्भ :** जैमिनीय अश्वमेध-44-47

मरुत का अपने गुरु को त्यागना

मरुत चन्द्रवंशी राजा अविक्षित का पुत्र था। बृहस्पति इसके पुरोहित थे। इसका इन्द्र से विरोध रहता था। अतः इन्द्र ने बृहस्पति को इस बात पर राजी कर लिया कि वे मरुत का यज्ञ कार्य न करें। कुछ समय के बाद मरुत ने यज्ञ करना चाहा। उस समय बृहस्पति ने यज्ञ कार्य करने से मना कर दिया। इसने नारद के कहने के अनुसार संवर्त को अपना गुरु बना लिया और बृहस्पति को त्याग दिया। इस यज्ञ में मरुत ने संवर्त को बहुत-सा धन दिया। **संदर्भ :** महाभारत, वनपर्व; विष्णु-4/1/31-33; गर्ग-संहिता, विश्वजित खण्ड, अ० 1

मरुतों की उत्पत्ति

दैत्यों की माता दिति ने भगवान विष्णु द्वारा देवासुर संग्राम में अपने पुत्र-पौत्रादिकों के मारे जाने पर शोक-विह्वल होकर स्यमन्त पंचक क्षेत्र में अपने पति की सेवा में निरत रहकर घोर तपस्या की तथा वसिष्ठ आदि ऋषियों के बताने पर मदनद्वादशी का व्रत

किया। उसके व्रत से प्रसन्न होकर कश्यप ने उससे वर मांगने के लिए कहा। इस पर दिति ने ऐसा पुत्र प्राप्त करने का वर मांगा जो इन्द्र का वध कर सके। तदनुसार कश्यप ने दिति में गर्भाधान किया। इन्द्र को जब इस बात का पता चला तो उसने दिति के गर्भ में घुसकर वज्र से गर्भ के सात टुकड़े कर दिये। वे सात टुकड़े सात बालकों के रूप में रोने लगे, तब इन्द्र ने उन सात को भी सात-सात हिस्सों में काट दिया; और वे उनचास शिशुओं में परिवर्तित हो गये और रुदन करने लगे। इस प्रकार दिति के उनचास मरुत उत्पन्न हुए। इन्द्र ने उन्हें 'मा रुदत' 'मा रुदत' कहकर रोने से चुप कराया था, अतः इनका नाम मरुत पड़ा। इन्द्र के अपने अपराधों की क्षमा मांग लेने पर दिति ने इन्द्र को क्षमा कर दिया और इन्द्र ने इन मरुतों को देवताओं की समानता का पद प्रदान कर दिया। ब्रह्म पुराण के अनुसार निमुचि के छोटे भाई मय के कहने से दिति के गर्भ में घुसकर उसके गर्भ के टुकड़े कर दिये। **संदर्भ** : वाल्मीकि-1/46; ब्रह्म, अ० 124; मत्स्य, अ० 7, 146

महर्षि और कुत्ते की कथा

किसी महान निर्जन वन में एक महर्षि रहते थे। वहां पर एक ग्रामीण कुत्ता उस मुनि के पास आकर रहने लगा। वह मुनि में अनुरक्त था, मुनि का भी उसमें स्नेहभाव उत्पन्न हो गया। एक दिन मुनि के आश्रम में एक चीता आया, जो उस कुत्ते को पकड़ना चाहता था। कुत्ते ने यह बात जब मुनि को बताई तो उन्होंने उसे चीता बना दिया। तब एक दिन भयंकर बाघ ने उसका रक्त पीने की इच्छा से उस चीते का पीछा किया, तो मुनि ने इस चीते को बाघ बना दिया। एक दिन वहां एक मदोन्मत्त गजराज आया, जिससे भयभीत होकर वह मुनि की शरण में फिर आया तब मुनि ने उसे गजराज बना दिया। तत्पश्चात वहां उस गजराज के केशरी सिंह के आने पर उसे जंगली सिंह बना दिया। एक दिन उस मुनि-आश्रम में जंगली-शरभ उस सिंह को मारने आया तो उसे मुनि ने शरभ बना दिया। तब एक दिन उस शरभ ने यह सोचकर कि यदि इस मुनि को मार दूंगा तो मैं शक्तिशाली रूप में इस आश्रम में रहूंगा। मुनि ने अपने तपोबल से उस शरभ के मनोभाव को जानकर उसे पुनः कुत्ता बना दिया। **संदर्भ** : महाभारत, शान्तिपर्व, अ० 116

महाप्रलय का वर्णन

जब प्रलय का समय आता है, तब आकाश में ऊपर से सूर्य और नीचे से अग्नि की सात ज्वालाएं संसार को भस्म करने लगती हैं। उस समय यह सारा जगत ज्वालाओं से व्याप्त होकर जाज्वल्यमान होकर दिखाई देने लगता है। वायु अपने महान वेग से सम्पूर्ण आकाश को क्षुब्ध कर डालता है। जल चारों ओर से उमड़ पड़ता है और उसमें उत्ताल तरंगें उठने लगती हैं। वह सम्पूर्ण विश्व को अपने में निमग्न करके लहराता रहता है। **संदर्भ** : महाभारत, शान्ति पर्व, अ० 233

महाभारत युद्ध : कुरुक्षेत्र

महाभारत युद्ध कौरव और पाण्डवों के मध्य में लड़ा गया था, जिसमें अठारह अक्षौहिणी सेना अठारह दिनों में समाप्त हो गई थीं । पाण्डवों की ओर से भीम और अर्जुन मुख्य योद्धा थे तथा कौरवों की ओर से भीष्म और कर्णादि । **संदर्भ** : महाभारत; विष्णु-5/37/3; भागवत-1/9/55

महाभारत के युद्ध में भालई के बच्चों की रक्षा

भालई नामक पक्षी ने कुरुक्षेत्र में अण्डे दिये । दूसरे दिन वहां पर महाभारत का युद्ध प्रारम्भ हो गया । इसे देखकर भालई दम्पति बहुत दुःखी हुए और उन्होंने भगवान से अपने बच्चों की रक्षार्थ प्रार्थना की । दूसरे दिन जैसे ही युद्ध प्रारम्भ हुआ, एक हाथी का घंटा टूटकर इनके ऊपर गिर पड़ा और इन अण्डों को ढक लिया । लगातार अठारह दिन तक युद्ध होता रहा तथा अण्डे इसी घण्टे के नीचे सुरक्षित रहे। इस प्रकार पक्षी की विनती पर भगवान ने उसके अण्डों की रक्षा की । **सन्दर्भ** : लोक-कथा (सूर-सागर)

महिषासुर-मुकन्द युद्ध

देवासुर संग्राम के समय अन्य अपने साथी दैत्यों के मारे जाने पर महिषासुर युद्ध के लिए तैयार हुआ । उसने आकर विष्णु के ऊपर आक्रमण किया तथा शक्ति से गरुड़ पर भी वार किया पर विष्णु ने इसके अस्त्रों को निरर्थक करते हुए घायल कर दिया एवं युद्ध क्षेत्र से भाग जाने के लिए कहा । क्योंकि इसे ब्रह्मा ने वर दिया था कि तुम पुरुष के हाथ से नहीं मारे जा सकोगे। **सन्दर्भ** : मत्स्य-152/71-24

महिषासुर-वध

देवी के सम्बन्ध में सर्वप्रथम उल्लेख यजुर्वेद में मिलता है, यहां देवी को परब्रह्म बताया गया है, परन्तु देवी के महत्त्व का प्रतिपादन पुराणों से मिलता है तथा यहां उसका संबंध महिषासुर के साथ जोड़ दिया गया है । शिव-पुराण के अनुसार रंभ के पुत्र महिषासुर के अत्याचारों से परेशान होकर समस्त देवता ब्रह्मा के पास गये । क्योंकि उसे कोई भी पुरुष नहीं मार सकता था, अतः विष्णु के आदेश से सभी देवताओं ने अपना-अपना तेज निकालकर एक देवी को पैदा किया, जिसने महिषासुर का वध किया ।

'पद्म-पुराण' के अनुसार आद्याशक्ति देवी ने पुष्कर पर्वत पर तप करते हुए सहस्त्रों अन्य नारियों को उत्पन्न किया । उस समय नारद ने मुख से देवी के गुणों का वर्णन किया । इस पर महिष ने देवी को प्राप्त करने के लिए अपना दूत उसके पास भेजा । दूत ने देवी के पास जाकर महिष की उत्पत्ति की कथा सुनाई, लेकिन देवी की जया नामक प्रतिहारी ने दूत को यह कहकर वापस कर दिया कि देवी तो क्या उनके साथ की कन्या भी प्राप्त नहीं हो सकती । तब उस दैत्य से देवी और कन्याओं का घोर युद्ध हुआ और

देवी ने महिष का शूल मार कर वध कर दिया ।

देवी भागवत में महिषासुर का अग्नि से उत्पन्न होना वर्णित है ।

वराह पुराण में महिषासुर सुपार्श्व के शाप से माहिष्मती में उत्पन्न होना उल्लिखित है ।

'वामन पुराण' के अनुसार महिषासुर के दूत चण्ड-मुण्ड ने विन्ध्यागिरि पर्वत पर देवी को देख उसकी अपूर्व सुन्दरता पर आकर्षित हो अपने राजा को इस सम्बन्ध में जाकर बताया । तब महिषासुर ने दुन्दुभि नामक अपने दूत को देवी के समीप भेजा । पर देवी ने यह कह दूत को वापस कर दिया कि हमारे कुल में यह रिवाज है कि जो हमें युद्ध में जीतेगा वह मेरा पति बनेगा । तब महिषासुर ने देवी से युद्ध किया तथा उसके हाथों युद्ध में मारा गया । **सन्दर्भ** : शुक्ल यजुर्वेद (वाजसनेयी संहिता) 3/57; पद्मपुराण, सृष्टिखंड, अ० 10/125; शिव-पुराण, उमा संहिता, अ० 46; मार्कण्डेय पुराण, अ० 79-80; वराह-पुराण, अ० 95; स्कन्द-पुराण, माहेश्वर खण्ड, अरुणाचल माहात्म्य-पूर्वार्द्ध, 10-11, ब्रह्म-खण्ड, सेतु माहात्म्य, अ० 83, नागर-खण्ड, प्रभास-खण्ड, काशीखण्ड; वामन-पुराण, अ० 17-20; कालिका-पुराण, अ० 45-60; देवी भागवत-5/2-19

मांधाता की कथा

यह सूर्यवंशी राजा युवनाश्व के पुत्र और अयोध्या के अधिपति थे । यह अत्यन्त लोकप्रिय शासक, विजेता, यज्वा और सच्चरित्र थे । इनके जन्म के अवसर पर इन्द्र ने 'माम् धात्' कहते हुए इन्हें अपनी अंगुली पिलाई थी । इसी से इनका नाम मांधाता हुआ । इन्होंने अश्वमेधी और सौ राजसूय यज्ञों का आयोजन किया । जिनमें अनेक जनपद ब्राह्मणों को दान में दिये । इन्होंने अनेक राजाओं को जीतकर विशाल राज्य स्थापित किया । **संदर्भ** : पद्म-स्वर्गखण्ड, अ० 25; विष्णु-4/2; भागवत-9/6/30-31; महाभारत, वन-पर्व, अ० 126; द्रोण-पर्व, अ०-62

मातलि की पुत्री गुणवेशी का नागराज सुमुख से विवाह

इन्द्र के सारथी मातलि की गुणवेशी नाम की कन्या थी । जब वह विवाह के योग्य हुई, तब मातलि को उसके विवाह की चिंता हुई । इन्होंने देवलोक और मनुष्य लोक दोनों में अच्छी तरह घूम-फिरकर कन्या के लिए वर का अन्वेषण किया, पर वहां कोई वर पसंद न आया । तब मातलि ने अपनी पत्नी सुधर्मा के साथ सलाह कर नागलोक में जाने का विचार किया और वे नारद के साथ वरुण लोक में गये । वहां नारद ने इन्हें पाताल लोक के अनेक आश्चर्यजनक दृश्यों को दिखाया तथा मातलि वहां पर अपनी पुत्री के विवाह के लिए नागराज आर्यक के पौत्र सुमुख को चुना । जब नारद ने यह प्रस्ताव आर्यक के सम्मुख रखा तो आर्यक ने बताया कि गरुड़ ने सुमुख के पिता को खा लिया है तथा शीघ्र ही वह इसको भी खा जायेगा । अतः यह शीघ्र ही मृत्यु को प्राप्त होगा, इसलिए गुणवेशी का विवाह सुमुख से करना उचित नहीं । तब मातलि की प्रार्थना पर इन्द्र ने सुमुख को दीर्घ आयु प्रदान की । **संदर्भ** : महाभारत, उद्योग पर्व, अ० 97

मार्कण्डेय द्वारा भगवान के दर्शन

मार्कण्डेय आठ सिद्धों में से एक हैं, जो कि प्रलय-काल में भी नष्ट नहीं होते। इन्होंने शिव की स्तुति कर मृत्यु पर विजय प्राप्त की थी। इसको भगवान ने प्रलय-काल में वट वृक्ष के पत्ते पर सोये हुए दर्शन दिए थे। महाभारत में यह कथा इस प्रकार से वर्णित है।—

'एक बार प्रलय के समय जब चारों ओर पानी ही पानी दिखाई पड़ने लगा। उसी समय अगाध जल-राशि के बीच मार्कण्डेय ने एक विशाल बरगद के पेड़ की एक शाखा पर एक साफ सुन्दर बिछौना देखा, जिसपर एक मनोहर, तेजस्वी, वत्स चिह्नधारी बालक लेटा था। उस बालक ने मधुर स्वर में मार्कण्डेय से कहा, 'हे मार्कण्डेय, मैं तुमको जानता हूं। तुम थककर विश्राम के लिए मेरे पास आए हो, अतः मेरे शरीर में जब तक चाहो विश्राम करो।' ऐसा कहकर उस बालक ने मुंह फैलाया और मार्कण्डेय उसके अन्दर चले गए। मार्कण्डेय ने शिशु-रूप भगवान के पेट में सम्पूर्ण सृष्टि का दर्शन किया और फलाहार करता हुआ लगभग सौ वर्ष तक उनके पेट में घूमते रहे तथा एक दिन भगवान के जुम्हाई लेने पर पेट से बाहर निकलकर आए। **संदर्भ** : महाभारत-वनपर्व, अ० 188-89; ब्रह्म-52-54; भागवत-12/8-10; नारद, अ० 5; मत्स्य, अ० 167; हरिवंश-भविष्य पर्व-1

मित्रावरुण

पुराणों में मित्र और वरुण पहले आदित्य माने जाते हैं। इनके अगस्त्य और वसिष्ठ पुत्र हुए। इन लोगों के प्रीत्यर्थ जब मनु ने एक धार्मिक कृत्य किया, तब इनका जन्म हुआ। **संदर्भ** : भागवत-6/18/5-6, 9/13/6; वायु-85/6-7; ब्रह्माण्ड-3/8/19

मृत्यु की उत्पत्ति

आदि सृष्टि के समय जब प्रजापति ब्रह्मा ने प्रजावर्ग की सृष्टि की, उस समय संहार की कोई व्यवस्था नहीं की थी। इस सम्पूर्ण जगत को प्राणियों से परिपूर्ण एवं मृत्युरहित देखकर वे चिन्तित हो उठे। जब विचार करने से भी उन्हें कोई उपाय न सूझा, तब उनके श्रवण-नेत्र आदि इन्द्रियों से अग्नि प्रकट हो गई तथा उससे सम्पूर्ण चराचर जगत दग्ध होने लगा। उस समय भगवान रुद्र ब्रह्मा की शरण में गए तथा उन्होंने ब्रह्मा से अग्नि का उपशमन करने के लिए कहा। तदनुसार जब ब्रह्मा ने अग्नि का उपशमन किया तब उससे काले और लाल रंग की एक नारी उत्पन्न हुई। ब्रह्मा ने उसे 'मृत्यु' नाम से सम्बोधित कर उसे सृष्टि के संहार का आदेश दिया। **संदर्भ** : महाभारत-द्रोण पर्व

मुद्गल की अतिथि सेवा

मुद्गल कुरुक्षेत्र में शिलोञ्छवृत्ति से जीवन निर्वाह करते थे। दुर्वासा ने एक बार

इनके सत्य की परीक्षा ली। यह अपने सत्य पर अन्त तक डटे रहे। अतः दुर्वासा ने इन्हें स्वर्ग-प्राप्ति का आशीर्वाद दिया। **संदर्भ** : महाभारत-वन पर्व, अ० 200

मुर दानव की कथा

सत्ययुग में तालजंघ का पुत्र मुर दानव महाबली और विलक्षण बुद्धिवाला था। उसने समय पाकर स्वर्ग से देवताओं को मार भगाया और नये देवता बनाकर स्वर्ग को भर दिया। तब सभी देवता एकत्रित होकर शिव के पास गए। शिव ने उनको भगवान विष्णु के पास भेज दिया। भगवान ने देवताओं की रक्षा के लिए अपने शरीर से एक अति सुन्दर रूपवती स्त्री उत्पन्न की। उस सुन्दरी को देखकर मुर उस पर मोहित हो गया और उस पर आक्रमण करने लगा, तो उस सुन्दरी ने मुर को मार दिया : **संदर्भ** : भविष्योत्तर पुराण

राम-सेना को मेघनाद द्वारा नागपाश में बांधना

राम के रावण से हुए युद्ध के समय रावण के पुत्र मेघनाद ने राम-लक्ष्मण को नागपाश में बांध लिया। तब रावण ने सीता को राम-लक्ष्मण की यह दशा दिखाने के लिए पुष्पक विमान में भेजा। उस समय देवताओं ने प्रेरित कर गरुड़ को नागपाश से राम-लक्ष्मण की मुक्ति कराने के लिए भेजा। गरुड़ को आता हुआ देखकर सर्प-रूपी बाण राम-लक्ष्मण को बन्धन मुक्त कर भाग खड़े हुए और गरुड़ के स्पर्श से राम-लक्ष्मण के घाव भर गये। आनन्द-रामायण के अनुसार गरुड़ को राम के नागपाश में बंधने का सन्देह हो गया था। तब राम ने गरुड़ को समझाकर शांत किया; बाल्मीकि-रामायण, युद्ध काण्ड, सर्ग 44; स्कन्द-पुराण-सेतु माहात्म्य वर्णन-अध्याय 44; कृतिवासी-रामायण, आनन्द-रामायण-सर्ग 16 (मनोहर काण्ड)

मेघनाद द्वारा इन्द्र को बन्दी बनाना

एक बार देवताओं को जीतने के लिए रावण मेघनाद को साथ लेकर इन्द्र से स्वर्ग में लड़ने को गया। इन्द्र रावण से युद्ध करने के लिए आगे आया, किन्तु पराजित होने के चिह्न दिखाई देने लगे। मेघनाद को बहुत पहले से ही इच्छानुसार अदृश्य होने का शिव से वर प्राप्त कर चुका था। अतः अदृश्यभाव से लड़कर पहले तो उसने इन्द्रपुत्र जयन्त को पारजित किया और फिर इन्द्र को शस्त्रास्त्रों से जर्जर कर उसे बांध लिया और लंका को ले आया। तब सारे देवता ब्रह्मा के साथ लंका गए और मेघनाद को छोड़ देने के लिए कहा। तब इससे अमरत्व मांगा। आकार वाले सभी पदार्थ नाशवान होने से अमर नहीं होते, अतः कोई अन्य वर मांगो, ब्रह्मा के इस प्रकार से कहने पर मेघनाद ने कहा कि जब भी मैं अग्नि में हवन करूं, तब अग्नि में से अश्वसहित दिव्यरथ निकले। जब तक मैं उस रथ पर आरूढ़ रहूं, तब तक मैं विजयी और अमर रहूं। बिना होम पूरा किए युद्ध करूं तो मारा जाऊं। मैं तप द्वारा नहीं पराक्रम द्वारा अमरत्व चाहता हूं। यह वर देकर ब्रह्मा इन्द्र को मुक्त कराकर ले गए और उसे पुनः इन्द्रपद पर स्थापित किया।

इन्द्र के जीतने से मेघनाद का नाम इन्द्रजीत पड़ा। **संदर्भ :** बाल्मीकि-रामायण-उत्तर-काण्ड-अ० 29-30, आनन्द रामायण-सार-खण्ड सर्ग-13

मेघनाद द्वारा बनावटी सीता का सिर काटना

रावण के पुत्र इन्द्रजीत ने युद्ध के मैदान में वानरों के सामने बनावटी सीता लाकर उसे मार डाला। इससे हनुमान आदि ने उसे बहुत धिक्कारा। हनुमान आदि सीता का वध देख खिन्न होकर युद्ध से लौट आये। हनुमान के मुख से सीता के मार जाने का समाचार सुनकर राम भी मूर्छित हो गया और मूर्च्छा टूटने पर विलाप करने लगे। उस समय विभीषण ने आकर राम को समझाया कि सीता का वध करना कठिन है। सीता को कोई नहीं मार सकता। **संदर्भ :** बाल्मीकि-रामायण-युद्ध काण्ड-81-84

मैत्रेयी का धन का त्याग करना

महर्षि याज्ञवल्क्य के मैत्रेयी और कात्यायनी नामक दो पत्नियां थीं। जब याज्ञवल्क्य संन्यास लेने लगे तो उन्होंने अपनी दोनों पत्नियों को बुलाकर अपनी सम्पत्ति का उन दोनों में बंटवारा करना चाहा, पर मैत्रेयी ने सम्पत्ति लेने से यह कहकर मना कर दिया कि वह धन लेकर अमर नहीं हो सकती है, उसे अमरत्व का साधन बताने की कृपा करें। तब याज्ञवल्क्य ने मैत्रेयी को अमरत्व का आदेश दिया तथा उन्हीं के उपदेश के आधार पर चलकर मैत्रेयी ने परम कल्याण को प्राप्त कर लिया। **संदर्भ :** बृहदारण्यक

मैत्रेय की कीट योनि से मुक्ति

महर्षि व्यास सभी जीवों की गति और भाषा को समझते थे। एक बार वे कहीं जा रहे थे, तब रास्ते में उन्होंने एक कीड़े को बड़ी तीव्रता से भागते हुए देखा। तब व्यास ने उस कीड़े से भागने का कारण पूछा। इस पर कीड़े ने बताया कि कोई बैलगाड़ी इधर आ रही है, कहीं वह मुझे कुचल न डाले, इसलिए तेजी से भाग रहा हूं। इस पर व्यास ने कहा, तुम तिर्यक योनि में हो, तुम्हारे लिए तो मर जाना ही सौभाग्यपूर्ण है, तब कीड़े ने कहा कि महर्षे, मुझे मृत्यु का भय नहीं है, परन्तु कीट योनि से भी बहुत सी अधम योनियां हैं, अतः वह उनमें भी जा सकता है। तब व्यास जी ने उससे कहा कि मैं तुम्हें ब्राह्मण योनि में जब तक न पहुंचा दूंगा, तब तक सभी योनियों से छुटकारा दिलाता रहूंगा। इसे सुनकर कीड़ा मार्ग में लौट आया और रथ के पहिए से दबकर प्राण त्याग दिया तथा उसने अनेक योनियों में जन्म लिया, जहां से व्यास उसे मुक्ति दिलाते रहे। अन्त में वह कीट मैत्रेय नामक श्रेष्ठ मुनि हुआ। **सन्दर्भ :** महाभारत-अनुशासन पर्व, 117-119; स्कन्द पुराण-माहेश्वर खण्ड, कुमारिका खण्ड-44-46

मोहिनी-अवतार

समुद्र-मन्थन के समय निकले अमृत के लिए सुर-असुरों में झगड़ा हो गया था। अतः

विष्णु ने मोहिनी का रूप धारण कर असुरों को अपने सौंदर्य पर मोहित कर लिया तथा अमृत-कलश लेकर देवताओं को अमृत पिला दिया। **संदर्भ** : बाल्मीकि-रामायण-बालकाण्ड; विष्णु-1/9/106-109; भागवत-1/3/7

यम और यमुना का जन्म

विश्वकर्मा की पुत्री संज्ञा सूर्य की पत्नी थी। वह सूर्य के तेज को सहन नहीं कर पाती थी, अतः उसके रूप को देखकर आंखें बन्द कर लेती थी। एक दिन उसे सूर्य ने शाप दे दिया कि वह उसे देखकर आंखों का संयम कर लेती है। अतः उसके प्रजाओं को संयमित करने वाला पुत्र होगा। इसके अनन्तर संज्ञा सूर्य को देखकर आंखें चंचल कर लेती, तब सूर्य ने उसे शाप दे दिया कि वह चंचल दृष्टि कर लेती है, अतः उसके चंचल नदी उत्पन्न होगी। तदनुसार पति के शाप से संज्ञा के गर्भ से यम उत्पन्न हुआ और फिर यमुना नाम की विख्यात नदी उत्पन्न हुई। **संदर्भ** : मार्कण्डेय-पुराण; मत्स्य, अ० 11

यम-यमी की कथा

यम और यमी दोनों सूर्य के यमल पुत्र-पुत्री थे। एक दिन यमी ने यम से प्रणय निवेदन कर रमण करने का आग्रह किया। इस पर यम ने यमी को बार-बार धिक्कारा और उसके प्रस्ताव को अपनी बहिन होने के कारण स्वीकार नहीं किया। परन्तु काममोहित यमी ने यह कह कर कि वे दोनों अलग-अलग कुक्षियों में थे, वे भाई-बहिन नहीं हो सकते, उससे बार-बार आग्रह किया। व्यवस्था के संस्थापक यम उसकी इस दुरभिसन्धि में सहायक नहीं हुए। **संदर्भ** : ऋग्वेद-10/8

यम द्वितीया की कथा

सूर्य की पत्नी संज्ञा अपने पति सूर्य का तेज सहन न करने के कारण अपनी छाया का निर्माण कर उसे अपने पुत्र यमराज और पुत्री यमुना को सौंपकर चली गई। छाया को यमराज और यमुना से प्रेम नहीं था, लेकिन यमराज और यमुना का आपस में बहुत प्रेम था। यमुना अपने भाई यमराज के घर प्रायः जाया करती और उससे उसके सुख-दुःख का हाल पूछती, परन्तु यमराज कभी भी उसके घर नहीं गया। एक बार कार्तिक शुक्लपक्ष की द्वितीया के दिन यमराज अपनी बहिन यमुना के घर गए। वहां उनकी बहिन यमुना ने उनका बहुत ही आदर-सत्कार किया। यमुना के सत्कार से प्रसन्न होकर यमराज ने यमुना से वर मांगने के लिए कहा। यमुना ने तब यह वर मांगा कि वर्ष में इस दिन आप अवश्य आया करें तथा जो भाई इस दिन अपनी बहिन के घर जाकर उसका आतिथ्य स्वीकार करे और उसे उपहार दे तो उसकी सब अभिलाषाएं पूर्ण हों। **संदर्भ** : अग्नि अ० 18; स्कन्द-पुराण

यम कुबेर का दिक्पाल होना

पुराणों के अनुसार पूर्व के इन्द्र, अग्निकोण के वह्नि, दक्षिण के यम, नैर्ऋति के निर्ऋति, पश्चिम के वरुण, वायु-कोण के मरुत, उत्तर के कुबेर, ईशानकोण के ईश, ऊर्द्ध दिशा के ब्रह्मा, अधोदिशा के अनन्त दिक्पाल माने जाते हैं। ये शत्रुओं का नाश करके पृथ्वी की रक्षा करते हैं। इसके साथ ही सुधर्मा, शंखपद, केतुमान और हिरण्यरोमा को भी चार दिशाओं का दिक्पाल माना जाता है। **संदर्भ :** मत्स्य-पुराण 8/9-11, 52, 93;

यमराज का मृत्यु का देवता होना

यम दक्षिण दिशा के दिक्पाल तथा मृत्यु के देवता हैं। इनका अलग लोक 'यमलोक' के नाम से जाना जाता है। मरने के पश्चात जीव को यह उसके शुभाशुभ कृत्यों का धर्मपूर्वक विचार कर उसे स्वर्ग या नरक में भेजते हैं। इन्हें धर्मराज भी कहा जाता है। यमराज का वाहन भैंसा है। ये विश्वकर्मा की पुत्री संज्ञा के गर्भ से उत्पन्न सूर्य के पुत्र हैं और सूर्य के शाप से मनुष्यों के प्राण लेने का कार्य करते हैं। **संदर्भ :** मार्कण्डेय-पुराण;

ययाति की कथा

ययाति का देवयानी से विवाह

एक बार शुक्राचार्य की पुत्री देवयानी और दैत्यों के राजा वृषपर्वा की पुत्री शर्मिष्ठा का आपस में झगड़ा हो गया, जिससे शर्मिष्ठा ने देवयानी को कुएं में धकेल दिया। उसी समय राजा ययाति शिकार खेलते हुए जल की इच्छा से कुएं पर गए तथा कुएं में पड़ी देवयानी को हाथ पकड़कर बाहर निकाला। तत्पश्चात एक दिन देवयानी शर्मिष्ठा दो हजार दासियों के साथ जल में विहार कर रही थी, तब पुनः ययाति की भेंट इससे हुई तब उसने ययाति से अपना स्वामी होने का आग्रह किया, लेकिन ययाति ने यह कहकर मना कर दिया कि ब्राह्मण कन्या से विवाह करने का मुझमें साहस नहीं। तब शुक्राचार्य की आज्ञा से ययाति ने देवयानी को अपनी रानी बनाया। **संदर्भ :** बालमीकि-रामायण उत्तरकाण्ड-सर्ग, 58-59; महाभारत-आदि-पर्व-71,74; ब्रह्म,अ० 12, 146; विष्णु-4/10; भागवत-9/18; मत्स्य, अ० 25; हरिवंश, अ० 96

ययाति को युवावस्था की पुनः प्राप्ति

ययाति के वृषपर्वा दैत्य की पुत्री शर्मिष्ठा तथा शुक्राचार्य की पुत्री देवयानी नामक दो रानियां थीं। शर्मिष्ठा से पुरु और देवयानी से यदु नामक पुत्र हुआ। ययाति पुरु को बहुत प्यार करता था। यह बात उसने अपनी माता देवयानी से कही। शुक्राचार्य का ध्यान करने पर जब वे देवयानी के पास आये तो उन्होंने अपनी पुत्री और उसके पुत्र को दुखी देखकर उन्होंने राजा ययाति को असमय वृद्ध होने का शाप दे दिया। तब भोगों से अतृप्त ययाति ने शर्मिष्ठा से उत्पन्न अपने पुत्र पुरु को वृद्धावस्था देकर युवावस्था

प्राप्त की और सहस्रों यज्ञ कर हजारों वर्ष पृथ्वी का भोगकर पुरु को युवावस्था लौटा दी तथा स्वयं संन्यास लेकर वन को चले गये ।

'महाभारत' के अनुसार देवयानी ययाति का शर्मिष्ठा से अवैध सम्बन्ध जान अपने पिता के पास चली गई । तब उसके पिता शुक्राचार्य ने उसे असमय वृद्ध होने का शाप दे दिया तथा ययाति के प्रार्थना करने पर शुक्राचार्य ने वर दिया कि—अपनी युवावस्था देकर जो उसकी वृद्धावस्था ले लेगा तो वह युवा हो सकता है । तब ययाति ने अपने छोटे पुत्र को वृद्धावस्था देकर उससे युवावस्था प्राप्त की ।

'ब्रह्म पुराण' के अनुसार ययाति के पुत्र पुरु ने शंकर की तपस्या कर अपने पिता की वृद्धावस्था को दूर कराया और अपने अन्य भाइयों को भी शाप-मुक्त कराया । 'पद्मपुराण' के अनुसार ययाति को वृद्धावस्था स्वर्ग में ययाति के मूत्रोत्सर्ग के उपरान्त हाथ-पैर न धोने के कारण प्राप्त हुई थी और उसने युवावस्था अश्रुबिन्दुमती नामक सुन्दरी को वरण करने के लिए अपने पुत्र पुरु से ली थी । **संदर्भ** : बाल्मीकि-रामायण-उत्तरकाण्ड, सर्ग-58-59; महाभारत-आदि पर्व-83; ब्रह्म पुराण, अ० 12, 146; पद्म-पुराण-भूमि खण्ड अ० 64-83; विष्णुपुराण-4/10; वायु पुराण, अ० 93; भागवत-9/18; लिंग पुराण-पूर्वार्ध, अ० 66-67; मत्स्य पुराण, अ० 27-42; ब्रह्माण्ड-मध्यभाग, उपोद्घात-पाद, अ०68

ययाति का स्वर्ग से गिरना

ययाति वैराग्य उत्पन्न होने पर अपने छोटे पुत्र पुरु को राज्य देकर वन को चला गया तथा वहां पर काफी समय तप करके वह स्वर्ग को गया और वहां सुख से रहने लगा । एक समय इन्द्र के पूछने पर उसने देव, मानुष, गन्धर्व और महर्षि आदि सभी से अपने को श्रेष्ठ तपस्वी बताया । तब अहंकार के कारण उसके पुण्य क्षीण हो गए और उसे स्वर्ग में रहने को स्थान न मिला । **संदर्भ** : महाभारत-आदि प० 88, उद्योग पर्व, अ० 120-22; मत्स्य-पुराण, अ० 36-37

यक्ष और युधिष्ठिर का प्रश्नोत्तर

युधिष्ठिर की आज्ञा से नकुल अपने भाइयों के लिए एक सरोवर में पानी लेने गया वहां उससे यक्ष के रूप में स्वयं धर्म ने उसके प्रश्नों का उत्तर देने या पानी न पीने के लिए कहा । पर नकुल ने बिना परवाह किए पानी पी लिया, जिससे वह अचेत हो गया । इसी प्रकार वहां सहदेव, भीम व अर्जुन उस सरोवर का पानी पीने से अचेत होकर गिर पड़े । तब बाद में युधिष्ठिर गए और यक्ष ने युधिष्ठिर से भी वे प्रश्न किए, जिनका उत्तर युधिष्ठिर ने देकर अपने भाइयों को जीवित कर लिया तथा अज्ञातवास में उनके न पहचाने जाने का वर दिया । **संदर्भ** : महाभारत-वन पर्व, अ० 312-14

यवन भिखारी की कथा

किसी एक सूअर के बच्चे ने किसी यवन को राह में धक्का देकर ढकेल दिया । इससे

वह गिर गया और हृदय में अति डरकर जोर-जोर से 'हराम ने मार डाला, हराम ने मार डाला, चिल्लाने लगा।' हराम-हराम कहने से उक्त शब्दों के राम-नाम की समता होने के कारण वह यवन सब प्रकार के दोषों से छूटकर त्रिलोकी नाथ भगवान के धाम को चला गया। **संदर्भ** : भविष्य-पुराण-ब्रह्मखण्ड, 58/40

यादवों का विनाश

एक समय कुछ यादव कुमारों ने विश्वामित्र व दुर्वासा आदि मुनियों का उपहास करने के उद्देश्य से जाम्बवतीनन्दन साम्ब को स्त्री बनाकर उन मुनियों से जाकर पूछा कि इसके गर्भ से क्या उत्पन्न होगा। सर्वज्ञ मुनि दुर्वासा ने इस पर उनसे कहा, मूर्खो, यह अपने पूरे कुल का विनाश करने वाला मूसल उत्पन्न करेगी। भयभीत यादव कुमारों ने जब साम्ब के पेट के कपड़े खोले तो उसमें से एक मूसल निकला, जिसका चूर्ण बनाकर तथा कूटने से बचा एक लोह-खण्ड यादवों ने समुद्र में फेंक दिया। वही लोह-चूर्ण लहरों से बहकर किनारे लगा और एरका नामक घास के रूप में उग आया। लोहे के बचे टुकड़े को मछली निगल गई। जरा नामक व्याध ने उस मछली के पेट से निकले उस टुकड़े को अपने बाण में लगा लिया। इसी बाण से श्रीकृष्ण की मृत्यु हुई तथा सभी यादव भी समुद्र के किनारे मदोमत्त होकर एरका नामक घास से परस्पर आघात करते हुए समाप्त हो गए। **संदर्भ** : महाभारत-मौसल पर्व : अ० 1-3; ब्रह्म, अ० 210; विष्णु-पुराण-5/37/4-50; पद्म-उत्तर खण्ड, अ० 277; भागवत-11/30; ब्रह्म वैवर्त-श्रीकृष्णजन्म खण्ड-अ० 12

याज्ञवल्क्य का गार्गी से शास्त्रार्थ

एक बार महाराज जनक ने एक बहुत बड़ा यज्ञ किया। उसमें उन्होंने एक बार सहस्र सोने से मढ़े हुए सींगोंवाली बढ़िया दुधारी गायों की ओर संकेत करके कहा कि जो ब्रह्मनिष्ठ हो, वह इन गायों को ले जाय। इस पर याज्ञवल्क्य ने अपने शिष्य सोमश्रवा से उन गायों को ले जाने के लिए कहा। इस पर सब ब्राह्मण याज्ञवल्क्य पर बिगड़ गए और उनसे कहा कि क्या हम सबमें तुम्हीं उत्कृष्ट ब्रह्मनिष्ठ हो। याज्ञवल्क्य ने कहा कि ब्रह्मनिष्ठ को तो हम नमस्कार करते हैं, हमें तो गायें चाहिए, इसलिए हमने इन्हें ले लिया है। तब वहां शास्त्रार्थ प्रारम्भ हो गया। याज्ञवल्क्य ने अश्वल, ऋतभ, आर्तभाग, भुज्यु, उषस्त, होकल, उद्दालक आदि सभी के प्रश्नों का उत्तर दिया। तब गार्गी ने ब्राह्मणों से कहा कि मैं इनसे दो प्रशन करती हूं। यदि ये मेरे प्रश्नों का उत्तर दे देंगे तो समझ लीजिए इन्हें कोई नहीं जीत सकता है और गार्गी के प्रश्नों का याज्ञवल्क्य ने संतोषजनक उत्तर दिया। बाद में गार्गी इनकी पत्नी बन गई। **संदर्भ** : बृहदारण्यक, 6/52

युधिष्ठिर से सम्बन्धित कथाएं

युधिष्ठिर द्वारा राजसूय यज्ञ

नारद के कहने से युधिष्ठिर ने श्रीकृष्ण, अपने भाइयों, मुनियों तथा मंत्रियों की सलाह लेकर राजसूय यज्ञ का अनुष्ठान किया। इस यज्ञ को पूर्ण करने के लिए श्रीकृष्ण की सलाह से युधिष्ठिर ने जरासंध का वध करने के लिए उनके साथ अर्जुन और भीमसेन को भेजा। वहां भीमसेन ने जरासंघ को द्वन्द्व-युद्ध में मार दिया और जरासंध के कारागार में बचे राजाओं को मुक्त कराया। इसके साथ ही अर्जुन आदि चारों भाइयों ने दिग्विजय के लिए यात्रा कर अनेक देशों तथा राजाओं को पराजित किया। इस यज्ञ में श्रीकृष्ण ने ब्राह्मणों के चरण धोने का कार्य किया। **संदर्भ :** महाभारत-सभापर्व, अ० 14-25; भागवत, 70-72; अग्नि, अ० 13

युधिष्ठिर का कंक बनना

युधिष्ठिर अपने अज्ञातवास में विराट नगरी में ब्राह्मण के रूप में कंक बनकर रहे थे। वहां पर यह राजा विराट का मनोरंजन कराते थे। **संदर्भ :** महाभारत-विराट पर्व, अ० 8;

युधिष्ठिर को अक्षय पात्र की प्राप्ति

युधिष्ठिर ने अपने पुरोहित धौम्य ऋषि की प्रेरणा से अपने साथ वन में जा रहे विद्वान और ब्राह्मणों के पालन-पोषण में असमर्थ हो सूर्य की स्तुति की। तब प्रसन्न हो सूर्य ने युधिष्ठिर को एक तांबे की बटलोई दी। जिसमें फल, फ़ूल, भोजन करने के अन्य पदार्थ तथा साग आदि की सामग्री तैयार होती थी तथा वह सामग्री तब तक अक्षय रहती थी, जब तक द्रौपदी स्वयं भोजन न कर ले। **संदर्भ :** महाभारत-वन पर्व, अ० 3

युधिष्ठिर का विराट द्वारा अपमान

युधिष्ठिर आदि पाण्डव जब अशाज्ञवास में मत्स्य देश में रह रहे थे, वहां युधिष्ठिर कंक के रूप में द्यूत-सेवक के रूप में विराट के यहां रह रहे थे। उसी समय कौरवों ने विराट की गायों का वलपूर्वक हरण कर लिया। बृहन्नला का सारथी के रूप में अर्जुन ने जाकर विराट के पुत्र उत्तर के साथ उन गायों को छुड़ाया। इस पर उत्तर के सम्बन्ध में विराट की गर्वोक्ति सुनकर गौओं की मुक्ति का कारण बृहन्नला को बताया। इस बात को सुनकर विराट ने युधिष्ठिर के पासा मार दिया। पासे के आघात से उनकी नाक से रक्त की धारा बहने लगी, जिसे द्रौपदी ने जल से भरे स्वर्णमय पात्र में ले लिया। **संदर्भ :** महाभारत-वन पर्व, अ० 68

युधिष्ठिर के यज्ञ विषयक गर्व को नेवला द्वारा नष्ट करना

युधिष्ठिर का जब यज्ञ समाप्त हुआ तो वहां पर एक नेवला आया, उसका आधा हिस्सा स्वर्णमय था। उसने आकर कहा कि यह यज्ञ तो बहुत छोटा है। यह तो कुरुक्षेत्र निवासी एक उच्छवृत्तिधारी उदार ब्राह्मण के सेरभर सत्तू दान के भी बराबर नहीं हुआ। तब उसने बताया कि कुरुक्षेत्र में एक ब्राह्मण रहता था। वह उच्छवृत्ति पर अपना गुजारा करता था। एक बार वहां पर भयंकर अकाल पड़ गया। उन दिनों उन धर्मात्मा

ब्राह्मण के पास अन्न का संग्रह तो था नहीं। खेतों में भी अन्न सूख गया था, अतः वे सर्वथा निर्धन हो गए थे। एक बार उसके परिवार को एक लम्बे समय तक भूखा रहना पड़ा, तब एक दिन उन्हें जौ का सत्तू मिला, जैसे ही उनका परिवार उसका भोजन करने बैठे, उसी समय वहां पर उसके सत्य की परीक्षा लेने के लिए स्वयं धर्म एक अतिथि के रूप में आया। वह सत्तू उन्होंने, उनकी पत्नी, उनके पुत्र ने उस अतिथि को दे दिए। मैं उस समय अपने बिल से बाहर निकला तथा वहां ब्राह्मण द्वारा दान किए गए अन्न के गिरने से जहां-जहां वे मेरे शरीर में लगे थे उनसे मेरा आधा शरीर स्वर्ण का हो गया। उस दिन से मैं अपना बचा हुआ आधा शरीर भी सोने का करने की इच्छा से अनेक यज्ञस्थलों पर गया और यही कामना लेकर इस यज्ञ में आया था, लेकिन यह यज्ञ भी उक्त यज्ञ से बहुत छोटा है। **संदर्भ** : महाभारत-अश्वमेध पर्व, अ० 90

युधिष्ठिर द्वारा झूठ बोलना

महाभारत युद्ध में द्रोणाचार्य के वध के लिए युधिष्ठिर ने श्रीकृष्ण के परामर्शानुसार झूठ बोला था। अश्वत्थामा मारा गया नर या पशु। 'नरो वा कुंजरो वा' कहकर द्रोणाचार्य के प्राण लिये। इस पाप के लिए इन्हें नरक में जाना पड़ा था। **संदर्भ** : महाभारत-द्रोणपर्व, अ० 164/102-106

युयुत्सु की कथा

धृतराष्ट्र के उनकी पत्नी गांधारी के गर्भ से एक सौ पुत्र उत्पन्न हुए थे। धृतराष्ट्र की एक अन्य पत्नी वैश्य जाति की कन्या थी। उससे भी एक पुत्र पैदा हुआ था, जिसका नाम युयुत्सु रखा गया। यह गांधारी के सौ पुत्रों के अतिरिक्त था। धर्मराज युधिष्ठिर के महाभारत से पूर्व घोषणा करने पर कि मेरे द्वारा धर्मयुद्ध लड़ा जा रहा है तथा जो मेरे पक्ष में आना चाहता है वह आ सकता है। यह धर्मराज की ओर से युद्ध में लड़ा था। हिमालय की ओर प्रस्थान करने से पहले युधिष्ठिर ने युयुत्सु को इन्द्रप्रस्थ का राज्य सौंप दिया था। **संदर्भ** : महाभारत-आदि पर्व, अ० 114

रघु द्वारा विश्वजित यज्ञ : ब्राह्मण द्वारा त्याग

जिस समय 'विश्वजीत' यज्ञ में सर्वस्व दान करने के कारण सम्राट रघु का सारा खजाना खाली हो गया, उस समय ऋषि वरतन्तु का शिष्य कौत्स अपनी शिक्षा समाप्त करके गुरुदक्षिणा की खोज में अयोध्या आया और राजा रघु से चौदह करोड़ स्वर्ण मुद्राएं गुरुदक्षिणा के लिए मांगी। राजा रघु उस समय अपना सब कुछ दान कर चुके थे। उनके पास केवल एक मिट्टी का पात्र ही बचा था, परन्तु उन्होंने कौत्स को अपने यज्ञ-गृह में ठहराया तथा कैलाश के स्वामी कुबेर से अभीष्ट धनराशि लेने का संकल्प कर कुबेर पर चढ़ाई करने के उद्देश्य से सुसज्जित रथ में सोये। उधर कुबेर ने आकाश से सोने की वर्षा कर राजकोष को मुद्राओं से भर दिया। राजा रघु ने कुबेर से प्राप्त सभी धनराशि कौत्स को देनी चाही, परन्तु कौत्स ने केवल गुरु-दक्षिणा के लिए धनराशि लेना

स्वीकार कर उस समस्त धनराशि को लेने से मना कर दिया।

तब रघु ने उस समस्त धनराशि को ऊंटों और खच्चरों में लदबाकर कौत्स को सुपुर्द कर दिया। **संदर्भ** : रघुवंश-सर्ग-4/86-88, 5/1-12

रक्तबीज वध

चंड-मुंड की समस्त सेना के नष्ट होने पर असुरेश्वर प्रतापी शुम्भ ने अत्यन्त क्रोध करके उदायुध, कम्बु, कोटिवीर्य, धूमवंश, काल, दौतृद, मौर्य और कालकेय वंश के असुरों को देवी से युद्ध करने के लिए भेजा। उन्होंने जाकर चण्डिका, काली और सिंह को चारों ओर से घेर लिया। उनसे युद्ध करने के लिए अनेक देवीशक्तियां एकत्रित हो गईं। उनसे शिव ने शीघ्र ही उन असुरों का वध करने को कहा। तब देवीशक्तियों ने राक्षस-गणों को मारकर भगा दिया। उस समय रक्तबीज नामक असुर क्रोध करके युद्ध के लिए आया। ऐन्द्रीशक्ति ने उस पर वज्र का प्रहार कर दिया। वज्र के प्रहार के कारण रक्तबीज की देह से रक्त टपकने लगा, उससे अनेक वीर उत्पन्न हो गये। जितनी रक्त की बूंदें टपकतीं उतने ही योद्धा उत्पन्न हो जाते। यह देखकर चण्डिका नामक देवी असुरों का रक्त सहित भक्षण करने लगी और उनको नष्ट कर दिया। **सन्दर्भ** : मार्कण्डेय-पुराण-अ० 88; स्कन्द-काशी खण्ड; देवी भागवत-5/29

रन्तिदेव की कथा

'महाभारत' में रन्तिदेव को एकमात्र दानी राजा के रूप में दिखाया गया है, जिसकी पाकशाला में दो हजार गायें तथा अन्य पशु मारे जाते थे। परन्तु भागवत में रन्तिदेव की दानशीलता की पराकाष्ठा दिखाकर दानशीलता का एक अनूठा उदाहरण प्रस्तुत किया है। 'भागवत के अनुसार' रन्तिदेव परमदानी थे। एक बार इन्होंने अपना सर्वस्व दान कर दिया। इन्हें 48 दिन तक खाने-पीने को कुछ न मिला। उनचासवें दिन जैसे ही कुछ भोजन मिला और ये भोजन करने बैठे इतने में ही एक ब्राह्मण शूद्र और एक कुत्ता आ गया। रन्तिदेव ने अपना सर्वस्व भोजन उन्हें दे दिया। उनके पास केवल पानी बचा, वह भी उन्होंने एक चाण्डाल को दे दिया। जैसे ही उन्होंने चाण्डाल को पानी दिया, ब्रह्मा, विष्णु और महेश उनके सामने प्रकट हो गये और उन्हें मोक्ष प्रदान की। **संदर्भ** : महाभारत-शान्तिपर्व, अ० 29, द्रोण-पर्व, अ० 67, अनुशासन-पर्व, अ० 123; भागवत-9/21

राम-आख्यान

(1) राम-अवतार

त्रेता युग में रावण का वध करने के लिए विष्णु भगवान ने कौशल्या के गर्भ से राम के रूप में जन्म लिया था। बाल्यावस्था में इन्होंने अनेक राक्षसों को मारा था तथा पिता की आज्ञापालन के लिए वन में गये। वहां अनेक राक्षसों का वध किया एवं अन्त में रावण

को मारकर लंका का राज्य विभीषण को दिया। उनके लव और कुश नामक दो पुत्र हुए। **संदर्भ :** ब्रह्म-2/3; पद्मपुराण-उत्तरखण्ड - 269/94-95; विष्णु-1/3/22, 4/4/87; वायु; भागवत-2/7/22-25, 9/30; अग्नि, अ० 5; स्कन्द पुराण-माहेश्वर खण्ड, अ०8; कूर्म-1/120; हरिवंश-41/21-125; अध्यात्म-रामायण

(2) राम-जन्म

एक समय रावण से त्रस्त देवता ब्रह्मा के पास गये और उनके समझाने पर विष्णु के पास गए। भगवान विष्णु देवताओं को समझाकर वैकुण्ठ-लोक चले गये तथा ब्रह्मा द्वारा रावण को दिए वरदान को ध्यान में रखकर विष्णु भगवान ने राजा दशरथ के घर मनुष्य-रूप में अवतार लेने का निश्चय किया।

अयोध्या के महाप्रतापी राजा के कौशल्या, सुमित्रा और कैकेयी नामक तीन रानियां थीं, लेकिन उनके कोई पुत्र नहीं था। राजा को इससे बड़ी चिन्ता हुई। अपने मंत्री सुमंत की सलाह से राजा दशरथ ने कश्यप ऋषि के पौत्र विभाण्डक के पुत्र ऋषिश्रृंग से पुत्रेष्टि यज्ञ कराया। यज्ञकुण्ड से एक महा बलवान कृष्ण वर्ण का पुरुष निकला। वह दोनों हाथों में सोने के पात्र में चांदी के ढकने से ढकी हुई खीर लिये हुए था। उसने निकलते ही राजा दशरथ से कहा कि मुझे भगवान विष्णु ने तुम्हारे पास भेजा है। मैं अश्वमेध यज्ञ के प्रभाव से बनाई हुई, सन्तान देने वाली, धन और ऐश्वर्य बढ़ाने वाली यह खीर लाया हूं। इसे अपनी रानियों को खिला दीजिये। इसके प्रभाव से तुम्हारे पुत्र पैदा होंगे। राजा ने निवास में जाकर खीर का आधा हिस्सा कौशल्या को, चौथा सुमित्रा को आठवां हिस्सा कैकेयी को दिया, फिर कुछ विचार कर बचा अष्टमांश सुमित्रा को दे दिया, जिससे कौशल्या के राम, सुमित्रा के लक्ष्मण और शत्रुघ्न और कैकेयी के भरत नाम का पुत्र पैदा हुआ।

'अध्यात्म-रामायण के अनुसार' रावण आदि राक्षसों के भार से पीड़ित पृथ्वी गौ रूप धारण कर सम्पूर्ण देवताओं और मुनीश्वरों को साथ लेकर ब्रह्मलोक में गयीं तथा ब्रह्मा से अपने कष्ट बताये। पृथ्वी के क्लेशों को जानकर वे क्षीर समुद्र के किनारे गये और सर्वस्व-नारायण की स्तुति की। वहां भगवान नारायण प्रकट हुए और उन्होंने वताया कि कश्यप ऋषि ने तप करके मुझसे मुझे पुत्ररूप में प्राप्त करने का वर प्राप्त किया है। कश्यप इस समय पृथ्वी पर दशरथ के रूप में पैदा हुए हैं।

इसके बाद राजा दशरथ ने पुत्रेष्टि-यज्ञ किया। राजा दशरथ ने दिव्य पुरुष द्वारा दी गई खीर का आधा भाग कौशल्या को दिया और आधा कैकेयी को। कौशल्या और कैकेयी ने अपने हिस्से में से आधा-आधा खीर का भाग सुमित्रा को दे दिया। इस प्रकार कौशल्या के राम, सुमित्रा के लक्ष्मण व शत्रुघ्न और कैकेयी के भरत पैदा हुए। राम जैसे ही पैदा हुए वे विष्णु-चतुर्भुज स्वरूप धारण किये हुए थे। कौशल्या की स्तुति करने पर उन्होंने बाल-स्वरूप धारण किया।

'अद्भुत रामायण के अनुसार' इक्ष्वाकुवंशीय राजा त्रिशंकु के पुत्र अम्बरीष के श्रीमती नामक कन्या उत्पन्न हुई। जिसे देखकर नारद ऋषि व पर्वत दोनों ने मोहित होकर

उससे शादी करने की इच्छा प्रकट की। राजा अम्बरीष के यह कहने पर कि यह कन्या तुम दोनों में से जिसे वरण कर लेगी उसी के साथ वह इसका विवाह कर देगा। नारद ऋषि ने विष्णु भगवान से यह प्रार्थना की कि वे ऋषि पर्वत का मुख वानर जैसा कर दें, उधर पर्वत ऋषि ने भी भगवान विष्णु से नारद का मुख गोलांगूल जैसा कर देने का अनुरोध किया। इस प्रकार दोनों के मुख वानर जैसे हो गए। दोनों राजा की सभा में पहुंचे। इन का उचित सम्मान कर राजा ने अपनी कन्या से कहा कि वह इन दोनों में से जिसको चाहे उसका वरण कर माला पहना दे। परन्तु श्रीमती को ऋषि नारद व पर्वत दोनों के मुख वानर जैसे दिखाई दिये। उनके मध्य में एक सोलह वर्ष का युवक उसे दिखाई दे रहा था, जो साक्षात् विष्णु भगवान थे। श्रीमती ने माला उन्हीं को पहना दी। इसके बाद अत्यन्त लज्जित होकर नारद और पर्वत भगवान विष्णु के पास गये और पूछने लगे कि वह व्यक्ति कौन था जो कन्या को ले आया है। भगवान के यह कहने पर कि मैं वहां नहीं था, नारद ने राजा अम्बरीष को शाप दे दिया कि उसका सारा ज्ञान नष्ट हो जाये। लेकिन भगवान के चक्र ने जब अज्ञान के अन्धकार को नष्ट किया तब नारद को यह मालूम हुआ कि यह विष्णु की माया है और उन्होंने ही श्रीमती का हरण किया है, तो उन्होंने विष्णु को शाप दिया कि तुम अम्बरीष के कुल में राजा दशरथ के यहां पुत्र-रूप में जन्म लोगे और यह श्रीमती धरणी की पुत्री होगी, विदेह राजा इसका पालन करेंगे। कोई राक्षसों में नीच वहां तुम्हारी स्त्री का हरण करेगा। जिस प्रकार तुमने राक्षस-धर्म से श्रीमती का हरण किया है व जिस प्रकार हम दोनों को श्रीमती के कारण महादुःख हुआ है, उसी प्रकार तुम भी वन में हाहाकार करते फिरोगे। इस प्रकार नारद के शाप के कारण राम ने दशरथ के घर में जन्म लिया।

'पद्मपुराण के अनुसार' एक बार स्वायम्भुव मनु ने नैमिषारण्य तीर्थ में एक हजार वर्ष तक भगवान का पूजन किया। जिस पर भगवान ने प्रकट होकर स्वायम्भुव मनु से वर मांगने के लिए कहा। तब मनु ने तीन जन्मों तक अपना पुत्र होने का वरदान मांगा। भगवान ने मनु को यह वरदान दिया कि 'जगत के पालन तथा धर्म की रक्षा का प्रयोजन उपस्थित होने पर मैं तुम्हारे यहां जन्म लूंगा। वही स्वायम्भुव मनु रघुवंश के राजा दशरथ हुए और उनके यहां राम, लक्ष्मण, भरत और शत्रुघ्न का जन्म हुआ। यहां पर पुत्रेष्टि-यज्ञ के यज्ञकुण्ड में भगवान विष्णु स्वयं प्रकट होकर पुत्र भाव को प्राप्त होने तथा अवतार लेने की बात कहते हैं और दिव्य खीर राजा को देते हैं।

'महाभारत' के अनुसार ब्रह्माजी के पास रावण आदि राक्षसों से पीड़ित होकर ब्रह्मर्षि, देवर्षि एवं सिद्धलोक के ब्रह्मा के पास जाते हैं तथा ब्रह्मा देवताओं को बताते हैं कि मेरे कहने से योद्धाओं में श्रेष्ठ, चतुर्भुज भगवान विष्णु मनुष्य शरीर से पृथ्वी पर अवतार लेंगे और वही रावण को मारकर तुम्हारी सहायता करेंगे।

'श्रीमद्भागवत' में राम जन्म की कथा अत्यन्त संक्षिप्त है तथा यह 'वाल्मीकीय-रामायण' से अधिक साम्य रखती है।

रामचरित मानस में राम-जन्म के कई हेतु बताये गये हैं। एक कथा के अनुसार एक

कल्प में सब देवताओं को जलंधर दैत्य से युद्ध में हार जाने के कारण दुःखी देखकर शिवजी ने उसके साथ बड़ा घोर युद्ध किया, पर बलशाली दैत्य मारे नहीं मरता था। उस दैत्यराज की स्त्री परम सती थी। उसी के प्रताप से त्रिपुर जैसे अजेय शत्रु का विनाश करने वाले शिवजी भी उस दैत्य को नहीं जीत सके। प्रभु ने छल से उस स्त्री का व्रत-भंग कर देवताओं का काम किया। जब उस स्त्री ने यह भेद जाना तब उसने क्रोध करके भगवान को शाप दिया। लीलाओं के आगार कृपालु हरि ने उस स्त्री के शाप को प्रामाण्य दिया।

रामचरित मानस की एक अन्य कथा के अनुसार एक बार महर्षि नारद ने वन में घोर तपस्या की। उनकी तपस्या से भयभीत होकर इन्द्र ने कामदेव की सहायता से उनके तप को भंग करने का प्रयत्न किया, लेकिन महर्षि अपने तप से नहीं गिरे और काम-विजय से उनके मन में अहंकार पैदा हो गया। भगवान विष्णु ने अपनी माया से उनका अहंकार दूर किया। **संदर्भ** : बाल्मीकीय रामायण-बालकाण्ड-सर्ग-11-16; महाभारत-रामोपाख्यान; अध्यात्म-रामायण-1/3; अद्भुत-रामायण-सर्ग-2-8 आनन्द-रामायण-सार-1-2

(3) राम द्वारा बाल क्रीड़ा

राम द्वारा बाल क्रीड़ाएं करने का प्रसंग सर्वप्रथम अध्यात्म रामायण में देखने को मिलता है। कौशल्या के आंगन में बछड़ों के साथ घुटुरुओं चलना, राजा दशरथ का राम को खाने के लिए बुलाना, कौशल्या के बुलाने पर राम का वहां से भाग जाना आदि बाल-स्वाभाविक चपलताएं यहां पर वर्णित हैं। इसके उपरान्त तुलसी ने अध्यात्म रामायण से प्रभावित होकर बाल-क्रीड़ा का वर्णन किया है। **संदर्भ** : अध्यात्म रामायण अ० 1-3; आनन्द रामायण-सर्ग 2

(4) विश्वामित्र का राम को मांगने के लिए आना

विश्वामित्र जब वन में यज्ञ करने बैठते तो मारीचि और सुबाहु आदि राक्षस यज्ञवेदी पर मांस और रक्त फेंककर यज्ञ में विघ्न डालते तब विश्वामित्र ने परमात्मा को श्रीराम के रूप में दशरथ के यहां प्रकट हुआ जानकर दशरथ के पास अयोध्या में गये और यज्ञ रक्षा के लिए राम को मांगा। दशरथ ने पहले तो राम को देने से मना कर दिया। पर बाद में वसिष्ठ के समझाने पर इन्होंने विश्वामित्र के साथ राम और लक्ष्मण को भेज दिया।

'पद्म पुराण' के अनुसार विश्वामित्र द्वारा यज्ञ की सफलता के लिए राम को मांगने पर दशरथ ने लक्ष्मणसहित राम को मुनि की सेवा में स्वयं ही समर्पित कर दिया।

'भागवत' में राम लक्ष्मण को ऋषि विश्वामित्र के साथ मारीच आदि राक्षसों का वध करते दिखाया गया है। यहां विश्वामित्र के राम को मांगने के लिए आने की घटना नहीं है।

'विष्णु पुराण' में राम को विश्वामित्र के साथ जाना मात्र दिखाया गया है। **संदर्भ** : बाल्मीकीय रामायण-बालकाण्ड-सर्ग-18-19; पद्म पुराण-उत्तरखण्ड, अ० 269; विष्णु-

पुराण; भागवत; अध्यात्म-रामायण-1/3; हनुमन्नाटक-अंक-1; अग्नि, अ० 5; आनन्द-रामायण-सार, अ० 3

(5) राम द्वारा ताड़का का वध

ताटिका या ताटका सुन्द की पत्नी और मारीच एवं सुबाहु की माता थी। यह धन-धान्य से भरे-पूरे मलद और करुष देशों को नित्य उजाड़ती थी। जब राम और लक्ष्मण विश्वामित्र के साथ उनकी यज्ञ-रक्षा के लिए उनके साथ गये। उस समय वन में यह उनकी ओर झपटी। इसने माया का सहारा लेकर राम और लक्ष्मण से युद्ध किया, परन्तु राम ने इसका वध कर दिया और उसे मुक्ति प्रदान की। **संदर्भ** : बाल्मीकि-1/24-26; पद्म-पुराण; नारद-पुराण; अग्नि, अ० 5; वामन-पुराण; नृसिंह-पुराण; अध्यात्म-रामायण-1/4; आनन्द-रामायण-सार खण्ड-सर्ग-3

(6) राम द्वारा धनुष तोड़ना : राम सीता विवाह

सीता के युवा होने पर अनेक राजा लोग आकर राजा जनक से सीता को मांगने लगे। इस पर राजा जनक यह उत्तर देते कि यह कन्या वीर्यशुल्का है। तब राजा एकत्रित होकर अपने-अपने बल की परीक्षा के लिए मिथिला में आये तथा जनक के 5000 लोगों द्वारा उनके सामने रखे गये शिव धनुष को उठाने का प्रयास करने लगे, परन्तु वे धनुष को उठाने में असमर्थ रहे। यह धनुष यज्ञ एक वर्ष तक चलता रहा। निर्बल जानकर जनक ने सीता किसी को नहीं दी। तब सभी राजा लोगों ने जनक को घेर लिया। घेरा-घेरी से तंग आकर जनक ने देवताओं की प्रार्थना की। तब देवताओं ने प्रसन्न होकर जनक को सेना दी जिसकी सहायता से उसने सबको मार भगाया।

'अध्यात्म रामायण' में मात्र यह उल्लेख मिलता है कि राजा लोग शिव के धनुष को देखकर उसका पूजन कर वहां से चले गये। **संदर्भ** : बाल्मीकीय-रामायण-बालकाण्ड, सर्ग-46; पद्म पुराण-पाताल-खण्ड, अ० 112; अग्नि, अ० 5; कूर्म-1/20; देवी भागवत-पुराण, अ० 112; अध्यात्म-रामायण-1/6; हनुमन्नाटक-अंक-1; आनन्द रामायण-1/3

(7) लक्ष्मण परशुराम संवाद : राम परशुराम संवाद

'बाल्मीकीय रामायण और आनन्द रामायण' के अनुसार राम को उस समय परशुराम मिलते हैं, जब वे मिथिला से सीता के पाणिग्रहण के बाद अयोध्या जा रहे होते हैं। परशुराम ने राम से शिव का धनुष तोड़ने का कारण पूछा और उनकी सामर्थ्य जानने के लिए परशुराम ने देवताओं का वह धनुष राम को दिया जो एक बार उन्होंने विष्णु को दिया था। यह धनुष शिव-धनुष से अधिक कठोर था। राम ने विष्णु के इस धनुष पर बाण चढ़ा दिया तथा परशुराम से कहने लगे कि—हे मुनि ! एक तो आप मेरे पूज्य ब्रह्म हैं दूसरे आप विश्वामित्र के पौत्र हैं। इसलिए इस बाण से मैं तुम्हें मार तो सकता नहीं, लेकिन यह बाण निष्फल नहीं जायेगा। कहिए अब या तो आपकी आकाशगमन की आदि की गति को या आपके परलोकों को इस बाण से नष्ट कर दूं और उन्होंने बाण छोड़कर परशुराम के सारे लोक नष्ट कर दिये।

'अध्यात्म रामायण' में यह कथा यद्यपि पूर्ववत है, लेकिन यहां पर परशुराम द्वारा राम

की भक्तिपूर्वक स्तुति की गई है।

'अद्‌भुत रामायण के अनुसार' राम जब अपनी माताओं और सीतासहित अयोध्या जा रहे होते हैं तब परशुराम महापराक्रमी राम के विवाह-कौतुक को सुनकर मार्ग में उनसे मिलने आते हैं तथा धनुष चढ़ाने के लिए देते हैं। राम उस धनुष को लीलामात्र से ही चढ़ा देते हैं और परशुराम को दिव्य नेत्र देते हैं जिनसे रामचन्द्रजी के शरीर में आदित्य, वसु, रुद्र, साध्य, मरुत्समूह, पितृ, अग्नि, नक्षत्र, गृह, गन्धर्व, राक्षस, यक्ष, नदी, तीर्थ, ऋषि और ब्रह्मभूत सनातन लोक, सब देवर्षि, समुद्र, पर्व, वेद, उपनिषद्, वषट्कार यज्ञ, ऋक्, यजु, साम तथा सम्पूर्ण धनुर्वेद देखे। **संदर्भ** : बालमीकीय-रामायण-बालकाण्ड सर्ग-74-76; अग्नि, अ० 5; अध्यात्म-रामायण-1/5, अद्‌भुत-रामायण; हनुमन्नाटक-अंक-1; आनन्द-रामायण-1/3

(8) राम वन गमन

विवाह के पश्चात् रामादि चारों भाई बारह वर्ष तक अयोध्या में रहे। कुछ दिन के लिए भरत तथा शत्रुघ्न अपने मामा के घर चले गए थे। वृद्धावस्था को प्राप्त होने के कारण दशरथ ने यह निश्चय किया कि राम का यौवराज्याभिषेक कर दिया जाए और उन्होंने राम के यौवराज्याभिषेक की घोषणा कर दी तथा इस अवसर पर राजा दशरथ ने जान-बूझकर भरत-शत्रुघ्न को नहीं बुलाया। महोत्सव की तैयारी होते देख कैकेयी की दासी मन्थरा को राम का वैभव सहन नहीं हुआ। तब उसने कैकेयी को भड़काया तथा कैकेयी ने राजा दशरथ से दो वरों को मांगा। जिसमें राम को 14 वर्ष का वनवास तथा भरत को राज्याभिषेक की मांग थी। लक्ष्मण ने इसका विरोध किया। यहां तक भरत को मारने तक की बात कही। लक्ष्मण और सीता राम के साथ वन जाते हैं तथा दशरथ भी उनके साथ जाने को तैयार हो जाते हैं और वे राम के साथ सेना, खजाना, वेश्याएं, दास और दासियां भी भेजने को कहते हैं, जिसका कैकेयी विरोध करती है। अन्त में राजा की आज्ञा से राम लक्ष्मण और सीता के साथ वन को गए।

'अध्यात्म और आनन्द रामायण के अनुसार' राम के पास नारद आकर ब्रह्मा और देवताओं का संदेश देते हैं कि आप इस पृथ्वी पर रावण का वध करने के लिए अवतरित हुए हैं। यदि आप राजा दशरथ द्वारा किए जा रहे राज्याभिषेक को स्वीकार कर लेंगे तो आप रावण का वध कैसे करेंगे। तब रामचन्द्र ने नारद से कहा, चौदह वर्ष वन में रहकर सीता को माध्यम बनाकर रावण का वध करूंगा। इस प्रकार आश्वस्त होकर नारद ब्रह्मलोक चले गए। **संदर्भ** : बालमीकि-रामायण-सर्ग-7-10, महाभारत-वन पर्व, अ० 277; अग्नि-अ० 5; कूर्म, अ० 1/20; अध्यात्म-रामायण-11-6; हनुमन्नाटक-अंक-3; आनन्दरामायण-सार-सर्ग-8

(9) भरत-मिलाप

राजा दशरथ की मृत्यु के चौदहवें दिन राज-काज कर्त्ता लोगों ने इकट्ठे होकर भरत से राज्य ग्रहण करने को कहा। तब भरत ने राज्य के अधिकारी ज्येष्ठ भाई राम को लौटाने की बात कही तथा उन्होंने चतुरंगिणी सेना, मंत्री आदि सबको वन में जाने की

आज्ञा दी और चित्रकूट तक सड़क बनाने का भी कुशल शिल्पियों को आदेश दिया। भरत के साथ उनकी तीनों माताएं कौशल्या, कैकेयी और सुमित्रा भी गई। जब भरत श्रृंगबेरपुर पहुंचते हैं तो गुह को कुछ सन्देह होता है तथा वह भेंट लेकर जाता है। संदेह मिटने पर वह भरत का स्वागत करता है तथा भरत के साथ रामचन्द्र के पास जाता है। उधर लक्षमण भी क्रोधित हो उठते हैं कि भरत की नीयत ठीक दिखाई नहीं पड़ती। परन्तु उन्हें राम समझाकर चुप करते हैं। जब भरत राम से चित्रकूट में जाकर मिलते हैं तो राम उनसे कुशल-क्षेम पूछकर राजधर्म की दीक्षा देते हैं। वहां जाबालि मुनि उस समय नास्तिक विचार कहते हैं, ताकि राम अयोध्या लौट जाएं। राम लौटकर नहीं आते। तब भरत उनसे उनकी चरण पादुकाएं मांगकर लाते हैं तथा उनको राज-सिंहासन पर अभिषेक कर स्वयं नन्दिग्राम में योगी-वेश में रहते हैं।

'अध्यात्म रामायण' में भरत राम से मिलकर तथा इसे भगवान् की माया जानकर अयोध्या लौट आते हैं। **संदर्भ** : बाल्मीकीय रामायण-अयोध्याकाण्ड सर्ग-81-115; महाभारत-वन पर्व-अ० 277; अग्नि, अ० 5; अध्यात्म-रामायण-2/8-9; हनुमन्नाटक अंक-3; आनन्द रामायण-सार-सर्ग-5

(10) राम की शवरी पर कृपा

'बाल्मीकीय रामायण' में मात्र यह वर्णन मिलता है कि कबन्ध को मारकर राम शवरी के आश्रम में आए। वह निम्न वर्ण की महिला थी। उसने राम का ऐसा सत्कार किया मानो उसके आश्रम में भगवान् ही आए हों, परन्तु अध्यात्म रामायण में राम शवरी को नवधा-भक्ति का उपदेश देते हैं तथा भक्ति को मुक्ति का एक मात्र साधन बताते हैं। शवरी ने कुछ वन्य-पदार्थ राम को भेंट किए। राम ने ब्रह्मविद्या की अधिकारिणी उस शवरी के दिए पदार्थों को ले लिया तथा उसने राम को मतंग वन दिखाया। तत्पश्चात यह राम की पूजा कर भस्म होकर स्वर्ग को चली गई। **संदर्भ** : बाल्मीकीय-रामायण-अरण्यकाण्ड-सर्ग, 74-75; पद्म; नारद; अग्नि; स्कन्द; अध्यात्म रामायण-3/10; आनन्द-रामायण-सारखण्ड-सर्ग-7

(11) रावण-जटायु युद्ध : राम द्वारा जटायु उद्धार

जब रावण सीता को ले जा रहा था, रास्ते में गृद्धराज जटायु मिला जो दशरथ का मित्र था। उसने रावण से सीता को छोड़ देने को कहा। जब रावण ने सीता को नहीं छोड़ा तो जटायु ने उससे युद्ध किया और अपने पंजों तथा चोंच के प्रहारों से रावण को बेहोश कर दिया, उसके रथ को तोड़ डाला और उसके बाल पकड़कर उसे रथ से नीचे खींच लिया। जब रावण को होश आया तो उसने अपनी तलवार से जटायु के पंख काट डाले। जिससे जटायु घायल होकर पृथ्वी पर गिर पड़ा और रावण सीता को लेकर आगे चला गया। **संदर्भ** : बाल्मीकीय-रामायण-अरण्यकाण्ड, सर्ग-49-51; महाभारत-आदि पर्व-60/67, 67/9-6/138, वन पर्व, अ० 279; पद्म पुराण; ब्रह्म; भागवत-9/10/12; अग्नि, अ० 7; नृसिंह; अध्यात्म रामायण-3/8; हनुमान्नाटक, अंक 4; आनन्द रामायण-1/7

(12) विराध राक्षस वध

राम जब वन में जा रहे थे तब पर्वत के समान एक राक्षस, जिसका विकराल और भयंकर रूप था, राम, लक्ष्मण और सीता पर झपटा और सीता को गोद में उठाकर ले गया, जिससे सीता भय से कांपने लगी और राम भी अप्रतिभ होकर संताप करने लगे और कैकेयी को भी भला-बुरा कहने लगे। तब लक्ष्मण ने उन्हें ढाढ़स बंधाया तथा दोनों का विराध से युद्ध हुआ। वह राक्षस राम और लक्ष्मण दोनों को उठाकर भाग गया। सीता इस दृश्य को देखकर विलाप करने लगीं। तब राम और लक्ष्मण ने उस राक्षस की दोनों भुजाएं काट डालीं तथा उसे जिन्दा पृथ्वी में गाड़ दिया। यह राक्षस गन्धर्व तुम्बरु था, जो कि शापवश राक्षस बना था। **संदर्भ** : बाल्मीकीय-रामायण-अरण्यकाण्ड-सर्ग-2-4; महाभारत-सभापर्व; पद्म पुराण-6/242; विष्णु-पुराण-4/4/96; अग्नि-पुराण; कूर्म-पुराण-1/21; नृसिंह-पुराण-49/2/25; अध्यात्म-रामायण, 3; आनन्द-रामायण-1/7

(13) राम द्वारा कबन्ध-वध

कबन्ध अपने पूर्वजन्म में रूपवान और पराक्रमी व्यक्ति था। मुनि स्थूलशिरा के शाप से राक्षस योनि प्राप्त कर इसने उग्र तप किया। इससे प्रसन्न हो ब्रह्मा ने उसे दीर्घायु होने का वर दिया। वह पाकर वह गर्वित हो गया और इन्द्र को भी ललकारा। इन्द्र ने वज्रपात से उसकी जांघों के नीचे का हिस्सा और सिर शरीर में घुसा दिया, परन्तु ब्रह्मा के वर कारण उसे मारा नहीं। शरीर से कष्ट मिलने पर उसने इन्द्र से प्रार्थना की। इन्द्र ने उसकी प्रार्थना पर प्रसन्न होकर शरीर रक्षा के लिए उसे चार कोस तक फैली हुई भुजाएं और कुक्षि में तीव्र दाढ़ों वाला मुख दिया। यह अपने लम्बे हाथों की सहायता से जीवों को पकड़कर खाता था। वनवास के अवसर पर दण्डकारण्य में इसने अपनी लम्बी भुजाओं से राम आदि को पकड़ लिया। तब राम ने खड्ग से कबन्ध को नष्ट कर दिया। राम के हाथों मरकर कबन्ध को स्वर्ग प्राप्त हुआ।

'आनन्द-रामायण' के अनुसार अष्टावक्र के शाप से इसे राक्षस योनि प्राप्त हुई। **संदर्भ** : बाल्मीकि-रामायण-अरण्यकाण्ड, अ० 72; महाभारत-वनपर्व-अ० 279; अग्नि, अ० 7; अध्यात्म-रामायण-अरण्यकाण्ड, अ०9; आनन्द रामायण-सारखण्ड, अ०7; अग्निवेश-रामायण, अ० 21-22

(14) राम की शरभंग ऋषि से भेंट

विराध राक्षस का वध कर राम शरभंग ऋषि के आश्रम में गये। जिस समय राम उनके आश्रम में पहुंचे उस समय इन्द्र उनके तप से प्रसन्न हो उन्हें सशरीर स्वर्ग में ले जाने के लिए एक दिव्य रथ लेकर आए थे, लेकिन राम को आश्रम में आया देख इन्द्र के साथ नहीं गए, क्योंकि उन्होंने राम का उचित आतिथ्य सत्कार किए बिना स्वर्ग में जाना उचित नहीं समझा। **संदर्भ** : बाल्मीकीय-रामायण-अरण्यकाण्ड, सर्ग-5

(15) राम और सुग्रीव की मैत्री

शबरी के आश्रम से राम और लक्ष्मण ऋष्यमूक पर्वत के निकट पहुंचे। सुग्रीव बालि

के भय से ऋष्यमूक पर्वत पर रहता था। जब उसने आयुधधारी इन दोनों राजकुमारों को देखा तो वह यह सोचकर डर गया कि कहीं बालि ने तो इन्हें नहीं भेजा है। तब उसने हनुमान को इनके पास पता लगाने के लिए भेजा। हनुमान इनके पास एक भिक्षुक का रूप बनाकर जाते हैं। हनुमान ने इनके पास जाकर राम की प्रशंसा की तथा उनका आने का कारण पूछा तथा अपना व सुग्रीव का पूर्ण परिचय दिया। उस समय राम ने सीता-हरण की बात हनुमान को बतायी तथा उसकी खोज में वन-वन भटकने की बात कही। तब हनुमान राम और लक्ष्मण को सुग्रीव के पास ले गये तथा अग्नि को साक्षी करके दोनों की मित्रता करायी।

'अध्यात्म रामायण' में हनुमान ब्राह्मण का रूप धारण करके राम के पास जाते हैं तथा जब उन्हें पता लगता है कि ये राम हैं तो उनकी स्तुति करते हैं।

'अद्भुत रामायण' में हनुमान राम के पास भिक्षुक रूप में जाते हैं तथा पूछने पर कि वे कौन हैं तो वह अपना विराट स्वरूप दिखाते हैं। उन्होंने हनुमान को चतुर्बाहु, किरीटधारी, शंख, चक्र, गदाधारी, वनमाला से विभूषित, श्रीवत्स वक्षस्थल पर धारण किये, पीतवस्त्रधारी. अच्युत, लक्ष्मी, सरस्वती से शोभित, ब्रह्मा के पुत्र सनन्दनादि से सब ओर से सेव्यमान, देवता, पितर, गन्धर्व, सिद्ध, विद्याधर तथा महात्माओं से शोभित, कमललोचन, सहस्र सूर्य के समान प्रकाशमान, सौ चन्द्रमाओं के समान सुन्दरमुख वाले अपने रूप को हनुमान को दिखाया तथा हनुमान को सनातन ज्ञान सुनाया। **संदर्भ :** बाल्मीकीय-रामायण-किष्किन्धाकाण्ड-सुन्दरकाण्ड, 1-12; महाभारत-वनपर्व, अ॰ 280; आध्यात्म-रामायण-4/1;अद्भुत-रामायण-सर्ग-10; हनुमन्नाटक, अंक 5; अग्नि,अ॰ 8; आनन्द-रामायण-1/8

(16) राम द्वारा बालि-वध

राम ने सुग्रीव के पास जाकर मित्रता कर ली और उसके शत्रु बालि को मारने की प्रतिज्ञा की और उसके बदले में सुग्रीव ने सीता को खोजने का संकल्प किया। सुग्रीव को राम के पराक्रम पर सन्देह था, लेकिन जब राम ने दुन्दुभि राक्षस के अस्थि-पंजर को अपने अंगूठे से दस योजन की दूरी तक फेंक दिया और अपने बाण से साखू के एक पेड़ का भेदन कर दिया तब सुग्रीव को राम के पौरुष पर विश्वास हुआ। सुग्रीव राम के कहने से बालि से लड़ने गया। राम वालि को बाण से मारने के लिए पेड़ के पीछे छिप गये। दोनों भाइयों का एक जैसा रूप होने के कारण राम बालि को नहीं पहचान पाए तथा उन्होंने बालि के वध के लिए बाण भी नहीं छोड़ा। तत्पश्चात लक्ष्मण ने गजपुष्पी उखाड़कर माला की तरह सुग्रीव के गले में पहना दी। तब फिर सुग्रीव ने बालि को महल के बाहर जाकर ललकारा। ललकार सुन बालि युद्ध के लिए तैयार हुआ तब तारा ने उसे समझाने का प्रयास किया, परन्तु बालि सुग्रीव से युद्ध करने के लिए आया। बालि और सुग्रीव में भीषण युद्ध हुआ। उस समय राम ने बालि पर बाण छोड़कर उसका वध कर दिया। जब राम घायल बालि के सामने जाते हैं तो वह उन्हें कटु वचन कहता है तथा उनके इस कृत्य को राजधर्म के प्रतिकूल बताता है।

तब राम उसे सनातन धर्म समझाकर उसके वध को उचित बताते हुए कहते हैं कि उसने अपने छोटे भाई की पत्नी रूमा को बलपूर्वक अपनी पत्नी बना लिया है अतः वह वध के योग्य था। युद्धक्षेत्र में आकर बालि को देखकर उसकी पत्नी तारा विलाप करती है। बालि अंगद को सुग्रीव को सौंपकर एवं तारा की मंत्रणा पर कभी सन्देह न करने की सलाह देकर संसार त्याग देता है। इस दृश्य से सुग्रीव को बहुत शोक होता है तथा वह राज्य त्यागने तक के लिये तत्पर हो जाता है। तब राम ने कर्म और कर्त्ता के दार्शनिक विचार से सबको समझाया और सुग्रीव किष्किन्धा का राजा बन गया।

'अध्यात्म रामायण' में तारा अपने पति के शव पर रोते हुए राम को अनेक कटु वचन कहती है। **संदर्भ** : बाल्मीकि-रामायण-किष्किन्धाकाण्ड-सर्ग-13-23; महाभारत-वनपर्व, अ० 280; अग्नि, अ० 8; अध्यात्म-रामायण-4/2/71; हनुमन्नाटक-अंक, 5; आनन्द-रामायण-1/8/6

(17) सीता की खोज : सीता का अशोक वाटिका में रहना

सुग्रीव किष्किन्धा का राज प्राप्त कर अपने बड़े भाई के बेटे अंगद को युवराज बनाकर आराम से रहने लगा। समय बीतता गया उसने सीता की खोज की कोई चिन्ता नहीं की। तब राम के कहने से लक्ष्मण क्रोधित होकर किष्किन्धापुरी जाते हैं। तारा उनके क्रोध को शान्त करके क्षमा-याचना करती है। लक्ष्मण महल में जाकर सुग्रीव से मिलते हैं। तब सुग्रीव शीघ्र ही सीता की खोज निकालने और रावण-वध का आश्वासन देता है। सुग्रीव ने असंख्य वानर बुलाए तथा राम की आज्ञा से यूथपतियों को चारों दिशाओं के देशों में सीता की खोज करने के लिए भेजा। हनुमान, अंगद, जाम्बवान आदि को दक्षिण दिशा में भेजा तथा उन सबको सीता की खोज के लिए एक माह का समय दिया। चलते समय राम ने हनुमान को पहचान के लिए मुद्रिका भी दी।

सब वानरों को सीता को खोजते-खोजते एक माह हो गया और उन्हें सीता का पता न चला तो अंगद ने दुःखी होकर सबको प्रायोषवेशन की सलाह दी, क्योंकि वापस लौटकर जाने में सुग्रीव द्वारा मृत्यु अवश्यभावी थी। अंगद की बात सुनकर सभी वानर युवराज की ओर हो गए। तब अंगद को हनुमान ने समझाया।

ये वानर सीता को खोज नहीं पाए थे। अतः दुःखी होकर जटायु-वध, वैदेही-हरण और राम के कोप की बातें कर रहे थे। तभी वहां जटायु का भाई विशालकाय सम्पाति जटायु वहां आया तथा उसने वानरों को रावण का पता दिया तथा लवण-समुद्र के पार जाने के लिए प्रेरित किया। तब हनुमान ने समुद्र पार करने का निश्चय किया और उड़कर समुद्र पार गए। मार्ग में हनुमान को अनेक आपत्तियों का सामना करना पड़ा, पर अन्त में वे सूर्यास्त के पश्चात् विडाल के समान छोटा रूप बनाकर रमणीय सुन्दर राजमार्ग से भूषित लंका में घुसे। जब हनुमान लंका में घुसे तो लंकापुरी साक्षात् राक्षसी का रूप धारण करके हनुमान के सामने आई, जिसका उन्होंने वध कर दिया और लंका में सीता की खोज करते हुए विभीषण से मिले और उन्होंने रावण के महलों को खोज डाला। सीता को वहां न पाकर वे अशोक वाटिका में गए और वहां सीता को बैठे हुए

देखा। उसी समय वहां रावण आया। उसने सीता को अनेक प्रकार से डराया-धमकाया, जिससे सीता विलाप करती हुई राम का स्मरण कर एक वृक्ष के पास गई और अपनी वेणी का बंधन पकड़कर इसी बंधन से फांसी लगाकर यमलोक जाने की बात कहने लगी। तब वृक्ष में छिपे हुए हनुमान ने सीता को राम की कथा सुनाई, जिससे सीता और भयभीत हो गई। तब हनुमान ने नीचे उतरकर सीता को अपना परिचय दिया और राम द्वारा दी गई मुद्रिका उन्हें दी और सीता को शीघ्र मुक्ति का आश्वासन देकर वानरों के साथ किष्किन्धा आकर सीता का पता बताया।

'अध्यात्म रामायण के अनुसार' लंका के दरवाजे पर मिली लंकिनी ने हनुमान को सीता का अशोकवाटिका में होना बताया। **सन्दर्भ** : वाल्मीकीय-रामायण, किष्किन्धा-काण्ड, सर्ग-19, सुन्दरकाण्ड-67; महाभारत रामोपाख्यान; पद्मपुराण-पाताल-खण्ड, अ० 1; अग्नि, अ० 8; कूर्म-1/20; अध्यात्म रामायण-4/5; हनुमन्नाटक, अंक-6

(18) सीता का अग्नि में प्रवेश

जब राक्षसराज रावण ने सीता का हरण करने का मन में विचार किया तो वह राम का स्मरण कर गार्ह्यपत्य-अग्नि की शरण में गई और अग्नि में प्रवेश कर गई। तब अग्नि ने रावण के वध की इच्छा से मायामयी सीता की सृष्टि की और वास्तविक सीता को लेकर अन्तर्धान हो गए। रावण माया की सीता का हरण कर लंका को ले गया। रावण-वध के बाद जब सीता की अग्नि-परीक्षा हुई तो अग्नि ने उस मायामयी सीता को जलाकर वास्तविक सीता राम को लौटा दी। **संदर्भ** : कूर्म-2/34

(19) राम द्वारा खर, दूषण और त्रिशिरा का वध

खर, दूषण और त्रिशिरा विश्वश्रवा के पुत्र थे। खर विश्रवा की पत्नी पुष्पोत्कटा और दूषण व त्रिशरा वाका से उत्पन्न हुए थे। दण्डक वन में ये रामचन्द्र के हाथों मारे गये। **संदर्भ** : बाल्मीकि रामायण-अरण्यकाण्ड-सर्ग-16-17; विष्णु-4/4/96; वायु-70/49-50; भागवत-9/10/9; अग्नि, अ० 7; देवी भागवत-3/28/23-24; अध्यात्म-रामायण आनन्द-रामायण; सारखण्ड, सर्ग-7

(20) राम द्वारा सेतु-बन्धन

राम की सेना में नल नामक वानर विश्वकर्मा का पुत्र था। इसे सब कुछ निर्माण करने का वर मिला हुआ था। नल ने वरस्वरूप अपने पिता के समान निर्माण की ख्याति प्राप्त कर राम द्वारा लंका अभियान के समय समुद्र पर सेतु का निर्माण किया। जिसमें सहयोग उसके भाई नील ने भी दिया।

'महाभारत के अनुसार' राम ने समुद्र से पार उतरने की याचना की। उस समय समुद्र ने उन्हें बताया कि विश्वकर्मा का पुत्र नल जो कुछ भी पानी में फेंकेगा उसी से वह बंध जायेगा। तदनुसार नल ने समुद्र में पत्थर फेंककर पुल बनाया।

'आनन्द रामायण' के अनुसार जाह्नवी के तट पर ब्राह्मण के शालग्राम डुबाने पर उस ब्राह्मण ने नल को यह शाप दे दिया था कि उसके हाथ के पाषाण भी पानी में तैरेंगे। इसी शाप की शक्ति से नल सेतु बांधने में सफल हुआ।

'श्रीमद्भागवत तथा स्कन्द-पुराण के अनुसार' नल के साथ नील के योगदान का कथन है तथा अन्य कथा पूर्ववत् वर्णित है : **सन्दर्भ** : बालमीकि-रामायण-युद्ध-काण्ड-सर्ग-22; महाभारत-वन-पर्व, अ० 282, 288; स्कन्द-पुराण-ब्राह्म-खण्ड, सेतु माहात्म्य, अ०2; अध्यात्म-रामायण-युद्ध-काड, अ० 3; आनन्द-रामायण-सारकाण्ड-सर्ग-10/66-67

(21) विभीषण पर कृपा : विभीषण को लंका से निकाला जाना

यह रावण का छोटा भाई और केकसी के गर्भ से उत्पन्न विश्रवा का पुत्र था। जब रावण सीता का हरण कर लंका में लाया तब विभीषण ने उसे समझाकर सीता को वापस करने के लिए कहा। इस पर इसके भाई रावण ने इसे अपमानित कर लंका से निकाल दिया और यह अपमानित हो रावण की शरण में आया। राम ने इसके निष्काम और अनन्य प्रेम से द्रवीभूत हो इसे शरणागति दी। रावण को मारकर राम ने विभीषण को लंकाधिपति बना दिया। **संदर्भ** : रामायण-युद्ध काण्ड, सर्ग 14-19; महाभारत-वनपर्व, अ० 283; भागवत-9/10/32; अग्नि-9; अध्यात्म-रामायण-6/2; आनन्द-रामायण-सर्ग, 10

(22) राम द्वारा देवी की पूजा

राम ने रावण पर विजय प्राप्त करने के उद्देश्य से युद्ध से पूर्व भागवती का नवरात्रोपवास किया, जिससे प्रसन्न होकर सिंहारूढ़ देवी ने राम को दर्शन देकर उन्हें रावण पर विजय का आश्वासन दिया।

'कृतिवासीय रामायण' के अनुसार जब राम देवी उपासना करने बैठे तो उन्होंने पूजा के लिए 100 कमल मंगाए। उनमें से एक देवी ने चुरा लिया। इसके स्थान पर राम जब अपनी आंख समर्पित करने के लिए उद्यत हुए तभी देवी ने प्रकट होकर राम को विजयी होने का आश्वासन दिया। **संदर्भ** : श्रीमद्देवीभागवत पुराण-3/28-30; कालिका-162/20-38; कृतिवासीय रामायण

(23) त्रिजटा राक्षसी द्वारा सीता को सांत्वना

सीता के अशोक वाटिका में रहते समय रावण वहां गया और सीता को अपनी ओर आकर्षित करने के लिए अनेक प्रलोभन दिए, परन्तु जब सीता अपने संकल्प पर अडिग रहीं तो रावण ने राक्षसिनियों को सीता को अपने वश में करने की आज्ञा दी। तब सीता को वे डराने लगीं। सीता ने आत्मदुख को सहने में असमर्थ होकर आत्महत्या करने का निश्चय किया। उस समय सीता को त्रिजटा नाम की वृद्धा राक्षसी ने समझाया कि रावण का शीघ्र ही विनाश होगा, तुम धैर्य धारण करो और यह कहकर उसने देखा एक अशुभ स्वप्न सीता को सुनाया। **संदर्भ** : बालमीकि-रामायण-सुन्दरकाण्ड-सर्ग-18-28; आनन्द रामायण सारखण्ड, सर्ग-9

(24) राम द्वारा रावण-कुंभकर्ण वध

राम ने सुग्रीव की सहायता से वानरों के द्वारा सीता का पता लगवाया। सीता का पता लगने पर उन्होंने बन्दरों की सेना लेकर लंका पर चढ़ाई कर दी तथा रावण और कुम्भकर्ण का वध कर दिया और अपनी पत्नी सीता को मुक्त कराया। **संदर्भ** : रामायण-युद्ध-काण्ड; महाभारत-वनपर्व; ब्रह्म अ० 67-111; पद्म-पाताल खण्ड, अ० 1; विष्णु-

4/4/96-97; भागवत 9/3/43-44, 9/20/22-25, 18; अग्नि-10;अध्यात्म-रामायण-युद्ध-काण्ड-8-10; हनुमन्नाटक-अंक-14

(25) राम द्वारा सीता की अग्नि-परीक्षा

सीता काफी समय तक लंका में रही थीं। अत: उनकी पवित्रता के सत्यापन के लिए सभी वानर समुदाय एवं लक्ष्मण आदि के समक्ष राम ने सीता की अग्नि-परीक्षा ली थी।

'बाल्मीकीय रामायण' के अनुसार जब राम सीता को अस्वीकार कर देते हैं तो सीता लक्ष्मण द्वारा निर्मित चिता में प्रवेश करती है। वहां पर उसी समय देवता राम की विष्णु रूप में पूजा करते हैं तथा अग्नि देवता स्वयं प्रकट होकर सीता को सौंपते हैं तथा पवित्रता का सत्यापन करते हैं। **संदर्भ :** बाल्मीकिरामायण-युद्ध काण्ड सर्ग-113-22; विष्णु- 4/4/96-97; अग्नि-10/27; स्कन्द-सेतु माहात्म्य; हनुमन्नाटक अंक-14

(26) राम का अयोध्या लौटना

रावण का वध करने के उपरान्त राम विभीषण को लंका सौंप कर लक्ष्मण और सीता के सहित अयोध्या लौटे। उनके आने की खुशी में अयोध्यावासियों ने अयोध्यानगरी को खूब सजाकर उनका स्वागत किया। **संदर्भ :** बाल्मीकि-रामायण-युद्धकाण्ड-सर्ग 123-28; महाभारत-वनपर्व, अ० 291; पद्म पुराण-पाताल खण्ड, अ० 2; अग्नि, अ० 10; अध्यात्म-रामायण, अ० 6/14

(27) राम द्वारा सीता परित्याग

जिस समय राम धर्मपूर्वक अपने राज्य का संचालन कर रहे थे। उस समय एक बार सभा में उनके भद्र नामक गुप्तचर ने राम को सीता विषयक लोक चर्चा को सुनाया कि लोग कहते हैं कि राम सीता को बिना बिचारे घर में ले आये। जिस सीता को रावण ने बलपूर्वक अपनी अंक में बिठाया उसी से राम सम्भोग कर सुख मान रहे हैं। वे सीता से घृणा क्यों नहीं करते। राम की तरह हमें भी अपनी स्त्रियों के दोषों को सहन करना पड़ेगा। इस लोकापवाद से राम ने सीता का परित्याग कर दिया।

'अध्यात्म रामायण के अनुसार' अयोध्या में दस हजार वर्ष रहने के बाद सीता के राम को यह बताये जाने पर कि देवता बार-बार बैकुण्ठ चलने को कहते हैं, तब राम ने बैकुण्ठ जाने का उपाय बताया कि मैं लोकापवाद के बहाने उनका परित्याग कर दूंगा। बाद में एक-एक करके बैकुण्ठ पहुंच जायेंगे तथा कुछ दिन बाद विजय नामक दूत के सीता विषयक लोकापवाद की सूचना देने पर उन्होंने सीता का परित्याग कर दिया।

आनन्द रामायण के अनुसार' एक बार कैकेयी के कहने पर सीता ने रावण के पैर के अंगूठे का चित्र भित्ति पर चित्रित किया। सीता पर लांछन लगाने के लिए कैकेयी ने अपनी ओर से रावण का शेष चित्र पूरा कर सीता की चरित्र-हीनता प्राचारित कर दी। उसी अपराध पर लोकापवाद से बचने के लिए राम ने सीता का परित्याग कर दिया तथा लक्ष्मण को उसका दाहिना हाथ काटने की आज्ञा दी। पर लक्ष्मण ने सीता का हाथ न काटकर विश्वकर्मा द्वारा बनाया गया कृत्रिम हाथ राम को जाकर दिखा दिया। यहां पर

राम ने सीता को परित्याग से पूर्व बता दिया था तथा जनक से भी आज्ञा ले ली थी। सीता विषयक लोक में फैले अपवाद को विजय नामक दूत ने राम को बताया। विजय ने राम को यह भी बताया कि धोबी अपनी पत्नी को पीटते हुए कह रहा था कि मैं वह राम नहीं, जिन्होंने रावण के घर में रही, मैथिली को स्वीकार कर लिया।

'पद्म पुराण के अनुसार' एक चर ने राम को रजक द्वारा कही हुई वैदेही के चरित्र की निन्दा सुनाई, जिसे सुनकर राम बेहोश हो गये। भरत को सीता का परित्याग करने की आज्ञा दी।

चन्द्रवती कृत रामायण के अनुसार सीता कैकेयी की पुत्री ककुआ के कहने पर रावण का चित्र बनाती है, जब यह बात राम तक पहुंचती है तो राम सीता का परित्याग कर देते हैं। **संदर्भ** : बालमीकि-रामायण-उत्तरकाण्ड, सर्ग-43, 52; ब्रह्म, अ० 154; पद्म पुराण-पाताल खण्ड, अ० 4, 5, 56/25-27 अग्नि, अ० 11; अध्यात्म रामायण-उत्तर काण्ड-4/50-52; आनन्द-रामायण-जन्म खण्ड, 3/9

(28) राम का लव कुश से युद्ध : राम द्वारा अश्वमेध यज्ञ

ऋषियों की सलाह से राम ने सोने की सीता बनवाकर अश्वमेध-यज्ञ का आयोजन किया। राम द्वारा किये गये अश्वमेध-यज्ञ के अवसर पर छोड़े गये घोड़े को लव-कुश ने पकड़ लिया। जिससे लव-कुश का राम की सेना से युद्ध हुआ। राम की सेना को इस युद्ध में लव-कुश से पराजित होना पड़ा।

'बालमीकि रामायण' में राम द्वारा अश्वमेध-यज्ञ करने का तो वृत्तान्त है, लेकिन लव-कुश का राम से युद्ध न होकर वे ऋषि बालमीकि के यज्ञ देखने के लिए आते हैं तथा यज्ञ-भूमि में गा-गाकर रामायण सुनाते हैं। **संदर्भ** : बालमीकि-रामायण-उत्तर-काण्ड-सर्ग-92; पद्मपुराण-उत्तर खण्ड, 60-65; जैमिनी-अश्वमेध-18-36; अध्यात्म-रामायण-7/7; आनन्द रामायण-जन्मकाण्ड

(29) सीता का पृथ्वी में समाना

राम ने लोकापवाद के भय से सीता का त्याग कर दिया था। सीता बालमीकि ऋषि के आश्रम में रहीं और वहां पर उसने लव और कुश नामक दो पुत्रों को जन्म दिया। राम द्वारा दिये गये अश्वमेध-यज्ञ के समय लव कुश जब बालमीकि के साथ अयोध्या में आये तो उन्हें पहचानकर राम सीता को लेने के लिये बालमीकि-आश्रम में गये, लेकिन सीता पृथ्वी में समा गई। 'आनन्द रामायण' के अनुसार सीता के पृथ्वी में समा जाने पर राम पृथ्वी पर क्रोधित हुए। उन्होंने पृथ्वी से सीता लौटाने को कहा। तब पृथ्वी ने सीता को लौटा दिया। **संदर्भ** : बालमीकि-रामायण-उत्तरकाण्ड; ब्रह्म-154; भागवत-9/11/8-11; अध्यात्म-रामयण-7/7; आनन्द-रामायण-जन्मकाण्ड-8

(30) राम द्वारा शिव की शरण में जाना

अगस्त्य मुनि की प्रेरणा से राम ने भस्म लगाकर, रुद्राक्ष पहनकर शिव का ध्यान करना प्रारम्भ किया। रामचन्द्र की भक्ति से शिव प्रसन्न होकर प्रकट हुए और उन्होंने राम से वर मांगने को कहा। तब राम ने शिव से रावण का वध करने और सीता को

उसके बन्धन से छुड़ाने की अपनी अभिलाषा कही। तब शिव ने इस शुभ कार्य की शुद्धि के लिए राम को अपने धनुष और बाण दिये। 'शिव-पुराण' में एक अन्य स्थल के अनुसार' विष्णु ने रावण-वध के लिए शिव की आराधना की, जिससे शिव ने विष्णु पर प्रसन्न होकर रावण की बुद्धि भ्रष्ट की। तदनुसार रावण ब्राह्मणों को दुख देने लगा और कैलाश को उठाने का भी उसने दुस्साहस किया। तब विष्णु ने राम का अवतार लेकर तप करके शिव से एक प्रलयंकर बाण प्राप्त किया और इसी बाण से रावण का वध कर सीता को मुक्त कराया। 'कूर्म-पुराण' में उल्लेख है कि राम ने शंकर की लिंग की स्थापना कर शिव की पूजा की। **संदर्भ** : शिव-पुराण-अष्टम खण्ड, अ० 49,पूर्वार्ध, पंचम-खण्ड 1, युद्ध खण्ड, अ० 1; कूर्म-1/20;

(31) राम द्वारा उलूक को न्याय

एक बार श्रीराम सीता के साथ अयोध्या लौट रहे थे। रास्ते में एक गृद्ध और एक उलूक आपस में विवाद करते हुए राम-दर्शन के लिए आये। राम ने उनसे आपस के झगड़े का कारण पूछा। तब उलूक ने बताया कि उसने पर्वत पर रहने के लिए आम के वृक्ष पर एक घोंसला बनाया था। कारणवश उसे छोड़कर अन्यत्र जाना पड़ा, तब यह गृद्ध उस घोंसले में आकर रहने लगा और अब वह उसे छोड़ने को तैयार नहीं है। इसे सुनकर गृद्ध ने कहा 'कि हे राम! यह घोंसला पहले भी मैंने बनाया था। कुछ दिन बाहर चले जाने पर यह उलूक उसमें रहने लगा था। जब यह छोड़कर कहीं चला गया तो मैंने पुनः अपना घर संभाल लिया। आप इसकी बातों में आकर अधर्म न कीजिये। तब राम ने उलूक से पूछा, तुमने यह घोंसला कब बनाया था। उसने उत्तर दिया कि जब पृथ्वी की रचना हुई, उस समय ही मैंने घोंसला बना लिया था। गृद्ध ने पूछने पर बताया कि जब पृथ्वी जलमग्न थी, उसी समय मैंने यह घोंसला बना लिया था। सुनकर राम ने कहा—जब पृथ्वी की उत्पत्ति ही नहीं हुई थी तब यह आम का वृक्ष किसके सहारे खड़ा था। तुम्हारी बात झूठी है। तुम उलूक को व्यर्थ ही सता रहे हो। इतना कहकर राम ने दूतों द्वारा गृद्ध को त्रिशूल पर चढ़वाकर उसे अपना परमपद दिया। रामदर्शन करते हुए उसने प्राणोत्सर्ग किया। इस प्रकार उसे दण्ड देकर राम ने घोंसला उलूक को दे दिया। **संदर्भ** : पद्म-पुराण-स्मृति खण्ड, अ० 34; आनन्द-रामायण, राज्यकाण्डम, सर्ग 10,

(32) श्री राम द्वारा कुत्ते को न्याय देना

एक बार सभा में बैठे हुए श्रीरामचन्द्र ने एक कुत्ते की कई बार रोने की आवाज सुनी। दूत ने एक-दो दिन तो कुत्ते को दूर भगा दिया, किन्तु तीसरे दिन उसके रोने की आवाज सुनकर राम ने लक्ष्मण को उसके दुःख को जानने के लिए भेजा। राज दरबार में बुलाये जाने पर कुत्ते ने इनकार कर दिया, क्योंकि पाप-योनि में जन्म होने के कारण अपने को राज-दरबार जैसे पवित्र स्थानों में जाना वर्जित बताया। तब रामचन्द्र ने उस कुत्ते के पास जाकर उसके दुःख का कारण पूछा? कुत्ते ने राम को बताया कि बिना किसी अपराध के ही एक संन्यासी ने उसके पत्थर मारकर उसका पैर तोड़ दिया है, अतः वह न्याय के लिए

उनकी शरण में आया है । तब श्रीराम ने संन्यासी से उस कुत्ते के पैर तोड़ने का कारण पूछा । उस संन्यासी ने बताया कि इस कुत्ते ने मेरा भिक्षान्न छू दिया । इसके धमकाने के लिए मैंने इसको पत्थर मारा जो इसके पैर में लगा और इसका पैर टूट गया । इस पर श्रीराम ने कहा, भक्ष्य पदार्थ को देखकर छूना इस ज्ञानविहीन प्राणी की प्रवृत्ति है, अतः तुम दोषी हो । जब श्रीराम ने उस यति को दण्ड देने की बात कही तो कुत्ते ने यति को शिवालय का महन्त बनाने को कहा । श्रीराम ने ऐसा ही किया । लोगों के द्वारा जब इसका कारण पूछा गया तो कुत्ते ने बताया कि अनेक कुकर्म करने वाले तथा शिवालय, मठ, बगीचा, दान, ग्राम आदि के अधिपति मृत्यु के पश्चात कुत्ते की योनि में जन्म पाते हैं । **संदर्भ** : बाल्मीकि-रामायण-उत्तरकाण्ड, सर्ग-1-2; आनन्द रामायण-राज्य काण्डम (पूर्वार्ध) सर्ग-10

(33) राम द्वारा शम्बूक वध

शम्बूक 'त्रैवर्णिकों' की सेवा करने का शूद्र कार्य त्याग कर तपस्या में लग गया । इसके इस पाप कर्म के परिणामस्वरूप अयोध्या में ब्राह्मण के एक सोलह वर्षीय पुत्र की असामयिक मृत्यु हो गई । ब्राह्मण ने अपने पुत्र की मृत्यु का दोषी राजा के नाते राम को ठहराया । जब राम को यह ज्ञात हुआ कि ब्राह्मणकुमार की मृत्यु इस घटना के कारण हुई है तो राम ने शैवलक के उत्तर स्थित जनस्थान में जाकर शम्बूक का वध कर दिया । उसका वध करते ही ब्राह्मण का मृतपुत्र जीवित हो उठा । आनन्द रामायण के अनुसार शृंगवेर के एक ब्राह्मण ने राम के पास अपने पुत्र का शव भेजा । तदनन्तर उनके पास एक शव और आया । तब राम क्रोधित होकर शूद्र का वध करने गये । **संदर्भ** : बाल्मीकि-उत्तरकाण्ड-73-76; महाभारत-शान्ति पर्व, 149/62; आनन्द रामायण-राज्यकाण्ड (पूर्वार्ध) सर्ग-10

(34) राम का जाम्बवान को वर

परमधाम गमन का निश्चय कर राम ने सुषेण, सुग्रीव, विभीषण आदि को समझाकर जाम्बवान से बोले—जाम्बवान ! जब तक इस संसार में मेरी कथा प्रचलित रहे, तब तक तुम इसी लोक में रहो । द्वापर के अन्त में फिर मेरी तुम्हारी भेंट होगी । तुमने लंका और वन में मेरी जो सहायता की है, उसी के प्रभाव से तुम मेरे श्वसुर होकर प्रसिद्ध होगे । **संदर्भ** : आनन्द रामायण-पूर्णकाण्ड, सर्ग 5

(35) राम द्वारा लक्ष्मण का परित्याग/महाप्रयाण

राम के दर्शन करने के लिये ऋषिवेष धारण कर काल आया । तब रामचन्द्र उसे अन्दर ले गये और लक्ष्मण से कहा कि किसी को अन्दर मत आने देना । जो भी अन्दर आयेगा मेरे द्वारा मारा जायेगा । उसी समय दुर्वासा ऋषि आये और लक्ष्मण से अन्दर जाने के लिए कहा । दुर्वासा के क्रोधी स्वभाव को जानकर लक्ष्मण स्वयं अन्दर चले गये । इस पर राम ने लक्ष्मण को त्याग दिया । उसी समय लक्ष्मण सरयू तट पर गये और सशरीर स्वर्ग लोक को चले गये । तदनन्तर राम ने लव और कुश का राज्याभिषेक किया और सरयू तट पर जाकर चतुर्भुज रूप हो गये । **संदर्भ** : अध्यात्म रामायण, 7/9

(36) राम का परमधाम गमन

अयोध्या में राज्य करते हुए जब पर्याप्त समय हो गया तो एक दिन रामचन्द्र के पास काल एक तपस्वी का रूप धारण करके आया। उस समय राम उससे गुप्त मंत्रणा कर रहे थे और उन्होंने द्वार पर लक्ष्मण को यह कहकर खड़ा कर रखा था कि वह अन्दर किसी को न आने दें। परन्तु उसी समय वहां पर दुर्वासा ऋषि आये और उन्होंने राम से शीघ्र ही मिलने की इच्छा व्यक्त की। लक्ष्मण के मना करने पर दुर्वासा क्रोधित होने लगे। तब लक्ष्मण ने दुर्वासा को अन्दर जाने की आज्ञा दे दी। तत्पश्चात लक्ष्मण ने आज्ञा-भंग के दोष में उन्हें प्राणदण्ड देने का आग्रह किया। उस समय राम ने सभा में विचार कर लक्ष्मण का परित्याग कर दिया। लक्ष्मण ने सरयू नदी में जाकर समाधि ले ली। तदुपरान्त रामचन्द्र ने भी लवकुश को राज्य देकर अपने अन्य भाइयों के साथ जल-समाधि ले ली।

'आनन्द रामायण' के अनुसार ब्रह्मा राम के पास आकर उनसे परमधाम जाने की प्रार्थना करते हैं। राम इसकी स्वीकृति देकर परमधाम गमन की तैयारियां करते हैं वे अपने पुत्र-पौत्रों को राज्य भार सौंपकर सभी मित्र राजाओं को विदा करते हैं। तदनन्तर वे गरुड़ पर बैठकर बैकुण्ठ धाम को चले गये। **संदर्भ** : बालमीकि-रामायण सर्ग-110; आनन्द रामायण-पूर्णकाण्ड, सर्ग-6

रावण सम्बन्धी कथाएं

(1) रावण का जन्म

प्रजापति के पुत्र पुलस्य एक बार तपस्त्या कर रहे थे। वहां पर आकर कुछ कन्याएं विघ्न डालने लगीं और राजा तृणविन्दु की कन्या उनके शाप से गर्भवती हो गई। तब वह कन्या तृणविन्दु ने पुलस्त्य को ही दे दी, जिससे विश्रवा (पौलत्स्य) नामक पुत्र पैदा हुआ। विश्रवा के साथ भरद्वाज मुनि ने अपनी पुत्री का विवाह कर दिया, जिससे वैश्रवण (कुबेर) उत्पन्न हुआ, जो धनाध्यक्ष बना। ब्रह्मा की तपस्या करके उसने लोक-पाल पद, पुष्पक विमान प्राप्त किया और वह ब्रह्मा की आज्ञा से त्रिकूट पर्वत पर बनी लंकापुरी में रहने लगा। कालान्तर में विद्युत्केश राक्षस के पुत्र सुमाली ने अपनी पुत्री केकसी का विवाह मुनि विश्रवा से कर दिया। उसके दस सिर वाला, रावण, महाबली कुंभकर्ण, विभाषण और विकृत मुंहवाली शूपर्णखां उत्पन्न हुई। रावण ने अपने मातामह सुमालि के अनुरोध पर अपने मंत्री प्रहस्त का भेजकर कुवेर से राक्षसों के लिए लंका ले ली और वह वहां रहने लगा। **संदर्भ** : बालमीकि-उत्तरकाण्ड-सर्ग-1-10; महाभारत-वनपर्व, अ० 275; अग्नि,अ० 11; कूर्म-1/18; अध्यात्म-रामायण-7/1; आनन्द रामायण-सार खण्ड-सर्ग-13

(2) रावण का मन्दोदरी से विवाह

दिति पुत्र मय के हेमा नाम अप्सरा से मन्दोदरी नामक पुत्री थी। एक बार रावण वन में शिकार के लिए निकला और उसने उसके साथ मन्दोदरी को देखकर उससे उसके

सम्बन्ध में पूछा तथा उसे अपना परिचय दिया कि वह विश्रवा का पुत्र दसग्रीव है। मय ने उसे ऋषि-पुत्र समझकर अपनी पुत्री मन्दोदरी का उसके साथ विवाह कर दिया।

'आनन्द रामायण' के अनुसार एक बार रावण ने शिव से प्रसन्न होकर पार्वती और आत्मलिंग वर में मांग ली। वह दोनों को लेकर चल दिया। तब विष्णु ने एक सुन्दर कन्या बनाकर मय दानव को दी तथा उन्होंने एक ब्राह्मण का रूप धारण कर रावण से कहा। तुमको तो शिव ने ठग लिया। वास्तविक पार्वती तो मय दानव के पास है। यह तो नकली पार्वती है। तब रावण ने शिव को पार्वती लौटाकर मय दानव की पुत्री से विवाह कर लिया और उसका नाम मन्दोदरी रखा। **संदर्भ** : बालमीकि-रामायण-उत्तर-काण्ड सर्ग-12; आनन्द रामायण-सार खण्ड, सर्ग-9

(3) रावण को ब्रह्मा द्वारा शाप

एक बार पुंजिकस्थल नामक अप्सरा ब्रह्मा जी के पास उन्हें प्रणाम करने जा रही थी। उसे देखकर रावण ने उसे पकड़ लिया और उसके साथ बलात्कार किया। जब वह ब्रह्मा के पास गई और अपनी दुर्दशा होने के सम्बन्ध में उन्हें बताया तो ब्रह्मा ने रावण को शाप दे दिया कि यदि वह किसी स्त्री के साथ बलात्कार करेगा तो उसके सिर के सौ टुकड़े हो जायेंगे। **संदर्भ** : बालमीकि-युद्ध काण्ड, सर्ग-13

(4) रावण को नलकूबर का शाप

एक समय रावण ने नलकूबर के पास जा रही रम्भा के साथ बलात्कार किया। रम्भा के मुख से इस वृत्तान्त को सुनकर नलकूबर ने रावण को शाप दे दिया कि वह (रावण) न चाहने पर किसी स्त्री को स्पर्श करेगा तो उसके सिर के सात टुकड़े हो जायेंगे। **संदर्भ** : बालमीकि रामायण-उत्तरकाण्ड, सर्ग-26; आनन्द-रामायण-सार खण्ड, सर्ग-13

(5) रावण द्वारा सीता-हरण : राम का वियोग

खर की विराट-सेना जब राम द्वारा मारी गई तो वहां पर अकंपन नामक राक्षस बच निकला। उसने लंका में जाकर राम के शौर्य का वृत्तान्त रावण से कहा और सीता के हरण की सलाह दी। तब रावण मारीच के पास गया, पर मारीच ने सीता-हरण से अनिष्ट बताकर इस भाव को त्यागने को कहा। यह सुनकर रावण लंका लौट आया। कुछ दिन बाद शूपर्णखा उसके पास रोती-चिल्लाती आई तथा बार-बार रावण के पौरुष को धिक्कारा। तब रावण पुनः मारीच के पास गया तथा सीता को हरण करने में सहयोग देने को कहा। मारीच के इसको न मानने पर उसने मारीच को वध की धमकी दी। इस पर मारीच इस नीच काम के लिए तैयार हुआ तथा वह मृग का रूप धारण कर राम के आश्रम में पहुंचा, जिसका वध करने के लिए सीता की इच्छा से राम गये। उधर रावण सीता का हरण कर लाया। राम सीता के वियोग में वन-वन विलाप करते और वृक्ष-लताओं से सीता के विषय में पूछते फिरे।

'अध्यात्म रामायण' के अनुसार रावण ने खर-दूषण की मृत्यु से राम-अवतार के रहस्य को जान लिया एवं अपनी मोक्ष-साधना के लिए सीता-हरण किया। अध्यात्म रामायण में

यह भी उल्लेख है कि सीता को इस प्रकार की शक्ति प्राप्त थी कि यदि उसे कोई पृथ्वी पर से छूकर उठाता तो वह जलकर भस्म हो जाता। रावण अपने अंगूठे से मिट्टी उठाकर सीता को अधर कर देता है। फिर उसे गोद में उठाकर ले गया। **संदर्भ** : बालमीकि-रामायण-अरण्यकाण्ड-35-49; महाभारत-वनपर्व, अ० 277-78; रामतापनीय उपनिषद्-4/17; ब्रह्मवैवर्त, अ० 62; भागवत-9/10/10-11; अग्नि, अ० 7; कूर्म-1/20; देवीभागवत-3/28/26-31; अध्यात्म-रामायण, 3/6-7; हनुमान्नाटक-अंक-5; आनन्द-रामायण-1/11/144

(6) रावण और सहस्रबाहु वैर

रावण ने दस हजार वर्ष तक तप कर किसी के भी द्वारा न मारे जाने का वर प्राप्त कर लंका पर अपना आधिपत्य कर अन्य देशों पर अधिकार करने लगा तथा उस समय के बलशाली राजा सहस्रबाहु के राज्य पर भी अधिकार करने के लिए उसकी नगरी माहिष्मती में पहुंचा। जहां उसे सहस्रबाहु ने पकड़कर कारागार में डलवा दिया और अन्त में मित्रता होने के बाद छोड़ा।

'वाल्मीकि रामायण' के अनुसार "एक बार रावण अपने सेनापतियों को साथ लेकर कार्तवीर्य के साथ युद्ध करने की इच्छा से माहष्मती पहुंचा, उस समय वह अपनी स्त्रियों के साथ नर्मदा में क्रीड़ा कर रहा था। तब रावण नर्मदा के किनारे बैठकर पूजा करने लगा। उस समय कार्तवीर्य ने अपनी दस हजार भुजाओं से पानी रोक दिया, जिससे वहां बैठे रावण की पूजा सामग्री बह गई। इस पर रावण कुपित हो कार्तवीर्य से युद्ध के लिए उद्यत हुआ। अकेले सहस्रबाहु ने रावण की समस्त सेना को मार भगाया और रावण को बांधकर माहष्मती ले आया, जिसे बाद में पुलस्त्य ने छुड़वाया तथा दोनों की मित्रता करा दी। **संदर्भ** : बालमीकि-रामायण-उत्तरकाण्ड, अ० 31-33; महाभारत-सभा पर्व, 16/37-44; विष्णु-4/11; वायु-2/32; भागवत-9/15; नारद पुराण-1/76; मत्स्य-43; हरिवंश-9/33; हनुमन्नाटक सर्ग, 14/25

(7) रावण द्वारा ब्रह्मा की भक्ति

रावण के सौतेले भाई वैश्रवण कुवेर ने तपस्या करके धनेश का पद तथा पुष्पक विमान प्राप्त किया। विष्णु के भय से छोड़ दी गई लंका का राज्य विश्रवस ने कुवेर को दे दिया। एक बार कुवेर अपने पुष्पक विमान पर बैठकर अपने पिता से मिलने आया। रावण की माता ने रावण को अपने भाई के समान बनने के लिए प्रेरित किया। तब रावण गोकर्ण में तपस्या करने लगा और दस हजार वर्ष तक तपस्या करता रहा। प्रत्येक हजार वर्ष बाद वह अपना सिर काटकर अग्नि में आहुति दे देता। इस प्रकार उसने अपने नौ सिरों की आहुति दे दी। दस हजार वर्ष बाद जब वह अपने दसवें सिर की अग्नि में आहुति देने वाला था तभी ब्रह्मा ने प्रसन्न होकर इसे वर दिया कि तुम मनुष्य के अतिरिक्त सुपर्ण, नाग, यक्ष, दैत्य, दानव, राक्षस तथा देवताओं के लिए भी अवध्य रहोगे। ब्रह्मा से वर प्राप्त करने के पश्चात उसने अपने पितामह सुमालि के अनुरोध पर अपने मन्त्री प्रहस्त को कुवेर के पास भेजकर लंका का राज्य राक्षस वंश के लिए मांग

लिया। पिता वैश्रवस की आज्ञा मानकर कुवेर कैलास पर्वत पर चला गया तथा रावण अपने राक्षस बांधवों के साथ लंका में रहने लगा।

महाभारत तथा पद्म-पुराण में भी ब्रह्मा की भक्ति से सम्बन्धित प्रसंग मिलता है। **संदर्भ** : बाल्मीकि-रामायण-उत्तरकाण्ड, अ० 10/3; महाभारत-वनपर्व, अ० 269, 26; पद्म-पुराण, अ० 6; आनन्द रामायण-सारखण्ड सर्ग-13

(8) **रावण द्वारा शिव की उपासना**

एक दिन रावण की माता केकसी ने रावण को शिव के पास शिवलिंग लेने के लिए भेजा। वहां जाकर रावण ने शिवजी को प्रसन्न करने के लिए कैलाश पर्वत पर कठिन तप किया और अपने अंगों की बीणा बनाकर गन्धर्वों के समान गायन किया। तब भगवान शंकर ने नन्दीश्वर से कहा कि तुम रावण का सिर संधान कर उससे कहो कि तुम्हारे जैसे राक्षस को शिव कभी भी अपना लिंग न देंगे। नन्दीश्वर ने रावण का सिर जोड़कर शिव का सन्देश उसे सुनाया। लेकिन रावण उस दिन तक वहीं रहा और नित्य-प्रति उसी प्रकार अपने गायन करता रहा। तब उसके भयानक कार्य और मनोहर गायन से शिव प्रसन्न हुए और उसका सिर जोड़कर वर मांगने को कहा और उसके दस बार सिर काटने के कारण दस भुजाएं और दस सिर प्रदान किये। वर में रावण ने अपनी माता के लिए आत्मलिंग और पार्वती को पत्नी बनाने के लिए मांगा। शिव ने तथास्तु कहकर दोनों चीजें दे दीं, परन्तु पार्वती को भगवान विष्णु ने रावण से छीन लिया बाद में पार्वती उन्हें धोखा देकर अलग हो गई और आत्मलिंग भी समुद्र के किनारे गोकर्ण नामक तीर्थ में स्थापित कर दी।

'बाल्मीकि रामायण' के एक अन्य स्थल के अनुसार ब्रह्मा से बर प्राप्त कर रावण ने पृथ्वी पर अत्याचार करने प्रारम्भ कर दिए। कुवेर द्वारा उसे सावधान करने पर उसने कुवेर पर ही आक्रमण कर दिया। यक्ष-सेना को पराजित कर कुवेर को भी पराजित कर उससे पुष्पक विमान छीन लिया। बाद में उसे शिव ने प्रसन्न होकर उसे चन्द्रहास नामक तलवार दी तथा इसे अपने भक्तों में सम्मिलित कर लिया। अनन्तर रावण शिव का परन भक्त बन गया एवं एक सुवर्णलिंग सदा साथ रखता था। 'रावण के शिव-भक्ति का उल्लेख आनन्द रामायण एवं पद्म-पुराण में भी मिलता है। **संदर्भ** : बाल्मीकि-रामायण-उत्तरकाण्ड, अ० 9/15 31; पद्म-पुराण-उत्तरकाण्ड, अ०242; आनन्द रामायण-1/13/26-44

(9) **रावण द्वारा कैलाश पर्वत उठाना**

कुवेर को पराजित करने के पश्चात पुष्पक विमान द्वारा कैलाश पर्वत के ऊपर से निकलते समय पुष्पक के अचानक रुक जाने पर रावण पृथ्वी पर उतरा। वहां पर नन्दी का मुख बन्दर के समान देखकर उपहास किया। इस पर उसे नन्दी ने यह शाप दे दिया कि 'उसके जैसे वानरों से ही उसे पराजित होना पड़ेगा। तब रावण कैलाश पर्वत को लंका ले जाने के लिए उसे जड़मूल से उखाड़ने की चेष्टा करने लगा। रावण के बल से पर्वत हिलने लगा, किन्तु शिव ने अपने पैर के अंगूठे से कैलाश पर्वत को नीचे दबाया,

जिससे रावण की भुजाएं उस पर्वत के नीचे जकड़ गईं। सहस्रों वर्षों तक विलाप करके और शिव का गुणगान करने के पश्चात शिव ने रावण की भुजाएं मुक्त करके उसे अपना भक्त बना लिया। पर्वत के नीचे दब जाने से इसने चीत्कार किया था, उसी से इसका नाम रावण हुआ। **संदर्भ :** बाल्मीकि-रामायण-उत्तरकाण्ड, 6; ब्रह्म, अ० 110,143

(10) रावण द्वारा राम का बनावटी कटा सिर सीता को दिखाना/ सरमा नामक राक्षसी द्वारा सीता को समझाना

राम की सेना की शक्ति और शौर्य सुनकर रावण उद्विग्न हो उठा और उसने मंत्रियों से सलाह ली। इसके बाद वह अपने अन्तःपुर में गया और वियुज्जिढ नामक राक्षस को बुलवाकर रामचन्द्र का बनावटी और कटा सिर बनवाया। उसे लेकर वह सीता के पास गया। सीता राम के कटे सिर को देखकर विलाप करने लगी और मरने के लिये उद्यत हुई। तब सीता की हितैषिणी सरमा नामक राक्षसी ने समझाया कि वह रावण के द्वारा छली गई है। रामचन्द्र अपनी सेनासहित समुद्र के इस पार आ गये हैं। **संदर्भ :** बाल्मीकि-युद्ध सर्ग-33

राहुकेतु की कथा

राहु कश्यप एवं सिंहिका का पुत्र था। समुद्र-मंथन से प्राप्त अमृत को जब मोहिनी रूप धारण कर विष्णु देवताओं में बांट रहे थे, तब यह चुपके से देवताओं में सूर्य और चन्द्रमा के मध्य में आकर बैठ गया और अमृत का पान कर लिया। अमृत अभी इसके गले तक ही पहुंचा था कि सूर्य और चन्द्र ने इस दानव के कपट रूप में धारण कर अमृत पीने की बात विष्णु को कह दी। तत्काल विष्णु ने सुदर्शन चक्र से इसका सिर धड़ से अलग कर दिया और इसका सिर धड़ से अलग जा गिरा।

'पद्म-पुराण' के अनुसार जब विष्णु ने सुदर्शन चक्र से सिर अलग कर दिया तो धड़ के सिर से अलग होते ही सिर से केतु बन गया और धड़ से राहु और दोनों विष्णु से डरकर भाग गये। परन्तु सूर्य और चन्द्र से इनका द्वेष हो गया। इसी कारण आज भी ये उन्हें ग्रसते रहते हैं, इसी से सूर्यग्रहण और चन्द्रग्रहण होता है।

'विष्णु धर्मोत्तर' पुराण में इसे कश्यप एवं दनु का पुत्र कहा गया है। **संदर्भ :** महाभारत-आदि पर्व, अ० 17/4/6; ब्रह्म, अ०106; पद्म-पुराण-ब्रह्म खण्ड, अ०, 10; विष्णु; ब्रह्माण्ड-3/6/18-20; विष्णु-धर्मोत्तर-1/106; भागवत-8/9

राहु का शंकर की क्रोधाग्नि से भयभीत होना

शंकर और जालन्धर में हो रहे युद्ध के समय राहु जालन्धर की ओर से राजदूत बनकर शंकर के पास गया किन्तु वहां से शंकर की क्रोधाग्नि से भयभीत होकर भाग खड़ा हुआ। **सन्दर्भ :** पद्म-पुराण-उत्तरकाण्ड, अ० 19

राक्षसों की दिशा दक्षिण में होना

राक्षसों के रहने के लिए दक्षिण सागर के किनारे त्रिकूट नामक पर्वत के शिखर पर विश्वकर्मा ने लंकापुरी का निर्माण किया था, जिसमें रावण अपने साथियों व सेवकों के साथ रहता था और इनका अधिकार भारत के दक्षिण में फैला हुआ था। **सन्दर्भ :** बाल्मीकि-रामायण-उत्तरकाण्ड, अ० 5

रुक्मी की सहायता को कौरव और पाण्डवों द्वारा अस्वीकार करना

जब महाभारत के युद्ध की तैयारी हो रही थी। उस समय भोजवंशी भीष्मक का पुत्र रुक्मी एक अक्षौहिणी सेना लेकर पाण्डवों के पास आया तथा उसने अपनी बार-बार प्रशंसा करते हुए सहायता देने के लिए कहा। उस समय अर्जुन ने उसकी सहायता स्वीकार नहीं की। तब वह कौरवों के पास गया। कौरवों ने भी उसकी सहायता लेने से मना कर दिया। **संदर्भ** : महाभारत-उद्योग पर्व, अ० 156

रुरु का अपनी पत्नी को आधी आयु देकर जीवित करना

एक बार रुरु की पत्नी प्रमद्वरा को सर्प ने डस लिया, जिससे उसकी मृत्यु हो गई। शोक से पीड़ित होकर रुरु ने बहुत करुणाजनक विलाप किया। उस समय एक देवदूत रुरु के पास आया तथा बताया कि यह गन्धर्व और अप्सरा की पुत्री थी। इसे जितनी आयु मिली थी, वह पूरी हो चुकी है। परन्तु यदि वह इसे अपनी आधी आयु दे सके तो यह जीवित हो सकती है। तदनुसार रुरु ने अपनी आधी आयु देकर अपनी भार्या प्रमद्वरा को जीवित किया। **संदर्भ** : महाभारत-आदि पर्व-9

रेणुका की कथा

रेणुका इक्ष्वाकुवंशीय राजा रेणु की पुत्री एवं महर्षि जमदग्नि की पत्नी थी। एक बार महर्षि बाणक्षेपण का खेल खेल रहे थे। उन बाणों को वापस लाने का कार्य रेणुका को सौंपा गया। एक बार रेणुका को बाण लाने में विलम्ब हो गया। जिससे क्रोधित होकर महर्षि जमदग्नि ने अपने पुत्र परशुराम से उसका सिर कटवा दिया। **संदर्भ** : महाभारत

रैदास द्वारा गंगा में सुपाड़ी चढ़ाना

रैदास भगवान के परम भक्त थे। गंगा-स्नान के लिए जाते हुए लोगों को रैदास ने एक सुपाड़ी गंगा में चढ़ाने के लिए दी। जिस व्यक्ति को वह सुपाड़ी दी गई थी, जब उसने सुपाड़ी गंगा में चढ़ाई तो गंगा ने हाथ निकालकर वह सुपाड़ी ले ली।

रोहिणी का ब्रजगमन

यह वसुदेव की पत्नी थी। कंस के अत्याचारों से बचाने के लिए इन्हें वसुदेव ने अपने मित्र नन्द के पास गोकुल में भेज दिया था। **सन्दर्भ** : ब्रह्म-182/1-6; विष्णु-4/15/19;

भागवत-2/8-13, 10/2/6-8

ऋषभ-अवतार

महाराज नाभि के मेरुदेवी के गर्भ से उत्पन्न भगवत्प्रतिरूप पुत्र तथा अजनाभ राज्य के राजा के रूप में इनका उल्लेख मिलता है। उन्होंने दिगम्बर संन्यासी और ऊर्ध्वरेता मुनियों का धर्म प्रकट करने के लिए अवतार धारण किया था। 'शिव-पुराण' के अनुसार शिव ने ऋषभ के रूप में अवतार लिया। **संदर्भ** : भागवत-1/3/13, 2/7/10, 5/3/20 शिव-शतरुद्र संहिता।

ऋषभदेव का राज्य शासन

एक बार इन्द्र ने नाभि के राज्य में ईर्ष्यावश वर्षा नहीं की। तब उनके पुत्र योगेश्वर ऋषभ ने इन्द्र की मूर्खता पर हंसते हुए अपनी योगमाया के प्रभाव से अजनाभ खण्ड में खूब जल बरसाया। तब महाराज नाभि ऋषभदेव को राज्याभिषिक्त कर ब्राह्मणों की देख-रेख में छोड़कर तपस्या करने के लिए चले गये। ऋषभदेव ब्राह्मणों को बतलायी हुई विधि से साम-दामादि नीति के अनुसार जनता का पालन किया। **संदर्भ** : भागवत-5/4

ऋषभदेव का राज्य त्याग

एक बार ऋषभदेव घूमते-घूमते ब्रह्मावर्त देश में पहुंचे। वहां उन्होंने महर्षियों की सभा में अपने पुत्रों को उपदेश दिया। उन पुत्रों को पृथ्वी का पालन करने के लिए उनका राज्याभिषेक कर दिया और स्वयं संन्यासी होकर ब्रह्मावर्त देश से बाहर वन में तपस्या करने चले गये। **संदर्भ** : भागवत-5/5

लंका का निर्माण

दक्षिण के सागर किनारे त्रिकूट नामक पर्वत के शिखर पर अमरावती सदृश लंका नामक विशालपुरी का निर्माण राक्षसों के लिए बड़े यत्न से विश्वकर्मा ने किया था। कुछ दिन उपरान्त विष्णु के भय से राक्षस इसको छोड़कर चले गये थे। बाद में कुबेर तथा तत्पश्चात रावण लंका का अधीश्वर हुआ। **संदर्भ** : बालमीकि-रामायण-उत्तरकाण्ड, अ० 5

लक्ष्मण द्वारा शूपर्णखा के नाक-कान काटना

पंचवटी में राम, लक्ष्मण और सीता के पास रावण की विधवा बहिन शूपर्णखा आई। वह राम और लक्ष्मण को विवाह के लिए आकर्षित करने लगी और अन्त में काम न बनता देखकर उन्हें भयभीत करने लगी। तब राम के इशारे से लक्ष्मण ने उसके नाक-

कान काट लिये। वह चिल्लाती हुई पंचवटी के राजा खर के पास गई। खर ने अत्यन्त क्रोधित होकर अपनी विराट राक्षसों की सेना सहित राम पर आक्रमण कर दिया। राम के कहने से लक्ष्मण सीता को लेकर पर्वत-कन्दरा में चले गये और अकेले राम ने अनेक प्रकार के अस्त्र-शस्त्रों से सुसज्जित राक्षसों की अपार सेना को मार गिराया।

गरुड़, पद्म और देवी भागवत पुराणों के अनुसार राम द्वारा शूर्पणखा के विरूपण का उल्लेख मिलता है। **संदर्भ** : बाल्मीकि-रामायण-अरण्यकाण्ड-17-18;पद्म-पाताल खण्ड, अ० 36, उत्तरखण्ड, अ० 269; भागवत-9-10/4-9; अग्नि-7; ब्रह्मवैवर्त-(श्रीकृष्ण जन्म-खण्ड)-9/32; गरुड़, अ० 143; देवी भागवत-3/18; नृसिंह पुराण, अ० 49; आनन्द रामायण-सारखण्ड-सर्ग-7

लक्ष्मण सीता संवाद

रावण की प्रेरणा से राक्षस मारीच सुनहरी वर्णवाले मृग का रूप धारण कर पंचवटी में आया। जिसे देखकर सीता उसके चर्म की आकांक्षा करने लगीं। राम ने इस बात को जान लिया कि ये कोई राक्षस है, जो कि माया रूप बनाकर यहां आया है, लेकिन फिर भी सीता को सन्तुष्ट करने के लिए वे धनुष-बाण लेकर उस मृग को मारने के लिए दौड़े तथा जाते समय लक्ष्मण से कहकर गए कि जब तक मैं वापिस न आऊं, तुम सीता के साथ यहीं रहना तथा सीता की रक्षा के लिए बुद्धिमान, चतुर, बली जटायु पक्षी को भी सावधान करना। राम ने जब मृग को मार गिराया, तब वह हा लक्ष्मण, हा सीते, कह कर चिल्लाने लगा। जिसे सुनकर सीता ने भयभीत होकर भाई की रक्षा करने के लिए लक्ष्मण से कहा। लक्ष्मण ने इस पर सीता से कहा कि देवता, मनुष्य, गन्धर्व, यक्ष, राक्षस, पिशाच, किन्नर और मृगों में ऐसा कोई नहीं जो राम का मुकाबला कर सके। मैं तुम्हें इस वन में अकेली नहीं छोड़ सकता। लक्ष्मण की यह बात सुनकर सीता क्रुद्ध हो गई और लक्ष्मण को घातक, कुलनाशक कहकर सम्बोधित किया तथा कहा कि वह राम के दुःख से प्रसन्न होने वाला है। वह दुष्ट हृदय है और मालूम होता है कि मेरे लिए भरत ने उसे गुप्त रूप से भेजा है। वह मेरे लिए वन में अकेला आया है, लेकिन उसका मनोरथ कभी पूरा नहीं हो सकता है।

इसे सुनकर लक्ष्मण ने सीता से कहा कि स्त्रियों का ऐसा अनुचित बोलना कुछ नयी बात नहीं, क्योंकि उनका तो स्वभाव ही ऐसा होता है। वे अपना धर्म छोड़ देती हैं। वे चंचल होती हैं। वे आपस में भेद करा देती हैं। उसी प्रकार का तूने व्यवहार किया है, तू दुष्ट स्वभाव की है। वे सीता को समझाकर कि वह कुटी से बाहर न निकले और वहां से वन में राम के पास चल दिए।

'कृतिवासी रामायण' के अनुसार लक्ष्मण कुटी के दरवाजे के सामने एक रेखा खींच जाते हैं कि वह उससे बाहर न निकले। **संदर्भ** : बाल्मीकि-रामायण-अरण्यकाण्ड, सर्ग-45; महाभारत-रामोपाख्यान; अग्नि, अ० 7; अध्यात्म रामायण; कृतिवासी-रामायण।

लक्ष्मण मेघनाद युद्ध

मेघनाद मंदोदरी से उत्पन्न रावण का पुत्र था। राम-रावण युद्ध में राम-लक्ष्मण को उसने दो बार पराजित किया था। यह अन्त में लक्ष्मण के हाथों मारा गया। **संदर्भ :** रामायण-युद्ध-काण्ड, सर्ग-93; भागवत-9/10/18; अग्नि, अ० 10; देवी भागवत-39, 45; अध्यात्म-रामायण-619

लक्ष्मी द्वारा भृगु को शाप : ब्राह्मणों का धन-हीन होना

एक बार भगवान विष्णु लेटे हुए थे ओर उनकी पत्नी लक्ष्मी उनके पैर दबा रही थीं। उस समय विष्णु को नींद आ गई, तभी बाहर से भृगु ऋषि आये। नींद आ जाने के कारण भृगु को विष्णु ने प्रणाम नहीं किया। इससे क्रोधित होकर भृगु ने विष्णु की छाती पर लात मारी। भगवान पद-प्रहार से जाग गए और उन्होंने भृगु से क्षमा-याचना की। परन्तु इससे लक्ष्मी रुष्ट हो गईं औरशाप दे दिया कि एक ब्राह्मण द्वारा उनके पति का अपमान किया गया है, अतः किसी ब्राह्मण के घर पर लक्ष्मी (धन) नहीं जायेगी। भृगु ने इस चुनौती के फल- स्वरूप भृगु-संहिता का निर्माण करने का निर्णय किया तथा लक्ष्मी को कहा कि जिसके पास यह भृगु-संहिता होगी, उसके पास लक्ष्मी को जाना ही पड़ेगा। **संदर्भ** : लोक-कथा।

राजा लोमपाद का शृंगी ऋषि को अपने राज्य में बुलाना

एक बार अंगदेश के राजा लोमपाद ने एक ब्राह्मण का जान-बूझकर तिरस्कार कर दिया। जिससे ब्राह्मण उसके राज्य को त्यागकर चले गये, जिससे इन्द्र ने उनके राज्य में वर्षा करना बन्द कर दिया। इस अनावृष्टि से प्रजा को बड़ा कष्ट होने लगा। राजा ने तब ब्राह्मणों को बुलाकर वर्षा होने का उपाय पूछा। ब्राह्मणों ने वताया कि यदि महर्षि विभाण्डक के पुत्र ऋषिशृंग आपके राज्य में पदार्पण करें तो वर्षा हो सकती है। राजा ने शृंगी ऋषि को बुलाकर लाने के लिए वेश्याओं को भेजा। वेश्याएं लुभाकर शृंगी ऋषि को लोमपाद के यहां ले आईं, जिससे राज्य में वर्षा हुई और उन्होंने प्रसन्न होकर अपनी कन्या शान्ता ऋषिशृंग को व्याह दी। **संदर्भ** : महाभारत-वनपर्व, अ० 111

ऋषि लोमश का त्याग

ऋषि लोमश ने न कहीं घर बनवाया था न विवाह ही किया और न कोई जीविका ही खोजी। उनके वक्षः स्थल पर लोमचक्र होने के कारण वे लोमश नाम से प्रसिद्ध थे। वर्षा तथा गर्मी की रक्षा के लिए सिर पर चटाई ओढ़ लेते थे। यद्यपि वे दीर्घायु वाले थे। एक इन्द्र के पतन के साथ उनके वक्षः स्थल का एक रोम गिर जाता था। **संदर्भः** ब्रह्मवैवर्त-श्रीकृष्ण-जन्म खण्ड, अ० 47

व्यास की भविष्य-वाणी

युधिष्ठिर द्वारा किए गए राजसूय यज्ञ की समाप्ति के उपरान्त व्यास हस्तिनापुर लौटने के लिए तैयार हुए तो युधिष्ठिर ने व्यास से कहा कि देवर्षि नारद ने स्वर्ग अन्तरिक्ष और पृथ्वी विषयक तीन प्रकार के उत्पात बताए हैं। क्या शिशुपाल के वध से उत्पात शान्त हो गए। तब व्यास ने कहा—राजन् ! उत्पातों का महान फल तेरह वर्षों तक हुआ करता है। इस समय जो उत्पात प्रकट हुआ, वह समस्त क्षत्रियों का विनाश करने वाला होगा। एक मात्र तुम्हीं को निमित्त बनाकर यथासमय समस्त भूमिपालों का समुदाय आपस में लड़कर नष्ट हो जायेगा। **संदर्भ** : महाभारत-सभापर्व, अ० 46

व्युषिताश्व की कथा

प्राचीनकाल में व्युषिताश्व नाम के एक धर्मातमा राजा थे। एक समय इन्होंने यज्ञ किया, जिसमें इन्द्र आदि देवता देवर्षियों के साथ उस यज्ञ में आए और देवराज इन्द्र सोमपान करके उन्मुक्त हो गए। राजा व्युषिताश्व ने अश्वमेध यज्ञ भी किया और चारों दिशाओं के राजाओं को जीतकर अपने वश में कर लिया। वे पत्नी के प्रति अत्यन्त कामासक्त होने के कारण राजयक्ष्मा के शिकार हो गए और परलोकवासी हो गए। तब तक उनके कोई पुत्र नहीं हुआ था। उनकी पत्नी ने राजा की मृत्यु के समय अत्यन्त विलाप किया। तब भगवत् कृपा से उस शव से रानी के सात पुत्र उत्पन्न हुए। **संदर्भ** : महाभारत-आदि पर्व, अ० 120

वज्र का निर्माण (अहुंठ वज्र)

कोषीतकि ब्राह्मण में जल, सरस्वती और पंचदश ऋचाओं का उल्लेख वज्र के रूप में किया गया है, जिनसे देवों ने असुरों को इन लोकों से भगाया था। परन्तु शतपथ ब्राह्मण में वज्र का स्पष्ट उल्लेख है। यहां इन्द्र के वृत्र पर वज्र प्रहार करने से उसके चार टुकड़े हो गए। एक तिहाई से तलवार, एक तिहाई से यूप और एक तिहाई से रथ बन गया। वज्र चलाने से जो चिप्पी गिरी वही बाण हुआ। इससे साढ़े तीन वज्र की कल्पना की गई।

'मत्स्य पुराण' के अनुसार विश्वकर्मा ने सूर्य को खराद पर चढ़ाया। उसके तेज की जो छीलन उतरी उससे विष्णु का चक्र, शिव का त्रिशूल और इन्द्र का वज्र बना और उसके चूर्ण से विनाशकारी तत्त्वों का निर्माण हुआ। **संदर्भ** : कोषीतकि ब्राह्मण-12/2; शतपथ-ब्राह्मण-1/2/4/1; मत्स्य पुराण।

वराह-अवतार की कथा

'तैत्तिरीय-संहिता' के अनुसार महा प्रलय हो जाने पर जब समस्त सृष्टि जलमय हो गई तो ब्रह्मा को सृष्टि की आकांक्षा हुई। तब उन्होंने वायु का रूप धारण कर पृथ्वी की खोज

की । उन्हें जल के अन्दर पृथ्वी का एक किनारा दिखाई पड़ा । उन्होंने तत्काल ही वराह का रूप धारण किया और पृथ्वी को दांतों से पकड़कर जल से ऊपर स्थिति किया ।

तैत्तिरीय संहिता की कथा के ही अनुसार विष्णु पुराण में यह कथा दी गई है ।

'कूर्म पुराण' में इस कथा में थोड़ा-सा परिवर्तन दिखाई देता है । इस पुराण के अनुसार जिस समय महाप्रलय में पृथ्वी जलमग्न हो गई और समस्त पृथ्वी के पदार्थ नष्ट हो गए, तब ब्रह्मा को पुनः सृष्टि की चिन्ता हुई, उस समय उनकी नाक से अंगूठे के बराबर एक छोटा-सा सूकर निकला और देखते ही देखते विशालकाय हो गया और क्षणमात्र में पृथ्वी को जल से निकालकर थल पर स्थिति कर अन्तर्धान हो गया ।

'महाभारत' के अनुसार, विष्णु के पार्षद जय-विजय सनकादि के शाप से अपने अगले जन्म में महर्षि कश्यप और अदिति के हिरण्याक्ष व हिरण्यकशिपु बने । हिरण्याक्ष अपने बल के दर्प से पृथ्वी को उठाकर पाताल में ले गया । तब देवताओं की प्रार्थना पर भगवान विष्णु ने वराह का रूप धारण कर पृथ्वी को अपने दांतों पर उठाकर शेष के मस्तिष्क पर स्थिर किया और युद्ध में हिरण्याक्ष का वध किया। पद्म, शिव, भागवत, देवी भागवत, अग्नि, लिंग तथा सौर आदि पुराणों में इसी प्रकार कथा दी गई है । ब्रह्म पुराण के अनुसार सिन्धुसेन नामक राक्षस देवताओं को पराजित कर यक्ष को छीनकर रसातल को चला गया । तब भगवान ने वराह रूप धारणकर सिन्धुसेन से यक्ष का रसातल में जाकर उद्धार किया ।

'पद्म पुराण' के अनुसार, दर्प से पहले हिरण्याक्ष ने देवताओं को युद्ध में पराजित किया और बाद में विष्णु से युद्ध करते हुए भयंकर रूप धारण कर पृथ्वी को उठाकर रसातल को चला गया । तब विष्णु ने वराह का रूप धारण कर उसका पीछा किया एवं अपने अगले दांत पर पृथ्वी को उठाकर जल के ऊपर पर्वतों द्वारा पृथ्वी को अचल बनाकर पुनः हिरण्याक्ष से युद्ध किया और उसे मारा ।

'शिव' और 'सौर पुराण' के अनुसार 'तप में शिव को प्रसन्न कर हिरण्याक्ष ने महाबाहु अंधक नामक पुत्र को पाया और इस पुत्र के राज्य के लिए पृथ्वी को पाताल लेकर चला गया । तब देवताओं की प्रार्थना पर भगवान विष्णु ने वराह का रूप धारण कर पृथ्वी का उद्धार किया और हिरण्याक्ष का वध किया । **संदर्भ :** तैत्तिरीय-संहिता-7/1/5/6; महाभारत-वनपर्व, अ० 144, शान्तिपर्व, अ० 207; ब्रह्म, अ०79, 213; पद्म-पुराण-सृष्टि-खण्ड-अ०, 63; ब्रह्माण्ड-पूर्वभाग, प्रक्रियापाद, अध्याय-5; वायु-पुराण; शिव-पुराण-रुद्र-संहिता, अ० 42; भागवत-3/15, 3/17-19, 7/2; अग्नि-पुराण-4; लिंग-पुराण-पूर्वार्द्ध-14; वाराह पुराण, अध्याय 36, 140; कूर्म-पूर्वार्द्ध, अध्याय-6; मत्स्य-247-249; हरिवंश-भविष्य पर्व, अ० 33; देवी भागवत, 8/2; सौर पुराण, अ० 29

वसु सम्वन्धी कथाएं

(1) वसुओं को मुनि वसिष्ठ का शाप

अष्ट वसु दक्ष की पुत्री और चन्द्रमा के पुत्र थे । एक बार 'द्यौ' नामक वसु ने अपनी पत्नी

के कहने पर वसिष्ठ की नन्दिनी गाय चुरा ली थी। अतः वसिष्ठ ने सभी वसुओं को मनुष्य योनि में जन्म लेने का शाप दिया था। **संदर्भ** : महाभारत-अ० 99; हरिवंश-हरिवंश पर्व; देवी भागवत-2/4

(2) **वसुओं द्वारा आठ वनिताओं से विवाह**

वसु देवताओं का एक गण है, जिसके अन्तर्गत आठ देवता माने गए हैं। ये दक्ष प्रजापति की पुत्री तथा धर्म की पत्नी 'वसु' के गर्भ से पैदा हुए थे। इनके आठ पत्नियां थीं। 'अग्नि' नामक वसु के दो पत्नी होने का उल्लेख मिलता है। **संदर्भ** : भागवत-6/6/10-16

वामन अवतार

वैदिक साहित्य से ही बलि के सम्बन्ध में संकेत मिलते हैं। ऋग्वेद में उसे इन्द्र का अनुज बताया गया है। 'तैत्तिरीय-संहिता' के अनुसार बलि ने इन्द्र का राज्य छीन लिया तब वामन ने छल से बलि से राज्य लेकर इन्द्र को वापिस दिलाया। 'शतपथ ब्राह्मण' के अनुसार 'जब देवासुर संग्राम में देवों की पराजय हो गई तब असुरों ने पृथ्वी आपस में ही बांटनी चाही। यज्ञस्वरूप विष्णु तब बलि के पास गए। बलि ने वामन के बराबर पृथ्वी देनी चाही तब विष्णु ने विराटरूप धारण कर तीनों लोकों को माप लिया।

यद्यपि इस प्रकार इस कथा के संकेत वैदिक साहित्य से ही मिलते हैं। परन्तु इसका विस्तार 'बाल्मीकि रामायण' में सर्वप्रथम मिलता है।

प्रह्लाद के पौत्र बलि ने युद्ध में देवताओं को पराजित कर तीनों लोकों में अपना आधिपत्य स्थापित कर लिया। इस पर अदिति ने दुखी होकर विष्णु भगवान का तप कर उनसे पुत्र के रूप में जन्म लेने का वर प्राप्त किया। उधर बलि ने शक्ति प्राप्त करने की इच्छा से यज्ञ प्रारम्भ किया। यज्ञ की सफलता के बाद बलि देवताओं को स्वर्ग से न निकाल दे इसलिए अग्नि ने विष्णु से बलि को ठगने के लिए कहा। वर के पालन के लिए विष्णु वामन रूप में अदिति के घर प्रकट होकर बलि के पास गए और तीन पग पृथ्वी मांगी। शुक्राचार्य के मना करने पर भी बलि ने उन्हें तीन पग पृथ्वी देना स्वीकार कर लिया। वामन ने स्वयं को बढ़ाकर एक पग से पृथ्वी, दूसरे से आकाश को नाप कर तीसरे पग से बलि के शरीर को नाप उसे दैत्यों सहित पाताल में भेज दिया।

'पद्म पुराण' के अनुसार यह कथा लगभग पूर्ववत है, परन्तु यहां पर वामन के साथ इन्द्र भी जाते हैं तथा बलि का नाम यहां वाष्कलि दिखाया गया एवं वाष्कलि को शुक्र के स्थान पर उशना दान न देने के लिए समझाते हैं।

'स्कन्द-पुराण' के माहेश्वर खण्ड की कथा, देवताओं से पराजित होकर बलि ने शुक्राचार्य की आज्ञा से एक विश्वजित नामक यज्ञ किया। यज्ञ से एक दिव्यरथ निकला। जिस पर बैठकर बलि ने देवताओं पर विजय प्राप्त कर स्वर्ग का राज्य प्राप्त कर लिया। पराजित देवता अपनी माता की शरण में गए। अदिति अपने पुत्रों की भलाई के लिए विष्णु का व्रत किया जिससे विष्णु अदिति के यहां वामन के रूप में प्रकट हुए और बलि द्वारा किए जा रहे यज्ञ में दान लेने पहुंचे तथा शुक्र के समझाने के बाद भी बलि ने पत्नी सहित दान का

संकल्प किया। वामन ने दो पैरों से समस्त ब्रह्माण्ड को नाप लिया। तीसरे चरण के लिए बलि ने स्थल पर कोई स्थान नहीं दिया था। अतः बलि की पत्नी विन्ध्यावलि ने तीसरा चरण अपने पुत्र तथा पति के मस्तिष्क पर रखवाया। जिससे प्रसन्न वामन ने हो बलि को पाताल का राजा बना दिया।

'वामन पुराण' में यह कथा बहुत विस्तार से दी गई है तथा यहां पर यज्ञभूमि में दान लेने के लिए वामन के साथ देवता और ऋषि भी जाते हैं।

'मत्स्य पुराण' में बलि को भूमि का संकल्प करने के लिए शुक्राचार्य के साथ बृहस्पति भी मना करते हैं। 'कूकर्म पुराण' के अनुसार भगवान कथा ने वामन के रूप में जन्म लिया।
संदर्भ : ऋग्वेद्-8/12/27; तैत्तिरीय संहिता-2/4/22; शतपथ-ब्राह्मण-1/2/2-1-3; बाल्मीकि-रामायण-1/29/3-11; महाभारत-आदि पर्व, अ० 65, सभा पर्व, अध्याय 9, शान्तिपर्व, अ० 230; ब्रह्म पुराण-अ० 73, 213; पद्म पुराण-उत्तर खण्ड, अ० 266-267; विष्णु पुराण-1/21; वायु पुराण, अ० 66; भागवत-8/15, 23; बृहन्नारदीव, अ० 10; अग्नि पुराण, अ०4; स्कन्द पुराण-अवन्त्य खण्ड, अवन्ती क्षेत्र माहात्म्य, अ० 63, प्रभासखण्ड, गिरनार क्षेत्र माहात्म्य, अ० 17-19, प्रभासखण्ड, द्वारिका क्षेत्र-पूर्वार्द्ध, अ० 18, माहेश्वर खण्ड, केदार, अ० 17-19, 244-246, कूर्मपुराण, पूर्वार्द्ध, अ० 17; मत्स्य पुराण, अ० 244-246; हरिवंश-भविष्य पर्व, अ० 32

वालमीकि-उत्पत्ति

वालमीकि जन्म से ब्राह्मण पुत्र थे। पर वे भीलों व किरातों के मध्य पलकर बड़े हुए। अतः वह निकृष्ट कार्य से अपना भरण-पोषण करने लगे और चोरी, जुआ तथा लूट आदि उनका कार्य था। एक बार उन्होंने सप्तर्षियों को लूट लिया। तब दया से प्लावित हो सप्तर्षियों ने उन्हें उपदेश दिया तथा राम का जाप करने को कहा। जब वालमीकि राम राम न कह पाए तो उन्होंने मरा-मरा कहने को कहा। तदनुसार वालमीकि मरा-मरा का जाप करने लगे तथा भगवान भक्ति में तन्मय हो गए और बांबी से ढक गए। बहुत समय पश्चात् जब ऋषि वापस आये तो वालमीकि बांबी से निकलकर बाहर आए। वालमीकि के पुनर्जन्म होने के कारण ऋषियों ने इनका नाम वालमीकि रख दिया।

'स्कन्द पुराण' के आवन्त्य-खण्ड के अनुसार 'वालमीकि भृगुवंशी ब्राह्मण सुमति के अग्निशर्मा नामक पुत्र थे। वन में रहते हुए इनकी भेंट व्याधों से हुई, वे व्याध बन गए तथा एक बार इन्होंने सात ऋषियों को लूटने की, चेष्टा की पर सप्तर्षियों ने इन्हें राम-नाम की दीक्षा थी। इन्होंने लगातार 13 वर्ष तक रामनाम का जाप किया और इनके ऊपर बांबी भी जम गई। जब ऋषियों ने वापस लौटकर बुलाया तो वे बांबी से बाहर निकले। तब इनका नाम वालमीकि पड़ा।

प्रभास खण्ड में 'अग्निशर्मा के' स्थान पर बैशाख नाम है परन्तु कथा पूर्ववत है'

'विश्रामसागर' में यह कथा अन्य प्रकार से दी गई है, एक समय कीर्तिमुख नामक मुनि का स्वप्न में वीर्यपात होकर बांबी के मुख पर गिर पड़ा, जिससे एक बालक का जन्म हुआ और उसका नाम वाल्मीकि पड़ा। यह कुसंग से एक व्याध बन गया, पर सप्तर्षियों के उपदेश से पाप-मुक्त हुआ। **संदर्भ** : महाभारत-अनुशासन-पर्व, अ० 49; स्कन्द-पुराण-आवन्त्य-खण्ड-रूपवती क्षेत्र माहात्म्य, अ० 24, प्रभास खण्ड-प्रभास क्षेत्र माहात्म्य, अ० 278, वैष्णव खण्ड-वैशाख मास माहात्म्य, अ० 17-18; अध्यात्म-रामायण-अयोध्याकाण्ड, सर्ग-6/64-84, आनन्द रामायण-राज्य, 30, सर्ग-14; कृतिवासी-रामायण-21; विश्राम-सागर, अ० 7

वाल्मीकि का कवि बनना

एक समय वाल्मीकि भरद्वाज के साथ नदी से स्नान करके आ रहे थे। मार्ग में इन्होंने मैथुनासक्त क्रौंच पक्षियों पर एक व्याध को शर-संधान करते देखा। उस समय दुख से इनके मन में उस पक्षी के प्रति दया उमड़ पड़ी और इन्होंने अनुरूप श्लोक बोलकर उसे शाप दे दिया। तभी वहां ब्रह्माजी प्रकट हुए और वाल्मीकि को रामचरित का वर्णन करने के लिये प्रोत्साहित किया। तब प्रेरित होकर वाल्मीकि ने रामायण का सृजन किया। **संदर्भ** : वाल्मीकि-रामायण-बालकाण्ड, अ० 2; आनन्द-रामायण-2/2, राज्यकाण्ड उत्तरार्द्ध, सर्ग-14

विक्रम की दानशीलता

विक्रमादित्य उज्जयिनी के सम्राट के रूप में प्रसिद्ध हैं। इनका वास्तविक नाम चन्द्रगुप्त था। ये महान विद्याप्रेमी के रूप में प्रसिद्ध हैं? इनकी सभा में अपने विषय में पारंगत और विद्वान मनीषी नौ रत्न थे। जिनका नाम कालिदास, वररुचि, अमरसिंह, धन्वन्तरि, क्षपणक, वेतालभट्ट, वराहमिहिर, घटकर्पर और शंकु था। ये अपनी दानवीरता के लिए प्रसिद्ध हैं।

विदुर-मैत्रेय की कथा

बैकुण्ठ-गमन से पूर्व श्रीकृष्ण ने मैत्रेय से विदुर का गुरु होने के लिए कहा था। इन्होंने तब गंगा तट पर विदुर को सृष्टि का वर्णन कर विदुर के अनेक प्रश्नों का उत्तर दिया तथा आत्मविद्या की शिक्षा प्रदान की। **संदर्भ** : भागवत-1/13/1;3/7/1-2

विदुर-जन्म

विदुर कृष्णद्वैपायन के पुत्र थे, जिनका जन्म विचित्रवीर्य की रानी अम्बिका की दासी के उदर से हुआ था। यद्यपि यह दासी पुत्र थे, परन्तु धर्मनीति और राजनीति के कारण यह प्रसिद्ध हुए तथा धर्म के अवतार माने गए। **संदर्भ** : महाभारत-आदि पर्व, 63/105

विदुला का अपने पुत्र को फटकारना

विदुला नाम की एक प्रसिद्ध महिला थी, जो उत्तम कुल में उत्पन्न, यशस्विनी तेजस्विनी, मानिनी, जितेन्द्रिया, क्षत्रिय धर्म-परायणा और दूरदर्शिनी थी। एक समय उनका पुत्र सिन्धुराज से पराजित हो अत्यन्त दीनभाव से घर आकर सो रहा था। विदुला ने अपने पुत्र की ऐसी दशा देखकर उसकी बड़ी निन्दा की और फटकार लगाई और उसे युद्ध के लिए उत्साहित किया। **संदर्भ** : महाभारत-उद्योग पर्व, अ० 133-136

विरोचन की कथा

विरोचन प्रह्लाद का पुत्र था। यह महान पराक्रमी और वीर योद्धा था। इसने शंकर की आराधना करके अमरत्व तथा अस्त्र-शस्त्रों से न मारे जाने का वरदान प्राप्त किया था। यह इन्द्र-वध के लिए हमेशा प्रयत्नशील रहता था। इसका विष्णु ने वध किया। **संदर्भ** : वायु-97/81-84

विष्णु द्वारा गरुड़ का गर्व नष्ट करना

जब गरुड़ को यह पता चला कि इन्द्र ने नागराज सुमुख को दीर्घ आयु प्रदान कर दी है तो वे क्रोधित हो इन्द्र के पास गये तथा उनके समक्ष अपने पराक्रमी होने और अनेक गर्व पूर्ण बातें कहीं और विष्णु के समक्ष भी अहंकारपूर्ण उक्तियां कहीं। इसे सुन विष्णु ने कहा कि वह अत्यन्त ही दुर्बल पक्षी है। इस पर गरुड़ ने कहा कि वह उनका सम्पूर्ण भार उठाता है और कोई पक्षी नहीं उठा सकता। तब विष्णु ने उससे कहा कि तुम केवल मेरी एक भुजा का भार उठाओ और यह कहकर उन्होंने अपनी भुजा गरुड़ के ऊपर रख दी, जिसके भार से गरुड़ का सारा शरीर शिथिल हो गया उसने तथा अचेत और विह्वल होकर अपने पंख छोड़ दिये। फिर उन्होंने भगवान विष्णु से क्षमा मांगी। **संदर्भ** : महाभारत-उद्योग पर्व, अ० 105; ब्रह्म-अ० 90

विष्णु द्वारा देवांगनाओं की रक्षा

विष्णु ने हरि अवतार में वृत्र-वध के कारण ब्रह्म-हत्या के भय से छिपे हुए इन्द्र की रक्षा की तथा दानवों द्वारा बन्दी बनाई गई देवताओं की अनाथ स्त्रियों को उनसे मुक्त कराया। **संदर्भ** : भागवत-11/4/19

विष्णु द्वारा वृन्दा के साथ व्यभिचार/जलंधर दैत्य की कथा।

जलंधर को ब्रह्मदेव ने वरदान दिया था कि उसका वध केवल शंकर ही कर सकेंगे। इसने इन्द्र-पद पर भी कब्जा कर लिया था। इसका शिव से युद्ध हुआ। शस्त्र युद्ध के बाद यह शंकर का रूप धारण कर पार्वती के पास गया, परन्तु विष्णु जलंधर का रूप धारण कर जलंधर की पत्नी वृन्दा के पास आये और उसके साथ रमण किया। वृन्दा ने

इन्हें शाप दिया कि तुम द्वारपाल द्वारा पराजित होगे।

यह कथा पुराण साहित्य में अनेक प्रकार से वर्णित है। 'पद्मपुराण' के अनुसार एक बार इन्द्र ने शिव के पास जाकर किसी योद्धा से संग्राम की इच्छा प्रकट की। शिव ने इन्द्र के गर्व को नष्ट करने के उद्देश्य से अपने क्रोधमय तेज को वासव को जीतने की आज्ञा दी। शिव का क्रोधमय तेज स्वर्ग सिन्धु और सागर के मिलन बिन्दु से एक बच्चा पैदा हुआ, जिसके रुदन से समस्त पृथ्वी कम्पित हो गई। समुद्र से उत्पन्न होने के कारण ब्रह्मा ने इसका नाम जलंधर रखा और उसे देवताओं से अजेय होने का वरदान दिया। शुक्राचार्य ने जलंधर को समुद्र को तीन सौ योजन दूर हटकर स्थान दिया जहां मय नामक असुर ने एक महानगरी का निर्माण किया। शुक्राचार्य ने जलंधर का विद्याभ्यास कराया तथा इसका राज्याभिषेक किया। कालनेमि की वृन्दा नामक पुत्री से इसका विवाह हो गया।

यह देवताओं से युद्ध का अवसर ढूंढ़ने लगा और देवताओं पर आक्रमण कर इन्द्र और विष्णु सभी देवताओं को पराजित कर दिया। इधर देवताओं में इसके वध की चिन्ता होने लगी। शिव के बताने पर उन्होंने विश्वकर्मा से वज्र बनवाया। इधर नारद ने भी इसके वध के प्रयास में इसके पास जाकर शिव की पत्नी की प्रशंसा की और पार्वती के अपहरण के लिए उकसाया। इस पर शिव और जलधंर का युद्ध हुआ। युद्ध-भूमि में शुंभ दैत्य को अपने रूप में छोड़कर वह शिव के रूप में छद्म वंश से पार्वती के पास पहुंचा और पार्वती से रमण की इच्छा व्यक्त की। इस रहस्य को जब विष्णु ने जाना तो उन्होंने जलंधर की पत्नी वृन्दा के अपहरण की योजना बनाई तथा उन्होंने जलंधर का रूप धारण कर वृन्दा से रमण किया। जब वृन्दा को विष्णु के इस कुकृत्य का पता चला तो उन्होंने विष्णु को शाप दिया कि जिस तरह तापस रूप में तुमने मुझे मोहकर मेरा हरण किया है, इसी तरह तुम्हारी माया को तापस हरेगा और पतिव्रत भंग कर वृन्दा ने योगबल से अपने शरीर को सुखा लिया, जिसे उसकी सखी ने जला दिया। उधर युद्ध में शिव ने जलंधर का वध कर दिया।

'पद्म पुराण की अन्य कथा के अनुसार' एक बार इन्द्र और बृहस्पति शिव के दर्शन के लिए कैलाश पर्वत पर गए। वहां पर उन्हें एक भीमकाय, भीषण दांत व नेत्रों वाला व्यक्ति मिला। इन्द्र ने उससे शिव के सम्बन्ध में पूछा, पर उसने जब कोई उत्तर न दिया तो उसके ऊपर इन्द्र ने अपना वज्र चला दिया, वास्तव में वह व्यक्ति शिव ही थे। वज्र की चोट से शिव का कंठ नीला हो गया। इन्द्र की इस धृष्टता से क्रोधति शिव के तीसरे नेत्र से अग्नि निकली और इन्द्र को भस्म करने के लिए आगे बढ़ी, परन्तु बृहस्पति द्वारा शिव से इन्द्र की प्राणरक्षा की स्तुति कर लेने पर शिव ने यह अग्नि समुद्र में फेंक दी, जिससे एक शिशु पैदा हुआ और उसके रोदन से ब्रह्माण्ड बहरा होने लगा। तब ब्रह्मा वहां पर पहुंचे। बच्चे ने ब्रह्मा की दाढ़ी पकड़ ली, जिससे ब्रह्मा के नेत्रों में आंसू आ गए। तब ब्रह्मा ने कहा, क्योंकि इसने मेरे नेत्रों के जल को सर्वप्रथम धारण किया है, अतः इसका नाम जलंधर होगा। ब्रह्मा के वर से वह उसी समय तरुण और सब शास्त्रों को

जानने वाला हो गया। ब्रह्मा ने उसे शिव के अतिरिक्त सभी से अजेय होने का वर दिया। उसका देवताओं से युद्ध हुआ। पार्वती को लेकर उसका शिव से भी युद्ध प्रारम्भ हो गया और वह शिव से हो रहे युद्ध में अपने स्थान पर शुंभ दैत्य को नियुक्त कर पार्वती से मिलने के लिए गया, परन्तु पार्वती उसे पहचानकर मानसरोवर में जा छिपी और वहां विष्णु का स्मरण किया। विष्णु ने पार्वती के समक्ष प्रकट होकर वृन्दा के अपहरण का प्रण किया और जलंधर का रूप धारण कर माया रूप से वृन्दा से भोग किया। एक दिन वृन्दा ने जलंधर के रूप में विष्णु को देखा और उन्हें छली जानकर शाप दिया कि जिस प्रकार तुमने मुझसे छल किया है उसी तरह राक्षस तुम्हारी पत्नी का हरण करेंगे और बन्दर तुम्हारी सहायता करेंगे।

'शिव पुराण' की कथा 'पद्म पुराण' के उत्तर खण्ड के अध्याय 98-107 से अधिक साम्य रखती है। परन्तु कथा में थोड़ी भिन्नता भी है। 'शिव पुराण' में त्रिपुर दाह के पश्चात् इन्द्र और वृहस्पति शिव के दर्शन के लिए कैलाश पर्वत पर जाते हैं तथा शिव उनकी परीक्षा लेने के लिए एक साधु का रूप बना लेते हैं। शिव के संबंध में साधु द्वारा कुछ न बताए जाने पर जैसे ही इन्द्र अपना वज्र छोड़ते हैं वैसे ही शिव ने इन्द्र को भाल-नेत्र की अग्नि से भस्म कर दिया। तब वृहस्पति की प्रार्थना पर शिव ने उस अग्नि को हटाकर समुद्र में फेंका, जिससे इन्द्र पुनरुज्जीवित हुआ। यहां पर जलंधर के कृत्य से दुखी पार्वती विष्णु को वृन्दा का सतीत्व भंग करने की आज्ञा देती हैं।

'लिंग-पुराण के अनुसार' जलंधर ने जब इन्द्र और विष्णु को भी युद्ध में जीत लिया, तब विश्वविजय की लालसा से शिव पर भी आक्रमण कर दिया तथा शिव ने जलंधर का सरलता से ही वध कर दिया।

'सौर-पुराण के अनुसार' जलंधर ने जब ब्रह्मा, विष्णु आदि सभी देवताओं को जीत लिया तो वह शिव को भी जीतने के लिए गया। शंकर ने पैर के अंगूठे से एक दिव्य चक्र पैदा किया। जैसे ही जलंधर उस चक्र को पकड़ने दौड़ा, वैसे ही चक्र ने उसका सिर काट दिया।

'आनन्द रामायण के अनुसार' जलंधर वृन्दा के पतिव्रत धर्म के कारण देवताओं द्वारा नहीं मारा जा सकता था। उसकी मृत्यु का उपाय पार्वती ने विष्णु को बताया। विष्णु ने छल से वृन्दा का पतिव्रत धर्म नष्ट किया तब शिव ने उसका वध कर दिया। उस समय वृन्दा ने विष्णु को शाप दिया कि राक्षस तुम्हारी पत्नी का हरण करेंगे। **संदर्भ :** पद्म-पुराण-उत्तर खण्ड, अध्याय-3/19/98-107; शिव पुराण-रुद्र-संहिता, युद्ध खण्ड, अ० 13/26; लिंग पुराण-पूर्वार्द्ध, अ० 97; स्कन्द-वैष्णव खण्ड, कार्तिक माहात्म्य, अ० 14/23; सौर पुराण, अ० 37; आनन्द रामायण-सार खण्ड सर्ग-4/82-115

विष्णु द्वारा समुद्र-शोषण

समुद्र के किनारे एक टिटिहरा अपनी टिटहरी के साथ रहता था। टिटहरी गर्भवती थी। वह अण्डा देने से पूर्व टिटिहरे से बोली कि हमें दूसरी जगह चलना चाहिए। यहां

पर समुद्र हमारे अण्डों का हरण कर लेगा। टिटिहरी की बात सुनकर टिटिहरे ने उसे समझाया कि समुद्र मेरा विरोध नहीं कर सकता और वह अपनी पत्नी के साथ वहीं अपने घोंसले में रहने लगा। कुछ समय पश्चात् टिटहरी ने अण्डे दिए, तब समुद्र ने कौतूहलवश अपनी लहरों से वे अण्डे बहा दिए। तब टिटिहरा सभी पक्षियों को एकत्रित कर गरुड़ की शरण में गया और क्रोधित होकर गरुड़ ने भगवान् विष्णु से इस सम्बन्ध में निवेदन किया। तब भगवान् विष्णु ने आग्नेय-अस्त्र से समुद्र को सुखाकर टिटिहरी के अण्डे वापस दिलवा दिए। **संदर्भ** : पंचतंत्र-मित्रभेद; कथासरित सागर-दशम् लम्बक

विष्णु द्वारा मधु दैत्य का वध

पराक्रमी दैत्य मधु ने इन्द्रत्व को प्राप्त करने की कामना से विष्णु को युद्ध की चुनौती दी। उस समय कश्यप के पुत्र देव और दैत्य दो पक्षों में बंट गये और युद्ध के लिए उद्यत हो गए। भगवान विष्णु पर मधु ने क्रोधित होकर प्रहार किया, पर उनका कोई असर न हुआ और युद्ध में विष्णु ने मधु का बध कर दिया। **संदर्भ** : हरिवंश-भविष्य पर्व

विष्णुदास की विष्णु भक्ति / चोलराज के गर्व का नाश

चोलराज को अपना विष्णु का भक्त होने और अपने धर्म का बहुत अहंकार था। इस मद में एक बार विष्णुदास के समझाने पर उनके लात मार दी। तब विष्णुदास ने राजा से कहा कि भगवान की पूजा के लिए हृदय के भाव-पुष्प की आवश्यकता है, सोने और हीरों से भगवान की भक्ति को नहीं आंका जा सकता। राजा ने अपनी राजधानी में आकर भगवान के दर्शन की लालसा से ऋणी मुद्गल को आमन्त्रित कर विष्णुयज्ञ कराना प्रारम्भ कर दिया तथा उसमें बहुत अधिक दान-दक्षिणा देना प्रारम्भ कर दिया।

उधर विष्णुदास दीन ब्राह्मण क्षेत्र-संन्यास ग्रहण कर अनन्तशयन तीर्थ में ही भगवान विष्णु की आराधना व उपासना तथा व्रत आदि का अनुष्ठान करने लगा। वह दिन में भोजन बनाकर भगवान को भोग लगाने के बाद प्रसाद लेता था। एक समय सात दिन तक उसका भोजन चोरी चला गया। दुबारा भोजन में समय न लगाकर वह निराहार रहकर भगवान का भजन करने लगा। सातवें दिन वे छिपकर चोर की राह देखने लगा। उसने देखा एक दुबला-पतला चाण्डाल भोजन लेकर भाग रहा है। वह करुणा से द्रवीभूत होकर घी लेकर उसके पीछे दौड़ पड़ा। चाण्डाल मूर्च्छित होकर गिर पड़ा तो विष्णुदास अपने वस्त्र से उसकी हवा करने लगा। उसी समय चाण्डाल बने विष्णु अपने साक्षात् रूप में आ गए तथा विष्णुदास को विमान पर बैठाकर स्वर्ग ले जाने लगे। चोलराज ने जब विष्णुदास को विमान पर जाते देखा तो भक्ति को श्रेष्ठ जानकर यज्ञकुण्ड में कूद पड़ा। **संदर्भ** : पद्म-पुराण-उत्तरखण्ड, अ० 111

विश्वामित्र सम्बन्धी कथाएं

(1) विश्वामित्र-मेनका सम्बन्ध

एक बार विश्वामित्र की कठोर तपस्या से डरकर इन्द्र ने मेनका को उनके तप को भंग करने के लिए भेजा। विश्वामित्र का तप भंग हो गया और उन्होंने मेनका के साथ रमण किया, जिससे एक पुत्री पैदा हुई। मेनका उसे वन में छोड़कर चली गई। जिसका पालन-पोषण कण्व ऋषि ने किया। **संदर्भ** : बाल्मीकि-रामायण-1/63; महाभारत-आदि पर्व, अ० 71-72; भागवत-9/20-13

(2) विश्वामित्र को द्विजत्व की प्राप्ति

विश्वामित्र पुरुवंशी राजा गाधि के पुत्र थे। ये क्षत्रिय कुल में जन्मे थे, परन्तु तपोबल से इनकी गणना ब्राह्मणों में की जाने लगी। इन्होंने सरस्वती तीर्थ में जाकर कठोर तपस्या की। इनकी तपस्या से प्रसन्न होकर ब्रह्मा ने इन्हें ब्राह्मण होने का वर दिया। **संदर्भ** : महाभारत-आदि पर्व, 174/48; विष्णु-4/7/12-38

(3) विश्वामित्र का रम्भा को शाप

रम्भा देवलोक की एक अप्सरा है। इसे इन्द्र ने विश्वामित्र की तपस्या भंग करने के लिए भेजा। रम्भा के रूप-सौन्दर्य को देखकर एक बार विश्वामित्र सन्देह में पड़ गए। बाद में इन्द्र का कार्य जानकर विश्वामित्र ने रम्भा को दस हजार वर्ष तक पत्थर की रहने का शाप दे दिया। **संदर्भ** : रामायण-बालकाण्ड, 1/64

(4) विश्वामित्र द्वारा कुत्ते का मांस खाना

एक बार संसार में बारह वर्षों तक भयंकर अनावृष्टि हो गई, जिससे अकाल पड़ गया। इस भयंकर समय में मनुष्य एक-दूसरे को खाने लगे। विश्वामित्र घर-घर घूमकर भीख मांगते फिरे। उन्हें कोई भी वस्तु उपलब्ध न हुई। अतः उन्होंने एक रात चाण्डाल के घर जाकर वहां से कुत्ते की जांघ का मांस चुराया तथा उसे खाने के लिए पकाया। **संदर्भ** : महाभारत-शान्तिपर्व, 141/13-100

(5) विश्वामित्र और वसिष्ठ का द्वेष

ऐतरेय ब्राह्मण से विश्वामित्र और वसिष्ठ के द्वेष के कुछ संकेत मिलते हैं। यहां पर हरिश्चन्द्र के यज्ञ में वसिष्ठ ब्रह्मा के रूप में और विश्वामित्र का होता के रूप में उल्लेख है तथा विश्वामित्र द्वारा शुनः शेप की बलि दिए जाने से रक्षा कर अपना पुत्र मानने का भी संकेत है। परन्तु विश्वामित्र और वसिष्ठ द्वेष के स्पष्ट संकेत रामायण से ही प्राप्त होते हैं।

विश्वामित्र कुशनाभ के अधिपति गाधि के पुत्र थे। एक बार वे ससैन्य वसिष्ठ के आश्रम में पहुंचे। वसिष्ठ ने चित्रवर्ण होमधेनु शवला की कृपा से सामग्री प्राप्त कर विश्वामित्र को इच्छानुसार भोजन कराया। इससे आश्चर्यचकित हो विश्वामित्र ने सौ गायें, एक हजार घोड़े, आठ सौ रथ तथा चौदह हजार हाथियों के बदले में शवला गाय मांगी, लेकिन वसिष्ठ ने गाय देने से मना कर दिया। तब विश्वामित्र शवला को बलात्

ले जाने लगे, लेकिन वसिष्ठ के कहने पर शवला ने सेना की सृष्टि की और उस सेना से विश्वामित्र के समस्त सैनिकों का नाश कर दिया तथा मारने के लिए आए विश्वामित्र के पुत्रों को वसिष्ठ ने हुंकार मात्र से भस्म कर दिया। इस प्रकार विश्वामित्र और वसिष्ठ में द्वेष हो गया तथा वसिष्ठ को नीचा दिखाने के उद्देश्य से विश्वामित्र ने सांगोपांग धनुर्वेद की शिक्षा ली और ब्रह्मा की तपस्या की, पर उन्हें राजर्षि का पद ही मिला फिर वह तप करने में लग गए। उनके तप में मेनका व रम्भा द्वारा विघ्न डाली गई और वे इन विघ्नों से विचलित हो गए। अन्त में उन्होंने और तपस्या की तथा ब्रह्मर्षि पद को प्राप्त किया। देवताओं की प्रार्थना पर वसिष्ठ द्वारा विश्वामित्र को ब्रह्मर्षि सम्बोधित करने पर दोनों में सुलह हो गई।

'महाभारत में रामायण के अनुसार' ही कथा वर्णित है, पर यहां गाय का नाम शवला के स्थान पर नन्दिनी दर्शाया गया है तथा वसिष्ठ की सहनशीलता और धैर्य की पराकाष्ठा मिलती है। उनके सौ पुत्रों को इक्ष्वाकुवंशीय राजा कल्माषपाद ने विश्वामित्र को शाप से राक्षस बना डाला, फिर भी वसिष्ठ ने उसे वर देकर शाप से मुक्त किया।

'स्कन्द पुराण में महाभारत के अनुसार' कथा के साथ-साथ दोनों में महायुद्ध होने की घटना भी मिलती है। **संदर्भ** : ऐतरेय ब्राह्मण-7/16-18; बृहद्देवता-6/28, 31-34; बाल्मीकि-रामायण-बालकाण्ड-सर्ग-52-65; महाभारत-आदि पर्व, अध्याय 178, शल्य पर्व, अ० 42; मार्कण्डेय पुराण, अ० 7-9; स्कन्द पुराण-नागरखण्ड, अध्याय-165-173; देवी भागवत-3/17

वृहस्पति द्वारा असुरों को छलना

शुक्राचार्य ने दैत्यों का कल्याण करने के लिए शिव की तपस्या करना प्रारम्भ कर दिया। तब इन्द्र ने अपनी पुत्री जयन्ती को शुक्र के पास भेज दिया। जब तक शुक्राचार्य ने तपस्या की, वह शुक्राचार्य की सेवा करती रही। तपस्या समाप्त होने पर शुक्राचार्य ने जयन्ती से विवाह कर लिया और बारह वर्ष तक उसके साथ सहवास करते रहे। उसी समय वृहस्पति शुक्र का रूप धारणकर दैत्यों को दस वर्ष तक छलते रहे और उन्हें योग-साधना से अलग रखा। **संदर्भ** : मत्स्य-अ० 47

वृहस्पति द्वारा देवताओं का त्याग

एक समय देवताओं के गुरु वृहस्पति को इन्द्र की सभा में उपस्थित समस्त देवताओं ने देखकर नमस्कार किया, परन्तु इन्द्र देखकर भी न तो खड़े हुए और न आसन आदि देकर सत्कार ही किया। तब वृहस्पति इन्द्र के ऐश्वर्यमद को भांपकर देवताओं को त्याग कर चले गए। **संदर्भ** : भागवत-6/8-9

राजा वेन की कथा

वेन ध्रुव के वंश में उत्पन्न राजा अंग और सुनीथा का पुत्र था। वेन बचपन से ही

दुष्ट था, अतः इसके पिता राज्य त्यागकर वन को चले गये थे तब मुनियों ने वेन का राज्याभिषेक किया। राजा बनकर वेन ने प्रजा में और अधर्म बढ़ा दिया तथा उसके अत्याचारों से तंग आकर ऋषियों ने कुशाओं से उसे मार डाला। राज्य के राजाहीन होने पर जब प्रजा में उत्पात शुरू हुआ तो मुनियों ने वेन की जंघा का मंथन किया, जिससे वेन के समस्त पापों को वहन करने वाला काला बौना निषाद पैदा हुआ। बाद में उसकी दक्षिणी भुजा का मंथन करने पर पृथु का जन्म हुआ।

'भागवत के अनुसार' अंग ने वेन को पुत्रेष्टि यज्ञ कर प्राप्त किया था तथा मुनियों ने वेन को हुंकार से भस्म कर दिया था एवं ऋषियों द्वारा वेन को दुबारा से मथने से स्त्री और पुरुष (अर्चि और पृथु) का जोड़ा उत्पन्न हुआ।

'पद्म पुराण के अनुसार' वेन अंग और मृत्यु की पुत्री सुनीथा का पुत्र था। सुनीथा प्रकृति से दुष्ट और कर्कशा थी। उसके एक बार तपलीन गंधर्व सुशंख को कशाघात करने पर उसे सुशंख ने शाप दे दिया कि उसे दुष्ट पुत्र प्राप्त होगा। लेकिन दूसरी ओर अंग को शुभगुण सम्पन्न सदाचारी पुत्रकी प्राप्ति का वर मिला था। तदनुसार शुरू-शुरू में वेन धर्मात्मा व सदाचारी था, लेकिन बाद में अर्ह्त ने उसे उपदेश दे पथभ्रष्ट कर दिया। तब वेन अधर्म करने लगा, जिससे ऋषियों ने कुपित हो उसकी बायीं जंघा का मंथन किया। जिससे कोल, निषाद व भील उत्पन्न हुए। पुनः जब ऋषियों ने वेन का दाहिना हाथ मथा। उससे पृथु उत्पन्न हुआ। **संदर्भ** : पद्म-पुराण-भूमिखण्ड-166-67; विष्णु-पुराण-1/13-30; भागवत-पुराण-4/13-14; मत्स्य10/1-10; हरिवंश-पुराण, आदि पर्व, अध्याय-5; विष्णुधर्मोत्तर-पुराण-1-13

वेद की गुरुभक्ति

वेद आयोद् धौम्य का शिष्य था। वह गुरु की आज्ञा से गुरु के घर में रहने लगा तथा बैल की तरह सदा बोझा ढोने में लगा रहा तथा सरदी-गरमी तथा भूख-प्यास का कष्ट सहन करते हुए सदैव गुरु के अनुकूल बना रहा तथा गुरु की कृपा से उसने श्रेय और सर्वज्ञता को प्राप्त किया। **संदर्भ** : महाभारत, आदि-पर्व-3

वेदवती का सीता के रूप में जन्म

वेदवती कुशध्वज नामक राजा की पुत्री थी। उसने जन्म लेते ही वेदध्वनि की, इसी से इसका नाम वेदवती हुआ। इसने विष्णु को पति-रूप में प्राप्त करने के लिए गंधमादन पर्वत पर तप किया। वहां पर संयोग से रावण आया तथा वेदवती को देखकर वह मोहित हो गया तथा उससे बलात्कार करना चाहा। परन्तु वेदवती उसे यह शाप दे कर कि मैं तेरा नाश करने के लिए पुनः जन्म लूंगी, अग्नि में भस्म हो गई, और वेदवती ही जनक की अयोनिजा पुत्री के रूप में उत्पन्न हुई। **संदर्भ** : बाल्मीकि रामायण, युद्ध-काण्ड सर्ग-60, उत्तर-काण्ड (पूर्वार्द्ध) सर्ग-17; भागवत-9/16; ब्रह्मवैवर्त, प्रकृति-खण्ड, अध्याय-14

वोपदेव की कथा

तोतादरी में वोपदेव नामक एक ब्राह्मण था। वह श्रीकृष्ण का परमभक्त था। एक बार वह वृन्दावन में गया और वहां पर उसने विष्णु की पूजा की। तब विष्णु ने प्रकट होकर उससे वर मांगने के लिए कहा। उस समय वोपदेव ने विष्णु से भागवत का माहात्म्य सुनाने को कहा। तब विष्णु ने शंकर द्वारा पार्वती को सुनाया गया भागवत-माहात्म्य वोपदेव को सुनाया। वोपदेव उसे सुनकर परम बुद्धिमान हुआ। **संदर्भ** : भविष्य पुराण-1

वैतरणी नदी की अपवित्रता

सती के वियोग में शिव के नेत्रों से अश्रुधारा बहने पर यह नदी उत्पन्न हुई। इसका विस्तार दो योजन माना जाता है। यह यमराज के द्वार पर स्थित मानी गई है। इसका जल बहुत गरम और बदबूदार तथा तेज प्रवाहवाला है। मृत्यु के बाद जीव जब मृत्यु-लोक को जाता है, तब उसे यह नदी पार करनी होती है। दान-पुण्य करने वाले जीव ही इसे पार करने में सफल हो पाते हैं। **सन्दर्भ** : भागवत-1

शंखचूर्ण का वध

शंखचूर्ण ने अपने बल से सुर, असुर, दानव, गन्धर्व, किन्नर और राक्षस सबको पराजित कर अपने अधिकार में कर लिया। तब अपना अधिकार छिन जाने से देवता ब्रह्मा की सभा में गये और ब्रह्मा को लेकर शंकर के पास गये। ब्रह्मा और शंकर विष्णु के पास गये। उन्हें विष्णु ने बताया कि शंखचूर्ण पूर्वजन्म में मेरा अंशरूप सुदामा गोप था और मेरा पार्षद था, जो कि राधा के शापवश दानव योनि में आ गया है। मेरे त्रिशूल से शंकर उसका वध कर सकते हैं, परन्तु उसका वध तभी हो सकता है, जब उसकी पत्नी तुलसी का सतीत्व नष्ट हो सके। तब शंकर ने अपने दूत पुष्पदन्त को शंखचूर्ण के पास भेजा और उसे युद्ध के लिए आमंत्रित किया। तब शंकर और शंखचूर्ण का युद्ध हुआ। उस समय विष्णु शंखचूर्ण की पत्नी तुलसी के पास शंखचूर्ण का रूप धारण करके गये और उसका सतीत्व नष्ट कर दिया। उसी समय शंकर ने शंखचूर्ण को त्रिशूल से मार डाला।

'शिव पुराण' के अनुसार शंखचूर्ण से पहले देवताओं सहित कार्तिकेय का युद्ध हुआ, फिर काली का युद्ध हुआ, उससे भी शंखचूर्ण पराजित न हो पाया तो शिव ने युद्ध कर शंखचूर्ण का त्रिशूल से वध कर दिया। यहां पर शंखचूर्ण की पत्नी के सतीत्व नष्ट करने का कोई उल्लेख नहीं है। **संदर्भ** : ब्रह्मवैवर्त, प्रकृति-खण्ड, अ०-16-21; शिव पुराण, रुद्र संहिता, युद्ध-खण्ड; बृहत्-कथा, शशांकवती लम्बक; कथा सर्ग भाग।

शंडामर्क की कथा

शंड एवं मर्क दोनों असुरों के पुरोहित थे। यह शुक्र के प्रमुख शिष्यों में थे तथा असुर पक्ष को विजय प्राप्त करने के लिए इन्हें शुक्र ने असुरों का गुरु बनाया था। इनके कारण असुर पक्ष सदैव विजय प्राप्त करता था। एक बार देवों ने इन्हें सोम का लालच देकर अपने पक्ष में करके असुरों को पराजित किया। बाद में देवों के यज्ञ कराते ही ये सोम-पान के लिए पहुंचे, लेकिन देवों ने इनकी अवहेलना कर भगा दिया। **संदर्भ** : तैत्तिरीय संहिता-6/4/10; तैत्तिरीय ब्राह्मण-1/1/1; भागवत-7/5/1; वायु-98/62-67; मत्स्य-47/54, 229/33; ब्रह्माण्ड-3/2-73

शंख और लिखित की कथा

ऋषि शंख और लिखित दो भाई थे। दोनों ही बड़े तपस्वी थे और अलग-अलग आश्रम बनाकर रहते थे। एक बार लिखित शंख के आश्रम पर आये। उस समय शंख बाहर गये हुए थे। लिखित को भूख लगी थी, इसलिए उन्होंने शंख के आश्रम के वृक्षों के फल तोड़कर खा लिये। इतने में शंख आश्रम पर लौटकर आ गये और उन्होंने लिखित से पूछा कि उन्हें ये फल कैसे मिले। लिखित के यह बताने पर कि उन्होंने सामने के पेड़ से तोड़े हैं। शंख ने उनसे कहा कि उन्होंने चोरी की है, अत: उनको दण्ड प्राप्ति के लिए राजा के पास जाना चाहिए। तब लिखित राजा सुद्युम्न के पास गये और उन्होंने राजा से दण्ड देने का आग्रह किया, सुद्युम्न ने उनको क्षमा कर दिया, परन्तु बार-बार उन्होंने दण्ड देने के लिए कहा, जिससे राजा ने उनके दोनों हाथ कटवा दिये। लिखित फिर शंख के पास आये। शंख ने उन्हें नदी में जाकर विधिवत् देवता और पितरों का तर्पण करने को कहा। जैसे ही उन्होंने नदी में स्नान किया और तर्पण करने लगे वैसे ही उनकी दोनों भुजाएं ठीक हो गयीं। **संदर्भ** : महाभारत, शान्ति-पर्व, अ० 47

श्यावाश्व की कथा

अत्रि के पुत्र अर्चनाना ने महाराज रथवीथि का यज्ञ कराया। यज्ञवेदी के समीप बैठी हुई उनकी पुत्री को उन्होंने अपने पुत्र श्यावाश्व के लिए पत्नी के रूप में मांगा। यद्यपि श्यावाश्व वेदवेदांग में पारंगत थे, पर इस प्रस्ताव को राजमहर्षि ने यह कहकर अस्वीकार कर दिया कि हमारा कुल राजर्षियों का है, हम अपनी कन्या मंत्रदर्शी को ही सौंप सकते हैं। इसे सुनकर श्यावाश्व पिता से आज्ञा लेकर वन में गये तथा रास्ते में महाराज विदेदश्व के पुत्र तरन्त और उसके छोटे भाई पुरुमीढ़ ने अपार धन और बहुत-सी गाय आदि देकर स्वागत-सत्कार किया, पर वे मन्त्र दर्शन के लिए ही उद्यत रहे। तब उनकी सत्यनिष्ठा से प्रसन्न होकर रुद्रपुत्र मरुद गणों ने उनको दर्शन दिया और उनकी कृपा से मन्त्रदर्शी ऋषिपद प्राप्त किया और उन्होंने वन से लौटकर रथवीथि की पुत्री से विवाह किया। **संदर्भ** : बृहद्देवता-5-50-81

शतमन्यु का बलिदान

एक बार उत्तराखण्ड में भीषण अकाल पड़ गया, जिससे सारी प्रजा में हाहाकार मच गया। लगातार बारह वर्षों तक धरती पर एक बूंद भी पानी की न गिरी। शासन ने अपने सीमित साधनों से प्रजा को बचाने का प्रयास किया, पर सफलता न मिली। धनिकों और दानियों के भण्डार समाप्त हो गये। प्रतिदिन सहस्रों प्राणी भूख और प्यास से छटपटाते हुए मरने लगे। तब शासन के अधिकारियों ने एक पावन पर्व पर देश के मुनि और ऋषियों को इस समस्या के निदान के लिए आमन्त्रित किया। उस समय एक ऋषि ने दुर्भिक्ष से बचने के लिए किसी सर्वगुण सम्पन्न नवयुवक को बलि देकर इन्द्र को प्रसन्न करने की बात कही। इसके लिए वहां उपस्थित जन-समुदाय में से कोई भी तैयार नहीं हुआ, परन्तु शतमन्यु जो कि माता-पिता का इकलौता पुत्र था, अपने को बलिदान करने के लिए तैयार हो गया। तब निश्चित समय पर नरमेध-यज्ञ प्रारम्भ हो गया और शतमन्यु को भी बलि के लिए वहां ले जाया गया। बलि से पूर्व शतमन्यु ने इन्द्र की स्तुति की। इन्द्र ने प्रसन्न होकर अतुल समृद्धियों की वर्षा की और शतमन्यु को चिरंजीवी होने का वर दिया।

शनि की दृष्टि खराब होना

शनि छाया के गर्भ से उत्पन्न सूर्य का पुत्र है। यह अपनी स्त्री के शाप से क्रूर प्रकृति का हो गया और पार्वती के शाप के फलस्वरूप यह 'खंज' रोग-ग्रसित हो लंगड़ा हो गया। यह काले रंग का, शूद्र वर्ण और सूर्यमुख माना गया है। इसका वाहन गृद्ध है और यह अशुभ फल देने वाला कहा जाता है। इसकी दृष्टि पड़ने से गणेश जी का मनुष्य का सिर कटकर गिर गया था। सन्दर्भ : पद्म-पुराण

शर्मिष्ठा का देवयानी की दासी बनना

एक बार देवयानी और शर्मिष्ठा जलाशय में नग्न नहा रही थीं। उस समय वायु से उड़कर इन दोनों के वस्त्र मिल गये। शीघ्रता में इन दोनों ने एक-दूसरे के कपड़े पहन लिये और इसी पर इन दोनों में वाक्-कलह हो गया। तब शर्मिष्ठा ने देवयानी को कुएं में धकेल दिया। बाद में जब शुक्राचार्य को इस घटना का पता चला तो उन्होंने वृषपर्वा के राज्य को छोड़कर अन्यत्र जाने के लिए कहा। राजा ने राज्य और प्रजा की भलाई के लिए शुक्राचार्य को उसी के राज्य में रहने के लिए प्रार्थना की। तब शुक्राचार्य ने इस शर्त पर वृषपर्वा के राज्य में रहना स्वीकार किया कि जब शर्मिष्ठा देवयानी की दासी बनना स्वीकार करे। यह शर्त वृषपर्वा ने स्वीकार कर ली। तदनुसार शर्मिष्ठा देवयानी की दासी बनकर रही।

'भागवत' के अनुसार शर्मिष्ठा और देवयानी अपनी सखियों के साथ जलाशय में नहा रही थीं। उसी समय वहां शिव और पार्वती आ गये। तब जल्दी में शर्मिष्ठा ने देवयानी

के वस्त्र पहन लिये। इससे देवयानी क्रोधित हो उठी और दोनों में वाक्-युद्ध हो गया। **संदर्भ** : महाभारत, आदि पर्व-78-80; भागवत-9/18; मत्स्य, अ०-29

शक्ति के शाप से कल्माषपाद का राक्षस होना

इक्ष्वाकुवंशीय राजा कल्माषपाद एक दिन नगर से बाहर शिकार खेलने गये और बहुत देर तक हिंसक पशुओं को मारकर जब राजा रुक गये तब वहां से नगर की ओर लौटे और ऐसे मार्ग से लौट रहे थे, जहां से एक आदमी ही निकल सकता था। दूसरी ओर से वसिष्ठ-पुत्र शक्ति आ रहे थे। तब उन्होंने एक-दूसरे से मार्ग छोड़ने के लिए कहा। दोनों में मार्ग देने के लिए वाग्युद्ध हुआ और शक्ति द्वारा मार्ग न छोड़ने पर कल्माषपाद ने क्रोध से शक्ति के ऊपर राक्षस की भांति कोड़ों से आघात किया। तब शक्ति ने उसे राक्षस होने का शाप दे दिया। **संदर्भ** : महाभारत, आदि पर्व, अ०-175

शर्याति द्वारा यज्ञ किया जाना

राजा शर्याति ने महर्षि च्यवन से सोमयज्ञ का अनुष्ठान कर उन्हें यज्ञ का ऋत्विज बनाया। च्यवन ने सोमपान के लिए अधिकारी न होने पर भी अपने प्रभाव से अश्विनी-कुमारों को सोमपान कराया, जो कि इन्द्र से सहन नहीं हुआ। अत: इन्द्र ने चिढ़कर शर्याति को मारने के लिए वज्र उठाया। महर्षि च्यवन ने वज्र के साथ उनके हाथ को स्तम्भित कर दिया। तब देवताओं ने अश्विनीकुमारों का सोमपान पिया जाना स्वीकार कर लिया। **संदर्भ** : महाभारत, वन पर्व, अ०-123-24; भागवत-9/3

शर्याति की कथा

शर्याति की गणना वैवश्वत मनु के दस पुत्रों में की जाती है। इनकी पत्नी का नाम स्थाविष्टा था तथा इनके आनर्त नामक एक पुत्र तथा सुकन्या नामक एक पुत्री जुड़वां संतानें थीं। इनकी पुत्री सुकन्या ने च्यवन ऋषि की आंखें फोड़ डाली थीं। इन्होंने च्यवन ऋषि से इस अपराध की क्षमा मांगकर अपनी पुत्री की शादी ऋषि च्यवन के साथ कर दी। **संदर्भ** : ब्रह्म, अ० 183; पद्म-पुराण, पाताल खण्ड, अ० 415; भागवत-9/3/27

शर्याति द्वारा राज्य-त्याग

एक बार राजा शर्याति अपने पुरोहित मुधुच्छेदस वैश्वामित्र के साथ शिकार खेलने जा रहे थे। इन्होंने अपनी पत्नियों की परीक्षा लेने के लिए अपने व पुरोहित के मरने की झूठी खबर प्रचारित करा दी। इसके वध की झूठी खबर सुनकर इनकी दोनों पत्नियां तत्काल मर गईं। शर्याति ने राज्य को छोड़कर गोमती नदी के किनारे तपस्या की और अपनी दोनों पत्नियों को जीवित किया। **संदर्भ** : ब्रह्म-138

शत्रुघ्न द्वारा लवणासुर का वध

सत्ययुग में दैत्यवंश में लोला के गर्भ से मधु नामक एक पुत्र उत्पन्न हुआ। मधु ने महादेव की कठोर तपस्या कर एक शूल प्राप्त किया। इस शूल को प्राप्त करके भी मधु परम धार्मिक था तथा और किसी का अनिष्ट नहीं करता था। मधु पुन: ने तपस्या करके इस शूल को वंश परम्पराक्रम से रहने का अनुरोध किया। परन्तु महादेव ने यह वर दिया कि यह शूल तुम्हारे बड़े लड़के को मिल जायेगा। तदनन्तर मधु के कुम्भीनसी नामक उसकी पत्नी से पुत्र पैदा हुआ, जिसका नाम लवण रखा। यह बड़ा दुर्वृत्त था। मधु ने लवण को दुर्धर्ष होते देख शोकातुर हो शूल उसे देकर परलोक सिधार गया। लवण इस शूल के प्रभाव से अवध्य हो गया। वह यमुनातटवासी च्यवन व भार्गव आदि ऋषियों को त्रस्त किया करता था। वे ऋषि उसके भीषण अत्याचारों से तंग होकर श्रीराम की शरण में गये। राम ने शत्रुघ्न को राज्याभिषेक कर लवण का वध करने की आज्ञा दी। तब शत्रुघ्न ने शिव के शूल को हस्तगत कर इसका वध किया। **संदर्भ :** वाल्मीकि रामायण-उत्तरकाण्ड-61-64; अध्यात्म-रामायण-7/6; आनन्द रामायण-राज्यकाण्ड (पूर्वार्द्ध) सर्ग-6

शिव-सम्बन्धी कथाएं

(1) शिव द्वारा विषपान

समुद्र-मंथन से निकले हुए हलाहल विष का शंकर ने लोकहित के लिए सती के परामर्श से पान कर लिया, जिससे इनका कण्ठ नीला पड़ गया और इनका नाम नीलकण्ड प्रसिद्ध हुआ। विषपान करते समय कुछ बूंदें पृथ्वी पर टपक गई, जिसे सांप, बिच्छू तथा अन्य विषैली औषधियों ने ग्रहण कर लिया। विषपान के पश्चात तुरन्त ही शिव ने वहां से प्रस्थान किया। **संदर्भ** : भागवत-8/6; मत्स्य, अ॰ 250; हरिवंश-पुराण

(2) शिव का कंठ नीला होना

शिव के नीलकंठ होने के सम्बन्ध में अनेक प्रसंग मिलते हैं। भागवत-पुराणानुसार विष पीने से उनका कंठ नीला हुआ। 'हरिवंश' पुराण में उल्लेख है कि दक्षयज्ञ के समय शिव के साथ हुए युद्ध में विष्णु द्वारा केश पकड़ने पर कंठ नीला हो गया। 'स्कन्द पुराण' में इन्द्र द्वारा न पहचाने जाने पर तथा पूछने पर परिचय न देने पर इन्द्र के वज्र-प्रहार से कंठ नीला पड़ गया। 'सौर-पुराण' में नारायण द्वारा गंध-मादन पर्वत पर शिव कंठ पकड़ने पर नीला होने का तथा 'महाभारत' में शुक्र ने शिव की जटाओं को जड़ों में परिवर्तित किया। जिनके काटने पर कंठ नीला पड़ गया। **संदर्भ** : महाभारत; भागवत-8/6; स्कन्द माहेश्वर-खण्ड; हरिवंश; सौर-पुराण।

(3) शिव और पार्वती का विवाह

तारकासुर से परेशान होकर सभी देवता ब्रह्मा के पास गये। ब्रह्मा ने प्रसन्न होकर देवताओं को यह बताया कि तारकासुर का वध शिव के पुत्र द्वारा किया जा सकता है, अत: देवताओं की प्रेरणा से इन्द्र ने कामदेव को शिव की समाधि भंग कर उनमें वासना

जागृत करने के लिए भेजा। परन्तु शिव ने काम को अपना तीसरा नेत्र खोलकर भस्म कर दिया। उधर पार्वती को, जो पूर्वजन्म में सती रूप में शिव की पत्नी थीं, नारद ने जाकर तपस्या करके शिव को प्राप्त करने के लिए प्रेरित किया। पार्वती जाकर तपस्या में लग गईं। तब सप्तर्षियों ने जाकर पार्वती की परीक्षा ली और शिव को पति रूप में प्राप्त होने का वरदान दिया। तदनन्तर उन्होंने शिव के पास जाकर उन्हें पार्वती को विवाह करने के लिए प्रोत्साहित किया। तत्पश्चात उन्होंने पार्वती की माता मैना को समझाया। तब शिव और पार्वती के विवाह का निर्णय हुआ। शंकर हिमाचल के घर विचित्र बारात लेकर गये, जिसमें गण, भूत और प्रेत आदि शामिल हुए तथा शिव और पार्वती दोनों का विवाह सम्पन्न हुआ। **संदर्भ** : ब्रह्म, अ० 35-36, 72; शिव-पार्वती-खण्ड, अ० 19-55; वामन-अ० 51-53; मत्स्य, अ० 154

(4) शिव द्वारा काम-दहन

देवताओं ने कामदेव को शिव की समाधि भंग करने के लिए भेजा ताकि शिव काम से पीड़ित हो पार्वती से विवाह कर सकें। मना करने पर भी जब यह न माना तो शिव ने तृतीय नेत्र खोलकर इसे भस्म कर दिया। लेकिन बाद में जब कामदेव की पत्नी ने आकर शिव की प्रार्थना की तब शिव ने प्रसन्न हो काम को देहरहित होकर संसार में विद्यमान होने का वर दिया। तब से कामदेव का नाम 'अनंग' भी प्रसिद्ध हुआ। **संदर्भ** : बाल्मीकि-रामायण-सर्ग-23; ब्रह्म, अ० 38, 71; पद्म-सृ० 45; शिव-रुद्र संहिता-2/3/13, पार्वती-खण्ड-19, 3, 10/55/1-2, भागवत-3/12/26; 7-8; भविष्य-उत्तरार्द्ध, अ० 123-24 ब्रह्मवैवर्त-श्रीकृष्ण जन्म-खण्ड, अ० 34; मत्स्य, अ० 154

(5) शिव द्वारा ताण्डव नृत्य

ताण्डव नृत्य शिव का प्रिय नृत्य कहा जाता है। शिव संहार के देवता माने जाते हैं इसलिए इनके द्वारा किया गया नृत्य भंयकर माना जाता है। वैसे इस नृत्य को शिव ने पार्वती का रोष शान्त करने के लिए किया था। यह सृष्टि संहार करने के लिए रुद्र द्वारा किए जाने वाले 'भंयकर तांडव नृत्य' के लिए रूढ़ हो गया है। **संदर्भ** : लिंग-पुराण

(6) शिव द्वारा त्रिपुर-दहन

एक समय दानव विद्युन्माली ने ब्रह्मा की घोर तपस्या करके देवताओं को पराजित करने का वरदान मांगा तथा सोने, चांदी और लोहे के तीन नगरों का निर्माण किया जो त्रिपुर नाम से विख्यात हुए। अन्य असुरों सहित उन नगरों में बैठकर इसने पृथ्वी के ऊपर अत्याचार करना प्रारम्भ कर दिया था। जब इसका अत्याचार अधिक बढ़ गया तब शिव ने बाण छोड़कर इन नगरों को नष्ट कर दिया और विद्युन्माली सहित अन्य असुरों को मार दिया। **संदर्भ** : भागवत-5/25/28, 7/10/51-71 शिव-रुद्र-संहिता-युद्ध-खण्ड-10; मत्स्य-129-40;

(7) शिव का दक्ष प्रजापति का द्रोह

एक समय मारीचि आदि प्रजापतियों के यज्ञ में सभी महर्षि, देवता, मुनि आदि एकत्रित हुए। यहां पर प्रजापति दक्ष भी गये। शिव के अतिरिक्त सभी ने उठकर दक्ष

का आदर किया, परन्तु शिव अपने आसन पर बैठे रहे। अतः दक्ष ने शंकर को शाप दिया कि इसे यज्ञ का भाग न मिले। जब नन्दीश्वर को यह पता चला तो इसने दक्ष को शाप दिया कि वह स्त्री कामी होकर शीघ्र ही बकरे के मुंह वाला होगा। साथ ही इस जड़ तथा दुष्ट का जो ब्राह्मण अनुसरण करेगा, वह भी विद्या और तप से संयुक्त होता हुआ भी सर्वभक्षी, धन, देह, और इन्द्रियों में आसक्ति रखता हुआ भिक्षुक होकर विचरण करेगा। इस पर क्रुद्ध हो भृगु ने शिव के अनुयाइयों को भी शाप दे दिया कि ये भस्म तथा अस्थि धारण करने वाले, अशौच और अविवेकी तथा पाखण्डी होकर रहेंगे। इस प्रकार दक्ष व शिव में आपसी वैमनस्य हो गया।

'शिव पुराण' में प्रजापतियों द्वारा यज्ञ प्रयाग में करना वर्णित है, जबकि अन्य किसी पुराण में यह उल्लेख नहीं मिलता।

'कूर्म पुराण' के अनुसार एक बार दक्ष सती के घर गया। शिव ने वहां दक्ष की पूजा की, लेकिन वह अज्ञान से आवृत था तथा अधिक पूजा का इच्छुक था, अतः शिव से कुपित हो गया तथा यज्ञ में भी शिव को आमन्त्रित नहीं किया। **संदर्भ** : ब्रह्मपुराण-अध्याय-34; वायु-पुराण-अध्याय-30; शिव पुराण-रुद्र-संहिता, सतीखण्ड, अ० 1/26; भागवत पुराण-4/2; ब्रह्मवैवर्त पुराण-श्रीकृष्ण जन्म, अध्याय-38; स्कन्द पुराण-माहेश्वर खण्ड (केदार खण्ड) अध्याय-1; कूर्म पुराण-पूर्वार्द्ध, अ० 14; ब्रह्माण्ड-पुराण, पूर्व भाग-अनुषंगपाद, अध्याय-13; सौर-पुराण, अध्याय-7

(8) शिव द्वारा दक्ष यज्ञ विध्वंस

एक बार दक्ष ने यज्ञ किया, परन्तु उसमें शिव को आमंत्रित नहीं किया। देवताओं को यज्ञ में जाते हुए देखकर जब पार्वती ने शिव से यज्ञ में न जाने का कारण पूछा तो शिव ने देवताओं द्वारा यज्ञ में भाग न दिया जाना इसका कारण बताया, इससे पार्वती को बहुत दुःख हुआ। पार्वती के दुख दूर करने के लिए शिव योगबल से अनुचरों के साथ यज्ञ-भूमि में जाकर दक्ष का यज्ञ विध्वंस करने लगे। यज्ञ मृग का रूप धारण कर भागा, जिसका पीछा करने पर महादेव के मस्तक से पसीनें की बूंदें गिरीं और उससे ज्वर की उत्पत्ति हुई और उसने शिव की सहायता की। उस शिव तेजस्वरूप ज्वर को कोई सहन नहीं कर पाया, तो देवताओं ने ब्रह्मा के कहने पर शिव को यज्ञ भाग दिया। शिव ने ज्वर के तेज को पर्वत पर शिलाजीत, पानी में शिवार तथा पृथ्वी पर ऊसर के रूप में विभक्त कर स्थापित किया।

'महाभारत' की एक अन्य कथा के अनुसार पार्वती ने जब यज्ञ में देवताओं को जाते हुए देखा तथा उन्हें जानकारी मिली कि यज्ञ में शिव को भाग नहीं दिया गया तो पार्वती को बहुत दुख हुआ। पार्वती का दुख दूर करने के लिए शिव ने अपने मुंह से वीरभद्र पैदा किया एवं वीरभद्र की सहायता के लिए अपने मुंह से काली पैदा की। इन दोनों ने दक्ष का यज्ञ विध्वंस किया और वीरभद्र ने मृग रूप यज्ञ का सिर काटा। बाद में दक्ष के शिव की स्तुति करने पर वे प्रसन्न हुए और पुनः यज्ञ पूर्ण हुआ।

'ब्रह्म-पुराण' के अनुसार, एक समय देवसभा में शिव ने दक्ष का अभिनन्दन नहीं किया,

जिससे दक्ष शिव से द्रोह करने लगा तथा अपने यज्ञ में न तो शिव को ही आमंत्रित किया, न अपनी पुत्री शिव-पत्नी को ही बुलाया। सती बिना बुलाये दक्ष के यज्ञ में चली गई, जहां उसका निरादर हुआ, जिससे दुखी होकर सती ने दक्ष से उत्पन्न शरीर को योगबल से त्याग दिया। शिव को जब सती के निधन की बात ज्ञात हुई तो उन्होंने दक्ष को शाप दिया कि वह चाक्षुष मन्वन्तर में मनुष्य योनि में प्रचेता का पुत्र बनेगा और उसका नाम दक्ष ही होगा और उसके द्वारा अगले जन्म में किये जाने वाले यज्ञ में मैं विघ्न डालूंगा। इस पर दक्ष ने भी शिव को शाप दिया कि तुम्हें यज्ञ में देवताओं के साथ हिस्सा नहीं मिले।

'ब्रह्म-पुराण' के अध्याय 39 के अनुसार, शिव और पार्वती की आज्ञा से वीरभद्र महा-काली सहित सभी यज्ञ विनाश को गये तो अपने शरीर से स्वयं अनेक प्रकार की सेनाएं उत्पन्न कीं। जिस समय यज्ञ मृग रूप में भागा तो इसका शिव ने धनुष-बाण लेकर पीछा किया। उस समय गणेश को भी क्रोध आया और क्रोध से उत्पन्न होने से गणेश के ललाट पर स्वेद-बिन्दु से अग्नि उत्पन्न हुई। उस अग्नि से उत्पन्न पुरुष ने दक्ष यज्ञ विध्वंस किया।

'पद्म-पुराण' के अनुसार, सती ने अपने पिता के पास जाकर अपने पति को भी न बुलाने का कारण पूछा तो दक्ष ने बताया कि शिव कपाल, चर्म, भस्म, चण्ड और त्रिनेत्र वाले हैं तथा वे नग्न भी रहते हैं, अतः उन्हें बुलाना लज्जाजनक था। इस पर सती ने अपने पिता को शाप दे दिया कि उनका यज्ञ शिव द्वारा विध्वंस किया जाये। यह कहकर सती योगबल से भस्म हो गई तब रुद्र ने यज्ञ विध्वंस के लिए वीरभद्र को भेजा। जिसने मृग रूप यज्ञ को समाप्त कर दिया। पुनश्च शिव को दक्ष द्वारा प्रार्थना करने पर शिव ने यज्ञ पूर्ति का आशीर्वाद दिया।

'वायु-पुराण' के अनुसार, एक समय दक्ष ने हिमालय की पृष्ठभूमि में यज्ञ किया। सुमेरु पर्वत पर बैठी उमा ने इस यज्ञ में विमानों द्वारा देवताओं को जाते हुए शिव से इस सम्बन्ध में पूछा। तब शिव ने उमा को उनके पिता द्वारा यज्ञ किये जाने के सम्बन्ध में बताया तो उमा शिव की बिना मर्जी के इस यज्ञ में चली गई। जहां दक्ष ने दूसरी लड़कियों का खूब सत्कार किया, पर सती का नहीं। वहां उसके निरादर के साथ सती की भी निंदा की गई, जिससे सती ने योग से प्राण त्याग दिए। तब शिव ने वीरभद्र को यज्ञ विध्वंस के लिये भेजा। वीरभद्र ने मृगरूप में दक्ष के दौड़ते हुए सिर काट लिया और देवताओं को रुद्र पाश से बांध लिया।

'शिव-पुराण' के अनुसार, बिना बुलाये दक्ष के यहां गई सती को जब पता चला कि शिव को यज्ञ भाग नहीं दिया गया तो वह भस्म हो गई। शिव ने तब यज्ञ विध्वंस के लिए अपने सिर की जटा का बाल उखाड़ कर वीरभद्र को पैदा किया और अनेक गण भी उत्पन्न किये। वीरभद्र ने यज्ञ को नष्ट किया और विष्णु को भी पराजित किया तथा दक्ष का सिर काटकर यज्ञकुण्ड में डाल दिया।

'शिव-पुराण' के ही एक अन्य स्थल के अनुसार, दक्ष यज्ञ में निमन्त्रित किये जाने पर

ऋषि दधीचि भी वहां गए और वहां शिव के भाग को न देखकर तथा शिव के अन्य अनुयायी ब्राह्मण यज्ञभूमि को त्यागकर चले आए उधर अनाहूत सती शिव की निन्दा सुनकर भस्म हो गई। उस समय सती के साथ गए गणों ने यज्ञ विध्वंस करना प्रारम्भ कर दिया, जिसकी भृगु ऋषि ने रक्षा की और शिव के गणों को पराजित कर वहां से भगा दिया। उसी समय शिव ने क्रोधित हो अपनी जटा से वीरभद्र, महाकाली और ज्वर आदि को उत्पन्न कर दक्ष यज्ञ को विध्वंस करने की आज्ञा दी। इस समय दक्ष ने विष्णु की प्रार्थना की, पर विष्णु ने अपने को तथा अन्य देवताओं को इस यज्ञ विध्वंस की रक्षा में असमर्थ पाया। वीरभद्र ने युद्ध में विष्णु को पराजित कर यज्ञ में दीक्षित दक्ष का सिर काट लिया। बाद में विष्णु ने शिव की स्तुति की, जिससे प्रसन्न हो दक्ष को वत्स का सिर जोड़कर जीवित कर दिया तथा दक्ष को युद्ध पूर्ण होने का आशीर्वाद दिया।

'शिव-पुराण' की वायवीय संहिता द्वारा, एक बार दक्ष और अन्य देवता शिव और सती के पास गए वहां पर सती ने दक्ष का देवताओं से कम सत्कार किया, जिससे दक्ष सती से भी द्रोह करने लगे तथा यज्ञ में नहीं बुलाया पर सती नारद के मुंह से यज्ञ होने की बात सुनकर बिना बुलाये अपने पिता के घर गई तथा वहां पर अनादर होने पर भस्म हो गई। इस पर शिव ने भृगु और दक्ष को पुनर्जन्म होने तथा उस जन्म में यज्ञ विध्वंस का शाप दिया अन्य आगे की घटना पहले जैसी है।

'लिंग-पुराण' के अनुसार, सृष्टि के आदि में शिव लिंग स्वरूप थे और सती भग स्वरूप, जिससे सभी सृष्टि का सृजन हुआ है तथा लिंग और भग दोनों निलय योग से अर्ध नारीश्वर साकार रूप में अवतरित हुए। ब्रह्मा के प्रार्थना पर लिंग और भग अलग-अलग हुई एवं अर्ध नारीश्वर के वाम भाग से स्त्री उत्पन्न हुई जिसका नाम श्रद्धा था और दक्षिणी भाग से पुरुष उत्पन्न हुए जिसका नाम ब्रह्मा था। शम्भु के आदेश से यही श्रद्धा दक्ष के यहां उत्पन्न हुई और दक्ष के यज्ञ में भस्म हो पुनः पार्वती के रूप में उत्पन्न हुई।

आगे की कथा अन्य स्थल पर इस प्रकार दी गई है—सती से वियुक्त शिव ने दक्ष यज्ञ विध्वंस करने के लिए वीरभद्र को भेजा, जिससे अपने रोम कूपों से गणेशादि गणों को प्रकट किया तथा देवताओं के साथ मारपीट की। इस युद्ध में शिव ने भी भाग लिया तथा विष्णु का सिर काट डाला। मृग का रूप धारण कर भागते हुए यज्ञ का सिर वीरभद्र ने काट डाला तथा दक्ष का सिर भी धड़ से अलग कर दिया। भयंकर युद्ध के बाद ब्रह्मा ने प्रकट हो शिव की स्तुति की। तब शिव ने साक्षात रूप में प्रकट हो सभी को जीवित कर दिया तथा दक्ष को आशीर्वाद दिया।

'वराह-पुराण' के अनुसार, प्रजापति के कोप से रुद्र उत्पन्न हुए। रोने से इन कानाम रुद्र पड़ा। ब्रह्मा ने अपनी गौरी नामक कन्या इन्हें देते हुए सृष्टिकाल में प्रजा उत्पन्न करने को कहा। तब ब्रह्मा ने गौरी को अपने शरीर में लीन कर मानस दक्षादि प्रजापति उत्पन्न कि। उस समय दक्ष ने सृष्टि उत्पन्न कर यज्ञ प्रारम्भ किया। अनन्तर तपस्या समाप्त कर जल से जब रुद्र वापिस निकले तो उन्हें लौकिक प्रजायें दिखाई दी। तब उन्होंने पूछा कि ब्रह्मा ने तो सृष्टि उत्पन्न करने के लिए मुझसे कहा था। यह सृष्टि किसने उत्पन्न कर

दी। इस समय उनके एक कान से ज्वाला निकली, जिससे प्रेतादि उत्पन्न हुए और उन्होंने दक्ष यज्ञ विध्वंस कर दिया। तब देवताओं ने रुद्र को यज्ञ भाग दिया। तब ब्रह्मा की आज्ञा से दक्ष रुद्र को गौरी दी। रुद्र गौरी सहित कैलाश पर रहने लगे। पिता का यज्ञ नष्ट करने वाले रुद्र पर क्रोधित हो गौरी ने अपना शरीर त्याग दिया और पुनः शैलसुता के रूप में जन्म लिया और तपस्या कर शिव को प्राप्त किया।

'स्कन्द-पुराण' में यह कथा प्रायः पूर्ववत है, परन्तु दक्ष ने जिस स्थान पर यज्ञ किया उसका नाम कनखल बताया गया है।

अन्य-पुराण साहित्य में भी यह कथा लगभग पूर्ववत ही है। मात्र कतिपय अन्तर यत्र-तत्र मिल जाता है। **संदर्भ** : महाभारत-शान्ति-अध्याय-283-84; ब्रह्म-पुराण-अध्याय, 34, 39, 109; पद्म-पुराण-सृष्टि खण्ड; वायु-पुराण-अध्याय-30; शिव-पुराण-रुद्र-संहिता, सती-खण्ड, अ० 1, 27-43; वायवीय-संहिता, अ० 18-23; भागवत-पुराण-4/4-5; लिंग-पुराण (पूर्वार्द्ध) अ० 99-100; वराह-पुराण-अध्याय-21-22; स्कन्द-पुराण-काशी खण्ड-(उत्तरार्द्ध) अध्याय-87-89, माहेश्वर खण्ड (केदार खण्ड) अ० 1-5 (प्रभास क्षेत्र माहात्म्य) प्रभासखंड, अ० 199; वामन-पुराण, अ० 4-5; कूर्म-पुराण-पूर्वार्द्ध-अध्याय 14-15; मत्स्य-पुराण-अध्याय 13/12-15; गरुड़-पुराण, अ० 56; ब्रह्माण्ड-पुराण-पूर्व भाग, अनुषंगपाद, अ० 13; कालिका-पुराण, अ० 8-18

(9) शिव द्वारा सती का त्याग/पार्वती द्वारा राम की परीक्षा

जिस समय वन में सीता का रावण द्वारा हरण कर लिया गया तथा सीता के वियोग में राम वन-वन घूमते फिर रहे थे तथा वियोग में संतप्त थे। तब उनकी इस स्थिति को देखकर सती मन में राम के साक्षात् भगवान होने में संदेह उत्पन्न हो गया तथा वे शंकर को बिना बताये राम की परीक्षा लेने के लिए सीता का रूप धारण कर उनके पास गई। लेकिन राम उनको पहचान गए। शिव ने इस रहस्य को अपने योगबल से जान कर सती का परित्याग कर दिया। 'आनन्द रामायण' में पार्वती द्वारा राम की परीक्षा लेने के उल्लेख हैं। यहां शिव की पत्नी सती नहीं है। **संदर्भ** : भागवत-1; शिव-रुद्र-संहिता-सतीखण्ड-अ० 26; आनन्द-रामायण-सारखण्ड-7

(10) शिव द्वारा चन्द्र को सिर पर धारण करना

समुद्र-मंथन के पश्चात् हलाहल पीने के बाद शिव ने चन्द्रमा को स्वयं ग्रहण किया। 'स्कन्द-पुराण' में उल्लेख है कि राहु के अमृत पान करने पर जब चन्द्रमा ने विष्णु को उस सम्बन्ध में बता दिया तो राहु से भयभीत चन्द्रमा को शिव ने शरण प्रदान की। 'ब्रह्मवैवर्त' पुराण के अनुसार दक्ष ने चन्द्र को क्षय रोग युक्त होने का शाप दिया था, जिसे शिव ने शाप-मुक्त करके निष्कलंक कर उसे मस्तक पर धारण किया। 'कालिका-पुराण' में उल्लेख मिलता है कि दुर्वासा के शाप से इन्द्र के भी हीन होने पर चन्द्र नष्ट होकर समुद्र में पहुंच गया और वह समुद्र-मंथन के समय प्रकट हुआ। **संदर्भ** : महाभारत-13/14/89, 303-338; पद्म-पुराण; भागवत-10/63/35; ब्रह्मवैवर्त; स्कन्द-पुराण; कालिका-पुराण

(11) **शिव का मोहिनी को देखकर मोहित होना**

विष्णु ने अमृत बांटने के लिए मोहिनी रूप धारण किया था तथा असुरों और देवताओं का झगड़ा बन्द कराया था। शिव की इच्छानुसार जब विष्णु इसी रूप में आये तो कामातुर होने से शिव का रेतः पात हो गया। **संदर्भ** : भागवत, 8/12; शिव-रुद्र-संहिता, अ० 20

(12) **शिव द्वारा इंद्र को कवच प्रदान करना**

त्वष्टा ने भगवान शंकर की तपस्या करके उनके वरदान से वृत्रासुर को उत्पन्न किया था। वृत्रासुर के अत्याचारों से तंग आकर देवता शिव के पास गए। शिव ने देवताओं की सहायता करने के लिए इन्द्र को कवच और उसका मन्त्र दिया। उस कवच को धारण कर इन्द्र ने वृत्रासुर का वध किया। **संदर्भ** : महाभारत-द्रोण पर्व, अ० 94/54-66

(13) **शिव का योगीश्वर होना/चतुर्मुखी होना**

शिव ने सब रत्नों से तिल-तिल भर सार लेकर सर्वोत्तम नारी तिलोत्तमा की रचना की। एक बार वह शिव की परिक्रमा करने के लिए आई तथा परिक्रमा करती हुई जिस-जिस दिशा को गई उस ओर शिव के एक-एक मुख प्रकट होता गया और इस प्रकार तिलोत्तमा के रूप देखने की इच्छा से चर्तुमूर्ति और चर्तुमुखी हो गए तथा उन्होंने लोगों को उत्तम योग-शक्ति के दर्शन कराये। **संदर्भ** : महाभारत-अनुशासन पर्व, 141/4

(14) **शिव का कैलाश को छोड़ना**

शिव पार्वती के कहने से अपनी ससुराल हिमालय के घर कैलाश में रहने लगे। एक बार हिमालय की पत्नी मैना ने पार्वती से अपने दामाद शिव से कुछ बुरा-भला कहा। पार्वती को उनकी बात बुरी लगी और उन्होंने शिव को कैलाश पर्वत छोड़ने को प्रेरित किया। **संदर्भ** : वायु-पुराण, अ० 92

(15) **शिवजी के कन्धे पर दो हत्यायें होना**

शिव ने ब्रह्मा तथा उनके पुत्र की हत्या की थी। अतः उन पर इन हत्याओं का दोष लगने का उल्लेख पुराणों में अलग-अलग मिलता है।

(i) **ब्रह्मा की हत्या का दोष**

ब्रह्मा का पांचवां मुख ऊपर होने के कारण उनमें रजोगुण रूपी अहंकार का प्रवेश हो गया। ब्रह्मा समझने लगे कि मेरे समान अन्य कोई नहीं है और मैंने ही सृष्टि की रचना की है। ब्रह्मा के पांचवें मुख के कारण देवता भी हतप्रभ हो गए। तब देवों ने मिलकर शंकर की प्रार्थना की और शंकर ने अंगूठे के नाखून से ब्रह्मा का सिर काट डाला, जिससे शंकर को ब्रह्म-हत्या का पाप लगाया। उनका सारा शरीर काला पड़ गया। उनके शरीर से दुर्गन्ध आने लगी तथा उनके सभी आभूषण लोहे के हो गये।

(ii) **शिव द्वारा काम-दहन (दूसरी हत्या)**

पद्म-पुराण-सृष्टि खण्ड, अ० 14/107-111, 155

(16) **शिव का त्रिनेत्र होना**

एक बार शिव हिमालय पर तपस्या कर रहे थे। जिस पर्वत-शिखर पर शिव रहते थे, उसी के पार्श्ववती शिखर पर पार्वती व्रतों का पालन करते हुए रहती थी। एक दिन

पार्वती शिव से मिलने के लिए आयीं और उन्होंने विनोद करने के लिए अपने दोनों हाथों से शिव के दोनों नेत्र बन्द कर दिए। उनके दोनों नेत्र ढकने से सारे संसार में अन्धकार छा गया और सारा संसार चेतना शून्य हो गया। लेकिन तत्काल ही शिव के ललाट में सूर्य के समान तीसरे नेत्र का आविर्भाव हो गया। **संदर्भ** : महाभारत-अनुशासन पर्व, अ० 140/26-27,

(17) शिव द्वारा अन्धकासुर का वध

जब विष्णु द्वारा दिति के सब दैत्य पुत्र मार दिये गये तो दिति ने कश्यप की आराधना कर देवताओं के लिए अवध्य पुत्र होने का वर मांगा। तब कश्यप ने शंकर को छोड़कर अन्य देवताओं से अवध्य पुत्र होने का वर दिया। तदनुसार दिति के एक ऐसा पुत्र पैदा हुआ जिसकी दो हजार भुजायें, सहस्र मस्तक, दो सहस्र नेत्र और उतने ही चरण थे। वह अन्धा नहीं था, पर वह अन्धे की तरह झूमता हुआ चलता था। अतः लोग उसे 'अन्धक' कहकर पुकारने लगे। तब अपने बल से मन्दोमत्त हो उसने देवताओं, ऋषियों और ब्राह्मणों पर अत्याचार करना प्रारम्भ कर दिया। उस समय नारद ने रुद्र को अन्धकासुर का वध करने के लिए तैयार किया तथा अन्धकासुर को शिव के पास मन्दराचल पर स्थित उपवन में भेज दिया। वहां शिव ने उस असुर को अपने त्रिशूल से मार दिया।

'पद्म-पुराण' के अनुसार, अन्धक पार्वती को अवसर पाकर हर ले जाने की इच्छा रखता था तथा उसके अत्याचारों से देवता दुखी थे। तब इन्द्र ने शिव से उसके वध की प्रार्थना की। इन्द्र से उसका युद्ध हुआ। शिव ने मातृका, माहेश्वरी, ब्राह्मी, गौरी, वाडवी, सौवर्णी आदि शक्तियां उत्पन्न कीं। उन्होंने अन्धक का सारा रक्त पी लिया और उसे त्रिशूल पर टांग दिया। त्रिशूल पर टंगा रहकर उसने कई वर्षों तक शिव की दिव्य स्तुति की। इस पर प्रसन्न हो शिव ने उसे भृंगीरिटी नामक गणेश बना दिया।

'शिव-पुराण' के अनुसार, अन्धक ने अपनी माता की प्रेरणा से शिव की आराधना कर शिव के अतिरिक्त किसी अन्य के द्वारा न मारे जाने का वरदार प्राप्त किया। तब उसके अत्याचारों से तंग आकर शिव ने उसका वध किया। **संदर्भ** : महाभारत-अनुशासन पर्व, अ० 14/214; पद्मपुराण-सृष्टि खण्ड, अ० 48; शिव पुराण-पंचम खंड, अ० 40/47; वाराह पुराण, अ० 27; स्कन्द-पुराण-अवन्ती खण्ड, रेवाखंड, अ० 45/49; कूर्मपुराण, अ० 1/16/31-222; मत्स्य पुराण, अ० 178/2-39; हरिवंश-पुराण-विष्णु पर्व, अ० 85/86; कथा सरित्सागर-खण्ड/17 (पद्मावती कथा)

(18) शिव द्वारा कपाल धारण करना और श्मशान में रहना

कल्पांत में जब संसार जलमय हो गया तब शिव ने अपनी जांघ से एक बूंद जल में डाल दी। उससे एक अण्डा-सा बन गया। उसे फोड़ने पर उससे एक पुरुष निकला। उसके बाद शिव ने एक प्रकृति की रचना की। उन दोनों के संयोग से प्रजापति हुए। उन्हीं प्रजापति ने समस्त सृष्टि की रचना की। आगे चलकर वही पितामह कहलाये। कुछ दिनों के बाद जब उनको सृष्टि रचना करने का अभिमान हुआ तब शिव ने उनका

मस्तक काट डाला, लेकिन बाद में शिव को बड़ा पश्चात्ताप हुआ। तभी से उन्होंने यह वृत ग्रहण किया कि वे कपाल हाथ में लिये रहेंगे और श्मशान में घूमा करेंगे। **संदर्भ :** बृहत्कथा कोश-कथापीठ लम्बक, तरंग-2

(19) शिव द्वारा मुण्डमाला पहनना व विष कन्द खाना

पुराणों में शिव शंकर, महेश और शिव आदि नामों से प्रसिद्ध हैं। इनके सिर पर गंगा, मस्तक पर चन्द्रमा, गले में सांप तथा नर मुण्डों की माला है। सारे शरीर में भस्म लगाकर, व्याघ्र चर्म ओढ़ते हैं। श्मशान में ठहरते हैं। आक, धतूरा, भंग आदि विष-कन्दों का सेवन करते हैं। भूत-प्रेत आदि उनके अनुयायी हैं। **संदर्भ :** भागवत

(20) शिव का अर्द्ध नारीश्वर रूप में प्रादुर्भाव

एक समय ब्रह्मा जी अपने द्वारा सृजित प्रजा को बढ़ते न देखकर व्याकुल हो उठे। उसी समय वहां आकाशवाणी हुई कि तुम मैथुनी सृष्टि की रचना करो तभी प्रजाओं की वृद्धि होगी। तब ब्रह्मा ने शिव का कठोर तप किया। शिव ब्रह्मा के कठोर तप से प्रसन्न होकर आधी नारी व आधे पुरुष के रूप में प्रकट हुए और ब्रह्मा को उनका मनोरथ पूर्ण होने का वरदान दिया।

'कूर्म पुराण' में यह कथा इस प्रकार से है—ब्रह्मा, मरीचि आदि की सृष्टि उत्पन्न करने के बाद तपस्या करने लगे। तपस्या करते हुए उनके मुख से आधे भाग नारी और आधे नर भाग वाले अतिभयंकर ईशान रुद्र प्रकट हुए। उस समय ब्रह्मा ने उनसे अपना विभाग करने के लिए कहा। तब पुरुष भाग से एकादश रुद्र पैदा हुए और नारी भाग से उत्पन्न नारी महादेव के आदेश से ब्रह्मा के समक्ष उपस्थिति हुई। ब्रह्मा ने उससे दक्ष की पुत्री बनने को कहा। तदनुसार वह दक्ष के घर उपत्न हुई। **संदर्भ :** शिव-पुराण-रुद्र-संहिता; कूर्म-1/11

शिवि का त्याग

शिवि राजा उशीनर के पुत्र थे। इन्द्र और अग्नि बाज और कबूतर का रूप धारण कर शिवि की परीक्षा लेने आये। इन्होंने अपनी शरण में आये कबूतर की रक्षा के लिए अपना सारा शरीर ही अर्पण कर दिया, जिससे इन्द्र इन पर प्रसन्न हुए और इन्हें मुक्ति प्राप्त हुई।

'महाभारत' के वन पर्व के अध्याय 198 की कथा के अनुसार, ब्रह्मा शिवि के धर्म और धैर्य की परीक्षा लेने के लिए ब्राह्मण का वेश धारण करके अतिथि के रूप में शिवि के पास आये और उन्होंने राजा से उसके पुत्र बृहद्गर्भ का मांस मांगा। राजा ने अतिथि की इच्छा पूर्ति के लिए अपने पुत्र को मारकर स्वयं मांस पकाया। इसी बीच ब्राह्मण रूप ब्रह्मा ने शिवि को उनके शस्त्रागार, अन्तःपुर में आग लगाकर क्रोधित करने का प्रयास किया, पर शिवि ने अपना धैर्य न छोड़ा। जब शिवि अपने पुत्र का मांस पकाकर ब्राह्मण के पास पहुंचे तो उस ब्राह्मण ने शिवि से पहले उस मांस को खाने के लिए कहा। जैसे ही शिवि ने उसको खाने के लिए हाथ बढ़ाया वैसे ही प्रकट हो ब्रह्मा ने उसका हाथ

पकड़ लिया और उसके पुत्र बृहद्गर्भ को भी जीवित कर दिया। **संदर्भ** : महाभारत-वन पर्व, अ० 117, 198; ब्रह्म-ययाति वंश वर्णन; पद्म-स्वर्ग खण्ड, अ० 18; भागवत-1/12/20

श्री तीर्थ में कुवेर की तपस्या

नर्मदा और कावेरी के संगम पर कुवेर ने घोर तप किया तथा शिव से यज्ञों का अधिपति होने का वरदान प्राप्त किया। **संदर्भ** : मत्स्य-189/4-11, 191/85

शुंभ-निशुंभ वध

रक्तबीज दैत्य के मारे जाने पर शुंभ और निशुंभ राक्षस बहुत क्रोधित हुए तथा निशुंभासुर राक्षसों की मुख्य सेना लेकर देवी के सामने दौड़ा। इसके साथ ही शुंभ भी अपनी सेना लेकर चण्डिका देवी के गणों से युद्ध करने के लिए आया। देवी ने पहले निशुंभासुर को त्रिशूल के खण्ड से भस्म कर पृथ्वी पर गिरा दिया। तत्पश्चात उसने शूल के अग्रभाग से शुंभ को वेधकर मार डाला। **संदर्भ** : मार्कण्डेय-पुराण

शुक की कथा

शुक का उल्लेख रावण के दूत के रूप में मिलता है। यह अपने पूर्व जन्म में वेदज्ञ ब्रह्मनिष्ठ ब्राह्मण था। इसने देवताओं के ऐश्वर्य और राक्षसों के विनाश के लिए अनेक यज्ञ किए। तब वज्रदृंष्ट नामक असुर ने इसके अपकार करने की भावना से इसके आश्रम पर आये अगत्स्य मुनि का रूप बनाकर भोजन में मांस मांगा। लेकिन स्वयं वज्रदृंष्ट ने शुक की पत्नी का रूप धारण कर अगस्त्य के सामने नर-मांस परोसा। जैसे ही अगस्त्य मुनि भोजन करने बैठे तथा सामने अमेध्य और अभक्ष्य नर-मांस को देखकर इसको राक्षस होने का शाप दिया, लेकिन जब अगस्त्य को वास्तविकता का पता चला तो उन्होंने शुक को रावण के दूत होने तथा राम के दर्शन से मुक्ति होने का अनुग्रह किया।

'आनन्द रामायण' के अनुसार अगत्स्य मुनि ने स्वयं शुक से छाग का मांस बनाने को कहा। परन्तु वज्रदृंष्ट ने शुक की स्त्री का रूप बनाकर अगत्स्य के सामने नर-मांस परोस दिया। तब अगत्स्य ने मांस बदला हुआ देखकर क्रोधित हो शुक को राक्षस होने का शाप दिया। **संदर्भ** : बाल्मीक-रामायण-यु० 25, अध्यातम-रामायण-युद्ध काण्ड, आनन्द-रामायण-सार-खण्ड 10/215-219

शुकदेव की समता

शुकदेव अपने पिता की आज्ञा से आत्मज्ञान प्राप्त करने के लिए राजा जनक के दरबार में गये। वहां पर उन्होंने खूब सजे-सजाये हाथी, घोड़े रथ और सभी पुरुषों को देखा, पर उनके मन में कोई विकार नहीं हुआ। वे तीन दिन तक ड्योढ़ी के बाहर धूप में खड़े रहे तब भी उन्हें कोई क्लेश न हुआ। राजा जनक ने उन्हें प्रमदवन में ठहराया

तथा नवयुवतियों को उनकी सेवा के लगाया, पर उनके मन में कोई विकार न उत्पन्न हुआ। **संदर्भ** : महाभारत, शन्तिपर्व, अ० 325-26

शुकदेव का दो घड़ी से अधिक कहीं न ठहरना

केवल भागवत पुराण में शुकदेव के सम्बन्ध में यह उल्लेख मिलता है कि वे किसी गृहस्थ के घर में अधिक समय तक नहीं ठहरते थे। वे किसी के यहां गोदोहनकाल (जितनी देर में गाय दुही जाय) तक भी नहीं ठहरते थे। **संदर्भ** : भागवत-1/19/19

शुक्र की तपस्या

शुक्राचार्य दैत्यों के गुरु थे। एक बार इन्होंने असुरों की रक्षा करने के लिए शंकर से उपाय पूछा और उनके बताने के अनुसार एक हजार वर्ष तक धूम्रपान कर तपस्या करते रहे और संजीवनी विद्या प्राप्त की। इन्द्र ने डरकर इनकी तपस्या भ्रष्ट करने के अपनी पुत्री जयन्ती को भेजा। इन्होंने तपस्या पूर्ण कर जयन्ती से विवाह कर लिया। जिससे देवयानी का जन्म हुआ। **संदर्भ** : पद्म पुराण-सृष्टि खण्ड, अ० 13; मत्स्य; अ० 47; देवी भागवत-4/12

शुक्राचार्य का काना होना

भृगुकुलोत्पन्न ऋषि शुक्राचार्य दैत्यों के गुरु थे। यह प्रारम्भ से असुरों का पक्षपात करते थे। एक बार दैत्यराज बलि जब भगवान को तीन पग भूमि दान करने लगे, तब उन्हें दान करने को रोकने की इच्छा से यह जलपात्र की टोंटी में छिपकर बैठ गये, जिसमें संकल्प करने का जल था। जल के रुक जाने पर राजा बलि ने दर्भाग्र से टोंटी का मुख साफ किया, जिससे इनकी आंख फूट गई। इसलिए यह 'एकाक्ष' नाम से प्रसिद्ध हुए। **संदर्भ** : महाभारत-1; ब्रह्म (शुक्र तीर्थ माहात्म्य) अ० 95; भागवत-7/51

शुक्राचार्य को मृत संजीवनी विद्या की प्राप्ति

अंगिरा के बृहस्पति और भृगु के शुक्राचार्य पुत्र थे। भृगु शिक्षा देने के लिए शुक्र को अंगिरा के पास छोड़कर चले गये। अंगिरा बृहस्पति और शुक्र को शिक्षा देने लगे, परन्तु वे दोनों को असमान भाव से पढ़ाते थे। तब शुक्राचार्य वहां से गौतम के पास गये और उनसे गुरु बनाने के लिए किसी योग्य व्यक्ति को पूछा। उस समय गौतम ने उन्हें शंकर को गुरु योग्य बताया। तब शुक्र ने शिव की आराधना कर उनसे मृतसंजीवनी विद्या प्राप्त की। **संदर्भ** : ब्रह्म अ० 95

शुक्राचार्य (उशना) द्वारा कुबेर का धन अपहरण

एक बार इन्द्र ने कुबेर को कोषाध्यक्ष बना दिया,। तब योगसिद्धि मुनि उशना ने कुबेर के भीतर प्रवेश करके उनके सारे धन का अपहरण कर लिया। उन्होंने शिव

को बताया कि शुक्र ने मेरे सारे धन का अपहरण कर लिया है। उस समय शिव क्रोधित हो गये और उन्होंने उशना को अपने उदर में रख लिया। शिव के उदर में वह विचरण करने लगे और शिशन मार्ग से बाहर आये। तब उनका नाम शुक्र पड़ा। **संदर्भ** : महाभारत, शान्तिपर्व, अ०-289

शुक्राचार्य का असुरों का हितैषी होना

असुर देवताओं पर आक्रमण कर और उन्हें परेशान कर भृगुपत्नी के आश्रम में जाकर छिप जाते थे। असुरों ने माता कहकर उनकी शरण प्राप्त की, अतः वह पुत्र मानकर उनकी रक्षा करती थीं, देवता असुरों को दण्ड दने के लिए आते, परन्तु वे भृगुपत्नी के प्रभाव से आश्रम में न आते। अतः देवताओं ने एक दिन अवसर पाकर भृगुपत्नी का सिर काट डाला। शुक्राचार्य माता के वध से खिन्न हो गये और उन्होंने देवताओं के उन्नति के मार्ग में बाधा डालने के लिए असुरों को प्रेरित करना प्रारम्भ कर दिया। **सदर्भ** : महाभारत शन्ति, अ० 289

शुनः शेप की कथा

शुनः शेप मुनि अजीगर्त का पुत्र और विश्वामित्र का भानजा था। इसे अजीगर्त से राजा हरिश्चन्द्र ने सौ गायें देकर बलि के लिए खरीद लिया। जिस समय इसकी बलि देने की तैयारी की जा रही थी। उसी समय वहां विश्वामित्र पहुंच गये और उन्होंने शुनः शेप की रक्षा कर उसे पुत्र रूप में स्वीकार कर लिया। देवताओं की स्तुति करने पर देवताओं ने विश्वामित्र को इसे वापिस किया था। अतः इनका 'नाम' देवरात भी पड़ा। 'बाल्मीकि रामायण' के अनुसार हरिश्चन्द्र के स्थान पर शुनः शेप से अवशेष स्वाधिकार ले जाते हैं। 'ब्रह्मपुराण' में शुनः शेप को विश्वामित्र का पुत्र ही बताया गया है। **सदर्भ** : भागवत-9/16; ब्रह्म० अ० 10,104; देवीभागवत-7/14-27; बाल्मीकि-1/62

शुनःशेप से विश्वामित्र के पुत्रों का विरोध

विश्वामित्र के सौ पुत्र थे। उनके बिचले पुत्र का नाम मधुच्छंदा था। उन्होंने अजीगर्त के पुत्र अपने भानजे शुनःशेप को पुत्र रूप में स्वीकार कर लिया, परन्तु उनके पुत्र उसे अपना भाई मानने को तैयार न थे। अतः विश्वामित्र ने अपने उनचास पुत्रों को शाप दे दिया कि तुम म्लेच्छ हो जाओ। मधुच्छन्दा के समझाने पर उनके अन्य पुत्रों ने मंत्रद्रष्टा शुनःशेप को भाई के रूप में स्वीकार कर लिया। **संदर्भ** : भागवत-9/16; बाल्मीकि-1/62

शेषनाग का पृथ्वी को अपने सिर पर धारण करना

कद्रू के पुत्र नागों में से शेषनाग ने कद्रू का साथ छोड़कर कठोर तपस्या की। वह केवल

वायु पीकर रहते और संयमपूर्वक व्रत का पालन करते । उसने गन्धमादन पर्वत पर जाकर बदरिकाश्रमतीर्थ में भी तप किया । तब शेष की तपस्या से प्रसन्न हो ब्रह्मा ने उससे वर मांगने को कहा । शेष ने कहा, कि मेरे सब सहोदर भाई बड़े मन्दबुद्धि हैं, अत: मैं उनके साथ नहीं रहना चाहता। उस समय ब्रह्मा ने शेष के इन्द्रियसंयम और मनोनिग्रह से प्रसन्न होकर हिलती-डुलती समूची पृथ्वी को अपने सिर पर धारण कर उसे अचल रखने के लिए कहा । 'गर्ग-संहिता' के अनुसार श्रीकृष्ण के कहने से शेष ने पृथ्वी को अपने सिर पर धारण किया । **संदर्भ** : महाभारत-आदि पर्व, अ० 36; गर्ग-संहिता-वृन्दावन खण्ड, अ० 13

शेषावतार लक्ष्मण

'रामायण' से लेकर पुराणों तक लक्ष्मण का राम के छोटे भाई के रूप में उल्लेख मिलता है । भागवत आदि पुराणों में वे लक्ष्मण शेषावतार के रूप में चर्चित हैं। उनका एक क्रोधी व्यक्ति के रूप में वर्णन मिलता है। चित्रकूट में ससैन्य भरत को आते देख उसे मारने के लिए उद्यत हो जाते हैं । 'अध्यात्म रामायण' में उन्हें 14 वर्ष तक स्त्री तथा निद्रात्यागी के रूप में दिखाया गया है । **संदर्भ** : भागवत-पुराण; पद्म-पुराण; स्कन्द-पुराण; नृसिंह; ब्रह्मवैवर्त; अध्यात्म-रामायण

श्वेत की कथा

श्वेत विदर्भ देश के सुदेव नामक राजा का पुत्र था । उसके पिता की मृत्यु के बाद उसे राजा बनाया गया । परन्तु कुछ समय पश्चात वह अपने छोटे भाई सुरथ को राजगद्दी पर बिठाकर वन में तप करने चला गया तथा तीन हजार वर्षों तक दुष्कर तप करके उसने परमश्रेष्ठ ब्रह्मलोक प्राप्त किया । स्वर्ग लोक में पहुंचकर भूख और प्यास से संतप्त होने लगा तथा शरीर शिथिल पड़ गया । तब उसने ब्रह्माजी के पास जाकर भूख और प्यास न लगने का वर मांगा । तब ब्रह्माजी ने उससे कहा कि उसने तप करके केवल शरीर को ही पुष्ट किया है, उसने कोई दान आदि नहीं किया, इसलिए उसे स्वर्ग में भी भूख लगती है और श्वेत को बताया कि वह भूख लगने पर अपने शरीर का भक्षण किया करे । परन्तु उसके इस कष्ट का निवारण ऋषि अगस्त्य करेंगे । तब श्वेत अपने शरीर का भक्षण करने लगा । एक दिन ऋषि अगस्त्य से भेंट हुई और श्वेत ने अगस्त्य को एक स्वर्ण आभूषण दान में दिया । तभी उसके कष्ट दूर हो गये और वह स्वर्ग को चला गया । **संदर्भ** : बाल्मीकि-रामायण-उत्तरकाण्ड, सर्ग-78-79; आनन्द रामायण-राज्यकाण्ड, सर्ग-17 (उत्तरार्द्ध)

शृंगी ऋषि का जन्म

एक दिन विभाण्डक मुनि जल में स्नान कर रहे थे। उस समय उर्वशी अप्सरा को

देखकर जल में ही इनका वीर्यपात हो गया। जिसे प्यास से व्याकुल एक मृगी पी गई। इससे उसके श्रृंगी ऋषि का जन्म हुआ। **संदर्भ** : महाभारत-वनपर्व, 110/34-38

श्रृंगी ऋषि और शान्ता का विवाह

शान्ता अयोध्या के राजा दशरथ की पुत्री थी। इसे अंगदेश के राजा लोमपाद ने गोद लेकर अपनी पुत्री बना लिया। एक बार अंगदेश में अकाल पड़ गया। तब ऋषियों ने राजा लोमपाद को बताया कि जब श्रृंगी ऋषि आपके देश में आयेंगे, तभी वर्षा होगी। यह सुनकर राजा लोमपाद ने श्रृंगी ऋषि को लाने के लिए रूपवती वेश्याओं को भेजा, जो उन्हें बहला-फुसलाकर उनके पिता ऋषि विभाण्डक के आश्रम से ले आयीं। उनके आते ही अंगदेश में वर्षा होने लगी। लोमपाद ने हर्षपूर्वक शान्ता का विवाह श्रृंगी ऋषि के साथ कर दिया। तब ऋषि श्रृंग शान्ता के साथ लोमपाद की राजधानी में रहने लगे। **संदर्भ** : बालमीकि-रामायण-सर्ग-10-11; महाभारत-वनपर्व, अ० 10-113

शौनक और अभिप्रतारी

एक बार कपिगोत्रज शौनक और कक्षसेन के पुत्र अभिप्रतारी से जब उन्हें भोजन परोसा जा रहा था, एक ब्रह्मचारी ने भिक्षा मांगी, किन्तु उन्होंने उसे भिक्षा न दी। तब ब्रह्मचारी ने उन दोनों से कहा कि जिसके लिए यह अन्न है उसे प्रजापति को ही नहीं दिया गया। इस बात का मनन कर शौनक ने उस ब्रह्मचारी से कहा जो देवताओं की आत्मा है, प्रजाओं की उत्पत्तिकर्त्ता, हिरण्यदंष्ट्र, भक्षणशील और मेधावी हैं, ब्रह्मचारी उसी की हम उपासना करते हैं और उन ब्रह्मचारी को ज्ञानी समझकर सेवकों से भिक्षा दिलाई। **संदर्भ** : छान्दोग्य-उपनिषद्-4/3

सम्पाती के पर जलना

सम्पाती और जटायु दोनों गरुड़ के पुत्र थे। एक समय ये दोनों उड़ने की शक्ति से गर्वित हो सूर्य तक पहुंचने के लिए आकाश में उड़े। जिससे उनके पंख सूर्य की गर्मी से झुलस गए। इन दोनों को अरुण ने सूर्य से कहकर स्वस्थ कराया। 'बालमीकि-रामायण' में उल्लेख है कि सम्पाती को निशाकर मुनि ने यह कह वर दिया कि जब सीता की खोज में नये वानरों को जाता हुआ देखेगा तो उसके नये पर निकल आयेंगे। तदनुसार हनुमान आदि को देखकर उसके नये पर निकल आए। **संदर्भ** : रामायण-किष्किधा काण्ड-सर्ग-56, 62-63; अध्यात्म-रामयण सर्ग-4/8, ब्रह्म, अ० 166, आनन्द रामायण-सारखण्ड-सर्ग-8

सगर सम्बन्धी कथाएं

(1) सगर के हजार पुत्र पैदा होना

सगर अयोध्या के प्रसिद्ध सूर्यवंशी राजा थे। इनका विवाह कश्यप की पुत्री सुमति

और विदर्भ राज कन्या केशिनी से हुआ। सुमति के साठ हजार पुत्र उत्पन्न हुए, जिन्हें कपिल ने भस्म कर दिया। **संदर्भ :** बाल्मीकि-रामायण-बालकाण्ड, 88; ब्रह्म-8; विष्णु-4/4/5-6; भागवत-9/8/9-10

(2) सगर का अपने पुत्र को निकालना

सगर की दूसरी पत्नी केशिनी से असमंजस नाम का पुत्र उत्पन्न हुआ। पूर्वजन्म के कुकृत्य के फलस्वरूप यह बड़ा दुखी और दुष्ट प्रकृति का था। यह बच्चों को नदी में ले जाकर डुबा देता। इसके कुकृत्यों से दुखी होकर इनके पिता ने इसे देश से निकाल दिया। **संदर्भ :** महाभारत-वनपर्व, ब्रह्म-78; विष्णु-4/4/5-10; भागवत-9/8/15-19

सत्यकाम की कथा

(1) सत्यकाम का गौतम से शिक्षा प्राप्त करना

जाबाला के पुत्र सत्यकाम ने अपनी माता जाबाला को सम्बोधित करके निवेदन किया कि वह गुरुकुल में जाना चाहता है, अतः उसे उसका गोत्र बता दिया जाए। इस पर उसकी माता ने कहा कि वह किस गोत्रवाला है, इसे वह भी नहीं जानती। पहले वह पिता के घर आये हुए बहुत से अतिथियों की सेवा करने वाली परिचारिका थीं। उन्हीं दिनों युवावस्था में जब उसने उसे प्राप्त किया तो उसके पिता परलोकवासी हो गए, अतः उनसे गोत्र के सम्बन्ध में पूछ न सकी और वह नहीं जानती कि वह किस गोत्र के हैं। मेरा नाम जाबाला है तथा तेरा नाम सत्यकाम है। अतः तू अपने को 'सत्यकाम जाबाला' बता देना। तब सत्यकाम ने गौतम के पास जाकर अपने को शिष्य बनाने के लिए कहा। जब गौतम ने उससे उसका गोत्र पूछा तो सत्यकाम ने गौतम से अपनी माता द्वारा कहे गए शब्द दुहरा दिए। सत्यकाम के मुख से ऐसा सुनकर गौतम ने कहा कि 'ऐसा स्पष्ट भाषण कोई ब्राह्मणेतर नहीं कर सकता। अतः हे सौम्य। तू समिधा ले आ, मैं तेरा उपनयन कर दूंगा, क्योंकि तूने सत्य का त्याग नहीं किया। **सन्दर्भ :** छन्दोग्य उपनिषद्-41-49

(2) सत्यकाम को भगवान द्वारा उपदेश

ऋषि गौतम ने सत्यकाम का उपनयन कर कृष्ण और दुर्बल गायें अलग निकालकर उससे उन गौओं को चराने के लिए कहा। उन्हें ले जाते समय सत्यकाम ने गौतम से कहा कि इनकी एक सहस्र गायें नहीं हो जायेंगी, तब तक वह नहीं लौटेगा। जब गायें एक हजार हो गईं, तब उससे एक सांड ने कहा, 'हे सौम्य! हम एक सहस्र हो गए हैं, तेरी प्रतिज्ञा पूरी हो गई है, अतः तू अब हमें आचार्यकुल में पहुंचा दे और उस सांड ने सत्यकाम को ब्रह्म का 'प्रकाशवान' चार कलाओं वाला पाद बतलाया और कहा कि अग्नि तुझे दूसरा पाद बतायेगा। दूसरे दिन सत्यकाम ने गौओं को गुरुकुल की ओर हांक दिया। सायं काल होने पर उसने अग्नि प्रज्वलित कर गौओं को रोक समिधाधान कर अग्नि के पश्चिम पूर्वाभिमुख होकर बैठ गया। अग्नि ने उसे चतुष्कल पाद

'अनन्तवान' बतलाया। 'हंस तुझे तीसरा पाद बतलायेगा।' ऐसा कहकर अग्नि निवृत्त हो गया। दूसरे दिन सत्यकाम सायं होने पर अग्नि प्रज्वलित कर बैठ गया। वहां हंस ने आकर उसे 'ज्योतिष्मान' नामवाला ब्रह्म का चतुष्काल पाद बताया। दूसरे दिन मद्गुनामक जलचर पक्षी ने उसे ब्रह्म का 'आयतनवान्' चतुष्कल-पाद बतलाया। तत्पश्चात सत्यकाम आचार्य कुल में पहुंचा तो गौतम ने कहा कि हे सौम्य! तू ब्रह्मवेत्ता सा भासित हो रहा है, तुझे किसने उपदेश दिया है। तब सत्यकाम ने उत्तर दिया कि मुझे देवताओं ने उपदेश दिया है, अब मेरी इच्छा के अनुसार आप पूज्यपाद ही मुझे विद्या का उपदेश करें, क्योंकि आचार्य से जानी गई विद्या ही अतिशय साधुता को प्राप्त होती है, तब आचार्य ने उसे उस विद्या का उपदेश दिया। इस प्रकार से सत्यकाम ने ब्रह्म विषयक पूर्ण विद्या प्राप्त की। **सन्दर्भ** : छान्दोग्य उपनिषद-4/4/9

सत्यवान-सावित्री

सावित्री मद्र देश के राजा अश्वपति की पुत्री थी। उसका विवाह सत्यवान के साथ हुआ। सत्यवान के पिता अंधे होने के कारण अपना राज्य गवां बैठे थे। इनकी अल्पायु में ही मृत्यु हो गई। परन्तु सावित्री ने अपने पातिव्रत्य-धर्म के बल से इन्हें पुनः जीवित कर लिया। इनके पिता का राज्य भी वापस मिल गया और उनकी आंखें भी ठीक हो गईं। **सन्दर्भ** : बाल्मीकि-रामायण-2/30; महाभारत-वनपर्व, अ० 293-94; पद्म-पुराण-पाताल खण्ड; ब्रह्मवैवर्त प्रकृति-खण्ड, अ० 24-31; मत्स्य-208-14;

सत्यवती की कथा

मथुरा में चन्द्रोदय नामक राजा राज्य करता था। शिव की उपासना से उसके एक पुत्री पैदा हुई जिसका नाम उसने सत्यवती रखा था। राजा ने क्रोधित होकर एक कोढ़ी से उसकी शादी कर दी। एक दिन सत्यवती अपने पति को 'प्रभावती' तीर्थ में नहाने के लिए अपने कंधे पर बिठाकर ले जा रही थी। रास्ते में उसके पति ऋतुपर्ण का पैर एक ऋषि से लग गया, जिससे उसने प्रातःकाल तक उसकी मृत्यु होने का शाप दे दिया। सत्यवती ने अपने पतिव्रत-धर्म से रात्रि बढ़ा दी। इससे सारे संसार में अंधेरा छा गया। इस अनहोनी बात को देखकर देवतादि बड़े चकित हुए। अन्त में ब्रह्मा सत्यवती के पास पहुंचे और उसके पति का वर्ण कंचन का बना दिया और प्रभावती तीर्थ में स्नान करने से उसका रोग दूर हो गया। पार्वती ने सत्यवती और ऋतुपर्ण का विवाह कराया। इसके बाद वे दोनों चन्द्रोदय के पास गये। राजा पुत्री और दामाद को पाकर अत्यन्त ही प्रसन्न हुआ।

सदन कसाई की कथा

एक दिन सदन नामक कसाई ने बकरे के शरीर के हिस्से को काटना प्रारम्भ किया तो बकरे ने कहा कि पूर्व जन्म में उसने उसका केवल सिर काटा था, उसके बदले में वह

उसका सिर ही काट सकता है। यह बात सुनकर सदन कसाई को ज्ञान हो गया और उसने कसाई का काम छोड़ दिया और वह ईश्वर का भक्त हो गया।

सनकादिकों का मोह

सनकादिक विष्णु का अवतार तथा ब्रह्मा के मानस पुत्र के रूप में जाने जाते हैं। अत्यधिक विरक्त होने के कारण ही सर्वत्र इन्हें कुमार कहा गया है। एक बार सनकादिकों ने संशयवश होकर अपने पिता ब्रह्मा से पूछा कि सांसारिक विषय विपत्तियों के घर हैं, फिर भी मानव जानवर सदृश उनके भोग में क्यों लिप्त रहता है। मानव का चित्त विषयों में तथा विषय के चित्त की हर प्रवृत्ति में रहने से मानव मुक्ति-पद का अधिकारी क्यों कर हो सकता है। ब्रह्मा अपनी कर्म प्रवण बुद्धि के कारण सनकादिकों के इस प्रश्न का उत्तर न दे सके, किन्तु भक्तिभाव से उन्होंने विष्णु का स्मरण किया तब विष्णु हंस का रूप धारण कर उनके सामने प्रकट हुए और परमार्थ तत्त्व के जिज्ञासु सनकादिकों को परमतत्त्व का ज्ञान प्रदान किया, जिससे उनका मोह भंग हुआ। **संदर्भ** : पद्म-पुराण-सृष्टि खण्ड 2-31; भागवत-11/13

समुद्र-मंथन

देवासुर-संग्राम के कारण आने वाली कठिनाइयों को दूर करने के उद्देश्य से विष्णु के परामर्श पर देव और असुरों ने समुद्र-मंथन किया। जिसमें मन्दर पर्वत को मथानी और वासुकी नाग की रस्सी बनाई गई। भगवान कच्छपावतार ने मन्दराचल को अपने ऊपर धारण किया। समुद्र-मंथन से चौदह रत्न निकले। जिनको ऋषि, विष्णु, शिव और असुरों ने ग्रहण किया। इस समय निकले विष को शिव ने पी लिया, परन्तु अमृत के लिए देव और दानवों ने आपस में झगड़ा कर लिया, जिसका वितरण विष्णु भगवान ने मोहिनी का रूप धारण कर किया। **सन्दर्भ** : बालमीकि-रामायण-बालकाण्ड-सर्ग-45; महाभारत-आदि पर्व, अ० 18; भागवत-8/6-8, 8/8; अग्नि, अ०3; मत्स्य, अ० 249-50; हरिवंश-भविष्य पर्व, अ० 30

सरमा और पणि की कथा

सरमा इन्द्र की कुतिया तथा यमराज के चार आंख वाले कुत्तों की माता मानी जाती है। एक बार पणि लोग इन्द्र की गौएं चुरा ले गये थे, जिन्हें इसने खोज निकाला। महाभारत में इसे 'देवसुनी' कहा गया है। **सन्दर्भ** : शतपथ-ब्राह्मण-3/2/1-3; महाभारत-आदि पर्व, 3/1

स्वर्ग से मन्दाकिनी का बहना

मन्दाकिनी स्वर्ग में स्थिति गंगा की एक धारा है। इसका तट रम्य एवं पुण्यकारी और सुवर्णमय है। जिसके किनारे सभी कामनाओं को पूर्ण करने वाले फल के वृक्ष लगे

हुए हैं। सन्दर्भ : भागवत-10/70/44

स्वयंप्रभा की कथा

जब हनुमान आदि वानर सीता की खोज में गए और एक गुफा में फंस गये तो उन्हें स्वयंप्रभा ने निकाला। स्वयंप्रभा मेरुसार्वणि की कन्या थी और हेमा नामक इन्द्र की अप्सरा द्वारा प्रदत्त वर के वल से मय दानव द्वारा निर्मित कांचनमय वन और दिव्य भवन की रक्षा करती थी।

'अध्यात्म रामायण' के अनुसार स्वयंप्रभा हेमा की सखी और दिव्य गन्धर्व की पुत्री थी। हेमा विश्वकर्मा की कन्या थी। उसने नृत्य और गान से महादेव को प्रसन्न कर दिव्य भवन पाया, जिसमें वह दस करोड़ वर्ष तक रही। फिर वह स्वयंप्रभा को उस भवन की रक्षा के लिए यह कहकर छोड़ गई कि इस निर्जन वन में त्रेतायुग में दशरथ के पुत्र राम आयेंगे उनके दर्शन कर तथा राम की पत्नी सीता को खोजते हुए वानरों का सत्कार कर ब्रह्मलोक में आना। सन्दर्भ : बालमीकि रामायण-किष्किधा काण्ड, सर्ग 51/10-18; अध्यात्म रामायण-किष्किन्धा-काण्ड, 6/51-57; आनन्द रामायण-सार-काण्ड-8/102-109

सहदेव का पण्डित होते हुए भी चूक जाना

सहदेव परम विद्वान एवं बुद्धिमान थे। लेकिन जब दुर्योधन ने पाण्डवों को अपने यहां जुआ खेलने के लिए बुलाया, तब युधिष्ठिर के साथ कौरव सभा में वे भी गये और जुए में हार गए। बुद्धिमान एवं पण्डित होते हुए तथा जुए का परिणाम जानते हुए भी सहदेव से यह चूक हो गई। सन्दर्भ : महाभारत-आदि पर्व

सहस्रनाम का माहात्म्य

विष्णु सहस्रनाम स्तोत्र का वर्णन महाभारत में विस्तार से हुआ है। जो पुरुष भक्ति सम्पन्न होकर विष्णु सहस्रनाम से ईश्वर की प्रतिदिन स्तुति करता है, वह शीघ्र ही समस्त संकटों से छूट जाता है। सन्दर्भ : महाभारत-अनुशासन पर्व, अ० 149; पद्म-पुराण-उत्तरखण्ड

सहस्रपाद ऋषि को सर्प होने का शाप

सहस्रपाद का खगम नामक एक प्रसिद्ध ब्राह्मण मित्र एक दिन अग्निहोत्र में लगा हुआ था। सहस्रपाद ने खिलवाड़ में उसे तिनकों का सर्प बनाकर डरा दिया। वह भय के मारे मूर्च्छित हो गया तथा सहस्रपाद को शाप दे दिया कि उसे सर्प होना पड़ेगा। सहस्र-पाद के अनुनय विनय करने पर खगम ने उससे कहा कि भविष्य में महर्षि प्रमति के पवित्र पुत्र पुरु व रुरु उत्पन्न होंगे। उनका दर्शन करके शीघ्र ही इस शाप से छुटकारा हो जाएगा। सन्दर्भ : महाभारत-आदि पर्व, अ० 10-11

सहस्रपाद ऋषि को सर्पयोनि से मुक्ति

रुरु की पत्नी प्रमद्वरा को एक बार सांप ने डस लिया, जिससे उसकी मृत्यु हो गई। तब रुरु ने प्रतिज्ञा की कि वह जिस भी सर्प को देखेगा, मार डालेगा। तब रुरु ने एक ब्राह्मण के शाप से सर्पयोनि में पड़े सहस्रपाद ऋषि को मारने की चेष्टा की। उस समय सहस्रपाद ने रुरु को अहिंसा का उपदेश दिया। **सन्दर्भ :** महाभारत-आदि पर्व, अ० 10

सात द्वीपों का निर्माण

नारद की आज्ञा से ब्रह्मा ने प्रियव्रत को सम्पूर्ण भूमण्डल की रक्षा का भार सौंप दिया। उन्होंने एक बार यह देखकर कि सूर्य के सुमेरु पर्वत की परिक्रमा करते समय पृथ्वी का आधा भाग प्रकाश में रहता है, आधा भाग अंधकार में रहता है। अतः रात को भी दिन बनाने के उद्देश्य से वेगवान रथ से पृथ्वी की सात परिक्रमाएं कर डालीं। उस समय इनके रथ के पहियों से जो लीक बनीं, वे सात समुद्र बन गए तथा उनसे जम्बू, प्लक्ष, शाल्मलि, कुश, क्रौंच, शाक और पुष्कर सात द्वीपों का निर्माण हुआ। **सन्दर्भ :** भागवत-1/5

सीता की उत्पत्ति की कथा

सर्वप्रथम सीता की उत्पत्ति की कथा रामायण में ही वर्णित है, जहां उसका आयोनिजा के रूप में पृथ्वी से उत्पन्न होने का उल्लेख है जो कि जनक द्वारा पृथ्वी पर हल चलाते समय हल के फलक से पृथ्वी से निकली। 'बाल्मीकि रामायण' की उत्तर-काण्ड के एक प्रसंग के अनुसार ऋषि कुशध्वज की पुत्री वेदवती सीता हुई।

'आनन्द रामायण' के अनुसार "राजा पद्माक्ष ने लक्ष्मी और विष्णु की घोर तपस्या करके लक्ष्मी को पुत्री के रूप में प्राप्त करने का वर प्राप्त किया। तदनुसार विष्णु द्वारा पद्माक्ष को दिए मातुलुंग फल से उसके एक कन्या उत्पन्न हुई। जिसका नाम पद्माक्ष रखा गया। राजा ने जब वह विवाह के योग्य हुई, तब उसका स्वयंवर किया। स्वयंवर में राजा ने यह शर्त रखी कि जो अपने शरीर को आकाश के समान नीला कर लेगा उसको यह कन्या दूंगा, लेकिन ऐसा कोई न कर पाया। कन्या को सुन्दर देखकर लोगों ने उसका बलात् अपहरण करने की सोची, जिसका प्रतिकार करने पर राजा से लोगों का युद्ध हुआ और उसमें राजा पद्माक्ष मारा गया और पद्मा अग्नि में कूदकर अन्तर्धयान हो गई। एक समय पद्मा अग्नि से निकलकर बाहर बैठी थी, उसे उस समय विमान से जाते हुए रावण ने देखा और कामातुर हो उसे पकड़ने को दौड़ा। तभी कन्या अग्नि में समा गई। रावण ने अग्नि पर पानी डालकर बुझा दिया और अग्नि से निकले पांच रत्नों को सन्दूक में रखकर ले गया और लंका में देवालय में रख दिया जहां रावण की आज्ञा से जब खेती बोई गई तो उसमें एक सुन्दर कन्या निकली। उसको पद्माक्ष का वंश नष्ट करनेवाली जानकर मन्दोदरी ने उसे पेटी सहित किसी दूसरे राज्य में फेंकने की आज्ञा दी परन्तु उस कन्या ने रावण से कहा कि तेरे कुल का नाश

करने के लिए तेरे राज्य में फिर एक बार अवश्य आऊंगी। पेटी को रावण के दूतों ने विदेह के राज्य में गाड़ दिया। वहां किसी ब्राह्मण के हल चलाने पर सन्दूक निकली जिसमें एक कन्या थी। हल की फाल से जन्म होने के कारण इस कन्या का नाम सीता पड़ा जिसे राजा विदेह ने पुत्री की तरह पाला।

'अद्भुत रामायण' के अनुसार सीता पृथ्वी से उत्पन्न हुई थी, पर वह मन्दोदरी के गर्भ से उत्पन्न हुई कन्या थी। यह कन्या मुनियों के रक्त से उद्भूत थी। एक समय ब्रह्मा की तपस्या कर उनसे रावण ने यह वर प्राप्त किया कि मैं कभी न मरूं। जब मैं अपनी पुत्री से विषय की कामना करूं उसी स्थिति में मृत्यु को प्राप्त होऊं। इस प्रकार का वर प्राप्त कर वह उद्दण्ड हो गया तथा ऋषियों के शरीर से कर रूप में थोड़ा-थोड़ा रक्त इकट्ठा किया तथा यह रक्त रावण ने लक्ष्मी को पुत्री के रूप में प्राप्त करने हेतु यज्ञ कर रहे ऋत्समद द्वारा मंत्रों से दीक्षित दूध और दर्भ से भरे हुए कलश में भर दिया। उस कलश को रावण अपने घर ले गया। क्रोध में मरने के लिए विष से भी भयंकर इस रक्त को मन्दोदरी ने पी लिया, जिससे वह गर्भवती हो गई। मन्दोदरी पति-समागम के बिना गर्भवती हो गई थी, अतः उसने पाप से बचने के लिए कुरुक्षेत्र में इस गर्भ का त्याग किया। इस स्थान पर यज्ञ की इच्छा से जनक ने सोने का हल चलाया, जिससे सीता का जन्म हुआ। 'भागवत' के अनुसार महाराजा सीरध्वज के यज्ञ के लिए धरती जोतने पर हल की फाल से सीता की उत्पत्ति हुई। **संदर्भ** : बालमीकि-रामायण-बालकाण्ड, अ० 66, उत्तरकाण्ड, अ० 17; आनन्द-रामायण-सार खण्ड-31; अद्भुत-रामायण-सर्ग-6

सीता निन्दक रजक का पूर्व जन्म

रजक पूर्वजन्म में एक शुक था। एक दिन जब वह शुकी के साथ क्रीड़ा कर रहा था, उस समय बालिका सीता ने बालमीकि आश्रम से आये इन शुक-शुकी को पकड़ लिया तथा काफी समय तक उसे मुक्त नहीं किया। जब उन्होंने सीता से यह प्रार्थना की कि शुकी गर्भिणी है और बच्चों को जन्म देनेवाली है, अतः हमें मुक्त कर दो, तब सीता ने शुकी को मुक्त कर दिया। इस पर पति के वियोग से दुखी शुकी ने सीता को शाप दिया कि मेरी तरह गर्भिणी अवस्था में तू भी पति से बिछुड़ेगी। पत्नी के वियोग में शुक गंगा में गिरकर मर गया तथा अपने पुनर्जन्म में रजक बना तथा बदला लेने के लिए सीता पर लांछन लगाया। **संदर्भ** : पद्म पुराण-पाताल खण्ड अध्याय-56-57।

सीता द्वारा सहस्रस्कन्ध रावण का वध

सहस्रस्कंध रावण विश्रवा और केकशी का पुत्र था। यह पुष्कर में राज्य करता था। इसने इन्द्र आदि देवताओं को पुष्कर में बन्द कर रखा था। विश्वामित्र आदि मुनियों के रावण-वध के कारण राम की प्रशंसा करने पर सीता उसकी कथा सुनाती है। उसके सम्बन्ध में सुनकर राम सीता के साथ सेना लेकर पुष्कर जाते हैं तथा उससे युद्ध करते हैं। परन्तु रावण ने वायव्यशर से राम की समस्त सेना को अयोध्या में उड़ा दिया तथा

द्वन्द्व युद्ध में राम का वध कर दिया। तब सीता ने देवी का महाविराट रूप धारण कर सहस्रस्कन्ध्र रावण का तथा उसके साथियों का सिर काटकर नृत्य करना प्रारम्भ कर दिया। जिससे सारी सृष्टि ही संकट में पड़ गयी। तब ब्रह्मा आदि देवताओं ने सीता के पास आकर रुकने का अनुरोध किया। सीता की इच्छा के अनुसार देवताओं ने राम को जीवित कर दिया तब राम और सीता आयोध्या वापिस लौट आये। **संदर्भ :** अद्भुत रामायण-17-27, जैमिनी-भारत।

सीता द्वारा मूलकासुर वध

एक बार विभीषण अपनी स्त्री और चार मन्त्रियों के साथ भगवान राम के पास दौड़ते हुए आये कि भगवान मुझे कुंभकर्ण के पुत्र मूलकासुर राक्षस से बचाओ, उसको जब आपकी लंका विजय और मुझे राज्य प्रदान की बात मालूम हुई तो उसने पातालवासियों के साथ मुझ पर धावा बोल दिया है। तब श्रीराम पुष्पक विमान से लंका गये और मूलकासुर से भयंकर युद्ध हुआ, परन्तु वह पराजित नहीं हो पा रहा था। श्रीराम विभीषण से उसके वध की मन्त्रणा कर रहे थे तभी ब्रह्मा ने आकर उन्हें बताया कि मैंने इसे स्त्री के हाथों मारे जाने का वर दिया है तथा एक ऋषि ने भी इसे यह शाप दिया कि यह सीता के हाथों मारा जायेगा। तब राम ने सीता को बुलाया और मूलकासुर के पराक्रम की बात कहीं। उसी समय सीता क्रोधित हो उठी और उनके शरीर से एक दूसरी तामसी शक्ति निकल पड़ी, जिसने मूलकासुर का वध कर दिया। **संदर्भ :** आनन्द रामायण-राज्यकाण्ड-पूर्वार्द्ध, अ० 5-6

सुदर्शन का अतिथि सत्कार

अग्निपुत्र सुदर्शन ने गृहस्थधर्म में प्रवेश करते ही मृत्यु को जीतने की कामना की तथा उसने अतिथि सेवा का व्रत लिया। एक बार धर्म ने एक ब्राह्मण का रूप धारण कर उसकी परीक्षा लेने के लिए उसके घर से बाहर चले जाने पर उसकी पत्नी सुलक्षणा से उसका शरीर दान स्वरूप मांगकर सुरत की इच्छा बताई। इतने में सुदर्शन आ गया तथा अतिथि की कामना को जानकर प्राण, पत्नी और सब धन-दौलत उसको समर्पित करने के लिए कहा। यह सुनकर धर्म प्रकट हुए और उसकी अतिथि सेवा से प्रसन्न होकर सनातन लोक को प्राप्त होने का वर दिया। **संदर्भ :** महाभारत-अनुशासन पर्व, अ० 2

सुदर्शन पर जगदम्बा की कृपा

सुदर्शन अयोध्या के राजा ध्रुवसंधि का पुत्र था। एक समय राजा ध्रुवसंधि शिकार को गए तथा वहां उनको एक शेर ने मार डाला। उस समय मन्त्रियों ने सुदर्शन को अयोध्या का राजा बनाना चाहा, परन्तु उनके सौतेले भाई शत्रुजित को उनके नाना युधाजित ने सिंहासन पर अभिषिक्त किया। एक धाय और मन्त्री विदल्ल सुदर्शन को

लेकर भारद्वाज के आश्रम में पहुंचे और वहां पर क्लीव शब्द को सुनकर सुदर्शन क्ली-क्ली रटने लगा, जिससे देवी ने प्रसन्न हो उसे सभी विद्याओं में निपुण बना दिया और एक अक्षय तूणीर और दिव्य धनुष भी उसे प्राप्त हुआ। देवी की ही कृपा से उसका विवाह सुबाहु की विदुषी तथा देवीभक्ता कन्या शशिकला के साथ हुआ एवं युधाजित और शत्रुजित का विनाश किया। **संदर्भ** : देवी भागवत-3/14-25; रघुवंश-18/34-53

सुद्युम्न की कथा

वैवस्वत मनु के पुत्र राजा सुद्युम्न मेरुपर्वत की तलहटी के एक वन में चले गये। यह वन शंकर और पार्वती का विहार-स्थल था। वहां पर भगवान शंकर के शापवश सुद्युम्न और उसके अनुचर स्त्री हो गए तथा सुद्युम्न का घोड़ा घोड़ी हो गया। स्त्री रूप में यह इला नाम से प्रसिद्ध हुआ तथा बुध ने इसे पत्नी बना लिया। इन्हें वसिष्ठ ने भगवान शंकर की आराधना करके पुनः पुरुष बनाया। **संदर्भ** : भागवत-9/1

सुधन्वा की कथा

सुधन्वा चम्पक नगरी के हंसध्वज राजा का पुत्र था। लिखित और शंखध्वज नामक मन्त्री (प्रधानों) ने षड्यन्त्र में फंसाकर इसका वध करना चाहा। लेकिन कृष्ण-भक्ति के प्रताप से बच गया। **संदर्भ** : महाभारत-शान्तिपर्व, अ० 23; जैमिनी-अश्वमेध, अ० 17

सुधन्वा और विरोचन का संवाद

एक समय केशिनी नामवाली एक अनुपम सुन्दरी कन्या सर्वश्रेष्ठ पति को वरण करने की इच्छा से स्वयंवर-सभा में आई। उसी समय दैत्यकुमार विरोचन उसे प्राप्त करने के लिए आया परन्तु केशिनी ने ब्राह्मणपुत्र सुन्धवा से विवाह करने की इच्छा की। इस पर विरोचन ने अपनी श्रेष्ठता का बखान किया। केशिनी ने कहा कि सुधन्वा और तुम्हारे में जो भी श्रेष्ठ होगा वह उसी के साथ विवाह करेगी। वहां सुधन्वा भी आ गया। सुधन्वा ब्राह्मणपुत्र होने के कारण अपने को श्रेष्ठ बताने लगा। विरोचन प्रजापति की श्रेष्ठ संतान होने के कारण अपने को श्रेष्ठ बताने लगा। तब वे दोनों प्राणों की शर्त लगाकर निर्णय के लिए विरोचन के पिता प्रह्लाद के पास गये। प्रह्लाद ने सुधन्वा को श्रेष्ठ बताया। विरोचन के पिता प्रह्लाद द्वारा धर्म अनुकूल सही निर्णय देने के कारण सुधन्वा ने विरोचन के प्राण छोड़ दिए, परन्तु उसने विरोचन से केशिनी के समक्ष अपने पैर धुलवाए। **संदर्भ** : महाभारत-उद्योग-पर्व, अ० 35

सुन्द-उपसुन्द वध

ये दोनों निकुम्भ के पुत्र थे। ब्रह्मा से इन्होंने यह वरदान प्राप्त किया कि यदि तुम आपस में न लड़ोगे तो तुम मरोगे नहीं। वरदान प्राप्ति के बाद इन्होंने अत्याचार करना प्रारम्भ कर दिया। इस लिए ब्रह्मा ने तिलोत्तमा को इनके पास भेजा। जिसको प्राप्त

करने के लिए दोनों आपस में लड़कर मर गये। संदर्भ : महाभारत, अ० 201-11; पद्म-पुराण-उत्तर खण्ड, अ० 242

सुरथ राजा और वैश्य को देवी का वरदान

एक बार राजा सुरथ का उसके शत्रुओं द्वारा राज्य का हरण कर लिया गया। तब उसने एक वैश्य के साथ नदी के तट पर जाकर मिट्टी से देवी चाण्डिका की मूर्ति बनाकर आराधना की। उन दोनों की आराधना से प्रसन्न होकर देवी ने उनसे वर मांगने को कहा तब सुरथ ने अखण्ड राज्य मांगा तथा वैश्य ने मोह को नष्ट करनेवाला ज्ञान मांगा। तब देवी ने सुरथ को राज्य प्राप्ति तथा मृत्यु के बाद सार्वाण मनु होने का वर दिया तथा वैश्य को उसका इच्छित कर प्रदान किया। संदर्भ : मार्कण्डेय-पुराण

सुरा समुद्र

जायसी ने पद्मावत में खार, खीर (क्षीर) दधि, उदधि, किलकिला, सुरा और जल सात समुद्रों का उल्लेख किया है।

पुराणानुसार राजा प्रियव्रत के पृथ्वी की सात परिक्रमाएं करते हुए उनके रथ के पहियों से बनी हुई लीकों से सात समुद्रों का निर्माण हुआ। सात समुद्र क्रमशः खारे जल, ईख के रस, मदिरा, घी, दूध, मट्ठे और मीठे जल से भरे हुए हैं। संदर्भ : भागवत-5/5/31; मत्स्य-पुराण

सुषेण द्वारा राम और लक्ष्मण का उपचार बताना

मेघनाद के बाणों से बिद्ध होकर जब राम व लक्ष्मण मूर्छित हो गये और उन दोनों मूर्च्छा नहीं टूटी तो सुग्रीव ने अपने ससुर सुषेण से राम व लक्ष्मण को किष्किन्धा को ले जाने के लिए कहा तब सुषेण ने क्षीर सागर के तट से संजीवनी बूटी लाने के लिए हनुमान को भेजने को कहा। उसी समय वहां पर गरुड़ आ गये और उन्होंने राम व लक्ष्मण का स्पर्श कर उनके शरीर कीं पीड़ा दूर कर उनकी मूर्च्छा को तोड़ा। संदर्भ : बाल्मीकि, युद्ध काण्ड, सर्ग-50

सुहोत्र की कथा

राजा सुहोत्र एक महान दानी राजा के रूप में प्रसिद्ध हैं। उन्होंने कुरु जांगल देश में यज्ञ किया और उस विशाल यज्ञ में अपनी अनन्त सुवर्ण राशि ब्राह्मणों को दान कर दी। इन्होंने एक हजार अश्वमेध, सौ राजसूय तथा बहुत-सी श्रेष्ठ दक्षिणा वाले अनेक पुण्यमय क्षत्रिय यज्ञों का अनुष्ठान किया। संदर्भ : महाभारत-द्रोण पर्व, अ० 56

सोमक को पुत्रों की प्राप्ति के लिए नरक भोगना

राजा सोमक ने वृद्धावस्था में सौ रानियों में से केवल एक रानी से एक पुत्र प्राप्त किया, जिसका नाम जन्तु रखा गया। राजा के केवल एक पुत्र था, अतः राजा व रानियां बहुत चिन्तित रहते थे। अतः सोमक ने सौ पुत्र प्राप्ति के लिए अपने पुरोहित से उपाय करने के लिए कहा। पुरोहित ने कहा कि यदि वह अपने पुत्र जन्तु की आहुति देकर यज्ञ करे तो उसके सौ पुत्र पैदा होंगे तथा जन्तु का भी पुनः जन्म होगा। तदनुसार सोमक ने पुत्र की बलि देकर अपने पुरोहित से यज्ञ कराया, जिससे उसके सौ पुत्र हुए, लेकिन इस दुष्कर्म के कारण उसके पुरोहित को नरक मिला। जब सोमक स्वर्ग में गया और उसे पता चला कि उसका पुरोहित नरक भोग रहा है तब उसने धर्मराज से वेदवेत्ता पुरोहित के साथ नरक भोगने की इच्छा की तथा उसके साथ सोमक ने भी नरक भोगा। **संदर्भ :** महाभारत-वनपर्व, अ० 127-28

सौदास को वसिष्ठ का शाप

एक बार राजा सौदास शिकार खेलने के लिए वन में गये। उन्होंने वहां पर एक राक्षस को मार दिया। इस पर उसके भाई ने सौदास से बदला लेने का विचार किया और वह सौदास का रसोइया बनकर रहने लगा। उसने एक दिन वसिष्ठ के वहां आने पर मनुष्य का मांस बनाकर उन्हें दे दिया। जब वसिष्ठ को इसका पता चला तो उन्होंने सौदास को शाप दे दिया कि तू राक्षस हो जा। उस समय सौदास भी वसिष्ठ को शाप देने के लिए उद्यत हुआ, पर सौदास की पत्नी मदयन्ती के समझाने पर उसने वसिष्ठ को शाप न दिया। **संदर्भ :** विष्णु-4/4; भागवत-9/9

सौभरि ऋषि का गरुड़ को शाप

एक समय गरुड़ ने भूखे होने के कारण सौभरि ऋषि के मना करने पर भी यमुना के कुण्ड से एक मत्स्य को जबरदस्ती खा लिया। जीवों की कुशलता के लिए सौभरि ऋषि ने गुरुड़ को शाप दे दिया कि यदि गरुड़ यमुना कुण्ड में घुसकर मछलियों को खायेगा तो तुरन्त मर जायेगा। **संदर्भ :** भागवत-10/17; ब्रह्मवैवर्त-श्रीकृष्ण जन्म खण्ड, अ० 19

सौभरि ऋषि का पचास कन्याओं से विवाह

एक बार सौभरि ऋषि यमुना जल में डुबकी लगाकर तपस्या कर रहे थे। वहां उन्होंने देखा कि एक मत्स्यराज अपनी पत्नियों के साथ विहार कर रहा है। उसके इस सुख को देखकर ब्राह्मण सौभरि के मन में विवाह करने की इच्छा जाग उठी और उन्होंने राजा मान्धाता के पास जाकर उनकी पचास कन्याओं में से एक कन्या मांगी। राजा मान्धाता ने उनसे कहा कि स्वयंवर में जो तुम्हें चुन ले, उसको आप ले जाना। सौभरि

ने राज कन्याओं को लालायित करने के लिए अपने को रूपवान बना लिया और जब मान्धाता के महलों में पहुंचे तो मान्धाता की पचास कन्याओं ने उन्हें अपना पति चुन लिया। उन कन्याओं के लिए उन्होंने अपने योगबल से अपार भोग सामग्री एकत्रित कर दी। **सन्दर्भ** : भागवत-9/6

हंसावतार

भागवान विष्णु ने हंस के रूप में अवतार धारण कर सनकादि को ज्ञान दिया था तथा उन्हें बताया था कि विषय और उनका चिन्तन दोनों ही भाव हैं। **सन्दर्भ** : भागवत-2/7/19-20

हनुमान सम्बन्धी कथाएं

(1) हनुमान की उत्पत्ति की कथा (रुद्रावतार)

पुंजिकस्थला नाम की अप्सरा किसी ऋषि के शाप से कामरूपणी बानरी बन गई, जिसका नाम अंजना था। वह सुमेरु के राजा कपि श्रेष्ठ केसरी की पत्नी बनी। वह एक समय पर्वत पर मनुष्य रूप धारण कर अपने पति के साथ क्रीड़ा कर रही थी। उस समय पवन ने काममोहित हो उसका आलिंगन किया, जिससे वह गर्भवती हो गई और उसके अति बलवान पुत्र उत्पन्न हुआ। यही हनुमान थे।

'आनन्द रामायण' के अनुसार' एक बार पवन ने केसरी की पत्नी अंजना का अधोवस्त्र उठा दिया, जिससे अंजना काम मोहित हो गई और उसने पवन से संभोग की इच्छा व्यक्त की। तब पवन ने अंजना से संभोग किया, जिससे गर्भवती होकर उसके हनुमा नपैदा हुए।'

'शिव पुराण' के अनुसार 'एक समय शिव के कहने से विष्णु ने मोहनी रूप बनाया, जिससे मोहित हो शिव कामातुर हो गये और उनका वीर्यपात हो गया। उसको सप्तर्षियों ने पत्ते पर संचित कर गौतम-पुत्री अंजनी के उदर में कर्ण से पहुंचाया, जिससे हनुमान पैदा हुए। यहां इनको रुद्रावतार भी माना गया है।'

'स्कन्द पुराण' के अनुसार, 'केसरी की पत्नी अंजना के कोई पुत्र नहीं था। मतंग ऋषि की आज्ञा से अंजना ने वेंक पर्वत पर जाकर घोर तप किया। इससे वायुदेव ने प्रकट हो अंजना से वर मांगने को कहा। अंजना ने वायुदेव से उनके समान पुत्र की कामना की। पवन ने अंजना की इच्छापूर्ति के लिए उसका पुत्र होना स्वीकार किया तथा स्वयं ही अंजना के गर्भ से हनुमान के रूप में जन्म लिया। **संदर्भ** : बाल्मीकि रामायण, किष्किंधाकाण्ड, सर्ग-66, उत्तरकाण्ड, पूर्वार्द्ध, सर्ग-35-36; शिव-पुराण, शतरुद्र संहिता, अध्याय-20; भविष्य पुराण-4/13/31/36; स्कन्द-पुराण, वैष्णव खण्ड (भूमि वाराह खण्ड) अध्याय-39; ब्रह्म, अ०-84; आनन्द रामायण, सारकाण्ड, सर्ग-13, श्लोक-155-78, 185-87, सर्ग-21

(2) हनुमान का कुरूप होना

एक बार शिव ने अपने रौद्र तेज के रूप में, अंजनी के पति केसरनि बानर के मुख में

प्रवेश किया एवं उसी के द्वारा अंजनी के साथ संभोग कराया। पश्चात् वायु ने भी केसरनि बानर के शरीर में प्रविष्ट होकर अंजनी के साथ रमण किया। इन दोनों देवताओं के संभोग के बाद अंजनी गर्भवती हुई और उसने बानर मुख वाले पुत्र को जन्म दिया, जो हनुमान के नाम से प्रसिद्ध हुआ। इसकी विरूपता को देखकर अंजनी ने इसे पर्वत के नीचे फेंकना चाहा था, किन्तु वायु की कृपा से इसकी रक्षा हुई और यह जीवित बच गये। **संदर्भ** : भविष्य-पुराण-4/13/31/36

(3) हनुमान द्वारा सूर्य को निगलना

एक बार नवजात हनुमान सूर्य को फल समझकर उसकी ओर उछले। कहीं सूर्य दग्ध न कर दे, इसलिए देव ने उसे सहारा दिया। वह बच्चा सहस्र योजन तक आकाश में गया। सूर्य ने यह सोचकर कि यह देवकार्य करेगा, भस्म नहीं किया। जिस समय हनुमान सूर्य की ओर उछले, उस दिन राहु भी सूर्य को ग्रसित करने वाला था। वहां पर हनुमान को देखकर राहु ने इन्द्र से सहायता मांगी। जैसे ही राहु और इन्द्र ऐरावत हाथी पर पहुंचे, उस समय हनुमान राहु तथा ऐरावत को फल समझकर लपके। तब इन्द्र ने इन पर वज्र प्रहार किया, जिससे हनुमान मूर्छित हो पर्वत पर गिर गये। तब पुत्र को मरा समझकर वायु ने चलना बन्द कर दिया। इससे सब जगह हाहाकार मच गया। उस समय सब देवताओं ने पवन से प्रार्थना की तथा ब्रह्मा ने उन्हें स्वस्थ कर दिया और इन्द्र ने इच्छा मृत्यु का वर दिया। तत्पश्चात् ये बाल चपलता से ऋषियों को सताने लगे, जिससे उन्हें अंगिरा और भृगुवंशियों ने अपनी शक्ति भूलने का तथा स्मरण कराये जाने पर पूर्वबल प्राप्त होने का शाप दिया। **संदर्भ** :बाल्मीकि रामायण-किष्किधा काण्ड सर्ग-66,उत्तर-काण्ड, सर्ग 35-36; शिव पुराण-शतरुद्र संहिता, अध्याय-20; स्कन्द पुराण-वैष्णवखण्ड (भूमि वाराह खण्ड) अध्याय-39; आनन्द रामायण-सारखण्ड, सर्ग 13, श्लोक-155-78, 185-87,

(4) हनुमान को मुनियों का शाप

ब्रह्मा से ब्रह्मयज्ञ, चिरायु एवं समस्त ब्रह्मशाप से अवध्य होने का वर प्राप्त कर हनुमान गर्वित होकर निर्भय हृदय से ऋषियों को कष्ट पहुंचाने लगे। केशरी और पवन के मना करने पर भी उन पर कुछ प्रभाव न हुआ। तब तंग आकर भृगु, अंगिरा आदि ऋषियों ने उन्हें यह शाप दे दिया कि जिस बल से गर्वित होकर तुम हमको कष्ट दे रहे हो, उस बल को बहुत दिनों के लिए भूल जाओगे। जब तुम्हारी कीर्ति को कोई याद दिला देगा, तब तुम्हें फिर से बल प्राप्त होगा, अन्यथा नहीं। **संदर्भ** : बाल्मीकि रामायण, किष्किधा काण्ड, सर्ग-66, उत्तरकाण्ड, सर्ग-36; आनन्द रामायण, सारखण्ड, सर्ग-13

(5) हनुमान का सुरसा राक्षसी से सामना

जटायु के भाई सम्पाती से रावण द्वारा सीता-हरण तथा लंका में स्थिति अशोक-वाटिका में सीता को बन्दिनी रूप में रखे जाने का वृत्त ज्ञात होने पर हनुमान ने लंका जाने का निश्चय किया। इनके समुद्र पार करते समय नागमाता सुरसा ने इन्हें रोकने का प्रयास किया, किन्तु बड़े धैर्य एवं साहस के साथ इन्होंने उसका सामना किया और लंका में प्रवेश

किया।

'मानस' के अनुसार सुरसा ने जब हनुमान का रास्ता रोकने का प्रयास किया तो हनुमान ने धीरे-धीरे अपना शरीर बढ़ाना प्रारम्भ किया। उसी प्रकार सुरसा ने भी हनुमान को निगलने के लिए अपना शरीर बढ़ाना प्रारम्भ किया, तब हनुमान मच्छर का रूप धारण कर उसके मुंह में जाकर निकल आए। इनसे प्रसन्न होकर उसने इन्हें यशस्वी होने का आशीर्वाद तथा इनकी सफलता की कामना की। **संदर्भ** : बालमीकि रामायण, सुन्दर कांड, सर्ग-1; महाभारत, वनपर्व, अ०-266; स्कन्द-3/1/46; ब्रह्माण्ड-3/7/171-73, 443-44; अध्यात्म रामायण-5/1

(6) हनुमान द्वारा लंका दहन

हनुमान ने राक्षसों के समक्ष अपना पराक्रम प्रदर्शन करने के उद्देश्य से अशोक-वन में जाकर वहां वृक्षों को उखाड़ना शुरू कर दिया और उनसे भयभीत होकर राक्षसियां फौरन रावण के पास गयीं और रावण को सारा वृत्तांत कहा। रावण ने कपि को दण्ड देने के लिए 80,000 राक्षसों को भेजा। उन्होंने अधिकांश राक्षसों को मार गिराया कुछ जान बचाकर भाग गये। इसके पश्चात् प्रहस्त का जाम्बु माली लड़ने आया। जिसे हनुमान ने मूसल से मार गिराया तथा रावण के पुत्र अक्षयकुमार को मार दिया, तब इन्द्रजीत, मेघनाद ब्रह्मास्त्र में बांधकर हनुमान को रावण के पास ले गया। वहां रावण ने क्रोधित होकर हनुमान के वध की आज्ञा दी, पर विभीषण के समझाने पर कि दूत का वध नहीं करते, इसे किसी प्रकार का दण्ड दे देना चाहिए। तब रावण की आज्ञा अनुसार हनुमान की पूंछ में पुराने कपड़े लपेटकर उसमें तेल डालकर आग लगा दी। हनुमान ने चारों तरफ दौड़-दौड़कर सारे नगर को जला डाला। **संदर्भ** : बालमीकि रामायण, सुन्दर कांड, सर्ग-41-55; महाभारत, वनपर्व, रामोपाख्यान, अध्यात्म रामायण; हनुमन्नाटक; आनन्द रामायण-सारखंड, सर्ग-9;

(7) हनुमान द्वारा सिंहिका वध/हनुमान का आकाश-गमन

सीता की खोज में आकाश मार्ग से जब हनुमान लंका जा रहे थे, उस समय समुद्र में रहने वाली राक्षसी ने हनुमान की परछाई खींचा। हनुमान ने समुद्र में उस राक्षसी को देखकर अपने शरीर का विस्तार किया। सिंहिका ने भी हनुमान के शरीर को बढ़ता हुआ देखकर पाताल की तरह अपना मुख फैलाया और गरजती हुई हनुमान की ओर दौड़ी। तब हनुमान ने अपना शरीर छोटा कर लिया और उसके मुख में जाकर अपने पैरों के नाखूनों से उसके मर्मस्थलों को चीर-फाड़कर बाहर निकल आये। वह राक्षसी हृदय फट जाने से आर्त होकर समुद्र के जल में डूब गई। **संदर्भ** : बालमीकि रामायण, सुन्दर काण्ड, सर्ग-1; महाभारत, वनपर्व, अ०-266; पद्म पुराण; अग्नि पुराण; नृसिंह पुराण; अध्यात्म रामायण-5110; आनन्द रामायण, सर्ग-8

(8) हनुमान द्वारा लंकिनी का वध

सीता की खोज में जब हनुमान लंकापुरी में प्रवेश कर रहे थे, उस समय लंकापुरी की अधिष्ठात्री देवी ने हनुमान को अन्दर जाते हुए देख लिया और उनकी राह रोककर भयंकर

नाद करते हुए परिचय पूछा और कहा कि वह राक्षसराज रावण की आज्ञानुवर्तिनी लंका की अधिष्ठात्री है और इस पुरी की रक्षा करती है। उसकी अवहेलना करने वाला हनुमान उसके हाथों मारा जायेगा। लंका देवी की बात सुनकर हनुमान उसे परास्त करने के लिए पर्वत के समान अचल हो गये। तब लंका बोली कि वे उसे परास्त किये बिना अंदर नहीं जा सकते तथा उसने हनुमान को थप्पड़ मारा, इस पर हनुमान ने उसको जोर से घूंसा मारा, जिसके प्रहार से वह पृथ्वी पर गिर गई तथा उसने गद्गद वाणी से हनुमान को बताया कि प्राचीन काल में ब्रह्मा जी ने उसे यह वरदान दिया था कि जब उसे कोई वानर परास्त करे तब समझना कि राक्षस तथा रावण का विनाश काल आ पहुंचा है। अब तुम लंकापुरी में प्रवेश कर जो करना चाहो करो। इस प्रकार हनुमान ने लंकिनी को परास्त कर लंका में प्रवेश किया। **संदर्भ** : बाल्मीकि रामायण, सुन्दरकांड, सर्ग-3; अध्यात्म रामायण-5/1; आनन्द रामायण, सार खंड, सर्ग-7

(9) हनुमान द्वारा लंका की रखवाली

लोक में यह कथा प्रचलित है कि सिंहल के मार्ग में भारत और लंका के बीच में हनुमान जी प्रहरी बनकर आज तक आवाज देते हैं, जिसके भय से राक्षस लोग उत्तर की तरफ नहीं आते। **संदर्भ** : (लोक-विश्वास) पद्मावत की टीका, पृ० 272, सुधाकर द्विवेदी।

(10) हनुमान द्वारा द्रोणाचल पर्वत उठाना

राम-रावण युद्ध में लक्ष्मण के रावण की शक्ति से मूर्छित होने पर हनुमान को संजीवनी बूटी लेने के लिए भेजा गया। द्रोणाचल पर्वत पर पहुंचने पर वह बूटी की पहचान न कर सके। अतः इन्होंने सम्पूर्ण द्रोणाचल पर्वत उखाड़ लिया और उसे उठाकर ले आये। 'आनन्द रामायण' के अनुसार मेघनाद के शक्ति के प्रयोग से राम की सारी वानरी सेना मूर्च्छित हो गई। तब राम की आज्ञा से हनुमान ने द्रोणगिरि पर्वत से औषध लाकर सबकी मूर्च्छा दूर की। तत्पश्चात् रावण ने लक्ष्मण पर शक्ति-बाण का प्रयोग किया। तब हनुमान पुनः द्रोणगिरि से संजीवनी बूटी लाये। **संदर्भ** : रामायण, युद्ध काण्ड, सर्ग-102; अध्यात्म रामायण, युद्ध कांड, सर्ग-7/33-35; आनन्द रामायण-1/11

(11) हनुमान का कालनेमि से युद्ध

लक्ष्मण के मेघनाद की शक्ति से घायल होने पर हनुमान को संजीवनी बूटी लेने के लिए भेजा गया था। रावण ने कालनेमि राक्षस को हनुमान का मार्ग रोकने के लिए भेजा। जिसे हनुमान ने मार दिया। **संदर्भ** : अध्यात्म रामायण, युद्ध काण्ड-6-7; आनन्द रामायण-1/11

(12) हनुमान का भरत के बाण से आहत होकर गिरना

रावण के शक्ति-प्रहार से लक्ष्मण के मूर्च्छित होने पर हनुमान क्षीर-सागर जा गन्धर्वों को जीतकर द्रोणाचल पर्वत को हाथ में लेकर आकाश मार्ग से आ रहे थे। उन्हें देखकर भरत ने बाण मारकर नीचे गिरा लिया। भरत हनुमान को मारने के लिए उद्यत हुए, परन्तु हनुमान द्वारा अपने को राम का दूत बताने पर और राम के सम्बन्ध में सारा

वृत्तांत बताने पर उन्हें छोड़ा । **संदर्भ** : आनन्द रामायण, सारखंड, सर्ग-11

(13) हनुमान को अर्जुन की ध्वजा पर बैठाना

भीमसेन द्रौपदी के आग्रह के कारण सौगान्धिक कमल लाने के लिए कदली वन में गये । वहां उनकी भेंट हनुमान से हुई । दोनों के परिचय तथा मिलन के बाद हनुमान ने भीम को अर्जुन की ध्वजा पर बैठने का वचन दिया । **सन्दर्भ** : महाभारत, वन पर्व, अ०-151

(14) हनुमान की भक्ति

हनुमान श्रीराम के भक्तों में सर्वश्रेष्ठ कहे जाते हैं और इनकी सारे भारत में पूजा की जाती है । **संदर्भ** : वाल्मीकि रामायण, किष्किंधा कांड ।

(15) हनुमान को अहंकार होना

श्री रामचन्द्र जब समुद्र पर पुल बांध रहे थे, तब उन्होंने वहां पर अपने नाम से शिवलिंग स्थापित करने का विचार किया तथा हनुमान जी से मुहूर्त के भीतर काशी जाकर शंकर से शिवलिंग लाने को कहा । हनुमान क्षणभर में काशी पहुंच गये वहां शंकर ने उन्हें एक राम के तथा दूसरा हनुमान के नाम पर स्थापित करने के लिए दो शिवलिंग दिये । इस पर हनुमान को अपनी महत्ता तथा तीव्रगामिता का थोड़ा गर्वाभास हो गया । भगवान राम को हनुमान के इस गर्व का पता लग गया । अतः उन्होंने मुनियों की सम्मति से वहां बालू की लिंग स्थापित कर दी । हनुमान को जब पता लगा तो उन्होंने राम को कटु वचन कहे । तब राम ने हनुमान से उस बालू के लिंग को उखाड़ने के लिए कहा । पूंछ में लपेटकर हनुमान जी ने उस लिंग को बड़े जोरों से खींचा पर लिंग टस से मस न हुई । उल्टे हनुमान की पूंछ ही टूट गई और वे मूर्छित होकर पृथ्वी पर गिर पड़े । स्वस्थ होने पर उन्हें अपने अहंकार का भान हुआ और वे सर्वथा गर्वविहीन हो गये । **संदर्भ** : आनन्द रामायण-सारखण्ड, सर्ग-10

(16) हनुमान द्वारा भीम का गर्व नष्ट करना

एक बार द्रौपदी ने एक अलौकिक सहस्रदल कमल देखा, जिसकी चारों ओर सुगन्ध फैल रही थी । उसे देखकर उसी प्रकार के कमल लाने के लिए द्रौपदी ने भीमसेन से कहा । भीमसेन जिधर से वह कमल पुष्प आया था, उसी ओर चल दिये । चलते-चलते वे गन्धमादन पर्वत पर कदलीवन में गये । उस कदलीवन में हनुमान रहते थे । वन में भीमसेन को आया हुआ देखकर हनुमान रास्ता रोककर सो गये । भीमसेन ने वहां जाकर हनुमान से रास्ता देने के लिए कहा । हनुमान ने उनसे कहा कि मैं रोगी हूं । रोग से कष्ट पा रहा हूं । मेरे में उठने की शक्ति नहीं । यदि तुम जाना चाहते हो तो मुझे लांघकर चले जाओ । सुनकर भीमसेन बोले—निर्गुण सभी प्राणियों में व्याप्त हैं । अतः तुम्हें लांघकर मैं उनका अपमान नहीं करना चाहता हूं । तब हनुमान ने कहा—जाना है तो मेरी पूंछ उठाकर एक ओर कर दो । भीमसेन ने हनुमान की पूंछ को उठाने का बहुत प्रयास किया, पर वे हनुमान की पूंछ को थोड़ा-सा भी न हिला सके । तब हनुमान ने अपना परिचय दिया और उन्हें सौगन्धिक वन का मार्ग बताकर अन्तर्धान हो गये । **संदर्भ** : महाभारत, वन पर्व, अ० 1/7-15

हयग्रीव अवतार

हयग्रीव अवतार की चौदहवें अवतार के रूप में गणना की जाती है। इन्होंने मधु-कैटभ नामक दैत्यों, जो वेदों को उठा के ले गये थे, का वध करके वेदों का उद्धार किया। एक अन्य मत के अनुसार भगवान विष्णु ने मत्स्य अवतार धारण कर हयग्रीव नामक दैत्य को मारकर वेदों का उद्धार किया था। 'देवी भागवत' के अनुसार देवी से वरदान प्राप्त हयग्रीव नामक दैत्य का विष्णु ने हयग्रीव के रूप में वध किया। **सन्दर्भ :** महाभारत-शान्ति पर्व, अ० 347; भागवत-2/7/11, 7/9/36-37, 1/24/57, 11/4/17

राजा हरिश्चन्द्र की कथा

राजा हरिश्चन्द्र के संकेत बिन्दु तो वैदिक साहित्य से ही मिलते रहे हैं, परन्तु सत्यवादी के रूप में हरिश्चन्द्र की कथा पुराण काल से ही विकसित हुई है। वैदिक ग्रन्थों में हरिश्चन्द्र को मानव सुलभ त्रुटियों से पूर्ण दिखाया गया है। हरिश्चन्द्र के राज्यासीन होने तक उनके कोई पुत्र न था। वरुण की कृपा से उनके पुत्र हुआ जिसका नाम रोहित था। प्रतिज्ञा के अनुसार रोहित की वरुण को बलि देनी थी, पर पुत्र-मोह के कारण हरिश्चन्द्र ने शुनःशेप को खरीदकर रोहित के स्थान पर बलि देनी चाही, जिसकी रक्षा विश्वामित्र ने की।

'ब्रह्मपुराण' की कथा भी वैदिक साहित्य से प्रभावित है तथा वहां पर हरिश्चन्द्र को असत्यवादी भी दर्शाया गया है। वह पुत्र-स्नेह में पहले तो बलि के लिए वरुण को टालता रहा तथा बाद में बलि के भय से रोहित वन में भाग गया। तथा प्रतिज्ञा भ्रष्ट होने पर हरिश्चन्द्र को शारीरिक कष्ट भी सहन करने पड़े। तब वसिष्ठ की आज्ञा से हरिश्चन्द्र ने शुनःशेप को खरीदकर बलि देनी चाही, जिसे विश्वामित्र ने आकर बचाया।

'पद्म पुराण' में भी यह कथा इसी रूप में मिलती है।

'देवी भागवत' के अनुसार, त्रिशंकु-पुत्र हरिश्चन्द्र को वसिष्ठ की आज्ञा से वरुण को प्रसन्न कर पुत्र प्राप्त हुआ तथा पुत्रवान होकर अपने पुत्र की बलि का वचन दिया। पर वह पुत्र-स्नेह में बलि को टालता रहा। जब रोहित समझदार हुआ और उसे अपनी बलि का पता चला तो वह वन में भाग गया। समय पर बलि न दिये जाने पर वरुण ने हरिश्चन्द्र को जलोदर का कष्ट किया। तब वसिष्ठ की आज्ञा से हरिश्चन्द्र ने अजीगर्त से 100 गायों के बदले शुनः शेप को खरीदकर उसकी बलि देनी चाही, लेकिन यज्ञ-भूमि में आकर विश्वामित्र ने शुनः शेप की रक्षा की।

'देवी भागवत' के एक अन्य स्थल के अनुसार राजा हरिश्चन्द्र सूर्यवंशी राजा त्रिशंकु के पुत्र थे। एक समय वसिष्ठ के मुंह से हरिश्चन्द्र के दान धर्म, सत्यवादिता एवं धैर्य की बड़ाई सुनकर विश्वामित्र ने हरिश्चन्द्र की परीक्षा ली और एक भयंकर दानव को हरिश्चन्द्र के पास भेजा। वह दानव सूअर का रूप बनाकर राजा के उपवन में पहुंच गया और उसे उजाड़ने लगा। राजा जब बागवानों की पुकार पर उपवन की रक्षा के लिए वहां पहुंचा तो नदी तट पर ब्राह्मण रूप में विश्वामित्र से उसकी भेंट हुई।

विश्मामित्र ने गांधर्वी-माया से एक लड़का और लड़की के दान का संकल्प ले लिया और दहेज के लिए राजा का सारा राज्य ले लिया और दक्षिणा के लिए राजा की पत्नी-शैव्या और पुत्र को बेच दिया। स्वयं हरिश्चन्द्र भी चाडाल के हाथों बिक गए। उनकी पत्नी ने दासी का काम किया औरस्वयं चाण्डाल के नौकर बनकर श्मशान की रख वाली करने में लगे रहे तथा अपने व्रत की रक्षा करने के लिए अपने पुत्र दफनाने को आई अपनी पत्नी शैव्या को मारने के लिए भी उद्यत हो गये, लेकिन जब राजा को पता चला तो वह रोहित को चिता पर लिटा पत्नी सहित स्वयं भी भस्म होने लिए तैयार हुआ, तभी इन्द्रादि देवता प्रकट हो गये तथा अमृत से रोहित को जीवित कर दिया। तब अयोध्या के राज्य पर अभिषिक्त कर हरिश्चन्द्र ने सपत्नीक स्वर्ग को प्रस्थान किया।

'मार्कण्डेय पुराण' के अनुसार, 'एक बार आर्त स्त्रियों की रक्षा के लिए हरिश्चन्द्र ने विश्वामित्र की तपस्या में विघ्न डाल दिया, जिससे विश्वामित्र ने रुष्ट होकर राजा से दान लेकर उसे राज्य से हीन कर दिया तथा उसको काशी जाकर पुत्र और पत्नी सहित बेच दिया। हरिश्चन्द्र ने अपने व्रत का अन्त तक पालन किया तथा अपने पुत्र की मृत्यु एवं पत्नी की दुर्दशा देखकर भी अपने कर्तव्य से नहीं डिगे। **संदर्भ :** ऋग्वेद-1/24; ऐतरेय ब्राह्मण-7/13/18; तैतरीय-संहिता-5/2/10; काठक-संहिता-19/1; मैत्रेयी-उपनिषद्-1/4; सार-यापन श्रोतसूत्र-15/17-20; बालमीकि रामायण, बालकांड; ब्रह्म-पुराण, अध्याय-104; पद्म पुराण, स्वर्ग खंड, अ०-24; भागवत-9/16; मार्कण्डेय, अध्याय-7-8

हिमाचल का मैना से विवाह

हिमाचल या हिमालय पार्वती के पिता थे। इनका विवाह पितरों की मानसी-पुत्री मैना के साथ हुआ था। **संदर्भ** : विष्णु-1/8/14; वायु-30/28, भागवत-4/7/58

क्षीर समुद्र का दूध का होना

पुराणों के अनुसार सात समुद्रों में से एक का नाम क्षीर समुद्र है, जो दूध से भरा माना जाता है। कहा जाता है कि विष्णु भगवान इसी समुद्र में शेषशय्या पर शयन करते हैं। इसके क्षीरोद, क्षीर, पयोनिधि तथा क्षीराब्धि आदि पर्याय हैं। **संदर्भ :** भागवत-10/1/19; ब्रह्मांड-3/28/8; 4/6/56, 60, 4, 31/19

त्र्यरुण और वृशजान

इक्ष्वाकु-वंश के राजा त्रिवृष्ण के पुत्र त्र्यरुण की अपने पुरोहित के पुत्र वृशजान से मित्रता थी। दोनों एक-दूसरे के बिना नहीं रह सकते थे। त्र्यरुण की वीरता और वृशजान के पांडित्य से राजकीय समृद्धि बढ़ रही थी। एक समय दिग्विजय यात्रा पर निकले महाराज त्र्यरुण के रथ से एक ब्राह्मण-पुत्र मर गया। रथ को वृशजान चला रहे थे। इस पर दोनों में वाद-विवाद हो गया और अनबन हो गयी। यद्यपि वृशजान ने अथर्वागिर

मंत्र के बल से ब्राह्मण-पुत्र को जीवन दान दिया, पर उन्होंने राजा त्र्यरुण के रोकने पर भी राज्य को छोड़ दिया। उनके चले जाने पर सम्पूर्ण राज्य में अग्नि देवता की अकृपा हो गयी और यज्ञ आदि सत्कर्म समाप्त हो गये। तब राजा ने वृशजान के चरणों में जाकर क्षमा मांगी। वृशजान ने राजा के महल में उसकी रानी के रूप में रह रही ब्रह्म-हत्या को होम ज्वाला में भस्म कर दिया। **सन्दर्भ** : बृहद्देवता, अ०-5/14-23

त्रित मुनि का कुएं में गिरना

प्राचीन काल में गौतम मुनि के तीन पुत्र थे। उनके नाम एकत, द्वित तथा त्रित थे। एक समय एकत और द्वित ने यज्ञ और धन के लिए चिन्तित होकर त्रित को ले जाकर राजाओं के यहां यज्ञ कराकर बहुत से पशु प्राप्त कर लिये। एकत और द्वित ने सम्पूर्ण गौओं को हड़पने के उद्देश्य से त्रित को कुएं में धकेल दिया। कुएं में त्रित ने यज्ञ किया तब सरस्वती ने प्रसन्न होकर त्रित मुनि को कुएं में से निकाला और अपने भाइयों को भेड़िये होने का शाप दिया। **सन्दर्भ** : महाभारत, शल्यपर्व, अ०-36

त्रित मुनि का काक्षीवान को शाप

एक समय त्रित मुनि तीर्थयात्रा करते हुए आनर्तदेश गये। वहां पर वे श्रीकृष्ण की पूजा करके एक शंख बजाया करते थे। उस शंख को एक दिन उनके शिष्य काक्षीवान ने चुरा लिया। तब क्रोधित होकर त्रित मुनि ने काक्षीवान को शाप दे दिया कि जिसने मेरा शंख चुराया है वह शंख हो जाए। उस समय काक्षीवान ने त्रित मुनि से अपने अपराध की क्षमा मांगी। तब उन्होंने काक्षीवान से कहा कि वह श्रीकृष्ण का चिन्तन करता रहे, वे ही उसका उद्धार करेंगे। तदनुसार काक्षीवान शंख हो गया और एक सरोवर में पड़ा रहा। कुछ समय बाद एक दिन श्रीकृष्ण वहां पर आये और उन्होंने सरोवर से शंख को निकालकर उद्धार किया। **संदर्भ** : गर्ग-संहिता, द्वारकाखंड, अ०-12

पौराणिक आख्यानों के विविध प्रयोग

आख्यान एवं प्रयोग का स्वरूप	प्रयोग-सन्दर्भ
अंग का राज्य त्याग	
दृष्टान्त	
भगवान की भक्त-वत्सलता की पुष्टि।	रुक्मिणी-परिचय, पृ० 281
अंगद का लंकापुरी जाना	
अलंकार	
उदात्त—भारत के वैभव का कथन	मधुपर्क-2/15
उदाहरण (1) प्रेम के रणक्षेत्र में अंगद जैसे वीरों के पांव उखड़ जाना।	अनुराग-बांसुरी-19/6
(2) हाथी द्वारा उत्पन्न प्रलय दृश्य के लिए।	चित्रावली-499/1-2
उपमा (1) गोरा—बादल की वीरता का उपमान	पद्मावत-6/2/1, 614/4
(2) गोरा बादल द्वारा वीणा उठाने का उपमान।	पद्मावत-614/4, 631/7
उपमा, यमक—अंगद राजा के लिए उपमान। अंगद (राजा अंगद) अंगद (बालिपुत्र अंगद)	छत्रप्रकाश-पृ० 61
मिथ्याध्यवसित—शिवाजी के ऐश्वर्य के लिए मिथ्या-कथन।	भूषण ग्रंथावली-273
प्रतीक	
वीरता का प्रतीक	अनुराग-बांसुरी-19/6
उल्लेख	
मानसरोदक के किनारे बनाये गये महल में चित्र।	मृगावती-26/4-5
रतनसेन के लिए उपमान।	रतनावली पृ० 465
शिवाजी के पद की अंगद के पद से तुलना।	भूषण-भारती (दोहावली-55)

अंगिरस-आख्यान/अंगिरस की उत्पत्ति

प्रतीक

अंगिरस—असह्य तेज/प्रतीक का हेतु अंगार से जन्म।	उत्तर-जय, पृ० 21

अंबरीष-आख्यान/दुर्वासा का संकट में पड़ना

अलंकार

अत्युक्ति—शिवाजी के पौरुष का बढ़ा-चढ़ाकर कथन।	भूषण-ग्रंथावली-343
उदात्त—भगवान के औदात्य का कथन	सूरसागर, पद-10
उदाहरण—युधिष्ठिर के ऐश्वर्य कथन के लिए अंबरीष उदाहरण।	पार्थपत्नी महासती द्रौपदी, पृ० 308
(2) जयन्त के भय का उदाहरण (चक्र से दुर्वासा को भय)	रामचरित मानस-3/2
उपमेयोपमा—शिवाजी ही अम्बरीष के समान।	शिवराज-भूषण-पृ० 146 (भूषण-भारती)
मालोपमा—जहांगीर के अनेक उपमान।	जहांगीर जस जन्द्रिका, पृ० 118
काव्यलिंग (1) दुर्भाव न करने का हेतु अम्बरीष का प्रभाव।	कृष्णायन-4/141
(2) सुरपति की निराशा का हेतु अम्बरीष की कथा	रामचरित मानस-2/26
(3) भक्त-हित हेतु	सूरसागर, पद-26
(4) भजन में हेतु भक्तों का नाम निवारण।	सूरसागर, पद-28
स्मरण—ऋषि दुर्वासा द्वारा अम्बरीष घटना का स्मरण।	पार्थपत्नी महासती द्रौपदी, पृ० 209

दृष्टान्त

भगवान के सत्य-प्रेम का प्रतिपादन।	व्रजचन्द विनोद, पृ० 350
भगवान की पतित पावनता की पुष्टि।	मीरा की पदावली, पद-16
होनी की प्रबलता की पुष्टि।	विश्राम-सागर, पृ० 292
भक्त के आगे भगवान की विवशता।	विनय पत्रिका, पद-98
भगवान की भक्त वत्सलता की पुष्टि।	विनय पत्रिका, पद-137
कष्ट में भगवान सहायक।	श्री विष्णु लहरी (रत्नाकर) पद-14
भगवान की भक्ति से उद्धार।	वृंद-ग्रंथावली (हितोपदेश-अष्टक-8)

वचन-वक्रता

उपालम्भमूलक	श्री विष्णुलहरी (रत्नाकर) पद-14

अगस्त्य-आख्यान

अगस्त्य द्वारा विन्ध्याचल को रोकना

अलंकार

उदात्त—योद्धाओं के पौरुष का प्रतिपादन।	जरासंध, पृ० 3
उदाहरण—रणक्षेत्र में दुर्योधन के पराक्रम के लिए उदाहरण।	जयद्रथ-वध, पृ० 73
भरत द्वारा स्नेह को रोकने का उदाहरण।	रामचरितमानस, 2/297
घटोत्कच का युधिष्ठिर को प्रणाम करने का उदाहरण।	सेनापति कर्ण, पृ० 168
काव्यालिंग—विन्ध्य को रोकने का हेतु रामनाम।	विनय-पत्रिका, पद-247
रूपक—हनुमान के क्रोध पर विन्ध्याचल राम के आदेश पर अगस्त्य का आरोप।	गीतावली, पद-4/5/2

दृष्टान्त

छोटे जीवों द्वारा बड़े कार्य करने की संभावना का प्रतिपादन।	कृष्णायन (त्रिसाहूराम) पृ० 86
कृष्ण की बलहीनता का प्रतिपादन।	जरासंध, पृ० 55

प्रतीक

व्योमभेदी विन्ध्यागिरि-अभिमान।	सेनापति कर्ण, पृ० 56

वचन-वक्रता

वियोग-प्रस्तुतीकरण।	श्रृंगार-लहरी (रत्नाकर) पद-48

औचित्य

प्रतिभा।	उद्धव-शतक, पद-75

अगस्त्य द्वारा समुद्र-शोषण

अलंकार

अर्थान्तरन्यास—बड़ों का प्रतिकार नहीं।	वृंद-ग्रंथावली, पृ० 263
उत्प्रेक्षा—वीरसिंह के शरीर की समुद्र से तुलना।	केशव-ग्रंथावली, भाग-3 (वीरसिंह चरित्र-15/18)
उदाहरण—कुश द्वारा राम की सेना को समाप्त कर देने का उदाहरण।	रामचन्द्रिका-36/11
शरद ऋतु की शोभा का उदाहरण।	रामचरित मानस-4/16

शिवाजी और दिल्लीपति के लिए उदाहरण।	शिवराज भूषणं, 25
शिवा और मलेच्छ सेना के लिए उदाहरण।	—वही-33
उदाहरणमाला—शिवाजी के पौरुष के अनेक उदाहरण।	शिवा बावनी, पृ० 20
समुद्र को मुक्त करने का हेतु उसका विषयुक्त होना।	रसिकप्रिया-8/31
उपमा, उदात्त, व्यतिरेक-(1) विवेक गाम्भीर्य के लिए उपमान। (2) प्रेम की श्रेष्ठता का वर्णन। (3) सिन्धु की अपेक्षा प्रेम-प्रवाह की श्रेष्ठता	उद्धव शतक, पद-75
काव्यलिंग—समुद्र शोषण का हेतु रामनाम।	विनय-पत्रिका, पद-247
पीड़ा न जानने का हेतु अगस्त्य द्वारा समुद्र पान।	वृंद-ग्रंथावली, पृ० 14
मालोपमा—शिवाजी व मुगल सेना के लिए अगस्त्य और समुद्र उपमान।	भूषण-ग्रंथावली, (शिवा-बावनी) पद-36
दीपक—चढ़ी हैं, कढ़ी हैं, सोखने चली हैं क्रियाओं का एक कारक 'किस पै' से सम्बन्ध।	पुरुषोत्तम, पृ० 10
रूपक—रक्त पर समुद्र, अश्वत्थामा पर अगस्त्य का आरोप।	उत्तर-जय, पृ० 24
कर्ण पर अगस्त्य विद्या पर समुद्र का आरोप।	अंगराज, पृ० 24
लोभ पर समुद्र का और पुरी पर अगस्त्य का आरोप।	केशव ग्रंथावली, भाग-3 (वीरसिंह चरित्र-18/12)
कुश के बाण पर अगस्त्य और राम की सेना पर समुद्र का आरोप।	चित्रावली-362/6-7
राम में अगस्त्य में क्लेश में, समुद्र का आरोप।	दोहावली-5/27/3
औरंगजेब पर समुद्र शिवाजी पर अगस्त्य का आरोप।	भूषण ग्रंथावली (शिवा-बावनी) पद-37
राघवचेतन पर अगस्त्य का आरोप।	पद्मावत-448/1
लोभ पर समुद्र चतुर मनुष्य पर अगस्त्य का आरोप।	रामचन्द्रिका-1/50
लक्ष्मण के दल पर समुद्र कुश के बाण पर अगस्त्य का आरोप।	—वही-36/11
लोभ पर समुद्र रामचरित पर अगस्त्य का आरोप।	रामचरित मानस-1/35
भव पर समुद्र राम पर अगस्त्य का आरोप।	—वही-7/35
अज्ञान पर समुद्र शिव पर अगस्त्य का आरोप।	विनयपत्रिका, पद-12

अहंकार पर समुद्र राम पर अगस्त्य का आरोप।	—वही, पद-64
दुख पर समुद्र रामनाम पर अगस्त्य का आरोप।	—वही, पद-159
स्मरण—समुद्र बंधन देखकर अगस्त्य का स्मरण।	पद्माकर-पंचामृत, पृ० 203

दृष्टान्त

बड़े कार्य से शरीर-गुरुता का संबंध नहीं।	रामचरितमानस-1/256

प्रतीक

वीरता का प्रतीक	ज्ञानदीप, छंद-12
उल्लेखात्मक प्रयोग	चित्रावली, पृ० 232

अग्नि का स्वाहा से विवाह

अलंकार

उत्प्रेक्षा—लाल वस्त्र में अग्नि सीता की सखी में स्वाहा की संभावना।	रामचंद्रिका-6/62
उपमा—अगस्त्य और उनकी पत्नी के लिए उपमान।	रामचंद्रिका-11/10
मालोपमा—अर्जुन और द्रौपदी युगल के लिए अनेक उपमान।	पार्थपत्नी महासती द्रौपदी, पृ० 104

अज का इन्दुमती से विवाह

अलंकार

उदात्त—भारत के वैभव का वर्णन।	मधुपर्क-2/20
उदाहरण, विरोधाभास, परिकर-राधा के कृष्ण के प्रति प्रेम के लिए उदाहरण। रज में विरज का, अमिल में मिलने का अजन्मा में वृष्टि का लगना विरुद्धता की प्रतीति कराता है। तीनों विशेषण सभिप्राय हैं।	राधा, पृ० 86

अजामिल पर कृपा

अलंकार

अर्थान्तरन्यास—भगवान द्वारा शरणागतों की रक्षा सामान्य वाक्य की पुष्टि।	गीतावली-5/42/3
अवज्ञा—भगवान द्वारा दोष को न देखना।	काव्य-निर्णय-14/19

उदात्त—भगवान (श्रीकृष्ण/राम) के औदात्य का कथन।	ब्रज-विहार (रंगीलाल), पृ० 298 प्रेम-प्रलाप, पद-41, 62 (भारतेन्दु ग्रन्थावली) रामचरित मानस-3/7 विनय प्रेमपचासा, पद-38 (भारतेन्दु ग्रंथावली) सूर सागर, पद-12, 27, 95, 119, 120, 131, 190, 306 विनय पत्रिका, पद-112, 211, 217
सोपालम्भ उदात्त—श्रीकृष्ण के औदात्य का कथन।	ब्रज-विहार, पृ० 297
चरित्रोदात्त—भगवान के चरित्र की श्रेष्ठता वर्णित।	कवितावली-7/7
गुढ़ोत्तर उदात्त—1. राम के सीधे स्वभाव का कथन।	पद्माकर-पंचामृत, पृ० 214
2. राम के औदात्य की पुष्टि।	विनय-पत्रिका, पद-236
वक्रतापुष्ट उदात्त—राम की उदारता की व्यंजना।	पद्माकर-पंचामृत, पृ० 228
उदाहरण—प्रभु की शरण से उद्धार का उदाहरण।	मीरा-पदावली, पद-5
नाम लेने पर भगवान द्वारा तारने का उदाहरण।	—वही, पद-6
खलों का उदाहरण।	सूर सागर-पद-158, 204, 219,
उपमा, काव्यलिंग—पापियों का अजामिल उपमान।	प्रेम-प्रलाप, पद-5 (भा० ग्रं०)
तारने का हेतु अवगुणों को न देखना।	
काव्यलिंग—डूबने से बचने का हेतु राम नाम।	कवितावली, 2/5
तरने का हेतु मोह।	पद्माकर-पंचामृत-पृ० 235
तरने का हेतु नाम।	—वही-पृ० 238
विख्याति का कारण भक्तों को तारना।	प्रेम-मालिका, पद-9 (भा० ग्रं०)
मुक्ति का हेतु रामनाम।	रामचरित मानस, 1/26,

कल्याण का हेतु संत चरण।	विनय-पत्रिका, पद-57
उद्धार का हेतु राम नाम।	—वही, पद-228
तारने का हेतु हरि स्मरण।	सूरसागर, पद-82
व्यतिरेक—अजामिल से अधिक तुलसी के पाप।	कवितावली, 7/82.
स्मरण—भक्त-वत्सलता का स्मरण कराया जाना।	प्रेम-मालिका, पद-34 (भा० ग्रं०)
दृष्टान्त	
भगवान की भक्त-वत्सलता की पुष्टि।	विनय-पत्रिका, पद-99, 144, 152, 180, 239 सूरसागर, पद-35 हृदय-तरंग, पृ० 144
भगवान का भक्तों के उद्धारक होने की पुष्टि।	प्रेम-प्रलाप, पद-33
भगवान की पतित-पावनता की पुष्टि।	विनय प्रेम पचासा, पद-36 (भा० ग्रं०) मीरा-पदावली, पद-12 विनय-पत्रिका, पद-160
भगवान का भक्तों का उद्धारक होना।	व्रजचन्द-विनोद (उत्तरार्द्ध) पृ० 466
भगवान का भक्तों के अवगुण न देखना।	प्रेम-प्रलाप, पद-5 (भा० ग्रं०)
स्मरण से निर्णय पद प्राप्ति।	सूरसागर, पद-66
भगवान की गति की अलक्षता।	सूरसागर, पद-104
बिना परिश्रम के यश प्राप्ति (व्यंग्य)।	सूरसागर, पद-132
राम नाम से ही मुक्ति होने का प्रतिपादन।	राम चरित मानस-7/130
राम की कृपा से आदर की प्राप्ति।	विनय पत्रिका, पद-106
भगवान द्वारा विपत्तियों का विनाश।	विनय-पत्रिका, पद-212
दुष्टों का भी उद्धार।	विनय-पत्रिका, पद-241
राम नाम के महत्त्व का प्रतिपादन।	कवितावली, 7/89
कुकर्म का सदा स्मरण रहना।	दोहावली, दो० 531
वचन-वक्रता	
निवेदन मूलक।	विनय-पत्रिका, पद-97
उपालम्भ मूलक।	सूरसागर, पद-139, 140, 145, 179
दीनता प्रदर्शन।	सूरसागर, पद-138, 192
औचित्य	
प्रार्थना-औचित्य।	कवितावली, 7/18

नाम औचित्य ।	कवितावली, 7/90, 7/93
निवेदन-औचित्य ।	सूरसागर, पद-171

अनुसूया द्वारा ब्रह्मा, विष्णु और महेश को पुत्र बनाना।

अलंकार

उदान्त-चित्रकूट का औदात्य-कथन ।	विनय-पत्रिका, पद-24

अभिमन्यु-वध

अलंकार

उत्प्रेक्षा-वीर सलख को गौरी के रक्षकों द्वारा घेरे जाने में अभिमन्यु के चक्रव्यूह के फसने की संभावना ।	पृथ्वीराज रासो-22/35
उदाहरण—रतनसेन-पद्मावती की रति क्रीड़ा का उदाहरण । रति-क्रीड़ा-चक्रव्यूह, रतनसेन-अभिमन्यु ।	पद्मावत-294/1
छत्रसाल को मुगलों द्वारा घेरने के लिए उदाहरण ।	छत्रप्रकाश-पृ० 65
काव्यलिंग-अधर्म में धर्म के बनने का हेतु दुर्योधन से वेतन पाना ।	द्रौपदी, पृ० 48

वचन-वक्रता

अनौचित्यमूलक ।	कृष्णायन, 6/244
घृणामूलक, विपरीत लक्षणामूलक ।	रश्मिरथी, पृ० 174
सद् और असद् प्रवृत्तियों के द्योतन के लिए ।	ब्रजचन्द-विनोद, पृ० 398-399 (उत्तरार्द्ध)

औचित्य

तत्त्व ।	कृष्णायन, 6/244
निन्दा ।	कृष्णायन, 6/233
विचार, निन्दा ।	रश्मिरथी, पृ० 174

जीवन-दर्शन

मिथ्याचरण-त्याग ।	ब्रजचन्द्र-विनोद, पृ० 399 उत्तरार्द्ध
	रशिमरथी, पृ० 174
समदर्शिता का संकेत ।	रश्मिरथी, पृ० 4
उल्लेखात्मक-प्रयोग	चन्दायन-205/1

(अर्जुन सम्बन्धी कथाएं)
अर्जुन द्वारा सुभद्रा हरण

अलंकार

संदेह—अथवा से संशय की प्रतीति। सेनापति कर्ण, पृ०-19

वचन-वक्रता

कुटनीतिपरक —वही

अर्जुन-चित्ररथ युद्ध

अलंकार

काकु-वक्रोक्ति—अर्जुन का पराक्रम व्यंजित। सेनापति कर्ण, पृ०-165

अर्जुन का विश्व-भ्रमण

उल्लेखात्मक-प्रयोग ज्ञानदीप, छंद-292

अर्जुन द्वारा खाण्डव दहन

अलंकार

उदाहरण—दुर्योधन के क्रोध से जलने का उदाहरण। पृथ्वीराज-रासौ, 7/17

पृथ्वीराज के युद्ध का उदाहरण। सेनापति-कर्ण पृ० 7

काव्यलिंग—कहानी गूंथने में हेतु खाण्डव दाहक बाण। पुरुषोत्तम, पृ० 236

अर्जुन-किरात युद्ध। पाशुपत-अस्त्र की प्राप्ति

अलंकार

उदात्त—अर्जन के पराक्रम का चित्रण। कृष्णायन, 6/69

काकु-वक्रोक्ति—अर्जुन के कथन से उसका पराक्रम तथा कर्ण पर विजय काकु द्वारा अभिव्यक्त। सेनापति-कर्ण, पृ० 165-166

वचन-वक्रता

औचित्यमूलक सेनापति-कर्ण पृ० 56

औचित्य

अभिप्राय पार्थपत्नी महासती द्रोदती, पृ० 168-169

जीवन-दर्शन

कर्मदर्शन सेनापति कर्ण, पृ० 56

अर्जुन का नाग की चपेट में आना

अलंकार

उदाहरण-राजकुंवर के जोगी बन जाने पर
उसके पिता की दशा के लिए उदाहरण। मृगावती, 69/3

अर्जुन का रम्भा पर मोहित होना

अनौचित्य पुरुषोत्तम, पृ० 253

अर्जुन का वृहन्नला बनना

वचन-वक्रता

औचित्यमूलक सेनापति-कर्ण, पृ०-6

औचित्य

निन्दा औचित्य कृष्णायन, 5/101

जीवन-दर्शन

कर्मदर्शन सेनापति कर्ण, पृ० 56

अर्जुन द्वारा विराट की गायों की रक्षा।
—दुर्योधन द्वारा विराट की गाय चुराना—

अलंकार

अर्थान्तरन्यास—वीरों की हिम्मत हाथियार भूषण श्रृंघावुली-पद-266
इस सामान्य वाक्य की पुष्टि।
बड़ों द्वारा विपत्ति में दूसरों की सहायता। वृंद-ग्रंथावली-पृ० 366
काम करके स्वयं यश न लेना। —वही—पृ० 337

दृष्टान्त

हाथियार से ही हिम्मत का होना शिवराज भूषण पृ० 43

वचन-वक्रता

घृणामूलक उपहास। जयभारत, पृ० 3/8

अर्जुन द्वारा जयद्रथ-वध

अलंकार

उपमा—शिवाजी द्वारा औरंगजेब को पछाड़ने भूषण-ग्रंथावली, पद-35
का उपमान।

अर्जुन का बभ्रुवाहन से युद्ध

दृष्टान्त

अपने वंशजों से युद्ध होने की पुष्टि ।	केशव-ग्रंथावली-भाग-3 (जहांगीरजस चन्द्रिका-9/40)

अर्जुन और दुर्योधन का कृष्ण के पास जाना

प्रतीक

अर्जुन-धर्म, दुर्योधन-अधर्म ।	कनुप्रिया, पृ० 77
प्रतीक हेतु-अर्जुन और दुर्योधन का क्रमशः नैतिक व अनैतिक कार्यों का पालक होना ।	

अर्जुन का युद्ध के लिए तैयार न होना

औचित्य

विचार, दयाभाव	जरासंध, पृ० 30

अर्जुँन द्वारा महाभारत युद्ध में पराक्रम

अलंकार

उत्प्रेक्षा, सन्देह-समर विक्रम में अर्जुन की संभावना और सन्देह	पृथ्वीराज रासौ, 22/30
उदाहरण — पृथ्वीराज के युद्ध के लिए उदाहरण ।	पृथ्वीराज रासौ 26/83
उपमा—पृथ्वीराज के युद्ध का उपमान ।	पृथ्वीराज रासौ, 22/72
मालोपमा—शिवाजी के पराक्रम का महाभारत-युद्ध उपमान ।	भूषण-ग्रंथावली, पद-36 (शिवा-बावनी)

अर्जुन द्वारा कर्ण-वध

अलंकार

उदाहरण—पृथ्वीराज द्वारा गौरी-वध का उदाहरण ।	पृथ्वीराज रासौ, 12/45

अर्जुन द्वारा कौरव दल संहार

अलंकार

उत्प्रेक्षा—शत्रु नाश के लिए लोरिक में अर्जुन की संभावना ।	चंदायन, 121/5
उपमा—पृथ्वीराज की समानता अर्जुन से ।	पृथ्वीराज-रासौ-14/186

रूपक— नायिका के सुख को नष्ट करने के लिए कामदेव में अर्जुन का आरोप	चित्रावली-435/2-3

अर्जुन द्वारा वाणों से पुल का निर्माण

अलंकर

उदाहरण—शीवाजी और मलेच्छ सेना का उदाहरण।	शिवराज-भूषण-25

दृष्टन्त

अभिमान से सिर नीचा होना।	दोहावली, दो० 440

अर्जुन का संरक्षण प्राप्त गोपियों का लूटा जाना

अलंकार

अर्थान्तरन्यास—रक्षा कुछ न कुछ गवांने से संभव।	केशव-ग्रंथावली-भाग-3 (वीर चरित्र)
देवों द्वारा प्रदत्त कलुषिता की पुष्टि।	पृथ्वीराज-रासौ, 26/27
शक्तिमान हर समय समर्थ नहीं।	वृंद-ग्रंथावली-पृ० 70

अष्टावक्र-आख्यान

प्रतीक

अष्टावक्र-कुटिलता, प्रतीक हेतु- अष्टावक्र की पिता से कुटिलता तथा उनका आठ स्थान से टेड़ा होना।	राधा, पृ० 13

अलंकार

उदाहरण—साहसपूर्ण कृत्य करके नायक को छुड़ाना।	पद्मावत-611/6-7
सुजान को छुड़ाने के लिए उपमा।	चित्रावली, 109/1-5
विभीषण के दूत राक्षस की उक्ति।	पद्मावत-641/7
उपमा—प्रिय के लिए कठिन कार्य की सिद्धि।	मृगावती, 251/2-3
रूपक गोरा द्वारा रतनसेन के छुडाने का आरोप।	पद्मावत-629/7

उल्लेखात्मक प्रयोग	पद्मावत, 394/3-5, 395/5-6

इन्द्र आख्यान

इन्द्र असुर युद्ध। इन्द्र की असुरवाहिनी पर विजय

अलंकार

उदाहरण—दैत्यगणों का मेघों द्वारा	जयद्रध-वध, पृ० 42.

इन्द्र की विजय सुनना। कौरवों का दूत
के मुख से पार्थ-प्रतिज्ञा सुनना।
चालुक्य विंझ और जयचन्द की — पृथ्वीराज-रासौ, 8/29.
सेना के लिए उदाहरण
उपमा—पाण्डवों की विजय का उपमान — सुवर्णा, पृ० 64.

इन्द्र का अहल्या के साथ व्यभिचार/अहल्या उद्धार

अलंकार

अर्थान्तरन्यास—अहत्या का शिला होना — विश्राम-सागर, पृ० 331.
अभिमान के दुखदाई होने का समर्थन।
अर्थान्तरन्यास—नारी को कुदृष्टि से देखने पर दुख मिलने का समर्थन। — कृष्णायन (बिसाहूराम) पृ० 131
वक्रतापुष्ट उदात्त-राम की उदारता की व्यंजना। — पद्माकर-पंचामृत-पृ० 229
उदाहरण, उत्प्रेक्षा—1-चन्द्रमा की स्वच्छता के लिए उदाहरण/2-चन्द्रमा के शाप से मुक्त होने की संभावना ध्वनित। — सेनापति-कर्ण, पृ० 134
काव्यलिंग—हित का हेतु शाप — रामचरितमानस-1/317/6
वक्रोक्ति पुष्ट—काव्यलिंग रावण द्वारा इन्द्र को जीतने का हेतु—अहत्या का शाप। — रामचन्द्रिका-16/29
चरण स्पर्श न करने का हेतु। — वृंद-ग्रंथावली-पृ० 23
प्रतिषेध—निषेध से प्रतिषेध। — काव्य,निर्णय, 15/52
शब्द-प्रमाण--स्मृति वाक्य से शब्द प्रमाण। — पद्माकर पंचामृत-पृ० 79

दृष्टान्त

अपराध के लिए गुरुतर दण्ड नहीं। — पृथ्वीराज-रासो-3/36
पुरुष गुरुतर अपराध करने पर भी दोष मुक्त। — महारास, पृ० 67
प्रेम दुख का कारण। — विरह वारीष (बोधा ग्रंथावली)-3/15
अवगुण करने वालों को सुख प्राप्त नहीं। — विश्राम-सागर, पृ० 359
परनारी गमन पाप। — ज्ञानदीप, छंद-444

प्रतीक

अहल्या-पतित-स्त्री। — साकेत, पृ० 367

जीवन-दर्शन

अवगुणों से मनुष्य का अपमान। — विश्राम-सागर, पृ० 359

इन्द्र का पुलोमजा (इन्द्राणी) के साथ विवाह

अलंकार

भालोपमा—अर्जुन-द्रौपदी युगल का उपमान।	पार्थपत्नी महासती द्रौपदी-पृ० 104

दृष्टान्त

सुर असुरों के आपसी सम्बन्धों की पुष्टि।	जयभारत, पृ० 74

जीवन-दर्शन

प्रेम-भावना	जयभारत, पृ०74

इन्द्र को कल्पतरु की प्राप्ति

अलंकार

उदात्त—कल्पेश्वर तीर्थ की श्रेष्ठता का वर्णन।	कृष्णायन, 3/184

इन्द्र का यज्ञ करना

अलंकार

उदात्त—कुरुक्षेत्र की श्रेष्ठता का वर्णन।	अंगराज, पृ०, 111

इन्द्र का पर्वतों के पर काटना

अलंकार

अर्थान्तरन्यास—बड़ों की शरण में दुख का नाश संभव।	वृंद-ग्रंथावली, पृ० 307
उत्प्रेक्षा—पृथ्वीराज द्वारा तलवार हाथी पर छोड़ना।	पृथ्वीराज रासौ, 21/60
शिवाजी के पौरुष का उदाहरण।	छत्र प्रकाश, पृ० 44
कृष्ण द्वारा कुवलय के वध का उदाहरण।	वृंद-ग्रंथावली, स्फुट छंद पृ० 11
उदाहरण—घटोत्कच के प्रणाम करने के लिए उदाहरण।	सेनापति-कर्ण, पृ० 81
युद्ध के मैदान में पड़े हुए वीरों के छिन्न-भिन्न अंगों के लिए उदाहरण।	सेनापति-कर्ण, पृष्ठ 111
मालोपमा—शिवाजी की मुगल सेना पर विजय के अनेक उपमान।	भूषण-ग्रंथावली, पद-36 (शिव-बावनी)
मलेच्छ सेना से शिवाजी के युद्ध के अनेक उपमान।	छत्रसाल-दशक, पृ० 40
रूपक—शिवाजी पर इन्द्र पर्वत पर पर्वत का	भूषण-ग्रंथावली, पद-66

आरोप।

सन्देह—माजम चमू में इन्द्र और पर्वतों का सन्देह। — छत्र प्रकाश, पृ० 115 (सत्यसरूप रूपक)

दृष्टान्त

कलंकित होने पर भी उज्ज्वल सिद्ध होना। (सुमेरु का दृष्टान्त) — पद्मावत-21/6

इन्द्र के साथ वैश्वामर

अलंकार

उत्प्रेक्षा—भीम और सात्यकि में इन्द्र और वैश्वानर की संभावना। — कृष्णायन-6/179

इन्द्र-वृत्रासुर युद्ध

अलंकार

उदात्त—बदरीधाम तीर्थ की श्रेष्ठता का वर्णन। — कृष्णायन, 3/185

कवच की श्रेष्ठता का वर्णन। — जयद्रथ-वध, पृ० 73

कवच की श्रेष्ठता का वर्णन। — ब्रजचन्द्र-विनोद, पृ० 370

उदाहरण—शिवाजी और दिल्लीपति के लिए उदाहरण। — शिवराज-भूषण-25

उपमा—विराट सुत तथा भीष्म के लिए वासववृत्र उपमान। — कृष्णायन, 6/2

अर्जुन के लिये उपमान। — जयद्रथ-वध, पृ० 63

मालोपमा—इन्द्र शिवाजी के लिए जंभ (वृत्र) मलेच्छ वंश के लिए उपमान। — भूषण-ग्रंथावली, पद-56

उदाहरण, काव्यलिंग, काकु-वक्रोक्ति — मधुपर्क, 10/92
कृष्ण के चाणुर से युद्ध के लिए उदाहरण,
नाश होने का हेतु भिड़ना,
'किन होइ है' से नाश ध्वनित।

काव्यलिंग सुरों का इन्द्र को अस्त्र-शस्त्र देने का हेतु वृत्रासुर-त्रास तथा इन्द्र की अजेयता का हेतु देवों का शस्त्रास्त्र देना। — कृष्णायन, 4/122

कल्याण का हेतु संत-चरण। — विनय-पत्रिका, पद-57

गुढ़ोत्तर—अलंकार — साकेत, पृ० 356

रूपक—कर्ण पर अन्नकोष और पाण्डवों पर मनोमय कोष का आरोप।	सुवर्णा, पृ० 43
अहं तथा प्रेम में वृत्र और इन्द्र का आरोप।	सुवर्णा, पृ० 45
शिवाजी पर इन्द्र औरंगजेब पर वृत्र का आरोप।	भूषण-ग्रंथावली, पद-37 (शिवा-बावनी)
व्यतिरेक-शिवाजी का इन्द्र से बढ़कर वर्णन।	भूषण-ग्रंथावली, पद-146
सन्देह-सूर्योदय की लाली में सूर्य के वृत्र के वक्ष को चीर-फाड़कर आने का सन्देह।	जरासंध, पृ० 104

दृष्टान्त

मरण वीरों का धर्म।	सेनापति-कर्ण, पृ० 38
हिंसा का त्याज्य होना।	उत्तर-जय, पृ० 29

औचित्य

तत्त्व-औचित्य	उत्तर-जय, पृ० 29

जीवन-दर्शन

कर्म-दर्शन।	सेनापति-कर्ण, पृ० 38
गांधीवाद, अहिंसा।	उत्तर-जय, पृ० 29

इन्द्र को ब्रह्महत्या लगना

अलंकार

काव्यलिंग—ब्रह्महत्या से मुक्ति का हेतु भगवान का भक्तजनों को सुख देना।	भगवान श्रीकृष्णलीलामृत, पृ० 10

इन्द्र के साथ शक्तिधर

अलंकार

सन्देह—अश्वत्थामा में शक्तिधर का कर्ण में सुरेन्द्र होने का सन्देह व्यंजित।	सेनापति कर्ण, पृ० 38

इन्द्र द्वारा शम्बासुर वध

अलंकार

उदाहरण, का व्यलिंग—अश्वत्थामा का वध करने का उदाहरण। संताप मिटाने में कारण अश्वत्थामा को दंड देना।	पार्थपत्नी महासती द्रौपदी, पृ० 291

औचित्य

इतिहास।	—वही—

इन्द्र का वृहस्पति के घर जाना

अलंकार

उत्प्रेक्षा—श्रीकृष्ण, अर्जुन और व्यास में क्रमशः इन्द्र, स्कन्द और वृहस्पति की संभावना । मधुपर्क-14/83

इन्द्र का कर्ण से कवच-कुण्डल मांगकर लाना

जीवन दर्शन

मर्यादा का अतिक्रमण दुख का कारण जयभारत-पृ० 209

इन्द्र का यम से वैर

अलंकार

उदाहरणमाला—शिवाजी और मलेच्छ वंश वैर के लिए अनेक उदाहरण । केशव-ग्रंथावली-खण्ड-3 (शिवा) वावनी, पृ० 20)

इन्द्र का सुमेरु पर्वत पर रहना

दृष्टान्त

प्रजापालन से धन संभव । केशव-ग्रंथावली-खण्ड-3 (वीर चरित्र-पृ० 2)

इला बुध आख्यान

वचन वक्रता

निन्दामूलक उपहास मधु मुकुल-पद-5-9 (भा०ग्रं०)

औचित्य

परिवाद । —वही—

उत्तंक ऋषि का सर्पयज्ञ

दृष्टान्त

आपद्धर्म की पुष्टि । कृष्णायन-6/62

उर्वशी का अर्जुन पर अनुरक्त होना

अलंकार

अर्थान्तरन्यास—प्रेम की विफलता के बाद द्वेष होने का समर्थन । जयभारत-पृ० 177

उदात्त, काव्यलिंग—अर्जुन के वक्ष की पुष्टता का वर्णन और उर्वशी के मोहित होने का कारण अर्जुन की शारीरिक पुष्टता।	मधुपर्क-13/9

प्रतीक

उर्वशी-प्रेमिका।	द्रौपदी-पृ० 52

वचन-वक्रता

औचित्यमूलक।	सेनापति कर्ण, पृ० 50

जीवन-दर्शन

नारी-भावना।	द्रौपदी, पृ० 52
कर्म-दर्शन।	सेनापति कर्ण, पृ० 50

उषा-अनिरुद्ध आख्यान

अलंकार

उत्प्रेक्षा—देवजानी और कुंवर ज्ञानदीप में ऊषा व अनिरुद्ध की संभावना।	ज्ञानदीप, छंद-164
उदाहरण—गोपियों द्वारा प्रद्युम्न को देखने के लिए उदाहरण।	फेरि मिलिबो, पृ० 168
पद्मावती को उसके पति के मिलने का उदाहरण।	पद्मावत 198/7

दृष्टान्त

प्रेमी द्वारा प्रेम के लिए कार्य करने का दृष्टान्त।	पद्मावत्, 233/7

प्रतीक

अनिरुद्ध प्रेमी का, ऊषा प्रेमिका का तथा बाणासुर बाधक तत्वों का प्रतीक।	पद्मावत-274/3-4, इन्द्रावती (पूर्वार्द्ध) पृ०27

एकलव्य की कथा

अलंकार

अर्थान्तरन्यास—विद्या गुरुभक्ति से।	वृंद-ग्रंथावली, पृ० 297
भाग्यवाद का समर्थन।	सुवर्णा, पृ० 51
उपमा—एकलव्य उपमान कर्ण उपमेय।	रश्मिरथी, पृ० 17
काव्यलिंग—अंगूठा काटने का हेतु निष्कंटक राज्य।	रश्मिरथी-पृ० 8

दृष्टान्त

उच्च जाति द्वारा निम्न जाति का शोषण।	रश्मिरथी-पृ० 4

वचन-वक्रता

अधिक्षेपमूलक (अनुचित निन्दा) — रश्मिरथी-पृ० 4

औचित्य

व्रत। — पार्थपत्नी महासती द्रौपदी-पृ० 63

जीवन-दर्शन

होनी की प्रबलता। — सुवर्णा-पृ० 51

कंस द्वारा अस्ति और प्राप्ति से विवाह

औचित्य

प्रसिद्धि-विरुद्धता। — विश्राम-सागर-पृ० 297

कंस द्वारा उग्रसेन को कष्ट

दृष्टान्त

परिजनों से अनिष्ट। — केशव-ग्रंथावली-भाग-3 (वीर चरित्र-29/10-12)

कच्छप-अवतार

अलंकार

अपह्नुति—अवतरण का निषेध कर अभ्युदय की स्थापना। — देवकी, पृ० 6

उदात्त—भगवान के औदात्य का कथन। — गीत गोविन्दानन्द, पद-12 (भारतेन्दु-ग्रंथावली)
प्रातः स्मरण स्तोत्र, पद-6 (भारतेन्दु-ग्रंथावली)
रामचन्द्रिका-10/23
विनय-पत्रिका, पद-52
विश्राम-सागर, पृ० 312
कृष्णायन (बिसाहूराम) पृ०-34
सूरसागर, पद-839

उदाहरण—शिवजी द्वारा पृथ्वी को धारण करने का उदाहरण। — भूषण भारती (शिवराज भूषण) पृ० 53

उपमा—समरविक्रम का उपमान। — पृथ्वीराज-रासौ० 22/68

काव्यलिंग—कच्छप अवतार का हेतु-सुरों का दुख। — रामचरितमानस-6/110

कार्य सिद्धि का हेतु मन्थराचल धारण करना। — भगवान श्रीकृष्णलीलामृत, पृ० 99

निदर्शना—कच्छप-अवतार का शिवाजी से अभेद सम्बन्ध। — भूषण-ग्रंथावली-पद-140

दृष्टान्त

भारत की महिमा की पुष्टि। — पार्थपत्नी महासतीद्रौपदी, पृ० 107

वचन-वक्रता

उपालम्भमूलक। — रुक्मिणी-परिणय, पृ० 86

शक्ति की प्रमाणिकता। — सूरसागर, पद-745

औचित्य

विचार-औचित्य। — देवकी, पृ० 6

भक्तिभाव-औचित्य। — विश्राम-सागर, पृ० 287

उल्लेख

हिरण्यमय—खण्ड के सन्दर्भ में। — जहाँगीर जस चन्द्रिका-4/35

कच्छप द्वारा पृथ्वी को धारण करना

अलंकार

अतिशयोक्ति—शिवाजी की सेना का अतिशयोक्ति पूर्ण वर्णन। — शिवा-बावनी, पृष्ठ 38,40 (भू० ग्रं०)

काव्यलिंग—कच्छप के निश्चित होने का हेतु शिवाजी। — शिवा-बावनी, पृ० 50 (भू० ग्रं०)

व्यतिरेक—शिवाजी से बढ़कर शिवाजी का वर्णन। — —वही-52,

कच-देवयानी

अलंकार

रूपक—ज्ञानदीप में कच और देवयानी में देवयानी का आरोप। — ज्ञानदीप, छंद-279

प्रतीक—कच नायक और देवयानी नायिका का प्रतीक। — ज्ञानदीप, छंद-279

उल्लेख—यदु और पुरुवंश वर्णन। — जयभारत, पृष्ठ 15

कर्दम और देवहूती की कथा

अलंकार

उदाहरण—च्यवन द्वारा सुकन्या को पत्नीरूप में मांगने का उदाहरण। — उर्वशी, पृ० 108

कर्ण-आख्यान

कर्ण-जन्म। कर्ण का कौरवों द्वारा पालित होना

अलंकार

अर्थान्तरन्यास—अवैध के त्याज्य होने का समर्थन। — द्रौपदी, पृ० 312

उपमा—पृथ्वीराज से वीरचंद के प्रेम के लिए कर्ण दुर्योधन प्रेम उपमान। — पृथ्वीराज रासो, 24/184

काव्यलिंग—महत्ता में हेतु गुर्ण-कर्म। — जयभारत, पृ० 386

दृष्टान्त

ज्ञानदीप के पालक रायभान द्वारा कर्ण का दृष्टान्त देना। — ज्ञानदीप, छंद-297

उल्लेख

श्रीकृष्ण द्वारा कर्ण से वार्तालाप के समय संकेत। — रश्मिरथी, पृ० 35

कर्ण का अपमान

अलंकार

अर्थान्तरन्यास—अवैध के त्याज्य होने का समर्थन। — द्रौपदी, पृ० 14

कर्ण द्वारा गो-हत्या

अलंकार

काव्यलिंग—कर्ण युद्ध की वाधाओं का हेतु दुर्योधन की मित्रता। — सुवर्णा, पृ० 119

उल्लेख—युद्ध से पूर्व कर्ण की चिन्ता। — सुवर्णा, पृ० 104

औचित्य—अलंकार, चिन्ता। — सुवर्णा, पृ० 119

कर्ण का अर्जुन के अतिरिक्त अन्य पांडवों को न मारने का वचन देना

अलंकार

उदात्त—कर्ण के औदात्य का कथन। — जयद्रथ-वध, पृष्ठ 79

कर्ण द्वारा कवच और कुण्डल दान देना। कर्ण की दानशीलता

उपमा—गोपचन्द के लिए उपमान।	छत्रप्रकाश-पृष्ठ 4
राजा कर्ण की कर्ण से तुलना।	वृंद-ग्रंथावली
यमक—कर्ण-राजा कर्ण, कर्ण-दानी कर्ण।	(सत्य सरूप रूपक) पृ० 17-20
श्लेष—नाम विशेष, कान।	काव्य-निर्णय-10/27-वही
सार—शिवाजी के ऐश्वर्य का उत्तरोत्तर उत्कर्ष।	भूषण-ग्रंथावली, पद-13

दृष्टान्त

दान से यश।	केशव-ग्रंथावली-भाग-3 (वीर चरित्र-2/18)
छलपूर्ण कार्य से एक को दुख एक को सुख।	पद्मावत, 341/3-5
भगवान के कार्यों की अलक्षता।	सूरसागर, पद-104
उल्लेख	दोहावली, दो० 382

कर्ण का युद्ध-क्षेत्र में मारा जाना

अलंकार

काव्यलिंग—कर्ण वध का हेतु दुर्योधन की मित्रता।	जरासंध, पृ० 7

कल्कि-अवतार

अलंकार

उदात्त—भगवान के औदात्य का कथन।	गीत गोविन्दानन्द, पद-12 (भा० ग्रं०)
	प्रातः स्मरण स्तोत्र, पद-6
	प्रेम-मालिका, पद-216
	विश्राम-सागर, पद-312
उदात्त, काव्यलिंग—कठोर तलवार धारण करने का हेतु म्लेच्छ-वध।	गीत-गोविन्दानन्द, पृ० 14
काव्यलिंग—अवतार का हेतु भक्त जनों को सुख देना।	भगवान श्रीकृष्ण लीलामृत, पृ० 101

कपिल-आख्यान

कपिल-अवतार। कपिल का देवहूती को ज्ञान देना

अलंकार

उदात्त—रास की श्रेष्ठता का वर्णन।	मधुपर्क-7/51

दृष्टान्त

भारत महिमा की पुष्टि। — पार्थपत्नी महासती द्रौपदी, पृ० 106

कपिल का सगर पुत्रों को भस्म करना

अलंकार

उदात्त—कपिल अवतार की महत्ता का कथन। — विश्राम-सागर, पृ० 312

कुरुक्षेत्र की श्रेष्ठता का कथन। — अंगराज, पृ० 185

सन्देह—किन्धों से सन्देह। — पद्माकर-पंचामृत-(फुटकर) 13

कागभुशुण्डि पर राम द्वारा कृपा

अलंकार

उदात्त—राम की उदारता का कथन — विनय-पत्रिका, पद-18

कामदेव का प्रद्युम्न के रूप में जन्म

उल्लेख

कृष्णवंश वर्णन। — कृष्णायन-3/1/3

कामधेनु और काल

अलंकार

उदाहरण—मलेच्छवंश और शिव के लिए उदाहरण — शिवराज-भूषण-25

कार्तिकेय-आख्यान

दृष्टान्त

कार्य की निश्चयात्मकता। — सुवर्णा, पृ० 44

कार्तिकेय का देव-सेना का सेनापति होना
कार्तिकेय द्वारा तारकासुर वध

अलंकार

उदात्त—कुरुक्षेत्र की श्रेष्ठता का वर्णन। — अंगराज-पृ० 186

परशुराम के औदात्य का कथन। — रामचन्द्रिका-7/26, 7/31

उदाहरण—अभिमन्यु के कौरव-सेना में जाने के लिए उदाहरण। — जयद्रथ-वध, पृ० 10

पृथ्वीराज के गौरी से युद्ध का उदाहरण। — पृथ्वीराज-रासौ-23/151

उपमा—हनुमान के लिए कार्तिकेय उपमान। — साकेत।

जीवन-दर्शन

कर्मवाद । सेनापति-कर्ण-पृ० 38

कालनेमि-इन्द्रजीत

अलंकार

सन्देह—अश्वत्थामा तथा कर्ण के कालनेमि तथा इन्द्रजीत होने का सन्देह । सेनापति कर्ण-पृ० 38

कुवेर को धनादि की प्राप्ति

अलंकार

उदात्त—कुरुक्षेत्र की श्रेष्ठता का वर्णन । अंगराज-पृ० 185

दृष्टान्त

प्रजापालन से धन संभव । केशव-ग्रंथावली-खण्ड-3 (वीर चरित्र-पृ० 2)

कुवेर का सुमेरु पर्वत पर रहना

अलंकार

अत्युक्ति—जाचक का बढ़ा-चढ़ाकर वर्णन । पद्माकर-पंचामृत-पृ० 72

कृत्या-अख्यान

अलंकार

उत्प्रेक्षा—शूपर्णखां में कृत्या की संभावना । रामचन्द्रिका-11/41

उपमा—हिडिम्बा के लिए उपमान । सेनापति कर्ण-पृ० 80

द्रौपदी के लिए उपमान । सेनापति कर्ण-पृ० 110, 156

द्रौपदी के केशों के लिए कृत्या की जटा उपमान । वही-पृ० 146

काव्यलिंग, उपमा—कृतकृत्य करने में कृत्या कारण । द्रौपदी-पृ० 23

साभिप्राय विशेषण का कथन ।

रूपक—द्रौपदी पर कृत्या का आरोप । सुवर्णा-पृ० 64

सोत्प्रेक्षा रूपक—गांडीव मौर्वी पर कृत्या के आरोप की संभावना । जयद्रथ-वध

प्रतीक

विनाशिनी शक्ति । द्रौपदी-पृ० 23

आसुरी वृत्ति प्रधान नारी । द्रौपदी-पृ० 52

जीवन-दर्शन

नारी-भावना।	द्रौपदी-पृ० 52, सेनापति कर्ण-पृ०-155-156

कृष्ण सम्बन्धी कथाएं
कृष्णावतार

अलंकार

उदात्त—भगवान के औदात्य का कथन।	रामचन्द्रिका-20/23
उदाहरण—अल्पायु में पराक्रम प्रदर्शन।	पद्मावत-614/6, 614/52
उल्लेख—शिवाजी का अनेक प्रकार से उल्लेख।	भूषण-भारती-पृ० 26 (शिवा-भूषण)
पर्यायोक्ति—शिवाजी के अवतार का चतुरता से कथन।	भूषण-ग्रंथावली, पद 11 (शिवा-भूषण)
निदर्शना—(योगमाया का जन्म)—माया से सम्बन्ध स्थापित।	छत्रप्रकाश-पृ० 6
हेतु—कृष्ण अवतार का हेतु कंस वध।	भूषण-ग्रंथावली-पद-350

दृष्टान्त

(कृष्ण का नन्द द्वारा पालित होना) दूसरे का बेटा अपना न होना।	ज्ञानदीप, छंद-297

प्रतीक

कृष्ण—साहसी बालक का प्रतीक।	पद्मावत-614/52

पूतना-उद्धार

अलंकार

अर्थान्तरन्यास—दुष्टों के वचन और वेश से पहचान नहीं।	दोहावली, दो० 408
उदात्त—श्रीकृष्ण। भगवान के औदात्य का कथन।	कृष्णायन (बिसाहूराम) पृ० 142 द्वारका-प्रवेश, पृ० 26 कार्तिक-स्नान पद-5, (भा०ग्रं०) प्रातः स्मरण स्तोत्र, पद-5, (भा० ग्रं०) स्फुट कविताएं, पद-8 (भारतेन्दु ग्रंथावली) मतिराम-सतसई-700

	रुक्मिणी-परिणय, पृ० 56
	विनय-पत्रिका-पद-214
	श्री बृजविहार-पृ० 10
	सूरसागर-पद-27, 49, 1046, 1105, 1572, 3645, 3646, 3648, 4668
उदात्त, काव्यलिंग—श्रीकृष्ण के महत्त्व का कथन।	स्फुट कविताएं—पद-8 (भारन्तेदु-ग्रंथावली)
पूतना का हेतु सुत-वध।	
उदात्त, रूपक—कृष्ण के औदात्य का कथन।	कृष्णायन (बिसाहूराम) पृ० 59
कंस पर मयंक का आरोप।	
उत्प्रेक्षा—ज्यों मानो के अर्थ में।	महारास-पृ० 129
काव्यलिंग—पूतना को भेजने का हेतु कृष्ण-हत्या।	देवकी, पृ० 61
भरोसे का हेतु पतितपावनता।	सूरसागर, पद-122
भय का हेतु पूतना-वध।	वही पद-3542
सोच में न पड़ने का हेतु पूतना-वध।	वही पद-3544
न डरने का हेतु पूतना-वध।	वही पद-3595
संदेह-संकर	रसिकाप्रिया-1/1
स्मरण—गोपियों द्वारा कृष्ण के कार्यों का स्मरण।	तन्मय-लीला, पद-3 (भा० ग्रं०)

दृष्टान्त

श्रीकृष्ण के पौरुष की पुष्टि।	अलौकिक-लीला-5/37
श्रीकृष्ण के औदात्य की पुष्टि।	कृष्णायन (बिसाहूराम) पृ०188
पुरुषों की निष्ठुरता की पुष्टि।	गीत-गोविन्द, पद-30 (भारतेन्दु-ग्रंथावली)
भ्रातृ-भाव स्थाई नहीं।	पृथ्वीराज-रासौ-26/26
कृष्ण के रूप रहस्य पर व्यंग्य।	विश्राम-सागर, पृ० 350
होनी की प्रबलता की पुष्टि।	सूरसागर, पद-2016
शक्ति की प्रामाणिकता।	सूरसागर, पद-1116, 4702

उल्लेख

केशी आदि असुरों का कृष्ण के पौरुष का स्मरण कर भयभीत होना।	कृष्णायन-1/147
मथुरावासियों में कृष्ण के द्वारा किए गए महान	कृष्णायन 2/24

कार्यों की चर्चा।	
मथुरा से कृष्ण को धनुष-यज्ञ निमंत्रण आने पर ब्रजवासियों द्वारा ब्रज में आए कष्टों का उल्लेख।	प्रिय-प्रवास-2/35

वचन-वक्रता

उपालम्भमूलक विरह।	महारास पृ० 165
शत्रु के ख्याति प्राप्त कार्यों को तुच्छ बनाने के लिए।	कृष्णायन, 2/149 द्वारका-प्रवेश, पृ० 59-66
उपालम्भमूलक।	सूरसागर, पद-138, 145, 3826
वियोग प्रस्तुतीकरण के लिए।	सूरसागर, पद-4003, 4362, 4485, 4687

औचित्य

निन्दा-औचित्य।	कृष्णायन, 4/52, 2/149
क्रिया-औचित्य।	द्वापर, पृ० 19
विप्रलम्भ श्रृंगार।	भारतेन्दु-ग्रंथावली
नाम-औचित्य।	देवकी, पृ० 63

शकट-भंजन

अलंकार

उदात्त—कृष्ण के औदात्य (महत्ता, शौर्य) का कथन।	कार्तिक-स्नान, पद-5 (भा० ग्रं०) देवकी, पृ० 160 सूरसागर, पद-1105, 1217, 1572, 3648, 4668
काव्यलिंग—निराश न होने का हेतु शकटासुर का नाश।	महारास, पृ० 128
सोच में न पड़ने का हेतु शकट-वध।	सूरसागर, पद-3544
स्मरण—गोपियों द्वारा कृष्ण के कार्यों का स्मरण।	तन्मय-लीला, पद-3 (भा० ग्रं०)

दृष्टान्त

होनी की प्रबलता की पुष्टि।	सूरसागर, पद-2016

उल्लेख

केशी आदि असुरों का कृष्ण के पौरुष को स्मरण कर भयभीत होना।	कृष्णायन, 1/147
कृष्ण पर आए कष्टों के सम्बन्ध में देवकी की	देवकी, पृ० 79

चिन्ता।

वचन-वक्रता

शत्रु के ख्याति प्राप्त कार्यों को तुच्छ बताना।	कृष्णायन, 2/149
शक्ति की प्रामाणिकया।	सूरसागर, पद-1/16
वियोग प्रस्तुतीकरण।	—वही, 4485

औचित्य

निन्दा—औचित्य।	कृष्णायन, 2/49
अलंकार—औचित्य।	भारतेन्दु-ग्रंथावली

तृणावर्त-वध

अलंकार

उदात्त—कृष्ण की महत्ता और शौर्य का कथन।	देवकी, पृ० 160 प्रात: स्मरण स्तोत्र, पद-5 (भा० ग्रं०) व्रज विहार, पृ० 10 सूरसागर, पद-27, 1046, 1105, 1214, 1572, 3646, 3648, 3649, 4668
उदाहरण—दुष्टों का उदाहरण।	महारास, पृ० 158
काव्यलिंग—सबके दुख हरण का हेतु, तृणावर्त	महारास, पृ० 128
सोच में पड़ने का हेतु, तृणावर्त-वध।	सूरसागर, पद-3544
न डरने का हेतु तृणावर्त-वध।	—वही-3595
रूपकातिशयोक्ति-परिकर—केवल सांसारिक आधि-व्याधि का उल्लेख। श्यामघन साभिप्राय विशेषण।	निवेदन-पंचक, पद-1 (भा० ग्रं०)

दृष्टान्त

श्रीकृष्ण के पौरुष की पुष्टि।	अलौकिक-लीला, 5/36
होनी की प्रबलता की पुष्टि।	सूरसागर, पद-2010

उल्लेख

मथुरावासियों द्वारा कृष्ण के द्वारा दिए गए महान कार्यों की चर्चा।	कृष्णायन, 2/24
व्रजवासियों द्वारा व्रज में आए कष्टों का उल्लेख।	कृष्णायन, 2/43
केशी आदि असुरों द्वारा कृष्ण के पौरुष को	कृष्णायन, 1/147

स्मरण कर भयभीत होना।

प्रतीक

तृणावर्त-आसुरी कृत्तियों का पोषक। दुष्ट तृणावर्त-आधि-व्याधि।	गोपिका, पृ० 28 द्वापर, पृ० 162 निवेदन-पंचक (भा० ग्रं०) पृ० 719

वचन-वक्रता

उपालम्भमूलक विरह।	महारास, पृ० 165
बल की प्रामाणिकता।	सूरसागर, पद-1116
वियोग प्रस्तुतीकरण।	सूरसागर, पद-4363, 4485, 4687
स्मरण, उपालम्भ।	सूरसागर, पद-4648

औचित्य

विचार-औचित्य।	द्वापर, पृ० 57
पद-औचित्य।	निवेदन-पंचक, पद-1 (भा० ग्रं०)

कृष्ण का ऊखल बंधन

अलंकार

काव्यलिग—ऊखल से बंधने का हेतु कुसंग।	कूबरी, 6/13

औचित्य

उपालम्भ औचित्य।	कूबरी, 3/8

कृष्ण का मिट्टी खाना

अलंकार

काव्यलिग—शिकायत में हेतु मिट्टी का खाना और कृष्ण को डराने धमकाने का कारण मिट्टी उगलवाना।	देवकी, पृ० 91
सन्देह—दृष्टान्त द्वारा निश्चयान्त सन्देह।	देवकी, पृ०-91

औचित्य

उपालम्भ-औचित्य।	देवकी, पृ० 91

यमलार्जुन-उद्धार

अलंकार

उदात्त—कृष्ण। भगवान के औदात्य का वर्णन।	ललन-सागर, पद-54, 481, 496, 944

	विनय-पत्रिका, पद-68, 78, 101
	सूरसागर, पद-7, 25, 27, 1117, 3645
काव्यलिंग—हेतु-भक्त हित।	सूरसागर-पद-26
भरोसे का हेतु पतितपावनता।	सूरसागर, पद-122
दृष्टान्त	
दुष्टों की भी गति।	विनय-पत्रिका, पद-262
उल्लेख	
व्रजवासियों द्वारा व्रज में आए कष्टों का उल्लेख।	प्रियप्रवास-2/46
वचन वक्रता	
शत्रु के ख्याति प्राप्त कार्यों को तुच्छ बताने के लिए।	कृष्णायन-2/149
औदात्य-कथन।	विनय-पत्रिका, पद-97
वियोग प्रस्तुतीकरण।	सूरसागर, पद-4363

कालिय दहन

अलंकार	
अतिशयोक्ति—गन्धर्वसेन की गर्वोक्ति।	पद्मावत-576/5
अर्थान्तरन्यास—दुख देकर सुख प्राप्ति का समर्थन नहीं।	राधा, पृ० 51
उत्प्रेक्षा—अलाउद्दीन द्वारा रतनसेन को कैदी बनाने में संभावना।	पद्मावत-576/5
जमुना जल में कालिय विष की संभावना।	भूषण-ग्रंथावली-पद-64 (फुटकर)
उदात्त—कृष्ण। भगवान की महानता एवं शौर्य का वर्णन।	अलौकिक-लीला-सर्ग-3 (प्रेमघन-सर्वस्व) द्वापर-पृ० 73, 221 पद्माकर-पचामृत-पृ 20, 21 भारतेन्दु-ग्रंथावली (कार्तिक-स्तान, पद-5, गीत-गोविन्दानन्द, पद-15 प्रातः स्मरण स्तोत्र, पद-5 ललन-सागर, पद-54 विनय पत्रिका-पद-49

	वृंद-ग्रंथावली-स्फुट छंद-139
	सूरसागर-पद-27, 121, 1572 3648
उदात्त, काव्यलिंग—श्रीकृष्ण के चरणों की श्रेष्ठता का कथन।	मीरा-पदावली,पद-1
कालिय के तरने का हेतु चरण-स्पर्श।	
उदात्त, रूपक—कृष्ण के औदात्य का कथन।	सुवर्णा, पृ० 61
जीवन पर जल का अन्तर्स्थल पर जल का आरोप।	
उदाहरण—राधा के दृग-नर्तन में कृष्ण के कालिय नर्तन का साम्य। क्रियायें दो, अतः उदाहरण।	प्रेम माधुरी, पद-33 (भा०ग्रं०)
रणसिंह द्वारा पंगुराज की सेना से युद्ध का उदाहरण।	पृथ्वीराज रासौ-25/24
उपमा—वेणी की कालिय नाग से तुलना।	पद्मावत,115/6
कर्ण के लिए कालिय उपमान।	सुवर्णा, पृ० 5
काकु वक्रोक्ति—कृष्ण की दुर्बलता की व्यंजना।	राधा, पृ० 31
काव्यलिंग—निशंक करने का हेतु काली का आतंक मिटाना।	महारास, पृ० 129
सुख का हेतु, कालिय दमन।	वृंद ग्रंथावली, स्फुट छंद-26
प्रतिषेध—निषेध से प्रतिषेध।	काव्य निर्णय-15/52
प्रतीप, अनन्वय—वेणी सा कालिय बताये जाने के कारण प्रतीप।	प्रेम माधुरी, पद 33 (भारतेन्दु-ग्रंथावली)
'उपमा न चाली है, में अनन्वय।	
रूपक—घृणा पर कालिय नाग का आरोप।	अंधायुग, पृ० 75
वेणी पर नाग का आरोप।	पद्मावत-115/5
काम पर कालिय का आरोप।	सुवर्णा, पृ० 62, 145

दृष्टान्त

पौरुष पर कालिय का आरोप।	अलौकिक लीला-5/37
कंस के कुचक्रों की पुष्टि।	मधुपर्क-10/13
नाम से उद्धार।	वृंद ग्रंथावली-स्फुट छंद, पृ० 26

प्रतीक

विषधर काली—भयंकर कष्ट।	शृंगार लहरी, पद-66 (रत्नाकर)
कालिय बिष-भयंकर कष्ट।	गोपिका, पृ० 67

कालिय—अन्यायी, दुष्ट।	गोपिका, पृ० 109
कालिय—दुष्ट व्यक्ति।	गोपिका, पृ० 177
कालिय—कलुष हृदय।	सुवर्णा, पृ० 155

उल्लेख

यशोदा द्वारा कृष्ण की बाल लीलाओं का उल्लेख।	द्वापर, पृ० 24
कृष्ण द्वारा किए गए कार्यों का उद्धव से एक वृद्ध गोप का कथन।	प्रिय प्रवास-11/11-39
राधा द्वारा कृष्ण के द्वारा किए गए कार्यों का उल्लेख।	कनुप्रिया, पृ० 36
	राधा, पृ० 45
	सूरसागर, पद-574, 575, 576, 577, 3411

वचन-वक्रता

उपालम्भमूलक विरह।	महारास, पृ० 165
वियोग प्रस्तुतीकरण के लिए।	प्रियप्रवास, 10 95
शक्ति की प्रामाणिकता।	सूरसागर, पद-1116
विप्रलम्भमूलक।	सूरसागर, पद-3823, 3826, 4482, 4687, 4702

औचित्य

मंगलाचरण।	वीरसतसई, पृ० 1
पश्चाताप।	देवकी, पृ० 111
रस।	पद्माकर पंचामृत, पृ० 220, 221

जीवन दर्शन

ईश्वर आस्था।	प्रेमघन सर्वस्व, पृ० 118 (अलौकिक लीला)
गर्व त्याग।	विश्राम सागर, पृ० 331

वत्सासुर वध

अलंकार

अपह्नुति—वत्स का निषेध कर वाघ का आरोप।	द्वापर, पृ० 36
कृष्ण के औदात्य का कथन।	पद्माकर-पंचामृत-पृ० 1 (घृत)
उदात्त—कृष्ण की महानता का कथन।	प्रातः स्मरण स्तोत्र, पद-5

	(भारतेन्दु-ग्रंथावली)
काव्यलिंग—यथाक्रम—गो-घातक होने का कारण वत्स-वध, वत्स-वध से गो-घातक का सम्बन्ध।	द्वापर, पृ० 36

दृष्टान्त

बलराम और श्रीकृष्ण के पौरुष का कथन।	अलौकिक-लीला-5/37

उल्लेख

केशी आदि असुरों का कृष्ण के पौरुष को स्मरण कर भयभीत होना।	कृष्णायन, 1/147
ब्रजवासियों द्वारा ब्रज में आए कष्टों का उल्लेख।	प्रिय-प्रवास-2/47

वचन-वक्रता

उपालम्भमूलक विरह।	महारास, पृ० 165

औचित्य

रस-औचित्य।	काव्य-निर्णय-5/6

बकासुर-वध

अलंकार

उदात्त—कृष्ण के औदात्य का कथन	द्वापर, पृ० 73 द्वारका-प्रवेश, पृ० 26 देवकी, पृ० 160 पद्माकर-पंचामृत-पृ० 1 (घृत) प्रातः स्मरण स्तोत्र, पद-5 (भा० ग्रं०) सूर सागर, पद-27, 1105, 1214, 1572, 3645, 3646 2648, 4698, 4687
उदाहरण—ब्रजजनों पर कृपा करने के लिए दुष्टों का उदाहरण।	ब्रजचन्द्र-विनोद, (पूर्वार्द्ध) पृ० 132 सूरसागर, पद-158
काव्यलिंग—सोच में न पड़ने का हेतु बक-वध।	सूरसागर, पद-3544
न डरने का हेतु बक-वध।	वही, 3596
प्रतिषेध—निषेध से प्रतिषेध।	काव्य निर्णय-13/52
स्मरण—गोपियों द्वारा कृष्ण के कार्यों का स्मरण।	तन्मय-लीला, पद-3 (भा० ग्रं०)

दृष्टान्त

बलराम व श्रीकृष्ण के पौरुष की पुष्टि।	अलौकिक-लीला-5/36

उल्लेख

कंस के रजक का अपने सजातियों के वध के सम्बन्ध में कथन।	कृष्णायन, 2/18
मथुरावासियों द्वारा कृष्ण के द्वारा किए गए महान कार्यों की चर्चा।	कृष्णायन, 2/24
ब्रजवासियों द्वारा ब्रज में आए कष्टों का उल्लेख।	कृष्णायन, 2/47
कृष्ण पर आए कष्टों की देवकी द्वारा चिन्ता।	देवकी, पृ० 79

प्रतीक

बकासुर-अन्यायी।	गोपिका, पृ० 109, 117
बकासुर-दुष्ट व्यक्ति।	मधुपर्क 5/63

वचन-वक्रता

शत्रु के ख्याति-प्राप्त कार्यों को तुच्छ बताना।	कृष्णायन, 2/149 द्वारका-प्रवेश, पृ० 59-60
वियोग प्रस्तुतीकरण के लिए।	द्वापर, पृ० 185 सूरसागर, पद-4363, 4482
उपालम्भमूलक विरह।	महारास, पृ० 165
बल की प्रामाणिकता।	सूरसागर, पद-1115, 3433, 3823, 3826

औचित्य

निन्दा-औचित्य।	कृष्णायन, 2/149
विप्रलम्भ-शृंगार।	भारतेन्दु-ग्रंथावली

अघासुर वध

अलंकार

उदात्त—कृष्ण के औदात्य का कथन।	कार्तिक-स्नान, पद-5 (भा० ग्रं०) द्वारका-प्रवेश, पृ० 26 देवकी, पृ० 160 प्रातः स्मरण स्तोत्र, पद-5 (भा० ग्रं०) महारास, पृ० 129 सूरसागर, पद-27, 121, 1105

	1214, 3646, 3648, 4668
उदाहरण—सेना की रक्षा का उदाहरण।	बिहारी-सतसई-दो० 553
उदाहरण--दुष्टों का उदाहरण।	सूरसागर, पद-158
काव्यलिंग—न डरने का हेतु अघासुर-वध।	वही, पद-3595

दृष्टान्त

श्रीकृष्ण के पौरुष की पुष्टि।	अलौकिक-लीला, 5/36

प्रतीक

अघासुर—दुष्ट या आसुरीवृत्तियों का पोषक।	गोपिका, पृ० 177 मधुपर्क, 5/63

उल्लेख

मथुरावासियों द्वारा कृष्ण के द्वारा किए गए महान कार्यों की चिन्ता।	कृष्णायन, 2/24
ब्रजवासियों द्वारा ब्रज में आए कष्टों का उल्लेख।	कृष्णायन, 2/47
ब्रज के ग्वाल-वालों द्वारा कृष्ण के कार्यों का स्मरण।	द्वापर, पृ० 73
कृष्ण पर आए कष्टों की देवकी द्वारा चिन्ता का कथन।	देवकी, पृ० 79
एक ग्वाले द्वारा कृष्ण के कार्यों का उद्धव से कथन।	प्रियप्रवास, 13/37

वचन-वक्रता

रस प्रतिपादन।	काव्य-निर्णय-5/6
वियोग प्रस्तुतीकरण के लिए।	द्वापर, पृ० 185 द्वारका-प्रवेश, पृ० 59-60 सूरसागर, पद-4363, 4687, 4702

औचित्य

रस औचित्य	काव्य-निर्णय-5/6
विप्रलम्भमूलक शृंगार	सूरसागर, पद-1115, 1116, 3832

जीवन-दर्शन

ईश्वर की आस्था।	भारतेन्दु-ग्रंथावली। प्रेमघन-सर्वस्व, पृ० 118 (अलौकिक-लीला)

ब्रह्मा-मोह

उदात्त—श्रीकृष्ण की महत्ता का कथन ।	सुवर्णा, पृ० 62
कृष्ण के औदात्य का कथन ।	सूरसागर, पद-30, 4668

दावानल-पान

अलंकार

उदात्त—कृष्ण के औदात्य का कथन ।	अलौकिक-लीला, सर्ग-3 (प्रेमघन-सर्वस्य)
	सूरसागर, पद-27, 121
कृष्ण की प्रतिज्ञाबद्ध शूरता का वर्णन ।	महारास, पृ० 129
उदाहरण—दुष्टों का उदाहरण ।	सूरसागर, पद-158
काव्यलिंग—संघ-संपदा का हेतु व्यापक निन्दा ।	द्वापर, पृ० 57
भक्त हित हेतु ।	सूरसागर, पद-26
परिकर—दावानल पायी साभिप्राय विशेषण ।	सुवर्णा, पृ० 138
प्रतिषेध—निषेध से प्रतिषेध ।	काव्य-निर्णय-15/12
रत्नावली—श्रीकृष्ण के अनेक कार्यों का उल्लेख ।	रसिकप्रिया-1/1
रूपक—आलस्य पर दावानल का आरोप ।	प्रबोधिनी, पद-17 (भा० ग्रं०)
आवागमन (जन्म-मरण) पर दावानल का आरोप ।	भगवान श्रीकृष्ण लीलामृत, पृ० 1
रूपक, परिकर, श्लेष—दुसह दुख पर दावानल का आरोप तथा श्याम पर घन का आरोप । श्यामघन साभिप्राय विशेषण । जीवन में श्लेष ।	निवेदन-पंचक-पद-1 (भा० ग्रं०)
व्यतिरेक—गोपियों के विरहताप को दावानल से अधिक उष्ण बताया जाना ।	उद्धव-शतक, पद-131

दृष्टान्त

पौरुष की पुष्टि ।	अलौकिक-लीला, 5/36
भक्त-वत्सलता की पुष्टि ।	सूरसागर, पद-17

प्रतीक

दाव-दाह-भयंकर आपात्ति ।	गोपिका, पृ० 67

उल्लेख

एक गोप का वन में कृष्ण द्वारा किए गए कार्यों का उल्लेख ।	प्रिय-प्रवास, 11/96

वचन-वाक्रता	
उपालम्भ मूलक विरह।	भंवरगीत (प्रागन), पद-31 महारास-पृ० 165
शक्ति की प्रामाणिकता।	सूरसागर, पद 1115, 1116
प्रेम की प्रामाणिकता।	सूरसागर, पद-3433
वियोग प्रस्तुतीकरण।	सूरगसर, पद-3826, 4408
औचित्य	
रसौचित्य।	काव्य-निर्णय-5/6
उपालम्भ-औचित्य।	कूबरी, पृ० 318
विचार-औचित्य।	द्वापर, पृ० 57
पद-औचित्य।	निवेदक-पंचक, पद-1 (भा० ग्रं०)
विशेषण, आशीर्वचन।	सुवर्णा, पृ० 138

श्रीकृष्ण द्वारा गोचारण

अलंकार	
उदात्त—कृष्ण के औदात्य का कथन।	प्रातः स्मरण स्तोत्र, पद-5 (भा० ग्रं०)
प्रतिषेध—निषेध से प्रतिषेध।	काव्य-निर्णय-15/52
वचन-वक्रता	
अधिक्षेपमूलक (अनुचित-निन्दा)	अंगराज, पृ० 134 ऊषाहरण, पृ० 52
औचित्य	
वात्सल्य रसौचित्य।	ऊपाहरण, पृ० 52
निन्दा औचित्य।	भंवरगीत, पृ० 77

कृष्ण द्वारा गोपी चीर हरण

अलंकार	
हीनोदात्त—चीरहरण लोक दृष्टि से हीन कार्य।	प्रेम-मालिका, पद-92 (भा० ग्रं०) महारास, पृ० 129 ललन-सागर, पद-969
रूपक—कृष्ण प्रेम पर कालिन्दी का और सर्वात्मनेन पर तन मन अर्पण की कविता का	सुवर्णा, पृ० 145

आरोप ।

वचन-वक्रता—उपालम्भमूलक भक्ति । — हृदय-तरंग, पृ० 15

इन्द्रमान मर्दन/गोवर्धन धारण

अलंकार

अर्थान्तरन्यास—अभिमान के दुखदायक होने का समर्थन । — विश्राम-सागर, पृ० 331

उदात्त—कृष्ण । भगवान के औदात्य का कथन । — द्वापर, पृ० 55

नटनागर विनोद, पृ० 331
पद्माकर पंचामृत-पृ० 1, 221,
पदावली (आनन्दघन) पद-156
प्रातः स्मरण स्तोत्र, पद-5 (भा० ग्रं०)
बिहारी-सतसई-421, 621
बृज बिहार, पृ० 10
बोधा-ग्रंथावली-(विरह वारीष) 1/2
भंवरगीत, पृ० 57
मधुपुरी, 2/20
मीरा-पदावली-2 (कृष्ण रूपमाधुरी)
राधा, पृ० 55
ललन-सागर, पद-496
विनय-पत्रिका, पद-56
सतसई-शृंगार, पद 18, 19, 20 (भा० ग्रं०)
सुवर्णा, पृ० 63, 146

गोपियों द्वारा आयोजित रास (नाटक) की श्रेष्ठता व्यंजित । — महारास, पृ० 129

उदात्त, काकु वक्रोक्ति—कृष्ण का पौरुष व्यंजित । — कनुप्रिया, पृ० 37

'तुम वह कृष्ण नहीं' से काकु-वक्रोक्ति ।

उदात्त, काव्यलिंग—चरणों की श्रेष्ठता का कथन।	मीरा पदावली पद-1
तरने का हेतु चरणों की श्रेष्ठता।	
अनुप्रास—	वृंद-ग्रंथावली-पृ० 14
उदाहरण—चम्पतराय द्वारा बुन्देल-कुल की रक्षा।	छत्रप्रकाश-पृ० 28
कष्ट निवारण का उदाहरण।	सूरसागर, पद-158
व्रज को डूबने से बचाने का हेतु कृष्ण का व्रज में आना।	कृष्णायन, 2/180
काव्यलिंग—बात रहने का हेतु गिरवर धारण।	उद्धव-शतक, पद-94
गोवर्धन न उठाने का कारण कूबरी के कूबर से न उबर पाना।	उद्धव-शतक, पद-95
व्रज के जलने का कारण कृष्ण का अन्यत्र चला जाना।	उद्धव-शतक (रसाल) पद-62
कहने में उन्माद की स्थिति कारण।	तन्मय-लीला, पद- (भा० ग्रं०)
राधा की उसांसों का हेतु कृष्ण का कुब्जा के पास होना।	पद्‌माकर-पंचामृत, पृ० 209
व्रज के डूबने का हेतु गिरवर धारण।	मतिराम-सतसई, पृ० 716
इन्द्र के मान मर्दन का हेतु भक्त रक्षा।	विनय-पत्रिका, पद-97
विजित बादलों का दुखदाई होना।	पद्‌माकर पंचामृत-पृ० 65
प्रत्यनीक—इन्द्र द्वारा व्रजवासियों से बदला लेना।	भ्रमर दूत (हृदय तरंग) पृ०-58
प्रत्यनीक, यमक—इन्द्र द्वारा अपने विरोधी व्रजवासियों से बदला लेना।	उद्धव-शतक (रसाल) पद-54
घनश्याम शब्द के अलग-अलग अर्थ। (कृष्ण, बादल)	
प्रतिषेध—निषेध से प्रतिषेध।	काव्य-निर्णय-15/15
यमक—व्रजवासी के दो अर्थ व्यंजित।	उद्धव-शतक (रसाल)
प्रथम—व्रज की बाड़ियां, द्वितीय-व्रजबालाएं।	पद-62
व्याजस्तुति—श्रीकृष्ण के पौरुष का कथन।	काव्य-निर्णय-5/6
सन्देह, उत्प्रेक्षा—पृथ्वीराज के सांग उठाने में कृष्ण द्वारा गोवर्धन-धारण की संभावना।	पृथ्वीराज-रासौ-21/59

दृष्टान्त

बलराम और श्रीकृष्ण के पौरुष की पुष्टि।	अलौकिक-लीला-5/37 (प्रेमधन-सर्वस्व)

भगवान द्वारा शरणागत की रक्षा करने की पुष्टि ।	सूरसागर, पद-14
भक्त वत्सलता की पुष्टि ।	सूरसागर, पद-17, 22, 171, 202
भगवान के भक्तों पर कभी कष्ट न पड़ने की पुष्टि	सूरसागर, पद-37
प्रतीक	
गोवर्धन—यश स्थिरता ।	द्वापर, पृ० 193
सुरपति—अध्यात्म । पहाड़ (गोवर्धन)—भौतिकता ।	राधा, पृ० 88
उल्लेख	
बलराम द्वारा अक्रूर को व्रज अवलोकन कराना ।	कृष्णायन, 2/20
गोपदल का व्रज में कृष्ण द्वारा किए गए कार्यों का उद्धव से कथन ।	प्रियप्रवास, 12/20-70
राधा का कृष्ण द्वारा किए गए कार्यों का स्मरण ।	महारास, पृ० 107
सात्यकि द्वारा यादवों (कृष्ण) के शौर्य का उल्लेख ।	वृंद ग्रंथावली-स्फुट छंद, पृ० 21 सेनापति कर्ण, पृ० 12
वचन-वक्रता	
रस प्रतिपादन ।	काव्य-निर्णय-5/6
उपालम्भमूलक विरह ।	कृष्णायन, 1/183
शत्रु के ख्याति—प्राप्त कार्यों को तुच्छ बनाना ।	कृष्णायन, 2/30, 2/149 प्रियप्रवास, 10/95 भंवरगीत (प्रागन) पद-3 महारास-पृ० 165 बिहारी-सतसई-150
उपालम्भमूलक स्मरण ।	सूरसागर, पद-4648
वियोग प्रस्तुतीकरण ।	सूरसागर, पद-4363,4408, 4482,4687
औचित्य	
क्रिया—औचित्य ।	उद्धव-शतक (रसाल) पद-62, 213
उपालम्भ—औचित्य ।	कूबरी, 3/8
रस (विप्रलम्भश्रृंगार)	कृष्णायन, 2/180
निन्दा—औचित्य ।	भारतेन्दु-ग्रंथावली ।

नाम—औचित्य।	कृष्णायन, 3/127
	द्वापर, पृ० 71
प्रतिकार—औचित्य।	देवकी, पृ०133
विचार—औचित्य।	राधा, पृ० 88
विनोद—औचित्य।	सूरसागर, पद-1691

जीवन-दर्शन

ईश्वर—आस्था।	प्रेमघन-सर्वस्व, पृ० 118 (अलौकिक-लीला)
भौतिकता और अध्यात्म का समन्वय।	राधा, पृ० 88

वरुण लोक से नन्द को छुड़ाना

अलंकार

उदात्त—कृष्ण के औदात्य का कथन।	सूरसागर, पद-27

दृष्टान्त

भक्त—वत्सलता की पुष्टि	—वही-पद-17

उल्लेख

नन्द द्वारा कृष्ण के कार्यों का उल्लेख।	प्रिय प्रवास, 13/36

रास-लीला। गोपियों से प्रेम

अलंकार

उदाहरण—देवजानी और ज्ञानदीप का मिलन।	ज्ञानदीप, छंद-164
सभंग यमक—(कृष्ण का वेणु वादन),	वृंद ग्रंथावली, पृ० 515

वचन.वक्रता

शत्रु के ख्याति प्राप्त कार्यों का तुच्छ बताने के लिए।	कृष्णायन, 2/149

औचित्य

निन्दा—औचित्य।	कृष्णायन, 2/149
विप्रलम्भ श्रृंगार।	भारतेन्दु-ग्रंथवाली।

सुदर्शन उद्धार

अलंकार

उदात्त—कृष्ण के औदात्य का वर्णन।	सूरसागर, पद-679

दृष्टान्त

बलराम और श्रीकृष्ण के पौरुष की पुष्टि।	अलौकिक-लीला, 5/37

उल्लेख

नन्द द्वारा कृष्ण के कार्यों का उल्लेख। प्रिय-प्रवास, 13/37

शंखचूड़ वध

अलंकार

उदात्त—कृष्ण के औदात्य का वर्णन। सूरसागर, पद-27

दृष्टान्त

श्रीकृष्ण के पौरुष का कथन। अलौकिक-लीला, 5/37 (प्रेमघन-सर्वस्व।)

अरिष्टासुर वध। वृषभासुर वध

अलंकार

उदात्त—कृष्ण के औदात्य का कथन। सूरसागर, पद-3433, 3826

काव्यलिंग—भरोसे का हेतु पतित पावनता। सूरसागर, पद-122

दृष्टान्त

पौरुष की पुष्टि। अलौकिक-लीला, 5/36 (प्रेमघन सर्वस्व)

होनी की प्रबलता। सूरसागर, पद-2016

उल्लेख

भेजे गए असुरों के वध से कंस को दुख होना। प्रिय-प्रवास, 1/164

ब्रजवासियों द्वारा ब्रज में आए कष्टों का उल्लेख। प्रिय-प्रवास, 2/46

एक ग्वाले का कृष्ण के कार्यों का उद्धव से कथन। प्रिय-प्रवास, 13/61-62

वचन-वक्रता

शत्रु के ख्याति प्राप्त कार्यों को तुच्छ बताना। कृष्णायन, 2/149

उपालम्भमूलक विरह। महारास, पृ० 165

शक्ति की प्रामाणिकता। सूरसागर, पद-1/16

वियोग प्रस्तुतीकरण के लिए। सूरसागर, पद-4485, 4702

औचित्य

निन्दा-औचित्य। कृष्णायन, 2/149

जीवन-दर्शन

ईश्वर में आस्था। अलौकिक लीला, पृ० 118 (प्रेमघन-सर्वस्व)

केशी-वध

अलंकार

उदात्त—श्रीकृष्ण के औदात्य का कथन।	देवकी, पृ० 160 पद्माकर-पंचामृत, पृ०। (घृत) प्रात: स्मरण स्तोत्र, पद-5 (भा० ग्रं०) ब्रज-विहार, पृ० 10 रसिक प्रिया-1/1 वृंद-ग्रंथावली-स्फुट छंद-138,139 सूरसागर पद-27, 120, 121, 123, 1214, 3046, 3648, 3649 3668,
उदाहरण—खलों का उदाहरण।	सूरसागर, पृ० 15
काव्यलिंग—सोच में न पड़ने का हेतु केशी-वध।	सूरसागर, पद-3544

दृष्टान्त

पौरुष की पुष्टि।	अलौकिक-लीला, 5/56 (प्रेमघन-सर्वस्व)
अहंकार का नाश।	सूरसागर, पद-54
होनी की प्रबलता।	वही, पद-2016

उल्लेख

कंस के रजक का अपने सजातियों के वध का कृष्ण से कथन।	कृष्णायन, 2/18
मथुरावासियों का कृष्ण के द्वारा किए गए महान कार्यों की चर्चा करना।	कृष्णायन, 2/24
कृष्ण पर पड़े कष्टों की देवकी द्वारा चिन्ता।	देवकी, पृ० 79
एक ग्वाले द्वारा कृष्ण के कार्यों का उद्धव से कथन।	प्रिय-प्रवास, 13/58

वचन-वक्रता

ख्याति प्राप्त कार्यों को तुच्छ बताने के लिए।	द्वारका-प्रवेश, पृ० 59-60
वियोग प्रस्तुतीकरण।	सूरसागर, पद-44, 85
शक्ति की प्रामाणिकता।	सूरसागर, पद-116

औचित्य

मंगलाचरण-औचित्य । — वीर-सतसई, पृ० 1

जीवन-दर्शन

ईश्वर में आस्था । — प्रेमघन-सर्वस्व, पृ० 118 (अलौकिक-लीला)

व्योमासुर-वध

अलंकार

उदात्त—श्रीकृष्ण के औदात्य का कथन । — द्वारका-प्रवेश, पृ० 26

दृष्टान्त

श्रीकृष्ण के पौरुष की पुष्टि । — अलौकिक-लीला, 5/37 (प्रेमघन सर्वस्व)

उल्लेख

भेजे गए असुरों का वध सुनकर कंस को दुख होना । — कृष्णायन-1/163

कंस के रजक का अपने सजातियों से कथन। — वही, 2/18

मथुरावासियों द्वारा कृष्ण द्वारा किए गए महान कार्यों की चर्चा । — वही-2/24

ब्रजवासियों द्वारा ब्रज में आये कष्टों का उल्लेख । — प्रिय प्रवास-2/48

एक ग्वाले द्वारा कृष्ण के कार्यों का उद्धव से कथन । — प्रिय-प्रवास-13/63-68

वचन-वक्रता

उपालम्भ मूलक । — सूरसागर-पद-39/135

प्रेम की प्रामाणिकता । — सूरसागर-पद-3433

औचित्य

मित्र-औचित्य । — देवकी-पृ० 128

आशीर्वचन-औचित्य ।

कृष्ण का मथुरा गमन/कृष्ण को अक्रूर द्वारा मथुरा ले जाना

अलंकार

उदाहरण—कृष्ण की माझी से उपमा । — इन्द्रावती, फागखंड-4

उदाहरण, उपमा—नायिका के विरह में नायक के दुखी होने की उपमा । — नलदमन, दोहावली-116

काव्यलिंग—दुख का हेतु कृष्ण को ले जाना । — वृन्द-ग्रंथावली, पृ० 590

रूपक—नायक के चले जाने पर नगर के उदास होने पर गोपी और श्रीकृष्ण का आरोप।	इन्द्रावती, पृ० 193
रूपकातिशयोक्ति—कृष्ण की तुलना उस नायक से जो अपनी विवाहिता पत्नी को छोड़कर अन्यत्र जा बसा हो।	इन्द्रावती, फागखंड 5
चपलातिशयोक्ति—उतावली में वर्णन।	

दृष्टान्त

जिस पर वश नहीं चलता, उसे छोड़ना ही पड़ता है।	पद्मावत, 122|1-2
पुरुष स्त्री के यौवन का साथी—यौवन ढलते ही छोड़ भागना।	पद्मावत, 593/49/10
छल से प्रियतम को दूर ले जाना।	पद्मावत, 341/3-7

प्रतीक

विरहावस्था में नायिका को छोड़कर नायक द्वारा चले जाने का प्रतीक।	इन्द्रावती, (पूर्वार्द्ध) फागखंड, छंद-415

कृष्ण का कालिन्दीं से विवाह

दृष्टान्त

प्रिय-वियोग में प्रेमिका की दशा।	पृथ्वीराज रासो-24।156

कुब्जा पर कृपा

अलंकार

उदात्त—कृष्ण के औदात्य का कथन।	सूरसागर, पद-25, 95, 37/6, 37/7
उल्लास—बुराई से भलाई।	नल-दमन, 192/4
ऊर्चस्वी—अलंकार।	काव्य-निर्णय-5/13
काव्यलिंग—दु:ख का कारण कृष्ण का कूबरी का मित्र होना।	ललन-सागर, पद-278
रूपक—कुबुद्धि पर कुब्जा का आरोप।	आनन्दघन (बहोत्तरी) पद-15
रूपक, रूपकातिशयोक्ति—कूबरी पर छाछ का आरोप। गोपियों का उल्लेख कर दधि-माखन (उपमान का) ही उल्लेख।	ललन-सागर, पद-1276
व्यतिरेक—प्रेमाचल (उपमेय) में कूबरी के कूबर (उपमान) से अधिक गुरुता।	उद्धव-शतक, पद-8

विरुद्धालंकार—दासी से प्रेयसी।	काव्य-निर्णय-5/13
सहोक्ति—कान्ह के सम्पर्क से उद्धव का भी बिकना।	—वही, 15/47
दृष्टांत	
भगवान की पतित पावनता की पुष्टि।	मीरा-पदावली, पद 12
भगवान की कृपा से आदर प्राप्ति।	विनय पत्रिका, पद 106
भगवान की भक्त-वत्सलता की पुष्टि।	सूरसागर, पद 21, 35
वचन-वक्रता	
उपालम्भमूलक।	बोधा-ग्रंथावली, पृ० 85 (इश्कनामा)
प्रतीक	
कुब्जा—डरावनी।	गोपिका, पृ० 203
कुब्ज-संस्कार—भौंड़े संस्कार।	राधा, पृ० 78
उल्लेख	
किसी गोपी (राधा) का विरह में उपालम्भ।	प्रेम-तरंग, पद-80, 87 (भा० ग्रं०) प्रेम-प्रलाप, पद-2
वचन वक्रता	
उपालम्भमूलक विरह।	उद्धव-शतक (रत्नाकर) पद-52, 69, 78, 79, 82, 84 ललन- सागर, पद-896
वियोग प्रस्तुतीकरण।	प्रकीर्ण पद्यावली, पद-23 (रत्नाकर) उद्धव-शतक (रत्नाकर) पद-88 सूरसागर, पद-4154
विपरीत लक्षाणामूलक	उद्धव-शतक (रत्नाकर) पद-85 कूबरी, 4/13
उपालम्भमूलक।	सूरसागर, पद-45, 71, 72, 91, 4445, 4473, 4491, 4499, 4527, 4613
औचित्य	
वाक्य-औचित्य।	उद्धव-शतक (रत्नाकर) पद-52
हास्य-औचित्य।	उद्धव-शतक (रत्नाकर), पद-85

विशेषण-औचित्य ।	कूबरी, 4/13
प्रेम-औचित्य, ।	कूबरी, 4/13
उपालम्भ-औचित्य,	भंवरगीत, पद-10, 23, 37
परिणाम-औचित्य ।	
अभिप्राय-औचित्य ।	ललन-सागर, पद-896

रजक पर कृपा

अलंकार

उदात्त—कृष्ण का औदात्य-कथन ।	सूरसागर, पद-120, 3649, 3698, 3704, 3706, 4103
उदाहरण—दुष्टों के लिए उदाहरण ।	सूरसागर, पद-158

कृष्ण द्वारा धनुष भंग

प्रतिषेध—पहले निषेध कर पुनः धनुष भंग का कथन ।	काव्य-निर्णय, 15/52

कुवलयापीड़ वध

अलंकार

उदात्त—श्रीकृष्ण के औदात्य का कथन ।	वृंद-ग्रंथावली-स्फुट छंद-138, 139, 141
	सूरसागर, पद-27, 36, 96, 3698, 3704, 4103
उदाहरण—दुष्टों का उदाहरण ।'	सूरसागर, पद-158
काव्यलिंग-परिवृत्त—गजेन्द्र को प्राण देने में दया दरशाना कारण ।	हृदय-तरंग, पृ० 15 (उपालम्भ)
कुवलया से प्राण लेकर गजेन्द्र को देने में परिवृत्त ।	
विषम—कुवलया जैसे मदमस्त गजेन्द्र और कृष्ण जैसे सुकुमार का एक स्थान पर वर्णन ।	प्रिय-प्रवास, पृ० 31

दृष्टान्त

श्रीकृष्ण के पौरुष की पुष्टि ।	अलौकिक-लीला, 5/36 (प्रेमघन-सर्वस्व)

उल्लेख

यशोदा का कृष्ण द्वारा मथुरा में किए गए	प्रिय-प्रवास, 10/62

कार्यों का उल्लेख।

औचित्य

विचार-औचित्य। — द्वापर, पृ० 163

जीवन-दर्शन

ईश्वर में आशा। — प्रेमघन-सर्वस्व, पृ० 118 (अलौकिक-लीला)

चाणूर और मुष्टिक वध

अलंकार

उदात्त—बलराम व श्रीकृष्ण का औदात्य कथन। — सूरसागर, पद-27, 3696, 3698, 3704, 3705, 3706, 3716, 4103.

उदाहरण—दुष्टों के लिए उदाहरण। — सूरसागर, पद-158

काकु-वक्रोक्ति—काकु-वक्रोक्ति के साथ कृष्ण के बल-औदात्य का कथन। — द्वारका-प्रवेश, पृ० 41

उल्लेख

यशोदा का कृष्ण द्वारा मथुरा में किए गए कार्यों का उल्लेख। — प्रिय-प्रवास, 10/62

वचन वक्रता

वियोग-प्रस्तृतीकरण। — उद्धव-शतक (रत्नाकर), पद-88
सूरसागर, पद-44, 3966, 4154

कृष्ण द्वारा-कंस वध

अलंकार

उत्प्रेक्षा—नायिका के कटाक्ष की तुलना कृष्ण के वाण से। — नलदमन-दो० 090

उदात्त— 1-कृष्ण के औदात्य का कथन। — ऊषा-हरण-पृ० 42
कृष्णायन-4/1
द्वारका -प्रवेश-पृ० 26
प्रात: स्मरण स्तोत्र-पद 5 (भा० ग्रं०)
ब्रज विहार, पृ० 10

	भ्रमरदूत, पृ॰ 51 (हृदय तरंग)
	मतिराम-सतसई-700
	ललन सागर-पद-481
	सुवर्णा-पृ॰ 62
2-श्रीकृष्ण के पौरुष का कथन	सूरसागर-पद-27, 121, 123, 3704, 3705, 3716
	पद्माकर-पंचामृत-पृ॰ 62, 74
3-कृष्णवंश की श्रेष्ठता का कथन ।	भूषण-भारती-दोहावली-2
उदात्त-रूपक—कृष्ण के शौर्य का कथन । कंस पर करि के आरोप के कारण कृष्ण पर केहरि का आरोप, अत: परम्परित ।	वीर सतसई, पृ॰ 1
उदात्त, काव्यलिंग—कृष्ण का औदात्य कथन । कंस के विनाश का हेतु धर्म-विनाश।	कृष्णायन-7147
उदाहरण—शिवाजी और मलेच्छ वंश के लिए उदाहरण ।	भूषण-भारती-दोहावली-8
उदाहरण—दुष्टों के लिए उदाहरण ।	सूरसागर, पृ॰ 158
उदाहरणमाला—शिवाजी और मुगलों के अनेक उपमान ।	शिवा-बावनी-पृ॰20
उपमा—विश्व द्रोहरत पापियों के लिए उपमान।	मधुपुरी-2/19
मालोपमा—शिवाजी के लिए कृष्ण व मलेच्छवंश के लिए कंस उपमान ।	भूषण-ग्रंथावली-पद-56
काकु-वक्रोक्ति—काकु वक्रोक्ति के साथ कृष्ण के बल औदात्य का कथन।	द्वारका-प्रवेश-पृ॰ 41
काव्यलिंग—पतन का हेतु हठ ।	केशव-ग्रंथावली-भाग-3 (वीर॰ चरित्र-11/46-47)
वध का हेतु स्त्री (देवी)	पृथ्वीराज रासो-37/17
कंस वध का हेतु भीड़ ।	वृंद-ग्रंथावली-पृ॰ 592
भाविक—भूत का कथन ।	पद्माकर-पंचामृत-पृ॰ 71
यमक—उग्रसेन-कंस के पिता उग्रसेन-सेना का अधिपति	वृंद-ग्रंथावली (सत्य सरूप रूपक-पृ॰4)
रूपक—पद्मावती की भोहों में कृष्ण के धनुष का आरोप ।	पद्मावत-102/4
शिवा पर कृष्ण औरंगजेब पर कंस का	भूषण-ग्रंथावली-पद-37

आरोप।

दृष्टान्त

भले को भलाई।	कवितावली-7/131
लोभ से विनाश।	केशव-ग्रंथावली-खण्ड-3 (वीर० चारित्र-2/16)
पापी को दंड अवश्य।	पद्मावत-263/1-3
बलवान के आगे न झुकना।	वही, 489/6
दुष्ट के साथ छल करने में दोष नहीं।	पृथ्वीराज, रासौ-26/12
पौरुष का समर्थन।	भूषण भारती-पृष्ठ, 148
होनी की प्रबलता की पुष्टि।	विश्राम-सागर, पृ० 29
भक्त-वत्सलता की पुष्टि।	सूरसागर-पद-17
अहंकार से नाश।	वही, पद-54
तपस्वियों के सताने से नाश।	हंस-जवाहिर- पृ० 126

उल्लेख

वियोगी गुनी द्वारा गायन।	चित्रावली-पृ० 181
अर्जुन के द्वारा कृष्ण के ऐश्वर्य का कथन।	मधुपर्क-13/21

वचन-वक्रता

शत्रु के ख्याति प्राप्ति कार्यों को तुच्छ बताना।	द्वारका-प्रवेश, पृ० 59-60
वीरता की व्यंजना।	पद्माकर पंचामृत-पृ० 197
निन्दामूलक उपहास।	मधु-मुकुल, पद-59 (भा० ग्रं०)
शक्ति की प्रामाणिकता।	सूरसागर, पद-1115
वियोग प्रस्तुतीकरण।	सूरसागर, पद-4154. 4687

औचित्य

कुल।	ऊषा-हरण-पृ० 41
रस।	पद्माकर पंचामृत-पृ० 197
मंगलाचरण।	वीर सतसई, पृ० 1

जीवन-दर्शन

लोक-कल्याण।	कृष्णायन-7/47
पुरुषार्थ।	द्वापर-पृ० 60
नियतिवाद।	विश्राम-सागर, पृ० 291

कृष्ण द्वारा उद्धव को ब्रज में भेजना

अलंकार

अप्रस्तुत प्रशंसा—गोपियों के विरह का	काव्य-निर्णय-12/19

वर्णन।

वचन-वक्रता

	बोधा-ग्रंथावली (इश्कनामा पृ०-84)

मृत-गुरु पुत्र को जीवित करना

अलंकार

उदात्त—श्रीकृष्ण के औदात्य का कथन।	सूरसागर, पद-7, 27, 121
उदाहरण—परीक्षित को जीवित करने का उदाहरण।	कृष्णायन, 7/99
राय शिरोमणि के पुत्र को रायभान द्वारा लाना।	ज्ञानदीप, छंद, 297
उपमा—अभिमन्यु के लिए उपमान गुरु पुत्र।	जयद्रथ-वध, पृ० 57
तुल्ययोगिता—राज शिरोमणि की सुखदेव के प्रति कृतज्ञता।	ज्ञानदीप, छंद-419

दृष्टान्त

भक्त-वत्सलता की पुष्टि।	सूरसागर, पद-17, 18

वचन-वक्रता

उपालम्भमूलक।	सूरसागर, पद-134, 135
प्रेम की प्रामाणिकता।	वही, पद, 3433

औचित्य

भक्ति रसौचित्य।	कृष्णायन, 7/99

जीवन-दर्शन

ईश्वर-आस्था।	कृष्णायन, 7/99

उल्लेख

	सूरसागर, 10/3411

जरासंध के भय से कृष्ण का मथुरा त्यागना। युद्ध क्षेत्र से पलायन

अलंकार

हीनोदात्त—युद्ध क्षेत्र से पलायन वीरोचित धर्म नहीं।	वीर-सतसई-पृ०1

वचन-वक्रता

अधिक्षेप मूलक (अनुचित-निन्दा)	ऊषा-हरण, पृ० 52

औचित्य

निन्दा-औचित्य।	ऊषा-हरण, पृ० 52

कालयवन-वध

अलंकार

अर्थान्तरन्यास—बलशाली शत्रु की बुद्धिबल से पराजय।	वृंद-ग्रंथावली-पृ० 298
बड़ों की कभी पराजय नहीं।	वही, पृ० 365
उदात्त—कृष्ण के शौर्य का कथन।	ऊषा-हरण, पृ० 42
उदात्त, काव्यलिंग—कृष्ण का औदात्य कथन। कालयवन-वध का हेतु धर्म स्थापना।	कृष्णायन, 7/47
उपमा—विदेशी शत्रुओं के लिए उपमान।	कृष्णायन, 7/145

उल्लेख

कृष्ण का धृतराष्ट्र से असुरों के आचरण का उल्लेख।	कृष्णायन, 5/49
अर्जुन द्वारा कृष्ण के ऐश्वर्य का उल्लेख।	मधुपर्क, 13/21

औचित्य

कुल-औचित्य।	ऊषा-हरण, पृ० 42

जीवन-दर्शन

लोक-कल्याण।	कृष्णायन, 4/7

रुक्मिणी हरण। कृष्ण का रुक्मिणी से विवाह

अलंकार

उदात्त—श्रीकृष्ण के औदात्य का कथन।	ऊषा-हरण, पृ० 42
उदाहरण—पृथ्वीराज शशिव्रता के लिए उदाहरण।	पृथ्वीराज-रासो, 23/85
यमक—हरि के दो अर्थ- (हरि-कृष्ण, हरि-हरण करना।	ललन-सागर, पद-480-482
संभग यमक।	वृंद-ग्रंथावली-पृ० 530

वचन-वक्रता

अधिक्षेपमूलक (अनुचित निन्दा)	ऊषा-हरण, पृ० 52

औचित्य

निन्दा-औचित्य।	ऊषा-हरण, पृ० 52
कुल-औचित्य।	ऊषा-हरण, पृ० 42

प्रद्युम्न विवाह। शम्बरासुर वध

अलंकार

उदात्त—प्रद्युम्न के शौर्य का कथन।	ऊषा-हरण, पृ० 43

स्यमन्तक मणि आख्यान । शतधन्वा-वध

अलंकार

उदात्त—(श्रीकृष्ण का जाम्बवन्त से युद्ध) कृष्ण का औदात्य कथन । — सूरसागर, पृ० 839

काव्यलिंग—स्यमन्तक मणि के धारण करने का लोभ । — कृष्णायन, 7/152

उल्लेख

कृष्ण का धृतराष्ट्र से असुरों के आचरण का उल्लेख । — कृष्णायन, 5/49

वचन-वक्रता

शक्ति की प्रामाणिकता । — सूरसागर, पृ० 745

औचित्य

अभिप्राय-औचित्य, विचार-औचित्य । — कृष्णायन, 5/9

श्रीकृष्ण द्वारा मधु का वध

अलंकार

उत्प्रेक्षा—जयचन्द्र का महल मधुपुरी के समान । — पृथ्वीराज-रासो, 2/3/4

निदर्शना—मधु का कर से सम्बन्ध । — रामचन्द्रिका-4/15

प्रतिषेध—निषेध से प्रतिषेध । — काव्य-निर्णय-15/52

स्वभावोक्ति—राम के स्वभाव का कथन । — वही, 19/51

श्रीकृष्ण द्वारा मुर का वध

अलंकार

निदर्शना—मुर का कर से सम्बन्ध । — रामचन्द्रिका-4/15

प्रतिषेध—निषेध से प्रतिषेध । — काव्य-निर्णय-15/52

स्वभावोक्ति—राम के स्वभाव का कथन । — वही, 19/51

भौमासुर वध । कृष्ण का सोलह हजार राजकुमारियों से विवाह

अलंकार

उदात्त—कृष्ण के औदात्य का कथन । — ऊषा-हरण. पृ० 42; कृष्णायन-4/1

उदात्त, काव्यलिंग—कृष्ण के औदात्य का कथन । — कृष्णायन-7/47

भौमासुर संहार का हेतु धर्म-स्थापना ।

उपमा—यदुवंशियों के लिए उपमान । कृष्णायन-7/145

निदर्शना—विष्णु के अतिरिक्त कर से सम्बन्ध । रामचन्द्रिका-4/15

स्वभावोक्ति—भगवान के स्वभाव का कथन । वही, 19/51

दृष्टान्त

कई स्त्रियों का एक पुरुष से प्रेम । ज्ञानदीप-छंद-103

प्रतीक

नरकासुर—आसुरी वृत्तियों का पोषक दुष्ट व्यक्ति । मधुपर्क-5/63

औचित्य

कुल-औचित्य । ऊषा-हरण-पृ० 42

स्वभाव-औचित्य रामचंद्रिका-19/151

जरासंध युद्ध । जरासंध वध

अलंकार

उदात्त—कृष्ण के औदात्य का कथन । सूरसागर, पृ० 109, 121

उदात्त, काव्यलिंग—(1) कृष्ण के औदात्य का कथन । कृष्णायन, 4/1, 4/8

(2) जरासंध वध का हेतु धर्म-स्थापना ।

उपमा—रक्त पिपासुओं के लिए । कृष्णायन, 7/202

यदुवंशियों के लिए उपमान । कृष्णायन, 7/145

मालोपमा—मलेच्छ सेना और शिवाजी के युद्ध के अनेक उपमान । भूषण-भारती-पृ० 43 (शिवराज भूषण)

काकु-वक्रोक्ति— वक्रोक्ति पुष्ट उदात्त । द्वारका-प्रवेश, पृ० 41

दृष्टान्त

श्याम भजन से बड़प्पन की प्राप्ति । सूरसागर, पद-24

कष्ट में भगवान सहायक । सूरसागर, पद-112, 113

भक्त-वत्सलता की पुष्टि । वही, पद-171

उलेल्ख

कृष्ण का धृतराष्ट्र से असुरों के आचरण का कथन । कृष्णायन, 5/49

अर्जुन द्वारा कृष्ण के ऐश्वर्य का कथन । मधुपर्क, 13/21

सात्यकि का यदुवंशियों से कथन । सेनापति-कर्ण, पृ० 12

औचित्य

कुल औचित्य । ऊषा हरण, पृ० 42

जीवन-दर्शन

लोक-कल्याण । कृष्णायन, 7/47

कृष्ण द्वारा पारिजात हरण

अलंकार

अर्थान्तरन्यास—बड़ों को कुछ दुर्लभ नहीं । पद्माकर-पंचामृत-पृ० 64

उदात्त—कृष्ण का औदात्य कथन । सुवर्णा, पृ० 62

दृष्टान्त

अतिशयता से विपत्ति । केशव-ग्रंथावली-भाग-3 (वीर-चरित्र-पृ० 33-54)

प्रतीक

पारिजात—जनता की सम्पत्ति । गोपिका, पृ० 221

कृष्ण-बाणासुर युद्ध

अलंकार

उदात्त—कृष्ण के शौर्य का कथन । कृष्णायन, 4/1

दृष्टान्त

लोभ से विनाश । केशव-ग्रंथावली-खण्ड-3 वीर० चरित्र-2/6)

कृष्ण के द्वारा पौण्ड्रक वध

अलंकार

उदात्त, काव्यलिंग—कृष्ण के औदात्य का कथन । कृष्णायन, 7/47

पौण्ड्रक संहार का हेतु धर्म-स्थापना ।

जीवन-दर्शन

लोक-कल्याण । कृष्णायन, 7/47

शाम्ब-विवाह

अलंकार

उदात्त—कृष्ण के औदात्य का कथन । ऊषा हरण, पृ० 43

श्रीकृष्ण द्वारा राजसूय यज्ञ में पैर धोना

दृष्टान्त

भगवान की भक्त-वत्सलता की पुष्टि।	सूरसागर, पद-11
भगवान द्वारा जाति-पाँति कुल मर्यादा न मानने की प्रामाणिकता।	सूरसागर, पद-75

श्रीकृष्ण की अग्र-पूजा। शिशुपाल वध

अलंकार

उदात्त—कृष्ण के औदात्य का कथन।	गोपिका, पृ० 161 ललन-सागर, पद-481 वीर सतसई, पृ० 1 विनय-पत्रिका, पद-214 सुवर्णा, पृ० 62
काव्यलिंग—शिशुपाल वध का हेतु स्त्री।	पृथ्वीराज रासौ-31/17
मालोपमा—दिल्ली के पतन के लिए उपमान।	भूषण-ग्रंथावली-35 (फुटकर)
व्याजनिन्दा—दुर्योधन द्वारा कृष्ण की बड़ाई करते हुए व्याजनिन्दा।	सेनापति कर्ण, पृ०22

दृष्टान्त

अतिशयता से विनाश।	केशव-ग्रंथावली-भाग-3 (वीर चरित्र-2/1-2)
लोभ से विनाश।	वही-2/6
वैर से विनाश।	छत्रसाल-दशक-पृ० 20 (भूषण-भारती)
अहंकार का नाश अवश्य।	सूरसागर, पद-54

उल्लेख

(कृष्ण का यमघोष को वचन देना) राजसूय यज्ञ के अवसर पर कृष्ण का शिशुपाल से कथन।	ब्रजचन्द्र-विनोद, पृ० 59 (उ०)
अर्जुन द्वारा कृष्ण का ऐश्वर्य कथन।	मधुपर्क, 13/21

कृष्ण द्वारा शाल्व वध

अलंकार

उदात्त-काव्यलिंग—कृष्ण का औदात्य कथन। शाल्व विनाश का हेतु धर्म स्थापना।	कृष्णायन-7/47
उपमा—यदुवंशियों के लिए उपमान।	कृष्णायन-7/145

जीवन-दर्शन

लोक-कल्याण।	कृष्णायन-7/47

कृष्ण द्वारा दन्तवक्र वध

उल्लेख

नारद का राजाओं से दंतवक्र पूर्व वृत्तान्त कथन।	ब्रजचन्द्र-विनोद, पृ० 60 (उ०)

श्रीकृष्ण की सुदामा पर कृपा। सुदामा से मित्रता

अलंकार

उदात्त—कृष्ण भगवान के औदात्य का वर्णन।	पद्माकर-पंचामृत-पृ० 72 प्रेम-प्रलाप, पद-41 (भा० ग्रं०) मीरा-पदावली, पद-18 मीरा-पदावली (अभिलाषा) ललन-सागर, पद-48, 496 सुवर्णा, पृ० 62,147 सूरसागर, पद-7, 95,1211
उदात्त—सोपालम्भ-कृष्ण का औदात्य कथन।	हृदय-तरंग, पृ० 203 (समस्या-पूर्ति)
वक्रोक्तिपुष्ट उदात्त—भगवान की महानता का कथन	जहांगीर जस चन्द्रिका-पृ० 238
उदाहरण—देव का अपनी मढ़ी को न पचानना।	चित्रावली-106/6-7
जहांगीर द्वारा वीरसिंह को हृदय से लगाना।	केशव-ग्रंथावली-भाग-3 (वीर चरित्र-9/24-26)
वीरसिंह के अभयदान का उदाहरण।	केशव-ग्रंथावली-भाग-3 (33/38)
उपमा—विश्व पीड़ा की सुदामा की पीड़ा से तुलना।	कानन-कुसुम (मकरन्द-विन्दु)
नायिका के विरह के लिए उपमान।	बिहारी-सतसई-578
उल्लेख—कृष्ण सुदामा मित्रता का वर्णन।	सूरसागर, 1/202
दृष्टान्त—भक्तों का दुख हरण से सम्बन्ध।	काव्य-निर्णय-17/38
स्मृति—ब्राह्मणों को देखकर सुदामा का स्मरण।	भूषण-ग्रंथावली, पद-75

दृष्टान्त

भगवान की उद्धारण प्रवृत्ति की पुष्टि ।	मीरा-पदावली, पद-4
भगवान की पतित पावनता की पुष्टि ।	वही, पद-16,
भगवान की असहायों पर कृपा ।	वही, पद-34
कठिनाई में भगवान के सहायक होने की पुष्टि ।	प्रेम-प्रलाप, पद-33 (भा० ग्रं०) सूरसागर, पद-31
भगवान की परम उद्धारता की पुष्टि ।	विनय प्रेम पचासा, पद-31 (भा० ग्रं०)
भगवान द्वारा अपने भक्तों का कष्ट दूर करना ।	सूरसागर, पद-5, 7, 18, 19, 20, 26, 31, 35, 133, 135, 164
भगवान की भक्त वत्सलता की पुष्टि ।	वही, पद-18, 19, 20, 35
भगवान के भक्तों को अभय प्राप्ति ।	वही, पद-36
प्रेम से मोक्ष-पद ।	वही, पद-176
दीनों के दुख निवारण की पुष्टि ।	सूरसागर, पद-202
स्वामी भक्त के दुख से दुखी ।	ज्ञानदीप, छंद-77

वचन-वक्रता

उपालम्भमूलक ।	सूरसागर, पद-31, 33

औचित्य

मित्र-औचित्य, आशीर्वचन औचित्य ।	देवकी, पृ० 128

श्रीकृष्ण की श्रीदामा पर कृपा

अलंकार

उदात्त —श्रीकृष्ण के औदात्य का कथन ।	हृदय-तरंग, पृ० 148 (मंगलाचरण)

औचित्य

उपालम्भ ।	कूबरी, 3/8

कृष्ण की आयुध न ग्रहण करने की प्रतिज्ञा

अलंकार

उदात्त—कृष्ण का औदात्य कथन ।	सुवर्णा, पृ० 62

प्रतीक

निशस्त्रीकरण ।	वेणु लो गूंजे धरा, पृ० 100

जीवन-दर्शन

प्रण तोड़ना (मित्र-भाव की रक्षा)।	सुवर्णा, पृ० 146
अहिंसा।	वेणु लो गूंजे धरा, पृ० 100

कृष्ण का विदुर के घर साग खाना

अलंकार

अप्रस्तुत प्रशंसा—प्रकारान्तर से भगवान की प्रशंसा।	दोहावली-418
उदात्त—कृष्ण के औदात्य का कथन।	केशव-ग्रंथावली (वीर० चरित्र-2/1-2)
	विनय प्रेम पचासा-पद-38 (भा० ग्रं०)
वक्रोक्ति पुष्ट उदात्त—वही	सूरसागर-पद-11, 19, 20
	सुवर्णा, पृ० 146
	पद्माकर पंचामृत-पृ० 238

दृष्टान्त

भगवान की कृपा से आदर प्राप्ति।	विनय-पत्रिका-पद-106
भगवान के प्रेम की पुष्टि।	सूरसागर-पद-13

जीवन-दर्शन

समदर्शिता।	महारास-पृ 162

कृष्ण का सारथी बनना। कृष्ण द्वारा पाण्डवों की रक्षा

अलंकार

उदात्त—श्रीकृष्ण के औदात्य का कथन।	मीरा-पदावली-पद-18
	सुवर्णा-पृ० 146
	सूरसागर-पद-282
उदाहरण—अर्जुन की विजय श्रीकृष्ण के कारण,	वृंद-ग्रंथावली-पृ०8
काव्यलिंग—जहांगीर के लिए कृष्ण उपमान।	(सत्यसरुप रूपक)
उदाहरण—(उपदेश औचित्य भी।)	जहांगीर जस चन्द्रिका पृ० 194
काव्यलिंग—दुर्योधन से शत्रुता का हेतु भक्त रक्षा।	विनय-पत्रिका-पद-98

दृष्टान्त

भले को भलाई का मिलना।	कवितावली-7/131
भक्त के आगे भगवान की विवशता।	प्रेम-प्रलाप-पद-30 (भा० ग्रं०)

भगवान की भक्त-वत्सलता की पुष्टि ।	विनय-पत्रिका-पद- 137, 145 सूरसागर, पद-19, 23
कष्ट में भगवान सहायक ।	सूरसागर, पद-112-113
होनी की प्रबलता की पुष्टि ।	सूरसागर, पद-264
भक्त वत्सलता की पुष्टि ।	वृंद-ग्रंथावली-पृ० 8 (सत्यसरूप रूपक)

वचन-वक्रता

विचार प्रस्तुतीकरण के लिए ।	जयद्रथ-वध, पृ० 35

औचित्य

भविष्यत् कथन ।	जयभारत, पृ० 55

जीवन-दर्शन

मैत्री सम्बन्ध ।	सुवर्णा, पृ० 156

श्रीकृष्ण का अर्जुन को गीतोपदेश । विराट रूप दिखलाना

अलंकार

उदात्त—कृष्ण का औदात्य-कथन ।	पद्माकर पंचामृत-पृ० 1 मीरा-पदावली, पद-18 जयद्रथ-वध, पृ० 95 सुवर्णा, पृ० 62 हृदय-तरंग, पृ० 122
उपमा—युद्ध में पृथ्वीराज का रूप ।	पृथ्वीराज-रासौ-23/154
रत्नावली—क्रम से रसों का उल्लेख ।	रसिक प्रिया-1/1

दृष्टान्त

भगवान के कथित वचनों का स्मरण दिलाना ।	दैन्य-प्रलाप, पृ० 65 (भा० ग्रं०)
उनके तारने की क्षमता की पुष्टि ।	

प्रतीक

विराट-महान ।	अंगराज, पृ० 83, 259

जीवन-दर्शन

कर्मवाद ।	अंगराज, पृ० 83, 259 जयद्रथ-वध, पृ० 35
युद्ध-दर्शन ।	अंगराज, पृ० 296

कृष्ण का ब्राह्मण पुत्र को जीवित करना

अलंकार

उदात्त, काव्यलिग—कृष्ण का औदात्य वर्णन, विप्र का बालक लाने का हेतु पार्थ हित । — भंवरगीत-पृ० 56

काव्यलिंग—भरोसे का हेतु द्विजपुत्र को जीवित करना । — सूरसागर, पद-121

दृष्टान्त

स्मरण से निर्भय पद प्राप्ति । — सूरसागर, पद-66

कृष्ण गोपियों का पुनर्मिलन

अलंकार

रूपकातिशयोक्ति—कृष्ण की नायक से और गोपियों की कंवलावती से तुलना । — कथा-कंवलावती-10/71

यादवों का विनाश

अलंकार

उदाहरण—कृष्ण के ब्रजवासियों के पास जाने के लिए उदाहरण । — फेरि मिलिवो, पृ० 172

दृष्टान्त

भगवान द्वारा जाति-पांति कुल मर्यादा न मानने की प्रामाणिकता । — सूरसागर, पद-15

कृष्ण की व्याध के वाण से मृत्यु । व्याध पर कृपा

अलंकार

अर्थान्तरन्यास—बिना भगवान की इच्छा के कार्यों की असंभाव्यता का समर्थन । — ब्रजचन्द्र, विनोद, पृ० 463 (पू०)

अर्थान्तरन्यास, अप्रस्तुत प्रशंसा—मिश्रित — चित्रावली, 293

उदात्त—श्रीकृष्ण । भगवान के औदात्य का कथन । — प्रेम प्रलाप-पद-41 (भा० ग्रं०)

विनय-पत्रिका, पद-101, 211, 214

सूरसागर, पद-27, 67, 94, 119, 123, 306

उदात्त, सन्देह—भगवान के औदात्य का — विनय प्रेम पचासा, पद-38

कथन। 'तुम्हें याद हो न हो, में संदेह व्यंजित।	(भा० ग्रं०)
गुढ़ोत्तर पुष्ट सन्देह।	विनय-पत्रिका, पद-234
उदाहरण—पतितों का उदाहरण।	सूरसागर, पद-158
खलों का उदाहरण।	वही, पद-204
तरने का हेतु लोभ।	पद्माकर-पंचामृत-235
सुख प्राप्ति का हेतु राम।	वृंद-ग्रंथावली-(स्फुट छंद)-26
काव्यलिंग—उद्धार का हेतु नाम लेना।	सूरसागर, पद-178
अर्थापत्ति सन्देह	विनय-पत्रिका, पद-94

दृष्टान्त

भगवान की भक्त-वत्सलता की पुष्टि।	प्रेम-प्रलाप, पद-22 (भा० ग्रं०) हृदय-तरंग, पृ० 147
शरणागत की रक्षा।	विनय-पत्रिका-पद-193
नाम से उद्धार	वृंद-ग्रंथावली (स्फुट-छंद)-26
प्रेम में किसी के कुल के विचार न करने की पुष्टि।	सूरसागर-पद-12
हरिस्मरण से मोक्ष।	सूरसागर, पद-89
बिना परिश्रम यश-प्राप्ति।	वही, पद-132
भगवत स्मरण से अभयपद प्राप्ति।	वही, पद-193

औचित्य

नाम-औचित्य।	कवितावली-7/93

वचन-वक्रता

प्रकारान्तर से राम की उदारता का कथन।	पद्माकर-पंचामृत-पृ० 229-230
उपालम्भ मूलक।	सूरसागर, पद-138, 145, 178
दीनता-प्रदर्शन।	वही, पद-192

जीवन-दर्शन

आस्थावाद।	प्रेम-प्रलाप, पद-41 (भा० ग्रं०)

कुंभकरण का सोना

उपमा—आलसी व्यक्तियों की तुलना।	रामचरित मानस-1/4

कैकेयी द्वारा दो वर मांगना

उल्लेखात्मक प्रयोग

	रामचरित मासस-2/22/5-6-, 2/27

कौरव पाण्डव युद्ध। (महाभारत)

अलंकार

अर्थान्तरन्यास—अहंकार से नाश का समर्थन।	वृंद-ग्रंथावली-पृ० 67
होनी की प्रबलता का समर्थन।	वही, पृ० 70
बड़ों की सहायता से कार्य सफल।	वही, पृ० 273
वैरी की छल-बल से पराजय।	वही, पृ० 308
उदात्त—श्रीकृष्ण के औदात्य का कथन।	सूरसागर, पद-95
उदाहरण—(कौरव सेना से अर्जुन का युद्ध) वीरसिंह का पराक्रम।	केशव-ग्रंथावली भाग-3 (वीरसिंह चरित्र-14/28-29)
पृथ्वीराज के युद्ध का उदाहरण।	पृथ्वीराज-रासौ-22/152
आजम के कुल—नाश का उदाहरण।	वृंद-ग्रंथावली- पृ० 346
उपमा—अर्जुनवर्मा के पराक्रम की अर्जुन के पराक्रम से तुलना।	छत्र प्रकाश-पृ०5
(कौरव पाण्डव वैर) राजाओं की आपसी ईर्ष्या।	छत्र प्रकाश-पृ० 28
क्रोध और क्षमा के लिए उपमान।	दोहावली-428
मोह और ज्ञान के लिए उपमा।	वही-419
सैनिकों के लिए उपमान।	पृथ्वीराज-रासौ-20/129
युद्ध का उपमान।	पृथ्वीराज-रासौ-22/38
वीरसिंह के पराक्रम के लिए उपमान।	केशव-ग्रंथावली-भाग-3 (वीर० चरित्र-27/27)
(कौरव-सेना से अर्जुन का युद्ध) हांडा के पराक्रम की तुलना।	वृंद-ग्रंथावली, पृ० 338 (सत्यसरूप रूपक)
उपमा, रूपक—मन के लिए अर्जुन और भीम का उपमान।	दैन्य-प्रलाप, पद-2 (भा० ग्रं०)
भगवंतराय के युद्ध का उपमान।	भूषण-ग्रंथावली-पद-84
विषय में रन का आरोप।	हृदय-तरंग-(उपालम्भ) पृ० 16
काव्यलिंग—जग में प्रसिद्ध का कारण	भूषण-ग्रंथावली, पद-29

महाभारत में भाइयों को लड़ाना	
पूर्वरूप—शिवाजी के युद्ध का वर्णन कर सरस्वती का तुनः पवित्र होना।	भूषण-ग्रंथावली-पद-29
मालोपमा—मलेच्छ सेना से शिवाजी के युद्ध के अनेक उपमान।	भूषण-भारती (छत्रसाल दशक) पृ० 40
रूपक—मृगावती की भोंह की तुलना अर्जुन के धनुष से।	मृगावती-178/5
रति-संग्राम की तुलना महाभारत से।	ज्ञानदीप, छंद-264
व्यतिरेक—पृथ्वीराज के युद्ध का महाभारत के युद्ध से बढ़कर वर्णन।	पृथ्वीराज-रासौ-24/233
शिवाजी का पाण्डवों से बढ़कर वर्णन।	भूषण-भारती पृ०56
सन्देह—गौरी के वीरों से पृथ्वीराज के सामन्तों से युद्ध में महाभारत के युद्ध का सन्देह।	पृथ्वीराज-रासौ-21/56

दृष्टान्त

शकुनि-वध (लोभ से विनाश)।	केशव-ग्रंथावली-(वीर० चरित्र)-2/6
(पांडवों की विजय) दान से यश प्राप्ति।	केशव-ग्रंथावली भाग-3 (वीरसिंह चरित्र-40)
अपने वंश से युद्ध का परिणाम।	जहांगीर जस चान्द्रिका-9/31-38
भ्रातृ-भाव हवाई नहीं।	पृथ्वीराज-रासौ-26/26
योगियों में अद्भुत शक्ति।	हंस-जवाहिर,पृ० 157

प्रतीक

महाभारत-भयंकर युद्ध	इन्द्रावती-((पूर्वार्द्ध) युद्ध-खण्ड-दो० 7
	कथा-कंवलावती-7/44
	कथा-कनकावती-7/54
	चित्रावली, 385
	चित्रावली-386/7
	पद्मावत-242, 264, 632
	वेणु लो गूंजे धरा०, पृ० 100
	हंस-जवाहिर-पृ० 238, 239, 240, 246

कुरुक्षेत्र—भयंकर युद्ध	गोपिका-पृ० 136

उल्लेखात्मक-प्रयोग

चंदायन-205/1-3
चित्रावली, पृ० 181
पृथ्वीराज-रासो-4/222
भूषण-भारती पृ० 76

कौरव-पांडव संघर्ष

कौरवों द्वारा भीम को विष देना

अलंकार

काव्यलिंग—जहर देने में हेतु दुर्योधन का पापात्मा होना।	भगवान श्रीकृष्ण लीलामृत, पृ० 22

उल्लेख

दुर्योधन के दूत उलूक का युद्ध के लिए प्रेरित करने के लिए युधिष्ठर से कथन।	कृष्णायन-5/100
श्रीकृष्ण का बलराम से दुर्योधन द्वारा किए गए अवांछनीय कार्यों का उल्लेख।	ब्रजचन्द्र-विनोद, पृ० 416 (पू०)

वचन-वक्रता

युद्ध की प्रेरणा के लिए।	कृष्णायन, 5/56
सद् और असद् वृत्तियों के द्योतन केलिए।	द्वारका-प्रवेश, पृ० 59-60
संवादों के लिए।	रश्मिरथी, पृ० 174

औचित्य

अभिप्राय।	पार्थपत्नी महासती द्रौपदी, पृ० 168-169
संवाद।	रश्मिरथी, पृ० 174

जीवन-दर्शन

मिथ्याचरण, त्याग।	कृष्णायन, 5/59 बजचन्द्र-विनोद, पृ० 399

कौरव-पाण्डव द्यूत-क्रीड़ा

अलंकार

उपमा, काव्यलिंग—अपकृता का उपमान कृष्ण। अपकृति में पतियों द्वारा हारा जाना तथा अरिकृत में वसन-कच कर्षण हेतु।	कृष्णायन-6/271
सार, काव्यालिंग—द्यूत से युद्ध की उत्कृष्टता	सुवर्णा, पृ० 55

और युद्ध से शान्ति की उत्कृष्टता का वर्णन।
विद्याएं पुष्पित होने में हेतु शान्ति-स्थिति।

उल्लेख

दुर्योधन के दूत उलूक का युद्ध के लिए प्रेरित करने के उद्देश्य से युधिष्ठिर से कथन। — कृष्णायन-5/100

शकुनि का दुर्योधन से उसकी अदूरदर्शिता के लिए कथन। — कृष्णायन-6/231

श्रीकृष्ण का बलराम से दुर्योधन द्वारा किए गए अवांछनीय कार्यों का उल्लेख। — ब्रजचन्द्र-विनोद, (उ0) पृ० 416

प्रतीक

शकुनि—दुष्ट व्यक्ति। — दोहावली-4/8
शकुनि—कपटी, छली। — रश्मिरथी, पृ० 174

वचन-वक्रता

युद्ध की प्रेरणा के लिए — कृष्णायन-5/56
अनौचित्य मूलक। — कृष्णायन-6/223
अधिक्षेपमूलक (वास्तविक निन्दा) — कृष्णायन, 6/167, 6/244
सद् और असद् वृत्तियों के लिए। — ब्रजचन्द्र-विनोद. पृ० 398-399
संवादों के लिए। — रश्मिरथी, पृ० 174

औचित्य

निन्दा। — कृष्णायन-6/233
विचार। — रश्मिरथी, पृ० 174

जीवन-दर्शन

मिथ्याचरण-त्याग। — कृष्णायन, 5/56
युद्ध-दर्शन। — सुवर्णा, पृ० 52

कौरवों द्वारा द्रापदी का चीर हरण। द्रौपदी पर कृष्ण की कृपा

अलंकार

अर्थान्तरन्यास-विकस्स्वर—विशेष के बाद सामान्य का कथन। — पद्माकर-पंचामृत- पृ० 65

अपह्नुति—द्रौपदी का निषेधकर कर्ण की पत्नी में सिन्दूर तिलका (सौभाग्यवती) चित्रा (चन्द्रिका) की स्थापना। — अंगराज, पृ० 150

उदात्त—श्रीकृष्ण द्वारा द्रौपदी का चीर वढ़ाना। — कवितावली, 7/10; छत्रप्रकाश-पृ० 101

कृष्ण का औदात्य कथन। — मीरा की पदावली, पद-7

	ललन-सागर, पद-496
	विनय पत्रिका, पद-93, 206, 217
	सूरसागर, पद-27, 30, 109, 119, 121, 165, 172, 190, 282, 306
द्रौपदी का औदात्य वर्णन ।	कृष्णायन-7/27
उदाहरण—वीरसिंह के अभयदान का उदाहरण ।	केशव-ग्रंथावली-खण्ड-3 (वीर० चरित्र-33/88)
दुष्टों का उदाहरण ।	सूरसागर, पद-158
(द्रौपदी का भीम को स्मरण करना) वर्षा के लिए उदाहरण ।	केशव-ग्रंथावली-भाग-3 (वीर० चरित्र-11/13)
उदाहरण, उत्प्रेक्षा—बाणासुर की सभा में खड़ी उषा के लिए उदाहरण।	ऊषा हरण, पृ० 32
राधा का हरण से भयभीत होने का उदाहरण ।	केशव-ग्रंथावली-खण्ड-3 (वीर० चरित्र-11/16)
उदाहरणमाला—छत्रसाल के कष्टों के अनेक उदाहरण ।	छत्रप्रकाश-पृ० 75
उपमा—विश्व की पीड़ा की उपमा ।	कानन-कुसुम (मकरन्द विन्दु)
दिन से तुलना ।	मतिराम-ग्रंथावली (रसराज-पृ० 173)
काव्यलिंग—भय का हेतु चीर हरण ।	केशव-ग्रंथावली-खण्ड-3 (वीर० चरित्र-11/16)
भक्त हित हेतु ।	सूरसागर, पद-26
भजने का हेतु भक्तों का ताप निवारण ।	वही, पद-28
भरोसे का हेतु पतित-पावनता ।	वही, पद-122
वसन बढ़ने का कारण गोपीवल्लभ ध्यान ।	कृष्णायन, 5/94
दृष्टान्त —भक्तों का दुख हरण से सम्बन्ध ।	काव्य-निर्णय-17/38
प्रतिषेध—निषेध से प्रतिषेध ।	काव्य-निर्णय-10/30
रूपक (सांग)—समुद्र और नाव का रूपक ।	वृंद-ग्रंथावली-स्फुट छंद-पृ० 29
माला रूपक—श्वांसों पर दौपदी चीर का आरोप ।	काव्य-निर्णय-10/30
यमक (सभंग)—पद्भंग से केशव व केश के अलग-अलग अर्थ व्यंजित । केशव (कृष्ण) केश (बाल) ।	वीर-सतसई, पृ० 81

वक्रोक्ति—अधिक पापी होने का भाव ।	मतिराम-सतसई, पृ० 530
शब्द प्रमाण—स्मृति वाक्य से शब्द प्रमाण ।	पद्माकर-पंचामृत, पृ०79
संकर (उपमा, रूपक, उदाहरण) द्रौपदी चीर आशा का उपमान (उपमा) । जीत में दुशासन का आरोप (रूपक) । लाज रखने के लिए उदाहरण ।	विनय प्रेम पचासा, पद-16 (भा० ग्रं०)
सन्देह—सावन की रात में द्रौपदी की सारी का सन्देह ।	प्रेम-माधुरी, पद-67 (भा० ग्रं०)
दुशासन का अन्तर्द्वंद्व में सन्देह ध्वनित ।	जयभारत, पृ० 205
स्मरण—भगवान की भक्त-वत्सलता को याद कराया जाना ।	विनय प्रेम पचासा, पद-38 (भा० ग्रं०)

दृष्टान्त

राम नाम के महत्त्व का प्रतिपादन ।	कवितावली, पद-89
हरि की स्मरण प्रवृत्ति ।	मीरा की पदावली-पद-4
असहायों पर कृपा ।	वही, पद-8
भगवान द्वारा विपत्तियों को दूर करना ।	विनय-पत्रिका, पद-213
अपनों की रक्षा करने की पुष्टि ।	वृंद-ग्रंथावली-फुटकर, पृ० 37
भगवान की भक्त-वत्सलता की पुष्टि ।	सूरसागर, पद-5, 16, 17, 18, 20, 21, 22, 37, 109, 112
कष्ट में भगवान सहायक ।	सूरसागर, पद-112-113
भगवान के भक्तों को अभय प्राप्ति ।	वही, 36
भगवान के भक्तों के कष्ट में न पड़ने की ख्याति ।	वही, 37
प्रेम से मोक्ष पद् प्राप्ति ।	सूरसागर, पद-176
होनी की प्रबलता की पुष्टि ।	वही, पद-264

वचन-वक्रता

दूत कार्य के लिए ।	उत्तर-जय, पृ० 19 कृष्णायन-5/101
औचित्यमूलक ।	कृष्णायन-4/155 द्रौपदी, पृ० 46 वीर सतसई, पृ० 81
अनौचित्यमूलक ।	कृष्णायन-6/223 कृष्णायन-(बिसाहूराम)

	पृ० 414
उपालम्भमूलक।	सूरसागर, पद-39
उपालम्भमूलक भक्ति।	श्रीविष्णु लहरी, पद-15 (रत्नाकर)
	हृदय-तरंग, पृ० 15
विचार प्रस्तुतीकरण।	सेनापति कर्ण, पृ० 162

उल्लेख

प्रवेश सूत्र।	उत्तर-जय, पृ 10
दुर्योधन के दूत उलूक का युद्ध के लिए प्रेरित करने के लिए युधिष्ठिर से कथन।	कृष्णायन, 5/100
कृष्ण का बलराम से दुर्योधन द्वारा किए गए अवांछनीय कार्यों का कथन।	कृष्णायन, 6/252
	ब्रजचन्द्र-विनोद, पृ० 416 (उ०)
कृष्ण का अर्जुन से कथन भीम को सूचना देने के लिए।	मधुपर्क, 13/24
युद्ध की प्रेरणा के लिए श्रीकृष्ण का अर्जुन से कथन।	सुवर्णा, पृ० 19

औचित्य

प्रतिज्ञा-औचित्य।	कृष्णायन, 6/213
निन्दा—औचित्य।	कृष्णायन, 6/223
	रश्मिरथी, पृ० 174
धिक्कार-औचित्य।	कृष्णायन (बिसाहूराम) पृ० 414
आशीर्वचन-औचित्य।	जयभारत, पृ० 171
पश्चाताप।	देवकी, पृ० 118-119
धर्म-औचित्य।	सुवर्णा, पृ० 99

जीवन-दर्शन

गर्व-त्याग।	कृष्णायन, 6/244
मिथ्याचरण-त्याग।	ब्रजचन्द्र विनोद, पृ० 399 (उ०)
दैन्य-त्याग।	कृष्णायन, 5/101
	सेनापति कर्ण, पृ० 162

लाक्षागृह-दहन

अलंकार

उदात्त—श्रीकृष्ण के औदात्य का कथन ।	सूरसागर, पद-10, 264
उदाहरण—(भीम द्वारा पाण्डवों को दहन से बचाना) अश्वत्थामा वध के लिए उदाहरण ।	पार्थपत्नी महासती द्रौपदी, पृ०291
गोरा-बादल द्वारा राजा रत्नसेन को बचाने का उदाहरण ।	पद्मावत-611/51/5
व्यतिरेक—शिवाजी का पाण्डवों से बढ़कर वर्णन ।	भूषण-ग्रंथावली, पद-148

दृष्टान्त

भक्त-वत्सलता की पुष्टि ।	सूरसागर, पद-17
कठिनाई में भगवान के सहायक होने की पुष्टि ।	वही, पद-37

प्रतीक

लाक्षागृह में जलना आपत्ति का सामना ।	रश्मिरथी, पृ० 28

उल्लेख

दुर्योधन के दूत उलूक का युद्ध के लिए प्रेरित करने के उद्देश्य से युधिष्ठिर से कथन ।	कृष्णायन, 5/100
शकुनि का कर्ण की मृत्यु के पश्चात दुर्योधन की अदूरदर्शिता के लिए कथन ।	कृष्णायन-6/231
श्रीकृष्ण का बलराम से दुर्योधन द्वारा किए गए अवांछनीय कार्यों का उल्लेख ।	ब्रजचन्द्र-विनोद, पृ० 416

वचन-वक्रता

घृणामूलक उपहास ।	कृष्णायन, 3/27
युद्ध की प्रेरणा के लिए ।	कृष्णायन, 5/56
औचित्यमूलक ।	कृष्णायन, 6/233
सद् और असद् वृत्तियों के द्योतन के लिए ।	ब्रजचन्द्र-विनोद, पृ० 398-399
संवादों के लिए ।	रश्मिरथी, पृ० 174

औचित्य

निन्दा-औचित्य ।	कृष्णायन, 3/127, 6/233
अभिप्राय-औचित्य ।	पार्थपत्नी महासती द्रौपदी, पृ० 168-169

कौरव द्वारा पांडवों को सताया जाना। वन को भेजना

अलंकार

अर्थान्तरन्यास—बुराई से भलाई का समर्थन।	वृंद-ग्रंथावली-पृ० 334
उत्प्रेक्षा—सज्जनों के ऊपर संकट।	पद्मावत-576/7
उदात्त—चित्रकूट का औदात्य कथन।	विनय-पत्रिका-पद-24
उदाहरण—निरर्थक क्रूर कर्म करना।	दोहावली-417
सज्जनों के साथ छल करने का उदाहरण।	हंस जवाहिर-पृ० 103
अतिशयता से विनाश।	केशव-ग्रंथावली-भाग-3 (वीरसिंह चरित्र-2/1-2)

दृष्टान्त

होनी की प्रबलता की पुष्टि।	विश्राम-सागर, पृ० 292

वचन-वक्रता

दूत कार्य के लिए।	उत्तर जय, पृ० 19
अनौचित्यमूलक।	कृष्णायन-6/223
संवादों के लिए।	रश्मिरथी, पृ० 174

औचित्य

निन्दा-औचित्य।	कृष्णायन-6/233 रश्मिरथी-पृ०174

प्रतीक

दुर्योधन-दुष्ट व्यक्ति।	दोहावली-418

खट्वांग की मुक्ति

दृष्टान्त

शीघ्र मुक्ति होने की पुष्टि।	विश्राम-सागर, पृ० 292

औचित्य

विचार-औचित्य।	—वही—

जीवन-दर्शन

आशावाद।	—वही—

गगावतरण। भगीरथ-आख्यान

अलंकार

अर्थान्तरन्यास—हेत समर्थन।	काव्य-निर्णय-16/29
अनुगुण—निमिवंश की पवित्रता का कथन।	रामचन्द्रिका-6/26
उत्प्रेक्षा—सुन्दरियों के कुचों में शिव व हारों में गंगा की संभावना।	पृथ्वीराज-रासौ-4/20

अयोध्या वासियों के राम के पीछे चलने की तुलना।	रामचन्द्रिका-9/30
शिप्रा नदी में गंगा की संभावना।	सेनापति-कर्ण-पृ० 94
उदात्त—राम के चरणों की श्रेष्ठता का वर्णन।	कवितावली, पद-2/5, 2/9 मीरा-पदावली, पद-35 रामचरित मानस, 2/209
श्रीकृष्ण के चरणों की श्रेष्ठता का कथन।	कृष्णायन-1/100 ब्रजचन्द्र-विनोद (पूर्वाद्ध) पृ० 27, 306, 417 मधुपुरी-8/43
भारत की महत्ता का वर्णन।	कृष्णायन-4/17
गंगा की श्रेष्ठता का कथन।	जहांगीर जस चन्द्रिका-6/46-52 पृथ्वीराज रासौ-4/11 विनय-पत्रिका, पद-12, 18, 20
शिव के ऐश्वर्य का कथन।	ब्रजचन्द्र-विनोद (पूर्वार्द्ध) पृ० 27, 306, 417 विनय-पत्रिका, पद-12
भारत के चित्र की श्रेष्ठता का वर्णन।	मधुपर्क-2/20
कृष्ण के औदात्य का कथन।	मधुपर्क-7/59
रघुकुल के गौरव का वर्णन।	रामचरित्र मानस-7/209
वक्रोक्ति पुष्ट उदात्त—गंगा की श्रेष्ठता ध्वनित।	जहांगीर जस चन्द्रिका (गंगा लहरी), पृ० 2, 28
उदाहरण—कृष्ण के राधा के पीछे-पीछे डोलने का उदाहरण।	छत्रप्रकाश, पृ० 61
कर्ण द्वारा सूर्य को दिए गए अर्घ्यदान के लिए उदाहरण।	सेनापति कर्ण, पृ० 179
कर्ण के सिर पर हेम-कलशों से गिराए जल के लिए उदाहरण।	वही, पृ० 14
उपमा—प्रीतमसिंह की तुलना भगीरथ से।	चित्ररेखा, पृ० 94
छत्रसाल की कीर्ति की त्रिपथगामिनी से तुलना।	छत्रप्रकाश, पृ० 61
(भगीरथ द्वारा गंगा को लाना) प्रतापसिंह की उपमा।	जहांगीर जस चन्द्रिका-फुटकर, पृ० 1

गोपियों के प्रेम-प्रवाह के लिए उपमान । — फेरि मिलिबो, पृ० 171

दशरथ की तुलना भगीरथ से । — रामचन्द्रिका-2/10

उपमा, उत्प्रेक्षा—सेना के लिए उपमान । (संकर)—'मनहुं' से उत्प्रेक्षा । — जरासंध-वध, पृ० 52

उल्लेख—गंगा के यश का अनेक प्रकार से वर्णन । — रामचरित मानस-7/13/4

काव्यलिंग—'भव भय भंग' में कारण, 'तब पद गंग में स्नान' । — कृष्णायन (बिसाहूराम), पृ० 136

त्रिविक्रम पद नख जल जग सुयश का हेतु । — पदावली-आनन्दघन, पृ० 156

वक्रोक्तिमूलक काव्यलिंग—(शिव के सिर पर गंगा) कंठ चुम्बन का हेतु गंगा । — वृंद-ग्रंथावली, पृ० 13

गुढ़ोत्तर—भगीरथ का अस्पष्ट संकेत । — साकेत, पृ० 348

यमक, उदाहरण—भगीरथ व शुभगति के कई अर्थ । — उद्धव-शतक-(रसाल) पद-231

भगीरथ नाम विशेष ।

भगीरथ-रथ के पीछे भागना ।

भगीरथ-गंगा

उद्धव के पीछे शुभगति के आने के लिए उदाहरण ।

रूपक—मनोरथ रूपी भगीरथ का रथ, कृष्ण गंगाजल । — रसिकप्रिया-7/6

सन्देह—भगीरथ तपस्या, जुह्नु की तपस्या—किधौं से सन्देह । — जहांगीर जस चन्द्रिका, पृ० 25

रुक्मिणी की मांग में नीलगिरी शैल पर गंगा प्रवाहित होने का सन्देह । — रुक्मिणी-परिणय-पृ० 76

सम्बन्धातिशयोक्ति—नगर के महलों का अतिशयोक्तिपूर्ण वर्णन । — रामचन्द्रिका-2/10

दृष्टान्त

पुत्र से ही सारी आशा पूर्ण । — नलदमन-6018-9

वचन-वक्रता

\ — वृंद-ग्रंथावली-पृ० 13

प्रतीक

भगीरथ-धर्म—पुरुषार्थ, परिश्रम । — मधुपर्क पृ० 5/60

भगीरथ रीति—पूर्वजों का उद्धार — साकेत, पृ० 131

भगीरथ—सद्गुण — साकेत, पृ० 202, 34

औचित्य

नाम (विष्णुपदी)—औचित्य। — अंगराज, पृ० 156

वाक्य—औचित्य। — उद्धव-शतक, (रत्नाकर) पृ० 134

पद—औचित्य — उद्धव-शतक (रसाल) पद-231

देश—औचित्य। — कृष्णायन-1/1

विशेषण-औचित्य। — देवकी, पृ०29

जीवन-दर्शन

पुरुषार्थ। — मधुपर्क-पृ, 123

गन्धर्वों का कन्याओं पर मुग्ध होना

अलंकार

अतिशयोक्ति—पद्मावती की सखियों के शरीर का वर्णन। — पद्मावत-59/4

गजेन्द्र-मोक्ष

अलंकार

अर्थान्तरन्यास—अभिमान के दुखदाई होने का समर्थन। — छत्रप्रकाश-पृ० 101

ब्रजचन्द्र विनोद (उ०) पृ० 463

उदात्त—राम के औदात्य का कथन। — कवितावली-7/8, 7/9

पद्माकर-पंचामृत, पृ० 214, 232

श्रीकृष्ण के औदात्य का कथन। — कृष्णायन-7/184

प्रेम-प्रलाप, पद-41, 72 (भ० ग्रं०)

मीरा-पदावली (अभिलाषा)

वही, पद-12

ब्रज-बिहार, पृ०, 293, 296

सूरसागर, पद-6, 7, 10, 25, 27, 109, 119, 182, 190, '308

हृदय-तरंग (उपालम्भ)

	पृ० 141
भगवान के औदात्य का कथन।	विनय-पत्रिका, पद-93, 206, 213, 217
	वृंद-सतसई-(स्फुट-छंद) पृ०।
कृष्ण का औदात्य एवं शौर्य वर्णित।	पुरुषोत्तम, पृ० 25
एक ओर भक्त-वत्सलता दूसरी ओर दुष्ट दमनता व्यंजित।	
गुढ़ोत्तर पुष्ट उदात्त—राम के औदात्य का कथन।	पद्माकर-पंचामृत-पृ० 214, 232
	विनय-पत्रिका-पद-236
चरित्रोदात्त—राम के चरित्र का कथन।	कवितावली-7/7
वक्रोक्ति पुष्ट उदात्त—भगवान के औदात्य का कथन।	जहांगीर जस चन्द्रिका-214, 232
उदात्त, काव्यालिंग—श्री कृष्ण के औदात्य का कथन।	मीरा-पदावली, 7, 10
नैना अटकने का हेतु गज-तारन।	(कृष्ण रूपमाधुरी)
रणजीत द्वारा अपने देश की रक्षा का उदाहरण।	केशव-ग्रंथावली (वीर० चरित्र) 14/57-58
उदाहरण—सीता उद्धार के लिए राम की तत्परता।	गीतावली-6/19/5
कष्ट-निवारण के लिए उदाहरण।	ब्रजचन्द्र-विनोद-(पूर्वार्द्ध) पृ० 6
फणपति का उदाहरण।	बोधा-ग्रंथाबली-21/6
नाम से उद्धार।	मीरा-पदावली, पद-6 (गुरु-गोविन्द)
विभीषण के यश के लिए उदाहरण।	रामचन्द्रिका-15/24
दुष्टों का उदाहरण।	सूरसागर, पद-158
पतित-पावनता की पुष्टि।	वही, पद-188, 219
उदाहरण, काव्यलिंग—गोपियों के लिए गज की प्रीति उदाहरण।	नटनागर-विनोद, पृ० 21
न डरने का हेतु प्रीति के प्रमाण की प्रसिद्धि।	
उपमा—विश्व की पीड़ा का उपमान।	कानन-कुसुम-मकरन्द विन्दु
काव्यलिंग—तरने का हेतु अनेक रूप बनाना।	जहांगीर जस चन्द्रिका-पृ० 235
कल्याण का हेतु सन्त-चरण।	विनय-पत्रिका, पद-57
तरने का हेतु राम-नाम।	विनय-पत्रिका, पद-84
विरह त्यागने का हेतु गजेन्द्र मोक्ष।	बिहारी सतसई, 368

अवतार का हेतु गज-विजय ।	वृंद-ग्रंथावली (सत्यसरूप रूपक) पृ० 1
मुक्ति का हेतु राम-नाम ।	रामचरित मानस-1/26
भक्त हित हेतु ।	सूरसागर, पद-26
हेतु-भक्तों का ताप निवारण ।	वही, पद-28
तारने में हेतु स्मरण ।	वही, पद-82
भरोसे का हेतु पतित पावनता ।	वही, पद-122
हेतु-उद्धार करना ।	वही, पद-178
गूढ़ोत्तर—राम के समान अन्य के न होने की ध्वनि ।	जहांगीर जस चन्द्रिका-पृ० 238
परिवृत्ति—कुवलया के प्राण लेकर गजेन्द्र को देना ।	हृदय-तरंग (उपालम्भ) पृ० 15
प्रतिषेध—निषेध से प्रतिषेध ध्वनित ।	काव्य-निर्णय-15/52
यमक, अनुप्रास—बार न, वार न मैं यमक । (वारन-हाथी) बारन-देर न करना । वारन, टारन, तारन में अनुप्रास ।	हृदय-तरंग (उपालम्भ) पृ० 21
रूपक —गर्व पर नक्र का आरोप ।	कृष्णायन (बिसाहूराम) पृ० 140
विश्व पर गज का, विपत्ति पर ग्राह का आरोप ।	हृदय-तरंग-(उपालम्भ) पृ० 19
कुरुकुल पर गज, विग्रह पर ग्राह का आरोप ।	उत्तर-जय, पृ० 40
व्यतिरेक—ब्रजवासियों की गति को गजेन्द्र के पास भगवान के जाने की गति से तीव्र बताना ।	फेरि मिलिबो, पृ० 172
अर्थापत्ति सन्देह—अर्थात् से सन्देह ।	विनय पत्रिका, पद-94, 101
सन्देह—कर्ण और अर्जुन के युद्ध का संदिग्ध वर्णन ।	सुवर्णा, पृ० 125
स्मरण, सन्देह—भक्त-वत्सलता का स्मरण । 'याद हो कि न याद हो में सन्देह ।'	विनय-प्रेम-पचासा, पद-38 (भा० ग्रं०)
स्मरण—भक्त वत्सलता का स्मरण कराया जाना ।	प्रेम-प्रलाप, पद-19 (भा० ग्रं०)

दृष्टान्त

राम नाम का महत्त्व ।	कवितावली-7/18
भक्त-वत्सलता की पुष्टि ।	ब्रजचन्द्र-विनोद-(उत्तरार्द्ध) पृ० 121,270, 466
	सूरसागर, पद-16, 17, 21, 171

कृष्ण के विपत्ति-उद्धारक स्वरूप की पुष्टि ।	भगवान श्रीकृष्ण लीलामृत, पृ॰ 54
	महारास, पृ॰ 101
हरि की उद्धारक प्रवृत्ति ।	मीरा-पदावली, पद-4
भगवान की पतित-पावनता की पुष्टि ।	मीरा-पदावली, पद-12
	विनय-पत्रिका, पद-160
राम-भजन से मुक्ति ।	रामचरित मानस-7/130
राम द्वारा शरणागत की रक्षा ।	विनय-पत्रिका, पद-99
राम की कृपा से आदर की प्राप्ति ।	विनय-पत्रिका, पद-101
राम के गुणगान से संसार-सागर पार होना ।	वही, पद-179
भगवान की भक्त-वत्सलता की पुष्टि ।	वही, पद-144, 145, 239
दुष्टों को भी मोक्ष-प्राप्ति ।	वही, पद-241
भगवान की परम उदारता ।	विनय-प्रेम पचासा, पद-36 (भा॰ ग्रं॰)
भगवान द्वारा शरणागत की रक्षा	वृंद-सतसई-स्फुट छंद-पृ॰ 1
	सूरसागर, पद-14
अपनों की रक्षा करना ।	वृंद-सतसई-स्फुट-छंद, पृ 1
सहायता करने की पुष्टि ।	—वही—(सत्यसरूप रूपक) पृ॰ 4
कठिनाई में भगवान सहायक ।	सूरसागर, पद-31
स्मरण से निर्भय पद-प्राप्ति ।	—वही-पद-66
भगवान-प्रेम से मोक्ष-प्राप्ति ।	—वही-पद-176
कष्ट में भगवान सहायक ।	—वही-पद, 110, 112
बिना परिश्रम यश प्राप्ति ।	—वही-पद-132
प्रतीक	
गजेन्द्र-मोक्ष-आपत्ति से मुक्ति ।	गोपिका, पृ॰163
वचन-वक्रता	
उपालम्भमूलक भक्ति ।	श्रीविष्णु लहरी (रत्नाकर)
	हृदय-तरंग, पृ॰ 15
औचित्य	
अलंकार—औचित्य ।	नटनागर-विनोद, पृ॰ 31
कथन-औचित्त ।	फेरि मिलिबो, पृ॰ 172
जीवन-दर्शन	
प्रेम—भावना ।	नटनागर-विनोद, पृ॰ 31
आस्थावाद ।	ब्रजचन्द्र, विनोद, पृ॰ 466

गणिका (पिंगला) उद्धार

अलंकार

उदात्त—राम के चरित्र की श्रेष्ठता का वर्णन।	कवितावली-7/7
भगवान के औदात्य का कथन।	प्रेम प्रलाप, पद-41 (भा० ग्रं०)
	विनय-पत्रिका, पद-112
	सूरसागर, पद-25, 27,67, 119, 120, 123, 182 306
	स्फुट-कविताएं, पद-8 (भा० ग्रं०)
उदात्त, सन्देह—भगवान की भक्त-वत्सलता का वर्णन	विनय-प्रेम-पचासा, पद-38
'याद हो कि न याद हो' में सन्देह।	
उदाहरण—प्रभु की शरण से उद्धार।	मीरा-पदावली-पद-5
राम नाम लेने से उद्धार।	मीरा-पदावली-पद-6
पतितों का उदाहरण।	सूरसागर, पद-158, 182, 219
खल का उदाहरण।	सूरसागर, पद-204
उदाहरण, काव्यलिंग—गोपियों के प्रेम के लिए गणिका की प्रीति का उदाहरण।	नटनागर विनोद, पृ० 31
काव्यलिंग—मुक्ति का हेतु राम नाम का जाप।	राम चरितमानस-1/26
भजने का हेतु भक्तों का ताप निवारण।	सूरसागर, पद-28
उद्धार का हेतु नाम लेना।	पद्माकर-पंचामृत-235
	केशव-ग्रंथावली-भाग-3 (वीर० चरित्र) पृ० 53-54
	सूरसागर-पद-122
भरोसे का हेतु गणिका उद्धार।	—वही पद 178
अर्थापत्ति सन्देह—	विनय-पत्रिका, पद-94
प्रतिषेध—निषेध से प्रतिषेध।	काव्य-निर्णय-13/52

दृष्टान्त

राम नाम के महत्त्व का प्रतिपादन।	कवितावली-7/89
भगवान स्मरण से पद प्राप्ति।	प्रेम-प्रलाप, पद-33 (भा० ग्रं०)

	ब्रजचन्द्र विनोद-पृ० 466 (उ०)
राम भजन से मुक्ति प्राप्त होना।	रामचरित मानस, 7/130
राम की कृपा से आदर प्राप्ति।	विनय-पत्रिका, पद-106
भगवान द्वारा विपत्ति का विनाश।	—वही-पद-212
भगवान की भक्त-वत्सलता की पुष्टि।	विनय-पत्रिका, पद-99, 144, 239, 240 हृदय-तरंग, पृ० 147
भगवान की पतित-पावनता की पुष्टि।	मीरा-पदावली, पद-12, 16 विनय-पत्रिका, पद-160 विनय प्रेम पचासा-पद-36 (भा० ग्रं०)
नाम से उद्धार।	वृंद-ग्रंथावली-स्फुट छंद-26
हरिस्मरण से मोक्ष।	सूरसागर, पद-28 सूरसागर पद-89
भगवात की गति की अलक्षता।	—वही-—पद-132
बिना परिश्रम यश प्राप्ति।	—वही—पद-193
वचन-वक्रता	
औदत्य—कथन।	पद्माकर-पंचामृत-पृ० 228, 238
उपालम्भमूलक।	सूरसागर, पद-138, 145, 179 श्रीविष्णुलहरी, पद-14 (रत्नाकर)
दीनता-प्रदर्शन।	—वही-पद-192
औचित्य	
नाम-औचित्य।	कवितावली-7/90,7/93
अलंकार।	नटनागर विनोद, पृ० 31
निवेदन-औचित्य।	सूरसागर, पद-175
जीवन-दर्शन	
प्रेम-भावना।	नटनागर विनोद, पृ० 31

गणेश की कथा

अलंकार

अपह्नुति—गणेश के अंगों का निषेध कर उपकरणों की स्थापना।	काव्य-निर्णय
मालोपमा—मलेच्छ सेना से शिवाजी के युद्ध के अनेक उपमान।	भूषण-भारती-छत्रसाल-दशक, पृ० 40
काव्यलिंग—प्रथम पूजा का हेतु राम नाम।	विनय-पत्रिका-पद-247
रूपक—शिवाजी में गणेश का आरोप।	भूषण-ग्रंथावली, पद-65
हीनोदात्त—गणेश के एकदन्त होने का उल्लेख कर उनका अपकर्ष व्यंजित।	छत्रप्रकाश-पृ० 1
उल्लेखात्मक प्रयोग	चित्राधार, पृ० 31

गरुड़-आख्यान

गरुड़ और अरुण

अलंकार

सन्देह—जल में दोनों हाथ उठाये कर्ण में अरुण को मस्तक पर लिए व पंख फैलाए खड़े हुए गरुड़ का सन्देह	रश्मिरथी, पृ० 77

गरुड़ का स्वर्ग से अमृत लाना/ गरुड़ के पंखों से अमृत झड़ना

अलंकार

उदाहरण—कृष्ण द्वारा रुक्मिणी हरण के लिए उदाहरण।	पुरुषोत्तम, पृ० 176
उपमा—पद्मावती के पत्र की तुलना अमृत से और हीरामन की तुलना गरुड़ से।	पद्मावत-225/23

गरुड़-सर्प वैर

अलंकार

अतिशयोक्ति—शिवाजी की सेना का वर्णन।	छत्र-प्रकाश, पृ० 38
उत्प्रेक्षा—वीरसिंह को मुगलों द्वारा घेरे जाने की तुलना।	केशव ग्रंथावली, भाग-3 (वीर० चरित्र-14/22)
रामदेव और अब्दुला की तुलना।	—वही-14/37

उदाहरण—कंस पर श्रीकृष्ण के झपटने के लिए उदाहरण।	कृष्णायन, 1/65
बालक का सेना पर टूटना।	चित्राधार, पृ० 25
शिवाजी के पौरुष की तुलना।	छत्र-प्रकाश, पृ० 44
श्रीकृष्ण को देख कुण्डिनपुर के रक्षकों के स्तब्ध रह जाने के लिए उदाहरण।	फेरि मिलिबो, पृ०-69
कंस के अनेक मृत योद्धाओं में खड़े श्रीकृष्ण के लिए उदाहरण।	
हनुमान की निशाचरों से भयहीनता।	रामचरितमानस-5/20
मलेच्छ सेनाओं पर शिवाजी का टूटना।	शिवराज भूषण, पृ० 25
दिल्लीपति और शिवाजी के लिए उदाहरण।	शिवराज भूषण, पृ० 73
उदाहरणमाला—शिवाजी और मलेच्छवंश के उनके उदाहरण	शिवा-बावनी, पृ० 20
मालोपमा—मलेच्छ सेना से शिवाजी के युद्ध के अनेक उपमान।	भूषण भारती (छत्रसाल दशक) पृ० 40
रूपक—मन पर फन (सर्प फन) अहंकार पर गरुड़ का आरोप।	राधा, पृ० 13
शिव पर गरुड़ अंधकासुर पर सर्प का आरोप।	विनय-पत्रिका, पद-49
मुगल सेना पर भुजंग शिवा-सेना पर गरुड़ का आरोप।	शिवराज भूषण, पृ० 29
शिवाजी पर गरुड़ औरंगज़ेब पर सर्प का आरोप।	भूषण-ग्रंथावली पद-37 (शिवा-बावनी)

उल्लेख

कृष्ण का कालिय नाग से कथन।	कृष्णायन-1/100 ब्रजचन्द्र-विनोद (पूर्वार्द्ध) 101

गरुड़ द्वारा ब्राह्मण का भक्षण

अलंकार

उदाहरण—कलिकाल द्वारा भक्त को भक्षण कर उगलना।	कवितावली, 7/102

गरुड़ का भुशुण्डि के पास जाना

अलंकार

अर्थान्तरन्यास—अभिमान के दुखदाई होने का	विश्राम-सागर, पृ० 33।

समर्थन।

गांधारी को सौ पुत्रों की प्राप्ति

उल्लेखात्मक-प्रयोग।

कवि कथन—गुरुवंश वर्णन। जयभारत, पृ० 32

गांधारी का कृष्ण को शाप

अलंकार

अर्थान्तरन्यास—बिना भगवान की इच्छा के कार्यों की असंभाव्यता का समर्थन। ब्रजचन्द्र-विनोद-(उ०) पृ० 463

काव्यलिंग—यदुजनों के पाप-पथ पर जाने का कारण गांधारी का शाप कृष्णायन, 7/144

संकर—(उपमा और उत्प्रेक्षा का सम्मिश्रण) कृष्णायन, 7/159

दृष्टान्त

सहनशील नारी की अवज्ञा असंभव। द्रौपदी, पृ० 52

उल्लेखात्मक प्रयोग

यदुवंश विनाश वर्णन। कृष्णायन-7/154

औचित्य

कुल—औचित्य, व्रत-औचित्य। कृष्णायन, 7/154

जीवन-दर्शन

गुणवान नारी की अवज्ञा असंभव। द्रौपदी, पृ० 52

सम्पूर्ण कार्यों का कर्ता ईश्वर। ब्रजचन्द्र-विनोद (उ०) पृ० 463

बुराइयों का हेतु स्वयं को स्वीकारना। द्रौपदी, पृ० 52

गोपियों द्वारा कामदेव और रति को शाप

अलंकार

काव्यलिंग—संसार में आने का हेतु गोपियों का शाप। बोधा-ग्रंथावली-1/51

घंटाकर्ण की कथा

अलंकार

रूपक—काशीरूपी गाय का घंटा। विनय-पत्रिका, पद-7

चंड-मुण्ड वध

अलंकार

उदात्त—शक्ति के पौरुष का वर्णन। भूषण-भारती (छप्पय-1)

काली के पौरुष का कथन।	वृंद-ग्रंथावली-स्फुट छंद-पृ० 58
निदर्शना—माया से सम्बन्ध स्थापित।	छत्रप्रकाश-पृ० 6
रूपक—शत्रुओं पर चंड-मुण्ड का आरोप।	भूषण-भारती (शिवराज-भूषण) पृ० 30

चन्द्र-आख्यान

चन्द्रमा का जन्म

वाक्य औचित्य।	व्रज-विहार, पद-312-314

चन्द्रमा में से अमृत टपकना

अलंकार

उत्प्रेक्षा—मुख में चन्द्रमा, दूध में अमृत की संभावना	सूरसागर, पद-1351

चन्द्रदेव का राजसूय यज्ञ

अलंकार

उदात्त—कुरुक्षेत्र की श्रेष्ठता का वर्णन।	अंगराज, पृ० 185

चन्द्रमा का गुरुपत्नी से व्यभिचार/चन्द्रमा का कलंकी होना

अलंकार

अर्थान्तरन्यास—राजपद से गर्व।	रामचरितमानस-2/228
देवों द्वारा प्रदत्त कलुषिता।	पृथ्वीराज रासो-26/27
विधि के लिखे को पलटना संभव नहीं।	वृंद-ग्रंथावली-पृ० 306
उत्प्रेक्षा—नायिका के दिठौना में चन्द्र कलंक की संभावना।	काव्य-निर्णय-8/20
मुख में चन्द्रमा दूध में अमृत की संभावना।	सूरसागर, पद-1351
उपमा—जायसी की कलंकी चन्द्रमा की अपने से तुलना।	पद्मावत-21/1-2
काव्यलिंग—सबसे बड़े अधर्म का हेतु गुरु-पत्नी गमन।	कृष्णायन(बिसाहूराम) पृ० 432
कलंक लगने का हेतु चन्द्र-दर्शन।	
परिणाम—शिवाजी के यश से चन्द्र का कलंक धुलना।	भूषण-ग्रंथावली, पद-68
प्रतीप—शिवाजी का यश चन्द्रमा से अधिक उत्कृष्ट।	भूषण-ग्रंथावली-पद-48
रूपक—शिवाजी में चन्द्र का आरोप।	भूषण-ग्रंथावली-पद-65

ललित—निशाकर की क्रूरता का कथन।	काव्य-निर्णय-16/19
व्यतिरेक—पद्मावती का मुख चन्द्रमा से अधिक सुन्दर।	पद्मावत-201/3
सीता के मुख से चन्द्रमा को हीन बताना।	रामचरितमानस-1/237
मुख चन्द्रमा से अधिक सुन्दर।	विद्यापति-पदावली, पद-101
शिवाजी के यश का अधिक उत्कर्ष।	शिवराज-भूषण-14
दृष्टान्त	
भाग्य की प्रबलता का प्रतिपादन।	चित्ररेखा, पृ० 86
अवगुण करने वाले को सुख प्राप्ति नहीं।	विश्राम-सागर, पृ० 359
(गुढ़ोत्तरपुष्ट दृष्टान्त) अपराध का गुरुतर दण्ड नहीं।	पृथ्वीराज-रासो-3/36
वचन-वक्रता	
निन्दामूलक उपहास।	मधुमुकुल, पद-59 (भा० ग्रं०)
औचित्य	
धर्म।	कृष्णायन (बिसाहू राम) पृ० 432
परिवाद।	मधुमुकुल, पद-59 (भा० ग्रं०)
जीवन-दर्शन	
अवगुणों से मनुष्य का अपमान	विश्राम-सागर, पृ० 359

चन्द्रमा में खरगोश का रहना

अलंकार	
रूपक—आनन पर विधु का श्याम अलक पर शशलांछन का आरोप।	कृष्णायन-1/154

चन्द्रमा का मृग लांछित होना

अलंकार	
उत्प्रेक्षा प्रतीयमाना—जंगल की गहनता के लिए उपमान की संभावना।	फेरि मिलिबो, पृ० 136
उदाहरण—श्रीराम के चरणों से अलग रहने का दुख।	विनय-पत्रिका-पद-197
काव्यलिंग—मृग को अंक में धारण करने का हेतु विधि रचना सकलंक होना।	अंगराज, पृ० 81
अर्थापत्ति सन्देह—	विद्यापति-पदावली-पद-196

स्मरण, व्यतिरेक—लावण्य को देख मृगलांछन का स्मरण होना। — राधा, पृ० 9

चन्द्रमा से अधिक राधा के लावण्य की प्रशंसा।

प्रतीक

(मृग का राकेश को तजना) समय प्रतिकूलता अनिष्ट का संकेत। — द्रौपदी, पृ० 37

औचित्य

शास्त्र-औचित्य। — द्रौपदी, पृ० 37

चन्द्र-रोहिणी की कथा

अलंकार

उत्प्रेक्षा—सुन्दरियों के मस्तक में चन्द्र, तिलक के नग में रोहिणी की संभावना। — पृथ्वीराज-रासौ-4/20

राम में चन्द्र और सीता में रोहिणी की संभावना। — रामचरितमानस-1/237

रुक्मिणी के भाल के मध्य में लगी बेंदी में चन्द्रमा के अंक में रोहिणी के रहने की संभावना। — रुक्मिणी-परिणय-पृ० 214

उत्प्रेक्षा, सन्देह—मोहन व मोहिनी में चन्द्र व रोहिणी का सन्देह व संभावना। — कथा-मोहिनी-4/125

उपमा—पुरुरवा और औशीनरी के लिए उपमान। — उर्वशी, पृ० 28

सन्देह—कर्ण की गोद में बैठी उसकी पत्नी के लिए चन्द्रमा की गोद में बैठी रोहिणी का सन्देह। — सेनापति कर्ण, पृ० 145-146

हेतु—परपुरुष की शंका का हेतु चन्द्रमा और रोहिणी। — वृंद-ग्रंथावली-पृ० 14

चन्द्रमा का रोगी होना

अलंकार

उदाहरण—प्रेम की निर्दयता। — विनय-पत्रिका, पद-191

दृष्टान्त

अतिशयता विनाशकारी। — केशव ग्रंथावली-भाग-3

(वीर० चरित्र-2/1-2)

चन्द्रहास की कथा

उत्प्रेक्षा—कृष्ण के मुख में चन्द्र और वचनों में अमृत की संभावना। — बोधा-ग्रंथावली-2/10

उपमा—वीरसिंह के लिए उपमा। — केशव-ग्रंथावली-खण्ड-3 (वीर० चरित्र-33/31)

दृष्टान्त

होनी की प्रबलता की पुष्टि। — विश्राम-सागर, पृ० 212

च्यवन सुकन्या की कथा

अलंकार

उदाहरण—चित्रलेखा द्वारा च्यवन-सुकन्या का उदाहरण। — उर्वशी, पृ० 102

जगदम्बा का चामुंडा बनना

अलंकार

काव्यलिंग, परिकुरांकुर—चामुण्डा बनने का हेतु नरबलि। — सुवर्णा, पृ० 56

जगदम्बा में वात्सल्य एवं पालनकारिणी शक्ति का साभिप्राय प्रयोग।

चार्वाक की कथा

अलंकार

काव्यलिंग—संसार के पतन का हेतु चार्वाक-दर्शन। — केशव-ग्रंथावली-भाग-3 (जहांगीर जस चन्द्रिका-5/8)

जड़भरत-आख्यान

अलंकार

उपका—भरत का उपमान। — साकेत, पृ० 130

जगदेव द्वारा सिर दान

दृष्टान्त

दान से यश। — केशव-ग्रंथावली (वीर० चरित्र-2/18)

जनक द्वारा सिद्धियों की प्राप्ति/विदेह-आख्यान

अलंकार

अत्युक्ति—शिवाजी के दान का बढ़ा-चढ़ाकर वर्णन। — भूषण-ग्रंथावली-17/22

उदाहरण—दोनों लोकों को साधने का उदाहरण। — रामचन्द्रिका-1

उदाहरणमाला—छत्रसाल द्वारा कष्ट उठाने के अनेक उदाहरण। — छत्रप्रकाश-पृ० 75

उपमा—वीरसिंह के लिए उपमान। — केशव-ग्रंथावली-भाग-3 (वीर० चरित्र-33/30)

राजा रामचन्द्र का उपमान। — छत्रप्रकाश-पृ० 10

उपमेयोपमा—शिव ही जनक के समान। — भूषण-भारती (शिवराज-भूषण-पृ० 146)

काव्यलिंग—सिद्धि प्राप्ति का हेतु कर्मपथ पर चलना। — कृष्णायन, 5/135

काव्यलिंग, रूपक—निज पाश काटने का हेतु विदेह जैसा राज्य। — सुवर्णा, पृ० 78

संयम पर विदेह राजा का आरोप।

उपमा—उपनन्द के लिए उपमान। — मधुपर्क-11/123

युधिष्ठिर के लिए उपमान। — कृष्णायन-5/135

दृष्टान्त

कर्मपथ सिद्धि का मार्ग। — कृष्णायन-5/135

औचित्य

विचार-औचित्य। — कृष्णायन-5/135

जीवन-दर्शन

कर्म-दर्शन। — कृष्णायन-5/135

जनमेजय का नाग-यज्ञ

अलंकार

उत्प्रेक्षा—सुन्दरियों की वेणियों में नागों की — पृथ्वीराज-रासौ-4/20

संभावना ।	
वीरसिंह के तलवार धारण करने का उदाहरण।	केशव-ग्रंथावली-भाग-3 (वीरसिंह चरित्र-14/28-29)
उदाहरण—विपत्ति-ग्रस्त के उद्धार का उदाहरण।	मृगावती-2/36/24
दुष्ट को दंड देना ।	मृगावती-2/47/2-4

दृष्टान्त

अतिशयता से विनाश ।	केशव-ग्रंथावली-भाग-3 (वीरसिंह चरित्र-2/3)

जयद्रथ का शिव से वरदान प्राप्त करना

अलंकार

काव्यलिंग—चार से लड़ने का हेतु शिव का वरदान ।	ब्रजचन्द्र विनोद (उत्तरार्द्ध) पृ० 355

जयन्त द्वारा सीता का अपमान

अलंकार

उदात्त—राम के पौरुष का कथन ।	रामचरितमानस-6/36
राम की उदारता का वर्णन ।	विनय-पत्रिका, पद-43
स्मरण—जयन्त द्वारा अपना कृत्य स्मरण ।	रामचरितमानस-5/27

दृष्टान्त

राम के विरोध से विनाश ।	कवितावली-6/27
कुचाल का परिणाम कष्ट ।	दोहावली-दो०-4/15
अबला के अपमान का प्रतिकार ।	पार्थपत्नी महासती द्रौपदी, पृ० 39

जीवन-दर्शन

नारी का अपमान करने वाले व्यक्ति का अंत अवश्यम्भावी ।	पार्थपत्नी महासती द्रौपदी, पृ० 39
उल्लेखात्मक-प्रयोग	रामचरितमानस-3/1

जय-विजय आख्यान

भगवान की गति की अलक्षता ।	सूरसागर, पद-104
जीवन-आदर्शों का प्रतिपादन ।	पार्थपत्नी महासती द्रौपदी-पृ० 111

जह्नु का गंगा पान । जह्नु द्वारा तपस्या

अलंकार

अर्थान्तरन्यास—अभिमान के दुखदाई होने का समर्थन।	विश्राम-सागर, पृ० 331
सन्देह—किंधौं से सन्देह।	पद्माकर-पंचामृत, (गंगा लहरी-पृ०2)

जीवन-दर्शन

गर्व-त्याग	विश्राम-सागर, पृ० 331

जरासंध-आख्यान

अलंकार

उदाहरण--शिवाजी और मलेच्छ सेना के लिए उपमान।	शिवराज-भूषण-25
उपमा—सैनिकों के लिए उपमान	पृथ्वीराज-रासौ-20/129
मालोपमा—शिवाजी के लिए भीम, मुगलों के लिए जरासंध उपमान।	भूषण--ग्रंथावली, पद-36 (शिवा-बावर्नी)

तारकासुर वध

अलंकार

स्मरण—महामात्य द्वारा तारका सुर युद्ध का वर्णन।	उर्वशी, पृ० 142
दृष्टान्त—मरणवीरों का धर्म।	सेनापति कर्ण, पृ० 38

दंडक वन की कथा

अलंकार

काव्यलिंग—पवित्रता का हेतु रामचरण।	विनय-पत्रिका, पद-257

दधीचि-आख्यान। दधीचि द्वारा हड्डियों का त्याग

अलंकार

उदात्त—कुरुक्षेत्र की महत्ता का वर्णन।	अंगराज, पृ० 185
भारत के ऐश्वर्य का वर्णन।	मधुपुरी, पृ० 5
भारत के चित्र की श्रेष्ठता।	मधुपर्क-2/16
कृष्ण के औदात्य का वर्णन।	मधुपर्क-7/59
भारत की समृद्धि का वर्णन।	मधुपर्क-9/26
उदात्त, उपमा—कृष्ण के औदात्य का कथन।	रश्मिरथी, पृ० 58

कर्ण के लिए उपमान व्यंजित ।	
कर्ण के लिए उपमान ।	अंगराज, पृ० 273
गोपचन्द राजा की दधीचि से तुलना ।	छत्र प्रकाश-पृ० 4
सैनिकों का वृक्षस्थल दधीचि की हड्डियों से निर्मित ।	पृथ्वीराज-रासौ-22/60
उपमा—हुसैन खां की हड्डियां दधीचि के समान ।	वही, 30/32
दशरथ के लिए उपमान ।	रामचन्द्रिका-5/31
शिवसिंह के लिए उपमा ।	विद्यापति-पदावली-258
मलोपमा—वीरसिंह के गुणों के अनेक उपमान ।	केशव-ग्रंथावली-भाग-3 (वीर० चरित्र-27/25-26)
जहांगीर के लिए अनेक उपमान ।	जहांगीर जस चन्द्रिका, पृ० 18
काव्यलिंग—दधीचि को गाली देने का कारण कलि का प्रभाव ।	कवितावली-7/99
दुख का हेतु दधीचि का दुख ।	केशव-ग्रंथावली-खण्ड-3 (वीर० चरित्र-2/18)
गुढ़ोत्तर—दधीचि के त्याग का संकेत ।	साकेत, पृ० 354

दृष्टान्त

दान से यश ।	केशव-ग्रंथावली-खण्ड-3 (वीर० चरित्र-2/18)
दान के महत्त्व का प्रतिपादन ।	जरासंध, पृ० 92
जीवन-आदर्शों का प्रस्तुतीकरण ।	पार्थपत्नी महासती द्रौपदी, पृ० 112
परोपकार के लिए पर-विपत्ति भी सिर पर धारण करना ।	ब्रजचन्द्र विनोद (पूर्वा०) पृ० 193
दान, औदात्य तथा व्रताचरण की पुष्टि ।	रश्मिरथी, पृ० 54

उल्लेखात्मक-प्रयोग — दोहावली-दो० 382

औचित्य

दानवीर ।	जरासंध, पृ० 30
अलंकार ।	मधुपुरी, पृ० 5
व्रताचरण ।	रश्मिरथी, पृ० 54

जीवन-दर्शन

राष्ट्रीय-भावना ।	अंगराज, पृ० 185

	मधुपर्क-9/25-26
लोक-कल्याण ।	जरासंध, पृ० 192
त्याग ।	मधुपर्क-9/26
पुरुषार्थ ।	मधुपर्क-पृ० 123
वचन-पालन ।	रश्मिरथी, पृ० 54

दिग्गजों द्वारा पृथ्वी को उठाना

अलंकार

अतिशयोक्ति—छत्रसाल की सेना का बढ़ा-चढ़ाकर वर्णन ।	भूषण-भारती (स्फुट छंद-6)
शिवाजी की सेना का बढ़ा-चढ़ाकर वर्णन।	वही (शिवा-बावनी, पृ० 38)
काव्यलिंग—दिग्गजों के निश्चित होने का हेतु शिवा ।	वही, (शिवा-बावनी, पृ० 50)

दिलीप द्वारा नन्दिनी की सेवा । दिलीप का राज्य

अलंकार

उदात्त—अयोध्या की श्रेष्ठता का कथन ।	चित्राधार, पृ० 11
भारत की महिमा का वर्णन ।	मधुपर्क-2/20
उपमा—दशरथ के लिए उपमान ।	रामचन्द्रिका-2/10
गुढ़ोत्तर—	साकेत, पृ० 346

प्रतीक

दिलीप-लोकनायक (प्रजासेवक)	मधुपर्क, 5/107

जीवन-दर्शन

लोक-कल्याण ।	मधुपर्क-5/107

दीर्घतमस-आख्यान

अलंकार

उदाहरण—ऋषि दीर्घतमस के स्वप्न का कर्ण के स्वप्न के लिए उदाहरण ।	सुवर्णा, पृ० 34

द्रुपद-द्रोण वैर

अलंकार

अर्थान्तरन्यास—अभिमान के दुखदाई होने का समर्थन ।	विश्राम-सागर, पृ० 331

औचित्य

प्रतिकार-औचित्य।	सेनापति कर्ण, पृ० 35

उल्लेखात्मक-प्रयोग

अश्वत्थामा का कर्ण से कथन।	सेनापति कर्ण, पृ० 35

दुर्गा की उत्पत्ति

अलंकार

उदात्त, उल्लेख—नारी के शौर्य का वर्णन।	महारास, पृ० 56
नारी के शौर्य का अनेक रूपों में उल्लेख।	

जीवन-दर्शन

नारी के शौर्य का प्रतिपादन।	—वही—

दुर्योधन का वज्रांग होना

अलंकार

उदात्त—पाण्डवों की श्रेष्ठता का वर्णन।	पार्थपत्नी महासती द्रौपदी, पृ० 19

वचन-वक्रता

प्रतिशोध-मूलक।	उत्तर-जय, पृ० 1

जीवन-दर्शन

गर्व-त्याग।	—वही—

दुर्योधन वध

अलंकार

उपमा—नायिका के हर्ष और शोक का उपमान।	बिहारी-सतसई-412
काव्यलिंग—पतन का हेतु हठ।	केशव-ग्रंथावली (वीर० चरित्र-11/46-47)

दृष्टान्त

लोभ से विनाश।	छत्र प्रकाश-2/6
गर्व से विनाश।	रामचरितमानस-3/132

दुर्वासा का कृष्ण को वर

अलंकार

अर्थान्तरन्यास—बिना भगवान की इच्छा के कार्यों की असंभाव्यता का समर्थन।	ब्रजचन्द्र विनोद (उ०) पृ० 363

दुष्यन्त-शकुन्तला की कथा

अलंकार

उत्प्रेक्षा—देवजानी और ज्ञानदीप के मिलने की तुलना।	ज्ञानदीप, छंद-164
उदात्त—पाण्डवों की श्रेष्ठता का वर्णन।	पार्थपत्नी महासती द्रौपदी, पृ० 1
भारत के ऐश्वर्य का वर्णन।	मधुपर्क, 2/22, चित्राधार, पृ० 26
राधा की श्रेष्ठता का कथन।	मधुपर्क, 9/29
उदाहरण—कृष्ण के ध्यान में बैठी रुक्मिणी के लिए उदाहरण।	पुरुषोत्तम, पृ 168
स्मरण—शकुन्तला के विरह का स्मरण।	चित्राधार, पृ० 19

दुशासन का वध

अलंकार

उत्प्रेक्षा—रतनसेन को बंदी बनाने की घटना की तुलना।	पद्मावत-576/7
उपमा—प्रतापसिंह के पराक्रम का वर्णन।	वृंद-ग्रंथावली, पृ० 226,
उल्लेखात्मक प्रयोग	मृगावती-27/1

त्रिशंकु की कथा

अलंकार

अर्थान्तरन्यास—राजपद से गर्व होने की पुष्टि।	रामचरित मानस-2/229
उदाहरण—दोनों लोक नष्ट करना।	रामचन्द्रिका-17/22
ललितोपमा—अंगद की शक्ति की क्षीणता की उपमा।	राम चन्द्रिका-38/14
व्याजस्तुति—राम की प्रशंसा।	रामचन्द्रिका-27/23

दृष्टान्त

लोभ से विनाश।	केशव-ग्रंथावली भाग-3 (वीर० चरित्र-2/6)
हठ से पतन।	वही, 11/46-47

देवशर्मा की तपस्या

अलंकार

उदात्त—देवप्रयाग की समृद्धि का कथन ।	कृष्णायन-3/183

देवासुर-संग्राम

अलंकार

उदात्त—राधा द्वारा निर्मित चित्र की श्रेष्ठता का वर्णन ।	मधुपर्क-2/17
उपमा—कर्ण के विदर्भ-राज से हुए युद्ध का उपमान ।	अंगराज-पृ० 90
उदाहरण—अर्जुन का भीम आदि को साथ लेकर कर्ण तथा उसके साथियों से युद्ध करने का उदाहरण	जयद्रथ-वध-पृ० 90
इन्द्र का दैत्यों से लड़ना—अर्जुन के कौरवों से युद्ध का उदाहरण ।	व्रजचन्द्र-विनोद-पृ० 347 (उ०)
स्मरण—विष्णु का असुरों से युद्ध—अर्जुन के युद्ध को देखकर विष्णु के असुरों के साथ हुए युद्ध का स्मरण ।	जयद्रथ-वध-पृ० 41

प्रतीक

देवासुर संग्राम-भौतिकता के लिए संघर्ष ।	गोपिका-पृ० 86

द्रोण-आख्यान

द्रोणाचार्य का जन्म

दृष्टान्त

जन्मना जाति का खण्डन और कर्मणा जाति का प्रतिपादन ।	कृष्णायन (बिसाहूराम) पृ० 378-379

द्रोणाचार्य का द्रुपद के पास जाना

उल्लेखात्मक-प्रयोग

अश्वत्थामा का कर्ण से कथन ।	सेनापति-कर्ण, पृ० 35

द्रोणाचार्य का कौरव-पाण्डवों का गुरु बनना

अलंकार

अप्रस्तुत प्रशंसा ।	दोहावली-दो० 418

उत्प्रेक्षा-सन्देह—समरविक्रम में द्रोण का सन्देह और संभावना।	पृथ्वीराज-रासो-22/30
उपमा—गुरुराम पुरोहित का उपमान।	पृथ्वीराज-रासो-21/19
भाऊ के लिए द्रोणाचार्य उपमान।	भूषण-ग्रंथावली-पद-35

द्रोण-वध

दृष्टान्त

कुछ गंवाने से ही रक्षा संभव।	केशव-ग्रंथावली (वीर० चरित्र-13/15)

जीवन-दर्शन

मिथ्याचरण, त्याग।	सेनापति-कर्ण, पृ०42

द्रौपदी-आख्यान

यज्ञ की वेदी से द्रौपदी का जन्म

अलंकार

उदात्त—द्रौपदी के औदात्य का वर्णन।	जयभारत, पृ० 116

द्रौपदी को पांच पतियों की प्राप्ति का वरदान

उल्लेखात्मक-प्रयोग

कृष्ण का पाण्डवों से कथन—द्रौपदी-जन्म वृत्तान्त।	ब्रजचन्द्र विनोद, पृ० 502 (पू०)

द्रौपदी द्वारा कर्ण को अस्वीकारना

अलंकार

अर्थान्तरन्यास– अवैध के त्याज्य होने का समर्थन।	द्रौपदी, पृ० 14

औचित्य

शाप-औचित्य, निषेध-औचित्य।	पार्थपत्नी महासती द्रौपदी, पृ० 63

द्रौपदी-स्वयंवर। द्रौपदी का अर्जुन से विवाह

अलंकार

उत्प्रेक्षा—नल द्वारा अचूक लक्ष्य।	नलदमन-छंद 217
हेतुत्प्रेक्षा—अर्जुन के बाण की तरह ही सर्वमंगला	अनुराग-बांसुरी, 78/5

के कटाक्षों में तीक्ष्णता ।

उदाहरण—पद्मावती को वशवर्ती बनाना ।	पद्मावत-197/5-7
रतनसेन द्वारा पद्मावती को जीतना ।	वही, 491/3-4
इन्द्रावती को किसी के द्वारा ब्याहने का उदाहरण ।	इन्द्रावती (पूर्वार्द्ध), फाग-खण्ड, 19/1-3
उपमा—रतनसेन व पद्मावती के लिए उपमा ।	पद्मावत-316/4
इन्द्रावती व उसके प्रेमी के लिए उपमा ।	इन्द्रावती (पूर्वार्द्ध) फागखण्ड-19/1-3
प्रतीप—पद्मावती की भौंहें अर्जुन के धनुष से अधिक वक्र ।	पद्मावत-102/5

दृष्टान्त

प्रेमिका प्राप्त करने के लिए पुरुषार्थ ।	पद्मावत-234/23/18
शीलता का द्योतन ।	वही, 561/7

प्रतीक

अर्जुन-वर	पद्मावत-197/5-7, 198/6, 491/3-4
द्रौपदी-नायिका	इन्द्रावती (पूर्वार्द्ध) फाग-खण्ड, 18/5
मत्स्य-शर्त	
उल्लेखात्मक प्रयोग	मृगावती-27/3

द्रौपदी द्वारा दुर्योधन का उपहास

दृष्टान्त

विरह व्यथा का अनुभव ।	बिहारी-सतसई-287

द्रौपदी का पांडवों के साथ वन में रहना

अलंकार

उदात्त—द्रौपदी के औदात्य का कथन ।	कृष्णायन-6/271

औचित्य

कुल-औचित्य ।	कृष्णायन-6/271

द्रौपदी का विराट की दासी बनना

अचित्य

कुल-औचित्य ।	कृष्णायन-2/271

धन्वन्तरि वैद्य की कथा

औचित्य

विप्रलम्भ शृंगार।	नटनागर-विनोद-पृ० 92-93, 101

अलंकार

अतिशयोक्ति—हिम्मत बहादुर का वर्णन।	पद्‌माकर-पंचामृत-पृ० 17
उदाहरण—(रोगों का भागना) वीरसिंह की देख शत्रु सेना का पलायन।	केशव-ग्रंथावली-भाग-3 (वीरसिंह चरित्र-14/21)

धन्ना-जाट

अलंकार

उदात्त—राम के औदात्य का कथन।	पद्‌माकर-पंचामृत, पृ० 232
अवज्ञा—रोष को न देखना।	काव्य निर्णय-14/19

ध्रुव-आख्यान (ध्रुव पर कृपा)

अलंकार

अर्थान्तरन्यास—सत्पुरुषों के वचन अटल होने की पुष्टि।	राज-विलास-41
असंगति—ध्रुव के साथ चपलता का प्रयोग।	भूषण-भारती-दोहावली-115
उदात्त—भगवान के औदात्य का कथन।	पृथ्वीराज-रासौ, 20/12
	मधुपर्क, 7/59
	विश्राम-सागर, पृ० 312
	सुवर्णा, पृ० 62
भारत के ऐश्वर्य का वर्णन।	मधुपुरी, पृ० 5
भीष्म की अचल निष्ठा सम्पत्ति का वर्णन।	सुवर्णा, पृ० 40
उदात्त, काव्यलिंग—श्रीकृष्ण के चरणों की श्रेष्ठता का कथन। तरने का हेतु चरण-स्पर्श।	मीरा-पदावली-पद-1
उदाहरण—भक्तों का दुःख मिटाने के लिए उदाहरण।	व्रजचन्द्र-विनोद, पृ० 6 (पू०)
उदाहरण, काव्यलिंग—गोपियों के प्रेम के लिए ध्रुव के प्रेम का उदाहरण। प्रेम में पड़ने का हेतु भगवान की भक्त-वत्सलता।	नटनागर-विनोद, पृ० 31

उपमा—विश्व की पीड़ा की तुलना ।	कानन-कुसुम-मकरन्द बिन्दु
सलख जैत्र का उपमान ।	पृथ्वीराज-रासौ, 20/2
समर-विक्रम के लिए ध्रुव-उपमान ।	वही, 22/69
पृथ्वीराज की अटलता के लिए उपमान ।	वही, 29/36
आस के लिए उपमान ।	फेरि-मिलिबो, पृ० 23
शिवाजी के वचनों के लिए उपमान ।	भूषण-भारती (दोहावली-35)
अर्जुन के लिए उपमान ।	सुवर्णा, पृ० 28
काव्यलिंग—भ्रमु भरोसे का हेतु है ध्रुव आदि की सुधि ।	कृष्णायन (बिसाहूराम) पृ० 257
माता-पिता त्यागने का हेतु हरिप्रेम ।	ब्रजचन्द्र-विनोद, पृ० 214 (पू०)
मुक्ति का हेतु राम नाम ।	रामचरित मानस-1/26
भजने में हेतु भक्तों का ताप-निवारण ।	सूरसागर, पद-28
प्रतीप—शिवाजी की अटलता ध्रुव से बढ़कर ।	भूषण-ग्रंथावली-पद-52
मिथ्याध्यवसित—शिवाजी के लिए मिथ्या कथन ।	भूषण-ग्रंथावली-पद-173, 274
वस्तु ध्वनि ।	कवितावली-7/88
व्यतिरेक—शिवाजी का ध्रुव से अधिक उत्कर्ष वर्णित ।	भूषण-भारती-पृ० 135 (दोहावली)

दृष्टान्त

जीवन आदर्शों का प्रस्तुतीकरण ।	पार्थपत्नी महासती द्रौपदी, पृ० 111
सच्चे प्रेम से ही भगवान की प्राप्ति ।	ब्रजचन्द-विनोद (पू०) पृ० 214, 217
भगवान की भक्त वत्सलता ।	ब्रजचंद्र विनोद (उ), पृ० 446
	विनय-पत्रिका-पद-137
	सूरसागर, पद-11
	हृदय-तरंग, पृ0 147
भगवान की पतित पवनता की पुष्टि ।	मीरा पदावली-पद-16
भगवान की शरणागत-वत्सलता ।	विनय-पत्रिका-पद-99
होनी की प्रबलता की पुष्टि ।	विश्राम-सागर, पृ० 292
प्रेम से मोक्ष पद प्राप्ति ।	सूरसागर, पद-176
भगवान के भक्तों को सब अधिकार प्राप्त ।	हृदय-तंग, पृ० 36
भगवान के भक्तों को अभय प्राप्ति ।	हृदय-तरंग पृ० 34

प्रतीक

ध्रुव-अटलता।	आनन्द घन (बहोत्तरी) पृ० 15 पद्माकर-पंचामृत-पृ० 4 पृथ्वीराज-रासो-23/83 भूषण-भारती-पृ० 115
ध्रुव-ध्यानी-स्थिर अटल।	द्वापर, पृ० 175
ध्रुव-निश्चयता।	वही, 28/7
ध्रुव-धारण-निश्चित धारणा।	मधुपर्क, 3/41
ध्रुव-सत्य पर अटल रहने वाला।	मधुपर्क-8/772
ध्रुव-ध्येय।	राधा, पृ० 11
ध्रुव-तारा-निश्चित लक्ष्य।	राधा, पृ० 35
ध्रुव-अडिगता।	साकेत, पृ० 31
ध्रुव-धर्म — धर्म की अटलता।	साकेत, पृ० 134
ध्रुव-धर्म — कर्तव्य की अटलता।	साकेत, पृ० 198
ध्रुव-अटलता, निश्चयता।	साकेत, पृ० 347
ध्रुव-अटलता।	साकेत, पृ० 363, 366, 372

औचित्य

अलंकार-औचित्य।	नटनागर-विनोद, पृ० 31

जीवन-दर्शन

पुरुषार्थ।	मधुपर्क, पृ० 123

नग्नजीत की कथा

श्रीकृष्ण के विवाहों का उल्लेख-कवि कथन।	श्रीकृष्ण लीलामृत, पृ० 36

नर-नारायण अवतार

अलंकार

उत्प्रेक्षा— राम और लक्ष्मण में नर और नारायण की संभावना।	रामचन्द्रिका-12/52
उदात्त —भरत खण्ड के ऐश्वर्य का कथन।	उर्वशी, पृ० 86
उपमा—राम और लक्ष्मण से तुलना।	रामचरितमानस-1/24
काव्यलिंग—अवतार का हेतु आत्मज्ञान की शिक्षा।	भगवान श्रीकृष्ण लीलामृत, पृ० 98

नल-दमयन्ती की कथा

अलंकार

अर्थान्तरन्यास—प्रेम-पंथ के कंटकाकीर्ण होने का समर्थन।	ब्रजचन्द्र-विनोद (पूर्वार्द्ध) पृ० 213
होनी की प्रबलता का समर्थन।	वृंद-ग्रंथावली-पृ०70
उत्प्रेक्षा—द्विजराज कन्हर और वीरसिंह की नल और दमयन्ती से उपमा।	केशव-ग्रंथावली-(वीरसिंह चरित्र) 18/28-30
राजकुंवर और मृगावती में नल दमयन्ती की संभावना।	मृगावती-171/2
नायिका-नायक को मिलाने के साधनों में नल दमयन्ती को मिलाने वाले हंसों की संभावना।	ज्ञानदीप, छंद-257
उदाहरण—रतनसेन और पद्मावती के वियोग का नल और दमयन्ती उदाहरण।	पद्मावत-200/6-7
रतनसेन से बिछुड़कर पद्मावती के उसके मिलने की आतुरता के लिए उदाहरण।	पद्मावत-255/7
सत्पुरुषों के दुखों की गणना न करने के लिए उदाहरण।	पद्माकर-पंचामृत-पृ०65
कामकन्दला विक्रम से नल-दमयन्ती की तरह माधवानल से मिलाने का अनुरोध।	माधवानल-कामकन्दला, पृ० 224
माधवानल-कामकन्दला का दीर्घ विरह के बाद नल-दमयन्ती के समान पुर्नमिलन।	वही, पृ० 231
मृगावती के राजकुंवर को मिलाने के लिए नल-दमयन्ती के मिलन का उदाहरण।	मृगावती-दो० 159
चरित्र के लिए उदाहरण।	रामचन्द्रिका-23/15
उदाहरणमाला—छत्रसाल पर कष्ट पड़ने के अनेक उदाहरण।	वृंद-ग्रंथावली-पृ० 70
उपमा—पांचाली और सुभद्रा के लिए दमयन्ती उपमान।	जयभारत, पृ० 147
युधिष्ठिर के लिए नल उपमान।	वही, पृ० 157
माधवानल—कामकन्दला के लिए नल-दमयन्ती उपमान।	माधवानल-कामकन्दला-पृ० 200
सीता के लिए दमयन्ती उपमान।	रामचन्द्रिका-32/37
देवज्ञानी व ज्ञानदीप के लिए उपमान।	ज्ञानदीप, छंद-164
मालोपमा—वीरसिंह के गुणों के अनेक	केशव-ग्रंथावली-भाग-3

उपमान ।	(वीर० चरित्र) 27/25-36
जहांगीर के अनेक उपमान ।	जहांगीर जस चन्द्रिका-पृ० 118
काव्यलिंग—युधिष्ठिर का कष्ट कम होने का हेतु नल का कष्ट ।	वृंद-ग्रंथावली-पृ० 333
प्रतीप—नायिका का अति बढ़ा-चढ़ाकर वर्णन ।	काव्य-निर्णय,7/37
वक्रोक्तिपुष्ट व्यतिरेक—सीता दमयन्ती से बढ़कर ।	रामचन्द्रिका-6/59
स्मरण—शकुन्तला के विरह से नल दमयन्ती का स्मरण ।	चित्राधार, पृ० 19

दृष्टांत

प्रत्येक व्यक्ति पर विपत्ति पड़ने की पुष्टि ।	कृष्णायन (बिसाहूराम) पृ० 350
दान से विपत्ति ।	केशव-ग्रंथावली-भाग-3 (वीर० चरित्र-पृ० 35-36, 53-54)
परिजनों से अनिष्ट ।	वही, 29/10-12
दान से यश ।	वही, पृ० 38-39
पुरुष की निष्ठुरता की पुष्टि ।	पुरुषोत्तम, पृ० 62
भ्रातृ-भाव स्थाई नहीं ।	पृथ्वीराज-रासौ-26/26
विरह की प्रशंसा ।	मधुमालती, पृ० 72
विरही का दुःख विरही जान सकता है ।	माधवानल-कामकन्दला, पृ० 208
राजकुंवर पर नल के समान विपत्ति ।	मृगावती, 132/4-5

प्रतीक

नल-दमयन्ती प्रेमी और प्रेमिका के मिलन का प्रतीक ।	मृगावती, 243/2

जीवन-दर्शन

नारी सहनशीलता के कारण पूज्या ।	जयभारत, पृ० 147

नहुष को सर्पयोनि की प्राप्ति

अलंकार

अर्थान्तरन्यास—राजपद से गर्व होने का समर्थन ।	रामचरित मानस-2/228, 229
उपमा—राजा का उपमान ।	वही,

स्मरण—युधिष्ठिर का अपने आचरणों को देख नहुष का स्मरण आना। — उत्तर-जय, पृ० 20

दृष्टान्त

अभिमान पतन का कारण। — पार्थपत्नी महासती द्रौपदी, पृ० 113

हठधर्मिता से संकट। — रामचरित मानस-2/61

जीवन-दर्शन

सदाचरण विरुद्धता की आलोचना। — उत्तर-जय, पृ० 20

गर्व-त्याग। — पार्थपत्नी महासती द्रौपदी, पृ० 113

प्रेम-भावना। — ब्रजचन्द्र-विनोद, पृ० 223 (पू०)

नागों का पाताल लोक में वास

अलंकार

सन्देह—पाताल में नागों का रहना एक रहस्य। — मधुमालती-दो० 101

नारद का नलकूबर और मणिग्रीव को शाप

अलंकार

अपह्नुति—शाप का निषेध कर वरदान की स्थापना। — ब्रज-विहार, पृ० 12

उल्लेखात्मक-प्रयोग

प्रस्तावना में कवि-कथन। — श्रीकृष्ण लीलामृत, पृ० 7

यमलार्जुन का कथन। — ब्रजचन्द्र-विनोद, पृ० 331

नारद-मोह

अलंकार

अर्थान्तरन्यास—अभिमान के दुखदाई होने का समर्थन। — विश्राम-सागर, पृ० 331

उदाहरण—शरदकाल की रात्रि के लिए उदाहरण — केशव-ग्रंथावली (वीर० चरित्र) 11/20

दृष्टान्त

नारद की अभद्रता। — देवकी, पृ० 23

परीक्षा लेने पर सभी असफल। — प्रेम-प्रलाप, पद-65 (भा० ग्रं०)

माया कष्टदायक। — रामचरितमानस-7/59; सूरसागर-1/43/3

नारी के चक्कर में पड़कर निन्दित होना । — हंस जवाहिर-पृ० 159

उल्लेखात्मक-प्रयोग — रामचरितमानस-7/64

औचित्य

वृत्त-औचित्य । — देवकी, पृ० 23

नारद का हिरण्यकशिपु को उपदेश

अलंकार

उदाहरण—उपदेश से विनाश । — रामचरितमानस-1/79

निमि राजा को शाप

दृष्टान्त

कामतत्त्व का प्रतिपादन। — सेनापति कर्ण, पृ० 99

जीवन-दर्शन

प्रवृत्ति मार्ग ।

निषाद-जन्म

प्रतीक (निषाद)-केवट । — ललन-सागर पद-123

नृग-आख्यान

अलंकार

उदात्त—भगवान के औदात्य का कथन । — विनय-पत्रिका-पद-218; सूर-सागर, पृ० 27, 94

प्रभास क्षेत्र की श्रेष्ठता का वर्णन । — कृष्णायन (बिसाहूराम) पृ० 95

उदाहरण—दुष्टों का उदाहरण । — सूरसागर, पद-158, 204

उदाहरण, काव्यलिंग—गोपियों के प्रेम के लिए कीट (नृग) का उदाहरण । — नटनागर-विनोद, पृ० 33

जिय में डरने का हेतु कीट की गति की प्रसिद्धि — —वही—

उपमा—सैनिकों के लिए उपमान । — पृथ्वीराज-रासो-20/129

काव्यलिंग—दुख का हेतु नृग का दुख — केशव-ग्रंथावली-भाग-3 (वीर० चरित्र-26/29)

दृष्टान्त

भक्तों की विपत्तियों का विनाश । — विनय-पत्रिका-पद-212

भगवान की भक्त-वत्सलता की पुष्टि । — विनय-पत्रिका-पद, 239

अवगुण करने वाले को सुख-प्राप्ति नहीं। विश्राम-सागर, पृ० 359

वचन-वक्रता

दीनता-प्रदर्शन। सूरसागर, पृ० 192

औचित्य

अलंकार। नटनागर-विनोद, पृ० 31

जीवन-दर्शन

अवगुणों में मनुष्य का अपमान। विश्राम-सागर, पृ० 359

नृसिंह-अवतार। प्रहलाद पर कृपा

अलंकार

अर्थान्तरन्यास—होनी की प्रबलता का समर्थन। ब्रजचन्द्र-विनोद, पृ० 355 (पू०)

अप्रस्तुत प्रशंसा—राम की श्रेष्ठता का कथन! रामचद्रिका-14/30

उत्प्रेक्षा—राम में नृसिंह की संभावना। रामचरिमानस-6/81

साभिप्राय विशेषण—वीरसिंह को मुगल सेना द्वारा घेरा जाना। वीर० चरित्र-14/57-48 (के० ग्रं०)

उत्प्रेक्षा प्रतीयमाना—श्रीकृष्ण के लिए उपमान की संभावना व्यंजित। कृष्णायन, 2/54

उदात्त—भगवान के पौरुष का कथन। कवितावली-7/8, 7/9

राम/भगवान के औदात्य का कथन। (केशव-ग्रंथावली-रतनबावनी-पृ० 20)
गीत-गोविन्द, पद-12 (भा० ग्रं०)
छत्रप्रकाश, पृ० 101
पद्माकर-पंचामृत, पृ० 25
प्रातः स्मरण स्तोत्र, पद-6 (भा० ग्रं०)
प्रेम-मालिका, पद-26 (भा० ग्रं०)
ब्रज विहार (रंगीलाल) पृ० 226
मीरा-पदावली, पद-6
रामचन्द्रिका-20/23
विनय-पत्रिका-पद-52, 93
विश्राम-सागर, पृ० 287

	सूरसागर, पद-109, 119, 190, 308, 338
	हृदय-तरंग (समस्यापूर्ति) पृ० 204
भारत के चित्र की श्रेष्ठता का वर्णन ।	मधुपर्क-2/17
रास की श्रेष्ठता का वर्णन ।	मधुपर्क-7/51
उदात्त, उपमा—कर्ण के औदात्य का कथन ।	रश्मिरथी, पृ० 58
कर्ण के लिए उपमान व्यंजित ।	रश्मिरथी, पृ० 58
उदाहरण—भक्त को भय न होने का उदाहरण ।	कवितावली-7/48
रणजीत द्वारा अपने देश की रक्षा का उदाहरण ।	केशव-ग्रंथावली-19/57-58
वीरसिंह के अभयदान का उदाहरण ।	—वही—33/38
शिवाजी द्वारा पृथ्वी का भार उठाना ।	भूषण-भारती, पृ० 53
विभीषण के यश के लिए उदाहरण ।	रामचन्द्रिका-15/24
राम के पौरुष के लिए उदाहरण ।	रामचरित मानस-6/6/7
राम के प्रिय न होने पर त्यागने का उदाहरण ।	विनय-पत्रिका, पद-174
भक्त की रक्षा का उदाहरण ।	सूरसागर-1/255
युक्तिपूर्वक कार्य करने के लिए उदाहरण ।	ज्ञानदीप, छंद-124
उदाहरण, काव्यलिंग—गोपियों के लिए प्रहलाद के प्रेम का उदाहरण । प्रेम में पड़ने का कारण भगवान की भक्त-वत्सलता ।	नटनागर-विनोद, पृ० 31
उल्लेख—शिवाजी के पौरुष का अनेक प्रकर से उल्लेख ।	भूषण-ग्रंथावली, पद-71
(रावण से मन्दोदरी का कथन) राम के पौरुष का अनेक प्रकार से उल्लेख ।	रामचरितमानस-6/48
उपमा—कर्ण के लिए नरसिंह उपमान ।	अंगराज, पृ० 240
प्रहलाद की पीड़ा से विश्व-पीड़ा की तुलना ।	कानन-कुसुम-मकरन्द-बिन्दु
मानसिंह, अमरसिंह, देवसिंह की नरसिंह से तुलना ।	केशव-ग्रंथावली-खण्ड-3 (वीरसिंह चरित्र-पृ० 2)
प्रतापसिंह के लिए उपमा ।	केशव-ग्रंथावली-खण्ड-3 (जहांगीर जस चन्द्रिका-फुटकर पृ० 13)
उमरावसिह और बहादुरसिंह की	पद्माकर-पंचामृत-पृ० 25

नरसिंह से तुलना।	
गिरिकुंवर की नरसिंह से तुलना।	—वही—पृ० 26
सैनिकों के लिए नृसिंह उपमान।	पृथ्वीराज रासो-20/129
नाहरराय के लिए नृसिंह उपमान।	—वही—20/136
समर-विक्रम के लिए नृसिंह उपमान।	—वही—22/68
बाणासुर के लिए प्रहलाद उपमान।	भगवान श्रीकृष्णलीलामृत, पृ० 44
पत्थर से प्रकट होने का हेतु प्रहलाद प्रेम।	कवितावली-7/127
पत्थर पूजने का हेतु प्रहलाद।	कवितावली-7/128
प्रभु भरोसे में हेतु प्रहलाद की सुधि।	कृष्णायन (बिसहूराम), पृ० 257
दैत्य पितृत्व के सहने का कारण पुत्र का प्रहलाद होना।	द्वापर, पृ० 103
अवतार का हेतु सिंह में जन्म।	देवकी, पृ० 6
नृसिंह अवतार का हेतु भक्तिभाव।	पार्थपत्नी महसती द्रौपदी, पृ० 107
प्रहलाद की रक्षा का हेतु भक्ति।	बोधा-ग्रंथावली (इश्कनामा), पृ० 13
हिरण्यकश्यप के वध का हेतु हिरण्यकश्यप के प्राण-हरण।	भगवान श्रीकृष्णलीलामृत, पृ० 100
नृसिंह अवतार का हेतु हिरण्यकश्यप-वध।	भूषण-ग्रंथावली, पद-350
मुक्ति का हेतु राम नाम का जाप और राम का प्रसाद।	रामचरित मानस, 1/26
नृसिंह वपु धारण करने का हेतु सुरों का दुख।	—वही-6/110
अवतार का हेतु भक्त हित।	सूरसागर, पद-26
स्मरण का हेतु भक्तों का ताप निवारण।	—वही, पद-28
तारने में हेतु हरि-स्मरण।	—वही-पद-82
काव्यलिंग, उदात्त—तारने का हेतु चरणों का स्पर्श। चरणों की श्रेष्ठता का कथन।	मीरा-पदावली, पद-1
पुनरुक्तवदाभास—यहां पर हरि, केहरी भिन्न-भिन्न अर्थ के लिए प्रयुक्त हुए हैं, परन्तु आभास पुनरुक्त का सा होता है।	ललन-सागर, पद-1049
निदर्शना—हिरण्यकशिपु, दसशीश और शिशुपाल असंभव सम्बन्ध कहां-कहां कहकर दिखाया गया है।	कृष्णायन, 4/9

नृसिह और शिवाजी का अभेद सम्बन्ध।	भूषण-ग्रंथावली, पद-140
रूपक—रामनाम-नृसिह, कलिकाल-हिरण्यकशिपु, जापकगण-प्रहलाद्	रामचरितमानस-1/27
रूपकातिशयोक्ति—केवल उपमान (नरसिंह) का उल्लेख उपमेय (भीम) का उल्लेख नहीं।	जयभारत, पृ० 384
वस्तुध्वनि।	कवितावली-7/88
सन्देह वक्रतामूलक।	भूषण-भारती, पृ०-23
साभिप्राय विशेषण।	रसिकप्रिया-1/2

दृष्टान्त

सगुण भक्ति का प्रतिपादन।	कवितावली-7/129
राम-भक्तों की सर्वथा भलाई।	—वही-7/130
भगवान की भक्त-वत्सलता की पुष्टि।	काव्य-निर्णय-17/38
	सूरसागर, पद-11, 17, 20, 38
	हृदय-तरंग, पृ० 147
लोभ से विनाश।	केशव-ग्रंथावली-2/6
लालच से पतन।	चित्रावली-345/6-7
छल करने में दोष नहीं।	पृथ्वीराज रासौ, 26/12
आर्त भक्तों को भगवान की प्राप्ति।	प्रेम-प्रलाप,पद-26 (भा० ग्रं०)
भगवान के उद्धारक स्वरूप की पुष्टि।	भगवान श्रीकृष्ण लीलामृत, पृ० 54
दुष्ट दमनता की पुष्टि।	भूषण-ग्रंथावली, पृ० 148
अहिंसा की पुष्टि।	मधुपर्क, 6/43
भगवान की उद्धार करने की प्रवृत्ति।	मीरा-पदावली, पद-4
रामनाम का प्रभाव।	रामचरितमानस-1/26
सतपुरुषों के हाथों से देवों के कार्यों की सफलता। (प्रहलाद् द्वारा नृसिह प्रकट करना)	—वही-2/265
शरणागतों की रक्षा।	विनय-पत्रिका, पद/216
होनी की प्रबलता की पुष्टि।	विश्राम-सागर, पृ० 202
कष्ट में भगवान सहायक।	वृंद-ग्रंथावली, पृ० 4 (सत्यसरूप रूपक)
	सूरसागर, पद-112
भगवान द्वारा शरणागत की रक्षा करने की पुष्टि।	सूरसागर, पद-14

भगवान द्वारा जाति-पांति, कुल और मर्यादा को न मानना।	सूरसागर, पद-15
स्यामभजन से वड़प्पन।	सूरसागर, पद-24
कठिनाई में भगवान के सहायक होने की पुष्टि।	—वही-पद-31
भगवान को सब अधिकार प्राप्त।	—वही-पद-34
भगवान के भक्तों को अभय प्राप्ति।	—वही-पद-37
अहंकार से नाश अवश्यंभावी।	—वही-पद-54
भगवान की गति की अलक्षता।	—वही-पद-104
आयु रहते मारना कठिन।	ज्ञानदीप, छंद-205

प्रतीक

नृसिंह—हिंसक व्यक्ति।	अंगराज, पृ० 46
नृसिंह—पुरुषार्थी, शक्तिशाली।	अंगराज, पृ० 126, 134
नृसिंह—तेजस्वी, भयंकर।	उत्तर-जय, पृ 44
नृसिंह—भयंकर।	कृष्णायन, 4/32
प्रहलाद—परमभक्त	गोपिका, पृ० 177
नृसिंह—योद्धा।	केशव-ग्रंथावली-26/22
नृसिंह—वीर पुरुष	बोधा-ग्रंथावली, पृ० 110 (विरह वारीष)
नृसिंह—तेजस्वी।	सेनापति कर्ण, पृ० 21, 86

उल्लेख

कृष्ण का अर्जुन को उपदेश।	कृष्णायन, 5/191
नारद का युधिष्ठिर के राजसूय यज्ञ में राजाओं से कथन।	व्रजचन्द्र-विनोद, पृ० 60 (उ०)
हरिवर्ष खण्ड के सन्दर्भ में।	पद्माकर-पंचामृत-4/35 (विज्ञान-गीता)

वचन-वक्रता

उपालम्भमूलक भक्ति।	रुक्मिणी-परिणय, पृ० 86, 107
	श्रीविष्णुलहरी, पद-14, 15 (रत्नाकर)
कष्ट न उठाने की व्यंजना।	वृंद-ग्रंथावली-(सत्यसरूप रूपक) पृ० 4
शक्ति की प्रामाणिकता।	सूरसागर, पद-745

औचित्य

विशेषण-औचित्य।	अंगराज, पृ० 46 रसिकप्रिया-1/9
गर्व-औचित्य।	ऊषा-हरण, पृ 29
उपमान-औचित्य	जयभारत, पृ० 384
विचार-औचित्य।	देवकी पृ० 6
अलंकार-औचित्य।	नटनागर-विनोद, पृ० 31
वाक्य—औचित्य।	ब्रज विहार, पृ० 313
नीति—औचित्य।	ब्रजचन्द्र-विनोद, पृ० 44 (उ०)
भक्तिभाव—औचित्य।	विश्राम-सागर, पृ० 287

जीवन-दर्शन

युद्ध—दर्शन।	जरासंध, पृ० 7
होनी की प्रबलता।	ब्रजचन्द्र-विनोद, पृ० 355 (पू०)
अति सर्वत्र वर्जयेत।	—वही-पृ० 458 (उ०)
नियतिवाद।	विश्राम-सागर, पृ० 291
बुरे काम का बुरा परिणाम।	—वही-पृ० 292
ईश्वर में आस्था।	सुवर्णा, पृ० 134

परशुराम-आख्यान

परशुराम-अवतार

अलंकार

उदात्त—परशुराम का औदात्य कथन।	कृष्णायन (बिसाहूराम) पृ० 34
भगवान के औदात्य का कथन।	गीत-गोविन्दानन्द, पद-12-14
उपमा—योद्धाओं के लिए परशुराम भृगुपति उपमान।	जरासंध-वध, पृ० 58
काव्यलिंग—परशुराम अवतार का हेतु भक्त जनों का हित।	भगवान श्रीकृष्णालीलमृत-पृ० 100
दृष्टान्त	
भारत की महिमा की पुष्टि।	पार्थपत्नी महासती द्रौपदी, पृ० 108

औचित्य

भक्तिभाव—औचित्य।	विश्राम-सागर, पृ० 287

परशुराम द्वारा अपनी माता का वध करना

उल्लेखात्मक-प्रयोग

कर्ण का युद्ध से पूर्व चिन्तन।	जयभारत, पृ० 335 विश्राम-सागर, पृ० 287 सुवर्णा, पृ० 46

परशुराम द्वारा सहस्रबाहु (कार्तवीर्य) वध

अलंकार

अर्थान्तरन्यास—राजमद का समर्थन।	रामचरित मानस-2/229
उत्प्रेक्षा—सहस्रबाहु में हलाहल-कौर की संभावना।	रामचन्द्रिका-7/21
उदात्त—भगवान के पौरुष का कथन।	अंगराज, पृ० 40
राम के पौरुष का कथन।	रामचरित मानस-6/6
परशुराम के पौरुष का कथन।	रामचरित मानस-6/26 रामचन्द्रिका-7/16 रामचन्द्रिका-7/26 रामचन्द्रिका-20/32 विनय-पत्रिका, पद-52
उदाहरण—अनिरुद्ध के बाणासुर से युद्ध करने के लिए तैयार होने का उदाहरण।	ऊषा-हरण, पृ० 16
शिवा और मुगल सेना दिल्लीपति का उदाहरण।	शिवराज-भूषण-15, 25
उदाहरणमाला—शिवाजी और मलेच्छ सेना के अनेक उदाहरण।	भूषण-भारती (शिवा-बावनी) पृ० 20
उपमा—खलु उपमेय सहस्रबाहु उपमान।	रामचरितमानस-1/4
शत्रु का उपमान सहस्रबाहु।	रामचरितमानस-1/271, 1/272
मालोपमा—शिवाजी और मलेच्छ वंश के लिए क्रमशः परशुराम व सहस्रबाहु उपमान।	भूषण-ग्रंथावली, पद-56
काव्यलिंग—परशुराम वपु धारण करने का हेतु सुर-दुख।	रामचरितमानस-6/110
निदर्शना—परशुराम अवतार व शिवाजी में अभेद सम्बन्ध।	भूषण-ग्रंथावली, पद-140
पर्याय—सहस्रबाहु से पृथ्वी लेकर ब्राह्मणों को देना।	रामचन्द्रिका-6/34

प्रतीप—परशुराम की वीरता शिवाजी के सम्मुख तुच्छ ।	भूषण-ग्रंथावली, पद-51
रूपक—सहस्रबाहु का मस्तगजराज पर केशरी पर परशुराम का आरोप।	कवितावली-6/17
महान जहाज़-सहस्रबाहु, समुद्र-परशुराम ।	कवितावली-6/25
शिवाजी पर परशुराम ओरंगजेब पर सहस्रबाहु का आरोप।	भूषण-ग्रंथावली-पद-37
गुढ़ोत्तर—परशुराम के पौरुष की ध्वनि ।	रामचन्द्रिका-16/11

दृष्टान्त

लोभ से विनाश ।	केशव-ग्रंथावली भाग-3 (वीर० चरित्र-2/63)
अवगुणी को सुख नहीं ।	विश्राम-सागर, पृ० 359

औचित्य

गुण	ऊषा-हरण, पृ० 16
वीर (रस)	

परशुराम द्वारा क्षत्रियों का विनाश

अलंकार

उदात्त—कुरुक्षेत्र की महत्ता का कथन।	अंगराज, पृ० 185
परशुराम के पौरुष का कथन।	कृष्णायन, 4/121
राधा द्वारा बनाये गये चित्र की श्रेष्ठता का वर्णन।	मधुपर्क, 2/18
उपमा— अलाउद्दीन द्वारा रतनसेन को बंदी बनाने की उपमा।	पद्मावत-576/4
दुष्टों की तुलना सहस्रबाहु (क्षत्रियों से)	रामचरितमानस-1/4/3
काव्यलिंग—रावण के राम से द्वेष का हेतु उनका परशुराम से द्वेष होना।	काव्य-निर्णय-7/10
नर और देव की रक्षा का हेतु नारी होना।	वृंद-ग्रंथावली, 13/15
चित्र—अनेक प्रश्नों का एक उत्तर।	पद्माकर-पंचामृत, पृ० 69
रूपक—मृगावती की भोंहों की तुलना क्षत्रिय विनाशक परशुराम के धनुष से।	मृगावती, दो० 178
परशुराम द्वारा अपने कुठार की प्रशंसा ।	रामचरितमानस-1/4/3
रूपक—परशुराम के यश का कथन । (अप्रस्तुत प्रशंसा भी)	रामचन्द्रिका-7/38

गुढ़ोत्तर—परशुराम के यश का कथन। रामचन्द्रिका-16/11

उल्लेखात्मक-प्रयोग

कर्ण का युद्ध से पूर्व चिन्तन। सुवर्णा, पृ० 46

जीवन दर्शन

पुरुषार्थ। सेनापति-कर्ण, पृ० 207

अवगुणों के कारण मनुष्य का अपमान। विश्राम-सागर, पृ० 359

परशुराम का कश्यप को पृथ्वीदान

अलंकार

उदाहरण—कर्ण के पृथ्वी को जीतकर दुर्योधन को देने का उदाहरण। अंगराज, पृ० 95

व्यतिरेक—वीरसिंह के दान का उत्कर्ष वर्णित। वृंद-ग्रंथावली-32/52

परशुराम का कर्ण को शाप

अलंकार

अर्थान्तरन्यास—अबंध के त्याज्य होने का समर्थन। द्रौपदी, पृ० 14

काव्यलिंग—युद्ध में बाधाओं का कारण परशुराम का शाप। सुवर्णा, पृ० 119

वचन-वक्रता

अधिक्षेप मूलक वास्तविक निन्दा। कृष्णायन, 5/70

औचित्य

अलंकार-औचित्य। सुवर्णा, पृ० 119

निन्दा। कृष्णायन, 5/70

शापजन्य त्याग। द्रौपदी, पृ० 14

उल्लेखात्मक-प्रयोग

कर्ण का युद्ध-क्षेत्र में शल्य से कथन। अंगराज, पृ० 221

कर्ण का युद्ध पूर्व चिन्तन। सुवर्णा, पृ० 45

परशुराम-राम संवाद

अलंकार

उदात्त—राम की श्रेष्ठता का कथन। कवितावली-6/17, 6/25

उदाहरण—राम से मेल करने में भलाई। कवितावली, 6/28

शान्ति से विजय क्रोध से पराजय। दोहावली, 433

राजा विक्रम को दिए वर का उदाहरण । बोधा-ग्रंथावली-21/55

औचित्य

उपमान-अनौचित्य—शिवाजी और मलेच्छ सेना का उपमान । भूषण-भारती (शिवराज-भूषण, पृ० 16)

पराशर-सत्यवती आख्यान

दृष्टान्त

परीक्षा लेने पर सभी असफल । प्रेम-प्रलाप, पद-65 (भा० ग्रं०)

पुरुष गुरुतर अपराध करने पर भी दोषमुक्त । महारास, पृ० 67

जीवन-दर्शन

गुणवती नारी की ग्राह्यता। जयभारत, पृ० 22

पराशर द्वारा राक्षस यज्ञ

दृष्टान्त

आपद्धर्म की पुष्टि । कृष्णायन, 7/72

औचित्य

विचार-औचित्य । —वही—

जीवन-दर्शन

श्रुति विरोधी वचन को न मानना । —वही—

परीक्षित पर अश्वत्थामा का शस्त्र प्रयोग । कृष्ण द्वारा परीक्षित की रक्षा

अलंकार

उदात्त—कृष्ण की श्रेष्ठता का कथन । देवकी-पृ० 167
पृथ्वीराज-रासौ-20/12
सूरसागर-पद-26

दृष्टान्त

भक्त-वत्सलता की पुष्टि । विनय-पत्रिका-20/12
सूरसागर पद-16

होनी की प्रबलता की पुष्टि । विश्राम-सागर, पृ० 292

कष्ट में भगवान सहायक । सूरसागर-पद-112, 113

प्रतीक

शिशु भविष्य का मारा जाना-नये सृजन का विनाश । अंधायुग, पृ० 124

जीवन-दर्शन

अच्छे कार्य का अच्छा परिणाम। — विश्राम सागर, पृ० 292

परीक्षित द्वारा काल को छोड़ना

अलंकार

काव्यलिंग—परीक्षित के पश्चाताप का हेतु काल को छोड़ना। — विनय-पत्रिका, पृ० 222

परीक्षित को तक्षक द्वारा डसना

प्रतीक

तक्षक का परीक्षित को डसना-निर्दोष की प्रतिहिंसा। — अंधायुग, पृ० 124

दृष्टान्त

अतिशयता से विनाश। — केशव-ग्रन्थावली, भाग-3 (वीरसिंह चरित्र-2/3)

पाण्डवों को दुर्वासा द्वारा सताया जाना

अलंकार

उदात्त—श्रीकृष्ण के औदात्य का कथन। — सूरसागर, पद-109, 282

काव्यलिंग—भरोसे का हेतु पतित पावनता। — सूरसागर, पद-122

दृष्टान्त

भगवान के प्रेम की पुष्टि। — सूरसागर, पद-13

भक्त-वत्सलता की पुष्टि। — सूरसागर, पद-16

पाण्डवों का कर्मफल भोगना

दृष्टान्त

यश भगवान के अधीन। — मृगावती, छंद-171/1

पांडवों का स्वर्गारोहण

दृष्टान्त

कर्म की प्रबलता की पुष्टि। — मीरा-पदावली, 28

पांडु-सूर्य का सम्बन्ध (कुन्ती का सूर्य से सम्बन्ध)

गुढ़ोत्तर पुष्ट दृष्टान्त—अपराध का गुरुत्तर दण्ड नहीं। — पृथ्वीराज-रासौ-3/36

प्रयाग-माहात्म्य

अलंकार

उत्प्रेक्षा—राम के चरणों में प्रयाग की संभावना।	गीतावली-7/15
रूपक—संत-समाज-संगम, रामभक्ति-सुरसरि, कथा-रविनन्दनि, धर्म में विश्वास-अक्षयवट।	रामचरितमानस-1/2
उल्लेखात्मक प्रयोग	चित्रावली, पृ० 157

प्रलय की कथा

(प्रालेय) प्रतीक विध्वसकारी पानी।	कामायनी, पृ० 21

प्रियव्रत की कथा

अलंकार

उदात्त—भारत के वैभव का कथन।	चित्राधार, पृ० 26
उदाहरणमाला—छत्रसाल पर अनेक कष्ट पड़ने के उदाहरण।	छत्रप्रकाश, पृ० 75
उपमा—राजा रामचन्द्र के लिए उदाहरण।	छत्रप्रकाश, पृ० 10

पुंडरीक की कथा

अलंकार

परिवृत्ति—पुंडरीक से माल लेकर सुदामा को देना।	हृदय-तरंग (उपालम्भ) पृ० 15

वचन-वक्रता

उपालम्भ मूलक भक्ति।	हृदय-तरंग, पृ० 15

पुरुखा-उर्वशी

काव्यलिंग—सुख विच्छेद का हेतु भरत शाप।	उर्वशी, पृ० 132

पुलिन्द की कथा

अलंकार

उदात्त—भगवान के औदात्य का कथन।	प्रेम-प्रलाप, पद-41 (भा० ग्रं०)

पृथु राजा की कथा

अलंकार

उदात्त—पृथु की महानता का कथन।	पद्माकर पंचामृत, पृ० 9
कृष्ण के औदात्य का वर्णन।	मधुपर्क-7/59
भारतवर्ष की महत्ता का वर्णन।	मधुपर्क-9/26
उदाहरण—वीरसिंह द्वारा पृथ्वी पालन।	केशव-ग्रंथावली भाग-3 (वीर० चरित्र-33/312)
उदाहरणमाला—छत्रसाल पर कष्ट पड़ने के अनेक उपमान।	छत्रप्रकाश पृ० 15
उपमा—वीरसिंह की तुलना।	केशव-ग्रंथावली-भाग-3 (वीर० चरित्र-27/27)
पृथ्वीराज की तुलना।	छत्रप्रकाश, पृ० 10
भोगीलाल की तुलना।	देव-ग्रंथावली, पृ० 8
दशरथ के लिए उपमान।	रामचन्द्रिका-5/31
व्यक्तियों की तुलना	रामचरितमानस-1/4
मालोपमा—जहांगीर के अनेक उपमान।	जहांगीर जस चन्द्रिका-पृ० 11
काव्यलिंग—सबका उद्यम हेतु।	जहांगीर जस चन्द्रिका-पृ० 20
व्यतिरेक—हिम्मत बहादुर का पौरुष पृथु के पौरुष से हीन।	पद्माकर-पंचामृत, पृ० 18
भगवान की भक्त-वत्सलता की पुष्टि।	रुक्मिणी परिणय, पृ० 281 वृंद-ग्रंथावली-स्फुट पद-पृ० 28

दृष्टान्त

भगवान की भक्त-वत्सलता की पुष्टि।	रुक्मिणी-परिणय, पृ० 181 वृंद-ग्रंथावली-स्फुट-पद, पृ० 28

वचन-वक्रता

दीनता-प्रदर्शन।	प्रेम-फुलवारी, पृ० 12 (भा० ग्रं०) 12

औचित्य

विचार।	प्रेम-फुलवारी, पृ० 580
दैन्य।	(भा० ग्रं०)

जीवन-दर्शन

राष्ट्रीयता।	अंगराज-पृ० 185
पुरुषार्थ।	मधुपर्क-4/23

त्यागं।	मधुपर्क-9/26

बलराम आख्यान

बलराम अवतार

अलंकार

उदात्त—बलराम के औदात्य का वर्णन।	गीत-गोविन्दानन्द, पद-12-14 (भा० ग्रं०) प्रेम-मालिका, पद-26 (भा० ग्रं०)
उदाहरण—शिवाजी द्वारा पृथ्वी के उद्धार का उदाहरण।	भूषण-भारती-भाग-3 (शिवराज-भूषण-पृ० 53)
काव्यलिंग—हंसने का हेतु बलराम के हाथ में मूसल का होना।	पद्माकर-पंचामृत, पृ० 212
निदर्शना—बलराम और शिवाजी में अभेद सम्बन्ध।	भूषण-ग्रंथावली, पद-140
प्रतीप—बलराम की वीरता शिवाजी के सामने तुच्छ।	भूषण-ग्रंथावली पद-51

औचित्य

रस-औचित्य।	पद्माकर-पंचामृत-पृ० 212

बलराम का रेवती से विवाह

अलंकार

अर्थान्तरन्यास—संस्कारों से ही मिलन संभव।	विश्राम-सागर, पृ० 362

जीवन-दर्शन

संस्कारवश संयोग।	—वही—

बलराम द्वारा धेनुक वध

अलंकार

उदात्त—बलराम के औदात्य का कथन।	द्वारका-प्रवेश, पृ० 26 रुक्मिणी-परिणय, पृ० 56 सूरसागर, पद-27,120
उदाहरण—दुष्टों का उदाहरण।	सूरसागर, पृ० 158
काव्यलिंग—न डरने का हेतु धेनुक वध।	सूरसागर, पद-3595, 4668
काव्यलिंग, यथाक्रम—हत्यारे होने का कारण धेनुक वध। धेनुक वध से हत्यारे का क्रमिक सम्बन्ध।	द्वापर, पृ० 37

दृष्टान्त

बलराम और श्रीकृष्ण के पौरुष की पुष्टि।	अलौकिक-लीला, 5/37

वचन-वक्रता

शत्रु के ख्याति प्राप्ति दोषों को तुच्छ बताना।	कृष्णायन, 2/149
वियोग का प्रस्तुतीकरण।	सूरसागर, पद-4687

उल्लेखात्मक प्रयोग

श्रीकृष्ण के कार्यों का वर्णन।	विश्राम-सागर, पृ० 318

औचित्य

निन्दा-औचित्य	कृष्णायन, 2/149

बलराम द्वारा प्रलम्बासुर वध

अलंकार

उदात्त—यशोदा की महत्ता का प्रतिपादन।	ब्रजविहार, पृ० 10
कृष्ण के शौर्य का कथन।	देवकी, पृ० 160
	सूरसागर, पद-120, 3648, 4668
बलराम का औदात्य कथन।	पदावली-पद-288 (आनन्द घन)
उपमान अनौचित्य—बलराम और प्रलम्ब की बसंत और वर्षा से तुलना।	केशव-ग्रंथावली-भाग-3 (वीर० चरित्र-26/40)
काव्यलिंग, यथाक्रम—गो-घातक होने का हेतु वत्स-वध। गो-घातक से वत्स-वध का क्रमिक सम्बन्ध।	द्वापर, पृ० 36

उल्लेखात्मक प्रयोग

बलराम द्वारा अक्रूर को ब्रज का अवलोकन कराना।	कृष्णायन-2/4

बलराम द्वारा सूत वध

अलंकार

अर्थान्तरन्यास—समयानुसार शत्रु वध।	वृंद-ग्रंथावली-पृ० 297

बाणासुर का रावण और इन्द्र से युद्ध

औचित्य

गर्व-औचित्य	ऊषा-हरण, पृ० 28

बालि का सुग्रीव से वैर

अलंकार

उपमा—चन्द्रमा से तुलना।	रामचंद्रिका-30/42
गुढ़ोत्तर—	—वही—7/9
रूपक—ज्ञानदीप पर सुग्रीव घोड़े पर बालि का आरोप।	ज्ञानदीप-छंद-124

दृष्टान्त

भाई से वैर का परिणाम।	ब्रजचन्द-विनोद, (उ०) पृ० 161
पर-स्त्री में अनुरक्ति रखने वाले की दुर्दशा।	रामचरित मानस-1/29 ज्ञानदीप-छंद-444
होनी की प्रबलता की पुष्टि।	विश्राम-सागर, पृ० 392

ब्रह्मा-आख्यान

ब्रह्मा की उत्पत्ति

अलंकार

उपमा—विष्णु की नाभि से कमल के निकलने का कर्ण की पत्नी के चन्द्रहार के लिए उपमान।	सेनापति-कर्ण, पृ० 140

उल्लेखात्मक प्रयोग रामचन्द्रिका-21/17-18

औचित्य

अद्‌भुत रसौचित्य।	कृष्णायन-1/85
अभिप्राय-औचित्य।	

ब्रह्मा का अपनी पुत्री से व्यभिचार

अलंकार

अभिमान का परिणाम दुख। अपयश।	विश्राम-सागर, पृ० 331

ब्रह्मा और सावित्री

अलंकार

उत्प्रेक्षा—कृष्ण के राधा को देखने में ब्रह्मा द्वारा सावित्री को देखने की संभावना।	कृष्णायन-5/86

बुद्ध अवतार

अलंकार

उदात्त—भारत की समृद्धि का वर्णन।	पार्थपत्नी महासती द्रौपदी, पृ० 15

भगवान के औदात्य का कथन।	रामचन्द्रिका-20/23
हीनोदात्त—वेदों की निन्दा महान कार्य नहीं।	गीत-गोविन्दानन्द, पद-14 (भा० ग्रं०)
	प्रेम - मालिका, पद-26 (भा० ग्रं०)
उदाहरण—शिवाजी द्वारा पृथ्वी को धारण करने का उदाहरण।	भूषण भारती (शिवराज भूषण पृ० 53)
काव्यलिंग—बुद्ध के अवतार का हेतु दया, तप, अहिंसा, संयम का उपदेश।	भगवान श्रीकृष्णलीलामृत, पृ० 101
निदर्शना—बुद्ध अवतार का शिवाजी से अभेद सम्बन्ध।	भूषण-ग्रंथावली, पद-140

बृद्धक्षत्र की मृत्यु

अलंकार

असंगति—जयद्रथ का सिर कटना, पर वध उसके पिता का होना।	रश्मिरथी, पृ० 125

उल्लेखात्मक-प्रयोग

जयद्रथ-वध के समय कवि द्वारा उल्लेख।	जयद्रथ-वध, पृ० 12

भरत-आख्यान (दशरथ-पुत्र)

दृष्टान्त

आर्य नीति प्रेम का आधार।	कृष्णायन-1/169
श्रुति विरोधी वचनों की अमान्यता।	पार्थपत्नी महासती द्रौपदी, पृ० 75

अलंकार

उत्प्रेक्षा—वीरसिंह से रामदेव का मिलन।	केशव-ग्रंथावली
उदाहरण—विक्रम को विप्र प्रिय होने का उदाहरण।	(वीरसिंह चरित्र-9/54)

औचित्य

काव्यलिंग—दुख का हेतु प्रीति।	बोधा-ग्रंथावली-21/64 (विरह-वारीष)
इतिहास	—वही, 3/9
वीर रसौचित्य।	पद्माकर-पंचामृत-पृ० 217

जीवन-दर्शन

श्रुति विरोधी वचनों को न मानना।	कृष्णायन-1/169

प्रेम-भावना।	ब्रजचन्द्र विनोद, पृ० 161 (उ०)
त्याग।	मधुपर्क-13/119-120

भरत-आख्यान

अलंकार

कुरुक्षेत्र की श्रेष्ठता का वर्णन।	अंगराज-पृ० 185
उदात्त—भारत की महत्ता का प्रतिपादन।	कृष्णायन, 4/17
भारत के चित्र की श्रेष्ठता का वर्णन।	मधुपर्क, 2/16
राम के चरणों की श्रेष्ठता का कथन।	मीरा-पदावली, पद-28
उपमा—जयसिंह के लिए भारत उपमान।	केशव-ग्रंथावली (वीर चरित्र)
उल्लेख—शिवाजी के अनेक उपमान।	भूषण-भारती, (शिवराज-भूषण) पृ०-26

दृष्टान्त

भगवान की भक्त-वत्सलता की पुष्टि।	रुक्मिणी-परिचय, पृ० 281

औचित्य

वृत्त-औचित्य।	पार्थपत्नी महासती द्रौपदी, पृ० 63
इतिहास-औचित्य	

भस्मासुर द्वारा पार्वती का अपमान

दृष्टान्त

अबला के अपमान का प्रतिकार।	पार्थपत्नी महासती द्रौपदी, पृ० 39

जीवन-दर्शन

नारी के अपमान करने वाले व्यक्ति का अन्त अवश्यंभावी।	—वही—

भीम-आख्यान

भीम द्वारा हिडिम्ब-वध

अलंकार

उदाहरण—अश्वत्थामा वध के लिए उदाहरण।	पार्थपत्नी महासती द्रौपदी, पृ० 291
काव्यलिंग—पृथ्वी हिलने का कारण हिडिम्ब का मारना।	सेनापति-कर्ण-पृ० 56

भीम द्वारा कीचक-वध

अलंकार

अर्थान्तरन्यास—कुसंग से विनाश।	वृंद-ग्रंथावली, पृ० 355
उत्प्रेक्षा—चम्पतराय के शत्रुओं से युद्ध का उपमान।	छत्रप्रकाश, पृ० 47
उदात्त—शिवाजी के पौरुष का कथन।	भूषण-ग्रंथावली, पद-339
उदाहरण—युक्तिपूर्वक कार्य करना।	ज्ञानदीप, छंद-124
अश्वत्थामा वध के लिए उदाहरण।	पार्थपत्नी महासती द्रौपदी, पृ० 291
सांग रूपक—हिन्दू-द्रौपदी, शिवाजी-भीम, अफजल-कीचक।	भूषण ग्रंथावली, पद-339

उल्लेखात्मकप्रयोग — मृगावती, 27/1

वचन-वक्रता

औचित्यमूलक। — सेनापति कर्ण, पृ० 56

भीम द्वारा अधिक भोजन

अलंकार

उपमा— अपनी शक्ति से बाहर कार्य। — ज्ञानदीप, छंद-124

भीम का कुंभकर्ण की खोपड़ी में गिरना

दृष्टान्त

गर्व करना ठीक नहीं। — पद्मावत-265/25/9

भीष्म सम्बन्धी कथाएं
भीष्म-जन्म

औचित्य

नाम-औचित्य। — देवकी, पृ० 32-33

भीष्म का ब्रह्मचारी रहना

उल्लेखात्मक प्रयोग

कर्ण का युद्ध पूर्व चिन्तन। — सुवर्णा, पृ० 46

भीष्म द्वारा अम्बाहरण/भीष्म-परशुराम युद्ध

अलंकार

अपह्नुति—गांधार-सुता का विरोध कर — द्रौपदी-पृ० 21

पीताम्बर वधू की स्थापना ।	
उदात्त—भीष्म के पौरुष का कथन ।	कृष्णायन-4/121
उदात्त; काव्यलिंग—गौरव समुद्र सूखने का कारण भीष्म की शरज्वाला ।	सेनापति कर्ण-पृ० 8
भीष्म का पौरुष वर्णन ।	सेनापति कर्ण-पृ०207-208
उदाहरण—युधिष्ठिर व द्रोण के युद्ध के लिए उदाहरण ।	जयद्रथ-वध, पृ० 66
काव्यलिंग—संघर्ष में सहायता देने का कारण ममता और वात्सल्य ।	देवकी, पृ० 33

दृष्टान्त

नारी के शत्रु होने पर विपत्तियां ।	द्रौपदी, पृ० 5
कुटिल नारी को वरण करने पर अहित ।	रुक्मिणी-परिणय, पृ० 283

औचित्य

कुल-औचित्य ।	सुवर्णा, पृ० 57

उल्लेख

कर्ण का युद्ध पूर्व चिन्तन ।	सुवर्णा, पृ० 45

जीवन-दर्शन

स्वयं पति को वरण करने वाली नारी समाज में सम्मान की अधिकारिणी ।	द्रौपदी, पृ० 21
नारी-अपमान कष्टकारक ।	द्रौपदी, पृ० 51

भीष्म द्वारा कृष्ण की प्रतिज्ञा-भंग । भीष्म का भयंकर युद्ध

अलंकार

अप्रस्तुत प्रशंसा—भीष्म के युद्ध की प्रशंसा ।	दोहावली-418
उदात्त—भीष्म का औदात्य-वर्णन ।	उत्तर-जय, पृ० 42
हीनोदात्त—कृष्ण का अपकर्ष व्यंजित ।	वीर-सतसई, पृ० 1
उपमा—पृथ्वीराज के सामन्तों का उपमान ।	पृथ्वीराज-रासो-24/295
काव्यलिंग—हेतु-भक्तहित ।	सूरसागर, पद-28

दृष्टान्त

भगवान की भक्त-वत्सलता की पुष्टि ।	प्रेम-प्रलाप, पद-30 (भा० ग्रं० सूरसागर, पद-31)

उल्लेख

भीष्म का अर्जुन से कथन ।	सुवर्णा, पृ० 30

जीवन-दर्शन

पुरुषार्थ ।	उत्तर-जय, पृ० 40

भीष्म-पराजय (भीष्म वध)

अलंकार

अर्थान्तरन्यास—सदाचारी द्वारा शभु की भी सहायता।	वृंद-ग्रंथावली-पृ० 393
उदाहरण—दिल्लीपति द्वारा चम्पतराय के साथ कपट।	छत्रप्रकाश-47
सन्देह—भीष्म की पराजय में पार्थ पराक्रम और छलछद्म का सन्देह।	सेनापति कर्ण, पृ० 41-42

औचित्य

विचार, दयाभाव।	जरासंध-वध, पृ०-30

जीवन-दर्शन

मिथ्याचरण-त्याग।	सेनापति कर्ण, पृ० 42

भृगु द्वारा विष्णु पर पद प्रहार

अलंकार

उदात्त—कृष्ण के औदात्य का वर्णन।	कृष्णायन, 3/136
	गीतावली-1/26/3
भगवान के औदात्य का कथन।	विनय-पत्रिका, पद-62
वक्रोक्ति पुष्ट उदात्त—भगवान के पौरुष का कथन।	केशव-ग्रंथावली-भाग-3 (रतनावली-पृ० 231)
	जहांगीर जस चंद्रिका-पृ० 238
स्मृति—ब्राह्मणों को देख भृगु का स्मरण।	भूषण-ग्रंथावली-पद-75
गूढ़ोत्तर—राम के स्वभाव का कथन।	पद्माकर-पंचामृत-पृ० 214
मालोपमा—वीरसिंह के गुणों के अनेक उपमान।	केशव-ग्रंथावली-भाग-3 (वीर० चरित्र-27/25-26)
जहांगीर के अनेक उप्रमान।	जहांगीर जस चंद्रिका-पृ० 118

दृष्टान्त

जीवन-आदर्शों की पुष्टि।	पार्थपत्नी महासती द्रौपदी, पृ० 113
अवगुणों का परिणाम सुखदायक नहीं।	विश्राम-सागर, पृ० 359

जीवन-दर्शन

क्षमा आधृता।	विश्राम सागर, पृ० 359
अवगुणों के कारण मनुष्य का अपमान।	—वही—

भोज का कंगाल होना

दृष्टान्त— लोभ से विनाश।	केशव-ग्रंथावली-खण्ड-3 (वीर० चरित्र- 2/6)

मंदोदरी को रूप प्राप्त होना

दृष्टान्त—दान से विपत्ति।	केशव-ग्रंथावली-खण्ड-3 (वीर० चरित्र-पृ० 53-54)

मत्स्यावतार

अलंकार

अपह्नुति का निषेधकर अभ्युदय की स्थापना।	देवकी, पृ० 6
उदात्त —भगवान श्रीकृष्ण के औदात्य का कथन।	कृष्णायन (विसाहूराम) पृ० 34
	गीत-गोविन्दानन्द, पद-14 (भा० ग्रं०)
	छत्रप्रकाश- पृ० 101
	प्रेम-मलिका, पद-26 (भा० ग्रं०)
	रामचन्द्रिका-20/23
	विनय-पत्रिका, पद-52
	विश्राम-सागर, पृ० 312
उदाहरण—शिवाजी द्वारा पृथ्वी को धारण करने का उदाहरण।	भूषण-भारती (शिवराज-भूषण) पृ० 53
काव्यलिंग—मत्स्यावतार का हेतु औषधियों की रक्षा।	भगवान श्रीकृष्ण लीलामृत, पृ० 99
मत्स्यावतार का हेतु सुर-दुख।	रामचरितमानस-6/110
निदर्शना—मत्स्यावतार से शिवाजी का अभेद सम्बन्ध।	भूषण-ग्रंथावली-पद-140
रूपक—अंधतमस पर प्रलय, सिन्धु तथा वसुदेव पर महामीन आदि का आरोप।	उत्तर-जय, पृ० 39

दृष्टान्त

भारत की महिमा की पुष्टि।	पार्थपत्नी महासती द्रौपदी, पृ० 107

वचन वक्रता

शक्ति की प्रामाणिकता।	सूरसागर, पद 745

प्रेम की प्रामाणिकता।	—वही —पद-3933

औचित्य

विचार-औचित्य।	देवकी, पृ० 6
भक्तिभाव-औचित्य।	विश्राम-सागर, पृ० 287

उल्लेख

रम्यकखण्ड के सन्दर्भ में।	जहांगीर जस चंद्रिका-4/35

मधु-कैटभ वध

अलंकार

उदात्त—दुर्गा के औदात्य का कथन।	व्रजचन्द्र-विनोद (पृ०) 475
राम के पौरुष का कथन।	कवितावली-6/6,6/48 विनय-पत्रिका, पद-56
शक्ति के पौरुष का कथन।	भूषण भारती (छप्पय-1)
उदाहरण—शिवा और दिल्लीपति के लिए उदाहरण।	शिवराज-भूषण-पृ० 25
उदाहरणमाला—शिवाजी के लिए अनेक उदाहरण।	शिवा-बावनी, पृ० 20
उपमा—मनुष्यों के लिए उपमान।	साकेत, पृ० 134
छेकापह्नुति—औरंगजेब का शेर के बहाने से यथार्थ छिपाना।	भूषण-ग्रंथावली (शिवा-बावनी) पद-37
शक्ति का माया से सम्बन्ध स्थापित।	छत्र प्रकाश-पृ० 6
निदर्शना—विष्णु के अतिरिक्त कर से सम्बन्ध।	रामचंद्रिका-4/15
रूपक—औरंगजेब में कैटभ शिवाजी में कालिका का आरोप।	भूषण-ग्रंथावली (शिवा-बावनी), पद-37
स्वभावोक्ति—भगवान के स्वभाव का कथन।	रामचंद्रिका-19/51

मनु-अवतार

अलंकार

उदात्त—पूर्वजों के कार्यों की श्रेष्ठता का वर्णन।	पार्थपत्नी महासती द्रौपदी, पृ० 21
राधा द्वारा बनाए गए चित्र की श्रेष्ठता का वर्णन।	मधुपर्क-2/6
उपमा—भोगीलाल के लिए उपमा।	रस-विलास-पृ० 8

दृष्टांत

गृहस्थ-धर्म पालन का प्रतिपादन।	पार्थपत्नी महासती द्रौपदी,

पृ० 302

उल्लेख

रम्यक-खण्ड के सन्दर्भ में उल्लेख। — जहांगीर जस चंद्रिका (विज्ञान-गीता-4/36)

(मनु शतरूपा) वियोगिनी राधा का चिन्तन। — राधा, पृ० 89

मरुत आख्यान

मरुत का राज वैभव

अलंकार

उदात्त—भारत की महत्ता का कथन। — कृष्णायन, 4/17

मरुत का अपने गुरु को त्यागना

दृष्टांत

प्रजा धर्म का अनुपालन। — व्रजचंद्र-विनोद-पृ० 449 (उ०)

औचित्य

नीति-औचित्य। — —वही—

जीवन-दर्शन

नीति-दर्शन। — —वही—

मय-दानव की कथा

काव्यलिंग – कल्याण का हेतु संत-चरण। — विनय-पत्रिका, पद-57

महिषासुर मुकुन्द युद्ध

अलंकार

उदाहरण—भीम की गदा से शिविर के डोलने के लिए उदाहरण। — सेनापति कर्ण, पृ० 58

महिषासुर वध

अलंकर

उदात्त—शक्ति के पौरुष का कथन। — भूषण-भारती (छप्पय)

मालोपमा – शिवाजी के युद्ध के लिए उपमान। — भूषण-ग्रंथावली (फुटकर) पद-35

निदर्शना—माया से सम्बन्ध स्थापित। — छत्रप्रकाश-पृ०6

सन्देह—पृथ्वीराज में कालिका जयचन्द्र में महिषासुर का सन्देह। — पृथ्वीराज-रासो-7/6

दृष्टान्त

अधम विचार से विनाश। — छत्रसाल-दशक-पृ० 20

प्रतीक

महिषासुर-दुष्ट व्यक्ति, आसुरी वृत्तियों का पोषक। — मधुपर्क-5/63

माण्डव्य का जन्म

दृष्टान्त

जन्मना जाति का खण्डन और कर्मणा जाति का प्रतिपालन। — कृष्णायन (बिसाहूराम) पृ० 378-379

मार्कण्डेय-आख्यान। प्रलय-कथा

अलंकार

उदात्त—भगवान के औदात्य का कथन। — विनय-पत्रिका-पद-60

रूपक—अनुराग-समुद्र, जनक-मार्कण्डेय, मीय स्नेह-अक्षयवट, राम-शिशु का रूपक। — रामचरित मानस-2/286

दृष्टान्त

प्रेम की महत्ता का प्रतिपादन। — ब्रजचन्द्र विनोद-पृ० 215 (पू०)

वचन-वक्रता

वियोग प्रस्तुतीकरण। — उद्धव-शतक, पद-134

विचार प्रस्तुतीकरण। — फेरि मिलिबो-पृ० 170

औचित्य

वाक्य-औचित्य। — सूरसागर-पद 1472

मान्धाता की कथा

अलंकार

उदात्त—भारत की महत्ता का वर्णन। — कृष्णायन-4/17

राधा द्वारा बनाए गये चित्र की श्रेष्ठता का वर्णन। — मधुपर्क-2/16

उदाहरण—युधिष्ठिर के लिए उदाहरण। — पार्थपत्नी महासती द्रौपदी, पृ० 308

उपमा—भोगीलाल के लिए उपमा। — रस विलास-पृ० 8

व्यतिरेक—हिम्मत बहादुर के पौरुष से मान्धाता का पौरुष हीन। — पद्माकर-पंचामृत, पृ० 18

औचित्य

कुल-औचित्य ।	कृष्णायन-7/10
विचार-औचित्य ।	

जीवन-दर्शन

प्रवृत्ति—मार्ग ।	पार्थपत्नी महासती द्रौपदी, पृ० 308
त्याग ।	मधुपर्क-9/26, 13/119-120
राष्ट्रीयता ।	—वही—9/25-26

मुद्गल की अतिथि सेवा

दृष्टान्त

दान की महिमा की पुष्टि ।	जरासंध, पृ० 92

औचित्य

दानवीर-औचित्य ।	—वही—

मोहिनी-अवतार

अलंकार

अन्योन्य—मोहिनी की छवि से मोहन का मोहित होना और मोहन की मोहिनी का मोहिनी में समाना ।	मधुपर्क-7/8
उत्प्रेक्षा—बांसुरी में मोहिनी की सम्भावना ।	सूरसागर-पद-1266
राधा में मोहिनी की संभावना ।	ब्रजचन्द्र-विनोद (पू०) पृ० 246
उत्प्रेक्षा, सन्देह—राधा में मोहिनी की संभावना और मोहिनी होने का सन्देह व्यंजित ।	फेरि मिलिबो-पृ० 21
उपमा—सुन्दरियों के लिए उपमान ।	केशव-ग्रंथावली-भाग-3 (वीर० चरित्र-26/42)
काव्यलिंग—मोहिनी रूप धारण करने का हेतु सुरों को अमृत कलश देना ।	भगवान श्रीकृष्ण लीलामृत-पृ० 19
दैत्यों के बुद्धिहीन होने के कारण भगवान का सुन्दर बाला बनना ।	पार्थपत्नी महासती द्रौपदी, पृ० 107
प्रतीप—मोहिनी रूप से राधा के रूप का उत्कृष्ट वर्णन ।	सूरसागर, पद-1673
यमक—मोहिनी के दो अर्थ (मोहिनी-शक्ति,	उद्धव-शतक (रसाल-पद-225)

मोहिती करने वाली।	
सन्देह—मोहिनी रूपधारी कालिन्दी में सुर-सुन्दरी या निशिचरी होने का सन्देह।	कृष्णायन (बिसाहूराम (पृ० 261

दृष्टान्त

अतिशयता से विनाश।	केशव-ग्रंथावली-भाग 3 (वीर० चरित्र) पृ० 37

वचन-वक्रता

प्रेम की प्रामाणिकता।	सूरसागर, पद-3433

औचित्य

रस-औचित्य (शृंगार संयोग)।	ब्रज बिहार, पृ० 63
अलंकार-औचित्य।	सुवर्णा, पृ० 117
पराजय-औचित्य।	—वही—

ययाति-आख्यान

ययाति का यज्ञ करना

अलंकार

अत्युक्ति—शिवाजी के दान का बढ़ा-चढ़ाकर कथन।	भूपण-ग्रंथावली-पद-343
उदात्त-कुरुक्षेत्र की श्रेष्ठता का वर्णन।	अंगराज, पृ० 185

जीवन-दर्शन

राष्ट्रीयता।	अंगराज, पृ० 185

ययाति का देवयानी से विवाह

दृष्टान्त

शुक्र का पुत्री दान दान से यज्ञ।	केशव-ग्रंथावली (वीर० चरित्र) 2/18

ययाति से शर्मिष्ठा का सम्बन्ध

अलंकार

उदाहरण—मानवों का असुरों से सम्बन्ध स्थापित होने का उदाहरण।	जयभारत-पृ० 74

ययाति को जवानी की पुन : प्राप्ति

अलंकार

उपमा—सुख की स्थिरता चाहने वाले व्यक्तियों के लिए उपमान । कृष्णायन-7/178

ययाति का यदु को शाप

अलंकार

काव्यलिंग—उग्रसेन को कृष्णा द्वारा आसन देने का हेतु ययाति का यदु को शाप । रुक्मिणी-परिणय, पृ० 3

ययाति का स्वर्ग से गिरना

अलंकार

अर्थान्तरन्यास—अभिमान के दुखदाई होने का समर्थन । विश्राम-सागर-पृ० 331

ययाति का राज्यत्याग

दृष्टान्त

भगवान की भक्त-वत्सलता की पुष्टि । रुक्मिणी-परिणय-पृ० 181

यवन-भिखारी पर कृपा

अलंकार

काव्यलिंग—कल्याण का हेतु संत चरण । विनय-पत्रिका, पद-57

अर्थापत्ति सन्देह—अर्थात् से सन्देह । —वही-पद-101

याज्ञवल्क्य-गार्गी की कथा

अलंकार

उदात्त—चित्र की श्रेष्ठता का कथन । मधुपर्क-2/19

युधिष्ठिर का कंक बनना

प्रतीक

कंक-क्षुद्र व्यक्ति । अंगराज, पृ० 130

युधिष्ठिर द्वारा राजसूय यज्ञ करना

अलंकार

काव्यलिंग—यज्ञ करने का हेतु कृष्ण और अर्जुन।	पृथ्वीराज-रासौ-2/3

युधिष्ठिर को मुनियों का शाप

दृष्टान्त

बिना सहायक यज्ञ की सफलता नहीं।	पृथ्वीराज-रासौ-2/3

अलंकार

अर्थान्तरन्यास—दूसरे के दुख को देखकर अपना दुख कम।	वृंद-ग्रंथावली-पृ० 333

रंतिदेव की कथा

दृष्टान्त

धर्मपालन की पुष्टि।	रामचरितमानस-2/95

औचित्य

दानवीर।	जरासंध-पृ० 91-93

जीवन-दर्शन

प्रेम-भावना।	—वही—

रक्तबीज की कथा

उदात्त—दुर्गा का औदात्य-वर्णन।	ब्रजचन्द्र-विनोद (पू०) पृ० 475
शक्ति के पौरुष का वर्णन।	भूषण-भारती (छप्पय -1)
उपमा—पापों की समानता।	विनय-पत्रिका, पद-128
निदर्शना—माया से सम्बन्ध स्थापित।	छत्रप्रकाश, पृ० 6

रघु द्वारा यज्ञ करना/रघु द्वारा सर्वत्याग

अलंकार

उदात्त—कृष्ण के औदात्य का वर्णन।	मधुपर्क, 7/59
कमण्डलु। त्याग की महत्ता का कथन।	मधुपर्क, 13/119
उपमा—भोगीलाल के लिए उपमान रघु।	रस विलास-पृ० 8
काव्यलिंग—राम द्वारा यज्ञ करने का हेतु कुबेर का स्वर्ण बरसाना।	पृथ्वीराज-रासौ-2/3
गुढ़ोत्तर—रघु का अस्पष्ट संकेत।	साकेत, पृ० 348
व्यतिरेक—हिम्मत बहादुर के पौरुष से रघु	पद्माकर पंचामृत, पृ० 18

का पौरुषहीन होना।

दृष्टान्त

बिना सहायक यज्ञ की सफलता असंभव।	पृथ्वीराज-रासो--2/3

प्रतीक

रघु-सद्गुण।	साकेत, पृ० 202
रघु-प्रजा-सेवक।	मधुपर्क, 5/107

औचित्य

कुल, विचार।	कृष्णायन, 7/104

जीवन-दर्शन

त्याग।	मधुपर्क, 13/119
लोक-कल्याण।	मधुपर्क, 5/108

रघु द्वारा शेर से गाय की रक्षा

अलंकार

उदाहरण-रुक्मिणी की शिशुपाल की रक्षा करने के लिए उदाहरण।	विश्राम-सागर, पृ० 365

राम आख्यान

रामअवतार

अलंकार

अपह्नुति—चन्द्रमा में कलंक रेखा का निषेध कर सीता के हृदय में रमे राम का आरोप।	अंगराज, पृ० 146
उत्प्रेक्षा—(राम-लक्ष्मण प्रेम) इन्द्रजीत और वीरसिंह के पुत्रों का उदाहरण।	केशव-ग्रंथावली-भाग-3 (वीर० चरित्र-10/14-15)
पापी पुत्रों में राम की संभावना।	सेनापति कर्ण, पृ० 26
उदात्त—भगवान के औदात्य का कथन।	कृष्णायन, (बिसाहू राम) पृ० 312 गीत-गोविन्दानन्द, पद-14 प्रेम-मालिका, पद-26 (भा० ग्रं०) विश्राम-सागर, पृ० 312 हृदय-तरंग, पृ० 204 (समस्यापूर्ति)
शरदकालीन चन्द्रिका की श्रेष्ठता का कथन।	मधुपर्क-7/76
भारत की समृद्धि का कथन।	मधुपर्क, 9/26, मधुपुरी, 1/19
उदाहरण—देवकी द्वारा अलौकिक पुत्र जन्म का स्वप्न देखने का उदाहरण।	कृष्णायन-1/34

शरदकालीन रात्रि के लिए उदाहरण।	केशव-ग्रंथावली-भाग-3 (वीर० चरित्र-11/20)
सत्पुरुषों के दुखों की गणना न करना।	पद्माकर-पंचामृत-पृ० 65
शिवाजी के लिए रामावतार उदाहरण।	भूषण-भारती (शिवराज-भूषण) पृ० 53
	—वही— दोहावली पृ० 8
उपमा—देवकी के गर्भस्थ शिशु के लिए उपमान।	कृष्णायन-1/35
बाल गोविन्द के लिए उपमा।	छत्रप्रकाश-पृ० 65
अभिमन्यु के लिए उपमान।	जयद्रथ-वध, पृ० 11
भारत के राजाओं के लिए उपमान।	मधुपर्क-12/72
कृष्ण के लिए उपमान।	मधुपर्क-13/20
दुर्योधन के लिए उपमान।	मधुपर्क, 13/90
मालोपमा—वीरसिंह के अनेक उपमान।	केशव-ग्रंथावली-भाग-3 (वीर०चरित्र—27/25-26)
यमक, उपमा—राम के अलग-अलग अर्थ (राम-बलराम, राम-रामचन्द्र)	मधुपुरी-10/27
व्यतिरेक—शिवाजी के ऐश्वर्य राम से अधिक।	भूषण-भारती-खण्ड 3 (शिवराज-भूषण) पृ० 14
हिम्मत बहादुर से राम का पौरुष हीन।	पद्माकर-पंचामृत-पृ० 65
सन्देह—चंपतराय के पुत्र छत्रसाल में राम का सन्देह।	छत्रप्रकाश-पृ० 63
उल्लेख—श्रीकृष्ण बलराम का अनेक प्रकार से उल्लेख।	कृष्णायन-2/26
काव्यलिंग—राम-अवतार का कारण मानवता का कल्याण।	भगवान श्रीकृष्ण लीलामृत, पृ० 100

दृष्टान्त

भारत की महिमा की पुष्टि।	पार्थपत्नी महासती द्रौपदी, पृ० 108

उल्लेखात्मक-प्रयोग

(राम द्वारा कुश को राज्य) सूर्यवंश वर्णन। (राम पुत्र लव कुश)	केशव-ग्रंथावली-खण्ड-3 (वीर० चरित्र-2/20-21)
	छत्रप्रकाश-पृ० 63
यशोदा का कृष्ण को कहानी सुनाना।	ब्रजचन्द्र विनोद, तू० 76 (पृ० 2)

औचित्य

अलंकार।	मधुपुरी, पृ० 5
अलंकार-अनौचित्य ।	केशव-ग्रंथावली-खण्ड-3 (वीर० चरित्र-11/20)

जीवन-दर्शन

होनी की प्रबलता ।	ब्रजचन्द्र-विनोद, पृ० 355 (पू०)
लोक-कल्याण ।	मधुपर्क, 9/27

राम द्वारा ताड़का वध

अलंकार

उदात्त—राम के पौरुष का कथन।	गीतावली-1/55/6, 1/67/2, 1/68/3, 1/74/3, 1/83/2, 1/109/6, 1/34
सुकेतुसुता राम के पौरुष का कथन।	रामचरितमानस-1/24
काव्यलिंग—ताड़का-वध का हेतु स्वदेश की सुख शान्ति ।	साकेत, पृ० 361
गुढ़ोत्तर—राम का परिचय ।	रामचन्द्रिका-7/9
निदर्शना—कठोरपाणि की ध्वनि।	रामचन्द्रिका-5/37

राम द्वारा सुबाहु वध

अलंकार

उदात्त—राम के पौरुष का कथन।	गीतावली-1/ε0/3, 1/109/2, 1/70 7, 1/34, 6/2/1-2
गुढ़ोत्तरपुष्ट उदात्त—राम के पौरुष का संकेत।	रामचन्द्रिका-7/10
निदर्शना—राम के कठोर पाणि होने की ध्वनि।	रामचन्द्रिका-5/37

राम द्वारा अहल्या का उद्धार

अलंकार

उदात्त—भगवान का औदात्य का कथन।	कवितावली-2/21, 2/9, 7/10, गीतावली-1/60/4, 1/74/3, 1/63/4, 1/83/3, 1/67/3, 1/109/2

	प्रेम-प्रलाप, 62 (भा० ग्रं०)
	ब्रज-विहार, (रंगीलाल) पृ० 298
	विनय-पत्रिका, पद-43, 68, 68, 78, 101, 218
	सूरसागर, पद-94, 119, 123, 182, 308
राम के चरणों को श्रेष्ठता का कथन।	रामचरितमानस-5/42, 7/13
स्वभावोदात्त—राम के स्वभाव की श्रेष्ठता का कथन।	कवितावली-7/11, 7/15
उदात्त, काव्यलिंग—भगवान के चरणों की श्रेष्ठता कथन।	मीरा-पदावली, पद-1
अहल्या-उद्धार का हेतु चरण स्पर्श।	
उदाहरण—पतितों के लिए उदाहरण।	सूरसागर, पद-158,188
काव्यलिंग—भक्त हित हेतु।	सूरसागर, पद-26
भजने का हेतु भक्तों का ताप-निवारण।	सूरसागर, पद-28
सीता द्वारा पग स्पर्श न करने का हेतु गौतम-तिय।	रामचरितमानस-1/265
मुनि प्रसाद हेतु।	—वही—1/356
गुढ़ोत्तर—राम की उदारता का कथन।	रामचन्द्रिका-7/10
व्यतिरेक—विश्व पीड़ा अहल्या की पीड़ा से भयंकर।	कानन-कुसुम-मकरन्द बिन्दु
वक्रोक्ति—भक्तों की रक्षा होना ध्वनित।	विनय-पत्रिका, पद 97
चरण स्पर्श अहल्या का स्त्री होना ध्वनित।	कवितावली, 2/7, 2/8
भगवान की उदारता ध्वनित।	मीरा-पदावली, पद

दृष्टान्त

हरि की उद्धार का प्रवृत्ति का कथन।	मीरा-पदावली, पद-5
राम द्वारा भक्तों का उद्धार।	रामचरित मानस-1/24
भगवान की शरणागत वत्सलता।	विनय-पत्रिका, पद-99
राम की कृपा से आदर प्राप्ति।	विनय-पत्रिका, पद-106
भगवान की भक्त-वत्सलता।	विनय-पत्रिका, पद-180
भगवान की पतित पावनता।	विनय-पत्रिका, पद-225
दुष्टों की भी गति।	विनय-पत्रिका, पद-241
शरणागत की रक्षा।	विनय-पत्रिका-पद-272
भगवान के भक्तों को सभी अधिकार प्राप्त।	सूरसागर, पद-44

औचित्य

हास। — कवितावली-3/28

जीवन-दर्शन

अवगुणों से मनुष्य का अपमान। — विश्राम-सागर, पृ० 359

राम द्वारा यज्ञ रक्षा। राम सीता विवाह

अलंकार

अपह्नुति (सन्देह गर्भा)--'हो न हो' कहकर श्याम का निषेध करते हुए राम की स्थापना।	द्वापर, पृ० 144
उत्प्रेक्षा—श्रीकृष्ण के जनकपुरी जाते समय श्रीकृष्ण में राम की संभावना।	कृष्णायन, 4/145
उदात्त—राम व कृष्ण के औदात्य का कथन।	कवितावली-6/25, 6/26, ललन-सागर, पृ० 482 सूरसागर, पद-3649, 3698, 4103
उदाहरण—(रामचन्द्र-विश्वामित्र) द्विजराज कन्हर व वीरसिंह के लिए उदाहरण।	केशव-ग्रंथावली भाग-3 (वीर० चरित्र-182/28-30)
अभिमन्यु द्वारा चक्रव्यूह भेदन के लिए उदाहरण।	जयद्रथ-वध, पृ० 6
कंस की यज्ञशाला में कृष्ण द्वारा धनुष तोड़ने के लिए उदाहरण।	देवकी, पृ० 151
पांडवों द्वारा मत्स्य भेद अवसर के लिए उदाहरण।	पार्थपत्नी महासती द्रौपदी, पृ० 330
श्रीकृष्ण के मंच पर जाने के लिए उदाहरण।	मधुपुरी-16/40
श्रीकृष्ण के वरुण लोक में प्रवेश के लिए उदाहरण।	ब्रजचन्द्र-विनोद, (पू०) पृ० 201
शिवाजी से लड़ते बादशाही समाप्त।	भूषभ-भारती (छत्रसाल-दशक) पृ० 20
काव्यार्थपत्ति—शिव के धनुष को तोड़ने वाले की लंका कुछ नहीं।	पद्माकर-पंचामृत, पृ० 63
मालोपमा—दिल्ली पतन के अनेक उपमान।	भूषण-ग्रंथावली, पद-35 (फुटकर)
गुढ़ोत्तर—राम का अस्पष्ट परिचय।	रामचन्द्रिका-7/10
निदर्शना—धनुष-भंग से रावण का सम्बन्ध।	रामचन्द्रिका-15/7
निदर्शना, उदाहरण—दो कहुं के प्रयोग से	अलौकिक-लीला, 5/25

असंभव सम्बन्ध ।	(प्रेमघन-सर्वस्व)
उपमा का परिकल्पक तथा त्यों के प्रयोग से उदाहरण की स्पष्टता ।	
प्रतिषेध—धनुष भंग का निषेध ।	पद्माकर पंचामृत पृ० 63
विपर्यय—	बोधा-ग्रंथावली (विरह वारीष)
दृष्टान्त	13/26, 23,65
	काव्य निर्णय-6/55
प्रतीक	
राम-सीता—आदर्श पति पत्नी, प्रेमी प्रेमिका ।	पद्मावत-131, 232, मृगावती-61, 65, 102, 103
स्वयंवृता-सीता—वरण की गई पत्नी ।	राधा, पृ० 16
वचन-वक्रता	
वियोग प्रस्तुतीकरण के लिए ।	सूरसागर, पद-4/54

राम वनगमन

अलंकार	
अर्थान्तरन्यास—'कहुं-कहुं गुण हूं होत सुखदाता' का विशेष वाक्य (राम-आख्यान) से समर्थन ।	विश्राम-सागर, पृ० 346
पीड़ा की पहचान का समर्थन ।	सूरसागर, पद-3849
उत्प्रेक्षा—(राम के बिना कौशल्या का रहना) कुन्ती में कौशल्या की संभावना ।	जयभारत, पृ० 142
उदात्त—राम की धर्मवीरता का कथन ।	पद्माकर-पंचामृत-पृ० 217
उदाहरण—कुब्जा द्वारा कृष्ण को अपने पास रखने का उदाहरण ।	उद्धव-शतक (रसाल) पद-47
दुख में पति-पत्नी का साथ ।	चित्रावली-471/67
कृष्ण बलराम के मथुरागमन पर ब्रजवासियों के दुखी होने का उदाहरण ।	ब्रजचन्द्र विनोद (पू०) पृ० 355
पिता द्वारा पुत्र को उत्तरदायित्व (राम को राजतिलक)	मृगावती-309/4-5
उपमा—पांडवों के लिए उपमान ।	अंगराज, पृ० 81
ब्रजवासियों के कृष्ण व बलराम के मथुरा गमन पर व्याकुल होने की उपमा ।	देवकी, पृ० 148

श्रीकृष्ण के लिए उपमान ।	मधुपर्क, 11/95
उल्लास—वनगमन से मुनियों को हर्ष ।	काव्य-निर्णय-14/7
वक्रोक्ति पुष्ट काव्यलिंग—राम के शोक का हेतु दशरथ मरण, शोक की व्यंजना ।	पद्माकर-पंचामृत-213

दृष्टान्त

स्त्री का पति का साथ देना ।	इन्द्रावती, (पूर्वार्द्ध) (फाग-खण्ड) 27/1-2, 28/1-2
आर्य नीति प्रेम का आधार ।	कृष्णायन-1/169
प्रत्येक व्यक्ति पर विपत्ति पड़ने की पुष्टि ।	कृष्णायन (बिसाहूराम) पृ० 143
त्याग से यश ।	केशव-ग्रंथावली भाग-3 (वीर० चरित्र-2/18)
दुख शाश्वत सत्य ।	जयभारत, पृ० 157
दोनों ओर के सद्भाव से त्याग संभव ।	जयभारत, पृ० 280-281
जीवन आदर्शों की पुष्टि ।	पार्थपत्नी महासती द्रौपदी, पृ० 328
पुत्र द्वारा स्वधर्म पालन ।	मधुपुरी, पृ० 179
यश कर्म-अधीन ।	माधव-कामकंदला, पृ० 196
देहधारी के लिए दुख अनिवार्य ।	युसुफ जुलेखा, पृ० 412

औचित्य

विचार-औचित्य ।	कृष्णायन-1/169, 2/77

जीवन-आदर्श

त्याग ।	कृष्णायन, 1/169
पुरुषार्थ ।	मधुपर्क-13/119-120 सेनापति कर्ण, पृ० 157

राम की निषाद पर कृपा

अलंकार

उदात्त—राम के औदात्य का कथन ।	विनय-पत्रिका-पद-138, 218
वक्रोक्तिमूलक उदात्त—राम की उदारता की ध्वनि ।	पद्माकर-पंचामृत-पृ० 225, 228, 230, 236
काव्यलिंग—तरने का हेतु राम की आस्था ।	पद्माकर-पंचामृत पृ० 235

दृष्टान्त

भगवान की भक्त-वत्सलता की पुष्टि ।	विनय-पत्रिका, पद-134, 154 हृदय-तरंग, पृ० 147

राम की केवट पर कृपा

अलंकार

उदात्त—राम के चरणों की प्रशंसा ।	मीरा की पदावली-35
वक्रतामूलक उदात्त—राम की उदारता वर्णित ।	पद्माकर पंचामृत-पृ० 229
काव्यलिंग—शरण में आने का हेतु आरति हरन ।	गीतावली-5/143

दृष्टान्त

राम की कृपा से आदर-प्राप्ति ।	विनय-पत्रिका, पद-106
प्रीति की रीति का निर्वाह	विनय-पत्रिका, पद-164
शरणागत की रक्षा ।	विनय-पत्रिका, पद-193

राम द्वारा शवरी पर कृपा

अलंकार

उदात्त—राम । भगवान के औदात्य का कथन ।	गीतावली-7/10
	पद्माकर-पंचामृत- पृ० 232, 238
	प्रेम-प्रलाप, पद-72 (भा० ग्रं०)
	मीरा-पदावली, पद-23
	रामचन्द्रिका-27/17
	रामचरित मानस-1/24
	ललन-सागर, पद-481
	ललन-सागर, पद-496
	विनय-पत्रिका, 162
	सूरसागर, पद-25
स्वभावोदात्त—राम के स्वभाव का कथन ।	गीतावली-7/15
उदात्त, सन्देह—कृष्ण का औदात्य-कथन ।	विनय प्रेम पचासा, पद-38 (भा० ग्रं०)
'याद हो न हो' में सन्देह—	
उदाहरण—भगवान की शरण में जाने से उद्धार ।	मीरा-पदावली, पद-5
काव्यलिंग—उद्धार का हेतु राम नाम ।	विनय-पत्रिका, पद-228
शरण में आने का हेतु आरत-हरण ।	गीतावली-5/43/1

काव्यलिंग, उदाहरण—प्रेम के फंद में पड़ने का हेतु प्रीति के प्रमाण की प्रसिद्धी।	नटनागर विनोद, पृ० 31
गोपियों के प्रेम के लिए शवरी प्रेम का उदारण।	
गुढ़ोत्तर—	गीतावली-5/46/3

दृष्टान्त

नाम लेने पर उद्धार।	गीतावली-7/18
भगवान की पतित पावनता की पुष्टि।	मीरा-पदावली-पद-16
आदर से राम की कृपा प्राप्त।	विनय-पत्रिका, पद-106
भगवाय की भक्त-वत्सलता का प्रतिपादन।	विनय-पत्रिका, पद-134, 152, 180
राम का शीघ्र ही रीझना।	विनय-पत्रिका, पद-164-43
भगवान की दयालुता की पुष्टि।	विनय-पत्रिका, पद-191
भगवान का पतितों से स्नेह।	विनय-पत्रिका, पद-215
शरणागत की रक्षा।	विनय-पत्रिका, पद-262
भगवान के प्रेम की पुष्टि।	सूरसागर, पद-13

औचित्य

अलंकार-औचित्य	नटनागर विनोद, पृ० 31

जीवन-दर्शन

प्रेस-भावना।	महारास, पृ० 100
समदर्शिता।	

राम द्वारा जटायु का उद्धार

अलंकार

उत्प्रेक्षा—भुजाओं की तुलना गीध से।	पद्माकर-पंचामृत, पृ० 19
उदात्त—भगवान के औदात्य का कथन।	कवितावली-7/10 काव्य-निर्णय-14/219 पद्माकर-पंचामृत, पृ० 225, 236 प्रेम-प्रलाप, पद-72 (भा० ग्र०) भारतेन्दु-ग्रंथावली, पद-8 (स्फुट कविताएं) रामचरितमानस-1/24 विनय-पत्रिका, पद-43, 68, 101, 138

	सूरसागर, पद-27, 119, 123, 206
भगवान के चरणों की श्रेष्ठता का कथन ।	विनय-पत्रिका, पद-257
उदात्त, काव्यलिंग—जटायु की श्रेष्ठता का कथन ।	रामचरित मानस-4/27
तन त्यागने का हेतु कामकाज ।	
चरित्रोदात्त—राम के चरित्र का कथन ।	कवितावली-7/7
स्वाभावोदात्त—राम के स्वभाव का कथन ।	—वही—7/15
गुढ़ोत्तर पुष्ट उदात्त—राम के औदात्य का संकेत ।	विनय-पत्रिका, पद-236
उदाहरण—पतितों के लिए उदाहरण ।	सूरसागर, पद-158
पतितों के उद्धार का उदाहरण ।	— वही—पद-219
काव्यलिंग—शरण में आने का हेतु आरति-हरन ।	गीतावली-5/43/1
तरने का हेतु रूप बनाना ।	पद्माकर-पंचामृत, पृ० 25
गीधने का हेतु गीध का उद्धार ।	बिहारी सतसई, दो० 159
कल्याण का हेतु संत-चरण ।	विनय-पत्रिका, पद-57
उद्धार का कारण नान लेना ।	सूरसागर
यमक—गीध-जटायु, गीधना-अहंकार होना ।	बिहारी-सतसई, पद-150
सन्देह अर्थापत्ति—अर्थात् से सन्देह ।	विनय-पत्रिका, पद-94
सन्देह, उदात्त—'तुम्हें याद हो कि न हो' से सन्देह ।	विनय-प्रेम-पचासा, पद-38 (भा० ग्रं०)
भगवान के औदात्य का कथन ।	

दृष्टान्त

भगवान की भक्त-वत्सलता की पुष्टि ।	प्रेम-प्रलाप, पद-33 (भा० ग्रं०)
भगवान की शरणागत-वत्सलता का प्रतिपादन ।	विनय-पत्रिका, पद-134, 144 152, 154, 240
	विनय-पत्रिका, पद-99, 262
राम की कृपा से आदर-प्राप्ति ।	विनय-पत्रिका, पद-106
राम की दयालुता की पुष्टि ।	विनय पत्रिका, पद-191
भगवान की पतित पावनता की पुष्टि ।	विनय पत्रिका, पद-215, 225
	रामचरित मानस-7/130
दुष्टों की भी गति ।	विनय पत्रिका, पद-241
राम गुणगान से भवसागर तरना ।	विनय-पत्रिका, पद-179

बिना परिश्रम यश प्राप्ति।	सूरसागर, पद-132
भगवत स्मरण से अभय प्राप्ति।	सूरसागर, पद-193

वचन-वक्रता

औदार्य का कथन।	पद्माकर-पंचामृत, पृ० 229
उपालम्भमूलक।	सूरसागर, पद-179
उपालम्भमूलक भक्ति।	श्रीविष्णु लहरी, पद-15 (रत्नाकर)

औचित्य

अलंकार।	नटनागर-विनोद, पृ० 31

जीवन-दर्शन

प्रेम-भावना।	नटनागर-विनोद, पृ० 31

राम द्वारा विराध पर कृपा

अलंकार

उदात्त—भगवान राम के औदात्य का वर्णन।	प्रेम-प्रलाप, पद-41 (भा० ग्रं०)
राम के पौरुष का कथन।	गीतावली-6/21/2-3 रामचरित मानस-7/51 विनय-पत्रिका, पद-43
वक्रोक्ति पुष्ट उदात्त—राम के औदात्य की ध्वनि।	पद्माकर-पंचामृत, पृ० 228

राम द्वारा कबंध वध

अलंकार

उदात्त—राम के पौरुष का कथन।	कवितावली-7/11, 7/12 गीतावली-6/1/34, 6/2/1-2 6/21/2-3 रामचरित मानस-6/36, 7/14 विनय-पत्रिका, पद-43

दृष्टान्त

वैर करने से विनाश।	कवितावली-6/27

वचन-वक्रता

प्रकारान्तर से राम के पौरुष का कथन।	पद्माकर-पंचामृत, पृ० 225, 228

राम की सुग्रीव से मित्रता/बालि-वध/वानरों पर कृपा

अलंकार

अर्थान्तरन्यास—समर्थों की अनीति का समर्थन।	वृन्द-ग्रंथावली-पृ० 298
उदात्त—भगवान के औदात्य/श्रेष्ठता का कथन।	कवितावली - 6/53,6/56, 6/17, 6/19, 7/10, 7/11 गीतावली-6/21/2-3 प्रेम-प्रलाप, पद-41, 72 (भा० ग्रं०) रामचरित मानस-6/56, 7/14 विनय-पत्रिका, पद-43, 97
स्वभावोदात्त— राम के स्वभाव का वर्णन।	कवितावली-7/1
चरित्रोदात्त—राम के चरित्र की उदारता।	कवितावली-7/14
उदात्त, सन्देह—भगवान के औदात्य का कथन। 'याद हो कि न याद हो' में सन्देह व्यंजित।	विनय-प्रेम-पचासा, पद-38 (भा० ग्रं०)
वक्रतामूलक उदात्त—राम की उदारता की ध्वनि।	पद्माकर-पंचामृत-पृ० 229
उदाहरण—राम के मेल से भलाई।	कवितावली-6/28
कुटिल व्यक्तियों से रक्षा।	विनय-पत्रिका, पद-181
मित्रता का उदाहरण।	अंगराज, पृ० 17
काव्यलिंग—बालि-वध का हेतु स्त्री।	पृथ्वीराज-रासौ-31/14
बालि से शत्रुता का हेतु भक्त-रक्षा।	विनय-पत्रिका, पद-9
काव्यलिंग, उदाहरण—न डरने का हेतु प्रीति के प्रमाण की प्रसिद्धि।	नट नागर विनोद, पृ० 31
गोपियों के प्रेम के लिए राम के वानरों से प्रेम का उदाहरण।	गीतावली-6/46/3
गुढ़ोत्तर।	
परिवृत्ति, यथाक्रम—बाली और रावण की संपदा सुग्रीव और विभीषण को देना। बाली का सुग्रीव से रावण का विभाषण से सम्बन्ध।	हृदय-तरंग, पृ० 15 (उपालम्भ)
निदर्शना—बाली का रावण से सम्बन्ध।	रामचंद्रिका-15/7

वक्रोक्ति—भक्तों की रक्षा ध्वनित।	विनय-पत्रिका, पद-97
दृष्टान्त	
राम के विरोध से विनाश।	कवितावली-6/27
बन्धु विरोध से विनाश।	केशव-ग्रंथावली-भाग-3 (जहांगीर जस चन्द्रिका-5/29)
कुचाल का परिणाम विनाश।	दोहावली दो० 415
भगवान की भक्त-वत्सलता की पुष्टि।	दोहावली-दो० 441 प्रेम-प्रलाप, पद-33 (भा० ग्रं०) विनय-पत्रिका, पद-99, 134, 152
भगवान की सुहृदयता की पुष्टि।	दोहावली, दो० 442
छल करने में दोष नहीं।	पृथ्वीराज रासौ-26/12
मित्रता का निर्वाह।	व्रजचन्द विनोद (उ०) पृ० 460
भगवान की भक्त-वत्सलता की पुष्टि।	विनय-पत्रिका, पद-99, 134, 152,
भगवान का शीघ्र रीझना।	विनय-पत्रिका, पद-163
भगवान द्वारा प्रीति का निर्वाह।	—वही—पद-164
शरणागत की रक्षा।	—वही—पद-193
पतित पावनता की पुष्टि।	—वही—पद-225
दुष्टों की भी गति।	—वही—पद-241
उल्लेख	
	रामचरितमानस-4/6/1-13, 7/11-2, 25, 30, रामचंद्रिका-8/1-8, 9/1, 10, 13/1
वचन-वक्रता	
उपालम्भमूलक भक्ति।	हृदय-तरंग-पृ० 15
औचित्य	
अलंकार।	नटनागर-विनोद, पृ० 31

राम लक्ष्मण पर शूपर्णखां का मोहित होना। लक्ष्मण द्वारा शूपर्णखां के नाक कान काटना

अलंकार

अर्थान्तरन्यास—अधमों की वचन और वेश से पहचान।	दोहावली-408
उदाहरण—कुब्जा के श्रीकृष्ण पर मोहित होने का उदाहरण।	विश्राम-सागर, पृ० 347
उदात्त—(शूपर्णखां का उद्धार) राम के औदात्य का कथन।	गीतावली-6/21/2-3
उपमा—हिडिम्बा के लिए शूपर्णखां और भीम के लिए लक्ष्मण उपमान।	जयभारत, पृ० 61
काव्यलिंग—सीता की घृणा का हेतु शूपर्णखां की विरूपता।	पद्माकर पंचामृत-पृ० 199
शूपर्णखां के उद्धार का हेतु काम।	—वही—पृ० 235

दृष्टान्त

स्वार्थपरता की पुष्टि।	कृष्णायन (बिसाहूराम), पृ० 79
कृष्ण के रूप रहस्य पर व्यंग्य।	विश्राम-सागर, पृ० 350

वचन-वक्रता

वियोग प्रस्तुतीकरण।	सूरदास, पद-2979

उल्लेखात्मक प्रयोग	साकेत-पृ० 412

राम द्वारा मारीच वध

अलंकार

अर्थान्तरन्यास—दुष्टों की वचन और वेश से पहचान नहीं।	दोहावली, 408
उदात्त—राम के पौरुष का कथन।	कवितावली-6/18 गीतावली-1/70/7 गीतावली-6/1/34
वक्रतामूलक उदात्त—राम की उदारता की ध्वनि।	पद्माकर-पंचामृत-पृ० 228
गुढ़ोत्तर।	रामचन्द्रिका-7/10
निदर्शना—कठोर पाणि की ध्वनि।	रामचन्द्रिका-5/37

राम द्वारा खर-दूषण और त्रिशिरा का वध

अलंकार

उदात्त—राम की श्रेष्ठता और पौरुष का कथन।	कवितावली-6/11, 6/18 गीत-गोविन्दानन्द, पद-15 (भा० ग्रं०) गीतावली-6/11, 6/18 रामचरित मानस-6/36, 7/14 विनय-पत्रिका, पद-43
उदाहरण, सन्देह—अर्जुन और कौरवों के युद्ध का वर्णन।	ब्रजचन्द्र-विनोद (पू०) पृ० 348
लुप्तोदाहरण--राम का लक्ष्मण को आज्ञा देना।	छत्रप्रकाश, पृ० 50
गुढ़ोत्तर पुष्ट उदात्त—राम के पौरुष का संकेत।	रामचन्द्रिका-7/10, 14/1
वचन-वक्रता पुष्ट उदात्त—राम के पौरुष की ध्वनि।	पद्माकर-पंचामृत, पृ० 228
काव्यलिंग—विरोध करने का हेतु विनाश।	कवितावली-6/12
स्वभावोक्ति--राम के स्वभाव का कथन।	रामचन्द्रिका-19/51

दृष्टान्त

वैर से विनाश।	कवितावली-6/27

राम द्वारा विभिषण पर कृपा। विभीषण का राम की शरण में जाना

अलंकार

अर्थान्तरन्यास—बड़ों द्वारा अपने वचनों की रक्षा।	वृंद-ग्रंथावली-पृ० 338
उत्प्रेक्षा—शरीर में से प्राण निकल जाने की तुलना।	पद्मावत-647/56
मधुमालती की विदाई की तुलना।	मधुमालती-511
ज्ञानदीप का रायभानपुर का परित्याग।	ज्ञानदीप, छंद-388
उदात्त—राम के औदात्य का कथन।	कवितावली-6/53, 7/10 विनय-पत्रिका-पद-138, 153, 162
राम के चरणों की श्रेष्ठता का कथन।	मीरा-पदावली-पद-1
उदात्त (चरित्र) राम के चरित्र की उदारता।	कवितावली-7/14

उदात्त (स्वभाव)—राम के स्वभाव का कथन।	कवितावली-7/1, 7/3
उदाहरण—राम से मेल करने में भलाई।	कवितावली-6/28
वीरसिंह द्वारा अभयदान का उदाहरण।	रसिकप्रिया-33/38
कुटिल व्यक्तियों से रक्षा।	विनिय-पत्रिका-पद-181
राम के प्रिय न होने पर त्याग।	विनय-पत्रिका-पद-174
उदाहरण, काव्यलिंग - गोपियों के प्रेम के लिए विभीषण के प्रेम का उदाहरण।	नटनागर-विनोद, पृ०31
प्रेम में पड़ने का हेतु प्राप्ति के प्रमाण की प्रसिद्धि।	
काव्यलिंग—विभीषण के कलंकित होने का हेतु राम से पहले मिलना।	पद्‌माकर-पंचामृत-पृ० 217
दृष्टान्त—भक्तों के दुःख से सम्बन्ध स्थापित।	काव्य-निर्णय-17/38
परिवृत्ति—रावण से सम्पत्ति लेकर विभीषण को देना।	हृदय-तरंग, पृ० 15 (उपालम्भ)

दृष्टान्त

बंधु विरोध से विनाश।	जहांगीर जस चन्द्रिका-5/29
भगवान के उद्धार करने की क्षमता की पुष्टि।	दैन्य-प्रलाप, पृ० 651 (भा० ग्रं०)
दान धर्म से विपत्ति।	वृंद-ग्रंथावली, पृ० 53-54
भ्रातृ-भाव स्थाई नहीं।	पृथ्वीराज रासो-26/26
भगवान की भक्त-वत्सलता।	विनय-पत्रिका पद-99, 134, 152, 154, 163 सूरसागर, पद-35
प्रीति की रीति का निर्वाह।	विनय-पत्रिका-पद-164
शरणागत की रक्षा।	विनय-पत्रिका-पद-193, 262
पतितों से स्नेह।	विनय-पत्रिका-पद-216
भगवान की पतित पावनता की पुष्टि।	विनय-पत्रिका-पद-225
भगवान के भक्तों को अभय प्राप्ति।	सूरसागर-पद-36
प्रेम से मोक्ष की प्राप्ति।	—वही—पद-176
ज्ञान के स्थान पर प्रेम भरना।	ज्ञानदीप-छंद-139

औचित्य

अलंकार-औचित्य।	नटनागर-विनोद-पृ० 31
दानवीर-औचित्य।	पद्‌माकर-पंचामृत-पृ० 217
उपदेश-औचित्य।	रसिक-प्रिया-33/58

क्षमा-औचित्य ।	रामचरित मानस-3/14, 6/15, 7/3, 7/14

वचन-वक्रता

उपालम्भमूलक भक्ति ।	सूरसागर, पद-135 हृदय-तरंग-पृ० 15

राम द्वारा लंका पर चढ़ाई

अलंकार

उत्प्रेक्षा—प्रकाश और अंधकार के युद्ध की तुलना ।	पद्मावत-197/5-7, 198/4-5
उदात्त—(चरित्रोदात्त) राम की उदारता का कथन ।	रामचरितमानस-3/14, 6/56, 7/3, 7/14
उदाहरण—पृथ्वीराज द्वारा शहाबुद्दीन पर आक्रमण ।	पृथ्वीराज-रासो-12/45
उपमा—सज्जन-दुर्जन संघर्ष की तुलना ।	चित्रावली-422/3-7
रूपक—बरौनियों की तुलना आमने-सामने डटी बरौनियों से ।	पद्मावत-104/2
रूपक, मुद्रालंकार, श्लेष—अन्याय पक्ष की पराजय पर प्रसन्नता व्यक्त ।	पद्मावत-280/5

उल्लेख

विभीषण के दूत का राक्षस से कथन ।	पद्मावत-393/1-4

(राम द्वारा लंका जलाना)

राम की लक्ष्मण और हनुमान द्वारा सहायता

अलंकार

अर्थान्तरन्यास—विपत्ति में सहायता का समर्थन ।	पद्मावत-कथारतन मंजरी, पत्र-33, छंद-228
उपमा—विपत्ति में सहयोग मिलना ।	कथा छीता-छंद-30
व्यतिरेक—छीता के प्रति राम का कथन ।	पद्मावत-635/3

राम द्वारा समुद्र बंधन । समुद्र-बंधन में वानरों की सहायता

अलंकार

अर्थान्तरन्यास—कुसंसर्ग से सज्जनों को भी कष्ट ।	वृंद-ग्रंथावली, पृ० 70
बड़ों की दृष्टि में छोटे कुछ नहीं ।	—वही—पृ० 300

बुराई करने पर भी बड़े भलाई करते हैं।	—वही—पृ० 303
उत्प्रेक्षा—वीरसिंह के शरीर की सिन्धु से तुलना।	केशव-ग्रंथावली-भाग-3 (वीरसिंह चरित्र-15/18)
उदात्त—राम के पौरुष का कथन।	कवितावली-6/19, 6/56 भूषण-भारती-पृ० 64 रामचन्द्रिका-27/16, 35/27 रामचरित मानस-7/14
राम के वंश की श्रेष्ठता का कथन।	छत्रप्रकाश, पृ० 3
वक्रोक्तिमूलक उदात्त —(रीछ और वानरों पर कृपा)।	पद्माकर-पंचामृत-पृ०238
(गुढ़ोत्तर पुष्ट उदात्त)।	रामचन्द्रिका-14/1
उदाहरण—हथियार से ही हिम्मत का होना।	शिवराज-भूषण पृ० 13
उपमा—दृढ़ संकल्प से असम्भव कार्य सिद्ध।	पद्मावत-491/5
अलाउद्दीन द्वारा किले को ऊंचाई तक बांधना।	पद्मावत-530/1-3
गोरा-बादल की तुलना नल-नील से।	पद्मावत-611/1-4, 102/5
काव्यलिंग—आश्चर्य का हेतु समुद्र बंधन।	पद्माकर-पंचामृत-पृ०199
रुपक—नायिका की नाक और सेतबन्धु की तुलना।	पद्मावत-475/1-3
संसार-सागर, ज्ञान-सुग्रीव।	विनय-पत्रिका, पद-58
मोक्ष के साधन—रीछ बन्दर।	
व्यतिरेक—राम के बाण की प्रखरता का वर्णन।	पद्मावत-473/4

दृष्टान्त

सेवक स्वामी से बड़ा।	दोहावली-528
उद्यम करने से सफलता।	पद्माकर-पंचामृत-पृ०20
मृगावती के लिए कुछ करने की चिन्ता।	मृगावती-66/2

उल्लेखात्मक — पद्मावत-393/1-4

विभीषण के दूत राक्षस का रतनसेन से कथन।	रामचरित मानस-6/1/5 रामचंन्द्रिका-21/44

वचन-वक्रता

प्रेम की प्रामाणिकता की पुष्टि।	सूरसागर-पद-3433

राम द्वारा रावण को पुरोहित बनाना

दृष्टान्त

छल करने में दोष नहीं । पृथ्वीराज रासौ-29/2

राम की सेना का नागपास में फंसना

उल्लेखात्मक प्रयोग

राम की प्रभुता के वर्णन के सन्दर्भ में । रामचरित मानस-7/58

राम द्वारा कुंभकर्ण वध

अलंकार

उदात्त—राम के पौरुष का कथन । रामचरितमानस-6/56

उदाहरण—खलों का उदाहरण । सूरसागर, पद-158

उपमा— दन्तवक्र के लिए कुंभकर्ण उपमान । रुक्मिणी-परिणय-पृ० 158

संभावना—औरंगजेब के कार्यों में कुंभकर्ण के कार्यों की संभावना । भूषण-ग्रंथावली-पद20

स्वभावोक्ति—राम के स्वभाव का कथन । रामचन्द्रिका-19/51

प्रतीक

कुंभकर्ण—भयंकराकार । जयभारत-पृ० 35

उल्लेख

नारद का युधिष्ठिर के राजसूय यज्ञ में राजाओं से कथन । ब्रजचन्द्र-विनोद (उ०) पृ० 60

औचित्य

निन्दा-औचित्य । जयभारत-पृ०35

जीवन-दर्शन

होनी की प्रबलता । ब्रजचन्द्र-विनोद-पृ 355 (पू०)

राम द्वारा रावण-वध । सीता उद्धार

अलंकार

अपह्नुति—लाल, पीले, श्वेत और काले बादलों का निषेधकर राम की सेना के वानरों की स्थापना । नटनागर-विनोद, पृ० 142

अर्थान्तरन्यास—रावण की निर्दोषिता का सामान्य वाक्य से समर्थन । जरासंध-पृ०2

वीरों की हिम्मत हथियार सामान्य वाक्य की पुष्टि।	भूषण-ग्रंथावली-पद-266
होनी की प्रबलता का समर्थन।	ब्रजचन्द्र-विनोद (पू०)पृ० 355 वृंद-ग्रंथावली-पृ०70
अति सर्वत्र वर्जयेत्।	ब्रजचन्द्र-विनोद (पू०) पृ० 355
अभिमान के दुखदाई होने का समर्थन।	विश्राम-सागर-पृ० 331
विपत्ति काल में बुद्धि विपरीत।	वृंद-ग्रंथावली-पृ० 367
उत्प्रेक्षा—दुर्योधन के वक्ष पर लगे अगणित घावों में राम के युद्ध के चित्रण की संभावना।	कृष्णायन-6/44 केशव-ग्रंथावली-खण्ड-3 (रतनबावनी) पृ०17, 27
उदात्त—दक्षिणान्त की श्रेष्ठता का वर्णन।	अंगराज-पृ० 12
राम के औदात्य का कथन।	कृष्णायन (बिसाहूराम), पृ०33
छत्रसाल वंश वर्णन।	छत्रप्रकाश-पृ० 3
राम के पौरुष का कथन।	रामचन्द्रिका-27/18, 56/27 रामचरित मानस-6/57 विनय-पत्रिका-पद-52
भगवान के शौर्य का कथन।	सूरसागर-पद-839
उदाहरण—श्रीकृष्ण और बाणासुर के युद्ध के लिए राम-रावण युद्ध का उदाहरण।	ऊषाहरण-पृ० 53
राजा द्वारा कुचाल का उदाहरण।	दोहावली-दो० 416
हिम्मत बहादुर के युद्ध का उदाहरण।	पद्माकर-पंचामृत-पृ 15
पृथ्वीराज जयचन्द युद्ध के लिए राम-रावण युद्ध का उदाहरण।	पृथ्वीराज-रासो-7/6
पृथ्वीराज द्वारा गौरी वध के लिए राम द्वारा रावण वध का उदाहरण।	—वही—12/45
शिवाजी और मुगल-सेना के लिए उदाहरण।	शिवराज-भूषण-पृ० 15, 33
शिवाजी और दिल्लीपति के लिए उदाहरण।	—वही—पृ० 25
उदाहरणमाला—शिवाजी और मुगलों के युद्ध के अनेक उदाहरण।	शिवा-बावनी-पृ० 20
उपमा—बाल सूर्य की राम के रिपु रुधिर से तुलना।	केशव-ग्रंथावली-खण्ड-3 (वीरसिंह चरित्र) 11/22
रतनसेन की अपने वैरियों पर आक्रमण करने की तुलना।	केशव-ग्रंथावली (रतनबावनी) पृ० 17, 27
बलराम से राम की तुलना।	जरासंध-वध पृ० 61
कृष्ण और जरासंध युद्ध के लिए राम और रावण	जरासंध-पृ० 75

युद्ध से उपमा।	
मालोपमा—शिवाजी और मलेच्छ वंश के लिए राम-रावण उपमान।	भूषण-ग्रंथावली-पद-56
राम शिवाजी के लिए रावण मुगल सेना के लिए उपमान।	—वही—36 (शिवा-बावनी)
रावण के समान लड़ने से दिल्ली की बादशाहत समाप्त।	भूषण-ग्रंथावली-पद-35 (फुटकर)
काव्यलिंग—तरने का हेतु क्रोध।	जहांगीर जस चन्द्रिका-पृ० 235
कहानी गूथने में हेतु रावण-वाहक बाणों का प्रयोग।	पुरुषोत्तम, पृ० 236
रावण के वध का हेतु स्त्री।	पृथ्वीराज रासौ-31/17
वध का हेतु लंका को कलंकित करना।	वृंद-ग्रंथावली-पृ० 447
निदर्शना—राम से शिवाजी का असंभव सम्बन्ध।	भूषण-ग्रंथावली-पद-140
हिरण्यकशिपु, दशशीश काम गधेश और चेदिराज से असंभव सम्बन्ध।	कृष्णायन-4/9
परिवृत्ति—परिवृत्ति की प्रतीति में रावण वध सहायक।	हृदय-तरंग-पृ० 15 (उपालम्भ)
पर्यायोक्ति—शिवाजी के अवतार का चतुरता से कथन।	भूषण-ग्रंथावली-पद-11 (शिवराज-भूषण)
पूर्वरूप—शिवाजी का वर्णन कर सरस्वती का पुनः पवित्र होना।	भूषण-ग्रंथावली-पद-291
प्रतीप—राम का पौरुष शिवाजी के सम्मुख तुच्छ।	भूषण-ग्रंथावली-पद-51
प्रत्यनीक—रावण वध का बदला लवणासुर द्वारा लेना।	रामचन्द्रिका-24/49
लब-कुश द्वारा रावण वध का बदला।	रामचन्द्रिका-36/28
रूपक—राम का शिवाजी पर रावण का औरंगजेब पर आरोप।	भूषण-ग्रंथावली-पद-37 (शिवा-बावनी)
मोह पर रावण का आरोप।	विनय-पत्रिका-पद-58
सहोक्ति—रावण के सिर में बाण तथा देवताओं का दुंदुभी पर दंडा एक साथ।	रामचन्द्रिका-24/49
सन्देह, उपमा—गौरी के वीरों से पृथ्वीराज के सामन्तों के युद्ध में संभावना व समानता।	पृथ्वीराज-रासौ-21/56
स्मरण—प्रतापसिंह को देख राम-अवतार का	वृंद-ग्रंथावली-पृ० 12

स्मरण।	(स्फुट छंद)
अतिशयोक्ति, उत्प्रेक्षा—जरासंध की सेना का अतिशयोक्तिपूर्ण वर्णन।	जरासंध-वध-पृ० 4
रुपक, सन्देह का संकर—जरासंध की सेना में रावण की सेना की संभावना।	
रुपक भी ध्वनित।	
जरासंध की गज सेना में लंकापुरी की सेना का सन्देह।	
उपमा, श्लेष—कौशल्या सुत के लिए राम उपमान।	जरासंध-वध-पृ० 58
कौशल्या सुत कृष्ण सेना का एक वीर और राम का दो अर्थों के लिए प्रयोग।	

दृष्टान्त

गर्व से विनाश।	कवितावली-7/132 रामचरित मानस-3/132
शत्रु को छोटा न समझने की पुष्टि।	वीसलदेव रासौ-2/2 कृष्णायन (विसाहूराम) पृ० 143
लोभ से विनाश।	केशव-ग्रंथावली-खण्ड-3 (वीरसिंह चरित्र) 1/64
हठ से पतन।	—वही— 11/46-47
अनीति से नाश।	छत्रसाल-दशक-पृ० 20
अहंकार से नाश।	पद्मावत-266/1
जोगियों को न छोड़ने का दृष्टान्त।	—वही—266/2-7
अबला के अपमान का प्रतिकार।	पार्थपत्नी महासती द्रौपदी-पृ० 39
परगृहोसिताओं की रक्षा।	पुरुषोत्तम-पृ० 148
गुढ़ोत्तर पुष्ट दृष्टान्त।	पृथ्वीराज-रासौ-3/36
पौरुष का समर्थन।	भूषण-भारती-पृ० 148
हीनों पर कृपा।	मीरा पदावली-पद-34
शरणागतों की रक्षा।	विनय-पत्रिका-पद-216
होनी की प्रबलता की पुष्टि।	विश्राम-सागर-पृ० 29
भगवान की भक्त-वत्सलता की पुष्टि।	वृंद-ग्रंथावली-पृ० 7 सूरसागर-पद-18
मरण वीरों का धर्म।	सेनापति कर्ण-पृ० 38

तपस्वियों की शक्ति ।	हंस-जवाहिर-225
प्रतीक	
राम का लंका विजय कर अयोध्या वापस आना, कष्टों को दूर करना ।	उत्तर-जय-पृ० 42
रावण-अन्याय, राम-न्याय, सीता हरण-दुष्कर्म ।	गोपिका-पृ० 169
रावण-दुष्ट, रावण-असद्‌वृत्तियों का पोषक ।	—वही—पृ० 169
राम-दुष्ट, रावण-अवांछनीय व्यक्ति ।	जयभारत-पृ० 213
राम-देववृत्ति, रावण-आसुरी वृत्ति ।	—वही—पृ० 404
रावण-नारीत्राशक ।	नटनागर विनोद-पृ० 142
उल्लेखात्मक-प्रयोग	रामचरित मानस-1/25/5
वचन-वक्रता	
औदार्य कथन ।	पद्‌माकर-पंचामृत-पृ० 229
सद् और असद् वृत्तियों के द्योतन के लिए ।	पुरुषोत्तम-पृ० 38
उपालम्भमूलक भक्ति ।	रुक्मिणी-परिणय-पृ०86, 107
	सूरसागर-पद-135
	हृदय-तरंग-पृ० 15
शक्ति की प्रामाणिकता ।	सूरसागर-पद-745
प्रेम की प्रामाणिकता ।	सूरसागर-पद-3433, 3434
औचित्य	
रस-औचित्य ।	पद्‌माकर-पंचामृत-पृ० 219
संवाद-औचित्य ।	पुरुषोत्तम-पृ० 38
नीति-औचित्य ।	ब्रजचन्द्र-विनोद (उ०). पृ० 499
प्रेम-औचित्य ।	सूरसागर-पृ० 38
जीवन-दर्शन	
लोक-कल्याण ।	कृष्णायन-7/47
होनी की प्रबलता ।	कूबरी-7/1
	ब्रजचन्द्र-विनोद (पू०) पृ० 355
	विश्राम-सागर-पृ० 336
नारी का अपमान करने वाले का अन्त अवश्यंभावी ।	पार्थपत्नी महासती द्रौपदी-पृ० 39
गर्वत्याग, त्याग ।	—वही—पृ० 162
अविनयी दण्डनीय ।	पुरुषोत्तम-पृ० 184

कर्म-दर्शन । सेनापति-कर्ण-पृ० 38

राम की धोबी पर कृपा

अलंकार

उदात्त—राम की उदारता का कथन । रामचरित मानस-1/16

भगवान की भक्त-वत्सलता का कथन । विनय-पत्रिका-पद-152

राम का लव-कुश से युद्ध

अलंकार

अर्थान्तरन्यास—अभिमान के दुखदाई होने का समर्थन । विश्राम-सागर-पृ० 331

उदाहरण—वीरों की युद्ध परता । काव्य-निर्णय (विरह-वारीष-13/26)

दृष्टान्त

आर्य वीरों के पराक्रम की पुष्टि । जयद्रथ-वध-पृ० 6

अपने वंश से युद्ध । जहांगीर जस चन्द्रिका-9/31-38

जीवन-दर्शन

पुरुषार्थ । जयद्रथ-वध-पृ० 6

राम द्वारा कुत्ते का न्याय

अलंकार

उदाहरण—शरणागतों की रक्षा का उदाहरण । विनय-पत्रिका-पद-146

राम द्वारा उल्लू का न्याय

अलंकार

उदात्त—राम की उदारता का कथन । कवितावली-7/100

उदाहरण—शरणागतों के न्याय का उदाहरण । विनय-पत्रिका-पद-146

राम द्वारा शंबूक वध

अलंकार

अर्थान्तरन्यास—नीतिवान राजाओं की अयुक्ति ठीक नहीं । वृंद-ग्रंथावली-पृ० 299

राम द्वारा अश्वमेधी यज्ञ करना

अलंकार

काव्यलिंग—यज्ञ का हेतु कृष्ण और अर्जुन। पृथ्वीराज-ससौ-2/3

दृष्टान्त

बिना सहायक यज्ञ की सफलता नहीं। —वही—

राम का चकवा चकवी को शाप

अलंकार

काव्यलिंग—रामशाप झूंठा होने का हेतु कुच। वृंद-ग्रंथावली-पृ० 21

रावण-आख्यान

रावण-जन्म

दृष्टान्त

जन्मना जाति का खण्डन और कर्मणा जाति का प्रतिपादन। कृष्णायन (बिसाहूराम) पृ० 379

रावण को नलकूबर का शाप। रम्भा-अपमान

दृष्टान्त

अबला अपमान का प्रतिकार। पार्थपत्नी महासती द्रौपदी, पृ० 39

रावण का काल को पकड़कर पाटी से बांधना

दृष्टान्त

भाई से वैर का परिणाम। ब्रजचन्द्र-विनोद (उत्तरार्द्ध) पृ० 162

रावण द्वारा कैलाश पर्वत उठाना

अलंकार

उदाहरण—रावण द्वारा अपने पौरुष का कथन। गीतावली-6/3/2

सम्बन्धातिशयोक्ति—रावण के शौर्य का अतिशयोक्तिपूर्ण वर्णन। रामचन्द्रिका-4/23

रावण को सहस्रबाहु द्वारा पकड़ा जाना

अलंकार

उपमा—छत्रसाल के लिए उपमा।	भूषण-ग्रंथावली-पद-4
उदाहरण—(सहस्रबाहु द्वारा रेवातट रोकना) छत्रसाल द्वारा कटक को रोकना।	(छत्रसाल-दशक) —वही-पृ० 10

रावण का वरुण को जीतना

अलंकार

अत्युक्ति—रावण के शौर्य का कथन।	रामचन्द्रिका-4/9

रावण द्वारा इन्द्र को जीतना। देवताओं को सताना

अलंकार

अत्युक्ति—रावण के शौर्य का बढ़ा-चढ़ा कर कथन।	रामचन्द्रिका-4/9

दृष्टान्त

जीवन की रक्षा सेवा से।	केशव-ग्रंथावली-खण्ड-3 (वीर० चरित्र-23/75)

रावण का विभीषण से वैर

दृष्टान्त

समय की प्रबलता की पुष्टि।	कूबरी, 7/1

रावण की वालि से पराजय

अलंकार

उदाहरण—पीपा द्वारा बादशाह को पकड़ने का उदाहरण।	पृथ्वीराज-रासो-29/28
गुढ़ोत्तर—	रामचन्द्रिका-7/6, 16/14

रावण द्वारा सीता हरण। राम का वियोग

अलंकार

अनुप्रास—यमक-समंग।	वृंद-ग्रंथावली-पृ० 514
अपह्नुति—तारों का निषेध कर रावण के चंगुल में फंसी सीता के आंसुओं की स्थापना।	अंगराज, पृ० 145-146
अपह्नुति, सन्देह—आंसुओं का निषेध कर सीता	अंगराज, पृ० 145-146

द्वारा गिराये गये आभूषणों की स्थापना और सन्देह व्यंजित ।	
चन्द्र की कलंक लेखा का निषेध कर सीता के मन में रमे हुए राम की स्थापना तथा उसका भी निषेध कर सीता के मन में भय की कालिमा की स्थापना व सन्देह व्यंजित ।	अंगराज, पृ० 145-146
दुष्टों की वचन और वेश से पहचान नहीं ।	दोहावली-408
अर्थान्तरन्यास—अतिशयता से कष्ट उत्पन्न होने का समर्थन ।	ब्रजचन्द्र विनोद (उ०) पृ० 457
होनी की प्रवलता का समर्थन ।	ब्रजचन्द्र-विनोद (उ०) पृ० 459
पीड़ा की पहचान का समर्थन ।	सूरसागर-पद-3847
उत्प्रेक्षा—जाम्बवती में अशोक वाटिका में बैठी सीता की संभावना ।	कृष्णायन-3/89
उदात्त—(मायामृग का वध) राम के पौरुष का कथन ।	रामचरितमानस-7/14
उदाहरण—कृष्ण अर्जुन का युधिष्ठिर की रक्षा के लिए सम्पर्क को छोड़कर जाने के लिए राम द्वारा सीता की रक्षा के लिए लक्ष्मण को छोड़कर जाने का उदाहरण ।	जयभारत-पृ० 372
जीव द्वारा प्राण त्यागना ।	जहांगीर जस चन्द्रिका-8/8
प्रिया वियोग से दुख ।	पद्मावत-413/3-6
पद्मावती का रतनसेन से अलग होकर दुखी होने का उदाहरण ।	पद्मावत-414
भेद खुलने पर निर्वाह नहीं ।	रामचरितमानस-1/7
उपमा—प्रिया वियोग में दुख होने की उपमा ।	कथा-छीता-छंद-30 चंदायन-351/1
सुजान के विरह में चित्रावली की दशा ।	चित्रावली-127
मृग के लिए माया-मृग (हेम-मृग) उपमान ।	जयभारत-पृ० 372
भौमासुर के चंगुल में फंसी राजकुमारियों के लिए उपमान ।	पुरुषोत्तम, पृ० 181
रावण की चोर से तुलना ।	वृंद-ग्रंथावली-पृ० 510
काव्यलिंग—राधा का कृष्ण से भयभीत होने का हेतु सीता हरण ।	रसिक प्रिया-11/16
मालोपमा—कृष्ण के ध्यान में बैठी रुक्मिणी के	पुरुषोत्तम-पृ० 168

लिए उनके उपमान।	
प्रतिषेध—सीता हरण का निषेध और युद्ध का संकेत।	पद्माकर पंचामृत-पृ० 173
रूपक—नारी को लेकर शत्रुता की तुलना।	ज्ञानदीप, छंद-124
श्लेष—सीता श्लेष शब्द (सीता-लक्ष्मी, पृथ्वी)	अंगराज, पृ० 179

दृष्टान्त

स्त्री का घर में रहना ही ठीक।	चित्रावली-472/34
छल से श्रद्धा नहीं।	जहांगीर जस चन्द्रिका-8/8
स्त्री की बुद्धि से चलना ठीक नहीं।	पद्मावत-132/12
जोगियों द्वारा छल।	पद्मावत-306/4-5
अबला के अपमान का प्रतिकार।	पार्थपत्नीमहासती द्रौपदी-पृ० 39
योगी का अविश्वासी होना।	ज्ञानदीप, छंद-337

प्रतीक

स्वर्ण-मृग-अलभ्यवस्तु।	गोपिका, पृ० 104
रावण-विरोधी शक्ति।	चित्रावली-467 मधुमालती-288 ज्ञानदीप-220
हेम मृग-संकट।	जयभारत-पृ० 104
मैथिलयां-परगृहोषिता।	पुरुषोत्तम-पृ० 184

उल्लेखात्मक-प्रयोग

	चंदायन-205/1-3 पद्मावत-307/7 मृगावती-25/4 रामचन्द्रिका-12/12

औचित्य

अलंकार	वृंद-ग्रंथावली-पृ० 514

जीवन-दर्शन

अति सर्वत्र वर्जयेत्।	ब्रजचन्द्र-विनोद (उ०) पृ० 457

राहु-केतु द्वारा सूर्य और चन्द्र को ग्रसित करना

अलंकार

अर्थान्तरन्यास—देवों द्वारा प्रदत्त कलुषिता।	पृथ्वीराज-रासौ-26/27

बड़ों पर ही विपत्ति।	वृंद-ग्रंथावली-पृ० 78
होनी की प्रबलता का समर्थन।	व्रजचन्द्र-विनोद, (पू०) पृ० 9, 355
विधि की वामता की पुष्टि।	रामचरितमानस-2/55
अप्रस्तुत प्रशंसा—नायिका का सौन्दर्य वर्णन। (सारूप्य-निबंधना)	चित्रावली, छंद-536
उत्प्रेक्षा—उषा के मुख पर फैले केशपाश में राहु ग्रसित चन्द्रमा की संभावना।	उषाहरण, पृ० 12
रोहिणी में राहुग्रस्त इन्दु ज्योत्सना की संभावना।	कृष्णायन-1/31
(राहु का अमृत चुराकर पीना) मुख में विधु तथा मुख पर लटकी काली अलकों में राहु की संभावना।	कृष्णायन-1/57
(राहु ग्रसित चन्द्रमा में से अमृत टपकना) वियोगिनी राधा के टपकते हुए आंसुओं में राहु ग्रसित चन्द्रमा में से अमृत टपकने की संभावना।	गीत-गोविन्दानन्द, पद-21 (भा० ग्रं०)
स्त्री मुख में चन्द्र और अंधकार में राहु की संभावना।	घनानन्द-कवित्त-पद-45
नायिका में चन्द्रमा विरह में राहु की संभावना।	चंदायन-431/1,433
नायिका के कान में राहु-केतु और मुख में चन्द्रमा की संभावना।	चित्रावली, छंद-189
ग्रीवा का सौन्द्रर्य वर्णन।	चित्रावली, छंद-190
नायिका के केशों में राहु की और मुख में चन्द्रमा की संभावना।	नलदमन-221/7
आपत्ति ग्रस्त व्यक्ति की तुलना चन्द्रमा से और आपत्ति की तुलना राहु से।	नलदमन-353/6
नायिका की मांग में तलवार और दो फांकों में	नलदमन-87/4
बटी केशराशि में राहु-केतु की सभावना।	मधुमालती-9/1/5
पृथ्वीराज द्वारा दुर्जनों को वन्दी बनाने की तुलना (राहु)	पृथ्वीराज रासो-4/19
नायिका की बेंदी में राहु की मुख में चन्द्रमा की संभावना।	बिहारी सतसई, पृ० 446

कंदला से मुख पर शशि और बालों पर राहु का आरोप।	बोधा-ग्रंथावली-25/36
ब्रजबालाओं के मुख में चन्द्रमा और मुख पर फैले केशपाश में राहु की संभावना।	महारास, पृ० 31
सखियों में राहु की भयभीत सीता में चन्द्रकिरण की संभावना।	रामचन्द्रिका-6/60
रावण द्वारा सीता को पकड़ने में राहु द्वारा चन्द्र को पकड़ने की संभावना।	रामचन्द्रिका-12/19
रावण के वानर-समूह की ओर दौड़ने में राहु के चन्द्रमा की ओर दौड़ने की संभावना।	—वही-19/12
मकराक्ष द्वारा अंधकार फैलाने में राहु द्वारा अंधकार फैलाने की संभावना।	—वही-19/12
रावण के अंगों में राहु और केतु की संभावना।	रामचरितमानस-6/32
मुख में विधु की वक्र-भ्रकुटियों में राहु की संभावना।	ललन-सागर, पद-901
नायिका के मुख पर चन्द्र और काले केशों में राहु की संभावना।	विद्यापति-पदावली, पद 10, 170
नायिका में चन्द्रमा और वियोग पर राहु की संभावना।	—वही-पद-55
नायिका में चन्द्र और नायक में राहु की संभावना।	—वही-पद-93
चंदन चर्चित कामिनी के शरीर की तुलना।	वृंद-ग्रंथावली-26/5
अगस्त्य और कुंद के पुष्प के लिए राहु और चन्द्र उपमान।	—वृंद-ग्रंथावली-28/12
गोपीमुख में चन्द्रमा अलकों में राहु की संभावना।	सूरसागर, पद 2065
मुख में चन्द्रमा नील पट में राहु की संभाववा।	—वही-पद 3388
गोपियों में चन्द्र कामदेव में राहु की संभावना।	—वही-पद 4761
काजल में राहु-केतु गोपी मुख में चन्द्र की संभावना।	—वही-पद 4761
उदात्त वक्रोक्ति मूलक—राम के औदात्य का कथन।	साकेत, पृ० 363
उदाहरण—मर्त्यों के लिए मृत्यु अवश्यंभावी।	कृष्णायन-6/262
राजाओं द्वारा युधिष्ठिर को उपहार देने के	द्रौपदी, पृ० 29

लिए राहु द्वारा विष्णु को अमृत देने का उदाहरण।	
भेद खुलने पर निर्वाह नहीं। (राहु का अमृत बांटने के समय भेद खुल जाना)	रामचरितमानस-1/7
दुष्टों का उदय दुख के लिए।	—वही-7/121
नायक से नायिका के भयभीत होने के लिए उदाहरण।	विद्यापति की पदावली, 72, 96
श्रीकृष्ण बिना गोपियों के दशा के लिए उदाहरण।	सूरसागर, पृ० 3840
भीष्म की कीर्ति लुप्त होने के लिए राहु ग्रसित सूर्य की लुप्त कीर्ति का उदाहरण।	सेनापति कर्ण, पृ० 112
उपमा—कर्ण के लिए राहु उपमान।	अंगराज, पृ० 264
(विष्णु द्वारा का राहु का शीश काटना) महाभारत के युद्ध में कटे पड़े सिर और भुजाओं के लिए उपमान।	जयभारत, पृ० 394
यौवन की उपमा चन्द्रमा से ओर विरह की तुलना राहु से।	पद्मावत-172/1815
सुख की तुलना चन्द्रमा से दुख की तुलना राहु से।	—वही-281/3
कृष्ण के साथ शिशुपाल से हुए युद्ध में कटे हुए सिरों के लिए उपमान।	रुक्मिणी-परिणय, पृ० 131-132
जटायु के पंख के लिए केतु उपमान।	साकेत, पृ० 424
गोपियों के शरीर की चन्द्रमा से तुलना।	सूरसागर, पद-3977
उल्लेख—संतान सुख देने वाले अदृष्ट कार्यों का बहुविधि उल्लेख।	फेरि-मिलिबो, पृ० 99
उत्प्रेक्षा, रूपक—उषा की मांग के सिन्दुर में राहु-रसना की संभावना। ललाट पर इन्दु, केशपाशों पर राहु तथा लाल सिन्दूर पर राहु की रसना का आरोप।	ऊषा-हरण, पृ० 21
उपमा, रूपक—केशों के लिए राहु उपमान। मुख पर चन्द्र का आरोप।	प्रेमघन-सर्वस्व, पृ० 57
उपमा, काव्यलिंग—श्याम (कृष्ण) के लिए चन्द्रविम्ब तथा कालयवन के लिए राहु उपमान।	द्वारका-प्रवेश, पृ० 57
श्यामवर्ण में शिशु रूप दिखाने में हेतु है कृष्ण	

के पीतवस्त्र की पांत आभा।	
एकावली—उत्तरोत्तर सम्बन्ध का वर्णन।	काव्य-निर्णय-17/7
काव्यलिंग—चन्द्र ग्रहण का हेतु चन्द्र मृदुताई।	कृष्णायन-2/187
चन्द्रमा में कालेपन का हेतु राहु द्वारा ग्रसित करना।	रामचरितमानस-6/12
राहु को छिपाने का हेतु अनुशासन।	गीतावली-6/8/2
ग्रसित होने का हेतु भगवान से अलग होना।	विनय-पत्रिका, पद-87
चन्द्रमा को मुक्त करने का हेतु उसका विषयुक्त होना।	रसिकप्रिया-8/31
दृष्टान्त—विरोध से अर्थ की प्रतीति।	काव्य-निर्णय-2/10
रुक्मिणी को शिशुपाल द्वारा पीड़ित करने की अभिव्यक्ति राहु के दृष्टान्त से।	पुरुषोत्तम, पृ० 157
रूपक—यादवकुल पर पूर्णचन्द्र का और अहकार पर राहु का आरोप।	उत्तर-जय, पृ० 51
मुख पर चन्द्र का विरह पर राहु का आरोप।	काव्य-निर्णय पृ० 583
द्रौपदी पर शशि-सुधा और शिशुपाल के कल्याण पर राहु का आरोप।	जयभारत, पृ० 256
स्वार्थ पर राहु का आरोप।	जरासंघ, पृ० 39
कुरुजन पर चन्द्रकुल शकुनि पर राहु का आरोप।	द्रौपदी, पृ० 25
जयचन्द्र पर राहु, पृथ्वीराज पर सूर्य का	पृथ्वीराज-रासौ-8/30
श्वेततरंग में चन्द्र और काले रंग पर राहु का आरोप।	नलदमन-353/6
महारुज पर राहु का, महाजन पर सोम का आरोप।	मधुपर्क-8/78
दशरथ के यश पर चन्द्रमा केकयी के कर्तव्य पर राहु का आरोप।	रामचरितमानस-2/209
अज्ञान पर चन्द्रमा, राम पर राहु का आरोप।	विनय-पत्रिका, पद-58
नाद पर राहु का आरोप।	सुवर्णा, पृ० 35
रूपक, सन्देह—कुरुकुल में रवि का और शिखण्डी पर राहु का आरोप।	सेनापति कर्ण, पृ० 20

'नारी है कि नर है राहु वह बोलो सखे' में सन्देह व्यंजित ।	
रूपक, उपमा —हरि-हर यश में चन्द्रमा दुष्टों में राहु का आरोप ।	रामचरित मानस-1/4
राहु की दुष्टों से समानता ।	
रूपक, अप्रस्तुतप्रशंसा—ससुराल गमन राहु, नायिका चन्द्रमा के समान ।	इन्द्रावती, उत्तरार्द्ध, पृ० 247
रूपक, रूपकातिशयोक्ति—रावण पर शशि राम पर राहु का आरोप ।	रामचरितमानस-3/28
केवल राहु का कथन ।	
रूपकातिशयोक्ति—उपमान चन्द्र और राहु का उल्लेख, उपमेय कृष्ण और कंस का उल्लेख नहीं ।	देवकी, पृ० 37
केवल कृष्ण के लिए चंद्र और कंस के लिए राहु का कथन ।	द्वापर, पृ० 190
वक्रोक्ति—नायिका के सौन्दर्य का वैदग्ध वर्णन ।	विद्यापति-पदावली पद, 102,103
वक्रोक्ति, काव्यलिंग—लोकोपवाद से बचने का हेतु चंद्र ग्रहण ।	विद्यापति-पदावली, पद-101
चन्द्र-ग्रहण का वैदग्ध्यपूर्ण वर्णन ।	
विभावना—विना कारण के राहु द्वारा सूर्य को ग्रसित करना ।	रुक्मिणी-परिणय, पृ० 121
नायिका के मुख का वर्णन न कर केवल चन्द्रमा का कथन ।	काव्य निर्णय-11/29
विरोधाभास—यौवन को उपमा चांद और राहु की तुलना विरह से करते हुये नागमती को चांद और विरह को राहु बताना ।	पद्मावत-348/3
सन्देह—शहाबुद्दीन द्वारा पृथ्वीराज को पकड़ने का प्रयास करने का संदिग्ध वर्णन ।	पृथ्वीराज रासो-11/10
कन्दला के विरह में राहु के प्रकोप का सन्देह ।	बोधा-ग्रंथावली-26/88
राक्षसियों द्वारा सीता को घेरने का वर्णन ।	रामचन्द्रिका-13/54
राजलक्ष्मी द्वारा धर्म को नष्ट करना ।	रामचन्द्रिका-23/33
अर्थापति-संदेह-नायिका के मुख और केशराशि में चन्द्र और राहु का सन्देह ।	विद्यापति-पदावली-111, 122,196
संभावना—नायिका के मुख और केश में चन्द्र	काव्य-निर्णय-2/10

और राहु की संभावना ।	
दृष्टान्त	
पूर्ण यौवन का ग्रसित होना ।	पद्मावत-84/4
जन्म लेनेवाले का मरण अवश्य ।	व्रजचन्द्र-विनोद (उ०) पृ० 431
काकुवक्रोक्ति से पुष्ट दृष्टान्त ।	रामचन्द्रिका-13/62
मृत्यु से पूर्व क्षणिक उदीप्ति ।	सुवर्णा, पृ० 70
कष्ट में भगवान सहायक ।	सूरसागर, पद-112
होनी की प्रबलता की पुष्टि ।	सूरसागर, पद- 264
नारी का राक्षसों के हाथों में पड़ना ।	सूरसागर, पद-519
प्रतीक	
चन्द्र-प्रेमिका ।	चित्ररेखा, पृ० 88
राहु-शैतान या दुष्टात्मा ।	चित्रावली-507/1
सूर्य-प्रेम	पद्मावत-233/1,257/1-2, 386/6-7/,441/6-7, 448/7,610/7
राहु-दुष्ट-व्यक्ति ।	देवकी, पृ० 37
केतु का इन्दु को ग्रसित करना-अनिष्ठ का संकेतक ।	द्रौपदी, पृ० 37
सिंहिका सुत का अदिति सुत को निगलना-समय प्रतिकूलता ।	—वही—
राहु-आपत्ति ।	रश्मिरथी, पृ० 8
राहु-पीड़ा का प्रतीक ।	विद्यापति-पदावली, पद-94
केतु-विनाश ।	साकेत, पृ० 168
कुल केतु-कुलविनाशक ।	साकेत, पृ० 186
उल्लेखात्मक प्रयोग	
ग्रहण की व्यंजना के लिए कवि-कथन ।	कृष्णायन-7/149 विद्यापति-पदावली, पद-111 रामचरित मानस-6/32
औचित्य	
क्रिया ।	ऊषाहरण-पृ० 12
श्रृंगार-अनौचित्य ।	—वही— पृ० 21-22
शास्त्र-औचित्य ।	—वही—
कुल ।	कृष्णायन-1/57
तत्त्व ।	द्रौपदी-पृ० 25

प्रतिभा।	पुरुषोत्तम, पृ० 157
भक्तिभाव।	विश्राम-सागर, पृ० 287

जीवन-दर्शन

मृदुता कष्ट का कारण।	कृष्णायन-2/187
धैर्य-धारण।	कृष्णायन-6/262
नारी रक्षा करने में समर्थ।	जयभारत, पृ० 256
प्राचीन विश्वासों के प्रति आस्था।	जरासंध, पृ० 30
गर्व-त्याग।	जरासंध, पृ० 39
संसार की नश्वरता।	द्रौपदी-पृ० 25
होनी की प्रवलता।	ब्रजचन्द्र-विनोद-पृ० 9, 355 (पू०)

राक्षसों की दिशा दक्षिण दिशा होना

उल्लेखात्मक प्रयोग।	मृगावती-पृ० 222

रैदास भक्त की कथा

अलंकार

अवज्ञा —रोष का प्रतिकार।	काव्य-निर्णय-14/19

लक्ष्मण द्वारा भ्रमरासुर वध

अलंकार

उदाहरण—पृथ्वीराज द्वारा शहाबुद्दीन गौरी का वध।	पृथ्वीराज-रासौ-12/45

लक्ष्मण द्वारा मेघनाद वध

अलंकार

उदाहरण—अर्जुन और कौरव युद्ध का लक्ष्मण-मेघनाद युद्ध से उदाहरण।	ब्रजचन्द्र-विनोद-पृ० 348
काव्यलिंग—लक्ष्मण होने का हेतु मेघनाद का वध।	पद्माकर-पंचामृत-पृ० 196

दृष्टान्त

छल करने में दोष नहीं।	पृथ्वीराज-रासौ-26/12

उल्लेख

कवि-कथन।	रामचन्द्रिका-18/31

औचित्य

गर्व—औचित्य ।	पद्माकर पंचामृत-पृ० 75
रस—औचित्य ।	पद्माकर-पंचामृत-पृ० 196

लोमश ऋषि की कथा

अलंकार

अतिशयोक्ति—शिवाजी का अतिशयोक्तिपूर्ण वर्णन ।	भूषण-भारती (शिवराज-भूषण) पृ० 114
उपमा—मनुष्यों के लिए उपमान ।	कवितावली-7/43
संभावना—औरंगजेब के उमरावों की कामना ।	भूषण-ग्रंथावली-पद-270

प्रतीक

लोमश—त्यागी ।	सेनापति कर्ण, पृ० 55

लोपामुद्रा द्वारा तपस्या

अलंकार

उत्प्रेक्षा—कामिनी में लोपामुद्रा की संभावना ।	केशव-ग्रंथावली-भाग-3 (वीर० चरित्र-23/28)

वराह-अवतार/हिरण्याक्ष वध

अलंकार

अपह्नुति—अवतरण का निषेध कर अभ्युदय की स्थापना ।	देवकी, पृ० 6
अर्थान्तरन्यास—(हिरण्याक्ष-वध) होनी की प्रबलता का समर्थन ।	ब्रजचन्द्र-विनोद, (पू०) पृ० 355
अर्थान्तरन्यास, उपमा—(वराह का पृथ्वी को लेकर बाहर निकलना) वीर द्वारा किसी की प्रतारणा न सहना । दुर्योधन के लिए वराह उपमान ।	जयभारत, पृ० 393
उदात्त—भगवान के औदात्य का कथन ।	कृष्णायन (बिसाहूराम) पृ० 34 गीत-गोविन्दानन्द-पद-14 (भा० ग्रं०) प्रेम-मालिका-पद-26 (भा० ग्रं०) रामचरितमानस-6/48 विनय-पत्रिका-पद-52

	विश्राम सागर, पृ० 312
	हृदय-तरंग, पृ० 204 (समस्या-पूर्ति)
उत्प्रेक्षा—पर्वत के खड्डों में वराह द्वारा खो दी गई पृथ्वी की संभावना।	कृष्णायन-2/94
(विष्णु-हिरण्याक्ष युद्ध) भीम में विष्णु तथा दुर्योधन में हिरण्याक्ष की संभावना।	कृष्णायन-3/55
भीम में आदि वराह की संभावना।	कृष्णायन-5/103
उदाहरण—प्रस्तुत भीम युद्ध में सैन्य-व्यूह को विदलित करना।	जयद्रथ-वध-पृ० 18
शिवाजी द्वारा पृथ्वी को धारण करने का उदाहरण।	भूषण-भारती (शिवराज-भूषण-पृ० 53)
अभिमन्यु का चक्रव्यूह में प्रवेश करना।	सुवर्णा, पृ० 70
वीर द्वारा रमणी का भार वहन करना।	सेनापति कर्ण, पृ० 162-163
उपमा—'वाराह नाह ये सूर' शूरों के लिए उपमा।	केशव-ग्रंथावली (रतनावली-पृ० 465) भाग-3
मालोपमा—दिल्ली पतन का अनेक प्रकार से वर्णन।	भूषण-ग्रंथावली-पद-35(फुटकर)
काव्यलिंग—हिरण्याक्ष वध का हेतु भावी शान्ति की स्थापना।	जरासंध-वध-पृ० 7
वराह बनने का हेतु पृथ्वी की रक्षा।	पार्थपत्नी महासती द्रौपदी, पृ० 106
वराह अवतार का हेतु सुर-दुख।	रामचरितमानस-7/110
काव्यलिंग, उदात्त—अवतरण का हेतु भक्त-जनों को सुख देना और भगवान के बल की समृद्धि का प्रतिपादन।	भगवान श्रीकृष्णलीलामृत, पृ० 99
निदर्शना—हिरण्यकशिपु और दसशीश का मगधेश और चेदि अवनीश से असंभव सम्बन्ध।	कृष्णायन-4/9
वराह अवतार का शिवाजी से अभेद सम्बन्ध।	भूषण-ग्रंथावली-पद-140
पर्याय—हिरण्याक्ष से पृथ्वी लेकर पृथु को देना।	रामचन्द्रिका-6/32
प्रतीप—वराह से शिवाजी का अधिक पौरुष।	भूषण ग्रंथावली-पद-52
व्यतिरेक—वराह का राजाओं की हलचल से भयभीत हो जाना।	भूषण-ग्रंथावली-पद-52

दृष्टान्त

लोभ से विनाश।	**केशव-ग्रंथावली-भाग-3**

(हिरण्याक्ष का विनाश)	वीरसिंह चरित्र-2/6
अहंकार से नाश अवश्य।	भूषण-भारती (स्फुट) पृ० 20
	सूरसागर-पद-54

वचन-वक्रता

सद् और असद् वृत्तियों का द्योतन।	पुरुषोत्तम-पृ० 38
शक्ति की प्रामाणिकता।	सूरसागर-पद-745
प्रेम की प्रामाणिकता।	सूरसागर-पद-3433

उल्लेखात्मक-प्रयोग

उत्तराखण्ड के सन्दर्भ में।	जहांगीर जस चन्द्रिका
	विज्ञानगीता-4/37
नारद का युधिष्ठिर के राजसूय यज्ञ में राजाओं से कथन।	ब्रजचन्द्र-विनोद, पृ० 60 (उ०)

औचित्य

वीर रस।	कृष्णायन-3/55
प्रतिनायक।	जयभारत-पृ० 393
विचार, संवाद।	पुरुषोत्तम-पृ० 38
भक्तिभाव।	विश्राम-सागर, पृ० 287

जीवन-दर्शन

युद्ध-दर्शन।	जरासंध-पृ० 7
होनी की प्रबलता।	ब्रजचन्द्र-विनोद-पृ० 7

वसुओं को मुनि वसिष्ठ का शाप

अलंकार

अर्थान्तरन्यास—अभिमान के दुखदायक होने का समर्थन।	विश्राम सागर पृ० 331
देवकी का चिन्तन।	सुवर्णा, पृ० 31

उल्लेखात्मक प्रयोग

कृष्ण का युद्ध-पूर्व चिन्तन-गंगा द्वारा वसुओं को जल में प्रवाहित करना।	सुवर्णा, पृ० 46

वसुओं का आठ वनिताओं से विवाह

अलंकार

उपमा—कृष्ण की आठ पत्नियों के लिए वसु-दिगांगनाएं उपमान।	फेरि मिलिबो, पृ० 26

वामन-अवतार

अलंकार

अर्थान्तरन्यास—मर्यादाहीनता के दुष्परिणाम समर्थन।	जयभारत, पृ० 209
का साधक के याचक न होने का समर्थन	देवकी, पृ० 5
बिना प्रपंच के भीख भली।	दोहावली-394
हित में भी छल करने में गिरावट।	—वही—396
कुछ अदेय नहीं।	पद्माकार पंचामृत, पृ० 64
याचक के मान घटने का समर्थन।	ब्रजचन्द्र-विनोद (पूर्वा०)पृ०80
'शिवाजी की रीति' साधरण वाक्य का समर्थन।	भूषण-ग्रंथावली, पद-267

उत्प्रेक्षा

बलि राजा के सिवारयुक्त सरोवर की तुलना।	केशव-ग्रंथावली-भाग-3 (वीरसिंह चरित्र-25/17)
अलाउद्दीन द्वारा रतनसेन को बन्दी बनाने के लिए बलि को बंधन में डालने की तुलना।	पद्मावत-576/47/5

उदात्त

कुरुक्षेत्र की श्रेष्ठता का वर्णन।	अंगराज, पृ० 185
भगवान के औदात्य का गठन।	कृष्णायन, पृ० 34 गीत-गोविन्दानन्द, पद-1214 (भा० ग्रं०) प्रेम-मालिका, पद-26 (भा० ग्रं०) ब्रज-विहार, पृ० 239-294 सूरसागर, पद-94, 119, 123, 839, 1105 हृदय-तरंग, पृ० 204
रास की श्रेष्ठता का वर्णन।	मधुपर्क-7/51
विष्णु की श्रेष्ठता का कथन।	रामचन्द्रिका-20/23
पराक्रम-कथन।	रामचरितमानस-4/29
राम का औदात्य-कथन।	विनय-पत्रिका, पद-52
कृष्ण के औदात्य का कथन।	विश्राम-सागर, पृ० 312 सुवर्णा, पृ० 64
हीनोदात्त—वरदाता का छल करना उचित नहीं।	वृन्द-ग्रंथावली, स्फुट छंद-पृ० 1

उदात्त, काव्यलिंग—कमण्डलु (त्याग) की श्रेष्ठता का कथन।	मधुपर्क-13/120
विष्णु के वामन होने का हेतु कमण्डलु।	
उदात्त, उपमा-कर्ण के औदात्य का कथन। कर्ण के लिए उपमान (वाचक लुप्तोपमा)	सेनापति कर्ण, पृ० 35
उदाहरण—राम से मेल करने में भलाई।	कवितावली-6/28
वीरसिंह के तलवार धारण करने का उदाहरण।	केशव-ग्रंथावली-14/28-29
जहांगीर के लिए वामन का उदाहरण।	जहांगीर जस चन्द्रिका, पृ० 194
छल से श्रद्धा नहीं।	जहांगीर जस चन्द्रिका 8/8 (विज्ञान गीता)
महान के सम्पर्क से महान।	दोहावली-532
दुष्ट को बंधन में डालना।	मृगावती-247/1-2
विष्णु के छली होने का उदाहरण।	रामचन्द्रिका-18/18
राम के प्रिय न होने पर त्यागने का उदाहरण। (बलि द्वारा गुरु को त्यागना)	विनय-पत्रिका, पृ० 174
कृष्ण का दुर्योधन से पाण्डवों के लिए पांच क्षेत्र मांगना।	सेनापति-कर्ण, पृ० 123
उपमा—कृष्ण के लिए उपमान।	कृष्णायन-5/106
गोविन्द के लिए बलि उपमान।	छत्रप्रकाश-पृ० 6
वर के लिए वामन उपमान।	जरासंध, पृ० 40
अलाउद्दीन के छल करने से तुलना।	पद्मावत-558/4617
सैनिकों के लिए वामन उपमान।	पृथ्वीराज-रासौ-20/129
शहाबुद्दीन के घोड़े की उपमा वामन से।	पृथ्वीराज-रासौ-27/5
राम के बाणों के लिए उपमान।	रामचन्द्रिका-12/67
उपमा पुष्ट सम—त्रिवेणी का गुण-कथन।	रामचन्द्रिका-20/23
उपमा, यमक—वामन सहस्ररथियों की तुलना वामन बंधु से। वामन के दो अर्थ (1) वामन संख्या, (2) वामन अवतार।	जरासंध, पृ० 24
मालोपमा—जहांगीर के अनेक उपमान।	जहांगीर जस चन्द्रिका, पृ० 118
पतन होने के अनेक हेतु।	भूषण-ग्रंथावली (फुटकर) पद-35

काव्यलिंग —भूतल से निकलने का हेतु बलि का भय ।	केशव ग्रंथावली, (भाग-3) 26/29
यश का हेतु वामन को बलि द्वारा भूमिदान ।	पृथ्वीराज-रासो-2/3
वामन अवतार का हेतु भक्त-जनों को सुख देना ।	भगवान श्रीकृष्णलीलामृत, पृ० 100
वामन वपु धारण करने का हेतु सुर दुख ।	रामचरित मानस-6/110
बलि के कल्याण का हेतु संत चरण ।	विनय-पत्रिका, पद-57
इच्छा पूर्ण करने का हेतु मन में वामन-वपुधारी विष्णु को दूध पिलाने की अभिलाषा ।	विश्राम-सागर, पृ० 302
त्रिलोक में फिरने का हेतु अदिति सुत बलि ।	सूरसागर, पद-6
हेतु भक्त हित ।	सूरसागर
काव्यलिंग, उदात्त—लघु होने का हेतु पृथ्वी को मांगना । वीरसिंह के गुणों की तुलना ।	केशव ग्रंथावली, (भाग-3) 27/27
काव्यलिंग, उदात्त—वामन का बलि सहित नाचने का हेतु राधिका-नृत्य । राधा के नृत्य की श्रेष्ठता ।	मधुपर्क-7/118
निदर्शना—वामन अवतार से शिवाजी का अभेद सम्बन्ध ।	भूषण-ग्रंथावली, पद-140
विष्णु के साथ कर का भी सम्बन्ध ।	रामचंद्रिका-4/15
पर्याय—पृथ्वी को बलि से लेकर इन्द्र को देना ।	रामचंद्रिका-6/34
पुनरावृत्ति—	जहांगीर जस चंद्रिका-1/23
यमक (सभंग)— पद-भंग से वामन के अलग-अलग अर्थ ।	उद्धव-शतक (रसाल) पृ० 4
वामन (वामन अवतार) वामन (दिग्गज)	मतिराम-ग्रंथावली (ललित-ललाम) पृ० 330
वक्रोक्ति—छल से गिरावट होने की ध्वनि ।	दोहावली-396
व्यतिरेक—घोड़ों की वामन से अधिक तीव्रता ।	जहांगीर जस चंद्रिका, पृ० 44
शिवाजी को बलि से अधिक बढ़ाकर बताना ।	भूषण-भारती, पृ० 95 (शिवराज भूषण)
निमिवंश की वामन से अधिक पवित्रता ।	रामचंद्रिका-6/26
वयसंधि की वामन से अधिक गति ।	रसिकप्रिया-14/47
हीनोदात्त, काव्यलिंग—कृष्ण के अपकर्ष का वर्णन । वामन अवतार का हेतु ।	अंगराज, पृ० 259

दान से विपत्ति।	केशव-ग्रंथावली, भाग-3 पृ० 37, 2/1-2, (वीरसिंह चरित्र)
दान से यश।	—वही—पृ० 40
दान के महत्त्व का प्रतिपादन।	जरासंध, पृ० 92
नारद की अभद्रता की पुष्टि।	देवकी, पृ० 23
भारत की महिमा की पुष्टि।	पार्थपत्नी महासती द्रौपदी, पृ० 108
जीवन-आदर्शों की पुष्टि।	—वही—पृ० 110
बिना सहायक यज्ञ की सफलता असंभव।	पृथ्वीराज रासौ-2/3
भ्रातृ-भाव का स्थाई न होना।	पृथ्वीराज-रासौ-26/26
भगवान की भक्तों के आगे विवशता।	प्रेम-प्रलाप, पद-3 (भा० ग्रं०)
अति सर्वत्र वर्जित।	व्रजचंद्र-विनोद (उ०), पृ० 458
ईर्ष्या से विनाश।	भूषण-ग्रंथावली, स्फुट छंद, पृ० 26
यश भी कर्म फलाधीन।	माधवानल कामकन्दला, पृ० 196
कर्म की प्रबलता का प्रतिपादन।	मीरा-पदावली, पद-28
वचन-पालन के लिए तन और धन का त्याग।	रामचरितमानस-2/30
धर्म के लिए संकट सहना।	रामचरितमानस-2/95
भक्तों के आगे भगवान की विवशता।	विनय-पत्रिका, पद-98
कृष्ण के रूप रहस्य पर दृष्टान्तमूलक व्यंग्य।	विश्राम-सागर, पृ० 350
भक्त-वत्सलता का प्रतिपादन।	वृंद-ग्रंथावली, स्फुट छंद, पृ० 28
स्याम भजन से बड़प्पन की प्राप्ति।	सूरसागर, पद-24
भगवान भक्तों के लिए सब कुछ करते हैं।	सूरसागर-1/6, 1/104, 10/3/95, 10/385/7

प्रतीक

वामन—लघु, छोटा।	अंगराज, पृ० 83
वामन—छुद्र।	—वही—पृ० 259 राधा, पृ० 78
वामन—लघु रूप।	कृष्णायन-1/34
प्रतीक—पुरुषार्थी।	भूषण-भारती (शिवराज भूषण) पृ० 95
वामनवेश—शिशु-रूप।	मधुपर्क-11/77

दृष्टान्त

कृष्ण की स्वार्थपरता की पुष्टि ।	कृष्णायन (बिसाहूराम), पृ० 79
वामन––लघु ।	सेनापति कर्ण, पृ० 117

वचन-वक्रता

विपरीत लक्षणामूलक व्यंग्य ।	उद्धव-शतक (रत्नाकर) पृ० 87
उपालम्भमूलक भक्ति ।	रुक्मिणी-परिणय, पृ० 86
शक्ति की प्रामाणिकता ।	सूरसागर, पद-745, 1115
प्रेम की प्रामाणिकता ।	सूरसागर, पद-3433
विरहपरक व्यंग्य ।	—वही—पद-3826

उल्लेखात्मक प्रयोग

चित्रावली, पृ० 115
दोहावली, दो० 382
रामचरितमानस-2/101, 304
रामचन्द्रिका-18/18
विनय-पत्रिका-218
सूरसागर-10/3515, 3549, 3839

औचित्य

वाक्य ।	अंगराज, पृ० 259
इतिहास अनौचित्य ।	केशव-ग्रंथावली-भाग-3, (वीर० चरित्र-33/11)
दानवीर ।	केशव-ग्रंथावली, भाग-3, 2/1-2, 33/37, (वीर० चरित्र) जरासंध, पृ० 9/93
अलंकार ।	केशव-ग्रंथावली, भाग-3 (वीर० चरित्र-33/10) देवकी, पृ० 5
वृत्त ।	देवकी, पृ० 23
नीति ।	ब्रजचन्द विनोद (उ०) पृ०449
भक्ति-भाव ।	विश्राम-सागर, पृ० 292

जीवन-दर्शन

राष्ट्रीयता ।	अंगराज, पृ० 185
स्वार्थ-त्याग ।	—वही—पृ० 259

युद्ध-दर्शन ।	जरासंध, पृ० 40
दान ।	जरासंध, पृ० 92 सेनापति कर्ण, पृ० 35
मर्यादा का अतिक्रमण करने वाले व्यक्ति का शीघ्र नाश ।	जयभारत, पृ० 209
पुरुषार्थ ।	देवकी, पृ० 5
वचन-पालन ।	पार्थ-पत्नी महासती द्रौपदी, पृ० 100
गर्व-त्याग ।	पार्थ-पत्नी महासती द्रौपदी, पृ० 108
अति सर्वत्र वर्जयेत् ।	ब्रजचन्द विनोद (उ०) पृ० 458
याचना में सम्मान नहीं ।	—वही—पृ० 80
त्याग ।	मधुपर्क-12/119-120
आशावाद ।	विश्राम-सागर, पृ० 292

वाल्मीकि आख्यान

अलंकार

उदात्त—राम की उदारता का कथन ।	विनय-पत्रिका, पद-112
काशी की महत्ता का कथन ।	कवितावली, 7/138
काव्यलिंग—कल्याण का हेतु संत-चरण ।	विनय-पत्रिका, पद-57
उत्थान का हेतु रामनाम ।	विनय-पत्रिका, पद-156
उद्धार का हेतु रामनाम ।	—वही-पद-228, 247

दृष्टान्त

राम कृपा से आदर प्राप्ति ।	विनय-पत्रिका, पद-106
भगवान की भक्त-वत्सलता की पुष्टि	विनय-पत्रिका, पद-99, 144, 193
भगवान की पतित-पावनता की पुष्टि ।	विनय-पत्रिका, पद-160
रामनाम के महत्त्व का प्रतिपादन ।	कवितावली-7/89
भगवान की भक्ति से उद्धार ।	वृंद-ग्रंथावली—(हितोपदेशोष्टक-पृ० 8)

विदुर-जन्म

दृष्टान्त

जन्मना जाति का खण्डन कर कर्मणा जाति का	कृष्णायन (बिसाहूराम), पृ०

प्रतिपादन।	378-79

विरोचन की कथा

अलंकार

उदात्त—रास की महत्ता का कथन।	मधुपर्क।
काव्यलिंग—विरोचन-वध का हेतु स्त्री।	पृथ्वीराज-रासौ-31/17

विश्वामित्र सम्बन्धी कथाएं
विश्वामित्र-मेनका सम्बन्ध

दृष्टान्त

परीक्षा लेने पर सभी असफल।	प्रेम-प्रलाप, पद-65 (भा० ग्रं०)
कामतत्व का प्रतिपादन।	सेनापति कर्ण, पृ० 99

प्रतीक

मेनका-पुत्री की उपेक्षा करने वाली स्त्री।	गोपिका, पृ० 130

जीवन-दर्शन

प्रवृत्ति-मार्ग।	सेनापति-कर्ण, पृ० 99

विश्वामित्र को द्विजत्व की प्राप्ति

अलंकार

उदात्त—कुरुक्षेत्र की महत्ता का वर्णन।	अंगराज, पृ० 153

दृष्टान्त

जन्मना जाति का खण्डन कर कर्मणा जाति का प्रतिपादन।	कृष्णायन (बिसाहूराम) पृ० 387-79

जीवन-दर्शन

पुरुषार्थ।	सेनापति-कर्ण, पृ० 192

विश्वामित्र-रम्भा आख्यान

दृष्टान्त

कामतत्व का प्रतिपादन।	सेनापति कर्ण, पृ० 99

विश्वामित्र द्वारा कुत्ते का मांस खाना

औचित्य

विचार।	कृष्णायन, 7/72

जीवन-दर्शन

आपत्ति काले मर्यादा नास्ति।	—वही—

विष्णु का वृंदा के साथ व्यभिचार / जलंधर वध

अलंकार

रूपक—गर्व पर जलंधर का आरोप।	विनय-पत्रिका, पद-49

दृष्टान्त

लोभ से विनाश।	केशव-ग्रंथावली-(वीर० चरित्र) भाग-3 पृ० 26
पुरुष गुरुतर अपराध करने पर भी दोषमुक्त।	महारास-पृ० 68
भगवान की गति की अलक्षता।	सूरसागर, पृ० 104

उल्लेख

	जहांगीर जस चन्द्रिका-(के० ग्रं०) 8/3

विष्णु द्वारा शेषशैया पर शयन

अलंकार

श्लेष पुष्ट उत्प्रेक्षा-चन्द्रमा की सुन्दरता का वर्णन।	रामचन्द्रिका-30/45

विष्णु का क्षीर समुद्र में रहना

दृष्टान्त—त्याग से यश।	केशव-ग्रंथावली-खण्ड-3 (वीर० चरित्र)-पृ० 40

विष्णु द्वारा देवांगनाओं की रक्षा

अलंकार

उदात्त, काव्यलिंग—भगवान के औदात्य का कथन।	भगवान श्रीकृष्णलीलामृत।
ब्रह्महत्या से मुक्ति दिलाने का हेतु भगवान की करुणा सागरता।	

वेन की कथा

अलंकार

अर्थान्तरन्यास—शिवाजी की रीति की वेन कथा से पुष्टि।	भूषण-ग्रंथावली, पद 267
राजपद से गर्व होने की पुष्टि।	रामचरितमानस-2/228
उदाहरण—लोक को सर्वस्व समझने का	रामचन्द्रिका-16/21

उदाहरणं ।	
उपमा—वेन पुत्र निषाद् के लिए उपमान ।	कृष्णायन-7/72
व्यतिरेक—शिवाजी का बढ़ा चढ़ाकर वर्णन ।	भूषण-भारती (शिवराज-भूषण)-पृ० 112
दृष्टान्त	
राजधर्म का प्रतिपादन ।	कृष्णायन-7/55
लोभ से निवाश ।	केशव-ग्रंथावली-भाग-3 (वीर०चरित्र-2/6)
प्रतीक	
वेन-अत्याचारी, कष्टदायक ।	मधुपर्क-8/81
वचन-वक्रता	
सद् और असद् वृत्तियों के धोतन के लिए ।	पुरुषोत्तम, पृ० 38
औचित्य	
संवाद ।	—वही—

शर्मिष्ठा-देवयानी की कथा

अलंकार	
अर्थान्तरन्यास, काव्यलिंग—अभिमान का दुखदाई होना ।	विश्राम-सागर, पृ० 331
शर्मिष्ठा का दासी होने का हेतु मद ।	
दृष्टान्त	
ब्रह्मकन्या देवयानी से क्षत्रिय पुत्र ययाति से विवाह सामाजिक नियमों की दृढ़ता ।	पार्थपत्नी महासती द्रौपदी, पृ० 15
उल्लेख	
कवि कथन यदु और पुरुवंश का परिचय ।	जयभारत, पृ० 15

शर्याति-आख्यान

अलंकार	
काव्यलिंग—पालक होने का हेतु मही का बहुलब्धा होना ।	द्वारका-प्रवेश, पृ० 49

शान्तनु-गंगा आख्यान

दृष्टान्त	
वचन पर दृढ़ रहना ।	पार्थपत्नी महासती द्रौपदी, पृ० 110

जीवन-दर्शन

व्रताचरण । —वही—

शत्रुघ्न द्वारा लवणासुर वध

अलंकार

उदात्त—राम के पौरुष का कथन । विनय-पत्रिका-पद-43
रामचन्द्रिका-35/27

प्रत्यनीक—लवकुश द्वारा लवणासुर वध का बदला । रामचन्द्रिका-36/28

शिव सम्बन्धी कथाएं
शिव द्वारा विषपान

अलंकार

अर्थान्तरन्यास—'समरथ को नहिं दोष कछु' इस सामान्य वाक्य का दोनों विशिष्ट वाक्यों द्वारा समर्थन । विश्राम-सागर, पृ० 333

उत्प्रेक्षा, रूपक—कर्ण के लिए उपमान की संभावना । (प्रतियमाना) सेनापति कर्ण, पृ० 162

अपमान पर विष का आरोप ।

उदात्त— शिव के औदात्य का कथन । विनय-पत्रिका-पद-13

उपमा—कविजनों के लिए उपमान । जयभारत, पृ० 180

पाण्डवों के लिए उपमान ।

उपमा, रूपक—सामान्य व्यक्ति के लिए उपमान । अंगराज, पृ० 81

विपदा पर विष का आरोप ।

विषपान का हेतु मनुष्य का कार्य । कानन-कुसुम (मकरन्द विन्दु)

काव्यलिंग—विषपान का हेतु रामनाम । विनय-पत्रिका, पद-156

काव्यलिंग, रूपक— विषपान का हेतु निजप्रण । विनय-पत्रिका, पद-3

विषरूपी ज्वर ।

उदात्त—शिव के औदात्य का कथन ।

व्यतिरेक—नीलकंठ श्रीकृष्ण की श्यामलता के आगे शिव-कंठ की श्यामलता फीकी । बोधा-ग्रंथावली (विरह वारीष-2/6)

जीवन-दर्शन

धैर्य । अंगराज, पृ० 81

व्यक्ति और समष्टि का समन्वय ।	अंगराज, पृ० 81
समर्थ को दोष नहीं ।	विश्राम-सागर, पृ० 333
पुरुषार्थ ।	सेनापति कर्ण, पृ० 123

शिव द्वारा पांडव नृत्य । सृष्टि की समाप्ति

अलकार

उदात्त—राधा द्वारा बनाए गए चित्र की श्रेष्ठता का वर्णन ।	मधुपर्क-2/19
उदाहरण—द्रोणाचार्य वध का प्रतिशोध लेने के लिए उद्यत अश्वत्थामा के लिए उदाहरण ।	सेनापति कर्ण, पृ० 36
उपमा—कर्ण के युद्ध के लिए उपमान ।	अंगराज, पृ० 88
छलसाल के युद्ध के लिए उपमान ।	छत्रप्रकाश-पृ० 65
श्रीकृष्ण के रास-विलासों का शिव का तांडव नृत्य उपमान ।	मधुपर्क, 2/70
अम्बा के भीष्म पर क्रोधित होने की उपमा ।	जयभारत, पृ० 28
त्रिनेत्र का संहार कार्य से थक जाना कुरुक्षेत्र के मैदान में छाए अंधकार के लिए उपमान ।	सुवर्णा, पृ० 59
भीम के युद्ध के लिए उपमान ।	सुवर्णा, पृ० 120
काव्यलिंग—ताण्डव नृत्य हेतु मनुष्य के दुख ।	कानन-कुसुम-धर्मनीति

प्रतीक

तांडव—विनाश कार्य ।	अंगराज, पृ० 86
तांडव—भयंकरता ।	कामायनी, पृ० 23
तांडव नृत्य—भयंकर आपत्ति ।	जरासंध, पृ० 87
तांडवी नृत्य—भयंकरता ।	प्रिय प्रवास, 3/14
तांडव—विनाश में प्रसन्नता ।	पृथ्वीराज रासौ-21/75
तांडव—(शिव का समाधि से जगना-विनाश की संभावना ।	पृथ्वीराज रासौ-22/56
तांडव नृत्य—कष्ट देना ।	भगवान श्रीकृष्णलीलामृत, पृ० 9
तांडवी तेज—परिवर्तन ।	रश्मिरथी, पृ० 49

शिव द्वारा त्रिपुर दहन

अलंकार

उत्प्रेक्षा—कंस की सभा में कृष्ण के क्रोधित होने की संभावना ।	कृष्णायन, 2/59

भीम और दुशासन के युद्ध के लिए उपमान।	कृष्णायन, 6/212
उदात्त--शिव के पौरुष का वर्णन।	विनय-पत्रिका, पद-3, 9, 12, 18, 49
उदाहरण—पृथ्वीराज द्वारा शहाबद्दीन गौरी के वध का उदाहरण।	पृथ्वीराज रासौ-12/45
छत्रसाल द्वारा सैदबहादुर के तीन चक्रकराहों का विनाश।	छत्रप्रकाश।
उपमा—कर्ण द्वारा बंगदेश की सेना ध्वस्त करने का उपमान।	अंगराज, पृ० 88
बलराम के जरासंघ से युद्ध के लिए उपमान।	ब्रजचन्द्र विनोद, (पू०) पृ० 453
उपमा, सन्देह—कृष्ण व बलराम के मुष्टिक व चाणूर से युद्ध के लिए उपमान। अथवा के प्रयोग से सन्देह।	मधुपर्क-10/91
काव्यलिंग—कालकूट के अमृत होने का हेतु नाम प्रभाव।	रामचरितमानस-12/45

प्रतीक

त्रिपुरपथ—कंटकाकीर्ण मार्ग, दानवीयदंभ। लीला-अत्याचार।	मधुपुरी, पृ० 81
त्रिपुरारी—अन्यायमर्दक।	मधुपर्क-11/86

उल्लेखात्मक-प्रयोग	चित्रावली-392/4-5 रामचरितमानस-1/57

जीवन-दर्शन

आशावाद	मधुपुरी, पृ० 81

शिव का दक्ष प्रजापति से द्रोह

अलंकार

उदात्त—शिव के पौरुष का कथन।	विनय-पत्रिका, पद-49
काव्यलिंग—शिव के प्रेतभाव का हेतु दक्ष शाप।	भगवान श्रीकृष्णलीलामृत, पृ० 86
निदर्शना—विरहाग्नि का प्रभाव।	पद्मावत-228/6

उल्लेख	चित्रावली-392/4-5

शिव द्वारा सती का त्याग / पार्वती द्वारा राम की परीक्षा

अलंकार

उदाहरण—शिव और सती प्रेमी और प्रेमिका के लिए उदाहरण।	काव्य-निर्णय-6/55

दृष्टान्त

बन ठन कर रहने वाली स्त्री ठीक नहीं।	पद्मावत-415/6
एक नारी के वहु पतियों की विवादमूलकता।	पार्थपत्नी महासती द्रौपदी-पृ० 34

उल्लेख — रामचरितमानस 1 5, 198

जीवन-दर्शन

मिथ्याचरण-त्याग।	पार्थपत्नी महासती द्रौपदी, पृ० 36

शिव-पार्वती विवाह

अलंकार

अतिशयोक्ति—पुंज पहाड़ के युद्ध का अतिशयोक्ति वर्णन।	पृथ्वीराज-रासौ-22/35
उदाहरण, सहोक्ति—श्रीकृष्ण के आगमन पर पातालवासियों के छद्म में उत्पन्न प्रेम के लिए उदाहरण।	ब्रजचन्द्र-विनोद (पू०) पृ० 291
सहार्थक साथ का का प्रयोग।	
काव्यलिंग—हंसी का हेतु शिव का नंगा रहना।	पद्माकर-पंचामृत-पृ० 112
व्यतिरेक—शिवाजी और उनकी पत्नी का अधिक उत्कर्ष वर्णित।	भूषण-ग्रंथावली (शिवराज-भूषण पृ० 155)
शिव की कामदेव से हार।	मधुमालती, पृ० 103

दृष्टान्त

औचित्य — काव्य-निर्णय-6/55

रसौचित्य।	पद्माकर पंचामृत-पृ० 212

शिव द्वारा काम-दहन

अलंकार

अतिशयोक्ति—कलिंग राजकुमारी के सौन्दर्य का बढ़ा चढ़ा कर वर्णन ।	अंगराज, पृ० 55
नायिका के विरह का अतिशयोक्तिपूर्ण वर्णन ।	काव्य-निर्णय-11/37
अर्थान्तिरन्यास—अभिमान के दुखदाई होने का समर्थन ।	विश्राम-सागर, पृ० 331
(अनंग) बड़े लोगों की वाणी सत्य ।	वृंद-ग्रंथावली-पृ० 67
अर्थान्तरन्यास, सन्देह, काकु वक्रोक्ति—संकट में किसी के सहायक न होने का समर्थन । 'कि' के प्रयोग से सन्देह की प्रतीति । स्वर-विकार द्वारा न बचाये जाने की 'क्या' के प्रयोग से प्रतीति ।	सेनापति-कर्ण, पृ० 31
उत्प्रेक्षा—पृथ्वीराज के क्रोध में शिव के क्रोध की संभावना ।	पृथ्वीराज-रासौ, 21/23
युद्ध में सिरत्राणों पर तलवार पड़ने में शिव का त्रिनेत्र खुलने की संभावना ।	पृथ्वीराज-रासौ-21/40
नायिका के विरह की संभावना ।	काव्य-निर्णय-11/37
उत्प्रेक्षा पुष्ट काव्यलिंग—सतचन्द्र धारण का हेतु काम का वैर ।	बिहारी-सतसई-537
उदात्त—शिव के पौरष का कथन ।	रसिक प्रिया-1/1 विनय-पत्रिका, पद-49, 129 सुवर्णा, पृ० 214
काम के शौर्य का वर्णन ।	सेनापति कर्ण, पृ० 105
उदाहरण—भगदत्त द्वारा अर्जुन पर वैष्णव अस्त्र चलाने का उदाहरण ।	अंगराज, पृ० 201
नकुल के कर्ण से द्वैरथ युद्ध करने के लिए उदाहरण ।	अंगराज, पृ० 214
अर्जुन द्वारा जयद्रथ पर बाण संधान करने के लिए उदाहरण ।	जयद्रथ-वध, पृ० 91
वियोगिनी राधा के श्रीकृष्ण के ध्यान में बैठने के लिए उदाहरण	फेरि मिलिबो, पृ० 10
शिवाजी और मुगलसेना के लिए उदाहरण ।	शिवराज भूषण, पृ० 15, 33

उल्लेख—ईश्वर की महिमा का अनेक प्रकार से वर्णन।	रामचरित मानस-1/4
उल्लेख—काव्यलिंग—यौवन का अनेक प्रकार से उल्लेख।	मधुपर्क-2/70
काम जलाने का हेतु शिव की विशाल शक्ति।	
मालोपमा—मलेच्छ सेना और शिवाजी के अनेक उपमान।	छत्रसाल-दशक-पृ० 40
मलेच्छ वंश के लिए काम और शिवाजी के लिए शिव उपमान।	भूषण-ग्रंथावली, पद-56
काम मुसलमान-सेना तथा शिव शिवाजी की सेना के लिए उपमान।	भूषण-ग्रंथावली, पद-36 (शिवा-वावनी),
एकावली—उत्तरोत्तर शिव और काम का सम्बन्ध स्थापित।	काव्य-निर्णय-17/7
निरुक्ति—शिवाजी के लिए शिव नाम प्रकृत।	भूषण-ग्रंथावली, पद-347
प्रत्यनीक—कामदहन के कारण नायिका का जलना।	काव्य-निर्णय-16/38
व्यतिरेक—दासियों के कटाक्ष से काम उत्पत्ति।	रामचंद्रिका-पद-31,40
रूपक—जगपति पर महादेव अन्य राजाओं पर काम का आरोप।	कथा-कनकावती, पत्र-7, छंद-51
संदेह—भीषण गर्मी का संदिग्ध वर्णन।	जरासंध, पृ० 87
संभावना—नायिका के विरह की संभावना वर्णित।	काव्य-निर्णय-15/31

दृष्टान्त

दान से यश।	केशव,ग्रंथावली-भाग-3 पृ० 40

वचन-वक्रता

काम दहन का संकेत।	बोधा-ग्रंथावली (पूरकनामा, पृ० 13)

उल्लेखात्मक प्रयोग

विद्यापति की पदावली-272/7
ज्ञानदीप, पृ० 44
चित्रावली-392/4-42
चित्रावली, पृ० 19, पृ० 149
रामचरितमानस-1/83/5,

1/84/4, 1/87/1-2, 1/88/1-2

शिव का मोहिनी पर मोहित होना

अलंकार

अर्थान्तरन्यास—अभिमान के दुखदाई होने का समर्थन।	विश्राम-सागर, पृ० 331

शिव द्वारा इन्द्र को कवच प्रदान करना

अलंकार

उदात्त—कवच की श्रेष्ठता व्यंजित।	बजचन्द विनोद, (उ०)पृ० 370

शिव द्वारा चंद्र को सिर पर धारण करना

अलंकार

उत्प्रेक्षा—यश विस्तार की संभावना।	केशव-ग्रंथावली-भाग-4 (वीर० चरित्र-18/17)
सेना में शिव के रूप की संभावना।	पृथ्वीराज रासो-4/11
हेतूत्प्रेक्षा—शिव द्वारा पद्मावती के कारण चंद्र को अपने ललाट पर स्थान देना।	पद्मावत-6/2/51/7
उपमा, परिकुरांकुर—दास के कलंक को दूर करने के लिए उपमान व कल्पित उत्कर्ष।	रामचन्द्रिका-1/1 पदमाकर-पंचामृत-पृ० 65
प्रोढ़ोक्ति—शिवाजी से बिना कारण शिव से सम्बन्ध।	भूषण-ग्रंथावली-पद-269
वक्रोक्ति (दृष्टान्त से पुष्ट)—संयोगिता के सौन्दर्य का वर्णन।	पृथ्वीराज-रासो-2/20
लखन बघेल के शोर्य का वर्णन।	—वही—6/72
व्यतिरेक—दासियों के हास्य का शिवचन्द्र से बढ़कर वर्णन।	रामचन्द्रिका-31/4
शंकर (उपमा; रूपक) वीरसिंह के लिए उपमान, यशरूपी गंगा और चन्द्रमा।	केशव-ग्रंथावली-(27/24) वीर० चरित्र
सन्देह—राम की पगड़ी का सन्दिग्ध वर्णन।	रामचन्द्रिका-6/4

औचित्य

विचार।	**रामचन्द्रिका-33/33**

शिव का कैलाश पर्वत पर रहना

अलंकार

प्रोढ़ोक्ति —शिवाजी का बिना कारण उत्कर्ष कथन। — भूषण-ग्रंथावली-पद-269

शिव का पार्वती के कहने से कैलाश छोड़ना

दृष्टान्त

स्त्रियों के अनुसार चलना ठीक नहीं। — हंस जवाहिर, पृ० 159

शिव के कंधे पर दो हत्यायें

उल्लेखात्मक-प्रयोग

पार्वती का शिव से कथन। — पद्मावत-207/1-2, 211/6-7, 22/5

शिव का त्रिनेत्र होना

अलंकार

उत्प्रेक्षा—कठोरराय व कान्ह के शत्रुओं की तुलना। — पृथ्वीराज-रासौ-20/29

उदात्त—शिव के ऐश्वर्य का कथन।

व्यतिरेक—राजकुंवर को शिवाजी से बढ़कर योगी बताना — इन्द्रावती (उतरार्द्ध) पृ० 227

उत्प्रेक्षा, सन्देह—सैनिकों के क्रोध में शिव के नेत्र खुलने का सन्देह और संभावना। — पृथ्वीराज-रासौ-22/64

शिव द्वारा अन्धकासुर वध

अलंकार

उदात्त—शिव के पौरुष का कथन। — विनय-पत्रिका, पद, 49

उल्लेखात्मक-प्रयोग—कौलावती की शिव-स्तुति। — चित्रावली, पृ० 149

शिव द्वारा मुण्डमाला धारण करना व श्मशान में रहना

अलंकार

अतिशयोक्ति—अल्हनकुमार का युद्ध वर्णन। — —वही—8/24

युद्ध का अतिशयोक्तिपूर्ण वर्णन। — पृथ्वीराज-रासौ-20/140

अत्युक्ति—शिवाजी के शौर्य का बढ़ा-चढ़ाकर वर्णन।	भूषण-ग्रंथावली-पद-14 (फुटकर)
अप्रस्तुत प्रशंसा—शिवाजी के ऐश्वर्य का कथन।	शिवा-बावनी, पद-4
उदाहरण—बाकुंरा और अब्दुला की सेना के लिए उदाहरण।	केशव-ग्रंथावली-(वीर०-चरित्र-14/33)
गिरिकुंवर के लिए उदाहरण।	पद्माकर-पंचामृत-पृ० 25
अनूपगिरि के लिए उदाहरण।	—वही—पृ० 53
शत्रुओं को क्षमा करने का उदाहरण।	—वही— पृ० 216
काव्यलिंग—शिव के मुण्डमाला में सिर का हेतु परमेश्वर में शिवाजी की लगन।	भूषण-ग्रंथावली, पद-51 (फुटकर)
वक्रोक्ति—निषेध की ध्वनि।	पृथ्वीराज-रासौ, 3/24

प्रतीक

विनाश में प्रसन्नता।	पृथ्वीराज-रासौ, 21/74, 22/39
विनाश।	—वही—27/25

शिव की गुणनिधि पर कृपा

गुढ़ोत्तर पुष्ट उदात्त—शिव की उदारता का कथन।	विनय-पत्रिका, पद-7

शिव द्वारा विष्णु को वर

उल्लेख

गंगा की महानता के सन्दर्भ में।	जहांगीर जस चन्द्रिका-6/59-63

शिव का पंचमुखी होना

अलंकार

काव्यलिंग—पंचमुख का हेतु गायन।	पद्माकर-पंचामृत (गंगालहरी-पृ० 27)

शिव द्वारा कंदमूल खाना

अलंकार

उदात्त—शिव की उदारता का कथन।	पद्माकर पंचामृत, पृ० 225

शिवि-आख्यान

अलंकार

उदात्त—वीर और पुरुषार्थी व्यक्ति का चित्रण।	जरासंध, पृ० 2
भारत की श्रेष्ठता का वर्णन।	मधुपर्क, 2/16
कृष्ण के औदात्य का चित्रण।	मधुपर्क, 7/59
भारत की समृद्धि का वर्णन।	मधुपर्क, 9/29
उदात्त, उपमा—कर्ण की दानशीलता का कथन।	रश्मिरथी, पृ० 58
कर्ण के लिए उपमान व्यंजित।	
कर्ण के औदात्य का कथन।	सेनापति-कर्ण, पृ० 55
कर्ण के लिए उपमान (वाचक-लुप्तोपमा)	
उपमा—सत्यपालन की शिवि से समानता।	पृथ्वीराज-रासौ-24/186
दशरथ के लिए उपमान।	रामचन्द्रिका-5/31
काव्यलिंग—भूतल से निकलने का हेतु शिवि का भय।	केशव-ग्रंथावली-भाग-3 (वीरसिंह चरित्र-26/29)
गूढ़ोत्तर—शिवि के सत्यपालन का संकेत।	साकेत, पृ० 354
व्यतिरेक—वीरसिंह के दान का अधिक महत्त्व।	केशव-ग्रंथावली-भाग-3 (वीरसिंह चरित्र-2/18, 32/521)

दृष्टान्त

दान से यश।	केशव-ग्रंथावली-भाग-3 (वीरसिंह चरित्र-2/18)
दान के महत्व का प्रतिपादन।	जरासंध, पृ० 12
परोपकार के लिए भी पर विपत्ति सिर पर धारण करना।	ब्रजचन्द्र विनोद, (पू०) पृ० 193
व्रताचरण के अनुपालन की पुष्टि।	रश्मिरथी, पृ० 54
वचन-पालन की पुष्टि।	रामचरितमानस-2/30, 2/48
धर्म-पालन की पुष्टि।	—वही—2/95

औचित्य

दानवीर।	जरासंध, पृ० 91/92
व्रताचरण।	रश्मिरथी, पृ० 54

जीवन-दर्शन

त्याग।	मधुपर्क, 1/26
दान।	सेनापति-कर्ण, पृ० 35

पुरुषार्थ ।	जरासंध-पृ० 2
	मधुपर्क-पृ० 123
लोक-कल्याण ।	जरासंध-पृ० 92
राष्ट्रीयता ।	मधुपर्क-9/25-26

श्रवण-आख्यान

अलंकार

अर्थान्तरन्यास—कहीं-कहीं गुणों के दुखदाई होने का समर्थन ।	विश्राम-सागर-पृ० 336
उदाहरण—पुत्र वियोग में प्राण त्याग।	चित्ररेखा-पृ 97
धोखे में अपराध करके लांछित होना ।	चित्रावली-507/1-3
मातृ-पितृ भक्ति का उदाहरण	पद्मावत-362/6-7
राजकुंवर के पिता द्वारा पुत्र वियोग में प्राण त्याग	मृगावती-69/1-2
उपमा—पुत्र-वियोग में मर्मान्तिक पीड़ा।	मृगावती 69/1-2
	मधुमालती-171/4
स्मरण—दशरथ द्वारा श्रवण-वध स्मरण।	रामचरित मानस-2/155

दृष्टान्त

माता-पिता की सेवा का प्रतिपादन ।	नलदमन-60/6-9
व्यर्थ हत्या का लांछन ।	चित्रावली-507/1-3

प्रतीक

श्रवणकुमार-मातृ-पितृ भक्ति ।	पद्मावत-362/6-7
उल्लेखात्मक-प्रयोग	रामचरित मानस-2/155/3-6

श्रीतीर्थ में कुबेर की तपस्या

अलंकार

उदात्त—श्रीतीर्थ की श्रेष्ठता का वर्णन।	कृष्णायन-3/184

शुम्भ-निशुम्भ वध

अलंकार

उदात्त—श्रीतीर्थ की श्रेष्ठता का वर्णन।	कृष्णायन-3/184
शक्ति के पौरुष का कथन ।	भूषण-भारती-छप्पय-पृ० 1
देवी के पौरुष का कथन ।	विनय-पत्रिका-पद-15
काली के पौरुष का कथन ।	वृंद-ग्रंथावली-स्फुट छंद-पृ० 58
उदाहरण—सहदेव और योगिनी के युद्ध के लिए	कृष्णायन (बिसाहूराम)

शुम्भ-निशुम्भ से दुर्गा के युद्ध का उदाहरण।	पृ० 330
उपमा—नायिका के उरोजों की तुलना शुम्भ-निशुम्भ से।	मतिराम-सतसई-पृ० 530, मतिराम-सतसई-पृ० 540
काव्यलिंग—स्तनपान की लालसा का हेतु शुंभ-निशुंभ मर्दिनी का काव्य-कला कपर्दिनी बनना।	साकेत-पृ० 355
निदर्शना—माया से सम्बन्ध स्थापित।	छत्रप्रकाश-पृ० 6
रुपक—शुंभ-निशुंभ में हाथी का आरोप।	विनय-पत्रिका-पद-15

वचन-वक्रता

उपालम्भमूलक।	रुक्मिणी-परिणय-पृ० 86
प्रेम की प्रामाणिकता।	सूरसागर-पद-3433

जीवन-दर्शन

लोक-कल्याण।	भगवान श्रीकृष्ण लीलामृत-98-99

शुकदेव का कहीं दो घड़ी से अधिक न ठहरना

अलंकार

उपमा—	पद्मावत-605/5
प्रतीक	पद्मावत-604/5

शुक्र ऋषि द्वारा तपस्या

अलंकार

उदात्त—कुरुक्षेत्र की श्रेष्ठता का वर्णन।	अंगराज-पृ० 185

शुक्राचार्य का काना होना

उदाहरण—राजा के हित में कष्ट उठाना।	रामचन्द्रिका-11/25

शृंगी ऋषि का जन्म

अलंकार

उदात्त—जन्मना जाति का खण्डन कर कर्मणा जाति का प्रतिपादन।	कृष्णायन (त्रिसाहूराम) पृ०378

शेषनाग द्वारा पृथ्वी को धारण करना

अलंकार

अत्युक्ति—शिवाजी का शौर्य वर्णन।	भूषण-ग्रंथावली-पद-2 (शिवा-बावनी)

	पद-14, 42 (फुटकर)
काव्यार्थपत्ति गर्भित अत्युक्ति—बाणासुर के शौर्य का अत्युक्ति पूर्ण वर्णन।	रामचन्द्रिका--4/12
अतिशयोक्ति—शिवाजी की सेना का वर्णन।	छत्रसाल-दशक-पृ० 50
जयचन्द के युद्ध का वर्णन।	पृथ्वीराज रासौ-7/12
राव बुद्धिसिंह की सेना का बढ़ा-चढ़ाकर वर्णन।	भूषण-ग्रंथावली-पद-46 (फुटकर)
अर्थान्तरन्यास—महान ही भार संभालने में समर्थ	वृंद-ग्रंथावली-पृ० 302
उल्लेख—शिवाजी के पौरुष का अनेक प्रकार से कथन।	भूषण-ग्रंथावली-पद-72
उत्प्रेक्षा—रतनसेन के लिए उपमान।	केशव-ग्रंथावली-भाग-3 पृ० 36
उदाहरण—शिवा द्वारा पृथ्वी को धारण करने का उदाहरण।	भूषण-भारती-पृ० 52
उपमा—हिम्मत बहादुर की तुलना।	पद्माकर पंचामृत-पृ० 4
काव्यलिंग—शेषफन के दहकने का हेतु पृथ्वीपति का होना।	काव्य-निर्णय-11/35
निश्चिन्त होने का हेतु शिवाजी।	छत्रसाल-दशक-पृ० 50
काव्यलिंग—भूमि धारण करने का हेतु तप बल।	रामचरित मानस-1/73
पृथ्वी धारण करने का हेतु प्रभु बल।	—वही—5/21
पर्यास्तापह्नुति—पृथ्वी को धारण करने का धर्म शिवाजी में आरोपित।	भूषण-ग्रंथावली-पद-87
प्रतिवस्तूपमा—उपमान वाक्य 'छाजै' व उपमेय वाक्य 'विराजै' एक ही धर्म के द्योतक।	भूषण-ग्रंथावली-पद-361
प्रतीप—सहस्रमुख शेष द्वारा वर्णन करने की असामर्थ्य।	रामचरित मानस-1/61
तुल्ययोगिता—शेषनाग, दिकनाग का निश्चिन्त होना एक धर्म।	भूषण-ग्रंथावली-पद-125
रुपक—शेषनाग के फनों में मणियों से जटित पलंग का आरोप।	रामचन्द्रिका-6/33
वक्रोक्ति—निषेध की ध्वनि।	पृथ्वीराज-रासौ-3/24
पहाड़राम का शौर्य कथन।	—वही—8/34
व्यतिरेक, अतिशयोक्ति—शिवाजी की सेना का	शिवराज-भूषण-3, 6, 29,

बढ़ा-चढ़ाकर वर्णन।	
वस्तुत्प्रेक्षा—धनुष में शेषनाग की संभावना।	रामचन्द्रिका-3/14
व्यतिरेक—रतनसेन की सेना का शेष से अधिक उत्कर्ष।	केशव-ग्रंथावली-भाग-3 पृ० 37
शिवाजी के पौरुष का शेष से अधिक उत्कर्ष।	
विपर्यय—शेष द्वारा पृथ्वी की रक्षा।	पृथ्वीराज रासो-8/3
पृथ्वी द्वारा शेष की रक्षा।	
अर्थापति सन्देह—अर्थात् से सन्देह।	रामचरित मानस-1/355
उल्लेखात्मक-प्रयोग	रामचरित मानस-2/117

सगर-आख्यान

सगर का ऐश्वर्य

जीवन-दर्शन

पुरुषार्थ।	मधुपर्क, पृ० 123

सगर के साठ हजार पुत्रों की उत्पत्ति

अलंकार

अपह्नुति—तारों का निषेधकर सगर के पुत्रों की स्थापना।	अंगराज-पृ० 147

सगर का अपने पुत्र को निकालना

अलंकार

अर्थान्तरन्यास—बिना त्याग के जन-काज संभव न होने का समर्थन।	कृष्णायन-7/157-158
गूढ़ोत्तर—पुत्र त्यागने का अस्पष्ट कथन।	साकेत-पृ० 347

दृष्टान्त

प्रजाधर्म का अनुपालन।	व्रजचन्द्र-विनोद (उ०) पृ० 499
रघुकुल के वैभव की पुष्टि। (अलंकार-ध्वनि)	साकेत-पृ० 131

औचित्य

नीति।	व्रजचन्द्र-विनोद (उ०) पृ० 449

प्रतीक

सदगुण का प्रतीक।	साकेत-पृ०449

जीवन--दर्शन

त्याग। — कृष्णायन-7/157-158

लोक-कल्याण। — ब्रजचन्द्र-विनोद (उ०) पृ० 449

सत्यवान-सावित्री आख्यान

अलंकार

उदात्त—राधा के औदात्य का कथन। — मधुपर्क-1/29

भगत के चित्र की श्रेष्ठता का वर्णन। — मधुपर्क-2/29

उदाहरण—प्रस्तुत अक्रूर का कृष्ण के चरणों में नमित होना। — ब्रजचन्द्र-विनोद (पू०) पृ० 4/7

उपमा—द्रौपदी के लिए सावित्री और युधिष्ठिर के लिए सत्यवान उपमान (वाचक लुप्तोपमा)। — जयभारत-पृ० 157

सनकादिकों की उत्पत्ति

उल्लेखात्मक-प्रयोग — रामचन्द्रिका-21/18

सदन कसाई की कथा

अलंकार

उदात्त—राम के औदात्य का कथन। — पद्माकर-पंचामृत-पृ० 232

अवज्ञा-रोष को न देखना। — काव्य-निर्णय-14/19

समुद्र-मंथन

अलंकार

अत्युक्ति—अल्लाउद्दीन अभियान का वर्णन। — पद्मावत-495/2-3

अतिशयोक्ति—अंगद के पैर के दबाव का वर्णन। — कवितावली-6/16

हिम्मत बहादुर की सेना का वर्णन। — पद्माकर-पंचामृत-पृ० 71

अर्थान्तरन्यास—(विष की उत्पत्ति) मर्यादा-हीनता से कष्ट होने की पुष्टि। — वृंद-ग्रंथावली-पृ० 269

उत्प्रेक्षा—श्रीकृष्ण के परिधानों से मुख निकालने में समुद्र-मंथन से निकले चन्द्र की संभावना। — कृष्णायन-1/63

(बलराम का सौन्दर्य चित्रण) बलराम को सौन्दर्य-समुद्र को मथकर निकालने की संभावना। — कृष्णायन-1/179

(समुद्र को मंदराचल पर्वत से मथा जाना) कुवलयापीड़ गज में मंदराचल की संभावना। — कृष्णायन-2/55

(समुद्र को मथकर देवताओं द्वारा अमृत निकालना)	—वही—4/111
कृष्ण को देखकर मुनियों का आनन्द विभोर होना।	
कृष्ण द्वारा परीक्षित्त को जीवित करने पर नगर में छाए हर्ष के लिये सम्भावना।	—वही—7/101
वीरसिंह के शरीर की समुद्र से तुलना।	केशव-ग्रंथावली-भाग-3 (वीर० चरित्र-15/181)
मुक्ताओं का समुद्र से निकलने का उल्लेख।	—वही—16/32
होली खेलने में समुद्र-मंथन की संभावना।	गीतावली-7/15/4
चित्रावली के नाभि-सौन्दर्य का वर्णन।	चित्रावली-76/1
कृष्ण के मुख पर पसीने की बूंदों की तुलना समुद्र में से मंथन के बाद निकले शशि से।	सूरसागर-पद-628, 648
कृष्ण के स्वर्ण मुकुट से सुशोभित सौन्दर्य की तुलना लक्ष्मी और अमृत के स्निग्ध प्रकाश से।	सूरसागर-1/63
कृष्ण के मुख में चन्द्र का श्रमकण में अमृत की सम्भावना।	सूरसागर-पद 1246
मुख में समुद्र की संभावना।	—वही— पद-1351
आभूषणों की शोभा में समुद्र-मंथन द्वारा निकाली गई अमृत की शोभा की संभावना।	
प्रियामुख में सुधाकर की घूंघट में समुद्र की सम्भावना।	सूरसागर-पद-2736
कृष्ण मुख में चन्द्रमा और सेज में समुद्र की संभावना।	
उदात्त— (समुद्र से कमला और चन्द्र का निकलना) शरद् की श्रेष्ठता का वर्णन।	मधुपर्क-2/53
उदाहरण—उर्वशी के समुद्र से निकलने में समुद्र से लक्ष्मी के निकलने का उदाहरण।	उर्वशी-पृ० 142
(समुद्र-मंथन से अमृत प्राप्त करके देवताओं का आनन्दित होना) श्रीकृष्ण के आगमन पर परिवार सहित वरुण का आनन्दित होना।	ब्रजचन्द्र-विनोद (पू०) पृ० 201
पर-संपदा से राम की ईर्ष्या।	रामचरितमानस-2/238
अंगद और हनुमान मन्दर पर्वत तथा लंका	—वही—6/45

समुद्र का उदाहरण ।	
अग्नि द्वारा सीता को समर्पित करना ।	—वही—6/109
(क्षीर समुद्र से लक्ष्मी का निकालना)	
(क्षीर-समुद्र से कमला का निकलना) कर्ण की पत्नी के द्वारा तोरण से निकलने का उदाहरण ।	सेनापति-कर्ण-पृ० 141
उपमा—दुर्योधन का वारि-दुर्ग से मंथराचल के समान जल को मथते हुए निकलना ।	अंगराज ।
चित्रांगदा की राजकुमारी के सौन्दर्य के लिए उपमान ।	अंगराज-पृ० 54
शचि के सुरसरि से निकलने के लिए उपमान ।	जयद्रथ-वध ।
समुद्र से उच्चैश्रवा अश्व का निकलना ।	जयभारत-पृ० 191
सर से दुर्योधन के निकलने का उपमान ।	
मथित वसुधा के लिए उपमान ।	द्रौपदी-पृ० 29
कूबरी के कूबर के लिए मंथराचल उपमान ।	कूबरी-4/3
मालोपमा—(समुद्र-मंथन से निकली लक्ष्मी की विष्णु को प्राप्ति) अर्जुन-द्रौपदी युगल के लिए अनेक उपमान ।	पार्थपत्नी महासती द्रौपदी, पृ० 109
उल्लास—दोष में गुण-कथन ।	पद्माकर-पंचामृ-पृ० 67
लक्ष्मी का समुद्र-मंथन से निकले अनेक रत्नों से गुणों की प्राप्ति ।	रामचन्द्रिका-23/23-25
काव्यलिंग—कमला के तप का हेतु समुद्र-मंथन ।	घन-आनन्द-पृ० 465
काव्यलिंग, उपमा, रूपक—युद्ध में श्री का न मिलने का कारण श्री का माधव आधृत होना ।	सुवर्णा-पृ० 117
समर कार्य के लिए सागर-मंथन उपमान ।	
विजय पर अमृत का आरोप ।	
गुढ़ोत्तर—चन्द्रमा की उत्पत्ति का कथन ।	ललित-ललाम-पृ० 353
निदर्शना—समुद्र-मंथन का राम के पुल बांधने से सम्बन्ध ।	रामचन्द्रिका-15/17
पर्यायोक्ति—समुद्र से लक्ष्मी का निकलना ।	केशव-ग्रंथावली-भाग-3 (वीरसिंह चरित्र-29/25-26)
रूपक—कर्ण के युद्ध पर समुद्र-मंथन का	अंगराज, पृ० 240

आरोप।	
(समुद्र-मंथन से रत्नों की प्राप्ति) महायुद्ध सिंधु और युद्ध मंथना से प्राप्त हुई गीता पर अमृत (सुधा) का आरोप।	अंगराज, पृ० 296
शास्त्र पर समुद्र का आरोप।	जयभारत, पृ० 78
आकाश पर सिन्धु तथा उर्वशी पर रत्न का आरोप।	जयभारत, पृ० 152
पद्मावती पर रत्न समुद्री तूफान पर समुद्र-मंथन का आरोप।	पद्मावत-406/1-5
शोभा पर वारिधि राधा पर मणि का आरोप।	प्रियप्रवास, 4/4
कृष्ण के अधरों पर समुद्र तथा शब्दों पर रत्नों का आरोप।	प्रिय-प्रवास, 8/30
पृथ्वीराज और वीरसिंह युद्ध पर समुद्र-मंथन का आरोप।	पृथ्वीराज-रासो-24/164
भीष्म पितामह पर केन्द्र का, पाण्डव-कौरवों पर दो छोर का, संघर्षण आदि पर वासुकी आदि का आरोप।	द्रौपदी, पृ० 19-20
श्रीमद्भागवत पर सुधा का आरोप।	प्रातः स्मरण, पद-18 (भा० ग्रं०)
संग्राम पर सिंधु, जय पर श्री (लक्ष्मी) का आरोप।	सुवर्णा, पृ० 115
लव कुश के युद्ध पर समुद्र का आरोप।	रामचन्द्रिका-39/9
अमृत-समुद्र, रूप-कच्छप, शोभा-रस्सी, शृंगार-मंदराचल।	रामचरित मासस-1/247
प्रेम पर अमृत, विरह पर मंदराचल और भरत पर समुद्र का आरोप।	रामचरित मानस-2/238
भवसागर पर समुद्र, व राम पर मंदर का आरोप।	रामचरितमानस-6/115
ब्रह्म-समुद्र, ज्ञान-मंदर, संत-सुर, रामकथा पर अमृत का आरोप।	—वही— 7/120
मोह पर समुद्र, नाम पर मंदराचल का आरोप।	विनय-पत्रिका, पद-53
वेद-क्षीर समुद्र, वेद का विचार-मंदराचल, मुनि-मंथने वाले, सत्संग-रत्न।	विनय-पत्रिका, 57
संग्राम पर सिन्धु, जय पर श्री (लक्ष्मी) का	सुवर्णा, पृ० 115

आरोप ।	
रूपक, अतिशयोक्ति, उपमा—समुद्र-मंथन के समय निकले रत्नों के माध्यम से उपमा और रूपक अलंकारों से साथ कृष्ण की अक्षौहिणी सेना का अतिशयोक्तिपूर्ण वर्णन किया गया है।	जरासंध-वध, पृ० 55
रूपक, उदात्त—सुधा पर स्वराज का आरोप। कृष्ण का औदात्य वर्णन।	कृष्णायन, 7/1
श्लेष—हरि (विष्णु, वृक्ष) कमला (लक्ष्मी, शोभा) वृष (शंकर, बैल) धन्वंतर (वैद्य, वृक्ष)	फेरि मिलिबो, पृ० 136
स्मरण—कृष्ण द्वारा दही देखकर समुद्र-मंथन का स्मरण।	वृंद-ग्रंथावली-पृ० 17 (सत्यस्वरूप रूपक)
सन्देह, उपमा—कर्ण की पत्नी के चन्द्रहार के लिए समुद्र-मंथन के अवसर पर वासुकी के शरीर से छूटी केंचुली उपमान। किम्वा से सन्देह व्यंजित।	सेनापति कर्ण, पृ० 140
साभिप्राय विशेषण—सागर से लक्ष्मी का जन्म।	उर्वशी-पृ० 15
हेतु—नायिका का मुख प्रेम पयोधि होने की निन्दा का हेतु समुद्र-मंथन।	काव्य-निर्णय-पृ० 416 वृंद-ग्रंथावली-पृ० 14

दृष्टान्त

दान का विपत्ति कारण	केशव-ग्रंथावली-भाग-3 (वीरसिंह चरित्र-पृ 37)
भगवान के भक्त को सब अधिकार प्राप्त।	सूरसागर. पृ० 34 —वही—31/81
उद्यम करने की पुष्टि।	जहांगीर जस चन्द्रिका-पृ० 20

प्रतीक

समुद्र-मंथन-साहसिक कार्य।	जरासंध. पृ0 32

वचन-वक्रता

प्रेम की प्रामाणिता।	सूरसागर. पद-343
शक्ति की प्रामाणिकता।	सूरसागर. प्रद-760,761,762
विरहपरक।	—वही— पद-3974
उपालम्भमूलक।	—वही— पद-3993
उपालम्भमूलक भक्ति।	हृदय-तरंग, पृ० 15

उल्लेख

कृष्ण का अर्जुन को गीतोपदेश।	कृष्णायन-5/190
सत्यभामा का नारद से कथन।	गोपिका-पृ० 212

औचित्य

अलंकार—औचित्य।	सूरसागर, 10/3359
रस।	कूबरी, 4/3
वात्सल्य-औचित्य।	कृष्णायन, 1/63
गुण-औचित्य, वर्ण-औचित्य।	—वही—2/55
साम्राज्य-विरुद्धता औचित्य	गोपिका. पृ० 196
भक्ति-रसौचित्य।	कृष्णायन, 4/111
पराजय-औचित्य।	सुवर्णा, पृ० 117

जीवन-दर्शन

युद्ध-दर्शन।	कृष्णायन, 7/1
कर्म-दर्शन, पुरुषार्थ।	जरासंघ, पृ० 52

स्वर्ग से मन्दाकिनी का बहाना

प्रतीक

स्वर्ग-मंदाकिनी—परिवेश का आनन्दमय बनाना।	प्रियप्रवास, पृ० /167

सहस्रबाहु द्वारा रेवातट रोकना

अलंकार

उदाहरण—छत्रसाल द्वारा वैरी के सेना को रोकना।	छत्रप्रकाश।

सहदेव का पंडित होकर चूकना

दृष्टान्त

पंडितों द्वारा कुबड़े को चित्ररेखा का बर चुनना।	चित्ररेखा, पृ० 86

सीता का जन्म

दृष्टान्त

पालित पुत्री से काम नहीं चलता।	ज्ञानदीप-छंद-297

सीता की अग्नि परीक्षा/राम सीता मिलन

अलंकार

उत्प्रेक्षा—वियोगिनी राधा में सीता की संभावना।	फेरि मिलिबो, पृ० 20

राधिका के भाल की टिकुली मे सीता की परीक्षा की संभावना । — रसिक-प्रिया-1/22

रूपक—नल दमयन्ती के मिलन पर राम व सीता के मिलन का आरोप । — नल-दमयन्ती-दो० 359

सांग-रूपक—संकोच-रावण, लगन-अग्नि-अग्नि-परीक्षा । — बिहारी-सतसई

स्मरण – श्रीकृष्ण को रामावतार का स्मरण ।

दृष्टान्त

पुरुष गुरुतर अपराध के बाद भी दोषमुक्त । — महारास, पृ० 68

प्रतीक

पावक-परीक्षा—दोषी ठहराना । — —वही—

सीता-परित्याग

अलंकार

अर्थान्तरन्यास—बिना त्याग के जनकाज संभव न होने का समर्थन । — कृष्णायन-7/158

उदात्त—चित्र की श्रेष्ठता का वर्णन । — मधुपर्क-2/21

काव्यलिंग, प्रतिवस्तूपमा—सीता परित्याग का कारण परगृहवास । राम द्वारा सीता का न रखना और वाम का होना जैसी एक क्रिया ही पुनरुक्त दोष के बचने के लिए कथित । — कृष्णायन-3/10

निर्दशना, काव्यलिंग—राम और कंस में असंभव सम्बन्ध । — मधुपर्क-9/31

काकु-वक्रोक्ति—प्रजाव्रत के कारण सीता-परित्याग ।

'का तजे कंस रावरों में' स्वर-विकार द्वारा न तजना व्यंजित ।

प्रतिवस्तूपमा—तजी और परित्यक्ता एक ही क्रिया दो रूपों में कथित । — पुरुषोत्तम-पृ० 119

हीनोदात्त—राम के औदात्य के सन्दर्भ में कथन । — पद्माकर-पंचामृत-पृ० 230

दृष्टान्त

अतिशयता से विनाश । — केशव-ग्रंथावली-भाग-3 (वीर० चरित्र-2/1-2)

अभिजातकुल में जन्म लेकर भी कष्ट संभव।	देवकी-पृ० 99
नियति की अवश्यंभाविता।	जयभारत-पृ० 157
	पार्थपत्नी महासती द्रौपदी, पृ० 337
पुरुष की निष्ठुरता का प्रतिपादन।	पुरुषोत्तम-पृ० 61
व्रताचरण का प्रतिपादन।	रश्मिरथी-पृ० 54
अपयश की अस्वीकृति।	रसिकप्रिया-2/8
परित्यक्ताओं का करुण अन्त।	राधा-पृ० 17

वचन-वक्रता

विचार प्रस्तुतीकरण के लिए।	गोपिका-पृ० 183
	द्वापर-पृ०43
	पुरुषोत्तम-पृ० 221

औचित्य

विचार-औचित्य।	द्वापर-पृ० 40
व्रताचरण-औचित्य।	रश्मिरथी-पृ० 54

जीवन-दर्शन

त्याग।	कृष्णायन-7/157-158
नियतिवाद।	पार्थपत्नी महासती द्रौपदी, पृ० 336
वचन-पालन।	रश्मिरथी-पृ० 59

सुन्द-उपसुन्द वध (तिलोत्तमा-बलिसुत)

अलंकार

अर्थान्तरन्यास—कुलटा से प्रेम करने से दुख-प्राप्ति का समर्थन। (बलिसुत और तिलोत्तमा का प्रेम)	कृष्णायन (बिसाहूराम) पृ० 132

प्रतीक

सुन्द-उपसुन्द—आसुरीवृत्तियों के पोषक।	कृष्णायन (बिसाहूराम) पृ० 132
दुष्ट-कार्य।	

जीवन-दर्शन

(बलिसुत को शाप) काम त्याग।	(विश्राम-सागर) पृ० 318

संपाति के पर जलना

अलंकार

अर्थान्तरन्यास—अभिमान के दुखदाई होने का समर्थन। — विश्राम-सागर-पृ० 331

सुधन्वा की कथा

दृष्टान्त

होनी की प्रबलता की पुष्टि। — विश्राम-सागर-पृ० 212

जीवन-दर्शन

अच्छे काम का अच्छा परिणाम। — विश्राम-सागर-पृ० 292

सुरथ की कथा

अलंकार

उदाहरण—मंत्री के चरित्र का उदाहरण। — रामचन्द्रिका-17/25, 23/16

उपमा—वीरसिंह की तुलना। — केशव-ग्रंथावली-भाग-3 (वीर० चरित्र-27/27)

दृष्टान्त

परिजनों से अनिष्ट। — —वही—29/10-12

सूर्यपुत्र शनि

अलंकार

उत्प्रेक्षा—सूर्य की गोद में शनि। — रामचन्द्रिका-30/39

सौभरि ऋषि का गरुड़ को शाप

अलंकार

काव्यलिंग—गरुड़ का कालीदह पर न आने का कारण सौभरि ऋषि का शाप। — विश्राम-सागर-पृ० 319

हंसावतार

अपह्नुति—अवतरण का निषेधकर अभ्युदय की स्थापना। — देवकी-पृ० 6

उदात्त—कृष्ण के औदात्य का वर्णन। — विश्राम-सागर-पृ० 312

काव्यलिंग—अवतार का हेतु भक्त जनों का हित। — भगवान श्रीकृष्ण लीलामृत पृ० 98

औचित्य

विचार-औचित्य।	देवकी-पृ० 6

हनुमान सम्बन्धी कथाएं

हनुमान को मुनियों का शाप

अलंकार

उदाहरण—राजा विक्रम को दिए वर का उदाहरण।	बोधा-ग्रंथावली-21/55

हनुमान द्वारा लंका दहन। सीता की खोज

अलंकार

उत्प्रेक्षा—अनिरुद्ध के युद्ध में हनुमान के लंकागढ़ के युद्ध की संभावना।	ऊषा-हरण-पृ० 27
उदात्त—हनुमान के पौरुष का कथन।	कवितावली-6/24, 6/27
	विनय-पत्रिका-पद-25
चित्र की श्रेष्ठता का वर्णन।	मधुपर्क-पृ० 21/5
उदाहरण—पराक्रमपूर्ण कृत्य।	कथा-कनकावती-7/51
सहायक का अद्भुत कार्य।	चन्दायन-351/2-5
हिम्मतबहादुर के अश्वों की तुलना हनुमान के लंकागमन से।	पद्माकर-पंचामृत-पृ० 9
विरह की [ज्वाला की तुलना लंका को जलाने वाली आग से।	पद्माकर-253,2
घर का भेदी लंका ढावैं।	
श्रीकृष्ण को देखकर के अक्रूर के आनन्द विभोर होने के लिए उदाहरण।	ब्रजचन्द-विनोद (पृ०) पृ० 417
अपने स्वामी का हित करना।	रामचन्द्रिका-17/25
उपमा—अप्रतिम कार्य के लिए हनुमान से तुलना।	कथा-कवंलावती-पृ० 31
विरह की ज्वाला का लंका की आग उपमान।	पद्मावत-353/2
नायिका प्राप्ति में नायक की सहायता।	मृगावती-66/3-4
उपमा, उत्प्रेक्षा—कौमार्य भंग करने में पुष्प-वाटिका के तहस-नहस करने की तुलना और संभावना।	पद्मावत-197/6-7, 198/4-6

काव्यलिंग—हनुमान होने का हेतु अक्षय वध।	पद्माकर-पंचामृत-पृ० 213, 214
चपलातिशयोक्ति—जाम्बवान के कहते ही हनुमान का लंका के लिए उड़ना।	काव्य-निर्णय-11/13
कारक, दीपक, उल्लेख—अनेक कर्ताओं की एक क्रिया। हनुमान के कार्यों का अनेक प्रकार से वर्णन।	रामचन्द्रिका-21/45
नायिका की सुध लाने पर हनुमान की सीता की खोज का आरोप।	पद्मावत-253/2 —वही—355/2-3
रूपक—विरह की ज्वाला में लंका की आग का आरोप।	कथा-कवंलावती-9/65
भ्रू और धनुष की तुलना।	मृगावती-पृ० 4
वक्रोक्ति दृष्टान्तमूलक—प्रेम निर्वाह करने के लिए श्रीराम का दृष्टान्त। राम ने सीता को दीक्षा न देकर उसको शीघ्र समीप लाने का प्रयास किए जाने का भाव व्यंजित।	पुरुषोत्तम-पृ० 1/784
श्लेष, मुद्रालंकार—कौमार्य भंग के लिए वाटिका भंग से तुलना।	पद्मावत-198/4-6
सन्देह—चंदा के धौराहर पर चढ़ने को हनुमान के आकाश में चढ़ने का सन्देह।	चंदायन-197/4-5
अर्थापति सन्देह—पृथ्वीराज के युद्ध में हनुमान युद्ध का सन्देह।	पृथ्वीराज-रासौ-24/282

दृष्टान्त

विपत्ति में सहायता की आवश्यकता।	चंदायन-351/1-5, 37/5 पद्मावत-405/6-7
मृगावती को पाने के लिए विकलता।	लोरकहा-46/4-5 मृगावती-66/3
राजकुंवर का हनुमान जैसा सहायक खोजना।	मृगावती-137
योगी सिद्धनाथ द्वारा अपनी आयु और शक्ति का उल्लेख।	ज्ञानदीप-छंद-292

प्रतीक

हनुमंती गर्जना—भयंकर, प्रबल गर्जना (हनुमान को रावण द्वारा बांधा जाना)	जरासंध-वध-पृ० 12
रावण राजनीतिक-अधर्मी।	मधुपर्क-13/139

लंकादहन —बुरी आकांक्षाओं का दमन।	राधा-पृ० 87
लंकादाह—विरहाग्नि का प्रतीक।	ज्ञानदीप-छंद-290
उल्लेखात्मक-प्रयोग।	रामचंद्रिका-13/39
वचन-वक्रता— हनुमान के पौरुष की व्यंजना।	पद्माकर-पंचामृत-213, 214

औचित्य

गुण, वीर-रस।	ऊषाहरण-पृ० 27
रसौचित्य।	पद्माकर-पंचामृत-पृ० 213, 193, 214

हनुमान का द्रोणाचल पर्वत को उठाना / लक्ष्मण के शक्ति-बाण लगना

अलंकार

अन्योक्ति—(सारूप्य निबन्धना) आनन्द के छिन जाने का उल्लेख।	पद्मावत-225/24
उत्प्रेक्षा — रतनसेन के मूर्च्छित होने में लक्ष्मण के शक्तिबाण से मूर्च्छित होने की संभवना।	पद्मावत-120/3-4
उदाहरण—स्नेह-पथ की दुर्गमता की शक्ति-बाण से तुलना।	अनुराग-बांसुरी, 19/5
भीम द्वारा द्रोणाचार्य का रथ फेंकने के लिए उदाहरण।	जयद्रथ-वध, पृ० 77
परमार्थ के लिए कष्ट सहना।	माधवानल-कामकंदला, पृ० 222/19-20
वियोग की तुलना शक्ति-बाण से।	मृगावती, दो० 242
कामबाण की तुलना शक्ति-बाण से।	मृगावली-255/3-5
उपमा, रूपक—विरह की तुलना शक्ति बाण से।	मधुमालती-दो० 244
सन्देह, उत्प्रेक्षा—पृथ्वीराज द्वारा सांग उठाने में सन्देह और संभावना।	पृथ्वीराज-रासौ-21/59

दृष्टान्त

पद्मावती का सौन्दर्य वर्णन सुनकर रतनसेन का मूर्च्छित होना।	पद्मावत-120/3-5

उल्लेखात्मक-प्रयोग	रामचन्द्रिका-21/47

हनुमान द्वारा सिंहिका वध

अलंकार

उदात्त—हनुमान के पौरुष का कथन।	विनय-पत्रिका, पद-25
उपमा—स्त्रियों के लिए सिंहिका उपमान।	बिहारी सतसई-552

हनुमान द्वारा भीम का गर्व हरण

अलंकार

उदात्त—हनुमान के पौरुष का कथन।	विनय-पत्रिका पद-28

हनुमान की काम-विजय

अलंकार

उदात्त—हनुमान का पौरुष कथन।	विनय-पत्रिका, पद-49

हनुमान का रावण की सेना से युद्ध

उत्प्रेक्षा—विक्रमाली को देखकर रिपुसेना का पलायन।	केशव-ग्रंथावली-भाग-3 (वीर० चरित्र-14/4)
वीरसिंह को मुगलों द्वारा घेरा जाना।	—वही-14/21
उपमा—रतनसेन का अपने वैरियों पर आक्रमण।	केशव-ग्रंथावली-भाग-3 (रतनावली-पृ० 38)
जगबहादुर के युद्ध का उपमान।	पद्माकर-पंचामृत-पृ० 4

हनुमान द्वारा कालनेमि-वध

अलंकार

उदात्त—हनुमान के पौरुष का कथन।	विनय-पत्रिका, पद-25
उदाहरण—भेद खुलने पर निर्वाह असंभव।	रामचरितमानस-1/7
युक्तिपूर्वक पराक्रम करना।	ज्ञानदीप, छंद-124
सन्देह—कृष्ण और बलराम के कंस पहलवानों के चाणूर मुष्टिक के युद्ध करने में हनुमान का कालनेमि से युद्ध करने का उदाहरण।	मधुपर्क-10/19

उल्लेखात्मक-प्रयोग रामचंद्रिका-21/47

हनुमान का अर्जुन की ध्वजा पर रहना

अलंकार

रूपक—बादल के पराक्रम की प्रशंसा।	पद्मावत-641/7
सन्देह—नारद मुनि द्वारा आकाश में छाए बादलों का संदिग्ध वर्णन।	फेरि-मिलिबो, पृ० 144

हनुमान-आख्यान
हनुमान द्वारा लंका की रखवाली करना

अलंकार

अतिशयोक्ति—विरह के विरह का अतिशयोक्तिपूर्ण वर्णन।	पद्मावत-206/1-4
उपमा—हृदय के अच्छे लगने वाले कार्य के लिए उपमान।	पद्मावत-267/1-2
जीवन के कार्य के लिए उपमान।	पद्मावत-530/2-3
रूपक—विरह की तीव्रता का वर्णन।	पद्मावत-355/2
उल्लेखात्मक प्रयोग	पद्मावत-136/4-6

हयग्रीव-अवतार। शंखासुर-वध

अलंकार

अपह्नुति—अवतरण का निषेध कर अभ्युदय की स्थापना।	देवकी, पृ० 6
	गीत-गोविन्दानन्द, पद-12 (भा० ग्रं०)
कृष्ण के औदात्य का कथन।	विश्राम-सागर, पृ० 312
उदात्त—भगवान के औदात्य का कथन।	विनय-पत्रिका, पद-56
उपमा—रतनसेन के परिश्रम साध्य कार्य की उपमा।	पद्मावत-149/14
अलाउद्दीन द्वारा रतनसेन को वन्दी वनाने की तुलना।	पद्मावत-576/6
काव्यलिंग—हयग्रीव अवतार का हेतु परमतत्व की गति कहना और आत्मज्ञान का सार बतलाना और मधु-कैटभ का उद्धार करना।	भगवान श्रीकृष्णालीलामृत, पृ० 99
स्वभावोक्ति—भगवान के स्वभाव का कथन।	रामचन्द्रिका-19/51

उल्लेखात्मक प्रयोग

भद्रास्वक के सन्दर्भ में।	जहांगीर जस चन्द्रिका-5/34

हरिश्चन्द्र-आख्यान

अलंकार

उत्प्रेक्षा—हिम्मतबहादुर में हरिश्चन्द्र की संभावना।	पद्मावत-पंचामृत-पृ० 4
अर्थान्तरन्यास—होनी की प्रबलता का समर्थन।	व्रजचन्द्र-विनोद (पू०) पृ० 335 वृंद-ग्रंथावली, पृ० 70
उदात्त—अयोध्या के वैभव का कथन।	चित्राधार, पृ० 11
कृष्ण के औदात्य का वर्णन।	मधुपर्क, 7/59
उदात्त, उपमा—भारतवर्ष की श्रेष्ठता का कथन।	मधुपर्क, 9/26
महात्यागियों के लिए उपमान।	
उदात्त, उपमा—कर्ण के पौरुष का वर्णन।	सेनापति-कर्ण, पृ० 35
कर्ण के लिए उपमान।	
उदाहरण—सतपुरुषों का दुखों का वर्णन न करना।	पद्माकर-पंचामृत, पृ० 65
परलोक की साधना करने वाले राजाओं का उदाहरण।	रामचन्द्रिका-17/21
उदाहरणमाला—छत्रसाल के कष्ट में पड़ने के अनेक उदाहरण।	छत्रप्रकाश-पृ० 75
उपमा—मनुष्यों के लिए उपमान।	कवितावली-7/43
रतनसेन के लिए उपमान।	पद्मावत-160/1
सलीम के लिए उपमान।	मधुमालती-11/4, 134
मालोपमा—राजा दशरथ के लिए उदाहरण।	रामचन्द्रिका-5/31
वीरसिंह के गुणों के अनेक उपमान।	केशव-ग्रंथावली-खण्ड-3, 27/25-26
जहांगीर के अनेक उपमान।	जहांगीर जस चन्द्रिका-पृ० 118
काव्यलिंग—हरिश्चन्द्र को गाली देने का कारण कलि का प्रभाव।	कवितावली-7/99
दुख का हेतु हरिश्चन्द्र का कष्ट उठाना।	केशव-ग्रंथावली-खण्ड-3 (26/29)

गुढ़ोत्तर—हरिश्चद्र के सत्यपालन का कथन।	साकेत, पृ० 348
पर्याय—पुष्ट वक्रोक्ति—पृथ्वी लेकर विश्वामित्र को देना।	रामचन्द्रिका-6/34
व्यतिरेक—धरुणीधर को हरिश्चन्द्र से बढ़कर बताना।	चित्रावली, 42/1-2
वीरसिंह के दान का अधिक महत्त्व।	केशव-ग्रंथावली (खण्ड-3) 32/52

दृष्टान्त

दान से यश।	केशव-ग्रंथावली-खण्ड-3 (वीरसिंह चरित्र, पृ० 40)
दान से विपत्ति।	केशव-ग्रंथावली-खण्ड-3 पृ० 37, पृ० 53
	पद्माकर-पंचामृत, पृ० 18
दान के महत्त्व का प्रतिपादन।	जरासंध-वध, पृ० 91
कष्टों की क्षणिकता।	रामचन्द्रिका-17-21
पुरुषों की निष्ठुरता की पुष्टि।	पार्थपत्नी महासती द्रौपदी, पृ० 75
	पुरुषोत्तम, पृ० 61
सत्य का प्रतिपादन।	पार्थपत्नी महासती द्रौपदी, पृ० 116
	रामचरितमानस-2/95
कर्म की प्रबलता की पुष्टि।	पृथ्वीराज-रासो पृ० 28
	माधवानल-कामकन्दला, पृ० 196
स्वाभिमान न छोड़ने की पुष्टि।	रामचन्द्रिका-2/21
व्रताचरण का पतिपादन।	रश्मिरथी, पृ० 54
	रामचरितमानस-2/48
होनी प्रबलता की पुष्टि।	सूरसागर, पद-264

प्रतीक

हरिश्चन्द्र-सत्यव्रती।	पुरुषोत्तम, पृ० 254

औचित्य

दानवीर-औचित्य।	जरासंध, पृ० 61-92
इतिहास-औचित्य।	पार्थपत्नी महासती द्रौपदी, पृ० 75
व्रताचरण-औचित्य।	रश्मिरथी पृ० 54

उल्लेखात्मक-प्रयोग	
वियोगी मुनि द्वारा गाथा में प्रयोग ।	चित्रावली, पृ० 181
जीवन-दर्शन	
होनी, भाग्यवाद ।	जरासंध, पृ० 91-93
याचक से दानी की महानता ।	—वही—पृ० 91
दान ।	सेनापति कर्ण, पृ० 35
वचन-पालन	पार्थपत्नी महासती द्रौपदी, पृ० 100
	रश्मिरथी, पृ० 54
राष्ट्रीयता	मधुपर्क-1/25-26
त्याग ।	—वही—9/26
दान ।	सेनापति कर्ण, पृ 35

हिमाचल-मैना आख्यान

अलंकार	
उत्प्रेक्षा—यशोदा और नन्द में मैना और हिमाचल की संभावना ।	ब्रजचन्द्रविनोद (पृ०) पृ० 55

परिशिष्ट

पात्र	अलंकार/टिप्पणी	पुस्तक/संदर्भ
अंगिरा		
	उदात्त—कमण्डल की श्रेष्ठता	मधुपर्क-13/121
	उपमा—महानेता के लिए उपमान।	मधुपर्क-9/25
अंतक		
	उपमा—भीम के लिए उपमान।	सेनापति कर्ण, पृ० 55
	कर्ण के लिए उपमान।	रश्मिरथी, पृ० 156
अग्नि		
	उदात्त—कृष्ण की उदात्तता का कथन।	कृष्णायन-5/204
	वही।	ब्रजचन्द्र विनोद(उ०) पृ० 254
	सन्देह—(अग्नि-वरुण युद्ध) कर्ण-अर्जुन के युद्ध में अग्नि-वरुण के युद्ध का सन्देह।	सुवर्णा-पृ० 125
अगस्त्य		
	उदात्त—भारत की श्रेष्ठता का वर्णन।	मधुपर्क-10/119
	वही।	मधुपर्क-13/121
	उपमा—महानेता के लिए उपमान।	मधुपर्क-9/25
अघासुर		
	उदात्त—कंस की समृद्धि का वर्णन।	कूबरी-1/28
अर्जुन		
	उपमा—श्रुति-मार्ग प्रकाशन के लिए उपमान।	मधुपर्क-17/65
अनुसूया		
	उपमा—ब्राह्मणी का उपमान।	सुवर्णा, पृ० 55
	दृष्टान्त—नारी शिक्षा का समर्थन।	भ्रमर दूत (हृदय-तरंग-पृ० 53)
अश्विनीकुमार		
	अतिशयोक्ति—गोपियों के विरह का अतिशयोक्तिपूर्ण वर्णन।	नटनागर विनोद-पृ० 53

उपमा—नकुल और सहदेव के लिए उपमान । जयभारत-पृ० 32

अत्रि

विप्रलम्भ-औचित्य । नटनागर-विनोद-पृ० 92-93

विचार-औचित्य । कृष्णायन-195

इन्द्र

अमरेश

उपमा—उग्रसेन के लिए उपमान । कृष्णायन-1/19

इन्द्र

असंभव—इन्द्र की आशा असंभव । भूषण-ग्रथावली-196

उत्प्रेक्षा—(इन्द्र का स्वर्गीय वैभव) सुन्दरियों के नृत्य में संभावना । पृथ्वीराज-रासौ-5/38

उपमा—जयचन्द की तुलना । पृथ्वीराज रासौ-2/3

प्रतीय—जयचन्द के युद्ध से इन्द्र का भयभीत होना । —वही—7/6

व्यतिरेक—अर्जुन की वीरता के आगे इन्द्र की वीरता को हीन बताना । सुवर्णा, पृ० 87

विशेषोक्ति—शिवाजी के पास गर्व का कारण धन, पर गर्व नहीं । भूषण-ग्रंथावली-190

सन्देह—पृथ्वीराज के ऐश्वर्य का संदिग्ध वर्णन । पृथ्वीराज-रासौ पृ० 100

पाकशासन

उपमा—कृष्ण के लिए उपमान । उद्धव-शतक, पद-45

पुरन्दर

उत्प्रेक्षा—द्रौपदी के महल में पुरन्दर के रहने की संभावना। पार्थपत्नी महासती द्रौपदी, पृ० 314

उपमा—शान्तनु के लिए उपमान । जयभारत, पृ० 23

वासव

उपमा—कौरव पाण्डवों की मित्रता के लिए वरुण-वासव उपमान । सुवर्णा, पृ० 40

उपमा, सन्देह—भीम के लिए उपमान । सेनापति कर्ण-60

शक्र

उदात्त—कृष्ण का औदात्य कथन । मधुपर्क-10/109

उपमा—दुर्योधन के लिए उपमान । रामचरितमानस-1/4

शतक्रतु

उपमा—परशुराम के लिए उपमान । अंगराज-पृ० 185,

सहस्राक्ष	उर्वशी, पृ० 195
हीनोदात्त—पद-अनौचित्य-सहस्राक्ष होना इन्द्र के व्यभिचार का द्योतक।	अंगराज, पृ० 295
(सहस्राक्षी)	
पृथ्वीराज की तुलना।	पृथ्वीराज-रासो-24/186
खलों के लिए उपमान -	रामचरितमानस-1/4
परिकर	
सहस्राक्ष का डरना उसके गुण अनुसार।	विश्राम-सागर-पृ० 327
सहस्राक्ष	
रूपक-शिवाजी पर इन्द्र का आरोप।	भूषण-ग्रंथावली-65
सहस्र नेत्र	
व्यतिरेक—शिवाजी का अधिक उत्कर्ष।	भूषण-भारती (शिवाजी-भूषण) पृ० 19
सहस्राक्षी	
पद—औचित्य।	(प्रकीर्ण-पद्यावली-रत्नाकर) पृ० 40
सहस्रलोचन—उल्लेखात्मक प्रयोग।	विद्यापति-पदावली-39
सुरपति	
उदाहरण—कंस के लिए उपमान।	प्रेमघन-सर्वस्व-पृ० 65
सुरेन्द्र	
उपमा—कंस के सभा-सरदारों के उपमान। कंस के सिए उपमान।	कूबरी-1/27
इन्द्रुमती	
प्रतीप—नायिका का बढ़ा-चढ़ाकार वर्णन।	काव्य-निर्णय-7/37
उर्मिला	
उदात्त—राधा की श्रेष्ठता का वर्णन।	मधुपर्क-1/29
उर्वशी	
उदात्त—राधा की श्रेष्ठवाणी के आगे उर्वशी के हाव-भाव भी अवरुद्ध होना।	मधुपर्क-2/79
उपमा—नायिका के अनेक उपमान।	काव्य-निर्णय-7/53
प्रत्यक्ष—प्रमाण-राधिका के सौन्दर्य का कथन।	काव्य-निर्णय-16/30
यमक—उरवसी (अप्सरा) उरबसी (हृदय में बसने वाली)	बिहारी-सतसई-287
व्यतिरेक—राधा के रूप का वर्णन उर्वसी के रूप से बढ़कर।	प्रेमाश्रु-वर्षण-(भारतेन्दु-ग्रंथावली-पृ० 210)

व्यतिरेक, यमक—राधा के रूप का वर्णन उर्वशी से बढ़कर। उर्वशी के दो अर्थ-उर्वशी-अप्सरा, उरबसी हृदय में बसी हुई।	प्रेमघन-सर्वस्व-पृ० 210

कपिल

उदात्त—भारत की श्रेष्ठता का वर्णन। अलंकार-औचित्य।	मधुपुरी-1/8

कमला

उदात्त—राधा का औदात्य वर्णन।	मधुपर्क-1/25
राधा की वाणी की श्रेष्ठता का कथन।	मधुपर्क-2/63
उत्प्रेक्षा—राधा के लिए उपमान की संभावना।	फेरि मिलिबो-पृ० 20
—वही—	मधुपर्क-1/56
उपमा—कलिंग पुत्री के लिए उपमान।	अंगराज-पृ० 56
कर्ण (रविसुत) उदात्त—कर्ण का औदात्य व्यंजित।	अंगराज-पृ० 261
उपमा—करन राजा का उपमान।	भूषण-भारती (शिवराज-भूषण-पृ० 6)

कामदेव

अनंग

उत्प्रेक्षा—कोयल के बोलने में अनंग की संभावना।	पृथ्वीराज-रासौ-2/5/28-45
प्रतीप—कृष्ण की सुन्दरता देख काम का मूर्च्छित होना।	विद्यापति-पदावली, वन्दना-2
व्यतिरेक—कृष्ण के रूप से अनंग के रूप को हीन बताना।	ब्रज-विहार, पृ० 92
उदात्त—कृष्ण की उदारता का कथन।	प्रेमघन-सर्वस्व, पृ० 199
रूपक—कर्ण के लिए उपमान।	सुवर्णा, पृ० 24
श्लेष—आकाश तथा कामदेव के लिए प्रयुक्त।	अंगराज, पृ० 145
वचन-वक्रता—प्रेममूलक उपहास। औचित्य—वाक्य-औचित्य।	उद्धव-शतक (रत्नाकर) पद-54

कन्दर्प

कन्दर्प दीप प्रभा—चंपक की कली की उपमा।	पृथ्वीराज-रासौ-2/24
कन्दर्प-प्रतीक—सुन्दरता प्रेमी।	विद्यापति-पदावली, पृ० 56

अतिशयोक्ति—राधा के सिन्दूर का बढ़ा-चढ़ाकर वर्णन।	प्रेमघन-सर्वस्व, पृ० 132
उपमा—कृष्ण के लिए उपमान।	महारास, पृ० 76
बलराम के लिए उपमान।	मधुपर्क-12/40
व्यतिरेक—राधा के सिंदूर को देखकर कंदर्प का लज्जित होना।	प्रेमघन सर्वस्व, पृ० 132
कृष्ण के सौन्दर्य को देखकर कंदर्प का लज्जित होना।	महारास, पृ० 61
उत्प्रेक्षा, निश्चयान्त संदेह—अर्जुन के रूप में कंदर्प के रूप की संभावना व्यंजित।	कृष्णायन-3/124

कामदेव/काम

अपह्नुति—पृथ्वीराज (उपमेय) का उल्लेख नहीं।	पृथ्वीराज रासौ-5/36
उत्प्रेक्षा—(कामदेव-परिकर) वृक्षों के बौरों में कामदेव परिकर की संभावना।	पृथ्वीराज-रासौ-2/5/28-45
सीता के नूपुरों में काम-दुंदुभी की संभावना।	रामचरित मानस-1/230
राम के शयनागार का वर्णन।	रामचन्द्रिका-28/27
राम में काम की संभावना।	रामचंद्रिका-31/2
कृष्ण में काम की संभावना।	कृष्णायन-3/26
उदाहरण—कठिन कार्यों से वय का सम्बन्ध नहीं।	रामचरितमानस-1/257
उपमा—राम की तुलना।	रामचरितमानस-1/199
कृष्ण के लिए उपमान।	कृष्णायन-2/181
पृथ्वीराज के लिए उपमान।	पृथ्वीराज रासौ-24/189
प्रतीप—बाल राम को देखकर काम का लज्जित होना।	गीतावली-2/35 रामचंद्रिका-23/3
रूपक—शिकारी में काम का आरोप।	रामचंद्रिका-24/7
व्यतिरेक—राम-लक्ष्मण की सुन्दरता काम से बढ़कर।	रामचरित मानस-1/22, 1/243
संदेह—पृथ्वीराज में काम का संदेह।	पृथ्वीराज रासौ-6/9
संभावना—तन के कामगृह होने की संभावना।	रसिकप्रिया-3/6
पुष्पसर—पद-औचित्य।	सेनापति कर्ण, पृ० 31

मदन

उत्प्रेक्षा—मदन द्वारा प्रेम और चतुरता भरने की संभावना।	पृथ्वीराज रासौ-20/28
कृष्ण में मदन की संभावना।	ब्रज-विहार, पृ० 93
प्रतीयमान—(रति सहित मदन) कपोत-कपोतियों में मदन रति की संभावना।	मधुपर्क-1/16
उपमा—कृष्ण के लिए उपमान।	कृष्णायन-2/28
काव्यलिंग—शिव नाम का हेतु मदन।	भूषण भारती (दोहावली), पृ० 73
रूपक—मदन का आरोप।	पृथ्वीराज रासौ-20।88
व्यतिरेक—कृष्ण के रूप के आगे मदन के रूप को हीन बताना।	मधु मुकुल, पृ० 393 (भा० ग्रं०)
मदन से बढ़कर शिवाजी।	भूषण भारती, दो० 73
	कृष्णायन, 1/143
पद-औचित्य	नटनागर विनोद, पृ० 52

मन्मथ

उपमा, यथाक्रम—कृष्ण के लिए उपमान। मन्मथ का श्याम से सम्बन्ध।	कृष्णायन, 2/105
व्यतिरेक—राधा कृष्ण के रूप को देखकर रति मन्मथ का लज्जित होना।	कृष्णायन, 1/156
राधा कृष्ण के रूप को देखकर रति मन्मथ का उन पर मोहित होना।	मधुपर्क, 7/10
प्रतीक—सौन्दर्य	विद्यापति-पदावली, वयसंधि, पद 9

मनजात

उत्प्रेक्षा—वन के वृक्ष आदि में मनजात-परिकर की संभावना।	रामचरितमानस-3/37

मनसिज

उत्प्रेक्षा—राम के घोड़े में मनसिज।	रामचरितमानस-1/316
प्रतीक—सौन्दर्य।	विद्यापति-पदावली पद-6, 5, 7, 13 (वयसंधि)

मनोज

प्रतीप—राम की शोभा के आगे कामदेव का लज्जित होना।	रामचरितमानस-1/327, 2/117
राम को देख काम का लज्जित होना।	गीतावली-2/35/3

रतिनाथ

उपमाश्रित उल्लेख—नायक की रतिनाथ से तुलना ।	रसिक प्रिया-3/48

मदन-रति

उत्प्रेक्षा—अयोध्या के नट-नटियों, नर-नारियों में मदन-रति की संभावना ।	गीता-1/2
कोयल की वाणी में रति और काम की संभावना ।	केशव कौमुदी-1/30
अयोध्यापुरी का सौन्दर्य वर्णन ।	—वही—1/47
सीता-राम में रति व काम की संभावना ।	—वही—11/17
प्रतीप—राम और सीता के रूप को देखकर काम और रति का लज्जित होना ।	गीतावली-2/38/2

कार्तिकेय

कार्तिकेय

उत्प्रेक्षा—कृष्ण के लिए कार्तिकेय के उपमान की संभावना ।	कृष्णायन, 3/26
यदुकुल के बालकों में कार्तिकेय की संभावना ।	—वही—7/108
उपमा—कृष्ण के लिए उपमान ।	द्वापर, पृ० 93
जगबहादुर का उपमान ।	पद्माकर प्रकाश, पृ० 24
भीष्म के लिए उपमान ।	कृष्णायन, 5/69

स्कन्द

उपमा—श्रीकृष्ण के लिए उपमान ।	मधुपर्क, 9/105
अर्जुन के लिए उपमान ।	मधुपर्क, 13/5

कुम्भकर्ण

उपमा—औरंगजेब की तुलना ।	शिवा-बावनी, पृ० 47

कुन्ती

शब्द-प्रमाण —स्मृति वाक्य से शब्द-प्रमाण ।	पद्माकर-पंचामृत, पृ० 72

कृतान्त

उत्प्रेक्षा—अर्जुन में कृतान्त की संभावना ।	कृष्णायन, 6/223
उपमा—परिजनों के लिए उपमान ।	रश्मिरथी, पृ० 75
भीम के लिए उपमान ।	सेनापति कर्ण, पृ० 51
वही ।	—वही—पृ० 147
वही ।	—वही—पृ० 155
कंस के लिए उपमान ।	मधुपुरी, 3/50

कृष्ण

गिरधारी

परिकर—साभिप्राय विशेषण गिरधारी का प्रयोग	द्वापर, पृ० 71

रनछोर

हीनोदात्त—कृष्ण की बल-हीनता का द्योतन।	कृष्णायन, 2/1

केशीकाल (कृष्ण)

उदात्त—कृष्ण का औदात्य-कथन।	वीर-सतसई, पृ० 1

घनश्याम

पद—औचित्य।	निवेदन-पंचक, पद-1 (भा० ग्रं०)
	उद्धव-शतक (रसाल) पद-54

केशी

उदात्त—कंस की समृद्धि का वर्णन।	कूबरी-1/28

कुबेर

उदात्त—कंस की समृद्धि का वर्णन।	—वही—1/35
प्रतीप—रायगढ़ की शोभा देख कुबेर का लज्जित होना।	भूषण-ग्रंथावली-पद-15
मिथ्याध्यवसित—शिवाजी का मिथ्याकथन।	—वही—पद-273
स्वभावोक्ति—शिवाजी के स्वभाव का कथन।	—वही—पद-328

खगराज

(गरुड़) उदाहरण—घटोत्कच के पौरुष के लिए खगराज के पौरुष का उदाहरण।	सुवर्णा-पृ० 159

खगेन्द्र

सन्देह—घटोत्कच के पौरुष में खगेन्द्र के पौरुष का सन्देह।	सेनापति कर्ण-पृ० 170

गणेश

(गजानन) व्यतिरेक—शिवाजी का अधिक उत्कर्ष।	भूषण-ग्रंथावली (शिवराज-भूषण) पृ० 9

गरुड़

उपमा—कर्ण के लिए उपमान।	सुवर्णा-पृ० 14
उल्लेखात्मक-प्रयोग।	विद्यापति-पदावली-39

गार्गी

दृष्टान्त—स्त्री शिक्षा का समर्थन।	भ्रमरदूत-पृ० 53 (हृदय-तरंग)

गौतम

विचार औचित्य।	कृष्णायन-6/195

घृताची

प्रशंसा-अनौचित्य	वृंद-ग्रंथावली-पृ० 218 (सत्यसरुप रुपक)

चामुण्डा (काली)

सम्बन्धातिशयोक्ति-सन्देह—अयोध्या की महिलाओं का संदिग्ध बढ़ा-चढ़ाकर वर्णन।	रामचन्द्रिका-1/39
असम्बन्धातिशयोक्ति—शिवाजी से काली का अहेतुक सम्बन्ध।	भूषण-ग्रंथावली-48 (शिवा-वावनी)
उत्प्रेक्षा—मथुरा की प्रजा में चामुण्डा की संभावना।	कृष्णायन-1/1
उपमा—छत्रसाल की तलवार से लिए कालिका उपमान।	भूषण-ग्रंथावली-4 (छत्रसाल-दशक)
रुपक—राम कथा पर कालि का आरोप।	रामचरित मानस-1/47

चाणूर

उदात्त—कंस की समृद्धि का वर्णन।	कूबरी-1/31

चित्रगुप्त

अतिशयोक्ति—(चित्रगुप्त का थककर गिरना)। पापों का बढ़ा-चढ़ाकर वर्णन।	प्रेम-मालिका-पद-87 (भारतेन्दु-ग्रं० पृ० 70)

जनक-धौम्य

उपमा—द्विजराज कन्हर और और वीरसिंह की उपमा।	केशव-ग्रंथावली-खण्ड-3 (वीर०चरित्र-18/28-30)

जयद्रथ

व्यतिरेक—हिम्मत बहादुर से जयद्रथ का पौरुष हीन।	पद्माकर-पंचामृमत-पृ० 72

जयन्त

उदाहरण—अनिरुद्ध की ओर यादवों के देखने के लिए देवताओं द्वारा जयन्त को देखे जाने का उदाहरण।	फेरि मिलबो-पृ० 108

जैमिनी

उदात्त—भारत की श्रेष्ठता का वर्णन।	मधुपुरी-1/8

अलंकार-औचित्य ।

तारा

शब्द प्रमाण—स्मृति वाक्य से शब्द प्रमाण ।	पद्‌माकर-पंचामृत-72

तारकारि

उत्प्रेक्षा—घटोत्कच का पौरुष में तारिकारि के पौरुष की संभावना ।	सेनापति कर्ण-पृ० 170
उपमा—कर्ण के लिए तारकारि उपमान ।	सेनापति कर्ण-पृ० 149
सन्देह—कर्ण के पौरुष में तारिकारि के पौरुष का सन्देह ।	सेनापति कर्ण-पृ० 46

तिलोत्तमा

उदात्त—राधा की श्रेष्ठता का वर्णन ।	मधुपर्क-2/79
उपमा—नायिका का उपमान ।	काव्य-निर्णय-7/12
प्रत्यक्ष-प्रमाण—स्मृति वाक्य से शब्द प्रमाण ।	—वही—16/30
प्रतीप—नायिका का बढ़ा-बढ़ाकर वर्णन ।	—वही—7/37
व्यतिरेक—तिलोत्तमा के सौन्दर्य को राधा के सौन्दर्य से हीन बताना ।	मधुपर्क-7/23

तोषल

उदात्त—कंस की समृद्धि का वर्णन ।	कूबरी-1/31

दशरथ

उपमा—वीरसिंह के गुणों की तुलना ।	केशव-ग्रंथावली-खण्ड-3 (वीर० चरित्र-27/27)

दिलीप

उपमा—शिवाजी के लिए उपमान ।	भूषण-भारती (शिवराज-भूषण) पृ० 154

दुर्गा, बाराही

उदात्त—द्रौपदी का औदात्य कथन ।	पार्थपत्नी महासती द्रौपदी, पृ० 311

दुर्योधन

उपमा—यदुवंशियों के लिए उपमान ।	कृष्णायन-7/145
सासतखां का उपमान ।	भूषण-भारती (शिवराज-भूषण-पृ० 6)
व्यतिरेक—हिम्मत बहादुर के पौरुष से दुर्योधन का पौरुष हीन ।	पद्‌माकर-पंचामृत-18
औरंगजेब दुर्योधन से अधिक दुष्ट ।	भूषण-ग्रंथावली-पृ० 148

दुशासन

उपमा—जसवन्त का उपमान । — भूषण-भारती (शिवराज-भूषण-पृ० 6)

देवकी

उपमा—कुन्ती के लिए उपमान । — जयभारत-पृ० 92

दिलीप

उपमा—शिवाजी के लिए उपमान । — भूषण-भारती (शिवराज-भूषण) पृ० 154

द्रोण

अनन्वय—द्रोण के सदृश किसी के न होने का कथन । — कृष्णायन-1

उपमा—भाऊ का उपमान । — भूषण-भारती (शिवराज-भूषण-पृ० 6)

व्यतिरेक—द्रोण के पौरुष से धृतराष्ट्र का पौरुष हीन । — पद्माकर-पंचामृत-पृ० 18

धन्वतरि

अतिशयोक्ति—गोपियों के विरह का अतिरंजित वर्णन । — नटनागर विनोद-पृ० 92

धृतराष्ट्र

व्यतिरेक—हिम्मत बहादुर के पौरुष से धृतराष्ट्र का पौरुष हीन । — पद्माकर-पंचामृत-पृ० 18

नकुल-सहदेव

उदात्त—अनुशासकों के लिए । — मधुपर्क-17/65

नहुष

उपमा—भोगीलाल के लिए उपमा । — रस-विलास-पृ० 8

परशुराम

उत्प्रेक्षा—एकलव्य के लिए उपमान । — जयभारत-पृ० 46

उदात्त—परशुराम के पौरुष का कथन । — केशव-ग्रंथावली भाग-3 (रतनावली-पृ० 20)

(जामदग्नि) भारत के वैभव का कथन । — चित्राधार-पृ० 26

उपमान—द्रोणाचार्य के लिए उपमान । — जयभारत-पृ० 415

उपमेयोपमा—शिवाजी ही परशुराम के समान । — भूषण-भारती-दोहावली-41

व्यतिरेक—शिवाजी का परशुराम से अधिक उत्कर्ष । — भूषण-भारती (शिवराज भूषण-पृ० 3)

सन्देह—कृष्ण में द्विजराज का सन्देह । फेरि-मिलिबो-पृ० 162

पांडव

व्यतिरेक—हिम्मत बहादुर से पांडवों का पौरुष हीन । पद्माकर-पंचामृत-पृ० 18

पुरूरवा

उपमा—भोगीलाल के लिए उपमा । रस-विलास-पृ० 8

प्रद्युम्न

उपमा—दिव्य विधायक के लिए उपमान । मधुपर्क-17/65

प्रलम्ब

उदात्त—कंस की समृद्धि का वर्णन । कूबरी-1/28

प्रहलाद

उदात्त—श्री कृष्ण की महत्ता के चित्रण के लिए प्रयुक्त । मधुपर्क-7/63

पूतना

उदात्त—कंस की समृद्धि के लिए प्रयुक्त । कूबरी-1/28

ब्रह्मा

(विधि) उपमा—कृपाचार्य के लिए उपमान । जयभारत-पृ० 404

काव्यलिंग—ब्रह्मा से विशेष ब्रह्म का मानने का हेतु दिन फेरना । उद्धव-शतक (रसाल) पद-208

व्यतिरेक—अर्जुन के पुरुषार्थ का वर्णन । सुवर्णा-पृ० 87

काव्य-औचित्य । उद्धव-शतक (रसाल) पृ० 208

भगीरथ

उपमा—वीरसिंह के गुणों की तुलना । केशव-ग्रंथावली-खण्ड-3 (वीर० चरित्र-27/271)

व्यतिरेक—हिम्मत बहादुर के पौरुष को उत्कृष्ट बताना । केशव-ग्रंथावली-खण्ड-3 (वीर० चरित्र-पृ० 18)

भरत

उदात्त—भारत की समृद्धि का वर्णन । मधुपर्क-10/119

कमण्डलु (त्याग) की श्रेष्ठता का वर्णन । मधुपर्क-13/119

भरद्वाज

उदात्त—भारत की श्रेष्ठता का वर्णन । मधुपर्क-9/25

भवानी

उदात्त—राधा का औदात्य का वर्णन । मधुपर्क-1/25

राम के औदात्य का कथन । मधुपर्क-4/99

सन्देह—गंगा का सौन्दर्य वर्णन । अंगराज-पृ० 159

भीम

अतिशयोक्ति—शिवाजी का अतिशयोक्तिपूर्ण वर्णन ।	भूषण-भारती (शिवराज-भूषण-पृ०114)
उपमा—श्रुति-मार्ग प्रकाशक के लिए उपमान ।	मधुपर्क-17/65

भीष्म (गंगानन्दन)

उदात्त—भारत के वैभव का कथन ।	चित्रधार-पृ० 26
भीष्म का औदात्य कथन ।	सुवर्णा-पृ० 23
उपमा—भोगीलाल के लिए उपमा ।	रस-विलास-पृ० 8
इतिहास-अनौचित्य ।	रस-विलास-पृ० 17

भृगु

उदात्त—कमण्डलु (त्याग) की श्रेष्ठता का वर्णन ।	मधुपर्क-13/21

भैरव

उपमा—कर्ण के लिए उपमान ।	अंगराज-पृ० 229

मंजुघोषा

प्रशंसा-अनौचित्य ।	वृंद-ग्रंथावली-पृ० 218 (सत्यसरुप रुपक)

मंदोदरी

शब्द प्रमाण—स्मृति वाक्य से शब्द प्रमाण ।	पद्माकर-पंचामृत-पृ० 12

मदालसा

दृष्टान्त—नारी शिक्षा का समर्थन ।	भ्रमरदूत (हृदय-तरंग-पृ० 53)

मधुरिपु (कृष्ण)

उदात्त—कृष्ण के औदात्य का कथन ।	वीर-सतसई-पृ० 1

मधुरिपु, मधुतुंद, मध्वरि, मधुसूदन

काव्यलिंग	उद्धव-शतक (रसाल) पद-58
विशेषण—औचित्य, पर्याय-औचित्य- मधुरिपु को झुठाए देने में मधु का आतंक ।	

मधुसूदन

उदात्त—कृष्ण का औदात्य कथन ।	ललन-सागर-पद-974
—वही—	भारतेन्दु-ग्रंथावली- पृ०278

मनु

उदात्त—भारत की समृद्धि का वर्णन ।	मधुपर्क-10/119

मुष्टिक

उदात्त—कंस की समृद्धि का वर्णन ।	कूबरी, 1/31

मेघनाद

सन्देह—घटोत्कच का युद्ध वर्णन । जयभारत, पृ० 381

मेनका

उदात्त—राधा की वाणी की श्रेष्ठता का कथन । मधुपर्क-2/79

सभंग-यमक—अप्सरा, मैन का (कामदेव का) वृंद-ग्रंथावली, पृ० 218 (सत्यसरूप रूपक)

व्यतिरेक—राधा का रूप मेनका से उत्कृष्ट बताना । प्रेमघन-सर्वस्व, पृ० 209

प्रशंसा-अनौचित्य । वृंद-ग्रंथावली-पृ० 218 (सत्यसरूप रूपक)

मैत्रेयी

दृष्टान्त—स्त्री शिक्षा का समर्थन । भ्रमरदूत (हृदय तरंग) पृ० 53

मोहिनी

प्रतीक—सुन्दर स्त्री । साकेत पृ० 30

यमदूत

उपमा—हिडिम्बा के लिए उपमान । जयभारत, पृ० 69

यमभ्रत्य

उत्प्रेक्षा—व्याधों के लिए उपमान । कृष्णायन-6/241

यमराज

उत्प्रेक्षा—कृष्ण के रौद्ररूप में यमराज की संभावना । कृष्णायन, 2/59

उदात्त—श्रीकृष्ण की महत्ता का कथन । कृष्णायन-5/204

कृष्ण के रौद्र रूप का वर्णन । मधुपर्क-12/32

उपमा—जैत्र पमार का उपमान । पृथ्वीराज-रासौ-27/20

प्रतीक—यमराज-मृत्यु । जयभारत, पृ० 53

ययाति

उपमा—राजा रामचन्द्र के लिए उपमान । छत्रप्रकाश-पृ० 10

भोगीलाल के लिए उपमा । रस-विलामे-पृ० 8

युधिष्ठिर

उपमेयोपमान—शिवाजी ययाति के समान । भूषण-भारती. पृ० 45 (शिवराज-भूषण)

उपमा—अनुशासक के लिए उपमान । मधुपर्क-17/65

भोगीलाल के लिए उपमा । रस-विलास पृ० 8

रंभा

उदात्त—राधा की वाणी की श्रेष्ठता का वर्णन।	मधुपर्क-2/79
प्रत्यक्ष-प्रमाण—राधिका के सौंदर्य का वर्णन।	काव्य-निर्णय-16/30
रंभा-मेनिका-वक्रोक्ति—पृथ्वीराज के युद्ध का वर्णन।	पृथ्वीराज-रासौ-60

रति

उत्प्रेक्षा—वातावरण की सरसता का वर्णन।	मधुपुरी, पृ० 256
द्रौपदी में रति की संभावना।	सेनापति कर्ण, पृ० 58
उत्प्रेक्षा (प्रतीयमान) कपोतियों में रति की संभावना।	मधुपर्क, 1/16
मालोदात्त—राधा की वाणी की श्रेष्ठता का अनेक प्रकार से वर्णन।	मधुपर्क-2/79
उदाहरण—कर्ण की गोद में पड़ी उसकी पत्नी के लिए मनसिज अंक में पड़ी रति का उदाहरण।	सेनापति कर्ण, पृ० 146
भानुमती द्वारा मूर्छित वासन्ती (कर्ण-पत्नी) के लिए शची द्वारा रती को उठाने का उदाहरण।	सेनापति कर्ण, पृ० 60
उपमा—रात्रि के लिए उपमान।	अंगराज, पृ० 145
मित्रवृन्दा के लिए उपमान।	कृष्णायन, 2/105
तुलसी काव्य कला की उपमा।	गीतावली-1/2
स्त्रियों के लिए उपमान।	पृथ्वीराज रासौ-20/86
काकु वक्रक्ति—सीता के सौन्दर्य का उत्कर्ष ध्वनित।	केशव कौमुदी-6/59
रूपक—उर्वशी पर रति का आरोप।	उर्वशी, पृ० 13
व्यतिरेक—रति के सौन्दर्य से सीता का अधिक सौन्दर्य।	केशव कौमुदी-6/59

रावण

उपमा—उमरावों की रावण से तुलना।	छत्रप्रकाश-पृ० 4
छत्रसाल की उपमा।	छत्रसाल-दशक-पृ० 4
व्यतिरेक—हिम्मत बहादुर का रावण से अधिक पौरुष।	पद्माकर पंचामृत-पृ० 18
रूपक—पिक के लिए उपमान।	नटनागर-विनोद, पृ० 142

राहु

उदात्त—मुरली की श्रेष्ठता का कथन।	महारास, पृ० 23

उपमा—कंस के मंत्रियों के लिए उपमान। मधुपर्क, 6/28

व्यतिरेक—केशों से राहु की कालिमा को हीन बताना। प्रेमघन सर्वस्व, पृ० 211

लक्ष्मी

उदधिजा

उत्प्रेक्षा—सरस्वती से लक्ष्मी की तुलना। उर्वशी, पृ० 90

कमला

उत्प्रेक्षा—राधा के लिए उपमान। फेरि मिलिबो, पृ० 20

राधा के लिए उपमान। मधुपर्क, 1/56

उदात्त—राधा का औदात्य-वर्णन। मधुपर्क, 1/25

राधा की श्रेष्ठता का वर्णन। मधुपर्क, 2/63

उपमा—कलिंग की पुत्री के लिए उपमान। अंगराज, पृ० 56

चंचला

उपमा—उर्वशी के लिए उपमान। जयभारत, पृ० 152

श्री

मालोपमा—मथुरा की नारियों के लिए उपमान। मधुपुरी, 3/13

रमा

अतिशयोक्ति—राधा के सौन्दर्य का अतिरंजित वर्णन। मधुपर्क, 1/43

उदात्त—कल्पलता नामक राधा की सखी की उदारता का वर्णन। मधुपर्क-4/67

काव्यालिंग—रमा की ईर्ष्या का हेतु राधा की छवि। मधुपर्क, 1/43

उपमा—मथुरा की नारियों के लिए उपमान। मधुपुरी, 20/21

उर्वशी पर रमा का आरोप। उर्वशी, पृ० 13

रूपक—गोपी पर रमा का आरोप। महारास, पृ० 37

व्यतिरेक—राधा के रूप सौन्दर्य के आगे रमा के सौन्दर्य को हीन बताना। (प्रेमाश्रु-वर्णन) भारतेन्दु-ग्रंथावली, पृ० 120

(सागर-आत्मजा)—प्रतीक-अयोनजा। उर्वशी, पृ० 90

(सागर-तनया)—अपह्नुति अलंकार उर्वशी, पृ० 92

लक्ष्मी—प्रतीक-वैभव। कामायनी पृ० 232

राधा

प्रतीक—प्रेयसी । जयभारत, पृ० 213

रुद्राणी

प्रतीक—भयंकर । गोपिका, पृ० 28

रेणुका

प्रतीक—पुत्र से प्रताड़ित । साकेत, पृ० 76

राहु

उत्प्रेक्षा—नीलमणियों की उपमा । केशव-ग्रंथावली-खण्ड-3 (वीर० चरित्र-18/27)

राहु-रेखा

उपमा—जगश्री की तुलना । —वही—29/35

वरुण

उपमा—कौरवों के लिए उपमान । सुवर्णा, पृ० 40

सन्देह—कर्ण और अर्जुन के लिए उपमान के प्रयोग से सन्देह । सुवर्णा, पृ० 125

विक्रम

मालोपमा—वीरसिंह के गुणों के अनेक उपमान । केशव-ग्रंथावली-खण्ड-3 (वीर० चरित्र-27/25-26)

विराट

उपमा—प्रतीक-पानी । कामायनी, पृ० 22

विश्वकर्मा (विसुकरमा) उत्प्रेक्षा—गोपियों को विश्वकर्मा द्वारा निर्मित किये जाने की संभावना । भारतेन्दु-ग्रंथावली, पृ० 4[illegible]

विष्णु

उपेन्द्र

उपमा—वृषभानु के लिए उपमान । प्रियप्रवास, 4/1

उल्लेख—श्रीकृष्ण और बलराम का अनेक प्रकार से उल्लेख । कृष्णायन, 2/27

उत्प्रेक्षा—शिवाजी में विष्णु की संभावना । भूषण-ग्रंथावली, पद-103

व्यतिरेक—पृथ्वीराज की विष्णु से अधिक श्रेष्ठता । पृथ्वीराज-रासो-24/183

विष्णु

उपमा—कृतवर्मा के लिए उपमान । जयभारत, पृ० 404

शेषशायी

उदाहरण—भीष्म के शरशैया पर सोने के लिए उदाहरण। — सुवर्णा, पृ० 40

श्रीपद

(विष्णु) प्रतीक—लोक-संग्रही, जनसेवक। — गोपिका, पृ० 88

हरि

उदात्त—राधा के औदात्य का कथन। — मधुपर्क, 2/30

वसिष्ठ

वसिष्ठ-दशरथ—उपमा—द्विजराज कन्हर और वीरसिंह के उपमान। — केशव-ग्रंथावली-खण्ड-3 (वीर० चरित्र-18/28-30)

विचार-औचित्य। — रश्मिरथी, पृ० 77

वायु

उदात्त—कृष्ण के औदात्य का कथन। — कृष्णायन, 5/204

व्यास

उदात्त—भारत की श्रेष्ठता का वर्णन। अलंकार-औचित्य। — मधुपुरी, 1/8

विश्वामित्र

उदात्त—भारतवर्ष की श्रेष्ठता वर्णन। — मधुपर्क, 9/25

वृहस्पति

(सुरगुरु, देवगुरु) उदाहरण-युधिष्ठिर के स्वजनों में विराजमान होने के लिए उदाहरण। — जयद्रथ-वध, पृ० 61

उपमा उद्धव के लिए उपमान। — कृष्णायन, 2/169

कृष्ण के लिए उपमान। — मधुपर्क, 3/8

भीष्म के लिए उपमान। — मधुपर्क-13/54

रूपक—सुदामा पर वृहस्पति का आरोप। — मधुपर्क-18/5

वैश्वानर

प्रतीक—कामाग्नि। — उर्वशी-पृ 54

(वैश्वानर की ज्वाला) उपमा-इड़ा के लिए उपमान। — कामायनी-पृ० 191

शची

उत्प्रेक्षा—उषा में शचीं की संभावना। — उषा हरण-पृ० 27

उदाहरण—भानुमती (दुर्योधन की पत्नी) के लिए उदाहरण। — सेनापति कर्ण-पृ० 160

उपमा—उर्वशी के लिए उपमान। — जयभारत-पृ० 177

मालोपमा—मथुरा की स्त्रियों के लिए अनेक उपमान।	मधुपुरी-1/13
नायिका के अनेक उपमान।	काव्य-निर्णय-7/53

शल

उदात्त—कंस की समृद्धि का वर्णन।	कूबरी-1/31

शाम्ब

उपमा—दिव्य विधायक के लिए उपमान।	मधुपर्क-17/65

शाल्व

उपमा—यदुवंशियों के लिए उपमान।	कृष्णायन-7/145

शिव

अहिभूषण

उत्प्रेक्षा, सन्देह—कर्ण के महायुद्ध के लिए उपमान।	अंगराज-पृ० 253

कामारि

उदात्त—शिव के औदात्य का कथन।	ब्रजचन्द्र विनोद (उत्तरार्द्ध) पृ० 21

गंगाधर

उदात्त—वही—	अंगराज-पृ० 13

नीलकण्ठ

उदात्त—वही—	ब्रजचन्द्रविनोद-पृ 21 (उत्तरार्द्ध)

पंचानन

शिवाजी का पंचानन से अधिक उत्कर्ष।	भूषण-भारती (शिवराज-भूषण-पृ० 19)

पुरारि

उपमा—कृष्ण के लिए उपमान।	मधुपर्क-9/107

मन्मथजयी

उदात्त—भीष्म के औदात्य का कथन।	सेनापति कर्ण-पृ० 21

महेश

उत्प्रेक्षा—कृष्ण के रूप का वर्णन।	ललन-सागर-पद-90

रुद्र

उदात्त—कृष्ण के रौद्र रूप का वर्णन।	मधुपर्क-12/32
व्यतिरेक—अर्जुन का पौरुष का कथन।	सुवर्णा-पृ० 87

शंभु

उपमा—भीम के लिए उपमान।	सेनापति कर्ण-पृ० 60

शिव

असम्बन्धातिशयोक्ति—शिवाजी का शिव से अप्रासांगिक सम्बन्ध।	भूषण-ग्रंथावली (शिव-बावनी) पद-48
उत्प्रेक्षा—बाग में शिव की संभावना।	रामचन्द्रिका-32/17
प्रतीप—शिवाजी के सम्मुख शिव का लज्जित होना।	भूषण-ग्रंथावली पद-50
शिवाजी का यश शिव से अधिक धवल।	वही—पद-48
भ्रान्त—अपह्नुति-शिवाजी में शिव की भ्रान्ति।	भूषण-ग्रंथावली-पद-89
रूपक—द्रोणाचार्य के लिए उपमान।	सुवर्णा, पृ० 51
रूपक—समरविक्रम पर शिव का आरोप।	पृथ्वीराज-रासौ-22/13

त्रिपुरारि

उदात्त—शिव के औदात्य का वर्णन।	ब्रजचन्द्र विनोद (उत्तरार्द्ध)
उपमा—अश्वत्थामा के लिए उपमान।	सेनापति कर्ण, पृ० 36

शिशुपाल

उपमा—यदुवंशियों के लिए उपमान।	कृष्णायन-7/145

शिव के गण

उपमा—शिखण्डी के बाणों का उपमान।	सुवर्णा, पृ० 39

शुकदेव

उदात्त—भारत की समृद्धि का वर्णन।	मधुपुरी-1/8

संकर्षण

उपमा—सेना-नायक के लिए उपमान।	मधुपर्क-17/65

सती

मालोपमा—मथुरा की नारियों के लिए अनेक उपमान।	मधुपुरी-2/13, 20/21

सनत्कुमार

उपमा—सन्देह-कर्ण के लिए उपमान। अथवा से सन्देह व्यंजित।	सेनापति कर्ण-पृ० 181

सनक

मालोपमा—वीरसिंह की तुलना।	केशव-ग्रंथावली-खण्ड-3 (वीर० चरित्र-27/25-26)
पुनरावृत्ति—जहांगीर का वर्णन।	जहांगीर जस चन्द्रिका-(विज्ञान-गीता-1/23)

सरस्वती

सरस्वती—उदात्त—राधा की सखी कल्पलता का औदात्य कथन।	मधुपर्क-4/67
उपमा—मथुरा की नारियों के लिए उपमान।	मधुपुरी, 3/13
मुनि कन्याओं के लिए उपमान।	मधुपर्क-14/64
लुप्तोपमा—राधा के लिए उपमान।	मधुपर्क-1/30
प्रतीक-वुद्धि।	मधुपर्क-6/23

गिरा

उदात्त—राधा की वाणी का औदात्य कथन।	मधुपर्क-2/63
मालोपमा—राधा के लिए अनेक उपमान।	मधुपर्क-4/2

भारती

उत्प्रेक्षा—राधा में भारती की संभावना।	मधुपर्क-2/83

सहस्रबाहु

अतिशयोक्ति—शिवाजी का अतिशयोक्तिपूर्ण वर्णन।	भूषण-भारती (शिवराज-भूषण) पृ० 114
व्यतिरेक—शिवाजी का सहस्रबाहु से अधिक उत्कर्ष।	
संभावना—औरंगजेब के उमरावों में सहस्रबाहु की संभावना।	भूषण-ग्रंथावली-2/70

सीता

उत्प्रेक्षा—राधा में सीता की संभावना।	मधुपर्क-2/43
उदात्त—रास के औदात्य का क़थन।	मधुपर्क-4/99
उपमा—देवी स्त्री के लिए उपमान।	रस विलास, पृ० 17
दृष्टान्त—नारी शिक्षा का समर्थन।	भ्रमरदूत (हृदयतरंग) पृ० 53
उपमा—चामुंडराय की सहस्रबाहु की तुलना।	पृथ्वीराज-रासौ-27/20
रूपक—शिवाजी में सहस्रबाहु का आरोप।	भूषण-ग्रंथावली-65

सुकेशी

प्रत्यक्ष प्रमाण—राधिका के सौन्दर्य का वर्णन।	काव्य-निर्णय-16/30
प्रतीप—नायिका का सुकेशी से बढ़ा चढ़ा कर वर्णन।	—वही— 7/37

सुग्रीव

उपमा—सैनिकों की उपमा।	पृज्वीराज-रासौ-20/129

सुमित्र

उपमा—अभिमन्यु के सूत के लिए उपमान।	जयद्रथ-वध, पृ० 11

सुर-कामिनी

उत्प्रेक्षा—शरदरात्रि में सुर-कामिनी की संभावना।	कृष्णायन 1

सूर्य

सन्देह—चम्पत पुत्र धत्रसाल में सूर्य का सन्देह।	छत्रप्रकाश-पृ० 63

सौनक

उपमा—वीरसिंह के गुणों की तुलना।	केशव-ग्रंथावली-खण्ड-3 (वीर० चरित्र 127/25-26)
पुनरावृत्ति।	जहांगीर जस चन्द्रिका-(विज्ञान-गीता) 1/23

हनुमान

उदात्त—मुरली की श्रेष्ठता का कथन।	महारास, पृ० 23
सैनिकों के लिए उपमान।	पृथ्वीराज रासौ-29/16
उपमा—भीम के लिए उपमान।	जयभारत, पृ० 384
मालोपमा—वीरसिंह के अनेक उपमान।	केशव-ग्रंथावली-खण्ड 3 (वीर० चरित्र-275/226)
जहांगीर के अनेक उपमान।	रस विलास-पृ० 5
सन्देह—भीम के लिए उपमान।	पृथ्वीराज-रासौ-पृ० 60

पौराणिक रूढ़ियों/पौराणिक विश्वास

अनंग आसव

प्रतीक—मादकता।	कानन-कुसुम (मकरन्द बिन्दु)

अनंग-धनुष

अर्थापत्ति सन्देह।	—वही—

अनंग--तालिकाएं

प्रतीक—सुन्दर स्त्रियां।	—वही—

अमरावती

उपमा—मधुपुरी के लिए अमरपुरी उपमान।	ब्रजचन्द्र विनोद (पूर्वार्द्ध) पृ० 348
मधुपुरी के लिए उपमान।	मधुपुरी-3/2
व्यतिरेक—राधा का सौन्दर्य देख अमरावती का लज्जित होना।	मधुपर्क-1/45

सन्देह—नन्दग्राम की अट्टालिकाओं का वर्णन। अलौकिक-लीला किधों से सन्देह व्यंजित।	(प्रेमघन सर्वस्व, पृ० 79)

अलका

उपमा—मधुपुरी के लिए उपमान।	—वहीं—

इन्द्र सभा

उत्प्रेक्षा—पृथ्वीराज की राजसभा में इन्द्रसभा की संभावना।	पृथ्वीराज रासौ-29/16

उच्चैश्रवा

सम्बन्धातिशयोक्ति—अयोध्या की गायों का वर्णन।	रामचन्द्रिका-28/2

ऐरावत

सम्बन्धातिशयोक्ति—अयोध्या के हाथियों का बढ़ा-चढ़ाकर वर्णन।	राम-चन्द्रिका-28/2
उपमा—भगदन्त के हाथी के लिए उपमान।	कृष्णयन-6/118
कुरुक्षेत्र के मैदान में पड़े भीमकाय हाथियों के लिए उपमान।	सेनापति कर्ण, पृ० 111
व्रज के बैलों के लिए उपमान।	मधुपर्क, 14/67
व्योमासुर के लिए उपमान।	व्रजजन्द विनोद, पृ० 319 (पूर्वार्द्ध)
कुवलयापीड़ के लिए उपमान।	—वही—
शाल्व के मत्तगज के लिए उपमान।	व्रजचन्द-विनोद, पृ० 405 (उत्तरार्द्ध)
शिवाजी के लिए उपमान।	भूषण-भारती (शिवराज-भूषण-पृ० 12)
पृथ्वीराज के हाथी का उपमान।	पृथ्वीराज-रासौ-29/41
प्रतीप—ऐरावत का शिवाजी के सम्मुख लज्जित होना।	भूषण-ग्रंथावली-50
प्रोढ़ोक्ति—ऐरावत का शिवाजी से अकारण सम्बन्ध।	भूषण-ग्रंथावली-219
व्यतिरेक—शिवाजी का यश ऐरावत से अधिक धवल।	भूषण-ग्रंथावली-48
व्यतिरेक—नहुष की मत्तता ऐरावत की मत्तता से अधिक उत्कृष्ट।	जयभारत, पृ० 5

कर्मनाशा

दृष्टान्त—भगवान के भक्तों को पाप न	रामचरित मानस-2/194

लगना।	
उल्लेखात्मक प्रयोग।	—वही— 1/6

कल्पवृक्ष

अतिशयोक्ति—शिवाजी के दान का वर्णन।	भूषण-ग्रंथावली-पद-52
उपमा—ब्रज के करील कुंजों के लिए उपमान।	प्रियप्रवास-15/95
कर्ण के लिए उपमान।	रश्मिरथी-पृ० 55
उपमेयोपमा—उपमान कल्पवृक्ष का उपमेय के समान वर्णन।	भूषण-ग्रंथावली-पद-54
प्रतीप—शिवाजी का ऐश्वर्य कल्पवृक्ष से बढ़कर	भूषण-ग्रंथावली पद-52

सुरतरु

उपमा—वन वृक्षों की उपमा।	रामचरितमानस-2/137
उपमा, वक्रोक्ति—शिवाजी के कर को सुरतरु के समान बताना।	भूषण-भारती (शिवराज-भूषण-पृ० 15)
रूपक—मनोरथ पर सुरतरु का आरोप।	राम चरितमानस-2/29
व्यतिरेक—शिवाजी सुरतरु से बढ़कर।	भूषण-भारती (शिवराज-भूषण-पृ०45)
दृष्टान्त—अच्छी वस्तु को त्यागकर निकृष्ट वस्तु की प्राप्ति का प्रतिपादन।	कृष्णायन-3/93
प्रतीक—श्रेष्ठ वस्तु।	कृष्णायन-3/59
प्रतीक—अभिलाषा।	भगवान श्रीकृष्ण लीलामृत, पृ० 9

कल्पतरु

रूपक—कर्ण के पदों पर कल्पतरु का आरोप।	सेनापति कर्ण, पृ० 149
सन्देह—शिवा में कल्पतरु का सन्देह।	भूषण-भारती (शिवराज-भूषण-पृ० 30)

कल्पलता

अनन्वय—राधा को कल्पलता के समान बताया जाना।	मधुपर्क-2/24
उपमा—राधा के लिए उपमा	मधुपर्क-1/66

कामधेनु

अतिशयोक्ति—शिवाजी के दान का वर्णन।	भूषण-ग्रंथावली-पद-125
सम्बन्धातिशयोक्ति—अयोध्या की गायों का अयिशयोक्तिपूर्ण वर्णन।	रामचन्द्रिका-28/2
उपमा—ब्रज की गायों के लिए उपमान।	प्रियप्रवास-15/95

चित्र—कामधेनु का चित्र जैसा वर्णन।	रामचन्द्रिका-3/69
व्यतिरेक—शिवजी द्वारा कामधेनु से अधिक कामनापूर्ति।	भूषण-ग्रंथावली पद-52

कैलाश

उत्प्रेक्षा—जयचन्द के महल में कैलाश की संभावना। पर्वत की कैलाश से तुलना।	पृथ्वीराज-रासो-2/3/64

गंगा (भागीरथी)

उत्प्रेक्षा—राम, लक्ष्मण और सीता में भागीरथी के अंश की संभावना।	रामचन्द्रिका-9/35

गजेन्द्र

उपमा—कुवलयापीड़ के लिए उपमान।	प्रियप्रवास-3/61

गंधर्वनगर

उत्प्रेक्षा—अंगनगर में गंधर्वनगर की संभावना।	अंगराज, पृ० 33

गंगा

त्रिवेणी

अपह्नुति—चन्द्रमा और उसकी कलंक लेखा का निषेध कर गंगा में यमुना के मग्न होने की संभावना।	अंगराज, पृ० 146
उदाहरण—पाण्डवों के सैन्य शिविर में अश्वत्थामा आदि द्वारा कटे पड़े व्यक्तियों के लिए त्रिवेणी की धारा में भव-कष्ट कटने का उदाहरण।	वही, पृ० 287
उपमा—वेणी के लिए जमुना, मोतियों के लिए गंगा और महावर के लिए सरस्वती का उपमान।	सतसई सिंगार, पद 38 (भारतेन्दु ग्रं०, पृ० 342)
उपमा, रूपक—जोगविधि के लिए भानुजा ग्यान गिरा के लिए सरस्वती उपमान। हिय पर हिम-शैल तथा भक्ति पर भागीरथी का आरोप।	उद्धव-शतक (रसाल)
उत्प्रेक्षा, उपमा—पांचाल और पाण्डवों की कुल शाखाओं पर यमुना, गंगा की संभावना।	कृष्णायन, 3/45

दिग्गज

अपह्नुति—नैवेद्य का निषेध कर शकुनि में	द्रौपदी, पृ० 21

गजलक्ष्मी के दिग्गज की स्थापना ।	
उपमा—शिवाजी द्वारा पृथ्वी को धारण करने की उपमा ।	भूषण-ग्रंथावली-पद-52 (शिवा-बावनी)
प्रतीप—दिग्गज शिवाजी के सम्मुख व्यर्थ ।	—वही—

दिग्पाल

उदाहरण—(दिग्पालों का महाकाल से जूझना) कर्ण-अर्जुन के युद्ध के लिए उदाहरण ।	सुवर्णा, पृष्ठ-52

द्रोणाचल

उत्प्रेक्षा—भवनों पर लगी पताकाओं में द्रोणाचल की संभावना ।	केशव-ग्रंथावली-खण्ड 3 (वीर० चरित्र-16/4)

नरक

उत्प्रेक्षा—वन्दीजन में नरक की संभवना ।	कृष्णायन, 1/32
वाक्य-औचित्य ।	उद्धव-शतक (रसाल) पद-62

नन्दन-वन

उपमा—वृन्दावन के लिए उपमान ।	अलौकिक-लीला (प्रेमघन-सर्वस्व पृ० 76)

मेरु/सुमेरु

उपमा—नेपाल के राजा का उपमान ।	चित्रावली-44/7
भीष्म के लिए उपमान ।	द्रौपदी-पृ० 24
कुवलयापीड़ के लिए उपमान ।	प्रिय प्रवास-3/61
कृष्ण के पग के लिए उपमान ।	रश्मिरथी, पृ० 30
शिवाजी के भंडार से उपमा ।	भूषण-ग्रंथावली-पद-222
शिवाज़ी के वचनों का उपमान ।	—वही—(दोहावली-5)
कंस के प्रासाद के लिए उपमान ।	मधुपुरी-3/15
प्रतीप—शिवाजी के सम्मुख सुमेरु पर्वत व्यर्थ ।	—वही— पद-62
मिथ्याध्यवसित—शिवाजी के लिए मिथ्याकथन ।	—वही— पद, 273, 274
स्वभावोक्ति—शिवाजी के स्वभाव का कथन ।	भूषण-ग्रंथावली-पृ० 328
प्रतीक—अहंकारी को झुकाना ।	ज्ञानदीप-छंद 12

मैनाक

उत्प्रेक्षा—पर्वत में मैनाक की संभावना ।	रामचन्द्रिका-32/22
उपमा—कृष्ण के पग के लिए उपमान ।	रश्मिरथी, पृ० 30
सन्देह—बल औचित्य—गंगा के जल में बाहु उठाए कर्ण के लिए बाहु फैलाए मैनाक का संदिग्ध वर्णन ।	रश्मिरथी, पृ० 77

यमुना (कालिन्दी)

उत्प्रेक्षा—(रविपुत्री) राम, लक्ष्मण और सीता यमुना के अंश की संभावना।	रामचन्द्रिका-9/35
काव्यलिंग—हरि का पश्चिम (मथुरा) में जाने का हेतु कालिन्दी का पूर्वोन्मुखी होना।	गोपिका
सन्देह—कृष्ण के यमुना में निमग्न रहने का वर्णन।	द्वापर, पृ० 125

योगिनी

उपमा—कर्ण की पत्नी के लिए उपमान।	अंगराज- पृ०{219

वैतरणी

उत्प्रेक्षा—कंस के कष्टों में वैतरणी की संभावना।	कृष्णायन-1/36
उपमा—दोषयुक्त स्त्रियों के लिए उपमान।	मधुपर्क-5/79
द्रौपदी की वेणी के लिए उपमान।	द्रौपदी-पृ० 34
रूपक—कलिंग देश की महानदी पर वैतरणी का आरोप।	अंगराज-पृ० 12
प्रतीक/वैतरण-दुष्क्रम/बुरेकर्म	
दृष्टान्त—मित्र के शत्रु का कर्तव्य करने पर फल।	रामचरित्र मानस-3/2
पद-औचित्य	कृष्णायन-1/36

शेष (पन्नगेन्द्र)

उदाहरण—कर्ण की सेना की ध्वजाओं के लिए शेषनाग का जिह्वामय उठा हुआ फन-समूह उदाहरण।	अंगराज-पृ० 219
उपमा—हाथ में गदा लिए दुर्योधन के लिए फण-मण्डलयुक्त शेष का उपमान।	अंगराज-283
रूपक—शिवाजी में शेषनाग का आरोप।	भूषण-ग्रंथावली-पद-65
प्रतीप—शिवाजी की श्रेष्ठता का कथन।	भूषण-ग्रंथावली-पद-48, 50 52
उपमा—शिवाजी के लिए उपमान।	भूषण-भारती शिवराज-भूषण, पृ० 12)
व्यतिरेक—शिवाजी का अधिक उत्कर्ष।	—वही—

संजीवनी

मालोपमा—ग्रामीण आर्यनारियों के अनेक उपमान।	मधुपर्क-8/30

स्वर्ग

उपमा—मही के लिए स्वर्ग उपमान।	मधूपर्क-16/51
अयोध्या का उपमान।	साकेत-पृ० 43

सुरसरि

उत्प्रेक्षा—मित्रवृन्दा में सुरसरि की संभावना।	कृष्णायन-2/134
महीतल पर गिरने वाले व्यक्तियों के लिए सुरसरि धारा गिरने की संभावना।	कृष्णायन-1/66
पद-औचित्य, अलंकार-औचित्य।	कृष्णायन-1/36
प्रतीक—सुरसरि-श्रेष्ठवस्तु।	कृष्णायन (बिसाहूराम) पृ० 168

जह्नुजा, जह्नुसुता

उपमा—प्रदान के लिए जाह्नवी उपमान।	गोपिका-पृ० 176
मालोपमा—ग्रामीण आर्य नारियों के अनेक उपमान।	मधुपर्क-8/30
रूपक—सेवा जनित सुख की प्राप्ति का रूपक	प्रियप्रवास-19/43

विष्णुपदी-ब्रह्मपदी

उदात्त—गंगा की श्रेष्ठता का वर्णन।	अंगराज, पृ० 156

सुधा, अमृत, अमी

उत्प्रेक्षा—मथुरा के दुर्ग (प्राकार) के लिए सुधा-धवल महीधर माला की संभावना।	कृष्णायन-2/20
उपमा—मथुरापुरी के प्रासादों के लिए उपमान।	कृष्णायन-1/19
शय्या के लिए उपमान।	कृष्णायन-4/114
धर्म के लिए उपमान।	कृष्णायन-5/214
सरस हंसी के लिए उपमान।	प्रियप्रवास-8/39
वचनों के लिए उपमान।	ब्रज-विहार-पृ० 81
पानी के लिए उपमान।	गोपिका-पृ० 8
हरि के यश के लिए उपमान।	प्रेम-प्रलाप-पद-41 (भा० ग्रं० पृ० 286)
मुस्कराहट की उपमा।	रसराज-पृ० 337
ओष्ठों का माधुर्य।	मतिराम-ग्रंथावली (प्रकीर्णक-पृ० 20)
मालोपमा—ग्रामीण आर्य नारियों के लिए अनेक उपमान।	मधुपर्क-8/30
मिथ्याध्यवसित—शिवाजी का मिथ्या कथन।	भूषण-ग्रंथायली-पृ० 244

रूपक—स्वर पर सुधा का आरोप। कृष्णायन-7/49
भक्ति पर सुधा का आरोप। —वही – 7/183
स्वर पर सुधा का आरोप। मधुपर्क-3/49
पुण्य पर अमृत का आरोप। जयभारत-पृ० 216
सुर-सरिता पर सुधा का आरोप। अंगराज-पृ० 10
श्याम-दरस पर सुधा, निर्गुण पर भंग का आरोप। कूबरी-7/17

प्रतीक

सुधा-आनन्द। उर्वशी-पृ० 56
अमृत-शीतलता। —वही – पृ० 59
सुधा-मधुरता। कृष्णायन-1/61, 3/236
अमृत-मधुर वचन। वहीं – 3/236
सुधा-श्रेष्ठवस्तु। —वही —7/183
सुधा-आनन्द। —वही—5/149
अमृत-तत्वचिन्तन। जयभारत-पृ० 78
सुधा-सुख। जरासंध-पृ० 52
सुधा-आनन्द। प्रिय-प्रवास-7/16
अमी-मधुरता। श्री ब्रज-विहार-पृ० 81
सुधा-मिठास। साकेत-पृ० 20
अमृत-सौन्दर्य। —वही—पृ० 29

सोम

मालोपमा—ग्रामीण आर्य नारियों के अनेक उपमान। मधुपर्क, 8/30

हलाहल

प्रतीक—दुख। जरासंध, पृ० 52
प्रतीक—(गरल) कष्टदायक। कृष्णायन, 5/249
प्रतीक—विध्वंसकारी पानी। कामायनी, पृ० 21
प्रतीक—कठिनाई उर्वशी, पृ० 32

विविध

इन्द्र-धनुष

सुरपति-धनु

उत्प्रेक्षा—कदम पर बैठे हुए श्रीकृष्ण के पट पल्लव और भूषणों से छिपने पर सुरपति धनु होने की संभावना। कृष्णायन, 1/112
उदाहरण—(सुरधनु का सूर्य को घेर लेना) द्रौपदी, पृ० 15

कर्ण को अर्जुन के बाणों द्वारा घेर लेने के लिए उदाहरण।	
उपमा—गोपियों के भाल तट पर भोहों के सुरपति-धनुष उपमान।	महारास, पृ० 37

शक्र-चाप

उपमा—कृष्ण के रथ की ध्वजा के लिए शक्र-चाप उपमान।	कृष्णायन, 3/34

काली की कृपाण

उत्प्रेक्षा—कर्ण के उरगायुध के लिए काली-कृपाण की संभावना।	अंगराज, पृ० 252

कृतान्त-दण्ड

उपमा—धृष्टद्युम्न के बाणों के लिए उपमान।	सुवर्णा, पृ० 110

चिन्तामणि

वचन-वक्रता—प्रेममूलक।	उद्धव-शतक, पद-48

द्वादश-दिनकर/आदित्य

उत्प्रेक्षा—श्रीकृष्ण के क्रोधित होने पर द्वादश-दिनकर उदय होने की संभावना।	कृष्णायन, 2/70
गरुड़ के आकाश में चमकने के लिए द्वादश-आदित्यों के चमकने की संभावना।	कृष्णायन, 3/172

पंचबाण

काव्लर्लिग—पंचबाण बनाने के उमड़ने का कारण घनश्याम का जाना।	उद्धव-शतक, पद-99

मदन-धनुष

व्यतिरेक—राधा के काजल से मदन-धनुष को हीन बताना।	मधुपर्क, 1/40

मनोभव बाण

उत्प्रेक्षा—रैवतक पहाड़ के कुरुवक के लिए मनोभव कीं संभावना।	कृष्णायन, 3/222

मनसिज-चाप

उपमा—द्रौपदी के शरीर के लिए उपमान।	अंगराज, पृ० 64

यम-चाप

उत्प्रेक्षा—कृष्ण की रोषयुक्त भृकुटियों में यम-चाप की संभावना।	कृष्णायन, 2/64

यम-दंश	
उत्प्रेक्षा—कृष्ण को देखकर कंस के मंत्रियों के किंकर्तव्यविमूढ़ होने में उनका जमदंस का ग्रास होने की संभावना।	मधुपर्क, 10/81
वज्र	
उपमा—भीम की गदा के लिए उपमान।	सेनापति कर्ण, पृ० 91
प्रतीक—भयानक।	गोपिका, पृ० 28
सप्त-समीर	
उत्प्रेक्षा—श्रीकृष्ण की क्रोधित होकर उद्धत गति।	कृष्णायन, 2/70
सूर्य का रथ	
(रवि-रथ) व्यतिरेक' अतिशयोक्ति—श्रीकृष्ण के रथ का बढ़ा-चढ़ाकर वर्णन।	अलौकिक लीला, प्रथम सर्ग (प्रेमघन सर्वस्व, पृ० 78)
स्वर्ग-नरक	
प्रतीक—स्वर्ग-आनन्द/सुख, नरक-यंत्रणा दुख।	मधुपर्क, 4/36
प्रलय में सूर्य का चमकना	
उदाहरण	
करता हुआ कर-निकर दुर्द्धर सृष्टि के संहार को, कल्पान्त में संतप्त करता सूर्य ज्यों संसार को। सब ओर त्यों ही छोड़कर निज प्रखरतर शर-जाल को, करने लगा वह वीर व्याकुल शत्रु-शैन्य विशाल को।	अभिमन्यु के युद्ध के लिए उदाहरण। जयद्रथ-वध, पृ० 10
यम-द्वितीया	
प्रतीक—भ्रातृत्व।	देवकी, पृ० 10
रौरव	
उपमा—पृथ्वी के कष्ट।	उर्वशी, पृ० 17
लास्य-नृत्य	
प्रतीक—मधुरता।	—वही—पृ० 14

सहायक ग्रंथ-सूची

अंगराज — आनन्द कुमार

अंधायुग — धर्मवीर भारती

अग्नि-पुराण — गुरुमण्डल ग्रंथमाला, कलकत्ता

अथर्ववेद (सायण भाष्य)

अध्यात्म-रामायण — सं० मुनिलाल गुप्त

उत्तर जय — नरेन्द्र शर्मा

उद्धव शतक — जगन्नाथ दास 'रत्नाकर'

उद्धव शतक — रामशंकर 'रसाल'

उर्वशी — रामधारीसिंह 'दिनकर'

ऊषा हरण — रामदत्त राय शर्मा

ऋग्वेद-संहिता — सं० श्रीपाद शर्मा

ऋग्वेद्-कथा — रघुनाथ सिंह

कनुप्रिया — धर्मवीर भारती

कवितावली — तुलसीदास

कामायनी — जयशंकर प्रसाद

कल्याण (सत्कथा अंक) — गीता प्रेस, गोरखपुर

कल्कि-पुराण — सं० श्रीराम शर्मा

कालजयी सत्य (पौराणिक कथाएं) — डा० भोलानाथ तिवारी

कालिका-पुराण — सं० डा० चमनलाल गौतम

कुरुक्षेत्र — रामधारी सिंह 'दिनकर'

कूबरी — रामनारायण अग्रवाल

कूर्म पुराण — गुरुमण्डल ग्रंथमाला, कलकत्ता

कृष्णायन — द्वारिका प्रसाद मिश्र

केशव ग्रंथावली, खण्ड-3 (केशव दास) — सं० विश्वनाथ प्रसाद मिश्र

केशव कौमुदी (केशवदास) — सं० लाला भगवानदीन

कौषीताकि ब्राह्मण — शंखायन

गर्ग-संहिता	—	सं० रामतेज शास्त्री
गरुड़-पुराण	—	सं० रामतेज शास्त्री
गीतावली (तुलसीदास)	—	गीता प्रेस, गोरखपुर
गोपथ ब्राह्मण	—	क्षेमकरणदास
गोपालपूर्वतापिन उपनिषद्	—	सं० जगदीश शास्त्री
गोपिका	—	सियारामशरण गुप्त
गौतम धर्मसूत्र	—	सं० डा० उमेशचन्द्र पाण्डेय
छत्रप्रकाश	—	डा० महेन्द्र प्रताप सिंह
छांदोग्य उपनिषद्	—	गीता प्रेस, गोरखपुर
जयद्रथ-वध	—	मैथिलीशरण गुप्त
जरासंध-वध	—	गिरधरदास
जातक	—	सं० भदन्त आनन्द कौसल्यायन
जैमिनी अश्वमेध	—	पुराण प्रकाशन मण्डल
तंत्रवार्तिक	—	कुमार भट्ट
द्वापर	—	मैथिलीशरण गुप्त
द्वारका-प्रवेश	—	चन्द्रशेखर पाण्डेय 'चन्द्रमणि'
द्वारका-शतक	—	द्वारकाप्रसाद 'द्वारका'
देवकी	—	उमाकांत मालवीय
देव-ग्रंथावली (प्रथम खंड)	—	सं० लक्ष्मीधर मालवीय
देवी भागवत पुराण	—	सं० रामतेज शास्त्री
नटनागर विनोद	—	रत्नसिंह नटनागर
नारद पुराण	—	श्री वैंकटेश्वर, स्ट्रीम प्रेस
नृसिंह	—	गीता प्रेस, गोरखपुर
पद्म पुराण	—	गुरुमण्डल ग्रंथमाला, कलकत्ता
पद्माकर पंचामृत (पद्माकर)		
पद्मावत (जायसी)	—	सं० वासुदेवशरण अग्रवाल
पार्थपत्नी महासती द्रौपदी	—	अवधनारायण शर्मा
प्रिय-प्रवास	—	अयोध्यासिंह उपाध्याय 'हरिऔध'
पुराण इन्डैक्स	—	वी० आर० दीक्षितार
पुराण कथा कौमुदी	—	रघुनाथदत्त बन्धु
पुराण-सन्दर्भ कोश	—	पद्मिनी मेनन
पुराणों की अमर कहानियां	—	रामप्रताप त्रिपाठी
पृथ्वीराज रासउ	—	सं० माताप्रसाद गुप्त
पुरुषोत्तम	—	तुलसीराम शर्मा 'दिनेश'
प्रेम अभिलाष	—	मुंशी साहबसिंह भटनागर

प्रेमघन सर्वस्व	—	बद्रीनारायण चौधरी 'प्रेमघन'
पौराणिक आख्यानों का विकासात्मक अध्ययन	—	उमापतिराय चन्देल
पौराणिक उपाख्यान	—	द्वारकाप्रसाद शर्मा 'चतुर्वेदी'
पौराणिक आधुनिक सन्दर्भ	—	डा० गोपालशरण कुलकर्णी
पौराणिक कोश	—	राणाप्रसाद शर्मा
फेरि मिलिबो	—	पं० अनूप शर्मा
बाल्मीकि रामायण	—	द्वारका प्रसाद शर्मा
बिहारी-सतसई (बिहारीलाल)	—	सं० विश्वनाथप्रसाद मिश्र
ब्रजचन्द्र विनोद	—	किशोरचन्द्र कपूर
ब्रज-भारती	—	उमाशंकर बाजपेयी 'उमेश'
ब्रज-विनोद	—	भवानीदास
ब्रज-विलास	—	ब्रजवासीदास
ब्रज-विहार	—	पं० रंगीलाल
ब्रह्म-पुराण	—	गुरुमंडल ग्रंथमाला, कलकत्ता
ब्रह्मवैवर्त पुराण	—	गुरुमंडल ग्रंथमाला, कलकत्ता
ब्रह्माण्ड पुराण	—	श्री वैंकटेश्वर प्रेस
बृहदारण्यकोपनिषद्	—	गीता प्रेस, गोरखपुर
बृहद्देवता (शौनक)	—	सं० रामकुमार राय
बोधा-ग्रंथावली (बोधा)	—	सं० विश्वनाथ प्रसाद सिंह
भंवरगीत	—	प्रागन
भगवान श्रीकृष्णलीलामृत	—	प्रेम भंडारी
भागवत पुराण	—	गीता प्रेस, गोरखपुर
भारतवर्षीय प्राचीन चरित्र कोश	—	विनायक सिद्धेश्वर शास्त्री
भारतेन्दु-ग्रंथावली (भाग-2)	—	नागरी प्रचारिणी सभा
भूषण-ग्रंथावली		
भूषण-भारती	—	सं० हरदयाल सिंह
मत्स्य पुराण	—	गुरुमण्डल ग्रंथमाला, कलकत्ता
मधुपर्क	—	देवीरत्न अवस्थी
मधुपुरी	—	गयाप्रसाद द्विवेदी
मतिराम ग्रंथावली	—	सं० पं० कृष्णबिहारी मिश्र
महाभारत	—	गीता प्रेस, गोरखपुर
महारास	—	नरेशचन्द्र मिश्र 'भंजन'
माधवानल-कामकन्दला	—	सं० गणेशप्रसाद द्विवेदी
मानव धर्म की आख्यायिकाएं	—	आचार्य नानाभाई 'भट्ट'

मानस संदर्भ कोश	—	डा० वागीशदत्त पाण्डेय
मार्कण्डेय पुराण	—	गुरुमण्डल ग्रंथमाला, कलकत्ता
मीरा-पदावली (मीरा)		
मृगावती	—	सं० डा० शिवगोपाल मिश्र
मोहन विनोद	—	रामसिंह मोहन
यजुर्वेद	—	आचार्य सुदर्शनदेव
योगवाशिष्ठ	—	तेजकुमार प्रेस, लखनऊ
रघुवंश (कालिदास)	—	सं० रामचन्द्र शुक्ल
रत्नाकर (दोनों भाग)	—	काशी नागरी प्रचारिणी सभा
रश्मिरथी	—	रामधारीसिंह 'दिनकर'
रसिक-प्रिया	—	सं० विश्वनाथप्रताप सिंह
राधा	—	आचार्य जानकीवल्लभ शास्त्री
रामकथा	—	रांगेय राघव
रामकथा	—	कामिल बुल्के
रामचन्द्रिका (केशवदास)	—	रामनारायणलाल बेनीमाधव, इलाहाबाद
रामचरितमानस (तुलसीदास)	—	गीता प्रेस, गोरखपुर
रामचरितमानस-नाना पुराण निगमासम्मत	—	डा० गनोरी महतो
रुक्मिणी-परिणय	—	महाराज रघुराजसिंह जूदेव
ललन सागर	—	ललनपिया
लिंग पुराण	—	गुरुमंडल ग्रंथमाला, कलकत्ता
लोककथा कोश	—	बिहार राष्ट्रभाषा परिषद्, पटना
वामन-पुराण	—	श्री वैंकटेश्वर स्टीम प्रेस
वायु-पुराण	—	गुरुमंडल ग्रंथमाला, कलकत्ता
वाराह पुराण	—	श्री वैंकटेश्वर स्टीम प्रेस
विद्यापति पदावली	—	कुमुद विद्यालंकार
विनय-पत्रिका	—	गीता प्रेस, गोरखपुर
विश्राम सागर	—	बाबा रघुनाथ 'रामस्नेही'
विष्णु पुराण	—	गीता प्रेस, गोरखपुर
वृंद-ग्रंथावली (वृंद)	—	डा० जनार्दन राव
वेणु लो गूंजे धरा	—	माखनलाल चतुर्वेदी
वैदिक माइथोलोजी (मैक्डानल)	—	अनु० रामकुमार राय
शंकर-सर्वस्व	—	नाथूराम शंकर शर्मा
शतपथ-ब्राह्मण (सायण भाष्य)	—	श्री वैंकटेश्वर, स्टीम प्रेस
शिव-पुराण	—	सं० रामतेज शास्त्री

स्कन्द-पुराण	—	श्री वेंकटेश्वर, स्टीम प्रेस
साकेत	—	मैथिलीशरण गुप्त
सामवेद	—	पं० हरिशरण सिद्धांतलंकार
सावन-छटा	—	बलदेवप्रसाद सिंह
सुदामा-चरित्र	—	नरोत्तमदास
सुवर्णा	—	नरेन्द्र शर्मा
सूरसागर (सूरदास)	—	काशी नागरी प्रचारिणी सभा
सेनापति कर्ण	—	लक्ष्मीनारायण मिश्र
सेनापति का रामकाव्य	—	डा० रामप्रकाश
हंस-जवाहिर (कासिमशाह)	—	राजकुमार प्रेस, लखनऊ
हरिऔध पद्मामृत	—	सं० डा० किशोरीलाल गुप्त
हरिवंश पुराण	—	गीता प्रेस, गोरखपुर
हिन्दी कथा-कोश	—	डा० धीरेन्द्र वर्मा
हिन्दी विश्व कोश	—	कालिका प्रसाद
हिन्दुत्व	—	रामदास गौड़
हिन्दी सूफी काव्य में पौराणिक आख्यान	—	डा० उमापतिराय चन्देल

परिचय

नाम : रामशरण गौड़

जन्म : 28 जुलाई, 1942, अलीगढ़

शिक्षा : एम० ए० (हिन्दी व समाजशास्त्र)
पी-एच० डी० (हिन्दी) दिल्ली वि०वि०

प्रकाशित कृतियां

1. आधुनिक कृष्ण-काव्य में पौराणिक आख्यान (शोध)
2. लोक-संस्कृति के प्रवर्तक सूर
3. हिन्दी साहित्य अन्तर्कथा कोश
4. पौराणिक आख्यान कोश
5. कृष्ण कथा कोश
6. प्रेत-छाया (उपन्यास)
7. अतीत के सन्देश (बाल-साहित्य)

प्रकाशनाधीन

1. पुरंजन-कथा (उपन्यास)
2. दिवास्वप्न (उपन्यास)
3. मृगतृष्णा (उपन्यास)
4. प्राचीन कथा कोश (चार-खण्ड)

सम्प्रति

प्रचार अधिकारी,
समाज कल्याण निदेशालय,
दिल्ली प्रशासन

विभूति प्रकाशन
के-14, नवीन शाहदरा, दिल्ली-110032